यूरी गेर्मान

प्रगति प्रकाशन
मास्को

अनुवादक डा० मदनलाल 'मधु'

Ю Герман

ДЕЛО КОТОРОМУ ТЫ СЛУЖИШЬ

на языке хинди

हिंदी अनुवाद • प्रगति प्रकाशन • १९७८

सोवियत सघ म मुद्रित

Г $\frac{7030-498}{014(01)-8}$ 6 1—78

येव्गेनी ल्वाविच श्वात्स
की स्मृति को समर्पित

अनुक्रम

पांचवां अध्याय

छठा अध्याय

सातवां अध्याय

आठवा अध्याय

नौवा अध्याय

दसवा अध्याय

पहला अध्याय

प्राकृतिक विज्ञान

वह नौवे दर्जे मे पढता था, जब एकाएक बिल्कुल ही वदल गया। वोलोद्या को किसी भी चीज़ मे कोई दिलचस्पी न रही, शतरज के खिलाडियो की मडली मे भी नही, जो उसके उदासीन होते ही टूट गयी, अपने दर्जे के अध्यापक स्मोरोदिन मे भी नही, जो उसे अपनी कक्षा का सबसे अच्छा छात्र मानता था। और तो और उसे वार्या स्तेपानोवा मे भी काई रुचि न रही थी, जिसके साथ उसे नवम्बर की छुट्टिया तक धीरे धीरे वहती हुई उचा नदी को उसके खडे तट से दखने मे वडा मज़ा आता था। खुशी से भरपूर और दिलचस्प, अत्यधिक व्यस्त और हो-हल्लेवाली और छोटी-वडी सभी चीज़ो के जादू स भरी हुई उसकी जिन्दगी अचानक मानो रुककर रह गई, हर चीज़ ने जैसे दम साध लिया, कान लगाये और मानो यह कहते हुए चौकन्नी होकर खडी हो गई—"देखेंगे नौजवान, आगे चलकर तुम्हारा क्या होता है!"

ऐसा प्रतीत होता था मानो कुछ भी तो खास वात नही हुई थी।

वोलोद्या और वार्या सिनेमा देखने गये थे। उस रात को भी हर दिन की तरह पतझर की बूदा-बादी हो रही थी। वार्या सदा की भाति "नाटक कला" के बारे मे अपनी ऊल-जलूल वात करती जा रही थी (वह अपने स्कूल की नाटक मडली की प्रमुख अभिनेत्री थी)। चित्रपट पर किसी विशेष नसल की कुछ अजीब-सी मुर्गिया पख फडफडा रही थी। अचानक वोलोद्या बिल्कुल सावधान हो गया, उसने नाक से सू-सू की और दम साध लिया।

"चुप हो जाओ," उसने वार्या से कहा।

"क्या बात है?' वार्या ने हैरान होकर पूछा।

'चुप भी रहोगी या नहीं?' उसने खीझते हुए धीरे से कहा।

चित्रपट पर एक वैज्ञानिक प्रकट हुआ था। वह पिचकारी में कोई तरल पदार्थ भर रहा था। उसका माथा चौड़ा, होंठ पतले और चेहरा थका थका सा था। इस महान वैज्ञानिक में कोई लुभावनी बात या वार्या की मां के शब्दों में कोई 'आकर्षण' नहीं था। वह अपना काम भी ज्यादा चतुराई से नहीं कर रहा था। शायद वह कुछ घबराया हुआ भी था क्योंकि समाचारों के लिए उसके चलचित्र खींचे जा रहे थे। इस तरह के लोग तो फोटो खिंचवाना भी पसन्द नहीं करते और अब उसे कैमरामैन घेरे हुए थे।

वार्या को प्रयोगगत गिनी पिग पर बड़ी दया आ रही थी।

'आह, बेचारा!' वार्या ने डरी-सहमी नजर से वोलोद्या की ओर देखते हुए कहा।

वोलोद्या ने तो अब शी शी करके भी उसे चुप नहीं कराया। सफेद चोगा और सफेद टोपी पहने हुए वैज्ञानिक जो कुछ कह रहा था, वोलोद्या बहुत ध्यान से उसी को सुन रहा था। वह तो मानो खिल उठा था। वैज्ञानिक बता रहा था कि किसी जमाने में एक बूढ़ा और बुद्धिमान चिकित्सक आस्क्लेपिउस और उसकी बेटी पानासीआ रहते थे।

'मेरे तो कुछ भी पल्ले नहीं पड़ रहा,' वार्या ने फुसफुसाकर शिकायत की। 'कुछ भी तो नहीं। तुम्हारी समझ में कुछ आ रहा है, वोलोद्या?'

वोलोद्या ने सिर हिलाकर हामी भरी। वैज्ञानिक के बारे में समाचार-चित्र के बाद जब फीचर फिल्म चलती रही, वोलोद्या गुमसुम, अपने नाखून काटता और सोच में डूबा हुआ बैठा रहा। फिल्म बेशक मजेदार थी, फिर भी वह एक बार मुस्कराया तक नहीं। कभी-कभी वह ऐसा ही करता था, अचानक सभी से दूर हो जाता था, छोटी मोटी बातों की दुनिया से भागकर गहरे चिन्तन में खो जाता था, अपने ही रहस्यपूर्ण संसार में मगन लगता था। इस रात को भी ऐसा ही हुआ। फिल्म खत्म होने पर वह वार्या को उसके घर पर छोड़ने गया, उसके साथ चलता हुआ भी उसके साथ नहीं था, अपने ही विचारों में डूबा-खोया हुआ था।

"क्या सोच रहे हो तुम?" वार्या ने पूछा।

"कुछ भी तो नही!" अपने ही विचारो म डूबे वोलोद्या ने झल्लाकर उत्तर दिया।

"कितना मजा आता है तुम्हारे साथ रहने पर!" वार्या ने कहा। "बस, कुछ पूछो न! मुझे लगता है कि हसते-हसते मेरे तो पेट मे बल पड जायेंगे।"

"क्या मतलब?" वोलोद्या ने पूछा।

इस तरह वे लगभग तीन महीनो के लिये एक-दूसरे से जुदा हो गये। वार्या बुरा मान जानेवाली और गर्वीली थी। इधर वोलोद्या खोज और मानसिक उथल-पुथल, बहुत पहले से जाने जा चुके सत्यो की खोज और जागरण की राता की दुनिया मे खो गया था। वह खो गया था असीम ज्ञान के ससार मे, जहा स्वय उसका अपना कोई महत्त्व नही था, जहा वह झक्कड मे धूल के एक कण के बरावर था। वह ऐसे शब्दो के भवर मे फसा रहता, डूबता-उतराता रहता, जिनके लिये उसे वार-वार विश्वकोश देखना पडता। वह ऐसी किताबा पर मत्थापच्ची करता, जो उसकी समझ मे बिल्कुल न आती। कभी-कभी ऐसे क्षण भी आते, जब वह अपने को पूरी तरह असहाय अनुभव करता हुआ रुआसा सा हो जाता। पर फिर ऐसे क्षण भी आते, जब उसे लगता कि वात उसकी समझ म आ रही है, कि वह स्पष्ट हो रही है, कि अब कठिनाई नही रही। काश कि वह फला अध्याय मे फना पृष्ठ समझ जाये। उसे ता वस, अब उसकी गहराई म उतरना है और तब पूरी तरह बात बन जायेगी। पर वह फिर से अधेरे म भटकन लगता, क्याकि अभी छाटा ही था, वआ अग्लाया के शब्दा मे "वुद्धू" ही तो था।

"यह क्या है?" एक वहुत ही ठडी रात को बूआ न वोलोद्या की "माद" मे आकर पूछा। वहुत अर्से से उसके छाटे से कमरे को "माद" ही कहा जाता था।

"कहा?" वडी मुश्किल से किताब से नजर हटाते हुए वोलोद्या ने पूछा।

"अरे, वह! तुमने क्या चित्र खरीदने शुरू कर दिये हैं?"

"वे चित्र नही हैं। वह तो 'डाक्टर तूल्पिउस के शरीररचना विज्ञान का पाठ' नामक रेम्ब्रात के चित्र की एक कापी है।"

“ओह यह बात है” अग्लाया ने कहा। “अरे बुद्धू, तुम्हे क्या जरूरत पड गई शरीर रचना-विज्ञान के पाठ' की?”

“मुझे क्या जरूरत है 'शरीर रचना विज्ञान के पाठ' की? बूआ अग्लाया पेत्रोना मुझे इसकी इसलिये जरूरत है कि मैं डाक्टर बनना चाहता हूं” वोलोद्या ने जोर से अगडाई और मजे से जम्हाई लेते हुए कहा। 'मैंने ऐसा ही फैसला किया है।”

“तुम्हे इतना और जोड देना चाहिये कि फिलहाल तुमने ऐसा फैसला किया है” अग्लाया ने सलाह दी। “तुम्हारी उम्र मे फैसले अक्सर बदलते रहते है। मुझे अच्छी तरह से याद है कि कभी तुमने हवाबाज और फिर जासूस बनने का भी फैसला किया था।”

वोलोद्या चुप रहकर केवल मुस्करा दिया। हां, उसे याद था कि कभी उसने इस तरह का इरादा भी जाहिर किया था।

'यह तूल्पिउस क्या कोई अच्छा डाक्टर था?” अग्लाया ने पूछा।

“वह हालैंडवासी था” धुधले पडे हुए चित्र को ध्यान से देखते हुए वोलोद्या ने उत्तर दिया। 'उसका नाम था वान तूल्प। वह गरीबो का डाक्टर और अमस्टडम के विश्वविद्यालय मे शरीर रचना विज्ञान का प्रोफेसर था। अक्सर उस मोमबत्ती लिये हुए डाक्टर के इस आदर्श वाक्य के साथ, जो कहावत बन गया है, चित्रित किया जाता है— दूसरो को रोशनी देता हूं, अपना आप जलाता हूं'।”

“बहुत सुदर।' अग्लाया ने गहरी सास ली। 'अरे, वाह, कैसी अच्छी अच्छी बात सीख गये हो तुम। और किताबे भी कितनी इकट्ठी कर ली है तुमने अपनी इस माद मे”

बूआ अग्लाया ने शरीर रचना विज्ञान की एटलस खोली, जो वोलोद्या पुस्तकालय से लाया था। वह उसे देखते ही कांप उठी।

“ओह कैसी भयानक चीजें है इसमे। आओ, चलकर चाय पियें। काफी देर हो चुकी है। चलो भावी तूल्पिउस।”

जाडे की छुट्टियां आते न आते वोलोद्या की रिपोर्ट मे इतने अधिक बुरे अंक दर्ज हो चुके थे कि वह खुद भी हैरान रह गया। वह किसी से बात करके अपना मन हल्का करना चाहता था। वह गुस्से से बौखलाया हुआ चरचराती बर्फ पर लम्बे-लम्बे डग भरता वार्या से मिलने के लिये प्रोलेतार्स्काया सडक की ओर चल दिया। वह खोया-सा सोचता जा

रहा था—"दूसरो को रोशनी देता हू " यह वाक्य बहुत बुरी तरह दिमाग मे घुसकर रह गया था।

"वार्या तो घर पर नही है, रिहर्सल करने गई है," वार्या के सौतेले भाई येव्गेनी ने कहा। वह गोल-मटोल चेहरे और ढीली-ढाली चालवाला नौजवान था। वह बालो को सवारने के लिये जाल लगाये हुए था (येव्गेनी अपनी शक्ल-सूरत का बहुत ध्यान रखता था, उसे बालो को बढिया ढग से सवारे रखना पसन्द था और इसके लिये वह सभी तरह की उल्टी सीधी हरकते करता था)। वह इत्मीनान से सोफे की टेक लगाये हुए भौतिक विज्ञान की पुस्तक पढ रहा था। फ्लैट मे वैनिला बिस्कुटो की बडी प्यारी सुगन्ध फैली हुई थी। येव्गेनी की मा की एक सहेली, मदाम लीस, साथवाले कमरे म पियानो बजा रही थी। वहा से दो आवाजें सुनाई दे रही थी। येव्गेनी की मा वाले तीना अाद्रेयेव्ना की थकी-सी और दोदिक की भारी भरकम आवाज़। दोदिक मोटर साइकल और कार चलाने तथा टेनिस खेलने के लिये प्रसिद्ध था और नगर तथा प्रदेश के खेलो का मुख्य निर्णायक भी था।

"कार खरीदने का इरादा नही है क्या?" येव्गेनी ने पूछा। "दोदिक बेचना चाहता है। १९१४ का 'इस्पानो-सूईज़ा' मॉडल है, बहुत अच्छी हालत मे। वह दो कारे बेचकर एक नयी कार खरीद भी चुका है। वह बहुत तुरत फुरत काम करता है। मुझे तो उससे ईर्ष्या हाती है।"

वोलोद्या चुप रहा।

"बडी बेहूदा ज़िन्दगी है," येव्गेनी ने ऊची-ऊची आवाज़ म कहा। "तोते की तरह कितावें रटते जाओ, रटते जाओ, पर इसमे तुक ही क्या है? फिर भी पढना तो हमे होगा ही," उसने दूसरा, उत्साहपूण तथा कामकाजी बातचीत का ढग अपनाते हुए कहा। "यही मैं कर भी रहा हू। पर लोग कहते हैं कि तुम इसके लिये कोई कोशिश नही करते।"

"हा, यह सही है," वोलोद्या ने उदासीनता से स्वीकार किया।

"बस, यही तो बात है! पर यह अच्छा नही है। अब तुम मुझे ही लो। कुछ विषय है, जो मेरे दिमाग मे किसी तरह भी नही घुसते। बडा ही ज़ोर डालना पडता है दिल दिमाग पर। फिर तुम तो जानते हो कि मै कभी तपेदिक का भी रोगी था।"

'वाह र तपेदिक क मरीज़।' येव्गेनी के लाल-लाल चेहरे को देखते हुए वोलोद्या न हसकर कहा।

इस मामल म ना सूरत बहुत ही धोखा दे सकती है," येव्गेनी न बुरा मानत हुए उत्तर दिया। कुल मिलाकर, तपेदिक को ऐसा मामूली राग नहा समझना

कुल मिलाकर –यह येव्गेनी का तकिया कलाम था। उस "कुल मिलाकर" क नाम स ही पुकारा जाता था। य्गेनी ने तपेदिक की विस्तत चर्चा की और यह बताया कि कस इस भयानक बीमारी से उसे बचाया गया था। हा, यही कहना चाहिय कि उसे बचाया गया था और इसक लिये हर तरह की दवाई यहा तक कि ऐलो और शहद म चर्बी मिलाकर भी आजमायी गई थी।

मा का प्यार तो बडे बडे करिश्मे कर सकता है।" य्गेनी ने भावुक होते हुए कहा। उस कभी कभी करुणारस की धारा म बहना अच्छा लगता था। मगर वोलोद्या की लम्बी जम्हाई के कारण उसकी तपेदिक की दास्तान अधूरी ही रह गई। अब उसने अपने दोस्त की आलोचना करनी शुरू की।

तुमन भी समूह क जीवन से नाता तोड लिया है," येव्गेनी ने सदभावना से कहा। "कुल मिलाकर तुम अपने म ही खोकर रह गये हा। यह बुरी बात है। तुम्ह युवा कम्युनिस्ट लीग के एक सच्चे सदस्य की भाति ज्यादा जोश दिखाना चाहिये। यह मत भूलो कि हम किसी बुजुआ कालेज म नही अच्छे सोवियत स्कूल म, मज़दूरा के स्कल मे पढ़ रहे है।

तुम्ह कसे मालूम है कि मरा स्कूल अच्छा है?' वालाद्या न पूछा।

कुल मिलाकर हमारे सभी स्कूल बुर्जुआ कालेजो स बेहतर है,' य्गेनी न यह कहत हुए आख मारी, दो जवाब।"

वोलाद्या को झटपट काई जवाब नही सूझा। य्गेनी ने अपनी बात जारी रखी–

"अगर तुम्ह कठिनाइया का सामना करना पड रहा है, तो छात्र और अध्यापक तुम्हारी मन्द करगे। तुम्हार यहा क्या समूह म एका और हल-मल नही है? ज़रूर हागा। सहपाठी-साथी तुम्हारी मन्द करग।

अरे, बाबा सुखारेविच भी तो तुम्हारे ही दर्जे म है न! वैसे तो खैर वह गधा है, पर सद्भावनाग्रो से ग्रोतप्रोत गधा। मैंने सुना है कि पढाई मे पिछडे हुए छात्रा की वह हमेशा मदद करता है। उससे कहो, वह तुम्हारी मदद कर देगा।"

बगलवाले कमर म दोदिक ने जोर का ठहाका लगाया। येव्गेनी उठा, घरेलू स्लीपर फटफटाता हुग्रा दरवाज़े की ग्रार गया ग्रौर उसे कसकर बन्द कर दिया।

"मेरी तो समझ म नही ग्राता कि मैं क्या करू," उसने जरा परेशान होते हुए कहा। "माटर कारा ग्रौर मोटर साइकला का धधा करनेवाला यह कामरेड तो लगभग चौबीसा घटे यही जमा रहता है। मेरी मा को न जाने उसम क्या दिखाई देता है? जब सागर-गजन घर ग्रायेगा, तो मजेदार बातचीत होगी "

वोलोद्या खाली-खाली ग्राखा से उसकी ग्रोर देखता रहा। "सागर-गजन' से येव्गेनी का शायद ग्रपने सौतेले बाप से ही ग्रभिप्राय था। उन किताबा से मत्थापच्ची करते हुए, जिनका स्कल के विपया से कोई सम्बध नही था, वोलोद्या न जो उनीदी राते बितायी थी, उनके कारण उसकी गुद्दी मे दद हो रहा था ग्रौर ग्राखें जल रही थी।

"मज़ेदार बातचीत क्यो होगी?" वोलोद्या न पूछा।

"तुम ग्रनुमान नही लगा सकते क्या?"

"नही।"

"मेरे ख्याल मे ता पति इस तरह की स्थिति को पसद नही करत।"

येव्गेनी ने दरवाज़े की ग्रोर सकेत किया, जिसके पार ग्रब मदाम लीस की जोरदार हसी सुनाई दे रही थी। वोलोद्या की समझ म फिर भी कुछ नही ग्राया।

"पर खैर, तुम यह बताग्रो कि मुझे क्या करना चाहिय?" वोलोद्या ने पूछा।

"कुल मिलाकर, मैं तो यही कहूगा कि तुम ग्रपने को सम्भालो," येव्गेनी न जवाब दिया। "ग्रगर मैं तुमसे वैसे ही साफ साफ बात करू, जैसे मद मर्द से, तो हकीकत यह है कि तुम मुझसे कही ज्यादा समझदार हो। पर मुसीबत यह है कि तुम किसी एक चीज़ म देर तक ग्रपना मन ही नही लगा पाते। बेशक यह बहुत ही उबानेवाली चीज़

है, मगर हम स्कूल की पढाई तो खत्म करनी ही है। आज तो मा-बाप हैं, पर कल हम होंगे और हमारी किस्मत। आखिर हम कोई कुली-उली तो बनना नही चाहते "

यव्गेनी ने अपनी भौतिक विज्ञान की पुस्तक सोफे पर फेंक दी और वोलोद्या को कुछ हिदायत देने लगा। वह तो सदा की भाति सदभावनापूर्ण था, किन्तु उसका उपदेश सुनते हुए वोलोद्या को ऐसा लगा मानो उसने मतली लानेवाली बहुत ज्यादा मिठाई खा ली हो। यह सच है कि येव्गेनी सही बात कह रहा था, पर न जाने क्या, वास्तव मे वह सही नही था। उसके सहीपन मे कुछ तिकडमबाजी थी, कुछ चालाकी थी। अपनी पारदर्शी आखो से सामने की ओर एकटक देखता हुआ येव्गेनी बनावटी ढग से शब्दो पर ज़ोर देकर कह रहा था—

"स्कूल की मण्डली को ही ले लो। यह तुम्हारा व्यक्तिगत मामला है, पर स्कूल के लिये यह अच्छी बात है कि उसमे कोई बढिया नाटक मण्डली हो और वह जब-तब कोई बढिया नाटक प्रस्तुत कर सके। अध्यापकों की सभा मे इस चीज़ की ओर ध्यान दिया जाता है। या फिर दीवारी समाचारपत्र को ही ले लो। मैं साल भर से उसका सम्पादक हू। वैसे तो खुद मुझे भी उसमे कोई खास दिलचस्पी नही है, पर स्कूलवालो के लिये वह बहुत महत्व रखता है। तुम यह समझते होगे कि इसमे बहुत वक्त लगता है, पर मैं सारा हिसाब किताब जोडकर देख चुका हू सभी अध्यापक यह जानते है कि मैं सम्पादक हू और वे जाने अनजाने मेरी जन सेवा की भावना के लिये मुझे रियायत दिये बिना रह ही नही सकते। फिर अध्यापको मे भी इन्सानी कमजोरिया होती ही हैं। समाचारपत्र मे अपनी प्रशसा के कुछ शब्द पढकर वह धन्यवाद हो या केवल शुभकामनाए, उन्हे भी खुशी तो होती ही है। अब तुम अपने को ही ले लो। तुम्हे प्राकृतिक विज्ञानो मे दिलचस्पी है। यह बहुत अच्छी बात है। स्कूलवालो को ऐसे शौक बहुत पसन्द हैं, मगर विशेष सीमाओ, स्कूल की सीमाओ मे ही, मेरे दोस्त। तुम्हे यह बात हरगिज नही भूलनी चाहिये। तुम्हे ऐसी दिलचस्पीवालो का एक मण्डल बनाकर अपने अध्यापक के पास जाना और यह कहना चाहिये—प्यारे शतान इवानोविच या जो भी उसका नाम हो हम सभी

छात्र आपसे यह प्रार्थना करने आये हैं कि आप हमारे प्राकृतिक विज्ञान मण्डल के अध्यक्ष बन जायें। हम आपको, केवल आप ही को चाहते हैं। बस, कुछ ऐसी बकवास करनी चाहिये। समझे?"

येव्गेनी ने अपने सिरहानेवाली मेज़ की दराज़ में से एक सिगरेट निकालकर जलाई और अंगड़ाई लेकर बोला—

"समझ गये न?"

"तुम मूर्ख नहीं हो," वोलोद्या ने कहा।

"जैसा तुम समझो," येव्गेनी ने कुछ निराश होते हुए कहा। "क्या तुम वार्या की प्रतीक्षा करोगे?"

वोलोद्या कुछ बुझा-बुझा-सा घर की ओर वापिस चल दिया। वैनिला बिस्कुटों की गंध और येव्गेनी की ऊबानेवाली आवाज देर तक उसके दिल दिमाग पर छायी, रही। जब उसने उस नुक्कड को लाघा, जहा रादीश्चेव का स्मारक था तो उसे वार्या दिखाई दी। वह लडकों की एक भीड मे चली जा रही थी। उसने हाथ हिलाकर वोलोद्या का अभिवादन किया। स्कूल की नाटक मण्डली के मुख्य दिग्दर्शक सेवा शापीरो की ऊची आवाज ठिठुरी और जमी हुई हवा मे गूज रही थी—

"मैं बायमेकेनिक्स के सिद्धान्तो का समर्थन करता हू और स्तानिस्लाव्स्की के विचारो के सर्वथा विरुद्ध हू। बडा सम्मान करते हुए भी "

"बुद्धू छोकरे," वालोद्या ने ऐसे सोचा मानो वह कोई बुजुर्ग हो। पर वह इस विचार से चौक पडा। कारण कि कुछ ही समय पहले तक खुद उसे भी इन चीज़ो मे बडा मज़ा आता था।

"टन!"—ऊचे आकाश मे घंटे की आवाज़ ज़ोर से गूज उठी। वह शनिवार का दिन था और गिरजाघर मे सन्ध्या की प्रार्थना हो रही थी। घंटा बज रहा था—टन, टन।

सभी पादरी मुर्दाबाद,
सभी धर्म के ठेकेदार।
हम बोलेंगे नभ पर हल्ला
दूर भगायें ईश्वर, अल्ला

स्कूल के नास्तिक क्लब के लडके-लडकिया का एक दल सडक पर उक्त पक्तिया गाता चला आ रहा था। वोलोद्या ने उनकी मुखिया गाल्या अनाखिना को रोककर कहा–

' दूर भगाय दूर भगाय!' इस तरह के प्रचार मे भला क्या तुक है? इसके बजाय तुम्हे ईसाई धम के जाच-न्यायालय (इनक्विजिशन) के बारे म कोई वार्ता सुननी चाहिये।"

लडके लडकिया वोलोद्या और गाल्या के गिर्द जमा हो गये। वे बडे रग म थे और जिओर्दानो ब्रूना या नोलानत्स ब्रूना (जसे कि वालाद्या उस महान व्यक्ति का नाम लेता था) की दुखद कहानी नही सुनना चाहते थे। इस समय तो उन्हे मिगेल सेर्वेत के बारे म भी कुछ सुनने की इच्छा नही थी। उसे दो बार जलाया गया था पहली बार तो उसका बुत और फिर उसके द्वारा लिखी गई सभी पुस्तका के साथ उसे जिन्दा जलाया गया था। शरीर रचना विज्ञान के जनक आन्द्रिआस वेसालिअस की भी हत्या उन घणित धामिक जाच कर्त्ताओ ने करवा डाली थी। उन्होने उसे पवित्र धरती–इजराइल–की धम-यात्रा के लिये भजा था मगर उसे ले जानवाली नाव डूब गई थी।

' जानते-बूझते उसकी हत्या की गई " वोलोद्या के एक मित्र बोरीस गूबिन न कहा। यह सब पहले मे ही तय किया हुआ था।"

जहा तक गलिलेय का सम्बन्ध है " वोलोद्या कहता गया, ' तो उसका तो दम खुश्क हो गया था। उसने उनकी बाइबिल पर हाथ रखकर यह कहा था कि वह श्रद्धेय मुख्य पादरी का बडा सम्मान करता है और इस बात के लिये कसम खाई थी कि पवित्र धम के प्रचार म यकीन रखता है और उसे सही मानता है। हा यह सही है कि उस समय तक वह बूढा हो चुका था '

' टन! टन! टन!' गिरजे के घटे की गूज सुनाई दे रही थी।

'घर आओ चले," गाल्या ने कहा। "वोलोद्या, वैसे अगर तुम खुद ही इस विषय पर एक वार्ता दे डालो तो कुछ बुरा न रहे "

वालाद्या के इस पाडित्य उसकी आखा की गुस्से से भरी चमक और उसके दुबलेपन से कुछ-कुछ परेशान होकर वे सभी एकसाथ वहा स चल गये।

"जब देखो, वह शिक्षा देता है, शिक्षा देता रहता है," गाल्या ने झल्लाकर कहा। "बड़ा आया शिक्षक कही का!"

"ऐसा नही कहो," बोरीस गूबिन ने कहा। "वह तो सचमुच सोचने समझने और बहुत कुछ पढनेवाला लडका है।"

पिता घर आये

घर मे दाखिल होने और डयोढी की बत्ती जलाने के पहले ही तम्बाकू तथा चमडे की हल्की गंध से वोलोद्या यह समझ गया कि पिता जी घर आये है। ओवरकोट पहने-पहने ही वह खुशी से चिल्लाता हुआ पिता के कमरे की ओर भागा गया। अफानासी पेत्रोविच सदा की भांति तने हुए मेज पर बैठे अखबार पढ रहे थे। वे अच्छे ढग से इस्तरी की हुई फौजी कमीज़ पहने थे, जिस पर हवाबाज के कालर की फीतियां और आस्तीनो पर सुनहरे पद चिह्न लगे हुए थे। उनकी पेटी कुर्सी की टेक पर लटक रही थी, जिसका यह मतलब था कि वे रात को घर पर ठहरेंगे, फौरन चले नही जायेंगे। उन्होने सदा की भांति हाथ मिलाकर एक दूसरे का अभिवादन किया। पिता ने अपनी आंखो को ज़रा सिकोडा और बेटे को अपने साथ सटा लिया। पर उन्होने एक दूसरे को चूमा नही। वे ऐसा नही कर पाते थे। अफानासी पेत्रोविच ने एक दो बार बेटे के कधे का थपथपाया और कहा कि कोट उतारकर खाने की मेज पर बैठ जाये। बूआ अग्लाया मछली से तैयार की गयी साइबेरियाई ढग की कचौरियां से भरी प्लेट लिये हुए रसोईघर से आई। उसका चेहरा खिला हुआ था और आंखो मे खुशी की चमक झलक रही थी। वह अपने भाई को बहुत प्यार करती थी, उसे उन पर गर्व था और उनके घर आने के अवसरो को वह अक्सर पर्व की तरह मनाती थी।

"अपना हालचाल सुनाओ," ठडी वोद्का का एक जाम पीने के बाद पिता ने कहा।

वोलोद्या ने उन्हे सभी कुछ कह सुनाया, कुछ भी नही छिपाया। अफानासी पेत्रोविच अपने बडे-बडे हाथो मे एक कचौडी लिये हुए टकटकी बांधकर बेटे की ओर देख रहे थे।

"बस यह सब अपने मन से बना रहा है," अग्लाया ने चिल्लाकर कहा। "यह सच नहीं हो सकता। वह तो हमेशा पढ़ाई में इतना अच्छा था, स्कूल का सबसे अच्छा छात्र था।"

'ऐसा किसलिये हुआ?' अपनी बहन की बात की ओर ध्यान न देते हुए अफानासी पेत्रोविच ने पूछा।

"मैं यह बाद में बताऊंगा," वोलोद्या ने जवाब दिया। "थोड़े में यह बात है कि मैंने वैज्ञानिक बनने का पक्का इरादा कर लिया है।"

पिता के चेहरे पर मुस्कान की झलक तक भी नहीं थी।

"वह रात रात भर पढ़ता रहता है," बूआ अग्लाया ने फिर टोका। "उसने घर में इतनी किताबें लाकर भर दी हैं कि आदमी दंग रह जाता है और अब यह अजीब-सी बात सुनने को मिल रही है। यह झूठ है बिल्कुल झूठ है!"

बाद में जब बूआ अग्लाया मेजबानी की दौड़ धूप से थककर सो गई तो बाप-बेटा एक-दूसरे के करीब बैठ गये और वोलोद्या अपने पिता की बात सुनने लगा।

"मेरे लिये गलत सही का निर्णय करना कठिन है," सिगरेट पीते हुए अफानासी पेत्रोविच ने कहा। "मैं तो विद्वान नहीं, हवाई सेना का हवाबाज हूं। फिर भी मेरे ख्याल में हर विज्ञान की अवश्य कोई नींव होनी चाहिये। मसलन मेरे हवाबाजी के धंधे को ही ले लो। यह कहना बहुत आसान लगता है—लीवर आगे, लीवर पीछे—मगर फिर भी..."

वे एक-दूसरे से सटे हुए बैठे थे और इसलिये वोलोद्या यह नहीं जान सकता था कि उसके पिता किधर देख रहे हैं। पर वह उनकी गम्भीर, शान्त और कड़ी नजर को बिल्कुल उसी भांति अनुभव कर रहा था, जैसे अपने हठीले कंधों के निकट अपने पिता की मजबूत मांसपेशियों को। वह खुश था, अपने को सुरक्षित महसूस कर रहा था, बहुत ही खुश था। कठोर आकृति और खुरदरे चेहरे पर झुर्रियोंवाला यह दिलेर और साहसी हवाबाज उसका पिता है और उसके साथ दोस्त की तरह बात करना तथा सोच समझकर शब्द चुनना—यह एक ऐसी अनुभूति थी, जिसकी दुनिया में किसी भी चीज से तुलना करना सम्भव नहीं था।

"फिर भी, मेरे बेटे, यह बात इतनी सीधी-सरल नही है," अफानासी पेत्रोविच विचारो मे डूबे-डूबे से कहते गये। "जाहिर है कि अगर कोई अपने से आगे जानेवाले व्यक्ति के बराबर रहना चाहता है, तो उसे इसके लिये कोई खास कोशिश करने की जरूरत नही होगी। पर यदि वह हवाबाजी को एक कदम, या कुछ कदम आगे बढाना चाहता है, तो इसके लिये बहुत ही मजबूत नीव की जरूरत होगी। तब केवल हो-हल्ला करने से काम नही चलेगा। मेरी इस बात को गाठ बाध लो। मैं काफी जिदगी देख चुका हू और तुम उसकी राह पर अभी अपना सफर शुरू ही कर रहे हो "

इसके बाद रात को वे वोलोद्या की "माद" मे गये, जहा सभी ओर किताबें, पत्र-पत्रिकाए और सक्षिप्त टिप्पणिया बिखरी हुई थी और दीवार पर रेम्ब्रान्त द्वारा बनाया गया "शरीर रचना-विज्ञान का पाठ" चित्र लगा हुआ था। वहा बेटा अपने पिता को प्राकृतिक विज्ञाना के बारे मे बताने लगा। अफानासी पेत्रोविच वोलोद्या के बिस्तर पर बैठे बेटे के उत्तेजित और उतरे हुए चेहरे को बहुत ध्यान और पैनी नजर से देख रहे थे और चिकित्साशास्त्र की नयी उपलब्धियो, सच्चे नवीकारक के लक्षणो, कृत्रिम प्रोटीनो की खोज और मानव हृदय के आपरेशन की विधि के बारे मे वोलोद्या की जोशीली बाते सुन रहे थे।

"यह तो तुम बेपर की उडा रहे हो, बेटा," अफानासी पेत्रोविच ने कहा। "मानव हृदय का आपरेशन, यह अतिशयोक्ति है।"

"अतिशयोक्ति!" वोलोद्या चिल्लाया। "आप इसे अतिशयोक्ति कहते है। मैं क्षमा चाहता हू, पिता जी, पर आपके शब्द मुझे उन लोगो की याद दिलाते हैं, जो पिछली शताब्दी के नौवे दशक मे जानवरा के दिला मे टाके लगानेवाले रूसी सजन फिलीप्पोव पर हसा करते थे। ऐसा ही जमन सजन लूदविग रेहन के साथ हुआ था, जिसने १८६६ मे दिल के घाव को टाका लगाया था और रोगी जिदा रहा था। इन पर हसनेवाले लोग विज्ञान के क्षेत्र मे दकियानूसी हैं "

"अच्छी बात है, मेरे नवीकारक," पिता ने बेटे को शात करते हुए कहा। "हा, हा, बात आगे बताओ। तुम लोगो के कटे हुए सिरा को तो फिर से नही जोडने लगोगे?"

यह तो आप मजाक कर रहे हैं,' वोलोद्या ने बिगडते हुए कहा। 'सयोगवश आप हवाबाज है और उडनवाले आदमी के बारे म सपने "

अच्छी बात है अच्छी बात है," अफानासी पत्रोविच ने टोक्त हुए कहा। 'म समझ गया तुम्हारी बात, पर दुनिया म युद्ध जैसी चीजें भी तो है

पर यहा युद्ध का क्या प्रश्न पैदा होता है?" वोलोद्या ने बातचीत का सम्बन्ध न समझते हुए पूछा।

तुम समाचारपत्र तो पढते ही होगे?

पढ़ता तो हू पर नियमित रूप से नही।'

नियमित रूप से पढा करो। तुम्हे हिटलर, गोयबेल्स और हिम्मलर तथा उस बदमाश गोएरिंग की भी जानकारी होनी चाहिये, जो अपने आप को हवाबाज कहता है। तुम्हे क्रूप्प वान बोहलेन के बारे म भी जानना चाहिये। कुछ ही दिन पहले हमारे यहा एक कमिसार आया था बहुत ही समझदार आदमी। उसने वक्वादियो के लिये नही, बल्कि सेना के लिये विशेष रूप से तैयार किया गया बहुत बढिया विश्लेषण प्रस्तुत किया। इसलिये, मेरे बेटे, अगर युद्ध शुरू हो गया, तो तुम्हारी ये सभी कृत्रिम प्रोटीन जहा की तहा धरी रह जायेगी "

सच? वोलोद्या ने उदासी से पूछा।

निश्चय ही। अगर सभी देशो के साम्राज्यवादी बाधा न डालते, तो विज्ञान यकीनन बहुत आगे बढ गया होता।"

अफानासी पेत्रोविच ने अपनी फौजी कमीज के कालर का बटन खोला घडी भर का विचारो म डूब गये और फिर उदासी और साथ ही कुछ झेंप भरी मुस्कान के साथ बोले—

'हमारा वश अच्छी तरक्की कर रहा है। तुम्हारे दादा खार्कोव म गाडीवान थे मैं एक फौजी हवाबाज हू, एक रेजीमेंट का कमाडर। और मेरा बेटा कृत्रिम प्रोटीनें बनायगा, वैज्ञानिक बनेगा। बडे दुख की बात है कि आज तुम्हारी मा इस दुनिया मे नही है, वरना उसे बहुत खुशी होती। अच्छा अब मुझे और कुछ बताओ अपने बारे म।'

आधी रात बीतने के बाद तो वोलोद्या सचमुच ही बहुत बढ चढकर बात करने लगा। कोरे सपनो को उसने सामान्य वैज्ञानिक तथ्य बताया और बहुत दूर भविष्य की कल्पनाओ को वास्तविकता के रूप म प्रस्तुत

किया। उसके पिता गहरी सास लेते, मगर उनकी आखो मे खुशी की चमक झलकती रही।

"हमारे यहा एक फौजी इजीनियर है–प्रोनिन," सहमा टोकते हुए अफानासी पेत्रोविच ने कहा। "वह खासा अच्छा आदमी है, अपने काम मे बडा समझदार और होशियार। पर बहुत देर तक उसकी बाते सुनना खतरनाक चीज है।"

"क्यो?" वोलोद्या ने पूछा।

"इसलिये कि वह धरती की ओर तो देखता ही नही, आसमान पर ही उसकी नजर रहती है। लेकिन रास्ते मे गढे और दूसरी बहुत-सी चीजे भी हो सकती है अगर उनमे तुम्हारा पाव पड जाये, तो जूतो को साफ करने की जरूरत होती है। बेटे, अब तुम्हारा सोने का वक्त हो गया।"

अफानासी पेत्रोविच न बेटे के चेहरे पर निराशा की झलक देखी। वे बोले–

"फिर भी हमेशा ज़मीन पर नजर गडाये रहने की अपेक्षा बहुत दूर देखना कही बेहतर है। पर ज़मीन की ओर देखना भी ज़रूरी होता है।"

सुवह वोलोद्या को अपने पिता का लिखा हुआ एक पुर्जा और कुछ रकम मिली। पुर्जे मे लिखा था कि वोलोद्या "कृत्रिम प्रोटीना का जल्दी से जल्दी उत्पादन करने के लिये," सभी जरूरी किताबे और अन्य चीजे खरीद ले। उसके नीचे हस्ताक्षर थे–"अ० उस्तिमेको" और पुनश्च मे इतना और जोड दिया था–"इस बीच एक मेहनतकश नागरिक की तरह स्कूल मे अच्छी तरह पढाई करो। मुझे विश्वास है कि तुम निराश नही करोगे।"

ककाल बिकाऊ नहीं

खासी बडी रकम थी यह–तीस रूबल के नोटो की एक गड्डी और छोटे नोटा की दो गड्डिया। यह दौलत तो जैसे आसमान से आ गिरी थी। वोलोद्या ने बाहर जाकर फौरन वह चीज़ खरीदने का फैसला किया, जिसका वह एक लम्बे अर्से से सपना देखता रहा था।

कुछ ही समय पहले शहर के बाज़ार के नज़दीक स्कूली चीज़ो की दुकान खुली थी। यह जगह [illegible] ही थी। यहा वालोद्या

को गम कचौरियो के खोमचेवाले के निकट वार्या खडी दिखाई दी।
वह मास और पत्तागोभी की दो कचौरियो को जोडकर एकसाथ खा
रही थी। उसके बूट और स्केटस फीते के सहारे उसकी बाह पर लटक
रहे थे। स्केटिंग रिंक की ऊची बाड के पीछे बैंड बज रहा था।
कचौरी खाओगे?" वार्या ने ऐसे सामान्य ढग से पूछा मानो वे
एक ही दिन पहले मिले हो। "अच्छी बनी हुई हैं। मुझे इस तरह की
कचौरिया और खास तौर पर दो तरह की कचौरिया एकसाथ खाना
बहुत पसन्द है।"

वार्या की टोपी कचौरिया और उसके कोट की आस्तीन पर
बडे-बडे और भारी हिमकण पड रहे थे।

'रिंक पर बर्फ फिर से नम हो जायेगी न, वोलोद्या? कैसा
निकम्मा जाडा है इस साल।' वार्या ने गौर से वोलोद्या को देखते
हुए कहा–

अरे तुम तो बिल्कुल मोटा हो गये हो।"
बाड के पीछे छन छन ताशे बज रहे थे।
"स्केटिंग कर चुकी हो?" वोलोद्या ने पूछा।
'हा।' वार्या ने यह मानते हुए कि उनकी यह मुलाकात न जाने
किस करवट बैठ जाये झूठ बोल दिया और धडकते दिल से सोचा–
"ओह कितना अधिक प्यार करती हू मैं इसे। यह तो शोभा भी नही
देता।'

आओ चलकर कंकाल खरीद लायें," वोलोद्या ने कहा।
क्या?"

"कंकाल, मानव का अस्थिपंजर। स्कूली चीजो की दूकान के शोकेस
मे मैंने देखा है।

'स्कूल के लिये?'
'किस स्कूल के लिये?" वोलोद्या ने झटपट कहा। "अपने लिये।"
तुम्हारा मतलब है तुम खुद अपने लिये खरीदना चाहते हो?"
वार्या ने उगली से उसकी तरफ इशारा किया।

वे दोना चल दिये। पर जब वे दूकान पर पहुचे, तो पता चला
कि वोलोद्या ने जैसी आशा की थी, स्थिति उससे बिल्कुल भिन्न है।
गजे सिर और खुश्क मिजाज विक्रेता ने जिसके मुह मे सोने के बहुत-से

दात थे, उन्हे बताया कि मानवो और जानवरो के व
सस्थाओ को बेचे जाते हैं, सो भी लिखित आवेदन-
पैसे लेकर नही। किसी व्यक्ति को ऐसा ककाल नही
"अगर वह वैज्ञानिक हो, तो?" वार्या ने बोल
किया। बाते करने मे वह बहुत तेज़ थी।
"वैज्ञानिक अपनी विज्ञान-सस्थाओ के ज़रिये ह
"अगर उसका किसी विज्ञान-सस्था से सम्बन्ध
"तब उसे इक्का-दुक्का व्यक्ति माना जायेगा,"
दातो की चमक दिखाते हुए कहा।
"आप क्या समझते हैं कि हम आपके इस गले
कमाई करने का इरादा रखते हैं?" वार्या ने गुस्से
आदमी को इसकी जरूरत हो तो? अगर किसी न
जीवन समर्पित कर दिया हो, तो वह क्या करे?
वोलोद्या दूकान से बाहर आ गया। उस शम अ
क्या लडकी है यह वार्या! हमेशा उलझने को तैय
इन्तजार करता रहा, करता रहा, मगर वह बाहर
बीसेक मिनट बाद वोलोद्या फिर दूकान म गया।
बडी-बडी और बचकाना लिखावट में शिकायतो
लिख रही थी। वोलोद्या ने उसके पीछे खडे होक
"नकद पैसे लेकर ककाल बेचने से इनका
धृष्टता "
"वार्या, यह क्या लिख रही हो!" वोलोद्या ने
"हटाओ भी, तुम मत होओ," उसने फौरन
"मगर यह तो हास्यास्पद लगता है!"
"बडी धृष्टता या इससे भी कुछ अधिक बुराई
लिखती गई।
"बुराई नही, बुरा," वोलाद्या ने फुसफुसाकर
"खुद समझ जायेंगे!" वार्या ने कहा। "खैर,
वोलोद्या। मुझे बात की तह तक पहुचने दो।"
उसके गाल तमतमाये हुए थे। उसके छोटे-से कान

इस तरह कवाज खरीदने का प्रयास असफल रहा। इसके बजाय वोलोद्या ने गिरजाघर के करीब दसवें अक्तूबर चौक में पुरानी किताबों की दुकान से शरीर रचना विज्ञान-सम्बन्धी एक साफ-सुथरी और सस्ता एटलेस खरीद ली। यह १६०० का संस्करण था। वार्या उसके साथ साथ चल रही थी उसके स्केट्स टनटना रहे थे और टोपी खिसककर कुछ टेढ़ी हो गयी थी। वह नौकरशाही की चर्चा करती हुई गुस्से से लाल पीली हो रही थी। वह कह रही थी कि नौकरशाही अभी भी हर जगह साफ दिखाई दे रही है और अतीत के इन भयानक अवशेषों के विरुद्ध डटकर संघर्ष करने की जरूरत है।

तुम्हारे पिता खत तो लिखते हैं न?" वोलोद्या ने पूछा।

'पिछले इतवार को एक खत आया था', वार्या ने जवाब दिया। उसने नौकरशाही की चर्चा बन्द करते हुए वोलोद्या को बताया कि शायद वह मास्को से आये आर्ट थियेटर द्वारा प्रस्तुत किये जानेवाले "चाचा वान्या' नाटक के दो टिकट खरीद पायेगी। "थियेटर के कलाकार तो यहां आ भी चुके हैं 'मोस्कवा' होटल में ठहरे हैं' वार्या ने कहा। ज़ीना नियूवावा ने दो को देखा भी है। वह निश्चयपूर्वक तो नहीं कह सकती कि वे कौन थे मगर साथी क्चालोव और साथी लिवानोव हो सकते हैं। वे दोनों फर के अस्तरवाले कोट पहने थे। तुम क्या फिर से कुछ सोच रहे हो?'

'तुम्हारा यह थियेटर का शौक तो निरी सनक है,' वोलोद्या ने कहा। "वार्या तुम मुझे गम्भीरता से बताओ कि इस कला की किसे जरूरत है? बिल्कुल बेमानी, वक्त की बरबादी मानसिक शक्ति का अपव्यय, एकदम पागलपन है।'

उनमें फिर से कुछ झगडा हुआ, मगर बहुत अधिक नहीं। उस रविवार को वार्या ने वोलोद्या में उस गुण को देखा जो अभी तक बड़ा उम्र के, समझदार और पढ़े लिखे लोगों की नजर से चूक गया था। उसने अनुभव किया कि वह कोई मामूली व्यक्ति नहीं है। वह सुखद आश्चर्य को गुदगुदाती हुई अनुभूति के साथ वोलोद्या की "याद' में दाखिल हुई, जहां बहुत समय से नहीं गई थी। लड़खड़ाती हुई कुर्सी पर बैठकर वह हैरानी से मुंह बाये हुए पस्तर और कोख, पाव्लोव और मेच्निकोव, पिरोगोव और जाखारिन के बारे में उसकी बातें

सुनने लगी। वोलोद्या ने उसे यह भी बताया कि कैंसर का इलाज करन की क्या सम्भावनाएं है, कृत्रिम प्रोटीनें बनाना कहा तक मुमकिन है। वह वोलोद्या के साथ शाम का खाना खान के लिये ठहर गई।

"वोलोद्या, मेरा तो सिर चकराने लगा है," शोरबा खाते हुए वार्या ने कहा।

"किस कारण ?"

"इसलिये कि तुम पूरे तीन घटो से लगातार बोलते जा रहे हो।"

"यही ता मै कहती हू!" बूआ अग्लाया व्यगपूर्वक से चिल्लाई। "तुम तो कुछ देर बाद घर चली जाओगी, पर मेरी बात पूछो तो? मैं काम से थकी हारी लौटती हू, मेरा सिर फटता होता है और यह शुरू हो जाता है अपना कीटाणुओ का राग अलापने!"

पर खैर, वोलोद्या वार्या के साथ "चाचा वान्या' नाटक देखने गया। मास्को आर्ट थियेटर के कलाकारा न नगर मे ऐसी हलचल पैदा कर दी थी कि वोलोद्या और वार्या को नये सस्कृति भवन के सामने जमा भीड को चीरते हुए बडी मुश्किल से अपना रास्ता बनाना पडा। वे अभी सस्कृति भवन से काफी दूर ही थे कि लोग उन्ह रास्ते मे बार-बार रोककर पूछते— कोई फालतू टिकट है? इन लोगो के चेहरा पर परेशानी झलकती और बार-बार लोगा से प्रश्न पूछने के कारण उनकी आवाजें खरखरी हो गई थी। इन दोना का फौजी वर्दी पहने हुए एक बुजुर्ग के लिये तो सचमुच बहुत ही अफसोस हुआ, जिसने बडी हताशा के साथ कहा कि मैं अपने लिये नही, बल्कि अपनी बेटी के लिये टिकट की "भीख माग" रहा हू।

"यह जनता का जनून है," वोलोद्या ने कहा। "प्रसिद्ध त्साइपेलिन ने इसके बारे मे कुछ लिखा है।"

वार्या ने अपनी आह को भीतर ही भीतर दबाते हुए साचा—"तो अब त्साइपेलिन आ धमका।"

इन दोना की सीटें छज्जे की पहली कतार म थी। वोलोद्या ने कार्यक्रम की एक प्रति खरीदी और उस पर नजर डाले बिना ही उसे वार्या को पकडा दिया। फिर उसने अपनी श्रेष्ठता की अनुभूति के साथ स्टाला और खचाखच भरे बक्सा की ओर देखा।

आखिर हल्की-सी सरसराहट के साथ पर्दा हटा और करिश्मा शुरू हुआ। बस अगर सतही तौर पर देखा जाये, तो उस्तिमे को हवाबाज के बेटे वोलोद्या को भला इस बात से क्या लेना देना था कि सोया, चाचा वान्या और डाक्टर आस्त्रोव के साथ क्या बीत रही थी। वे तो एक दूसरे युग एक ऐसी दुनिया के लोग थे, जिनसे न तो वोलोद्या और वार्या का न उनके पिता और शायद न ही उनके दादाओ का कभी वास्ता पडा था। वालोद्या ने इस बात के लिये एडी चोटी का जोर लगाया कि वार्या के सामने वह एक मद के अनुरूप अपनी गरिमा और गम्भीरता बनाये रहे। उसने दस तक गिनती की, अपने दातो को इतने ज़ोर से भीचा कि उनम दद होने लगा, वह तरह-तरह की दूसरी बातो के बारे मे सोचता रहा, पर कम्बख्त आसू, नादान और बेतुके आसू बहते ही रहे और उनम से एक तो वार्या के हाथ पर भी जा गिरा जब उसने कायनम लेने के लिये हाथ बढाया। अन्तिम अक म वोलोद्या की धीरता गम्भीरता पूरी तरह हवा हो गई। अब वह न तो दस तक गिनती करता था न दात भीचता था, बल्कि अपने को आग की ओर झुकाये और गुस्से से उबलते हुए मानव जीवन की यातनाओ का दृश्य देख रहा था और मन ही मन कुछ करने की कसम खा रहा था। वह पसीने स तर अपनी मुट्ठियो को भीच रहा था और लगातार उमडते आ रहे आसुओ को पोछ रहा था

अन्तिम अक लगभग समाप्त हो चुका था जब वोलोद्या की बगल म सरसराती रेशमी पोशाक पहने बैठी प्रौढा अचानक चीख उठी और वहाशी की-सी हालत म कुछ बडबडाने लगी। वोलोद्या ने उसे चुप रहने का सकेत किया मगर वह बडबडाती रही और उठने लगी। अन्य लोगो ने भी सी-सी की पर वह चीख उठी। खुशकिस्मती ही कहिये कि नाटक खत्म हो चुका था। आसुओ स तर आखो के बीच से वोलोद्या का उस नारी का फक हुआ चेहरा और विकृत मुह दिखाई दिया। वह पूरे जोर स चीखने ही वाली थी।

चूहा! चूहा! चूहा! हरी पोशाक पहने हुए एक अन्य नारी चिल्लाई।

इसम इस तरह उत्तेजित होने की क्या बात है?" पास बैठा हुई महिला के घुटने पर से अपना पालतू सफेद चूहा उठाते हुए वोलोद्या

ने कहा। "इसमे डरने की कौन-सी बात है? मैं आज उसे खिलाना-पिलाना भूल गया। वह ऊब के मारे बाहर निकल आया।"

पर खैर, उसे मिलिशियामैन के पास ले जाया गया। संस्कृति भवन के छज्जे की पहली कतार में वोलोद्या की बगल मे बैठे लोगो के दिल कला के प्रभाव से नम नही हुए थे। "चाचा वान्या" नाटक मे लगातार आसू बहाने के बाद अब उन्होंने बडी कठोर आवाजो मे बुजुर्ग मिलिशिया-वाले को यह बताया कि इस नौजवान ने दुर्भावना से शरारत की है। मिलिशियावाले ने उनके बयान लिख लिये। वार्या एक कोने मे बैठी हुई आख मारकर वोलोद्या का उत्साह बढा रही थी। वह अपने को किसी चीज के लिये अपराधी अनुभव कर रही थी।

लोगो की शिकायतें दर्ज करने और उनके चले जाने के बाद मिलिशियामैन ने वोलोद्या से चूहा दिखाने को कहा।

"यह रहा!"

"अरे, सफेद चूहा!"

"मेरे पास तो ऐसे बहुत-से है," वोलोद्या ने उसे बताया। "अपने तजरबो के लिये। मगर मुझे उनके लिये दुख होता है। वे बहुत समझदार है और यह पालतू है। लीजिये, इसे हाथ मे ले लीजिये।"

मिलिशियावाला घडी भर के लिये चूहे को अपनी लाल-लाल हथेली पर टिकाये रहा, फिर उसने वोलोद्या से पूछा कि वह अपने चूहा को क्या खिलाता पिलाता है और बिना किसी झझट के उसे जाने को कहा।

"धन्यवाद, साथी अफसर," वार्या ने कहा। "इस चीज मे सारा मजा ही किरकिरा हो गया। नाटक इतना बढिया था और फिर अचानक बात का बतगड बनाते हुए लोग हमे आपके पास खीच लाये।"

मूछोवाला मिलिशियामैन बहुत ध्यान और कडी नजर से वार्या के चेहरे को देख रहा था। वार्या जब अपनी बात कह चुकी, तो उसने पूछा –

"यह बताओ कि तुम्हारा चेहरा मुझे जाना-पहचाना क्यो लग रहा है?"

"आप उस मारपीट को भूल गये, क्या?"

"मैं सभी मार-पीटो को तो याद नही रख सकता," उसने जवाब दिया। "मेरे पेशे मे तो "

पर वह मार पीट तो अभी कल ही स्केटिंग रिंक पर हुई थी। कल ही। निश्चय ही आप उसे तो नहीं भूल होंगे?"

वार्या ने जरा झपते हुए उन्हे बताया कि बस एक दिन पहले स्केटिंग रिंक पर लडके आपस में उलझ पड़े थे। चूंकि किसी ने उन्हें अलग करने की कोशिश न की, इसलिये वही बीच में जा धमकी और इसलिये खुद उसे भी कुछ घूसे लग गये। पर वह जरा भी नहीं डरी और उसने फिर से उन्हें अलग करने की कोशिश की और खुद भी जोर से चीख उठी। उसकी चीख सुनकर फौरन लोग मदद को आये

'आह, तो तुम स्तेपानोवा हो ' मिलिशियामैन ने कड़ाई से कहा। स्तेपानोवा वार्या। अच्छा, तुम लोग जा सकते हो।"

घर लौटते हुए वार्या ने फिर से अपने मनपसन्द विषय, अर्थात थियेटर की चर्चा शुरू कर दी। उसने कहा कि मेरी दृष्टि में तो मास्को आर्ट थियेटर अपनी आखिरी सांस ले रहा है। व्सेवोलोद मेयरहोल्द का रंग भी फीका पड़ गया है। मसलन, उसका "कैमेलिया के फूलवाली महिला' नाटक उसके "अन्तिम टक्कर' जैसा नहीं था।

"क्या तुमने ये नाटक देखे हैं?' वालोद्या ने पूछा।

'मैंने नाटक देखे तो नहीं, पर उनके बारे में पढ़ा है" वार्या ने उत्साह से कहा। 'मैं पत्र-पत्रिकाएं पढ़ती रहती हूं और नाटक सम्बन्धी समीक्षाओं की पूरी जानकारी रखती हूं। इसके अलावा हम अपनी नाटक मंडली में भी बहुत-सी बातों पर विचार विनिमय करते रहते हैं।

बड़ी अजीब-सी रात थी यह! वे किसी चीज पर सहमत नहीं थे, मगर फिर भी जुदा होना नहीं चाहते थे। वे टहलते रहे, बेंच पर बैठे रहे, ठंड से ठिठुरे और लगातार यह अनुभव करते रहे कि वे एक दूसरे के बिना रह ही नहीं सकते। मगर क्यों? उन्हें यह मालूम नहीं था

इन्सान सब कुछ कर सकता है

सभी तरह की कठिनाइयों के बावजूद वोलोद्या उस्तिमेन्को दसवें दर्जे में पहुंच गया। अध्यापकों की अगली बैठक में उसके बारे में बहुत कुछ कहा गया। स्मोरोदिन ने तो खास तौर पर बहुत नाराजगी जाहिर

की। इस बूढे अध्यापक ने तो ऐसे अनुभव किया, मानो उसके साथ विश्वासघात किया गया है। "ज़रा कल्पना तो कीजिये!" उसने चिल्लाकर कहा। "जरा कल्पना तो कीजिये कि उस कच्ची अक्ल के छोकरे ने मुझसे क्या सवाल पूछा था! उसने पूछा था कि साहित्य से क्या लाभ है? वह मानव को केवल दुबल बनाता है! फिर उसने 'चाचा वान्या' के बारे में, जिसे उसने देखने की मेहरबानी की थी, पूरा सिद्धान्त प्रतिपादित कर डाला था।"

अन्य अध्यापको ने भी वालोद्या के सम्बन्ध मे बहुत कुछ बुरा भला कहा। स्कूल को उस पर गर्व हो सकता था, मगर इसके बजाय वह अब एकदम नीचे चला गया था। किन्तु सबसे बुरी बात तो थी उसका रवैया, उसकी उदासीनता। ऐसा क्यो था? क्या कारण था इसका?

बूढी आन्ना फिलीप्पाव्ना ने वोलोद्या का पक्ष लिया। उसने कहा कि वोलोद्या इतना बुरा नही है और उसमे बहुत सी खूबिया भी हैं। उसके गुण की ओर से आख मूद लेना उचित नही। पर कुल मिलाकर (आन्ना फिलीप्पोव्ना ने ज़रा सहमते हुए पाठ्यक्रम विभाग की डायरेक्टर तात्याना येफीमोव्ना की ओर देखा, जा नाखुश दिखाई दे रही थी), कुल मिलाकर, वालोद्या हाथ से निकल गया है, बहुत ही बेलगाम हो गया है और उसे ठीक करने के लिये फौरी कदम उठाना ज़रूरी है

"कहते हैं कि वह प्राकृतिक विज्ञानो मे उलझा हुआ है," भौतिकी के अध्यापक येगोर अदामोविच ने कहा, जिसे छात्र केवल अदाम कहते थे। "मैं इस बात को निरी बकवास मानता हू। विज्ञान मे दिलचस्पी रखनेवाले लडके अपनी कक्षा की खिडकी से बाहर नही कूदा करते और अपने मित्रो को ऐसी गुडागर्दी के लिये कभी नही उकसाते। ज़रा ख्याल तो कीजिये—'चपायव के साथियो, चलो मेरे पीछे!' चिल्लाकर वह मूख और ऊट का ऊट खिडकी से बाहर कूद गया तथा उसके पीछे "

तात्याना यफीमोव्ना ने पेंसिल से मेज खटखटाई। वह नही चाहती थी कि बैठक का ध्यान खिडकी से कूदनेवाली घटना पर केन्द्रित हो। कारण कि उसका अपना बेटा भी कूदनेवालो मे शामिल था। यह सोचते हुए कि अदाम हमेशा ही व्यवहारकुशलता की कमी का परिचय देता है, उसने वोलोद्या के पक्ष मे कुछ कहने का निणय किया।

"बात यह है कि लड़के की मा नही है, जो उसकी देखभाल करती, और अगर सच कहा जाये तो उसका बाप भी नही है," उसने कहा। 'उसकी बुआ की नौकरी बहुत जिम्मदारी की है और वह उसकी देखभाल के लिये बहुत समय नही दे सकती। जाहिर है कि उसकी गणित की अध्यापिका के नाते मैं भी यह नही कह सकती कि मैं उससे सतुष्ट हू मगर '

प्रत्येक अध्यापक अध्यापिका के स्वाभिमान को वालोद्या की गतिविधि से ठेस लगी थी और इसे ही वे व्यक्त कर रहे थे। उनमे से किसी ने भी यह नही सोचा (जैसा अध्यापकगण अक्सर करना भूल जाते हैं) कि लड़का किसी मुश्किल म पड गया, कि वह किसी तरह के गडबड-झाले में उलझ गया है कि यह ऐसा गडबड-झाला नही है, जिसम बुद्धू किस्म के आलसी छोकरे उलझ जाते हैं बल्कि ऐसा है, जिसमे कभी-कभी प्रतिभाशाली बालक फसकर रह जाते हैं।

अध्यापकों की बैठक ने यह तय किया कि वोलोद्या के पिता से इस मामले पर बातचीत की जाये अगर पिता कही बाहर गये हुए हो, तो वोलोद्या की बूआ अग्लाया पेत्रोव्ना से बातचीत कर।

अग्लाया पेत्रोव्ना अगले ही दिन स्कूल मे आई। बदमिज़ाज तात्याना येफीमोव्ना बूआ से रुखाई से मिली। दफ्तर की खिडकिया पर बरसात की बूदे टपाटप ताल दे रही थी। बाहर खडजा पर जाते हुए ठेल की नीरस खटखडाहट सुनाई पड रही थी। तात्याना येफीमोव्ना नकियाती आवाज़ म बोलती थी और अपनी नाक सिनकती जाती थी। उसे मामूली-सा जुकाम था जिसे वह "इन्फ्लूएंज़ा" कहना अधिक पसन्द करती थी।

'मैं इस चीज़ से इनकार नही कर सकती कि आपका भतीजा लायक है' तात्याना येफीमोव्ना ने कहा। 'लेकिन यह उसी के लिये घातक सिद्ध हो रहा है। आइये, हम यह मान ले कि वह प्राकृतिक विज्ञानो मे गहरी दिलचस्पी ले रहा है। बहुत अच्छी बात है! मगर वह अकेला ही तो ऐसा नही है! आज हमारे विस्तृत देश के हज़ारो युवा नागरिक अपने रेडियो सेट या हवाई जहाज़ो के माडेल बना रहे हैं। फिर भी वे अपने दिल दिमाग का विकास करने के लिये सभी कुछ करते हैं "

बूआ अग्लाया ने अचानक जम्हाई ली। तात्याना येफीमोव्ना ने यह देखा, तो बुरा मान गई।

"बेशक यह सही है कि आप भी जन शिक्षा के क्षेत्र मे काम करती हैं, पर आप हाल ही म वहा काम करने लगी हैं। जिस मजदूर किसान निरीक्षण-सस्था म आप पहले काम करती थी, उसकी कुछ अपनी विशेषताए थी। सयोगवश यही बात युवा किसानो के उन स्कूलो के बारे मे भी कही जा सकती है, जिनका आप अब सचालन करती हैं "

"मै सहमत हू," अग्लाया पेत्राव्ना ने उदासीनता से कहा। "मगर युवा किसानो के स्कूल भी है तो सोवियत स्कूल ही।"

"और हमारा भी कोई जारशाही के वक्त का हाई स्कूल या धममठ का स्कूल नही है। यह बहुत बढिया सोवियत स्कूल है "

"ओह, मैं यह जानती हू!" बूआ अग्लाया ने हताश होते हुए कहा। "आइये, हम इस तरह की आम बातो मे समय बरबाद न करे। मेरे ख्याल मे आपने किसी जरूरी काम से मुझे बुलाया है।"

"मैंने आपको एक अप्रिय बात कहने के लिये बुलाया है," तात्याना येफीमोव्ना ने कहा। अब वह पूरी तरह से आपे से बाहर हो रही थी। "अगर आपका भतीजा अपने को नही सम्भालता या यह कि आप उसे नही सम्भालती, अगर वोलोद्या अपने स्कूल की इज्जत की सच्ची चिता नही करेगा, अगर वह यह नही समझेगा कि इक्की-दुक्की प्रतिभाओ का विकास करना हमारा काम नही, तो "

"तात्याना येफीमोव्ना, आपने मुझे यह बताने के लिये नही बुलाया है," बूआ अग्लाया ने उसे टोका। "वोलोद्या ने खुद ही मुझे यह बताया था कि किसी दूसरे ही कारणवश मुझे बुलाया गया है। अगर मैं गलती नही करती, तो कारण यह है कि भौतिकी के पाठ के बाद लडके खिडकी से बाहर कूदे थे।"

तात्याना येफीमोव्ना की आखें झुक गइ। उसने यह तो सोचा तक नही था कि वोलोद्या ने यह सारा किस्सा अपनी बूआ को कह सुनाया होगा। इसम तो उसका अपना बेटा भी शामिल था।

"खिडकी मे से बाहर कूदना तो महज शरारत हुई," तात्याना येफीमोव्ना ने शान्त रहने की कोशिश करते हुए कहा। "यह बहुत दुखद बात हो सकती है, पर है शरारत ही। फिर भी जब मैंने आपके

भतीज से यह पूछा कि इस शरारत के लिये सबसे अधिक ज़िम्मेदार कौन है तो उसने साफ साफ और कुछ हद तक गुस्ताखी के साथ भी उकसानेवाले का नाम बताने से इनकार कर दिया।"

मुझे इस बात का अफसोस है कि वह गुस्ताखी से पेश आया, मगर यह अच्छा ही है कि चुगलखोर नही है," तात्याना येफीमोव्ना की आखो मे झाकते हुए अग्लाया पेत्रोव्ना ने कहा। "मैं समझती हू कि जो व्यक्ति स्कूल मे चुगलखोर होता है उस पर युद्ध-क्षेत्र मे कभी भरोसा नही किया जा सकता।"

'तो यह बात है?'

'हा बिल्कुल यही बात है," बूआ अग्लाया ने रुखाई से जवाब दिया। फिर भी इस विषय पर लोगो मे मतभेद पाया जाता है। जो और भी ज्यादा दुःख की बात है।"

लाल लाल गालो और गदराये बदनवाली अग्लाया उठकर खडी हो गई। उसकी सकरी काली आखें मानो मजाक उडाती हुई चमक रही थी।

'आपका मतलब है कि अपनी अध्यापिका के साथ खुलकर बात करना तात्याना येफीमोव्ना ने कहना शुरू किया पर बूआ अग्लाया ने उसे टोक दिया—

"खुलकर बात करना एक चीज है और चुगलखोर होना दूसरी चीज़। इधर उधर आहट लेना खबरे पहुचाना और चुगली खाना, यह बहुत घृणास्पद आदत है। आपको यह कोशिश करनी चाहिये कि छात्र एक दूसरे के सामने निडरता से सचाई कह दें, न कि यह कि वे यहा दफ्तर मे चुपचाप आकर, चोरी चोरी कुछ बात आपके कानो मे डाल जाया करे अच्छा नमस्ते।'

तात्याना येफीमोव्ना ने कोई उत्तर नही दिया और बूआ अग्लाया ने सोचा— आह लोगो को अपना दुश्मन बनाना भी कोई मुझसे सीखे।'

बाहर आकर वह गुस्से से बडबडाई—"बडी आई है पाठ्यक्रम विभाग की अध्यक्षा। बुद्धू कही की।"

वालोद्या घर पर ही था। वह दूध पीता हुआ गलग्रन्थि के बारे मे कुछ पढ़ रहा था। उसे तो याद ही नही रहा था कि उसकी बूआ को स्कूल मे बुलाया गया है। उसकी आखें खुशी से चमक रही थी।

"बूआ अग्लाया, यह गलग्रन्थि तो सचमुच बडी अजीब चीज है!" वोलोद्या न कहा। "आप सुन रही है न! है न यह आश्चय की बात।"

वोलोद्या के गुलाबी होठो पर दूध की हल्की रेखाए बनी हुई थी और उसकी आखो में खुशी की हल्की-हल्की चमक दिखाई दे रही थी। कुल मिलाकर, वह अभी भोला भाला और कच्ची अक्ल का छोकरा था। अग्लाया उसके नज़दीक गई, उसका सिर झुकाया और उसकी गुद्दी चूम ली। इस तरह खुलकर तो वह साल मे एक दो बार ही प्यार करती थी।

"अगले साल ऐसा कुछ नही होना चाहिये," बूआ अग्लाया ने यथासभव कडाई के साथ कहा। "सुना, तुमने वालोद्या?"

"क्या नही होना चाहिये?" वोलोद्या ने खाये-खाये पूछा।

"मेरा मतलब कक्षा की खिडकियो से छलागें मारने और बुरे अक लेन से है। वादा करते हो?"

"हा, वादा करता हू," अभी भी अपने ही ख्यालो मे उडानें भरते हुए वोलाद्या ने जवाब दिया। "पर आप गलग्रन्थि के बार मे मेरी बात नही सुन रही है।"

"मैं सुन तो रही हू, मगर अच्छी तरह से नही। मुझे काम पर जाना है। तुम तो जानते ही हा कि वहा लोग मेरा इन्तजार कर रहे हागे।"

"तो खैर, जाइये।"

"अनुमति दने के लिये धयवाद," बूआ अग्लाया न सचित मुस्कान के साथ कहा। "तुम्हारे दिमाग मे यह पूछने का कभी याल नही आयेगा कि बूआ अग्लाया, कौन आपका इतज़ार कर रहा है, क्या नया हालचाल है, कल आप इतनी निश्चित थी, पर आज फिक्र मे क्यो डूबी हुई हैं? आह, तुमसे ऐसी आशा करना बेकार है। देखना, कही मैं बुढापे म किसी से प्यार और शादी न कर बैठू। कही, तुम्ह अकेले ही न छोड जाऊ!"

"आज उन्हे हुआ क्या है?" वोलोद्या न कुछ हैरान होते हुए घडी भर को सोचा। पर फौरन ही वह फिर से अपनी किताबा म खो गया, जा कुछ इसी समय पढा था, उस पर विचार करने लगा। उसे दीन-दुनिया की खबर न रही।

गर्मी लगभग आ गई थी। हवा बादलो को ले उडी थी और खुल खिडकी के बाहर श्रीदारु के वक्ष एक-दूसर से अपने दिल की बातें कह रहे थे आपस म खुसुर-फुसुर कर रहे थे। घटो तक वह दुनिया से वेखबर फिर अपनी किताबो मे खोया रहा। वोलोद्या का खाना गम करन को मन नही हुआ, इसलिये उसने थोडी डबल राटी खाकर कुछ दूध पी लिया जा जरा-जरा खट्टा भी हो चुका था। उसे इस बात की हैरानी हुई कि अधरा होने लगा था और बत्ती जलाने की ज़रूरत हो गई थी। थाडी देर बाद येव्गेनी स्तेपानोव परेशान सा उसके यहा आया। वह कुछ क्षण तक सफेद चूहो से खेलता रहा, लडखडाती दोलन-कुर्सी पर बठा हुआ झूलता रहा और फिर शिकायत के लहजे म बोला–

'मैं वड चक्कर म हूँ, मेरे दोस्त।'

'क्या मतलब है?"

मरे अन्नदाता ने मुझे खत लिखने की मेहरबानी की है। उन्होंने सलाह दी है कि मैं नौसेना की अकादमी म भर्ती हो जाऊ।"

'तुम्हारा मतलब यह कि रोदिओन मेफोदियेविच का खत आया है?

"हा उन्ही का।

तो फिर परेशानी क्या है? हो जाओ भर्ती।'

पर तुम समझते क्यो नही कि यह मुश्किल काम है?"

वोलोद्या ने कधे झटके।

खत म कविता की कुछ पक्तिया भी है" जेब स एक मुडा मुडाया लिफाफा निकालते हुए येव्गनी ने कहा। "'सागर गजन' जब भडक उठता है ता वडी परेशानी पदा करता है।"

यव्गेनी ने सरसराहट के साथ कागज़ खोल और पढा–

नही किया अपराधा, चोटा का दुश्मन की क्षमा कभी
सघर्षो का झण्डा तुम ता बार-बार हो लहराते,
बाल्टिक की लहर, तवरीदा के तट भावी पीढी
अब ता मनमाहक भावक किस्सा क हित रचते जाते।

तो इगम क्या बात है? वोलाद्या न पूछा।

"मैं कोई मनमोहक, आकर्षक किस्सा उत्तराधिकार मे नही पाना चाहता। समझे?" येव्गेनी ने मुस्कराते हुए जवाब दिया।

उसन खत को ढग से लिफाफे मे डाल लिया, गहरी सास ली और बोला—

"न जाने सघर्षों के किस झण्डे की यहा चर्चा है? क्रान्ति तो कभी की सपन्न हो चुकी है। ठीक है न? मालूम नही उन्हे और क्या चाहिये?"

वोलोद्या तो यही चाह रहा था कि येव्गेनी चलता बने। किसलिये वह लोगो के घरो म जाकर उन्हे परेशान करता रहता है? क्या उसे अपना व्यक्तित्व इतना नीरस लगता है? मगर येव्गेनी ने जान का इरादा जाहिर नही किया। वह दोलन-कुर्सी पर झूलता रहा और उसने अपनी शिकायते जारी रखी—

"वात यह है कि मेरी अपनी कोई दिलचस्पिया नही हैं। मैं अभी तक अपने को खोज नही पाया।"

"खोज लोगे!"

"क्या खोज लूगा?"

"जो अब तक नही खोज पाये। मैं भी यही कह रहा हू कि तुम खोज लोगे।"

येव्गेनी को यह बुरा लगा, पर थोडी देर के लिये ही।

"मैं तो तुम्हे दोस्त मानकर तुम्हारे पास आया हू और तुम कान भी नही देते," उसने कहा। "मैं खुद को नही खोज पाया हू।"

"ओह, मैं अब समझा," वालोद्या ने अस्पष्टता से कहा और मन ही मन लगभग यह प्राथना करने लगा—"जाओ यव्गेनी, जाओ भले लडके।"

मगर येव्गेनी नही गया। वास्तव मे उसके लिये जाने की कोई जगह ही नही थी। उस दिन वह अपने मनवहलाव के सभी तरीके आजमाकर देख चुका था। वह दो फिल्मे देख चुका था, चिडियाघर मे जाकर नवागत जिराफ को देख आया था, कई आइसक्रीमे खा चुका था और निशानेबाजी कर आया था।

"वार्या न मुझे बताया है कि तुमने वडा आदमी बनने का इरादा बना लिया है। यह सच है क्या?"

'क्या मतलब है तुम्हारा ?'

सुना है कि तुमने विज्ञान पर धावा बोल दिया है ?"

तुम्हारा दिमाग चल निकला है क्या! धावा बोलने से क्या मतलब है तुम्हारा ? मुझे विज्ञान दिलचस्प लगता है।"

दिलचस्प है। यव्गेनी ने इस शब्द को खींचते हुए कहा। "क्या दिलचस्प है उसमें ? बाद में डाक्टरी के विद्यालयों में भी वे तुम्हें यह सब कुछ सिखायेंगे और तुम्हें सीखना होगा।"

अचानक उसकी आंखें चमक उठीं और उसने कहा—

'सुनो मैं भी डाक्टरी के क्षेत्र में ही क्यों न अपने को आजमाकर देखूं ? क्या ख्याल है तुम्हारा ? मेरे विचार में तो वहां भी किसी एक शाखा, जैसे सर्जरी थेरापी या बाल चिकित्सा में विशिष्टता प्राप्त करनी पड़ती है। फिर संचालन करनेवाले डाक्टर भी होते होंगे ?"

मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा ' वोलोद्या ने कहा।

मेरा मतलब यह है कि खुद ही तो सब कुछ नहीं करना पड़ता होगा, जैसे लाशों को चीरना फाड़ना, उनके भीतर की जांच-पड़ताल और बीमारों की चिकित्सा करना तथा खुर्दबीन से कीटाणुओं को देखना। इन सभी कामों का संचालन करनेवाले भी तो होते होंगे ?"

'शायद होते होंगे, अनुभवी डाक्टर और प्रोफेसर,' वोलोद्या ने जवाब दिया। "सबसे अधिक जानकारी रखनेवाले लोगों के अलावा भला कौन संचालन करेगा ?'

तुम क्या ऐसा ही समझते हो ? यव्गेनी ने संदेहपूर्वक पूछा।

उसने अपना सिर खुजलाया घड़ी भर कुछ सोचा और बोला—

'शायद तुम ठीक कहते हो। मां ने यहां के सबसे प्रसिद्ध सर्जन प्रोफेसर झोवत्याक से ही अपने अपेंडिसाईटिस का आपरेशन कराया था। वह अब भी कभी-कभार हमारे घर आ जाता है। उसका कहना है कि केवल डाक्टर बन जाने का कोई महत्त्व नहीं होता। असली चीज़ तो बाद में आती है—थीसिस लिखने या डिग्री हासिल करने के बाद। मुझे अच्छी तरह से याद नहीं है कि उसने किस डिग्री का ज़िक्र किया था। उसकी बात का सार यह था कि अगर कोई कैंडीडेट है तो वह पहले दर्जे में सफर करता है और अगर डी० एस-सी० हो तो डी लक्स एक्सप्रेस में। कुल मिलाकर यह है खासा मुश्किल काम। मगर फिर भी

इसके लिये कोशिश क्यो न की जाये? साथी झोवत्याक कोई खास अक्लमन्द आदमी तो नही है, फिर भी वह बडे लोगो की कतार मे जा पहुचा है। सचालक भी है। या फिर क्या वह बढिया प्रोफेसर है?"

येव्गेनी अपनी छोटी छोटी टागो पर जमकर खडा हो गया, उसने अपना कोट खीचकर ठीक किया, जो दोदिक ने उसके लिये अपने ही दर्जी से सिलवा दिया था, बडी गम्भीर मुद्रा बनाई और ऊची आवाज मे घोषणा की—

"डाक्टर येव्गेनी रादिओनोविच स्तेपानोव।"

कुछ क्षण चुप रहकर उसने इतना और जोडा—

"या प्रोफेसर स्तेपानोव। अगर डाक्टर बनना ही है, तो शानदार डाक्टर बना जाये। प्रोफेसर, इससे कम कुछ नही। क्या ख्याल है तुम्हारा?"

येव्गेनी की आखो मे मजाक की चमक थी और वोलोद्या अपने को बुद्धू-सा अनुभव कर रहा था। येव्गेनी की उपस्थिति म वह अक्सर ऐसा ही महसूस करता था। बिल्कुल बुद्धू तो नही, हा भोदू-सा।

बूआ काम से घर लौटी और आते ही बिगड उठी।

"सचमुच यह तो हद हो गई! तुम अपना खाना भी गम नही कर सकते। तुम सारा दिन घर मे ही क्यो बने रहते हो, मेरी जान की मुसीबत?"

वोलोद्या एक अपराधी की भाति मुस्करा दिया। बूआ अग्लाया को उसकी यह मुस्कान उसी भाति प्यारी थी, जैसे स्वय वोलोद्या, जिसे वह उसी दिन से इसी तरह प्यार करती आ रही थी, जब से तीन महीने के बच्चे के रूप मे वह उसकी देख रेख मे आया था। अब वह अच्छा खासा जवान हो गया था।

"तुम जिराफ हो, जिराफ! सिफ गदन ही गदन दिखाई देती है तुम्हारी," बूआ ने कहा।

येव्गेनी खाना खाने के लिये ठहर गया। खाना खाते हुए भी उसने शिकवा शिकायत जारी रखा—

"हमारा घर तो निरा जहन्नुम है। वही होता है, जो दोदिक चाहता है। वार्या घर छोडना चाहती है एक के बाद एक हगामा होता रहता है।"

"तुम ज़रा कमचुगली निन्दा किया करो, तो अधिक अच्छा रहे,
बआ अग्लाया ने कहा।

'मैं तो आपको अपने मित्र मानते हुए अपने दुख दर्दों का साथी
बना रहा हू " येगेनी ने गहरी सास छोडते हुए कहा। "मेरे मन पर
भी बहत भारी बीत रही है, अग्लाया पेत्रोव्ना। इस वक्त मैं जीवन
के दोराहे पर खडा हू। पिता शिक्षाप्रद उसूलो से भरपूर गम्भीर पत्र
लिखते रहते हैं। वार्या युवा कम्युनिस्ट लीग के छोकरो के साथ गी
गाने म व्यस्त रहती है और अब वह दल-मुखिया बनकर गर्मी भर के
लिये पायनियर कैंम्प मे जा रही है और मैं रह जाऊगा अकेला अपनी
उलझन सुलझाने के लिये।'

तुम भी पायनियर कम्प मे चले जाओ," बआ अग्लाया ने ज़रा
मुस्कराकर सुझाव दिया।

कौन मैं?'

हा, तुम।

"नही धयवाद। मेरी वार्या जसी सेहत नही है। मैं दूसरे ही
रक्त मास का बना हुआ हू।'

'हा यह तो हमे मालूम ही है," मेज पर से उठते हुए बूआ
अग्लाया ने कहा। 'स्पष्टत तुम तो नीले खून वाले हो।"

यवगेनी ने इस बात का बुरा नही माना। अप्रिय बाता को वह
सुनी अनसुनी कर देता था। इसके अलावा वह अग्लाया पेत्रोव्ना या
अपन सौतेले बाप की बातो के प्रति तो कभी गभीर ही नही होता था,
मानो वह उनस उम्र म बडा और अधिक समझदार हो।

सयोगवश अब जब रक्त की चर्चा छिड ही गई है तो आपको
यह भी बता द कि मैं और वोलोद्या मिल-जुलकर सोच विचार करते
रहे हैं और मर ख्याल म मैंने भी चिकित्साशास्त्र को अपना जीवन
समपित करन का निणय कर लिया है।"

भाग्य खुल गय चिकित्साशास्त्र के।" बूआ अग्लाया ने मज़ाक
किया।

क्या नही? प्रोफसर झावरयाक मरी मा का मित्र है। मरी भी
ाम जान-पहचान है। उसकी बडी प्रतिष्ठा है, ज़रूरत होन पर वह
ी मरी मदद करगा।

"सुनो, येव्गेनी, यह बडी घिनौनी बात है!" बूआ अग्लाया का अचानक पारा चढ गया। "क्या तुम खुद यह नही समझते?"

"हे भगवान! पर जीवन तो जीवन है!" उसने निष्कपटता से कहा। "वोलोद्या की बात दूसरी है, क्योकि वह बहुत प्रतिभाशाली है। पर मैं क्या करू? महात्मा बनकर तो आदमी बहुत आगे नही जा सकता!"

उसने बताया कि क्यो वह नौसेना मे नही जा सकता—

"मुझे यकीन है कि समुद्री जहाज मे तो मेरी तबियत अवश्य ही खराब रहा करेगी। मुझे तो नदी में भी मतली होने लगती है। कुल मिलाकर यह कि समुद्र मेरी रोजी रोटी नही हो सकता। मैं आधियो और तूफानो से नही जूझ सकता। इस दृष्टि से मेरे अन्नदाता पिता स्वप्नद्रष्टा है। अब, जरा गौर कीजिये "

आखिर येव्गेनी चला गया। दिन भर की थकी-टूटी बूआ अग्लाया सोने चली गई और वोलोद्या को चैन मिला। आधी रात को उसके कमरे का लैम्प सी-सी करने लगा। वोलोद्या को चिन्ता हुई कि अध्याय समाप्त होने के पहले ही बत्ती बुझ जायेगी। सी सी होती रही, मगर लैम्प बुझा नही। वोलोद्या मुट्ठिया कसे हुए पढता रहा। वह जब-तब उछलकर खडा हो जाता और इधर उधर टहलता हुआ खुशी से फुसफुसाता—

"कितनी अदभुत, कितनी बढिया बात है! इनसान का दिमाग सब कुछ कर सकता है, हर कमाल कर सकता है!"

"तब इस आदमी ने," वोलोद्या पढता रहा था, "जो कुछ लोगो का घृणापात्र और दूसरो का प्रशसापात्र बना, इस एकाकी अनुसधानकर्त्ता ने चिकित्साशास्त्र को रूढिया से निजात दिलाई। उस चिकित्साशास्त्र को, जो कभी विज्ञान का गौरव था और जो समय बीतने के साथ उसका कलक बनता जा रहा था।"

वोलोद्या का चेहरा जल रहा था, उसे अपनी पीठ पर झुरझुरी सी अनुभव हुई। अब इसे, इसी वोलोद्या को, जिसकी अध्यापको की बैठक मे इतनी भर्त्सना हुई थी, जो कुछ वह पढता था, अधिक अच्छी तरह समझ मे आ जाता था। वह पहले से अधिक समझता था, पर सब कुछ नही

सुबह के चार बज चुके थे, जब दरवाज़ा चूं चूं करता हुआ खुला। उस उनींदी-सी बच्ची अग्नाया दिखाई दी। उसके काला सा चोटिया पीठ पर लटक रही थी।

"मैं तुम्हें घर से निकाल दूंगी," बूआ ने कहा। "कैसे तुम अपना सेहत का इस तरह सत्यानास कर रहे हो। देखो तो, कैसी भयानक सूरत बनी हुई है तुम्हारी। इस चीज़ का कभी अन्त भी होगा या नहीं?

"कभी नहीं।" वालोद्या ने मुस्कराये बिना ही जवाब दिया। 'कभी नहीं बूआ अग्नाया। कृपया निराश नहीं। इसके बजाय, आइये चलकर कुछ खायें। भूख के कारण मुझे उबकाई आ रही है।"

वालोद्या ने चुपचाप तले हुए छः अंडे और मक्खन लगाकर रोटी का एक बहुत बड़ा टुकड़ा खाया, दही पिया तथा कुछ और खाने के लिये इधर उधर नज़र दौड़ाई।

"बस काफी हो गया!" तुम्हारा पेट फट जायगा," बूआ ने कहा।

'इनसान सब कुछ कर सकता है।" अपने ही विचारों के सिलसिले को जारी रखते हुए उसने कहा।

"तुम्हारा मतलब खाने से है?' बूआ ने मुस्कराकर कहा।

वोलोद्या ने सहमी-सहमी नज़र से बूआ की ओर देखा।

दूसरा अध्याय

टाइफस

१६१६ के फरवरी महीने मे "पेत्रोपाव्लोव्स्क" युद्ध पोत के दूसरी श्रेणी के भूतपूर्व जहाज़ी रोदिग्रोन स्तेपानोव को अचानक पेत्रोग्राद रेलवे जक्शन का सहायक मुख्य सचालक नियुक्त किया गया और कुछ समय बाद मुख्य सचालक बना दिया गया। माच तक वे अपने दफ्तर की मेज़ पर ही सोते रहे, पर अचानक उन्होने अपने को बहुत थका हुआ अनुभव किया। उन्होंने अनुरोध किया कि उन्हें कम से कम इतनी जगह तो ज़रूर दे दी जाये, जहा वे ढग से सो सके। जैसे ही उन्हें भूरे कागज़ पर अस्पष्ट हस्ताक्षर और धुधली-सी मोहरवाला आडर मिला, वे फुरश्तादत्स्काया सडक की ओर चल दिये। ठीक पते पर पहुचकर उन्होंने अपनी जहाज़ी की गुदी हुई मज़बूत मुट्ठी से बलूत के दरवाज़े को ज़ोर से खटखटाया। जिस औरत ने दरवाज़ा खोला, स्तेपानोव ने उसकी ओर नज़र उठाकर भी नही देखा और सीधा अपने कमरे की तरफ बढ गये। कमरा बहुत बडा था और उसकी वेनिसी ढग की खिडकियो पर भारी पर्दे लगे हुए थे। कमरे मे लाल चमडे से मढा हुआ एक बहुत बडा सोफा भी था।

वे अपने साथ जो सामान लाये, उसमे हालैंड के बहुत बढिया कपडे की दो कमीज़ें, जो विशेष आदेश के अनुसार रेलवे कमचारियो को दी गई थी, कुछ नम और भारी डबल रोटी, हवाना के छ सिगार, नगान माक की पिस्तौल, आध पौंड बिना साफ की हुई पीली शक्कर और पुराना फौजी थैला शामिल थे।

रोदिग्रान स्तेपानोव हाल के महीनो मे जिस तरह की जिंदगी क अभ्यस्त रहे थे उसे ध्यान म रखते हुए ठडा होने पर भी यह कमरा उन्हे बडा आरामदेह लगा। व कमरे म दाखिल होते ही सोफे पर ढह पडे और हल्की सी आह के साथ बेहोश हो गये। उन्होने जिस चीज को थकावट समझा था, वह वास्तव म टाइफस का आरम्भ था।

श्रीमान गोगोलेव की नौकरानी अलेवतीना या आल्या, जैसे कि बैरिस्टर वोरीस विस्सारिग्रोनोविच गोगोलेव उसे बुलाता था, अपने मालिका के भाग जाने के बाद पाच महीने के बेटे के साथ यहा रह गयी थी। वह देर तक "शैतान कमिसार" का कराहना सुनती रही और बाद मे इस ख्याल मे डरकर कि अगर कमिसार को कुछ हो गया, तो उसे जिम्मेदार ठहराया जायेगा, सहमी-सहमी-सी कमरे मे आई।

"पानी!" नौसैनिक चिल्लाये।

तो वे इतनी देर से कराह नही रहे थे, बल्कि पानी माग रहे थे।

अलेवतीना पानी लाई और घिनाते हुए (गोगोलेव दम्पति ने नौकरानी को सफाई की बडी शिक्षा दी थी) चीनी टी सेट के नाजुक प्याले म पानी दे दिया। इसके बाद बेटे येव्गेनी को गोद मे लिये हुए वह ऊपरवाली मजिल मे पीटसबर्ग के एक बहुत ही फैशनदार नारी रोग चिकित्सक फोन पाप्पे के पास भागी गयी। गुस्ताव एल्फ्रेडोविच असली कॉफी पी रहा था और शुरू म तो उसने कमिसार को देखने के लिये जाने से बिलकुल इन्कार कर दिया। लेकिन कुछ देर बाद यह सोचकर कि यह शैतान की नानी अलेवतीना उसकी शिकायत कर देगी, गोगोलेव के यहा चला आया।

'टाइफस,' उसने अपनी औरतो जैसी बारीक आवाज मे कहा। 'ध्यान करना कि कहीं वह अपनी छूत यहा न फैला दे। तब तुम्हारा और तुम्हारे जेन्या का भी अन्त समझो।'

भूतपूर्व नौकरानी ने उदासी से डाक्टर की तरफ देखा। डाक्टर ने भी अपने शब्दो की कठोरता को कुछ नम्र करने के लिये जेन्या का पेट गुदगुदाया और हवा म अपनी उगलिया लहराकर इतना और कह दिया—

"मुसीबत के मारे हमारे लोगो को क्या कुछ नही सहना पडता!"

उसी वक्त सिगारो पर डाक्टर की नजर जा पडी।

"इह तो मैं ले जाता हू," उसने झटपट कहा। "इस कमिसार को तो इनकी बिल्कुल जरूरत नही है।"

"ज़रूरत है!" सोफे पर से स्तेपानोव की कठोर, यद्यपि क्षीण आवाज़ सुनाई दी। "तेरे बुर्जुवा तोबडे की ज़रूरत नही है।"

अलेवतीना को सम्बोधित करते हुए कमिसार ने आदेश दिया—

"श्रीमती, इसे धक्का देकर बाहर निकाल दो!"

शायद इसलिये कि रादिओन मेफोदियेविच पूरी तरह होश मे नही थे, उन्होने कुछ टेढे शब्द और कह दिये, जिन्हे सुनकर फोन पाप्पे परेशान हाकर भाग गया। कमिसार ने अलेवतीना को यह आदेश भी दिया कि वह रेलवे स्टेशन पर जाकर उनके दफ्तर से उनका राशन ले आये और कहे कि वे कोई "असली डाक्टर" भेजें, और "कुछ मदद करे।" "बेकार ही मरने मे क्या तुक है!"

"विश्व क्रांति के दृष्टिकोण से यह अनुचित है," कमिसार ने धीमी, किन्तु दृढ आवाज मे कहा। "श्रीमती, वहा ऐसा ही कह दीजिये कि यह अनुचित है। समझी?"

अलेवतीना नही गयी।

"तो क्या यह जान-बूझकर अवहेलना हो रही है?" स्तेपानाव ने पूछा। "अपने इस भेजे मे इतनी बात समझ लीजिये कि अगर मेरा दम निकल गया, तो तुम्हे इसका जवाब देना होगा।"

"मैं जा रही हू," अलेवतीना ने उत्तर दिया, "लेकिन आपका यहा अकेले क्या हाल होगा?"

कमिसार व्यग्यपूर्वक मुस्कराये और बोले—

"हम लोगो के बारे मे यह कविता सुनिये!"

इस व्यक्ति के रोब मे आई हुई अलेवतीना डरकर कुर्सी के सिरे पर बैठ गयी। कमिसार ने मुह ज़बानी ये पक्तिया सुनायी—

बडे समुद्री पक्षी जैसे, वीर, भटकते नौसैनिक
तूफानो की बडी दावतो के तुम ता हो मतवाले,
तुम उकाब के सगी-साथी, नौसैनिक, ओ नौसैनिक
गीत भेंट करता हू तुमको, जलते, अगारोवाले।

ग्रौर पूछा। –

"समझी, श्रीमती ?"

कमिसार की आखो म हसी की चमक थी।

अलेवतीना अपने बच्चे को गोद मे लिये हुए रेलवे स्टेशन तक के लम्बे रास्ते पर चल दी। दो घण्टे बाद मानो पूरे का पूरा प्रतिनिधिमण्डल कमिसार के पास आया। ये सभी गदे-मदे और थके-हार, किन्तु अजाब ढग से बहुत ही खुश लोग थे। इस चीज़ के बावजूद कि य सभी एस शब्दा का प्रयोग करते थे, जिन्ह वह गोगोलेव परिवार म रहते हुए भूल गयी थी, उसे ये लोग अचानक अपने ही और बहुत भले लगे। नस का रूमाल बाधे, चेहरे पर झुरियो और खुरदरे, दहातिया जसे गाठ-गठील हाथावाली एक बुजुग औरत ता उसे खास तौर पर बहुत अच्छी लगी।

"विधवा हो क्या ?" उसने अलेवतीना से पूछा।

अलेवतीना की आखें झुक गयी।

"तब तो और भी बोझिल है तुम्हारी ज़िन्दगी," बुजुग औरत ने कहा। 'लेकिन साथी, आसू नही बहाओ। अब वे ज़माने लद गये, अब तुम्ह जन-समथन प्राप्त होगा "

सभी कुछ अनूठा असाधारण और अप्रत्याशित था। पहले जो चीज़ इतनी लज्जाजनक और अपमानजनक मानी जाती थी, उसे अब जन समथन प्राप्त था, बुजुग औरत का उसे "साथी" कहना भी अजीब था और वे लोग, जिन्ह वह अपन मन मे "उजड्ड" कहती थी और गोगोलेव 'तुच्छ" कहता था, उसके साथ इतनी अच्छी तरह से पश आ रहे थे। इतना ही नही, उन्होंने तो उसे अपने साथ घोडे के मास का शोरबा और बाजरा खाने को भी आमत्रित किया। इन सभी चीज़ा न घडी भर मे ही अलेवतीना के लिये ज़िन्दगी को बदल डाला, उसे नया रूप दे दिया। अब उसम अधिक आत्मविश्वास आ गया, वह अब नज़र नही झुकाती थी, इस बात स लजाती शमाती नही थी कि उसका पति नही है और कभी नही था।

कमिसार जल्दी-जल्दी स्वस्थ होने लगे।

अलेवतीना ने गुप्त स्टोर खाला, वहा से बिस्तर के लिये साफ-सुथरी चादरे, आदि निकाली और चीनी मिट्टी का प्राचीन फानूस बेचकर

खाने पीने की चीजें, यहा तक कि पीटसबग मे श्पीक कहलानेवाली चर्बी का एक टुकडा भी खरीद लाई। जब स्तेपानोव की दाढी बहुत बढ गयी, तो कुछ झिझकते हुए उसने विदश भाग गये अपने मालिक के पीले, अग्रेजी चमडे के ड्रेसिग केस मे से सात वढिया उस्तरे निकाले। हर उस्तरे पर सप्ताह के एक दिन का नाम—सामवार, मगलवार, आदि खुदा हुआ था।

"उस शैतान के बच्चे को सात उस्तरा की क्या जरूरत थी?" स्तेपानोव ने हैरान हाकर पूछा।

"धातु को आराम करना चाहिये।" अलेवतीना ने गोगोलेव का वाक्य दाहरा दिया। "इसलिये हर दिन का अलग अलग उस्तरा है।"

"कुत्ते के पिल्ले!" कमिसार ने खुशमिज़ाजी से गाली दी।

स्तेपानोव न "इतवार" अभिलेखवाला उस्तरा अपने पास रख लिया और बाकी छ अपने साथियो मे बाट दिये।

"आपको ऐसा करने का हक नही है!" अलेवतीना चिल्ला उठी। "ये आपके नही है। बोरीस विस्सारिओनोविच लौटेंगे!"

"किसलिये लौटेगा वह?" स्तेपानोव ने शान्तिपूवक आपत्ति की।

"ये उनके उस्तरे है!"

"सही है कि एक उसके लिये भी रखा जा सकता था, मगर सात बहुत ज्यादा हैं," कमिसार ने राय जाहिर की। "श्रीमती, अब तो ये सब चीजे जनता की है और आपका बडबडाना बेमानी है।"

"फिर भी बोरीस विस्सारिओनोविच आपको इसका मज़ा चखायेंगे।"

"हो सकता है कि मैं उसे मज़ा चखाऊगा।"

स्तपानोव की आखा मे फिर से हसी झलक रही थी।

अपन ही किन्ही विचारो मे खाये-डूबे कमिसार देर तक यह गुनगुनाते रहे—

> है दलान से हिलती-डुलती बत्ती का
> हल्का-हल्का-सा प्रकाश बाहर आता,
> ऊबा-ऊबा वहा सन्तरी जीवन से
> पहरा देता हुआ एडिया टकराता

"तो आप जेल मे भी रहे हैं?" एक दिन अलेवतीना ने पूछा।

"नही, भलीमानस, मैं जेल मे नही रहा। हा, अगर आपका अभिप्राय रूसी साम्राज्य कहलानेवाली जातियो की जेल से है, तो बात दूसरी है।"

कमिसार की बात अलेवतीना के पल्ले नही पडी, फिर भी उसने सहानुभूति जताते हुए गहरी सास जरूर ली। कुछ अर्सा पहले बोरास विस्सारिओनोविच के पास दढियल, लम्बे-लम्बे बालोवाले कुछ बहुत ही बातूनी महानुभाव कभी-कभी आते थ, जिन्हे बैरिस्टर की बीवी 'जन शहीद' कहती थी। बाद मे यही "जन शहीद" कुछ समय तक फौजी वर्दिया और बूट पहने पैदल या मोटरो मे फिरते रहे और गोगालेव दम्पति के साथ ही कही गायब हो गये। कुछ भी समझ पाना सम्भव नही था। लेकिन अलेवतीना अपने कमिसार को अधिकाधिक देर तक ताकती रहती, उनसे अधिकाधिक देर तक बाते करती, उनकी बिना सिलसिले की बातो को अधिकाधिक ध्यान मे सुनती। रोदिओन मेफोदियेविच भी उसे एकटक ताकते रहते है, इस बात की तरफ भी कभी-कभी उसका ध्यान जाता।

स्तेपानोव जैसे ही बिस्तर से उठने के लायक हुए, वैसे ही उन्होने अलेवतीना को गोगोलेव परिवार के फ्लैट के सभी गुप्त स्थान खोलने का आदेश दिया। अलेवतीना रोने लगी और नन्हा जेया भी अपनी मा का साथ देने लगा।

"मैं अपने लिये ऐसा नही कर रहा हू," रोदिओन मेफोदियेविच ने उदासी से कहा। "मैं तो इन सब चीजो को खुद अपने से और तुमसे बचाना चाहता हू। इन्हे धीरे धीरे बेचना नही, सरकारी जब्ती मे शामिल करना चाहिये।"

अलेवतीना और भी ज्यादा जोर से रोने लगी। इस तरह सिसक सिसककर रोना उसने गोगोलेव की पत्नी विक्तोरिया ल्वोव्ना से सीखा था। जेया अपनी थोडी-सी ताकत के मुताबिक मा के रोदन का साथ देता, मगर काफी ददनाक असर पैदा करता। फिर भी स्तेपानोव ने कायदे-कानूना के अनुसार सारी चीजो को सरकार के लिये जब्त कर लिया। पेन्सिल की नोक को थूक से भिगो भिगोकर उन्होने "भूतपूर्व नागरिक गोगोलेव की फालतू वस्तुओं" की सूची बनायी और गोगोलेव

के ही मोम और मुहर से उसके सभी सन्दूको, कालीनो, अलमारियो, स्टोरो और गुप्त स्थानो को मुहरबन्द कर दिया।

"आप तो कोई पागल लगते है!" अलेवतीना ने सिसकिया लेना जारी रखते हुए कहा। "आप इनका इस्तेमाल करते रहते, करते रहते!"

"मैं पागल नही, क्रान्तिकारी नौसैनिक हू!" रोदिम्रान ने समझाते हुए कहा। "हमने तुम्हारे निकोलाई की इसलिये गद्दी नही उलटी है कि खुद चुपके चुपके मौज उडायें। हमने सारी जनता की भलाई के लिये उसका तख्ता उलटा है ,सयोगवश तुम्हे यह भी बता दू कि फानूस को भी मैंने सूची मे दर्ज करके यह स्पष्ट कर दिया है कि उसे टाइफस से मेरी मुक्ति के हेतु बेच दिया गया।"

जब्ती के इस काम और अलेवतीना के रोने धोने से स्तेपानोव थककर लेट गये। इसी शाम को न जाने क्यो, अलेवतीना ने उसे अपनी जिन्दगी की कहानी सुनायी। अपनी शक्तिशाली बाहो को सिर के नीचे रखे और सोफे पर लेटे हुए कमिसार चुपचाप उसकी दास्तान सुनते रहे। उनकी आखें अधमुदी थी।

"तो मुह पर ही तमाचे मारती थी?" रोदिम्रोन ने अचानक पूछा।

"हा!" होठ काटते हुए अलेवतीना ने सिर झुकाकर हामी भरी।

"कितनी उम्र थी तब तुम्हारी?"

"सोलह की भी नही हुई थी।"

"नीच, कमीने, खुदा इन्हे गारत करे," रोदिम्रोन ने कहा।

"आप गालिया क्यो दे रहे हैं?"

"तुम पर तरस आता है, इसलिये।"

रोदिम्रान मेफोदियेविच ने कुछ देर बाद पूछा—

"जेया का बाप कौन है?"

"यहा एक छोटा फौजी अफसर आता था, बडा प्यारा-सा " अलेवतीना फिर से सिसकने लगी।

"रोओ नही। कहा है वह?"

"कौन जाने?"

"कह दिया न, कि नही रोओ! अब नयी जिन्दगी शुरू हुई है। तुम्हे पढना चाहिये। अपनी ही हिम्मत मे किसी भी ओहदे पर पहुच सकती हो।"

"लेकिन मैं तो बहुत कम पढी लिखी हू!"

"और तुम्हारे ख्याल म मैं कौन हू?"

"जैसे हो, वैसे ही रहोगे—अनपढ जहाज़ी।"

रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने बुरा नही माना, घिरते झुटपुटे म मुस्करा दिये और बोले—

"यह तुम झूठ कर रही हो, आल्या! सवहारा की क्रान्ति को अनपढ नौसनिको की जरूरत नही है। प्रतिक्राति के साप के सिर कुचल जाने पर मैं पढाई शुरू कर दूगा।"

अलेक्तीना ने स्तेपानोव की ओर तिरछी चोर नजर से देखा और उस अदम्य आत्म विश्वास से आश्चयचकित-सी रह गयी, जो उनमें प्रस्फुटित हो रहा था। श्रीमान गोगोलेव के अध्ययन-कक्ष की सुन्दर छत की ओर देखते हुए वे विचारो मे खोये-खोये से कहते गये—

"हा, जब मैं नौसेना मे भर्ती हुआ था, तो बिल्कुल अनपढ बद्धू था। मैं बहुत दूर से, वोज्नेसेन्स्क जगलो से आया था। कभी नाम सुना है तुमने उनका? मेरे बाप बिल्कुल अनपढ थे। पर, खैर मैं धीरे धीरे तारपीडो मारनेवाला बन गया और फिर मेरा पद कम करके मुझे 'पेत्रोपाव्लोव्स्क' जहाज पर दूसरी श्रेणी का जहाज़ी बना दिया गया। वैसे मैं समझ रहा था कि मामला क्या रुख ले रहा है। मैं उस समय 'अव्रोरा' जहाज़ पर ही था, जब उसने शिशिर प्रासाद पर गोलाबारी की थी।"

"तो तुमन शिशिर प्रासाद पर गोलाबारी की थी?" अलेक्तीना न आश्चयचकित होते हुए कहा।

"गोलाबारी तो अय तोपचियो ने की थी, हमने तो केवल एक बार खाली धमाका किया था। मुझे गोले बरसाने का सौभाग्य नही प्राप्त हुआ', उन्होंने मुस्कराकर कहा। "फिर भी मैंने 'अव्रोरा' पर काम जरूर किया है

इतना कहकर उन्होंने अलेक्तीना का हाथ अपने हाथ मे ले लिया। वह किसी तरह का विरोध किये बिना धीरे-स उनकी ओर झुक गई। व दूर हट गय और बोले—

"पर हा जाओ, अलक्तीना। कही तुम्हे टाइफस की छूत न लग जाय।'

मगर अलेवतीना धीरे धीरे मुस्करा रही थी। वह अब कमिसार की बीवी बनने का सपना देख रही थी। उनके जैसा भोला भाला पछी तो बहुत आसानी से फासा जा सकता है। वे बडे ही नमदिल है। जब अलेवतीना ने अपनी पिटाई की चर्चा की थी, तो वे काप उठे थे। वास्तव मे कोई खास बात नही हुई थी—उसने इत्र की एक शीशी तोड डाली थी और इसलिये उसे कुछ डाटा-डपटा गया था

"मुझे वह गाना सिखा दो, जो तुम हर समय गाते रहते हो," अलेवतीना ने कहा।

"कौनसा गाना?"

"बत्ती और जिन्दगी से ऊबे हुए सन्तरी के बारे मे।"

"अच्छी बात है," स्तेपानोव ने कहा और धीरे धीरे गाने लगे—

रात अधेरी, अवसर का उपयोग करो तुम
किन्तु जेल की दीवारे पक्की सारी,
उसके गुमसुम और मौन से फाटक पर
लगे हुए लोहे के दो ताले भारी।

पति-पत्नी

एक महीने बाद वे पति-पत्नी के रूप मे रहने लगे। अब येव्गेनी के साथ उसका कुलनाम स्तेपानोव जुड गया और अलेवतीना श्रीमान और श्रीमती गोगोलेव की नौकरानी न रहकर कमिसार की पत्नी, एक बाइज्जत औरत और घर की मालकिन बन गई थी। अपने घृणित अतीत को पूरी तरह भुला देने के लिये उसने रोदिओन से अनुरोध किया कि हम नगर के किसी दूसरे भाग मे, वासील्येव्स्की ओस्त्रोव या कम से कम बीबोगस्काया स्तोरोना के इलाके मे जा बसे।

"'कम से कम' से तुम्हारा क्या मतलब है?" रोदिओन ने बिगडते हुए कहा। "समझो तो, यह तुम क्या कह रही हो?"

"बीबोगस्काया स्तोराना म मजदूरो के अतिरिक्त कोई नही रहता। केवल असभ्य अशिष्ट ही रहते हैं वहा," अलेवतीना ने स्पष्ट किया।

"तुम बेवकूफ हो," उन्होंने साफ ही कह दिया। "तुम अपने को क्या समझती हो? तुम कौन-सी किसी कुलीन घराने की बेटी हो?"

"मैं कुलीन घराने की बेटी तो नही, मगर एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति की पत्नी तो हू," उसने नजर झुकाये हुए उत्तर दिया।

वे वासील्येव्स्की आस्त्राव म जाकर रहने लगे। वसन्त अपने साथ अकाल लेकर आया। स्तेपानाव लगभग दिन-रात रेलवे जक्शन पर रहते। जब कभी उन्ह घर आने का मौका मिलता, तो वे थके हारे अलेवतीना की बगल म बिस्तर पर आ पडते, नीद म दात पीसते और भयानक शब्द चिल्लाते—

"ताड फोड करनेवालो! कमीने मगरमच्छो, मैं तुम्ह गोली से उडवा दगा। तब तुम्हारे हाथ मलने से भी कुछ हासिल नही होगा"

बिना पर्दो की खिडकियो के पीछे दूधिया राते बीतती जाती थी, भयानक और बेचैनी की राते। अलेवतीना अपने जवान पति के अत्यधिक थके हारे चेहरे और धसी हुई आखो, उनके मुरझाये हुए होठो को देखती और बडी पीडा तथा दद के साथ अपने उमग भरे सपनो के ताने-बाने बुनती। वह चाहती थी कि स्तेपानोव बडा अधिकारी बन जाये, सबसे बडा अधिकारी, सभी के ऊपर हुक्म चलानेवाला बडा अधिकारी, हर कोई उससे डरे और तब अलेवतीना सामने की बडी बडी बत्तियावाली मजबूत और लाल कार मे, वसी ही कार मे जैसी बैरिस्टर की बीवी, श्रीमती गोगोलेवा के लिये घर के दरवाजे पर आती थी, बठकर नगर की सैर करेगी। महत्त्वाकाक्षाए उसे खाये जा रही थी, उसके लिये यातनाए बनी हुई थी। बस मेरा वक्त आ जाये! तब मैं उन सब को अपने रग दिखाऊगी! तब सब देखेंगे मेरे ठाठ! इस बीच वह रातो को पति का इतजार करती हुई राजकुमारो, नवाबो और जागीरदारों के जीवन के बारे मे अधिक से अधिक उपन्यास पढती, अपने बेटे को उसी ठाठ-बाट से मखमली सूट, फीतेवाले कॉलर, छोटी छोटी बढिया छज्जेदार और दूसरी टोपिया ओढाती जैसे गोगोलेव दम्पत्ति अपने बच्चे को ओढाते थे। वह ड्रेसडेन के बहुत ही शानदार चीनी के प्यालो म गाजर की चाय डालती।

पतझर म स्तेपानोव को अस्त्राखान बेडे की क्रान्तिकारी सैनिक परिषद् म भेज दिया गया और वे नगर से चले गये। कभी-कभी स्तेपानोव

के दोस्त अलेवतीना से मिलने आते, उसका राशन लाते और सलाह देते कि वह कही नौकरी कर ले। वह उनसे रुखाई से पेश आती, गुमसुम रहती और लम्बी चौडी बातचीत करने का बढावा न देती। पति के कारण उसे जा कुछ मिलना चाहिए था, वह सभी कुछ पेत्रोग्राद के खाली गोदामा मे पा लेती और इसके अलावा उसे कुछ और भी मिल जाता। उसने बातचीत का वह अन्दाज भी झटपट अपना लिया, जिसे वह अपनी सफलता के लिये जरूरी समझती थी।

"तो तुम मोटी तोदोवाले मजे कर रहे हो!" फूले-फूले गालावाले अपने बालक का, जिसे वह ऐसे अवसरा पर विशेषत गन्दे मन्दे कपडे पहनाकर लाती थी, गोद मे उठाते हुए कहती। "और कमिसार की बीवी बेशक फाके करती रहे? खैर, कोई बात नही, मैं चेका मे जाऊगी और तब तुम सभी को आटे दाल का भाव मालूम हो जायेगा। बुर्जुवा बदमाशो, वे अच्छी तरह से तुम्हारी अक्ल ठिकाने करेगे। वे तुम जैसे कुछेक का जेल म डाल देंगे, तब मुझे आन की आन मे मुरब्बा मिल जायेगा।"

अलेवतीना को मुरब्बा मिल जाता, फिर भी जीवन बहुत कठिन था। बडी-बडी बत्तियावाली कार सपना ही बनी रही और रेशमी कपडा और तिनको के काले टोपा की तो कोई बात तक नही साचता था। मगर अलेवतीना इन्तजार कर रही थी, बहुत ही हठपूवक, बहुत कटु और पागलपन की हद तक पहुची हुई बेकरारी के साथ। वह "अपने आदमी" का हर तरह का नाच नचवायेगी, उससे अपनी हर मनमानी पूरी करवायेगी। हा, निश्चय ही! वह किन्ही ऊल जलूल चीजो की माग नही करेगी। नही, नही, वह इस किस्म की औरत नही है। उसे अपन खाली कमरे मे बहुत ही खूबसूरत, बहुत कीमती, अद्भुत और भाति भाति की चीजा की दुनिया दिखाई देती। उसे नजर आती बढिया और इत्र मे महके फ्राका से भरी नक्काशीदार और पीतल से सुसज्जित आलमारिया, "चिप्पनडेल" की कुर्सिया—जिनका नाम वह नही भूली थी—इत्र की शीशिया, फर के गुलूबन्द, सेबल की ओढनिया, दस्ताने, छोटे नम सोफे, ड्रेसिंग गाउन, कालीन, फुरश्तादृत्स्काया मडक पर नवाब रोजेनाऊ के घर के समान बिल्कुल नीला स्नानघर, जालीदार नकाब, पाउडरा के बक्स, चाय और डिनर के सट, पहियावाली मेजे

उसने पहले तो ये चीजें देखी ही थीं, किन्तु अब वह उन्हें खुद पाना चाहती थी। वह एक के बाद एक दरवाज़ा खोलती हुई कई कमरों के सेट में शान से चलने की कल्पना करती थी, अपने घर की बाइज़्ज़त महिला मालिकिन और महारानी बनना चाहती थी।

कई कमरों का सेट।" उसने खुश्क होठों से इन शब्दों को फुसफुसाया, जिनकी गूंज उसे बहुत प्रिय लगी। "उत्तरी एक्सप्रेस गाडी। या ज्यूली अंगीठी के सामने पर्दा कर दो।"

या फिर उन बड़े-बड़े डिब्बों में चाक्लेटों का ख्याल आता।

खैर कोई बात नहीं मैं इन्तज़ार करूंगी।

मैं जब तक जरूरी होगा इन्तज़ार करूंगी, पर आखिर मेरा ज़माना भी आयेगा।

इसी बीच रोदिओन स्तेपानोव डाकुओं के अराजक सरदार नेस्टोर माख्नो का पीछा करते हुए उक्रइना की धूल फाकते फिर रहे थे। माख्नो ने स्तेपानोव के दस्ते को तीन हजार वर्स्ट लम्बी दौड़ लगवाई और सामने डटकर लोहा नहीं लिया। इस तरह उसने अपना पीछा करनेवालों को थका मारा। उनके आगे आगे स्तेपी की देहाती सड़कों पर मशीनगनों से लदी गाडियां तेजी से भागी जा रही थीं। माख्नो के आदमी अमीर जमीदारों के पास ऐसे पुर्जे छोड़ जाते, जिनमें सोवियत सत्ता का मज़ाक उड़ाया गया होता और पके बालोंवाले धनी किसान नाक भौं सिकोड़ते हुए स्तेपानोव के आदमियों की केवल कुए के पानी से ही खातिरदारी करते। गर्मियों की उन गर्म रातों में आकाश में बादल चैन से आनन्द विभोर होते हुए गड़गड़ाते और सुहानी मूसलाधार बारिशें होती रहतीं।

क्रान्तिकारी सैनिक परिषद के प्रतिनिधि और चार अन्य चेकावालों के साथ स्तेपानोव को माख्नो से सन्धि और उसके लोगों में प्रचार-कार्य करने के लिये भेजा गया। इस काम के लिये दक्षिणी मोर्चे के कमांडर फ्रूंज़े ने जिन छः कम्युनिस्टों को चुना था उनमें से किसी को भी कमांडर को गाड़ी से निकलते हुए ज़िन्दा लौटने की उम्मीद नहीं थी।

स्तारोबेल्स्क की एक नीची छतवाली और सुगन्ध से महकी हुई झोंपड़ी में नेस्टोर माख्नो रायों के नर्म बिस्तर पर बड़ी शान से फैला पड़ा था। वह पसीने से तर, चेचकरू और पीली पीली आंखोंवाला

व्यक्ति था। उसके दुमछल्ले अपनी अस्त्राखानी टोपियो को गुद्दियो पर किये हुए उसके गिद खडे या बैठे थे।

"शायद शस्त्रास्त्रो के बिना गपशप करना ज्यादा अच्छा होगा?" सरदार मारूनो ने कहा और अपने लम्बे बाल झटके। "मुझे हथियार पसन्द नही है। मैं दयालु और शान्तिप्रिय व्यक्ति हू।"

"इसमे क्या शक है," स्तेपानोव ने कहा, किन्तु अपनी पिस्तौल को अपने पास ही रखा।

अगले तीन महीना मे स्तेपानोव लगभग नही सोये मारूनो उन छहो को किसी भी समय खत्म कर सकता था। ऐसा इसलिये भी करना आसान था कि वे सभी उसकी सेना के अलग अलग यूनिटा म रहते थे। मगर उनका धीरे धीरे और बडे यत्न से किया जानेवाला काम फलप्रद हुआ। मारूनो के लोगा की अपने सरदार के प्रति वफादारी अधिकाधिक डावाडोल होती गई और वे अधिकाधिक दृढता से बोल्शेविका के साथ सधि करने की चर्चा करने लगे। जब सोवियत सत्ता ने नौ वर्षों तक किसानो को ज़मीन देने की आनप्ति जारी कर दी, तब तो रोदिओन को इस बात का कोई कारण ही दिखाई नही देता था कि मारूनो के लोग उनका गला काटेंगे।

उस समय की कुछ निशानिया जीवन भर के लिये उनके पास रह गईं। ये निशानिया थी—कलाई के ऊपर सफेद निशान, जहा ब्राउनिग गोली लगी थी, कधे की हड्डी मे लगे छर्रे का चिह्न और घुटने के नीचे एक घाव, जिसमे लम्बे अर्से तक हल्का-हल्का दद होता रहा था।

एक प्यारी और शान्त रात मे सेना का वह डिवीजन, जिसमे बाल्टिक बेडे के जहाज़ी स्तेपानोव कमिसार थे, अज़ोव सागर के तट पर पहुचा। सनिक नहाने धोने के लिये समुद्र मे कूद गये। स्तेपानोव को अचानक बुरी तरह बेचैनी महसूस हुई। वे अनुभव करते थे कि उन्हे नौसेना मे ही काम करना चाहिए, कि सागर के बिना वे मर जायेंगे, कि उनके लिये अपने असली काम पर लौटने का वक्त आ गया है।

तभी से ज़िन्दगी इतनी मुश्किल हो गई कि उसकी तुलना म गृहयुद्ध के वष बच्चा का खेल प्रतीत होने लगे वे स्कूल मे दाखिल हो गये थे। अब उन्हे बीजगणित, रेखागणित और त्रिकोणमिति म पारगत होना था। उन्हे रेखाचित्र बनाने होते थे, अग्रेज़ी और जमन भाषा के

लिखने-पढने का अभ्यास करना था और इतिहास की गहरी जानकारी प्राप्त करनी थी। उनके लिये पढाई करना इस कारण जरूरी था कि कुछ समय बाद पुरानी विचारधारा के किसी अफसर, नौसेना के तथाकथित विशेषज्ञ के साथ कप्तान के मच पर खडे होने के बजाय वे युद्ध-पोत, टारपीडो-बोट या बडे जगी जहाज की खुद कमान सम्भाल सकें।

बने ठने सुसस्कृत और खिल्ली उडानेवाले शिक्षक अपनी पना नजरा से कुलीनो के बेटा की तुलना मे भूतपूर्व जहाजियो के लिये पढना लिखना कही अधिक कठिन बना देते थे। पढनेवाले ये मजदूर जवान, ये भूतपूर्व जहाजी तोपची और सुरग बिछानेवाले, जिन्होंने गृहयुद्ध की भारी मुसीबत सही थी और जिनकी उन दिना की उनीदी राता की अब तक नीद नही पूरी हुई थी सावधान होकर उन लोगो के ज्ञानवर्धक उपदेश सुनते थे, जिन्होने कुछ ही समय पहले सोवियत सत्ता को मान्यता देने की कृपा की थी। स्तेपानोव को अक्सर, बहुत अक्सर खून सद कर देनेवाले ये शब्द सुनने पडते—

क्या ये चीज तुम्हारी समझ म नही आती? इसलिये, मरे दोस्त, कि तुमम सामान्य विकास की कमी है। और यह चीज़ फौरन नही आ जाती। यह हासिल होती है मा के दूध के साथ। प्रखर सुसस्कृत होना, जो नौसेना के कमाडर के लिये बहुत जरूरी है, वह भी कोई किताबें रटकर नही बन सकता। क्षमा चाहता हू कि मैं मार्क्सवादी नही हू। इसलिये यह कहूगा कि सुसस्कृत होना जन्मजात गुण होता है "

विद्यार्थी रोदिओन स्तेपानोव गुस्से स आग-बबूला हो उठते, मगर चुप रहते। 'वक्त हो गले-सडे अवशेष," व सोचते, "दस-बीस साल और बीत जाने दो। तब तुम चौकन्नी आखें खोलोगे, पर तब देर हो चुकी होगी। तुम ढुलमुल लोगो की तुलना म हम कही अच्छे बुद्धिजीवी बन चुके होगे।'

रोदिओन चार घटा से अधिक न सोते। पर वे "रविवार' के चिह्नवाले पुराने उस्तुरे से हर दिन हजामत जरूर बनाते। अब उनकी अग्रेजी भाषा की जानकारी नौसेना-सम्बन्धी विशेष पारिभाषिक शब्दो और वाक्या तक ही सीमित न रह गई थी जिन्हे जानना उनके लिये जरूरी था। शब्दकोश की सहायता स नौसेना के अनुभवा का वर्णन करनेवाली लेख लेख भी वे पढ लेते थे, जिन्हे उपयोगी समझते थे। वे

वाल्टिक, काले और अज़ोव सागर के समुद्री वेडो के अपने मित्रो के साथ अंग्रेज़ी भाषा मे वैसे ही वडी शान से, सिगरेट का धुआ उडाते और ज़रा रुक-रुककर वात करने की कोशिश करते, जैसे कि उनके मतानुसार बडे-बडे अंग्रेज़ समुद्री अफसर अपने नौसेना विभाग मे करते हैं। इस विद्यार्थी काल मे उच्च गणित ने स्तेपानोव के लिये विशेष महत्त्व प्राप्त कर लिया। वह उनके लिये केवल आतक ही नही, खुशी का स्रोत वन गया। उसी बने-ठने और अत्यधिक सुसस्कृत शिक्षक ने ही, जिसन कुछ समय पहले स्तेपानोव को यह वताया था कि सुसस्कृत होना अनिवाय रूप से जन्मजात गुण होता है, वातो वातो म किसी से कहा --

"कम्वख्त स्तेपानोव, है तो वडा समझदार।'

य शब्द स्तेपानोव के कानो म पड गये। उन वर्षा म वे इससे अधिक प्रशसा की कल्पना नही कर सकते थे शत्रु ने अपनी हार मान ली थी और यह वहुत वडी वात थी।

अलेवतीना हर वक्त यही शिकायत करती रहती कि मैं बहुत थक-हार गई हू, मुझे ऊब अनुभव होती है। वह विल्कुल निठल्ली रहती, अक्सर अन्य "महिलाओ" से मिलने चली जाती या फिर उन्हे अपने घर बुलाकर उनकी आव भगत करती। अपनी कनिष्ठाए वाहर निकालते हुए वे वेहद पतले, लगभग पारदर्शी प्यालो से चाय की चुस्किया लेती, नन्हे येव्गेनी से लाड प्यार करती और धीरे धीरे, अलसाये अलसाये ढग से वात करती। उनकी वाते अजीव अजीव होती और उनके शब्द स्तेपानोव को अनजान अपरिचित लगते। अपने केश विन्यास को वे "बोव' कहती और नन्हे येव्गेनी के वारे म राय जाहिर करती कि वह "निर्वासित राजकुमार" जैसा लगता है। कुछ कुसिया को वे "मोडन' वताती और कुछ को "रोकोको"। वे किसी ऐस क्लव की भी चर्चा करती, जहा लोग "स्थिर मुद्राओ से खूव हाथ रगते है"। वे किसी न किसी तरह पेरिस से सभी के लिये "शानेल इत्र की एक शीशी प्राप्त कर लेती।

स्तेपानोव से तो वे कभी ही वातचीत करती और तव उनके सम्मानपूण अन्दाज में व्यग्य का तीखापन छिपा रहता। वे उसे "हमारा भावी नल्सन" या मारात की सज्ञा देती अथवा यह कहती "खाक से

खुदा बनेगा'। जब इस तरह के व्यग्यवाण छोड़े जाते, ता रोदिग्रोन मफोदियेविच का मन होता कि वे अपने पुराने क्रान्तिपूर्व ढग से गालिया बक दे और कोई प्याला जिन्हे अलेवतीना "पुराने सक्सोनी प्याले" कहती थी उठाकर जोर से फर्श पर पटके और चकनाचूर कर डाले। पर जाहिर है कि वे ऐसा कुछ नही करते थे। वे तो केवल माथे पर बल डालते और अपनी लडखडाती मेज़ पर जा बैठते। अपनी किताबा, टिप्पणियो और रेखाचित्रा म उनके मन को चैन मिलता।

वार्या अभी बच्ची ही थी। येव्गेनी की तुलना म अलेवतीना उसे बहुत कम प्यार करती थी। उसे लडके पर हमेशा तरस आता रहता और साये हुए यव्गनी के पास अलेवतीना की यह फुसफुसाहट सुनकर स्तेपानोव के दिल को अक्सर चोट लगती—

मेरे यतीम बच्चे सौतेले बापवाले मेरे नन्हे बेटे, मेरे जिगर के टुकड़े मा तुम्हारी रक्षा करेगी वह किसी को तुम्हे डाटने डपटने नही देगी तुम कोई चिन्ता न करो मेरे यतीम बालक "

कौन डाटता डपटता है उसे? रोदिग्रोन मेफोदियेविच न एक रात को परेशान होते हुए कहा। ऐसी बेहूदा बात क्या किया करती हो? उल्टे वह ही डाटा डपटा करेगा। अभी से वह किसी को खातिर म नही लाता। आज दोपहर को उसने भारतीय स्याही की बोतल तोड डाली और जब मैंने उसके कान खीचने की धमकी दी, तो "

अगर वह तुम्हारा अपना खून होता तो तुम कभी उसे इस तरह की धमकी न देते अलेवतीना न कहा। 'मुझे यकीन है वार्या को तो तुम कभी उगली तक भी नही लगाओगे।"

पर क्या मैंने उसे भी कभी उगली लगायी है?" रोदिग्रोन मफोदियेविच हक्काबक्का रह गये।

अलेवतीना ने इस प्रश्न को सुना अनसुना कर दिया और अपने बच्चे के पास बैठी फुसफुसाती रही। रोदिग्रोन मफोदियेविच ने कधे झटके और फिर से अपने रेखाचित्रो में जाकर डूब गये। उन्हें अपने इर्द-गिर्द परन्तु आवाज़—दीवार घड़ी की टिकटिक वार्या की गहरी सासें अलेवतीना द्वारा उत्साह से पन्ने उलटने की हल्की सरसराहट सुनाई दे रही थी। यो तो यह परिवार ही, पर कैसा परिवार?

रोदिग्रान मेफोदियेविच विचार-सागर मे गोते नही लगा सक्ते थे। उनके पास इसके लिय फुरसत ही नही थी। समय उड रहा था देश तेजी से बढ रहा था और वे पीछे नही रह सक्ते थे। उन्हे समाचारपत्रो किताबा, सम्मेलना, सभाओं वार्ताओं और व्याख्याना म – हर चीज म दिलचस्पी थी। व हर चीज म हिस्सा लेना चाहते थ। जब व अलेव तीना को उसकी भूतपूर्व मालिकिन के ये शब्द – "मैं ऊब स मरी जा रही हू" दोहराते सुनते तो झल्ला उठते। पर वे इस बात की ओर ध्यान न दते, आपे से बाहर न होते।

"अलेवतीना, तुम क्या मुझे अपना मन बहलानेवाला सरकस समझती हो?" आखिर एक दिन व भडक ही उठे। "मैं सक्डा बार तुमस कह चुका हू – तुम किसी चीज म अपना ध्यान लगाओ। आज तो तुम्हारे लिय सभी दरवाजे खुले हुए हैं। जाओ जाकर पढो लिखो। तुम अगर चाहो, तो जन-कमिसार भी बन सक्ती हो।'

"बहुत जान खपा चुकी हू मैं," अलवतीना गुस्स स चिल्ला उठी। 'मैं अभी सोलह ही नही, पन्द्रह बरस की भी नही थी कि कोल्हू के बैल की तरह काम म जात दी गई थी। अब मुझ आराम करने और इन्सान की सी जिन्दगी बिताने का पूरा हक हासिल है। ओह पर तुम्हारे साथ रहत हुए तो इसकी भी उम्मीद नही की जा सक्ती। तुम ता मुझे एक नौकर भी रखकर नही दे सक्ते।"

"नौकर? तुम्हारे लिये?" रोदिग्रोन मेफोदियेविच को बडा आश्चय हुआ। "यह 'नौकर' शब्द तुम्हारे दिमाग मे कहा स आ घुसा? आजकल हम उन्हे घरेलू काम करनेवाली मजदूरिन कहते है, अब नौकर-चाकर नही रहे।"

"चलो ऐसा ही सही, घरलू काम-काज करनेवाली मजदूरिन ही रख दो। मरी बला स, तुम उन्हे किसी भी नाम से पुकारो, पर मैं क्रांति के बाद काम करने के लिय मजबूर नही "

"सिरफिरी," रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने तग आकर कहा।

"मै नही, तुम सिरफिरे हो," अलेवतीना ने जवाब दिया। "बडा आया क्रान्तिकारी जहाजी! किसलिय घाव करवाये थ अपने तन पर? समाज म दर्जा पाने के लिय ही न? और कुछ नही ता पाच कमरो का फ्लैट ही पा लिया होता? नही, वह भी नही। तुम्हारा सिर सफेद

होता जा रहा है और तुम अभी तक स्कूली छोकरा की तरह किताब रट रहे हो। तुम्हारी तनख्वाह म जसे-तैसे काम चलता है और अगर मेरे अपने व्यापार का सिलसिला न होता, तो "

'किस व्यापार के सिलसिले से अभिप्राय है तुम्हारा?" उन्होंने लाल पीला होते हुए पूछा। "किस व्यापारिक सिलसिले के फेर म हो तुम?

अलेवतीना डर-सहम गई और उसने कोई जवाब नही दिया।

इस घटना के कुछ ही समय बाद येव्गेनी को तपेदिक हो गया। डाक्टरो न कहा कि उसे पेत्रोग्राद मे हरगिज नही रहना चाहिए। अलवतीना घबरा उठी। उसे वोज्नेसेन्स्क के जगलो का स्मरण हो आया जिसकी स्तेपानोव चर्चा किया करते थे। उसने अपने पति स वहा नगर के बार म पूछ-ताछ की। डाक्टरो ने वनो, वहा के जलवायु औ उचा नदी के तटवर्ती स्वास्थ्यप्रद वातावरण का एक स्वर स समर्थन किया। मई १६२३ म रादिओन स्तेपानोव अपने परिवार को उस नगर म ल गये जहा से कभी वे अपने ज़ार और देश की नौकरी करन के लिय रवाना हुए थे।

उस नगर म उनका एक पुराना दोस्त हवाबाज़ अफानासी उस्तिमेन्को रहते थे। अफानासी की बहन अग्लाया न प्रोलेतार्स्काया सडक पर स्तेपानोव परिवार के लिय एक फ्लैट तय कर दिया। परिवार के ढग स बस जाने पर दोनो मित्र – विधुर अफानासी और परिस्थितिया वश विधुर हुए स्तेपानोव अपनी अपनी पढाई जारी रखने के लिय पेत्रोग्राद की ओर रवाना हो गये। धीरे धीरे चलती हुई गाडी म उन्होंने वोदका पी ठडा चिकन खाया और गहयुद्ध के दिनो की यादें ता करन लग। उन दिनो अफानासी सोपविच हवाई जहाज़ म उड करत हुए सफेद गार्डों पर घोषणाओवाले झण्डे फेंका करते थे। आखि १६२० म उनका जहाज़ गिरा लिया गया था।

फिर स शादी करने का इरादा है क्या?' रादिओन ने पूछा।

'बिल्कुल नही। तुम्हारी वालन्तीना का एक नज़र देखते ही मैंने यह सोच लिया था – आज आय ऐसी मुहब्बत स।'

कौन वालन्तीना? तुम्हारा अभिप्राय अलवतीना स है।'

उसका कहना है कि मैं उस वालन्तीना ही बुलाऊ, अफानासी

वोले और उन्होने जम्हाई ली। "उसने मुझसे कहा कि मैं उसका अलेवतीना नाम भूल जाऊ। एक एक जाम और हो जाये?"

उन्होने एक एक जाम और पिया और अचारी सेब खाया।

"तुम्हारा बेटा बहुत अच्छा है, मुझे बहुत पसन्द है," रोदिग्रोन ने कहा।

"कौन, वोलोद्या? हा, वह अच्छा लडका है, थोडा शरारती है।"

बेटी

भूतपूर्व अलेवतीना अब वालेन्तीना आन्द्रेयेव्ना हो गई थी। उसन लेनिनग्राद लौटने से इनकार कर दिया और स्तेपानोव ने भी इसके लिये ज़ोर नही दिया। वे अधिकतर अपने जहाज या फिर नाश्तादत म रहते, जहा उन्होने नौसेना के किसी अधिकारी की बूढी विधवा के घर म एक कमरा किराये पर ले लिया था। उनके पास वहुत कम फालतू समय होता और उसे वे पढने म बिताते। जब उन्होने पहली बार "युद्ध और शाति", "अतीत और चितन", "कज्जाकी", "वाड न० ६" और "हमारे समय का नायक", आदि किताबें पढी थी, उस समय वे लगभग तीस वष के हो चुके थे। वे अपनी बीवी को प्यार नही करते थ। यह बात उन्हे इतनी ही स्पष्ट थी, जितनी यह कि उनकी बीवी को भी उनसे प्रेम नही है। पर वे चाहते थे कि किसी को प्यार कर, वे चाहते थे कि सीनियर अफसर मिखाल्यूक को नही, बल्कि किसी नारी को नताशा रोस्तोवा के बारे मे यह पढकर सुनायें कि वह अपने मामा के घर मे कैसे गाती थी। उनका मन होता था कि किसी दूधिया रात म वे मिखाल्यूक को नही, बल्कि अपन दिल की रानी को साथ लेकर महान पीटर के स्मारक पर जायें। वे चाहत थे कि कोई उन्हे प्यार भरे पत्र लिखे और वे उनके उत्तर दें।

फिर अचानक उसके जीवन म बडा विचित्र, उग्र और सुखद परिवत्तन हो गया।

वालेन्तीना ने उन्ह लिखा कि वार्या से पार पाना उसके बस की बात नही रही। लडकी गुस्ताख और वदतमीज़ है, बिल्कुल बात नही

मानती पूरी तरह हाथ स निकल गई है। उसे सम्भालने की जरूरत है,
और इसलिय यही बहतर होगा कि व घर आकर इस बारे म कुछ तय
कर।

रोदिग्रान न थोडा सोच विचारकर वालेन्तीना को यह लिख भजा
कि वह वार्या को आश्नादत भेज द।

रादिग्रान अपनी बेटी वार्या को लनिनग्राद के स्टेशन पर लिवाने
गये।

यह जान समझे बिना ही कि उन्ह क्या हो रहा है, उन्होने वार्या
को ऊपर उठा लिया और उसके चित्तियोवाले माथे, उसकी कसी हुई
छोटी छोटी चोटिया और उसकी गदन और पतले-पतले कधो को चूम
लिया। खुशी से धीरे धीरे कुनमुनाती हुई वार्या अपन पिता की लिनन
की गाढी सफेद फौजी कमीज़ के साथ चिपकी रही।
पिता होना कसी खुशी की बात है उन्ह इस बात की अनुभूति हुई।

आदमी प्यार के बिना ज़िन्दा नही रह सकता," वे इन दिनो
सोचा करत। वह ज़िन्दा नही रह सकता और उसे रहना भी नहीं
चाहिये। शादी के मामल म तो किस्मत ने साथ न दिया, मगर बटी
के सिलसिले म मैं खुशकिस्मत हू। बडी प्यारी है यह बच्ची। इस पर
अपना प्यार निछावर कर मैं सुखी हो सकता हू।

नौसेना अधिकारी की विधवा ने वार्या के बालो म सुन्दर नीले रिबन
बाध दिये। रोदिग्रोन ने उसे बढिया चमडे के नये जूते पहनाये और
उगली थामकर अपने जहाज़ पर ले गये। उस दिन तेज हवा चल रही
थी धूल उड रही थी और गर्मी थी। सागर की ओर से नमी आ रही
थी। वे वार्या को अपने असली घर और उन लोगो के पास ले जा रहे
थे जिन्हे वे सचमुच अपना कह सकते थे। उनकी ठोडी, जो हजामत
बनाते वक्त उस सुबह ज़रा कट गई थी सदा की भाति हठीली नही
लग रही थी। उधर जाते हुए रास्ते मे वे एक दूसरे के साथ वयस्को
की भाति बातचीत करते रहे। पजा को कुछ-कुछ भीतर की ओर मोडकर
चलती हुई वार्या समद्रचिलियो उस पानी ही पानी और "अत्यधिक
नील आकाश को देखकर आश्चयचकित होती रही। रोदिग्रोन ने जानना
चाहा कि वह अपनी मा की बात क्या नही मानती वह गुस्ताख और
अक्खड क्या है।

"ओह, पिता जी, क्या आप इस किस्से को ले बैठे हैं ?" वार्या बोली। "सभी कुछ इतना अच्छा लग रहा है और अब आपने भी मा के समान बात शुरू कर दी है।"

वार्या न तो गुस्ताख थी, न ही अक्खड। उसका अपना स्वतन्त्र व्यक्तित्व था, वह किसी से दबती नही थी और बहुत ही उदार थी। वार्या के स्कूल मे जाने के पहले ही दिन से यह बात चालू हो गई थी कि वह गुस्ताख है। दूसरे पाठ के बीच मे ही नन्ही सी वार्या ने ढग से अपनी किताबें थैले मे डाली और दरवाजे की ओर चल दी। अध्यापिका ने उसे गुस्से से वापिस बुलाया। पर वार्या ने दरवाजा लाघने के बाद ही जवाब दिया—

"मुझे भूख लगी है।"

छोटी छोटी चोटियावाली यह मजबूत और नन्ही सी लडकी त्योरी चढाये हुए स्कूल से निकलकर घर चली गई थी। "यव्गेनी कभी ऐसा न करता!" उसकी मा ने चीखकर कहा। येव्गेनी ने सहमति प्रकट की कि वार्या ने यह बहुत भयानक बात की है।

इसके बाद वार्या ने पडोस की लडकी को अपना नया पेशबन्द दे दिया, क्योंकि उसके पास दो पेशबन्द थे, जबकि उस लडकी के पास एक भी नही था। येव्गेनी की एक पेटी उसने प्लस्तर करनेवाले चाचा साशा को दे दी, क्योंकि यव्गेनी के पास चमडे की कई पेटिया थी, जबकि चाचा साशा अपने पतलून मे रस्सी बाधकर काम चलाता था। वालेन्तीना आन्द्रेयेव्ना ने वार्या को कोडे लगाये। बच्ची चीखी चिल्लायी नही, पर इसके बाद वह मा के करीब कभी नही फटकी।

"बडी उपद्रवी लडकी है," जहाजी कहते और उसे प्यार करते। वह बुदकियावाला लाल स्कर्ट लहराती हुई केबिन, ऊपरी या नीचेवाले डेक पर जहा भी जाती, वही उसे खूब लाड प्यार मिलता। वह न तो कभी रूठती, न मुह बनाती और न ठुनकती, बडी फुर्ती से बात मानती और उसकी फैली फैली तथा चमकती आखो मे हमेशा सुखद आश्चर्य की झलक दिखाई देती।

उस जाडे मे वार्या क्राश्तादत के स्कूल मे पढती रही। पिता के लिये यह बहुत खुशी का वक्त था। वे अपनी शाम सिनेमा मे बिताते, लेनिनग्राद जाकर कोई नाटक देखते या फिर वे वार्या की सहेलियो का

दशमलव के प्रश्न हल करने मे मदद देते और उनके साथ खुद तालाबो और गाडियो के बारे में सवाल हल करते। इसके बाद वा समोवार का काज सम्भालती चाय डालकर देती और उसके पि गर्व से मगर मन ही मन यह सोचते—"कैसी अच्छी बेटी है, क्या कमाल की लडकी है यह! वार्या स्तेपानोवा, मेरी बेटी है! उसके समान दुनिया मे कोई दूसरी ढूढ तो लो!"

वसन्त के शुरू म ही नौसेना अधिकारी की विधवा चल बसी और स्तेपानोव को समुद्री यात्रा का आदेश मिल गया। हर जहाजी वार्या को विदा करने आया। आसुओ से उसका चेहरा सूजा हुआ था और बडी मुश्किल से ही हिल डुल पा रही थी। उसने बारी-बारी से हर जहाजी और हर अफसर के गले मे अपनी नन्ही-नन्ही बाहे डाली, अपने बालसुलभ नम होठो स उनके खुरदरे और कठोर गालो को चूमा और कहा—

'चाचा मीशा हमारे पास आकर रहिये। हमारे यहा अच्छी नर्म भी है "

चाचा पेत्या, मैं सच्चे दिल से कह रही हू कि आप हमारे पास आकर रहे।'

"चाचा कोस्त्या सेना से छुट्टी मिलते ही हमेशा के लिये हमारे पास आ जाइयेगा "

जाडे म स्तेपानोव अपने परिवार से मिलने गये। वे एक अजनबी की तरह अपने घर म दाखिल हुए। येव्गेनी अपने सिर पर हेयर नेट बाध और सोफे पर लेटा हुआ एक सचित्र पुस्तक पढ रहा था। अगला कमरा नेस्टोर माल्को के बगले की तरह सुगन्ध से महका हुआ था। वालेन्तीना आन्द्रेयेव्ना थियेटर देखने और वार्या अपनी सहेली के घर गई हुई थी। येव्गेनी ने अगडाई ली और पूछा—

क्या नया समाचार है, पापा?'

'कुछ खास तो नही ' स्तेपानोव ने जवाब दिया। "यह कौनसी किताब पढ रहे हो?'

१८६४ की नीवा पत्रिका," येव्गेनी ने जवाब दिया। "बडी ऊब भरी है यह।'

"अगर इतनी ऊब भरी है, तो पढते ही क्या हो?'

पर और करू भी तो क्या?

कुछ देर बाद वालेन्तीना आन्द्रेयेव्ना घर आई। फर के कोट मे वह अधिक सुन्दर और खिली खिली लग रही थी।

"ओह, तो महान जहाजी ने हमारे यहा आने की मेहरवानी की है। धन्य भाग्य हैं हमारे!" उसने व्यग्यपूर्वक कहा।

अब वालेन्तीना आन्द्रेयेव्ना व्यग्य-बाण छोडना सीख गई थी।

एक खास तरह की केतली मे से चाय डाली गई, पनीर के बहुत ही पतले-पतले टुकडे काटे गये, सासेज के टुकडे तो लगभग पारदर्शी थे। रोदिग्रोन मेफोदियेविच से यह पूछने तक का किसी को ख्याल नही आया कि ठड मे इतने लम्बे सफर के बाद क्या वे ढग का खाना, वोदका का जाम पीना या फिर बढिया-सा बडा ऑमलेट खाना चाहते हैं।

"खैर, मैं सयोगवश यह बता देना चाहती हू कि मैंने इस सिलसिले मे तुम्हे इसलिये कुछ भी नही लिखा कि तुमने मेरे सारे पत्न वार्या को दिखा दिये थे। पर अब तो उसने नाक मे दम कर दिया है। वह सारा-सारा दिन पायनियर बालको के साथ रहती है, अटपटे गीत गाती है और मेरी आलू चना "

"तुम्हारा मतलब यह है कि तुम्हारी आलाचना की परवाह नही करती?"

"हा, हा, वही!" वालेन्तीना ने झल्लाकर कहा। "वैस भी, कुल मिलाकर, वह अत्यधिक सोवियत लडकी है "

रोदिग्रोन मेफोदियेविच के माथे पर बल पड गये, उनके गाला पर सुर्खी दौड गई।

"क्या मतलब है तुम्हारा इससे?"

"वही, जो मैंने कहा है!"

"तो साफ-साफ कहो।"

"वह निरी मूर्खा है और अपने को बहुत अक्लमन्द समझती है," येव्गेनी न अपनी कुर्सी मे झूलते हुए कहा

रोदिग्रोन मेफोदियेविच दो सप्ताह तक यहा रहने का इरादा बनाकर आये थे, पर केवल तीन दिन ही रह। उन्हाने ये तीन दिन वार्या के साथ ही बिताये। वे उसके साथ स्केटिग रिक पर, उस्तिमेको परिवार मे अग्लाया पेत्नाव्ना और वोलोद्या के पास और थियेटर मे गय। उन्हाने

पायनियर बालकों की एक सभा में भी हिस्सा लिया और वहां सोवियत नौसेना के बारे में एक वार्ता दी। उस वार्ता के बारे में वार्या ने कुछ खास अच्छी राय जाहिर नहीं की।

'आपकी वार्ता बहुत ही सरल थी, पापा," वार्या ने कहा। "हमारे लड़के-लड़कियां खास समझदार हैं। वे यह नहीं चाहते कि उनके सामने पका-पकाया खाना परोसा जाय।"

वार्या के पिता का चेहरा सुर्ख हो गया।

मैं खासी बड़ी हो गई हूं पर आप मुझे अब भी बच्ची ही समझते हैं वार्या ने आह भरकर कहा।

"आप जानते हैं कि मैं क्या सुझाव देना चाहती हूं," वार्या ने कहा। आइये आज हम खाना खाने के लिये घर न जायें। यहां करीब ही एक भोजनालय है। वहां सलाद तो बहुत ही बढ़िया होती है और कभी-कभी तो वहां कटलेट भी अच्छे होते हैं।"

वार्या ने मोमजामे के मेज़पोश पर से रोटी के कण साफ करते हुए और पापा की ओर देखे बिना कहा—

'पापा यह बताइये कि आपने पहली बार कब प्यार किया था? आपकी उम्र काफी हो गई थी न?

ओह बहुत तो नहीं स्तेपानोव ने परेशान होते हुए जवाब दिया।

पर मैं जानती हूं कि कुछ लोग छोटी उम्र में ही प्रेम करते लगते हैं और सो भी दीवानों की तरह, वार्या ने दूसरी ओर मुंह करके कहा। हां हां दीवानों की तरह।"

स्तेपानोव के चेहरे पर खोयी-खोयी मुस्कान झलक रही थी। तो उनके जीवन की अन्तिम मुस्कान भी छिन जायेगी, वे नितान्त एकाकी ही रह जायेंगे। नहीं नहीं वह अभी बहुत छोटी है।

प्रेम करने की ऐसी क्या उतावली है। अभी बहुत वक्त पड़ा है इसके लिये उन्होंने धीरे-से कहा।

पर वार्या ने उनकी बात नहीं सुनी। शायद उसका ध्यान कहीं और था।

स्तेपानोव उसी रात को वहां से चले गये।

तीसरा अध्याय

खुमिया

अगस्त के एक इतवार को वार्या, वोलोद्या और वोलोद्या का मित्र वोरीस गूबिन, गोरेलिश्ची स्टेशन पर खुमिया बटोरने गये। शुरू मे उन्होने सभी तरह की खुमियां जमा की और फिर केवल बढिया-बढिया ही चुनने लगे। दिन धुधला धुधला और गम था, हल्की हल्की बूदा-बादी हो रही थी। वे भीग गये या यह कहना अधिक सही होगा कि भीगे नही, अत्यधिक सीले हो गय थे। उन्होन आग जलाई और उसके गिद बैठकर आलू भूनने लगे। वोलोद्या न कहना शुरू किया—

"फ्रासीसी बेकन का यह मत था कि इसान को अपने मन से कुछ भी बनाना या गढना नही चाहिये और प्रकृति जा कुछ करती और अपने साथ लाती है, उसी की खोज करनी चाहिये। इसस अधिक सक्षिप्त एक और गुर है—प्रकृति पर उन्ही की विजय होती है, जो उसकी आज्ञा का पालन करते है। किन्तु यह तो मानना ही होगा कि इस तरह के तक से बहुत लाभ नही हो सकता। बात कही तो बहुत ढग से गई है, मगर साथ ही वह हम बहुत निष्क्रिय बनाती है। इसके विपरीत "

वार्या शिष्टता दिखाते हुए मुह फेरकर झपकी लेने लगी। भलामानस बोरीस गूबिन जागता रहा। पर अचानक उसन मुह फाडकर जोर की जम्हाई ली, जिससे उसकी सदय आखो म आसू आ गये। वोलोद्या को इस बात से गुस्सा आ गया और वह वोरीस पर झपट पडा। उनकी हाथापाई से पत्ते और चीड की सुइया इधर उधर उडने लगी। बोरीस ने सुलगती हुई आग मे पैर मारा और जोर से चिल्लाया।

वार्या चौंककर जाग उठी। लडके खुशी से चीखते चिल्लाते और सड़ा मिट्टी उछालते हुए कुश्ती करने लगे। वे भला ऐसा क्या न करते? ज़िंदगी में उमंग थी वे हृष्ट पुष्ट जवान और स्वस्थ थे।

'मै भी मै भी' वार्या चिल्लाई। "जितने ज्यादा, ही अधिक मजा।"

वार्या दोनो लडको के ऊपर जा गिरी और अचानक उन त को बडी झेंप महसूस हुई। वार्या की आंखो मे परेशानी झलक उठी

'बुद्धू कहीं के।' उसने रुआंसी होकर कहा।

वार्या ने अपना स्कर्ट नीचे किया और अपनी टांगों को सिकोड़ लिया। वोलोद्या और बोरीस एक दूसरे से आंखे नहीं मिला पा रहे थे।

"अगली बार हमारे बीच टांग मत अड़ाना" वोलोद्या ने कुछ देर बाद कहा। "दो के बीच कुश्ती होती है और तीसरे के आ जाने से दंगा हो जाता है बोरीस मेरा चाकू कहां गया?"

दोनों लडके दिखावा करते हुए चाकू ढूंढने लगे।

उन्हें ऐसी झेंप महसूस हो रही थी कि उसे छिपाने के लिये बोरीस ने कोई गीत गाना शुरू कर दिया। पर झेंपकर वह अपनी ही कविता सुनाने लगा—

> होती है पतझर की बारिश, शोर मचाये
> कलयाज़ी तो मांस उबाले सूप पकाये,
> लगे गूंजने नुक्कड़ पर बाजे के स्वर
> हम जिसमें जाते, वह नूतन अच्छा घर

आह बोरीस बस भी करो अब। वोलोद्या ने अनुरोध किया।

वे तीनों स्टेशन की ओर वापिस चल दिये। बूंदा-बांदी अब भी जारी थी। धुमियों से भारी हुई उनकी टोकरियां धीरे धीरे चूं चूं कर रही थीं। जब ये झल्लाये और थके-हारे हुए तीनों व्यक्ति रेलवे पर पहुंचे तो झुटपुटा हो चुका था। वहां उन्हें लोगों की भारी भीड़ दिखाई दी। कोई चौदह साल का गडरिया रेल की पटरी में पास पड़ा हुआ बुरी तरह से चीख चिल्ला रहा था। वह अभी तक होश में था। पटरियां और तख्ता तथा बाल तेल से सनी हुई राखी पर भी खून

ही खून फैला हुआ था। लडके से कुछ ही दूर एक टाग कटी पडी थी, जिसके पैर मे पुराना-सा रबड का जूता था। एक बुढिया ज़ोर-ज़ोर से रो रही थी और कई किसान बुत बने खडे थे, समझ नही पा रहे थे कि लडके का क्या करे। करीब ही एक भेड भी दम तोड रही थी। वह भी गाडी के नीचे आ गई थी।

वोलोद्या भीड को चीरकर आगे गया। दृश्य देखकर उसका चेहरा फक हो गया। उसने अपनी कमीज उतारी और अपने अनुभवहीन हाथो से जल्दी-जल्दी रक्तबध बाधने लगा। किसी ने उसकी मदद की। उसे केवल बाद मे ही इस बात का एहसास हुआ कि वह वार्या थी। तिनको का जजर टोप ओढे हुए एक किसान ने सहायता करते हुए कटी टाग वोलोद्या की ओर बढा दी। वोलोद्या ने उसे बुरा भला कहा। बोरीस भागकर स्टेशन पर गया और कोई बीस मिनट बाद स्ट्रेचर के साथ एक डाक्टर ट्रॉली मे आया।

"किसने बाधा है यह रक्तबध?" रेलवे के बूढे डाक्टर ने जानना चाहा।

तिनको के टोपवाले किसान ने वोलोद्या की ओर सकेत किया।

"विद्यार्थी हो क्या?"

वोलोद्या ने कोई जवाब नही दिया।

"ये शैतान के बच्चे, आज सभी पिये हुए है," डाक्टर ने झल्लाकर कहा। "आज धार्मिक पर्व है। तुम क्यो गला फाडकर चिल्ला रही हो?" डाक्टर ने बिगडते हुए सवलाये चेहरेवाली बुढिया से कहा। "भेड के लिये?"

डाक्टर ने सिर हिलाकर ट्रॉली की ओर सकेत किया और वोलोद्या को अपने साथ चलने के लिये कहा।

स्टेशन के प्राथमिक डाक्टरी सहायता के छोटे से कक्ष मे डाक्टर ने वोलोद्या को सफेद लबादा देने का आदेश दिया और गडरिये को एटीटेटनस सीरम की सूई लगाई। घडी भर को वोलोद्या ने ऐसा अनुभव किया मानो उसे गश आ गया हो। उसे डाक्टर की कर्कश आवाज तो जैसे सपने मे सुनाई दी।

"सचमुच तुमने अच्छा काम किया है। डाक्टरी के प्रथम वर्ष के विद्यार्थी से इससे अधिक की आशा नही की जा सकती। असली

चीज तो यही है कि तुम्हारे होश हवास कायम रहे। तुम्हारा चेहरा क्यो ऐसा ज़द हो रहा है? नस, इसे अमोनिया सूघने को दो। इसे बाहर हवा म भेज दो।'

वार्या और बोरीस बाहर बेच पर बैठे हुए थ।

'तुम्हारी टाकरी कहा है?" बोरीस ने पूछा।

वोलोद्या ने कधे झटक दिय। उस मतली हो रही थी। "मैं कभी अच्छा डाक्टर नही बन सकगा कभी नही, कभी नही," वह दुखी होता हुआ सोच रहा था।

टोकरी के खो जान का भी उसे गम हो रहा था। उसे खमिया का अफसोस नही था। भाड म जाये वे तो। उसे तो कुछ-कुछ शम आ रही थी।

दो दिन बाद वोलोद्या न प्रादेशिक समाचारपत्न म एक विनम्र सोवियत विद्यार्थी के बारे म एक लेख पढा। लेख म कहा गया था कि उसे अच्छी जानकारी तो थी ही पर साथ ही उसन समय-बम और साहस का भी परिचय दिया और वह अपना नाम बताये बिना ही गायब हो गया। निष्कष यह निकाला गया था कि ऐसे अज्ञात नायक केवल हमारे ही देश म हो सकते है। बोरीस गूबिन ने सभी को यह घटना सुना दी और जब पतझर के शिक्षाकाल के पहले दिन वोलोद्या स्कूल म आया तो उसका जोरदार स्वागत किया गया।

हा तो अज्ञात नायक मुझे सुनाओ तो वह पूरी घटना। बहुत उत्सुक हू मैं सुनन को वोलोद्या की बूआ ने उसी शाम को वोलोद्या से कहा। क्या वार्या ने भडाफोड किया है?' हो सकता है।

'बात यह है कि मैंने जगी अस्पताल की सजरी के वा व्याख्याना की एक किताब खरीदी थी।

'हा हा कहत जाओ।

वही स मैंन रक्तबध बाधना सीखा था। पर मैं कभी डाक्टर नही बन सकगा। मुझ यह मानते हुए शम आती है कि मेरा सिर बुरी तरह चकरा रहा था।

शुरू म सभी का एसा हाल होना है चमकती आखा से अपने भतीज की आर दखते हुए बूआ न कहा। काश तुम अनुमान लगा

सकते कि मैं, जो पहले धोबिन होती थी, जब पहली बार स्कूल मे गई थी, तो मेरा क्या हाल हुआ था।"

इस घटना के बाद वार्या तो बिल्कुल नम्र हो गई और अब किसी भी बात के लिये वोलोद्या से बहस न करती। केवल येव्गेनी ही इस मामले की व्यग्यपूर्ण ढग से चर्चा करता—

"वे तुम्हारी खुमिया उडा ले गये न?" उसने जान-बूझकर तीखे अन्दाज मे कहा। "यह फल मिलता है दयालुता, उदारता और समझ-बूझ के बीज बोने का।"

"तुम क्या चाहते कि तुम्हारे मुह की जरा खातिर कर दी जाये?" वोलोद्या ने पूछा।

"यह छिछोरापन है!" येव्गेनी ने कडाई से कहा।

"कभी-कभी तर्क वितर्क करना निरर्थक होता है," वोलोद्या ने जवाब दिया। "अच्छी पिटाई कर दी जाय, तो मामला खत्म हो जाता है।"

"तो कानून किस मर्ज की दवा है? तुम क्या समझते हो कि मैं तुम्हे ऐसे ही छोड दूगा, तुम पर मुकदमा नही चलाऊगा? मेरे अच्छे दोस्त, तुम्हे सीधे दिमाग ठीक करनेवाले श्रम शिविर मे भेज दिया जायेगा," येव्गेनी ने समझाते हुए कहा।

वोलोद्या ने येव्गेनी की ओर देखा, तो उसे इस बात का आश्चर्य हुआ कि वह गम्भीरतापूर्वक बात कर रहा था। वह शान्त और सयत, अपनी फिट कमीज और कधेवाली पेटी पहने हुए चुस्ती का नमूना और बिल्कुल ऐसा बाका जवान लग रहा था जैसा हम पोस्टरो मे देखते हैं। "तो क्या मैं लगा ही दू उसके मुह पर एक चपत?" वोलोद्या सोच रहा था। पर अचानक उसे ऊब महसूस हुई और वह वहा से टल गया।

"पिता और बच्चे"

वोलोद्या अभी स्कूल म ही था कि उसने सेचेनोव नामक डाक्टरी सस्थान के विद्यार्थी का जीवन बिताना शुरु कर दिया। उसे बोरीस गूबिन से पता चला कि सस्थान के कुछ विभाग विद्यार्थियो के लिये

मण्डल चलाते है जिनमे सभी को जाने की अनुमति है। उसी रि
म वह शरीर विकृति विज्ञान के विभाग द्वारा सगठित मण्डल म जाने
लगा। नाटे माटे और गजी चादवाले प्रोफेसर गानिचेव इस मण्डल
का सचालन करते थे। इस लम्बी गदनवाले नौजवान की तरफ उनका
फौरन ध्यान गया। यह सही है कि वे वालाद्या से कभी कोई सवाल
नही पूछते थे फिर भी अक्सर ऐसा लगता था, मानो वे वोलाद्या
के लिये ही व्याख्यान देते हो। स्कूल मे वोलोद्या की गाडी ठीक ठाक
ही चल रही थी, मगर अध्यापकगण उसके मामले म सावधानी स काम
लेते और उनम स कुछ शत्रुता की भावना भी रखते थे। अध्यापकों
की बैठक म वे उसे 'अदभुत लडका" कहते थे और शिक्षा-सचालिका
तात्याना येफीमोव्ना ने अनेक बार साफ साफ ही कह दिया था कि
वोलोद्या बहुत व्यक्तिवादी है, उसका दृष्टिकोण बहुत अस्पष्ट है और
वह इस आत्मविश्वासी लडके स कुछ अधिक आशा नही करती। सभी
अध्यापको का ऐसा मत नही था मगर उसके साथ बहस करने का
मतलब था झगडा मोल लेना। झगडा कोई उससे करना नही चाहता
था। जैसे-जैसे समय बीतता गया, अध्यापक वोलोद्या से अधिकाधिक
नाखुश होते गये। उसकी एकाग्रता जो कभी-कभी छोकरा जैसे शरारत
भर शोर शराबे का रूप न लेती, उसका रुखाई भरा एकाकीपन और
अपने आन्तरिक जगत से उसका लगाव, जिसमे वह स्कूल के ढर्रे स
अलग-थलग रहता हुआ खोया रहता था इन सभी चीजो से अध्यापकगण
चिढते थे। वे इस बात स भी खीझते कि वह आत्म निर्भर है कि
पाठ्यपुस्तको म दिये गये अकाट्य सत्यो स सन्तुष्ट न होकर सत्य
सत्य खोजता रहता है।

'काश कि मैं जल्दी स चिकित्साशास्त्र का विद्यार्थी बन जाऊ!
वहा वही वास्तविक अचूकता और स्पष्टता है। केवल वही असली
चीज है।' वोलोद्या राता को जाग म आकर यही सोचता रहता।

दूसरी बार गानिचेव अपने विद्यार्थियो म मुस्कराकर जो कुछ
कहते वह उदाहरणार्थ न होना। व कहते—

हमारे पास आने क पहले सबको बार सोच विचार कर लीजिये।
[illegible] न कहना जारी रहता है कि चिकित्साशास्त्रियो को
हमेशा यह कामना करना चाहिये कि उनके दरवाजे रोगियो का घूमी

हो। अगर आप इस बात पर विचार करे, तो बात जैसी साधारण लगती है, वैसी है नही। हिप्पाक्रेट्स ने और जो सलाह दी है, उसका अनुकरण करने से व्यक्ति के अहम को चोट लगती है। उसने कहा है कि अगर कोई बीमारी किसी डाक्टर की समझ मे न आये, तो उसे बेधडक अन्य डाक्टरो को बुलाना चाहिये ताकि वे लोग उसे मरीज़ की हालत समझायें और ज़रूरी इलाज बतायें "

गानिचेव ने यह भी कहा—

"मेरे प्रिय मित्रो, गेटे को पढिये। मेफिस्टोफेनेस ने कुछ ऐसी कटु, मगर सच्ची बाते कही हैं, जिनका महत्त्व आज भी कम नही हुआ है। ऐसा मत सोचो कि गुनो के ऑपेरा म आपने उन सभी सत्या को सुन लिया है। उसे पढिये और सोचिये, उस पर गहरा चिन्तन कीजिये, वहा कुछ खोजिये और अपने मे यह पूछिये—क्या असली तौर पर मुझमे उस सबसे बडे प्रलोभन, अर्थात् विचारहीन कर्त्तव्यपालन से बच निकलने की ताकत है "

इधर उधर हिलते डुलते तसमावाले अपने चमकते जूते से ताल देते हुए वे जर्मन भाषा मे गेटे का पाठ करते और साथ-साथ उसका अनुवाद भी करते जाते—

समझना मुश्किल नही है, चिकित्सा की आत्मा को
छोटी और बडी दुनिया का
यत्न से अध्ययन करो,
और फिर हर चीज़ को
भगवान की इच्छा पर चलने को छोड दो

गानिचेव झल्लाते और भुनभुनाते हुए चिकित्साशास्त्र के इतिहास म पेशेवर सकीर्णता की प्रथा, उन दर्पपूर्ण और मूर्ख बूढो के बारे मे अपने विद्यार्थियो को बताते, जो प्रतिभाशाली युवाजन के विचारो को इसलिये दबा धाट देते थे कि उनके विचार परेशान करनेवाले होते थे। प्रोफेसर गानिचेव को वह शपथ जबानी याद थी, जो सदियो पहले प्रसिद्ध बोलोगना विश्वविद्यालय के स्नातको को लेनी पडती थी।

"'तुम्हें अवश्य यह कसम खानी चाहिये'," गानिचेव की आखें गुस्से से जलने लगती और वे बहुत गभीर होकर यहा तक कि दम्भपूर्वक

इस कसम को दोहराते "'तुम्हें यह कसम खानी चाहिये कि हमेशा वोलोगना विश्वविद्यालय और अन्य प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों की शिक्षा का पक्ष पोषण करोगे जहां ऐसे ग्रंथकारों के विचारों के अनुसार शिक्षा दी जाती है जिनकी सदियों से प्रशंसा हो रही है और जिनका प्रतिपादन तथा व्याख्या विद्यालय के सिद्धांत और खुद प्रोफेसर कर रहे हैं। तुम अपनी उपस्थिति में अरस्तू, गालेन, हिप्पोक्रेटस तथा अन्य के सिद्धांतों और निष्कर्षों का कभी विरोध या महत्त्व कम नहीं करने दोगे

तो लीजिये यह थी वह कसम, वह प्रतिज्ञा जो कभी ईजाद की गई थी गढ़ी गई थी। इस तरह विज्ञान के गले में एक फन्दा डाल दिया गया था। हां, हां, एक फंदा। कारण कि मौलिक या नये का निश्चय ही यह मतलब है कि पहले से स्वीकृत मान्यताओं के बारे में नये विचार प्रकट करना। अन्य की तो चर्चा ही क्या है, महान अरस्तू, गालेन और हिप्पोक्रेटस के निष्कर्षों के सम्बन्ध में भी नये विचार व्यक्त करना। शैतान ही जाने कि ये अन्य कौन थे। ऐसा करने का मतलब होता था बड़े धार्मिक न्यायालय में पेश किया जाना और फिर आग में जिन्दा झोंक दिया जाना। इसलिये यह स्वाभाविक ही है कि उन दिनों के अधिकांश प्रतिभाशाली लोग ईमानदारी से काम करने के बजाय हमारे चिकित्साशास्त्र के जनक हिप्पोक्रेटस के इन शब्दों – निपुणता चिरस्थायी, जीवन छोटा है, प्रयोग में जोखिम है, तर्क वितर्क अविश्वसनीय है' – से अधिकतम लाभ उठाते। जिआर्दानो ब्रूनो ने उस ज़माने के डिप्लोमा प्राप्त मन्दबुद्धिवालों का घिसा पिटा मार्ग छोड़कर दूसरा ही रास्ता अपनाया। 'मैं ऐसी अकादमी का अकादमीशियन हूं जिसका अभी तक अस्तित्व नहीं,' महान ब्रूनो ने अपने बारे में कहा। अज्ञानता के पवित्र पादरियों में मरा कोई सहयोगी नहीं है। जैसा कि आप जानते हैं, इसका बहुत दुखद अन्त हुआ था

नाटे-मोटे प्रोफेसर गानिचेव सन्देह का प्रचार करते थे। वे पहले से ही उन रट्टू तोतों को संस्थान से दूर रखना चाहते थे जिनका ऊंचे अंक पाना मात्र ही लक्ष्य था। वे नहीं चाहते थे कि माताओं के लाड़-प्यार से बिगड़े और ऊबे हुए ऐसे नौजवान संस्थान में आयें,

जिन्होंने अभी तक इस बात का तय नही किया है कि वे अपनी प्रतिभाओ का कहा इस्तेमाल करे। प्रोफेसर विद्यार्थियो से कहते कि वे निरन्तर नवीनता की खोज कर। वे उन्ह बताते कि किसी भी डाक्टर की पुस्तिका, पाठ्यपुस्तक या बहुत ध्यान से तैयार किये गये व्याख्यानो से "आएसकूलापिउस की भावी पीढी," जैसा कि वे उन्ह कहना पसद करते थे, को तब तक कोई लाभ नही होगा, जब तक वह स्वय निरन्तर नवीनता की खोज नही करेगी।

"पर पाठ्यपुस्तके तो अभी तक कायम हैं न?' बोलाद्या की बगल मे बैठे हुए गोरे-चिट्टे, लाल गालो और फूली फूली आखोवाले मीशा शेरवुड ने एक दिन गानिचेव से पूछा।

"पाठ्यपुस्तके भी भिन्न भिन्न होती है," गानिचेव न सोचते हुए जवाब दिया। "मिसाल के तौर पर, हमारे जमाने मे रोगी और उसके परिवार के लोगो का जी खुश करने और चिकित्सा विज्ञान की प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिये ऐसी दवाइया दन की सिफारिश की जाती थी, जिनसे न कोई लाभ हो, न हानि। हमारी पीढी के समय म औषध-विज्ञान ने तरह-तरह की ऐसी बहुत सी औषधिया तैयार की थी, जो सवथा प्रभावहीन थी। पाठ्यपुस्तको ने भी डाक्टरो की कई पीढिया को इस आधार पर रोग निदान करन की शिक्षा दी कि किस दवाई से रोगी को लाभ होता है। समझे आप लोग? «Ex juvantibus»।

"बडी अजीब-सी बात लगती है!" शेरवुड ने कहा।

"पुराने जमान म," गानिचेव कहते गये, "जादू-टोना और ज्योतिष समेत दुनिया की सभी चीजो से लोगो का इलाज किया जाता था। गठिये और जोडो के दद के लिये मेढक की कलेजी का उपयोगी माना जाता था, सुनहरी पृष्ठभूमि पर बबर का चित्र गुर्दे की बीमारियो को दूर करता था और ऐसा माना जाता था कि आक के अर्क से पीलिये का केवल इसलिये इलाज किया जा सकता है कि उसका रग पीला है। ऐसा भी समझा जाता था कि चाद की घटा-बढी के साथ साथ मानवीय मस्तिष्क का आकार भी घटता-बढता है और सागर के उतार चढाव का खून के दौरे पर असर पडता है। मालियेर ने अपने पात्र बेरालड के मुह से बिल्कुल ठीक ही कहलवाया है कि इस

ढग की डाक्टरी कला की शान-बान उन बेतुकी, गभीर और विद्वत्तापूर्ण अनाप शनाप बातो म निहित थी, जिनम शब्दाडम्बर और झूठे भारी-भरकम समझबूझ का स्थान लेते थे।"

"क्या आजकल भी ऐसी चीजें होती है?" फूली फूली आखोवाले नौजवान ने फिर पूछा।

"इन्सान ही पाठ्यपुस्तके लिखते हैं और चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा भी इन्सान ही देते हैं," गानिचेव ने अपनी बात ऐसे जारी रखी मानो उन्होने नौजवान का सवाल सुना ही न हो। "महान डाक्टर भी इन्सान ही थे। अतीत के महान चिकित्सको का मानवीय आलोचना से परे घोषित करने की, उनकी गलतिया और उनके द्वारा लिखी बकवास की अवहेलना करने की एक खतरनाक, मैं तो यह तक कहने की हिम्मत करूगा कि एक हानिकारक, कमीनी और सडी हुई प्रवृत्ति पाई जाती है। यह प्रवृत्ति विज्ञान की प्रगति म बाधा डालती है। जाहिर है कि हमारे बडे समकालीन वैज्ञानिक भी भूल और कभी-कभी बकवास भी करते है। ऐसी गलतिया लोगो के दिमागो मे भर दी जाती है क्योकि उन्हे करनेवाले लोग बहुत ही सम्मानित और कुछ तो बहुत ही जाने-माने अकादमीशियन होते हैं। पर आपको अपने दिमागो का इस्तेमाल करना चाहिये, वरना आप लोग डाक्टर नहीं, बल्कि केवल ऐसे ही बनेंगे, जिनके बारे मे मोलियेर ने लिखा था–'वे लातीनी मे यह बताते है कि तुम्हारी बेटी बीमार है।'"

"नकचढा बूढा!" फूली फूली आखोवाले मीशा शेरवुड ने फुसफुसाकर वोलोद्या से कहा।

"और तुम जवान गधे हो," वोलोद्या ने फुसफुसाकर जवाब दिया।

"होश मे आकर बात करो!" शेरवुड बरस पडा।

"तुम कुछ जानना चाहते हो क्या?" गानिचेव ने पूछा।

वोलोद्या चुप रहा।

पतझर की तिमाही पढाई खत्म होते तक वोलोद्या ने अध्यापको से ऐसे प्रश्न पूछने की आदत से निजात पा ली, जिनके सभी के लिये उत्तर देना सभव नही होता था। जहा तक उनके प्रश्नो के उत्तर देने का सम्बन्ध है, तो वह खरी-खरी कहने की अपनी जन्मजात आदत

के कारण वैसे ही जवाब नही दे पाता था जैसे कि अध्यापक चाहते थे। इसलिये वोलोद्या को जब भी ब्लैक बोर्ड पर बुलाया जाता छात्रो को एक मुफ्त तमाशा देखने को मिल जाता। जाहिर है कि अध्यापक की तुलना में उसकी जानकारी कम और यकीनन सतही होती थी, मगर वह हमेशा यह दिखा देता कि उसका ज्ञान काफी विस्तार था। वह अक्सर ऐसी बाते कहता, जो अध्यापक के लिये भी नई होती और जाहिर है कि पाठ्यपुस्तको मे उन्हे नही ढूढा जा सकता था। वोलोद्या के उत्तर अक्सर सभी छात्रो को गहरे चिन्तन की प्रेरणा देते और हर कोई वोलोद्या और अध्यापक के बीच होनेवाले वाक्-द्वन्द्व को बहुत दिलचस्पी से सुनता।

"यह कोरा भाववाद और रहस्यवाद है, पोपवाद है!" अध्यापक ने एकबार चीखकर कहा।

"मार्क्सवादी को तजरबे की अवस्था से सामने आनेवाले तथ्य को ही बुरा कह देने के बजाय उसकी जाच पडताल करनी चाहिये," वोलोद्या ने शान्त रहते हुए दृढता से कहा। "मैंने आपके सामने एक तथ्य पेश किया है और आप डाटने डपटने लग गये।"

वोलोद्या इत्मीनान से अपनी डेस्क पर जा बैठा। अदाम ने कापते हाथो से पहले तो उसकी रिपोर्ट मे २ और फिर ५ अक लिख दिये। अपनी सभी त्रुटियो के बावजूद वह ईमानदार आदमी था। वोलोद्या के मित्रो ने उसकी खूब तारीफ की और एक-दूसरे को इस तरह के पुर्जे लिखकर भेजे– "कर दिया न उसने अदाम का दिमाग ठिकाने!" या "वह हमारा गर्व और हमारी शान है!" या "जाने आगे चलकर वह क्या बनेगा?" मगर वोलोद्या ने किसी पुर्जे की ओर ध्यान नही दिया, कुछ भी देखा-सुना नही। वह तो अपने डेस्क पर बैठा हुआ खून के दौरे के सम्बन्ध मे एक नई किताब पढने मे व्यस्त था। इस किताब को वह केवल अगली शाम तक ही, जब चिकित्सा-मण्डल द्वारा आयोजित व्याख्यान होनेवाला था, अपने पास रख सकता था। १६वी शताब्दी मे स्पेनवासी मिगुएल सेर्वेत ने खून के दौरे की समस्या को लगभग हल कर लिया था, पर उसे जिन्दा जला दिया गया था। ओह, कमीने कही के!

"यह तुम क्या बडबडा रहे हो?" वोलोद्या के पास बैठे हुए ना[...]
ने पूछा।

"कौन, मैं बडबडा रहा था?" वोलोद्या ने चौंककर पूछा।

फिर भी वह बडी मुश्किल से ही डाक्टरी के कालेज में [...]
हुआ। उसने तुर्गेनेव की रचना 'पिता और बच्चे' का अपना नि[...]
निबन्ध के लिये चुना और बाजारोव पर ही अपना सारा ध्यान कें[...]
किया। लगभग जनून की हद तक पहुंचे हुए अपने जोश में उ[...]
बाजारोव को रूसी विज्ञान के नये और अछूते मार्गों का पथप्रदर्शक
कहा। दूसरी ओर बेचारे तुर्गेनेव को उसने "एक निठल्ला कुलीन
बताया जो कला को कला के लिये मानते हुए ही लिखते थे या
शायद यह कहना अधिक ठीक होगा कि अपना ऐसा फालतू समय
बिताने के लिये ही लिखते थे जब वे पालीना वियारदो की गमकों
और तानों का रस नहीं लेते थे। वोलोद्या का यह कलापूर्ण वाक्य
अच्छा लगा और उसने उसे रेखांकित कर दिया। जाहिर है कि उन
तो भूलकर भी यह ख्याल नहीं आया होगा कि इसी वाक्य को पढ़कर
अत्यधिक संवेदनशील परीक्षिका अपने दिल को ताकत देने की दवाई
पीने को विवश हो जायगी। विद्यार्थी चुनाव-समिति की बैठक में
वोलोद्या के निबन्ध के कुछ अंश पढ़कर सुनाये गये। उन्हें सुनकर सभी
लोग खूब हंसे और उन्होंने भर्त्सनापूर्ण विचार प्रकट किये। केवल
गानिचेव ही नहीं हंसे। चूंकि कालेज में सभी लोग उनका सम्मान
करते थे और उनसे जरा दबते भी थे इसलिये बैठक में उपस्थित सभी
लोगों ने इस बात की ओर खास ध्यान दिया कि वे हंस नहीं रहे हैं।

'यह सही है कि नौजवान का दृष्टिकोण गलत है," गानिचेव
ने सोचते हुए और अफ्सोस के साथ कहा। "उसने बुरी तरह और
बहुत बडी भूल की है। मगर उसने वही कुछ लिखा है, जो वह
ईमानदारी से सच मानता है। प्यारे दोस्तो, बात यह है कि उसने
परीक्षा पास करना या हमारी नज़र में अच्छा बनना नहीं चाहा, अपने
को इस तरह प्रस्तुत करने की कोशिश नहीं की कि हम उस पर मुग्ध
हो जाते। उसने तो केवल बाज़ारोव की सफाई पेश की है। वोलोद्या
अभी कमउम्र है और इसलिये यह नहीं जानता या अभी तक यह मालूम
नहीं कर पाया कि रूस में बाज़ारोव का पक्षपोषण करनेवाला वह

पहला आदमी नहीं है। उसने बहुत ही ज्यादा जोर शोर से बाजारोव की वकालत की है। पर, मेरे प्यारे सहयोगियो, आप इस जोरदार वकालत के तथ्य को ही ले ले। एक नौजवान, वास्तव म एक छोकरा ही, रूसी विज्ञान की वकालत करने के लिये सामने आया है। उसने सच्चे दिल से महसूस करते हुए अपने विचार प्रकट किये है। वोलोद्या ने बाजारोव मे सेचेनोव और मेचनिकोव तथा पिरोगोव के लक्षण खोज निकाले हैं। आप लोगो की अनुमति से मैं एक अजीब बात कहना चाहता हू। तुर्गेनेव अगर आज जिन्दा होते और इस निबन्ध को पढते, तो कभी बुरा न मानते। वे जरा हस देते, मगर बुरा हरगिज न मानते और शायद यह निबंध उनके दिल को छू भी लेता। वह इसलिये कि जोश म जो कुछ अनाप शनाप लिख गया है अगर उसे हटा दिया जाये, तो इसमे एक नागरिक के कर्त्तव्य की समझ बूझ देखी जा सकती है। जहा तक हमारे कालेज, हमारी सस्था का सम्बन्ध है, मैं यह कहना चाहता हू कि इस आवेदक ने जो शैली अपनायी है, उससे एक ऐसे व्यक्तित्व का आभास मिलता है, जो सक्रिय डाक्टर, एक जुझारू और सघर्षशील व्यक्ति बनेगा। मैं इस आडम्बरपूर्ण भाषा के लिये क्षमा चाहता हू। हा, वह असहिष्णु होगा, किन्तु उसके व्यक्तित्व मे मौलिकता और ध्येयनिष्ठा होगी वह दूसरो से भिन्न होगा। इस बात को ध्यान म रखते हुए हमे ऐसे विद्यार्थियो की बहुत सख्त जरूरत है कि एक खास तरह के युवाजन केवल सस्थान म प्रवेश पाने की इच्छा रखते हैं। वह सस्थान कैसा भी क्यो न हो, उन्हें इससे कोई मतलब नही, केवल विद्यार्थी बनना ही उनका ध्येय होता है। यह सही है कि कभी-कभी हमारे यहा से उच्च शिक्षा प्राप्त बढिया स्नातिकाए निकलती हैं, मगर वे असली अर्थ मे डाक्टर नही होतीं। कभी-कभी हमारे यहा से बहुत प्यारे डाक्टर भी निकलते हैं, किन्तु ”

गानिचेव बनावटी ढग से मुस्कराये और उन्होंने ऐसे हाथ झटका मानो बात को आगे जारी रखने म कोई तुक न हो।

“जहा तक उस्तिमेको का ताल्लुक है, मैं उसे अपने अध्ययन-मण्डल से जानता हू। मैं साफ-साफ यह कह देना चाहता हू कि बेशक कोई कुछ भी क्यो न सोचे, मैं तो व्यक्तिगत रूप से न केवल उसे

विद्यार्थी ही बनाना चाहूगा बल्कि अपना काम भी सौंपना चाहूगा, बशर्ते कि यह अपनी धुन का दीवाना नौजवान शरीर विकृति विज्ञान के अध्ययन मे अपने को पूरी तरह लगा दे। आप यह तो जानते ही है कि कभी कभी हम अपना काम किसी अजनबी को नही, बल्कि एक ऐसे पर खर अगर उम्मीदवार के सम्बन्ध मे सभी साथी एकमत नही है तो हम उसे बातचीत करने के लिये बुला सकते हैं "

सभी साथी एकमत नही थे और इसलिये वोलोद्या को दोपहर के २ बजे विद्यार्थी चुनाव-समिति की बैठक मे बुलाया गया। वोलोद्या बारह बजे आ गया और लम्बे तथा अधेरे दालान मे इधर-उधर टहलने लगा। जैसे ही वह घूमा कि उसे येव्गेनी दिखाई दिया। उसके रग-ढग मे सदा का सा बनावटीपन था, पर इस समय वह बहुत ही सजग और खुश दिखाई दे रहा था।

तुम यहा किसलिये आये हो?" वोलोद्या ने हैरान होकर पूछा।

दाखिल होने और किसलिये? येव्गेनी को वोलोद्या के सवाल मे हैरानी हुई। "तुम्हे तो यह मालूम ही है कि मैंने इसके बारे मे तुम्हारी सलाह भी ली थी। हा, और मेरा अन्नदाता भी खुश है। न जाने क्यो मगर तुम्हारे बारे मे उसकी बहुत अच्छी राय है। इसलिये वह खुश है कि हम इकट्ठे पढेंगे। मैंने तो तीसरे वर्ष के विद्यार्थियो से दोस्ती भी कर ली है और उनका कठोर रोमास भी सीख लिया है। सचमुच, बहुत प्यारा सा गीत है।"

कैसा रोमास?" वोलोद्या समझ नही पाया।

मैं तुम्हे गाकर सुनाता हू। उसका शीर्षक है 'मेरे चीर फाड करनेवाले दोस्त के नाम।"

येव्गेनी खिडकी के दासे पर बैठ गया, उसने अपना लाल-लाल मुह खोला और मजे से गाने लगा (वह घर पर, स्कूल और शौकिया कला कार्यक्रमो मे अक्सर गाता था)—

> टूट चुके हो जब सारे रिश्ते-नाते
> और लिटायें जब मुझको सगमरमर पर,
> सावधान तुम रहना, तनिक कृपा करना
> नहा गिरा देना दिल मेरा पत्थर पर

येव्गेनी का गाना सुनकर कुछ लोग जमा हो गये थे। उसने अपने भावी सहपाठियों को बताया—

"इस गीत के बारे में सबसे अजीब बात यह है कि गाशिन ने इसे रचा था, जो चीर-फाड करनेवाला भी था। है न यह प्यारा गीत? आप लोग एक और गीत सुनना चाहते हैं, डाक्टरी के पुराने विद्यार्थियों का गीत? यह चीर-फाड के कक्ष के बारे में है जहां हमारी किस्मत में भी बहुत-सा वक्त बिताना लिखा है।"

दालान में दो परीक्षक आते दिखायी दिये। येव्गेनी ने उन्हें गुज़र जाने दिया और फिर लगभग फुसफुसाते हुए गाना शुरू किया—

> बड़ा अजब यह युवक, भला क्या सुख पाता
> बदबू वाले शवघर में हर दिन जाता,
> जाता है इसलिये, ज्ञान कुछ ले पाये
> लेकिन हर दिन भूले ही करता जाये

आश्चर्य की बात थी कि येव्गेनी लोगों को पसंद भी आ सकता था। दालान में गाये गये गीतों से उसके कुछ मित्र भी बन गये थे। वह अब उनके साथ चहलकदमी करता था, ठहाके लगाता था, कंधे थपथपाता था और हर किसी को घनिष्ठता से उसका नाम लेकर बुलाता था।

"ऐ भावी पिरोगोव-स्क्लीफोसाव्स्की-बुर्देन्को के मिले-जुले रूप, इधर हमारे पास आ जाओ," येव्गेनी ने वोलोद्या को आवाज़ दी। "लो, परिचय कर लो इस भीड़ से—यह है न्यूस्या योल्किना, यह स्वेतलाना और ओगुर्त्सोव ..."

माथे पर बल डाले, दुबला-पतला, लम्बी बांहों और गालों की उभरी हड्डियों तथा घनी भौंहोंवाला वोलोद्या विद्यार्थी चुनाव-समिति के सामने आया। जिस किसी ने भी कोई सवाल पूछा, वोलोद्या ने उसका अपने ढंग से, नपा-तुला और बेधड़क जवाब दिया। पर उसने अपने जीवन-ध्येय के रूप में जिस विषय को चुना था उसके प्रति उसका अपना रवैया इतना गंभीर था कि बातचीत करनेवाले लगभग सभी लोगों ने खुशी से एक दूसरे की आंखों में झांका और कुछेक ने तो

अथपूण ढग से कभी-कभी आग्ख भी मारी। केवल एक ही व्यक्ति वालाद्या को शत्रुतापूण दृष्टि से देख रहा था—गैन्नादी तारासोविच मावलोफ। वह देखने भालने म पूरा प्रोफेसर लगता था—चाद निकली हुई, दाग ढग से छटी हुई और उगलिया म अगूठिया पहने हुए। वालाद्या में कोई ऐसी चीज़ थी, जिसके कारण उसे खीझ आ रही थी—शायद वडो के प्रति आदर का अभाव। फिर भी सब कुछ ठीक-ठाक ही रहा। टूम छल्लावाली घडी जेब से निकालकर झावत्याक न उस पर नज़र डाली और किसी रोगी को देखने चला गया। वालाद्या को अच्छे ढग से जाने को कहा गया।

विद्यार्थी

'सचमुच बडी खुशी होती है" डीन ने कहा। "ऐसे लडके मिलकर खुशी होती है। मैं बैठा-बैठा सोच रहा था कि नोवोरोस्सीइस्क नगर के विश्वविद्यालय म वालोद्या जैसा लडका कभी नहीं आया कम से कम मेरी कक्षा म तो नही। अब यह चर्चा चल ही गई है ता मुझे एक और लडके का ध्यान आ गया है। वह भी मुझे अच्छा लगा बहुत ही जवान है, सेब जैसे लाल लाल गालोवाला। जाहिर है कि बहुत प्रतिभाशाली तो नही, पर बहुत ही अच्छा लगनेवाला नौजवान है। बहुत अच्छा प्रभाव डालता है मन पर देखिये, उसका नाम भूल गया '

येगेनी स्तेपानोव का नाम डीन के दिमाग से निकल गया लगता था। पर कुछ अध्यापक जानते थे कि येगेनी का डीन के घर मे आना जाना है, कि वह वहा अक्सर रोमास भी गाया करता है, कि डीन की वेटी इराईदा उस पर लट्टू है, इसलिये उन्होंने डीन को उसका नाम याद दिला दिया।

"हा, हा, मेरे ख्याल मे स्तेपानोव ही है उसका नाम," डीन ने हामी भरी। 'बहुत अच्छा और बहुत नेकदिल लडका है, इसमे कतई सदेह नहा। हमारे जमाने मे ऐसा को भोला भाला जवान कहा जाता था। उसमे असली रूसी की झलक मिलती है, स्तेपियो की गध आती है, वडा उदार और हिम्मती है वह!"

डीन ने अनुभव किया कि वह येव्गेनी के बारे मे ज़रूरत से कुछ ज्यादा ही कह गया है और इसलिये उसने फिर से वोलोद्या की चर्चा शुरू की और उसे "भावी सोवियत डाक्टर का आदश रूप" कहा।

"यह ज्यादा अच्छी बात कही आपने," बहुत खुश होते हुए गानिचेव ने अपनी सहमति प्रकट की। "वह सभी विपया म उच्चतम अक पाने और चमकते हुए लाल लाल गालावाला म से तो नही है। हा, वह यह जानता है कि उसे किस बात की धुन है। मेरे कहने का ढग तो बहुत अच्छा नही, पर बात है सोलह आने सही है कि वह ऊचे उसूलोवाला नौजवान है। यह कहने की कोई जरूरत नही कि वह परेशान तो करेगा, पर ऐसी परेशानी बरदाश्त करने के लायक होगी। वह धृष्ट है, खुले तौर पर धृष्ट है "

प्रोफेसर गानिचेव के अदाज से यह स्पष्ट नही हुआ कि वोलोद्या का धृष्ट होना उन्ह पसद है या नही। फिर भी ऐसा लगा कि उन्ह यह पसद है।

"वह थोवत्याक भी नही बनेगा," गानिचेव कहते गये। "मैं यकीन दिला सकता हू कि किसी हालत मे भी ऐसा नहीं होगा। साथ ही मैं यह भी स्वीकार करता हू कि हमारे अत्यधिक सम्मानित प्रोफेसर मे गोगोल की 'कुल मिलाकर आकपक महिला' या उनके इपान्का जैसे एक अन्य बहुत भद्र व्यक्ति का सा आकपण अवश्य है।"

वालोद्या जिस दिन डाक्टरी के कालेज का विद्यार्थी बना, उसी दिन उनके पिता हरे रग के एक अजीब और छोटे-से हवाई जहाज़ मे यहा पहुचे। हवाई अड्डा उचा नदी के तट पर था। अफानासी पेत्रोविच हवाबाज़ के कक्ष से बाहर आकर इस तरह अपनी टागें सीधी करने लगे, मानो वे बहुत देर तक ठेले मे बैठे रह हो। वे शिरस्त्रान नही पहन थे और उनमे ठाट-बाट की काई चीज़ नही थी। घास पर बैठे हुए अन्य हवाबाज़ उछलकर सीधे खडे हो गये और उनके चेहरा से यह बिल्कुल स्पष्ट हो रहा था कि वे वोलोद्या के पिता को जानते हैं और उनका आदर करते हैं। पिता के प्रति गव की भावना से उसके चेहरे पर सुर्खी दौड गई। उसे गव था अपने पिता की बाहरी सादगी और सरलता पर, ठहाका लगाते समय उनकी आखो के गिद पड

जानेवाली झुरियो और उस शक्ति पर, जिसे वे मानो जान-बूझकर छिपाये रहते थे और उसे नाज़ था उनकी उदारता पर।

"रोदिग्रोन न अभी तक रिपाट नही की?"

'नही अभी तक ता नही," वोलोद्या न मुस्कराते हुए जवाब दिया।

अपनी सैनिक परम्पराओ के अनुसार वोलोद्या क पिता कभी यह नही कहते थे कि वह "आया" या नही, बल्कि यह कि उसने "रिपोट' की या नही, "सोने जा रहा हू" ऐसा न कहकर यह कहते कि "आराम करने जा रहा हू"।

'ऐ शैतान, बूढे आदमी पर हसता है!" अफनासी पेत्रोविच ने कहा और वोलोद्या को जोर से धकेल दिया।

वोलोद्या लडखडाया, मगर गिरा नही। सैनिक हवाबाज़ कुछ बातचीत कर रहे थ। 'सम्भवत मेरे पिता के बारे म ही!" वोलोद्या ने सोचा।

बूआ अग्लाया किसी बैठक मे भाग लेने गई थी और खान क समय ही घर आई। बढिया खाना तैयार करने के लिये वह पिछली शाम और आज सुबह के कई घटा तक काम मे जुटी रही थी। येव्गनी भी खाना खान, या जैसा कि वह तजीज़ खाने की सम्भावना होन पर कहता था—'जवान का लटका' लेने आया। वह भी डाक्टरी के कालेज म दाखिल हो गया था। बेशक यह सही है कि इसक लिये इराईदा न अपनी मा पर दवाव डाला था और मा न अपने डीन पति स अनुरोध किया था। इसके बावजद भी वह कालेज म आसानी स नही घुस पाया था। शुरू म तो सूची म उसका नाम नही लिखा गया था और केवल लम्बी चौडी बातचीत के बाद ही अन्त म 'जोडा' गया था। इस समय यव्गेनी अपने को ऐस आदमी की भाति अनुभव कर रहा था जो लम्बी दौड लगाकर चलती ट्राम पर चढ तो गया हो, पर अभी तक जिसका दम फूला हुआ हो। पर उसका मूड न केवल बहुत बढिया, बल्कि विजेता का सा था। सच तो यह है कि डीन के अतिरिक्त कोई भी यह नही जानता था कि कस मामले का सिरे चढाया गया है। इसलिय अब उस यह जाहिर करने की क्या जरूरत पडी थी कि वह बहुत कृतज्ञ है बडा आभारी है, इत्यादि

येव्गेनी के सौतेले बाप को भी वहुत खुशी हुई थी। वेशक यह सही है कि लडके मे कोई खास प्रतिभा नही है और मा ने लाड-प्यार से उसे वहुत विगाड दिया है, फिर भी अगर वह कालेज मे दाखिल हो गया है, तो उसमे कुछ खास वात तो है ही। यहा कोई गडबड-घुटाला नही हो सकता। यह प्रतियोगिता का मामला है, यहा तिकडम बाज़ी नही चल सकती।

"जव मेरे जिस्म की मोटर कुछ गडवड हो जायेगी, तो तुम उसकी मरम्मत कर दोगे। क्यो, ठीक है न?" उन्होने येव्गेनी से कहा।

रोदिओन मेफोदियेविच असैनिक पोशाक मे उस्तिमेन्को के घर आये। केवल उनके अत्यधिक सवलाये हुए चेहरे और झूमती झामती चाल से ही यह पता चलता था कि वे जहाजी हैं। वे वार्या और उसी तरह वोलोद्या को भी घडी भर के लिये अपने से दूर नही होने देते थे। वोद्का का एक जाम पीने के बाद उन्होंने ज़ोर का चटखारा भरा और वोले—

"पी ले, भाइयो, पी ले यहा, दूसरी दुनिया मे शराब कहा?
और अगर होगी वहा, तो हम पी लेगे यहा, पी लेगे वहा"

रादिओन मेफोदियेविच के पिता, मेफोदी स्तेपानोव कुछ देर बाद आये। वे उसी समय स्नानघर से आये थे और लम्बी रेशमी कमीज़ पर वास्कट पहने थे। वहुत सन्तोषी जीव लग रहे थे वे।

"वठिये, हमारे परिवार की जान, उसके प्राण," रादिओन मेफोदियेविच ने अपने पिता से कहा। "खूव खुशी मनाइये, आपको अपने पोते का डाक्टरी के कालेज का विद्यार्थी बनते देखन का दिन नसीब हुआ है। वोलोद्या भी विद्यार्थी वन गया है। इस खुशी मे सवसे वडे गिलास उठाये जाने चाहिये।"

"डाक्टरी मे क्या रखा है, भूमि सर्वेक्षक बनता, तो ज्यादा अच्छा रहता।"

मेफोदी स्तेपानोव की हर चीज के बारे मे अपनी राय थी।

"तुम वर्दी के विना क्या आये हो?" उन्होंने अपने वेटे से पूछा। "तुम वडे अफसर हो, इसलिये लोगो का दिखान के लिये ही वर्दी पहननी चाहिये। मैं जब जापान के युद्ध से वापिस लौटा था, तो बहुत अर्से तक फौजी पट्टिया लगाये रहा था। इससे आदमी की जरा

शान बनी रहनी है। जैस ही मैं ने उर्द उतारा कि मामूली देहाती दहानी हा गया।

इसक बाद उन्होंने अग्लाया स पूछा—"हेरिंग क लिय तुमन क्या दिया?

पम! अग्लाया न जवाब दिया।

और भद्द क माग क लिय?"

आह छाडिये भी पिता जी। आपका क्या लेना-देना है इस

रोदिग्रान मफोदियविच न कहा।

'मैं ता सिफ बात करन क लिय ही पूछ रहा था,' बूढ़े ने जवाब दिया।

वार्या अपन पिता क साथ सटकर फुसफुसाई—

'पापा कुछ दिन तक हमार पास रहिय, कृपया रुक जाइये। लम्बी छुट्टी ल लीजिय और साली मारिय अपनी नावा का '

'नाव नही जहाज पापा न उसकी गलती ठीक की। "यहा ता कवल तुम तीना का ही मरी जरूरत है और वहा ढेरो ढर लोग है। जरा सोचा तो बटी तुम क्या कह रही हो।"

'यरगनी बडा अजीब-सा हा गया है वार्या न शिकायत की। 'मैं तो उस समझ ही नही पाती।

कोई बात नही हम इस पर विचार कर लगे।"

अफानासी पेत्रोविच एक बडा-सा फीता बधी हुई गिटार ले आये और सुरा को धीरे धीरे छेडते हुए गान लग—

ओह रात तुम बडी अधेरी काली-काली।
बहुत अधेरी बहुत अधेरी पतझर वाली।
कहो रात क्या तुम ऐसी गुस्से म आयी?
नही एक भी तारा अपन सग मे लायी

अग्लाया ने अपने जोरदार और भारी स्वर से अन्तिम पक्ति को दोहराया—

नही एक भी तारा अपन सग म लायी

न जाने क्यो पर हर किसी पर अजीब-सी उदासी छा गई। बूढ़े मेफोदी ने ही कुछ और देर तक महफिल का रग बनाये रखने की कोशिश की पर फिर वे भी चुप हो गय।

"क्या मामला है?" अग्लाया ने कहा। "गाना अधूरा ही क्यो छोड दिया?"

रोदिग्रोन मेफोदियेविच के माथे पर वार-बार बल पडे थे। अफानासी पेत्रोविच गिटार को सोफे पर टिकाकर बेटे को ताकने लगे थे। येव्गेनी ने फुसफुसाकर वोलोद्या से कहा कि उसे फौरन यहा से खिसक चलना चाहिये, कि कुछ यार-दोस्त नदी के तट पर इकट्ठे होकर सीख-कबाब भूननेवाले हैं। उसने बताया कि वहा इराईदा और मीशा शेरवुड आयेंगे और शायद खुद डीन भी पधार। समझ गये?

"समझ गया," वोलोद्या ने रुखाई से जवाब दिया।

झुटपुटा होने पर वार्या के भविष्य की चर्चा होने लगी। वोलोद्या ने सुझाव दिया कि वह डाक्टरी के कालेज मे दाखिल हो, अफानासी पत्रोविच ने प्रौद्योगिकी की खूब प्रशसा की, जब कि बूआ अग्लाया केवल मुस्करा दी और उसने कुछ भी नही कहा। वार्या ने भौहो के बीच दढता की रेखाए बनाते हुए टनटनाती आवाज़ मे कहा—

"मैं कला-क्षेत्र मे काम करूगी।"

"यह क्या बला है?" बूढे मेफोदी ने पूछा। उन पर अब तक शराब का कुछ असर हो चुका था।

"मसलन थियेटर मे," वार्या न अधिक ऊची आवाज मे और कुछ झल्लाते हुए जवाब दिया।

"वह भी कोई काम हाता है," बूढे ने जम्हाई ली।

"पर तुमम इसके लिये आवश्यक गुण भी है?" वार्या के पिता ने धीरे-से पूछा। "देखा, बेटी, मैं तुम्हारे दिल का ठेस पहुचान के लिये ऐसा नही कह रहा हू, पर तुम्हारी आवाज तो खास अच्छी है नही। इसके अलावा, तुम खुद भी शलजम की तरह गोल मटोल और मजबूत हो। ऐसी अभिनेत्री तो मैंने कही देखी नही।'

"मैं लम्बी हो जाऊगी," वार्या ने उदासी से जवाब दिया। "मुझे अनाज की चीजे भी कम खानी चाहिये। रही आवाज़ की बात, तो मैं ऑपेरा मे नही जा रही हू और फिर आवाज़ को साधा भी जा सकता है।"

वोलोद्या ने दया की नज़र स वार्या की ओर देखा। वार्या ने उसे जबान दिखाकर मुह फेर लिया।

दर गये उसी रात को अफानासी पत्रोविच सोफे के सिरे पर इत्मीनान से अपने पैर टिकाकर लेट गये और चमकदार जिल्दवाली कोई पतली-सी किताब पढ़ने लगे। मजे से सिगरेट के कश लगाते हुए उन्होंने अपना आश्चर्य प्रकट किया—

'सुनो तो, वोलोद्या! दुनिया में उकाब ही एक ऐसा पक्षी है, जो सूरज की ओर सीधे देख सकता है। यहीं से 'उकाब की आंखोंवाला' मुहावरा निकला है। तुम यह जानते थे वोलोद्या?"

"नहीं।"

बड़े खूबसूरत होते हैं ये शैतान," उसके पिता कहते गये। "उन दिनों जब मैं 'सोपविच' हवाई जहाज उड़ाता था, तो उन पर मुग्ध हुआ करता था। वे सीधे हवाई जहाज पर झपटते थे, हवाई जहाज को इधर उधर हटाना पड़ता था। बड़े बहादुर पक्षी है वे "

आगलाया अपने भाई की बात सुन रही थी, उसके होंठों पर स्वप्निल सी मुस्कान और काली आंखों में हल्की-हल्की चमक थी। मेज पर रखा हुआ समोवार धीरे धीरे गुनगुना रहा था। ऐसा प्रतीत होता था कि वे तीनों सदा ऐसे ही एकसाथ थे और हमेशा ऐसे ही एकसाथ रहेंगे, हमेशा ही

पौ फटने पर वोलोद्या के पिता चले गये। उन्होंने वोलोद्या और अपनी बहन को विदा करने के लिये साथ जाने से मना कर दिया।

'विदा करने के लिये देर तक साथ रहने का मतलब है अधिक आंसू, अफानासी पेत्रोविच ने चहकते हुए कहा। उन्होंने चाय खत्म की वोलोद्या के कंधे पर उसी तरह टहोका दिया, जैसा कि मिलने के वक्त किया था बहन को गले लगाया और चल दिये।

वोलोद्या खिड़की से झुककर अपने पिता को देखने लगा।

वोलोद्या के पिता ड्योढ़ी पर खड़े हुए धुंधलाते आकाश की ओर देख रहे थे। 'उकाब की आंखोंवाला', ये शब्द फिर से वोलोद्या के दिमाग में गूंज गये। उनके पिता अपनी टोपी हाथ में लिये हुए थे। उनके नंगे सिर पर हल्की-हल्की रोशनी पड़ रही थी। वोलोद्या ने अन्तिम बार अपने पिता को इसी रूप में देखा था और सदा के लिये इसी तरह वे उसके मानस-पटल पर अंकित होकर रह गये—ड्योढ़ी पर खड़े आकाश को ताकते हुए हवाबाज के अपने मार्ग को देखते हुए।

चौथा अध्याय

उपहार

अफानासी उस्तिमेंको जब हवाई अड्डे पर पहुचे, तो उजाला हो चुका था। रोदिओन स्तेपानोव जहाजिया की सफेद फौजी वर्दी पहने पहले से ही वहा मौजूद थे और नदी के तट पर इधर-उधर टहल रहे थे।

"मैंने तो तुम्हे मना किया था," अफानासी पेत्रोविच ने अप्रसन्न होते हुए कहा। "पूरी नीद क्यो नही ली?"

"सो नही सका," रोदिओन स्तेपानोव ने जवाब दिया। "मैं तुम्हे परेशान तो नही कर रहा हू न? जाओ, उडाओ अपना जहाज। मैं पूछ के साथ नही लटकूगा।"

ड्यूटी पर तैनात फौजी अफानासी उस्तिमेन्को के पास आया और सक्षिप्त बातचीत की। दो और व्यक्ति उनके पास आये। उस्तिमेंको ने इजन की आवाज सुनी और फिर रोदिओन के साथ सिगरेट के कश लगाये।

"तो अब फिर कब मुलाकात होगी?" रोदिओन मेफोदियेविच ने पूछा।

"मेरे ख्याल मे बहुत जल्द तो नही।'

"छुट्टिया कहा बिताने का इरादा है?"

"कीचड का इलाज कराना चाहता हू," अफानासी पेत्रोविच ने जवाब दिया। "घाव तो बहुत पुराना है, पर मुझे परेशान करता रहता है। यह रोनी सूरत क्यो बना ली है, जहाजी?"

"नही, नही, कोई बात नही," रोदिओन मेफोदियेविच की आह ने उनके शब्दो की वास्तविकता स्पष्ट कर दी।

हवाई जहाज का इजन जोर से घरघरा उठा, उसका आवाज धीमी पडी और वह फिर जोर से घरघराया। मिस्त्री लोग उसकी जाच कर रहे थे। उस्तिमेको ने अपना मजबूत और खुरदरा हाथ स्तेपानोव के हाथ मे मिलाया, दस्ताने पहन और छोकरे की सा फुर्ती से हवाई जहाज पर चढ गये। जमकर बैठने मे पहले वे दाये-बायें झुके रहे। इसके बाद उन्होंने अपने हवाबाज के आदेश दिये और उनका जहाज धावनपथ पर दौडता हुआ उछलने लगा। कुछ ही क्षणों मे काला धब्बा आकाश की नीलिमा मे लुप्त हो गया।

"तो अब कैसे जीना चाहिये मुझे?" रोदिओन मेफोन्दियेविच सोचने लगे। "निश्चय ही ऐसे जिन्दगी नही चल सकती। या चल सकती है? शायद अन्य लोग भी इसी तरह का जीवन बिताते है पर इसके बार मे सोचते नही, अपने को परेशान नग होने देते?"

पर खैर उस समय जब वे अनुचित रूप से गुस्से मे आये हुए हो तो उन्हे इस सवाल पर विचार नही करना चाहिये। इस समय वे सचमुच ही गुस्से म थे। जब येव्गेनी स सम्बन्धित कोई बात होती, तो वे अपने गुस्से पर काबू नही पा सकते थे। अग्लेवतीना से भी वे कभी शान्ति से बात नही कर पाते थे। उनके साथ वे न तो कभी शान्ति से काम ले सकते थे और न ही तर्कसगत हो सकते थे। कम से कम वे ऐसा ही मानते थे, क्योकि वे स्वय अपने कटु आलोचक थे। फिर से हजारवी बार उनके सामने उनकी बीवी का चेहरा घूम गया, मजे-सवरे वेश और एक दिन पहले उनके आने पर जिस तरह उसने उन्हे देखा था, छिपी-छिपी घृणा की दृष्टि से।

'मैं देहाती बगले म रहने जा रही हू ' रोदिओन मेफोदियेविच के घर आते ही उसने कहा। 'गर्मी भर इस धूल और तपन म रहना मुमकिन नही। वैसे ही इन परीक्षाओ के कारण मैं बुरी तरह थक गई हू।"

"किन परीक्षाओ के कारण?'

येव्गेनी की, और किसकी।

तो तुम क्या उसे पढाती रही हो?" रोदिओन मेफोन्दियेविच यह कह बिना न रह सके।

"मैंने उसकी सुख सुविधा की व्यवस्था की," उसने कहा। "तुम तो अभी भी इतना कम कमाते हो कि मैं एक नौकर भी नही रख सकता "

"ता तुम जहा से चली थी, वही लौट ग्राइ न ?" स्तेपानोव ने गुस्से से लाल पीले होते हुए कहा। "या शायद तुम्ह वही पुराने नाम पसद हैं, जब तुम "

"चुप रहो!" वह चिल्ला उठी।

ग्रलेवतीना इस बात से तो बहुत ही डरती थी कि लोगा को उसके ग्रतीत के बारे मे पता चले। वह ता मानो चोर थी या उसने किसी की हत्या की थी।

ऐसा पुनर्मिलन हुग्रा था पति-पत्नी का।

ग्रलेवतीना ग्रौर येव्गेनी भी यही चाहते थे कि वे चले जायें, मगर रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने रुकने का निणय कर लिया। वार्या तो थी ग्रौर फिर वे जाते भी तो कहा, जब उनका जहाज़ मरम्मत के लिये भेज दिया गया था। छुट्टी तो जैसे उन पर लाद दी गई थी ग्रौर किसी विश्राम-केन्द्र मे जाकर ग्राराम करने का वे प्रबध नही कर पाये थे। ग्रलेवतीना ग्रपनी सहेली के साथ देहाती बगले मे जाकर रहना चाहती है, तो रहे। मैं यहा रहूगा। यह ग्रच्छी ग्राराम की जगह है। मेरी खिडकी के करीब चिनार ग्रौर बच के कुछ वृक्ष है, फव्वारा स्नान करने के बाद मैं किताब लेकर लेट जाया करूगा, शाम का बड सुनने के लिये पार्क मे चला जाया करुगा ग्रौर वार्या जब स्कूल की पढाई खत्म कर लेगी, तो हम किसी पोत पर सैर करने चले जायेंगे या ऐसी ग्रय ग्रनक चीज़ें की जा सकती हैं

खैर, ग्राज तो मुख्य बात यह है कि सब खुश रह!

ग्राखिर येव्गेनी डाक्टरी के कालेज का विद्यार्थी हो ही गया था। शायद मैं लडके के साथ ज्यादती करता रहा हू, शायद इसीलिये ऐसा हुग्रा कि वह मेरा ग्रपना बेटा नही है। मुझे यह सब कुछ बदलना चाहिय, इस दिन का हर किसी के लिय खुशी का दिन बनाना चाहिये। वालाद्या ग्रौर ग्रग्लाया के लिये, ग्रपने बूढे पिता ग्रौर येव्गेनी ग्रौर वार्या के लिये। वे जानते थे कि उन्होंने यव्गेनी के साथ ग्रन्याय किया था, केवल वार्या का ही ग्रोशतादृत म ग्रपने पास बुलाया था, जबकि यव्गेनी ग्रलेवतीना के पास रहा था। फिर ग्रपन सौतेले बेटे के साथ

उन्होंने खुलकर कभी बात भी तो नहीं की थी। उन्होंने अभी और इसी समय यर्मोनी से अपने सम्बन्ध सामान्य बनाने का निश्चय कर लिया, उन्हें भावी डाक्टर यर्मोनी के दिल की चाबी खोजनी थी।

इन्हीं विचारों में डूबते उनराते हुए उन्होंने इस समय जबकि अन्य सभी लोग सो रहे थे, दाढ़ी बनायी, फव्वारा स्नान किया, जब में बहुत-सी रकम डाली और खरीदारी करने चल दिये। उन्होंने एक कैमरा और खान-पान के बड़े स्टोर से पेस्ट्रियां, केक, सारडीन मछलियां, स्ट्राबैरियां, शराब की बोतलें और अन्य बहुत-सी जायकेदार और क़ीमती चीजें खरीदीं। रोदिग्रोन स्तेपानोव फ़जूलखर्ची कभी नहीं करते थे। उनका बचपन बहुत कठिनाइयों मुसीबतों में गुजरा था, उन्हें भर पेट खाने को भी नहीं मिलता था। इस चीज़ ने बचपन में ही उन्हें पैसे का महत्त्व स्पष्ट कर दिया था। पर इस स्मरणीय सुबह को उन्होंने खुशी खुशी और खुले दिल से पैसा खर्च किया। उन्होंने वार्या के लिये लाल स्वेटर खरीदा और अपने बाप के लिये जूते। वोलोद्या के लिये उन्होंने हर्जेन की रचनाओं का एक शानदार और चमड़े की जिल्दवाला संग्रह खरीदा। उन्होंने उन सभी के लिये "फ़ाउस्ट" ऑपेरा के टिकट भी खरीद लिये। मास्को के ऑपेरा हाउस के अतिथि कलाकार यह कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहे थे और टिकट खरीदने में बड़ी कठिनाई हो रही थी। बड़ी झेंप और घबराहट अनुभव करते हुए वे थियेटर के स्थूलकाय मैनेजर के पास गये और बोले कि मैं नौसेना का अफ़सर हूं, छुट्टी पर आया हुआ हूं और चाहता हूं कि

"हर कोई ऐसा ही चाहता है," मैनेजर ने गुस्ताखी से जवाब दिया था। "मगर दुःख की बात है कि हमारा संस्कृति भवन लाचशीन नहीं है।"

फिर भी रादियोन मेफ़ोदियेविच ने अठारहवीं क़तार के छः टिकट हासिल कर लिये। पसीने से तर माथे को रूमाल से पोंछते हुए वे चीजों से भरी हुई टैक्सी में आ बैठे।

रादियोन मेफ़ोदियेविच जब घर लौटे तो वार्या जा चुकी थी। यर्मोनी बुझी-बुझी-सी आवाज़ में किसी से टेलीफ़ोन पर बात कर रहा था।

"जी तंग आ गया है, पर किया क्या जाय। आखिर वह डीन है। कौन जाने कि जिन्दगी क्या करवट ले? ठीक ही तो कहते हैं कि

बेटे, कुए मे नही थूको, हो सकता है कि किसी दिन उसी मे से पानी पीना पड जाये "

"मैंने तो इसे दूसरे ही रूप मे सुना है," रोदिग्रोन मेफ़ोदियेविच ने भोजन-कक्ष मे प्रवेश करते हुए कडाई से कहा। "उस कुए से पानी नही पिग्रो, जिसमे थूकना चाहो!"

येव्गेनी ने रिसीवर पर हाथ रखकर तिरछी नज़र से अपने सौतेले पिता की ओर देखा।

"खूब, मगर अव्यावहारिक," उसने कहा। "मेरे प्यारे पिता जी, ज़िन्दगी ऐसा मज़ाक नही है।"

येव्गेनी ने आरामकुर्सी ली और अपने किसी दोस्त से लम्बी चौडी गपशप करने बैठ गया। वह अपना बालो का मनहूस जाल लगाये हुए था। बातचीत करता हुआ वह लगातार अगडाइया और जम्हाइया लेता रहा। स्तेपानोव म शत्रुता की भावना जाग उठी, पर उन्होंने उसे दबा लिया। उन्होंने एक बार फिर अपने को यही कहकर शात किया कि बच्चे नही, बल्कि मा-बाप ही हर चीज़ के लिये कुसूरवार होते हैं। स्तेपानोव उन लोगो मे से थे, जो अपने को उस समय भी अत्यधिक दोषी मानते है, जब उन्ह यह मालम होता है कि वे सवथा निर्दोष हैं। अगर उन्ह ऐसा लगता है कि वे अप्रत्यक्ष रूप से दोषी हैं, तो अपने को और भी ज्यादा ज़िम्मेदार ठहराते हैं। उन्होने फिर से, बेशक कृत्रिम रूप से, वही मूड लाने की कोशिश की, जो सुबह अनुभव किया था। जब तक येव्गेनी टेलीफोन पर गपशप करता रहा, उन्होंने भोजन-कक्ष की मेज़ पर सारे उपहार सजा दिये और सबसे ऊपर थियेटर के टिकट रख दिये।

येव्गेनी ने रिसीवर रखा, एक बार फिर अगडाई ली और धीरे-धीरे, छोटे छोटे कदम रखता हुआ मेज़ के करीब आया।

"यह अच्छा कैमरा है," येव्गेनी के सौतेले बाप ने कहा। "पास रखने लायक चीज है। हमारे कैमरे उच्च कोटि के हैं और कभी-कभार खुद एकाध फोटो खीच लेने मे बडा मज़ा रहता है "

शब्द बडी मुश्किल से उनके मुह से निकले। वाक्य अटपटा और लम्बा-सा बना और उनकी आवाज़ मे मानो गिडगिडाहट थी।

"मेरे ख्याल मे रिफ्लैक्स कैमरे अधिक सुविधाजनक रहते हैं," येव्गेनी ने सोचते हुए जवाब दिया। "हमारे डीन की बेटी इराईना के पास जेस रिफ्लैक्स कैमरा है, देखने म भी बडा खूबसूरत है, बहुत ही कमाल का। फिर इस कम्बख्त के लिये स्टैंड की भी जरूरत होगी। है भी बेढब-सा।'

"मैं स्टैंड भी खरीद लाया हू," उसके पिता ने झटपट जवाब दिया। "तुम ठीक कहते हो, बिल्कुल ठीक कहते हो कि स्टैंड के बिना कोई खास फोटोग्राफी नही हो सकती। मगर, येव्गेनी, मेरे बटे, शुरू करने के लिये ऐसा कैमरा बहुत अच्छा है। हमारे साथ स्कूल म एक लडका पढता था। सयागवश उसका नाम भी येव्गेनी ही था। वह तो बस चित्रकार ही था। उसने एक बार एक बक्व्हीट के फूल से शहद बटोरती हुई मधुमक्खी का फोटो खीचा। बडा ही सजीव छायाचित्र था वह। मधुमक्खी के बाल तक भी साफ-साफ उभरे थे फोटो मे। उसका यह छायाचित्र तो एक प्रतियोगिता के अन्तगत समाचारपत्र मे भी छपा था। तुम्हारे कैमरे की तुलना मे बहुत ही साधारण था उसका कैमरा "

"पर मैंने कब कहा है कि यह कैमरा बुरा है। अच्छा है, मगर ज़रा बेढब-सा और हमारे लडके अब ऐसे कैमरे इस्तेमाल नहीं करते।"

"कौन हैं ये लडके?"

"आप जानते तो हैं—किरीलोव, बोरीस और सेम्याकिन। हम अक्सर मिलकर समय बिताते हैं "

रोदिओन मेफोदियेविच ने प्रत्यक कुलनाम का सुनकर हामी भरी, यद्यपि वे किसी का भी निश्चित रूप मे नही जानते थे।

"तुम वोलोद्या का नाम क्यो नही लेते?' रोदिग्रान मेफोदियेविच न अपनी गदन आगे बढाते हुए पूछा। 'वोलोद्या का नाम क्यो नहीं लिया तुमने? क्या वह तुम लोगा के साथ समय बिताने के लायक नहीं है?'

यव्गेनी के चेहरे का ज़रा रग उड गया। उसकी आखो म रोदिओन मफादियेविच की जानी-पहचानी, दबी घुटी नफरत झलक उठी।

"एक बात यह पिता जी ' काफी दूर खडे हुए येव्गेनी न उनस कहा। "मेरी समझ म यह नही आता कि आप मुझसे चाहत क्या

है, ईमानदारी से कहता हू कि मेरी समझ मे नही आता। आपका वो लोद्या जनूनी और सनकी है, और हम है साधारण लडके। मैं यकीन के साथ नही कह सकता, पर मुमकिन है कि वह बडा आदमी बन जाये। मैं यह नही कहता कि वह बडा आदमी नही बनेगा, मगर मैं यह कहना चाहता हू कि हम जवान लोग है और जीवन म जो कुछ दिलचस्प और अच्छा है, हम उसका मजा लेना चाहते है।"

"ठीक है। बात साफ हा गई," रोदिओन मेफोदियेविच न कहा।

"सोवियत सत्ता तो आखिर सावियत सत्ता है," येव्गेनी कहता गया। वह अब रग म आ गया था और उसका अदाज मैत्रीपूण हो गया था, यहा तक कि उसम अपनत्व भी झलकने लगा। "निश्चय ही आपने इसलिये ता सघप नही किया था और मा ने बरसो तक इसलिय तो मुसीबते नही सही थी कि आपके बच्चे कोई खुशिया न देखें "

"बात समझ मे आ गई," येव्गेनी के सौतेले बाप ने उसे बीच म ही टोक दिया।

रोदिओन मेफोदियेविच को लगा कि उनका दम घुट जायेगा। उन्होने खिडकी चौपट खोल दी और मेज पर रखी सुराही से कुछ तपा हुआ पानी पिया। "मैं झगडा नही करूगा, झगडा नही करूगा," उन्होन अपने आपसे कहा। "मैं गुत्थी को सुलझाकर रहूगा। यह तो अलेवतीना ने उसके दिमाग मे सभी तरह की ऊल-जलूल बात भर दी हैं। यह उसी की कारगुजारी है, वही लडके का सत्यानास कर रही है।" बातचीत का सिलसिला बदलन के लिय उन्होने येव्गेनी से पूछा कि दहाती बगले म उसकी मा का क्या हालचाल है।

"बहुत ही ऊब भरी जिन्दगी है वहा," येव्गेनी ने कुर्सी पर अपना पर रखकर बूट के तसमे बाधते हुए कहा। "वहा उसकी दर्जिन ल्यूसा उसके पडास म रहती है।"

"कोई फ्रासीसी औरत है क्या वह?"

"फ्रासीसी क्या, रूसी है। वह मा की सहेली है, मगर वे खूब जोरशोर से झगडती भी हैं। अभी उस दिन उसने मा की आरगडी खराब कर डाली।"

"क्या खराब कर डाली?"

"मा की ओरगडी—सख्त और रग बिरगे छापेवाला कपडा।"

"समझ गया," कुछ भी न समझते हुए रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने कहा। "एक और बात पूछना चाहता हू—वह नई तस्वीर क्या है?"

स्तेपानोव उस चित्र की ओर देख रहे थे, जिस पर अभी अभी सुबह के सूय की किरणें पडी थी। उसमे बालूआ लाल मदान और कुछ पौधे चित्रित थे, जो कटीले मस्सो से ढके हुए प्रतीत हो रहे थे।

"ओह, नाग-फनी," येव्गेनी ने लापरवाही से कहा। "यह मा का नया शौक है। वह और ल्युसी इन्हे उगाती हैं।"

"नाग फनी कहा न तुमने?"

"हा।"

"इनका मुरब्बा या ऐसा ही कुछ बनाया जाता है क्या?"

"नही, मुरब्बा शरब्बा नही बनाया जाता," येव्गेनी ने हसकर कहा। "वे सुदर है न? केवल सजावटी हैं।"

"मछलाघर का क्या हुआ? वह यहा नजर नही आ रहा।"

"मछलीघर को घर से बाहर कर दिया गया है। मछलिया बीमार होकर चल बसी। याद रखिये मरी नही, चल बसी। अगर आप कहेंगे कि मर गइ, तो मा बुरा मानेगी।"

'चल बसी," रोदिग्रान मेफोदियेविच न दोहराया। "समझ गया। पर यह नाग फनीवाली बात मेरी समझ मे नही आई। क्या ये फून खिलकर सुन्दर लगते है या इनकी सुगध बहुत अच्छी होती है?"

"दोना मे से कुछ भी नही। वे तो बस हरे और कटीले होते हैं। आजकल इनका चलन है। समझे न? आजकल ऐसा कहने का फशन है—'हे भगवान, खूबसूरत हैं न ये!' बस, इतना ही।'

"खैर, इनकी काफी चर्चा हो गई। देखो हम वार्या के आन का इन्तजार करेंगे और फिर अग्लाया तथा वालोद्या के साथ कुछ खा पीकर थियेटर चल देंगे। क्या, क्या ख्याल है तुम्हारा?'

यग्वेनी चुप रहा।

'वहा गुनो का 'फाउस्ट' आपेरा प्रस्तुत किया जायेगा," रोदिग्रोन मफोदियेविच न कुछ देर बाद कहा। "स्वेरलोग्निन गायक मफिस्टोफिलेस की भूमिका म गायेगा। बडी गजब की आवाज है उसकी।"

"स्वेरलीयिन हो या कोई और, पर मैं तो नही जा सकूगा, पिता जी," येव्गेनी ने धीरे-धीरे कहा। "मैं आज रात को कही आमन्त्रित हू और इनकार करना बडा अटपटा होगा। आज दोपहर को हम फुटबॉल का मैच देखने जा रहे हैं। उचा की टीम 'तोरपेडो' के साथ खेलनेवाली है, कोई मजाक थोडे ही है। इसलिये मेरे बिना ही काम चलाना होगा।"

"समझ गया," रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने एक बार फिर दोहराया। "बिल्कुल समझ गया।"

वे सिर झुकाये हुए कमरे से बाहर चले गये।

दादा

वार्या अभी तक घर नही लौटी थी। उमस भरा दिन बेमानी और बेतुके ढग से गुजरता जा रहा था।

आखिर बूढे मेफोदी घर आये। वे हरे प्याजा का गुच्छा, अखबार मे लपेटकर कुछ मूलिया और डोलची मे क्वास लाये। बुजुग मेफोदी अलेवतीना की अनुपस्थिति मे ही अपने बेटे के पास आकर रहते। अलेवतीना के साथ उन्ह अधिक समय तक घर मे रहने की हिम्मत न होती। बुजुग जब नगे पैर या बिना पेटी की कमीज पहने हुए फ्लैट म घूमते या वोदका का जाम पीकर पतली और भावुक आवाज मे गाने लगते—"अरी दर्जिन, ओ बेचारी दर्जिन, तू सोलह साल की हो गई," या फिर अचानक मेहमानो की खातिरदारी करते हुए यह कहने लगते—"खाइये, खाइये, हमारे यहा और भी बहुत है," तो अलेवतीना आग-बबूला हो जाती। कुछ दिन रहने के बाद दादा डरे-सहमे और हडबडाये से रहने लगते, बार-बार पलक झपकाते, जरूरत से कही ज्यादा झुकते हुए सलाम करते, गुमसुम रहते और आखिर गाव की अपनी उसी खाली और छोटी सी झोपडी मे लौट जाते, जहा पखा और राख की गध आती थी।

जब अलेवतीना, जो अब वालेन्तीना आद्रेयेव्ना कहलाती थी और जिसे बूढे मेफोदी शतान की नानी आद्रेयेना कहते थे, कही गई होती, तो दादा अधिक निडर होकर घर मे रहते, न केवल रसोईघर म, बल्कि दालान मे भी पाइप के कश लगाते और ऊची आवाज मे वार्या

को अपने सस्मरण सुनाते। पर जब येव्गेनी के मित्र आते, तो दादा गुमसुम हो जाते और ज़रा मुस्कराकर यह कहते हुए दूर रहते–आप छैने जब तक मौज मनायें, अपन राम तो पास न आयें। रोदिओन मेफोदियेविच ने एक बार येगेनी के एक महमान को बूढे मेफोदी से यह कहते सुना कि वे उसके लिये सिगरेट खरीद लायें।

रोदिओन मेफोदियेविच को यह देखकर बहुत तकलीफ होती कि उनके बूढे पिता और भी अधिक दब्बू होते जा रहे है। पर जब वे अलेवतीना के मेहमानो के सामने आते, तो अलेवतीना शर्म से ऐसे लाल हो जाती कि स्तेपानोव यह निर्णय न कर पाते कि पिता या पत्नी में से कौन अधिक सहानुभूति के योग्य है। वे अफसोस और राहत की मिली-जुली भावनाओ के साथ पिता को स्टेशन की तरफ रवाना करते हुए उनकी जेब मे कुछ अतिरिक्त पैसे डालकर कहते–"हो सकता है अचानक कोई जरूरत पड जाये।"

इस तरह वार्या का बेकार इन्तजार करने के बाद उन दोनो ने खाना खाया। दाढीवाले दादा बाप से कही लम्बी जैकेट पहने बैठे थे और उनकी बेटे के समान छोटी छोटी तथा भूरी आखो मे बेटे के प्रति गम्भीर श्रद्धा की सी चमक थी। वे बेटे को "रोदिओन" कहते, लेकिन इस तरह मानो साथ मे पैतृक नाम भी ले रहे हो। दादा ने सकोचवश केक और सारडीन मछलिया नही खायी और इनकी जगह हरे प्याजो से मुह भर लिया। उन्हे चबाते हुए बुजुर्ग ने यह भी कहा कि चूकि इस वर्ष प्याज इतने सस्ते हैं, इसलिये अवश्य ही उनकी फसल बढिया हुई होगी। इस अप्रत्यक्ष ढग से बाप ने बेटे को यह स्पष्ट किया कि वे फजूलखर्ची नही करते हैं और रोदिओन के घर के हित का बहुत ध्यान मे रखते है।

दोनो ने मिलकर प्लेटे साफ की।

"पिता जी अगर हम आज शाम को थियेटर जायें, तो कैसा रहे?" रोदिओन मेफोदियेविच ने पूछा। 'मन है आपका? शायद सरकस के अलावा तो आप कही नही गये?"

"थियेटर, तो थियेटर ही सही' दियासलाई से दात साफ करते हुए बुजुर्ग ने कहा। 'मुझे क्या आपत्ति हो सकती है। जहा दूसरे लोग जा सकते हैं, वहा मैं भी जा सकता हू। इसमे क्या बात है।'

पर उनकी ग्राखो मे चिन्ता झलक उठी और वे जल्दी जल्दी ग्राख झपकाने लगे, मानो किसी कारण डर गये हो।

ग्राखिर वार्या और वोलोद्या ग्राये। वार्या के पिता दिन भर उसकी प्रतीक्षा करते रहे थे, और वह गई थी वोलोद्या के साथ, जो वार्या के शब्दा म ग्रपने "पहले ग्रसली सूट, विद्यार्थियो के कोट और पतलून को मापने गया था।"

"'विद्याथिया का कोट और पतलून'—यह क्या होता है?" रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने झल्लाकर पूछा।

"ग्रोह, वह ता योही बेसिरपैर की बाते कर रही है," वोलोद्या ने जवाब दिया। "पिता जी की वर्दी का उन्होने मेरे लिये सूट बना दिया है। वार्या को तो खैर कुछ न कुछ कहना ही होता है "

वोलोद्या सोफे पर बैठकर कोई किताब पढने लगा और कुछ ही क्षण बाद उसे दीन दुनिया की खबर न रही। वार्या ने खुशी से झूमते हुए पेस्ट्रियो और कचौडियो का जोडकर खाना शुरू कर दिया, क्वास के घूट के साथ उसने हरे प्याजा को गले से नीचे उतारा, फिर नमक मे उगली डालकर उसे चाटा और बोली—

"मजा ग्रा गया।"

चाय खत्म हाते ही बुजुग मेफोदी थियेटर के लिये तैयार होने लगे। उन्होने रसोईघर मे ग्रपने घुटना तक के बूट साफ किय और फिर ग्रडरवीयर पहने हुए बेमतलब एक के बाद दूसरे कमरे म चक्कर लगाने लगे। इसके बाद परशानी स ग्राख झपकाते हुए उन्होने पतलून को पहले तो लम्बे बूटो मे घुसेडा और फिर बाहर निकाला। रोदिग्रान मफोदियेविच बैठे-बैठे सिगरेट का धूग्रा उडाते हुए यह साच रहे थे कि इतने वर्षो म बूढे बाप के लिये ग्रच्छा-मा सूट खरीदने का समय नही मिला। "ग्रोरगडी, मछलीधर, नाग फनी," वे खीझ पैदा करनेवाले शब्दो का मन ही मन दोहरा रहे थे।

"लीजिये, मेरा सूट पहन लीजिये," रोदिग्रोन मेफादियेविच ने कहा। "ग्राप खास लम्बे ता हैं नही, यह ग्रापको बिल्कुल पूरा ग्रायेगा। मेरी नाक नही कटवाइयेगा, ढग के कपडे पहनकर चलिये "

"मेरी नाक नही कटवाइयेगा" इन शब्दा को सुनकर बूढे पिता इनकार नही कर पाये। उन्होने बेटे की सफेद कमीज और नीला गम

सूट पहन लिया। इसके बाद उन्होंने दर्पण के सामने खड़े होकर भयंकर सा मुंह बनाया और कहा—

"अरे वाह, तेरी ऐसी की तैसी!"

रास्ते में उन्होंने अग्लाया को अपने साथ ले लिया। वह सुन्दर पोशाक पहने हुए ड्योढ़ी में इन्तज़ार कर रही थी। उसकी काली आंखें चमक रही थी और गालों पर सुर्खी थी।

ऑपेरा के दौरान बुजुर्ग मेफोदी मंच की ओर इशारे करते और लोगों की शी शी की परवाह किये बिना सवाल पूछते रहे।

'यह कौन है? उसे क्या तकलीफ है? कौन-सी है उसकी बीवी?'

या फिर वे गुस्से से कहते—

"उल्लू है! बिल्कुल उल्लू है वह! ज़रा ख्याल करो, अपनी आत्मा बेच रहा है। हाय, हाय!"

इर्द गिर्द बैठे हुए लोग दबे दबे हंसते रहे। रोदिओन मेफोदियेविच मुस्कराये और उन्होंने अग्लाया की ओर देखा। इस नारी को चुप रहकर मुस्कराने में कमाल हासिल था।

विराम के समय बरामदे में इधर-उधर टहलते हुए दादा को जहां भी दर्पण दिखाई देता, वे उसके सामने जा खड़े होते और गुस्सेवाली भयानक सूरत बनाकर कहते—

"अरे वाह, तेरी ऐसी की तैसी!"

बूढ़े को मेफिस्टोफेलेस सबसे अधिक पसन्द आया।

"बड़ा ही चालाक है वह," दादा ने कहा। "बिल्कुल शैतान है। वह अपना उल्लू सीधा करके रहा। अगर सम्भव हो, तो ऐसे लोगों से तो वास्ता ही न डाला जाये। मैं ठीक कहता हूं न, वार्या?"

थियेटर के बाद

घर लौटकर उन्होंने खाना खाया। येगेनी अभी तक नहीं लौटा था। वार्या वोलोद्या के साथ कुछ खुसुर फुसुर कर रही थी। रोदिओन मेफोदियेविच को लगा कि वह अपना नखरा-टखरा दिखा रही है। दादा ने मन मारकर सूट उतारा, वोदका का एक जाम पिया और सोने चले गये। अग्लाया और रोदिओन मेफोदियेविच खिड़की के करीब बैठे हुए बातचीत कर रहे थे। अग्लाया ने किसी तरह का शिकवा

शिकायत न करते हुए कहा कि मैं बहुत थक जाती हू, कि मुझे ऊबड़-खाबड़ रास्तो पर सारे प्रदेश मे मोटर दौडानी पडती है और कुछ कर्मचारियो का बेहूदा और दफ्तरी घिसघिस का रवैया परेशान कर डालता है।

"अब जवानी तो रही नही," उसने अचानक कहा। "पहलेवाला दम भी नही रहा। कभी-कभी बात का बतगड बना देती हू, किसी पर बरस पडती हू "

अपने छोटे छोटे सावले हाथा को घुटना पर टिकाकर अग्लाया कुछ देर तक उनकी ओर देखती रही और फिर रोदिओन मेफोदियेविच से नजर मिलाते हुए उसने पूछा—

"तुम्हारी जिन्दगी भी कुछ आसान नही है, रोदिओन? देख रही हू कि कनपटियो पर सफेदी झलकने लगी है "

वे अपराधी की तरह मुस्कराये और उन्होने अपने लिये शराब का जाम भरा।

"नौसेना की नौकरी के सिलसिले म मुझे कोई शिकायत नही, प्यारी अग्लाया, पर यहा मामला कुछ उलझ गया है, बात कुछ बन नही रही येव्गेनी को ही ले लो "

"येव्गेनी को क्या हुआ है?" अग्लाया न पूछा।

"होना क्या था? उसे समझ ही नही पाता हू," रोदिओन मेफोदियेविच ने दुखी होते हुए कहा। "कोई सिर पैर समझ म नही आता उसका "

"वोलोद्या समझता है उसे। सो भी अच्छी तरह। वोलोद्या!" अग्लाया ने भतीजे को आवाज दी। "येव्गेनी के बारे में आज सुबह हमारी जो बातचीत हुई थी, वह रोदिओन मेफोदियेविच को बताओ।"

"हटाइय भी!" वोलोद्या न सिर हिलाया।

"बताओ भी," रोदिओन मेफोदियेविच न कहा। "क्या बात है "

"मैं खरी-खरी बात कर सकता हू,' साफ़ स उठते हुए वोलोद्या न कहा। "मुझे लाग-लपेट से काम लना नही आता '

रोदिओन मेफोदियेविच ने मुस्कराने की कोशिश की—

"ऐसा करन को तुम्ह कहता ही कौन है।"

"मैं नही जानता कि इसके लिये कौन दोषी है, और मैं इसका निर्णय करने के चक्कर मे भी नही पड़ूगा," वोलोद्या ने कहा, "पर इतना कह सकता हू कि आपका येव्गेनी टेढ़े-मेढ़े ढग से जीता है। आप समझे न मेरा मतलब? हाल ही मे उससे हुई बातचीत के समय मैंने खुद उसे यही कहा था और इसलिये आपके सामने भी बेझिझक इसे दोहरा सकता हू।"

वोलोद्या ने अपना सिर झटका, कुछ सोचा और फिर खरखरे, कठोर और समस्वर मे बोला—

"मेरी बात सुनकर उसने मुझे उपदेशक, भोला बच्चा और अन्य कई विशेषणो से सम्बोधित किया। बस, इतनी ही कसर रह गई कि पदलोलुप नही कहा। पर मेरी बला से, मैं तो ऐसा ही समझता हू और ऐसा ही समझता रहूगा। हमारे राज्य मे हर आदमी को अपनी मेहनत के बल पर जीना चाहिए, अपने बाप दादा की मेहनत के सिर पर नही। मैं सही कह रहा हू न रोदिओन मेफोदियेविच?"

'ठीक ही है' न जाने क्यो, पर स्तेपानोव ने रुखाई से जवाब दिया।

"कुछ ही दिन पहले मैंने और आपकी बेटी ने दराती और हथौड़े के बारे मे सोच विचार किया। इससे बेहतर राज्य चिह्न की कल्पना नही की जा सकती थी। दराती और हथौड़ा हमारी सामाजिक व्यवस्था के प्रतीक है और इनका अर्थ केवल मजदूर किसानो तक ही सीमित नही है। इस प्रतीक म हमारे जीवन का कानून, मुख्य कानून निहित है। क्यो है न ऐसा ही रोदिओन मेफोदियेविच?"

"पर अफसोस की बात है कि सभी ऐसा नही मानते," रोदिओन मेफोदियेविच ने अब रुखाई से नही उदासी के साथ उत्तर दिया। 'वार्या को ही ले लो, यह भी किसी चक्कर म पडी हुई है, कभी भूतत्त्वविज्ञान की बात सोचती है तो कभी थियेटर की। जहा तक समाज के लिये उपयोगी होने का सम्बन्ध है "

'अब मेरी बारी आ गई, वार्या बिगड उठी। "अपने पेशे का चुनाव करने म क्या परेशानी नहीं होती?'

'परेशानी परेशानी?' वोलोद्या ने टोकते हुए कहा। "वास्तव म तुम कुछ ज्यादा ही परेशान हो रही हो। पर खैर, इस समय

हम तुम्हारी बात नही कर रहे। रोदिग्रोन मेफोदियेविच, येव्गेनी अपने लिये ही जीता है और मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है कि सो भी अपने नही, आपके बल पर शायद यह कहना अधिक ठीक होगा कि आपकी मदद से जीता है वह। इतना ही नही, वह अपन जीवन को उस प्रतीक से बिल्कुल अलग-थलग रखता है, जिसकी मैंने अभी अभी चर्चा की है। ऐसा नही है कि वह आपका नाम भुनाता है। नही, वह ऐसा बिल्कुल नहीं करता, पर आपको अपना आखिरी पत्ता समझता है—जाने कब इसे चलने की जरूरत पड जाय। उसका दृष्टिकोण बिल्कुल गलत ह। वह यह मानता है कि चूकि स्वय आपन और बालेतीना आन्द्रेयेव्ना ने बहुत कठिन और मुसीबतो का जीवन बिताया है, इसलिये आपका यह कत्तव्य हो जाता है कि आप उसके और वार्या के लिये शानदार जीवन की व्यवस्था करे। वह और उसके बहुत-से दोस्त, जिन्ह मैं व्यक्तिगत रूप स जानता हू यही मानते है कि क्रान्ति उन्ही के लिये की गई है कि इसका मुख्य उद्देश्य ही यह था कि वे आराम और मजे की जिन्दगी बिता सक। यह गलत है और आपकी गलती यह है कि आप बच्चा के लिये ही सब कुछ की नीति पर चलते हैं। मैं अब और कुछ नही कहूगा, आप नाराज हो जायेंगे "

"मेरा भी कुछ-कुछ ऐसा ही अनुमान था," रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने कहा। "हा, कुछ-कुछ ऐसा ही। पर तुम लागा को भला काई समझ भी सकता है? भगवान जाने, कैसे लाग हो तुम "

रोदिग्रोन मेफादियेविच कमर के पीछे हाथ बाधे और दृढ कदम रखते हुए भोजन-कक्ष मे इधर-उधर टहलने लगे। उनके चेहरे पर परेशानी, लगभग दुख की छाप अकित थी।

"यव्गेनी समय-सेवी है," बोलाद्या न धीरे, मगर दृढतापूवक कहा। "नौउम्र हाते हुए भी इसका बढिया नमूना है। बहुत घुटा हुआ है इस फन म।"

स्तेपानाव न त्योरी चढाई।

'तुम्ह पक्का यकीन है?" उन्हान पूछा।

बालोद्या न चुपचाप कधे झटक दिये।

"कभी-कभी हम जिन्दगी का कुछ ज्यादा ही उजला दख की कोशिश करते हैं, अग्लाया न कहा। "बेशक यह सही है कि जिन्दगी

है ही उलझी हुई चीज। मसलन, स्कूल में ही चुगलखोर और मुखबिर हो जाना क्या ये पक्के चरित्र के लक्षण नहीं हैं? रोदिओन, मैं तुमसे साफ-साफ और दो टूक कहना चाहती हूं कि तुम्हारा येव्गेनी तो मुझे एक अर्से से फूटी आंखों नहीं सुहाता और तुम्हें उसे सुधारने की कोशिश ही नहीं, बल्कि उसके विरुद्ध हर तरह से संघर्ष करना होगा"

"किस तरह से संघर्ष करना चाहिए, साफ-साफ कहिये न?" रोदिओन मेफोदियेविच ने चेहरे पर कटु मुस्कान लाते हुए पूछा। "क्या आप ऐसा नहीं समझते कि येव्गेनी के सिलसिले में मेरे अधिकार केवल सीमित ही नहीं, बिल्कुल हैं ही नहीं। कर्त्तव्य है, पर अधिकार नहीं। पर खैर क्या तुक है इस बातचीत में"

बुजुर्ग मेफोदी अंडरवीयर और जहाजियों का काला बड़ा कोट पहने हुए अन्दर आये।

"यहां कहीं थोड़ी क्वास है क्या?" उन्होंने पूछा। "पानी की तीन डोइया चढ़ा गया हूं, पर उनसे कुछ नहीं बना। फिर मैंने ऐसी कोई चीज भी तो नहीं खायी"

उन्होंने बारी-बारी से सभी पर नजर डाली। फिर अचानक उनका ध्यान इस ओर गया कि उनके नीचे पहनने के पाजामे के बंद लटक रहे हैं और झेंपते हुए किसी दूसरी जगह क्वास की तलाश करने चले गये।

"तो यह किस्सा है," रोदिओन मेफोदियेविच ने कहा। "बहुत अच्छी और दिलचस्प रही आज की शाम। खैर, आप मुझे क्षमा करें"

मेहमानों के जाने के बाद उन्होंने वार्या को चूमा और उसकी आंखों में दया की झलक देखकर बोले कि मैं सोने जा रहा हूं। अगर किसी चीज से उन्हें सख्त चिढ़ थी, तो वह थी दया। उन्हें बहुत देर तक गुसलखाने से वार्या के पानी छपछपाने की आवाज सुनाई देती रही और इसके बाद वह भी बिस्तर पर जा लेटी और सभी ओर सन्नाटा हो गया। रोदिओन फिर से ध्यान के कमरे में आ गये, उन्होंने ठंडी चाय प्याले में डाली और कमरे में इधर-उधर टहलने लगे।

येव्गेनी देर से घर लौटा, उसने अपनी चाबी से दरवाजा खोला और ध्यान के कमरे में गया। उसके सौतेले बाप उंगलियों के बीच सिगरेट दबाये अभी तक इधर-उधर टहल रहे थे।

"नमस्ते," येव्गेनी ने कहा।

"नमस्ते," रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने जवाब दिया और साथ म यह भी जोड़ा कि उसे कुछ पहले घर आ जाना चाहिए था। वैसे उन्होंने खीजे बिना ही यह कहा था। उन्हें लगा था, मानो वह कोई *अजनबी है, जो बिन बुलाये ही आ धमका है।*

यह अजनबी अब मेज़ पर बैठकर खाने पीने और न जाने क्या, बहुत जल्दी जल्दी यह बताने लगा कि कैसे फुटबॉल में दायें पहलू खेला, मैच के बाद वे शीलिन के उपनगरीय घर म गये, कैसे वहा उन्होंने बर्फ जैसा ठंडा लिमोनाड पिया, नहाये और इस तरह उन्होंने खूब बढ़िया समय बिताया। रोदिग्रोन मेफोदियेविच चुपचाप सुनते रहे। *बहुत सम्भव है कि अगर मैं चुपचाप सुनता रहूं, तो मुझे येव्गेनी के* दिल की खोयी चाबी मिल जाये। कभी ऐसा समय भी था, जब वे नन्हे-से, बीमार और बहती नाकवाले येव्गेनी को बहुत-बहुत देर तक गोद मे उठाये रहे थे। कभी तो उन्होंने अपने आत्मसम्मान की परवाह न करते हुए पेत्रोग्राद मे उसके लिये चीनी हासिल की थी, कभी ता उसे ककहरा पढ़ाया था। यह भला कैसे हो सकता है? *येव्गेनी समय-सेवी है? यानी वह पराया व्यक्ति है? ऐसा व्यक्ति,* जो सब कुछ अपने लिये ही करता है?

रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने फिर एक बार अपने से यही सवाल किया—यह सब कब, कैसे और क्यों हुआ?

अचानक इसका कारण उनकी समझ मे आ गया।

हकीकत तो जैसे उनके सामने आकर खड़ी हो गई। ऐसा इसलिये हुआ था कि *कभी अलेवतीना का पूरा ध्यान* येव्गेनी पर केंद्रित रहा था। वही सब कुछ था, सब कुछ उसी के लिये किया जाता था, वह कुछ भी कर सकता था। रोदिग्रोन मेफोदियेविच जब परेशान और थके-हारे हुए घर आते थे, तो क्या उन्हें बीयर की एक बोतल, सिगरेट या दियासलाई की एक डिबिया खरीदने के लिये येव्गेनी को भेजने का अधिकार होता था? लड़के को केवल मौज मनानी चाहिए और अगर मौज नहीं, तो पढ़ना चाहिए। बचपन ही तो सबसे ज्यादा खुशियों का वक्त होता है, अलेवतीना बार-बार यही कहती। अगर रोदिग्रोन मेफोदियेविच कोई आपत्ति करते, तो वह कहती—

"तुम इसी लिये ऐसा कहते हो कि वह तुम्हारा अपना खून नहीं है। वह बेचारा यतीम है और इसलिये जाहिर है कि पर ध्यान रहे कि मैं किसी को भी उसके साथ बुरी तरह पेश नहीं आने दूंगा। यह बात गाठ बाध लो।"

लगभग पाच वर्ष पहले दोपहर का खाना खाते हुए येव्गेनी उनके साथ बहुत बुरी तरह *पेश आया था।* सभी दयालु लोगों की भांति रोदिओन मेफोदियेविच भी झटपट आपे से बाहर हो जाते थे। गुस्से से आग-बबूला होते हुए उन्होंने तश्तरियां उठाई और उन्हें फर्श पर पटक दिया। अलेवतीना चीख उठी थी, नन्हीं वार्या रोदिओन मेफोदियेविच की बांह से जा चिपकी थी और येव्गेनी ने पीले-जर्द होंठों से धीरे से कहा था –

"पागल कहीं का।'

इसके बाद स्तेपानोव खाने के कमरे से बाहर चले गये। बगलवाले कमरे में उन्होंने अलेवतीना को सहमी-सहमी और दबी-दबी आवाज में कुछ कहते सुना। येव्गेनी बीच-बीच में यह कहता जाता –

"ओह, भाड़ में जाये यह उल्लू, बूढ़ा खूसट!"

इसके बाद उन्हें बरामदे में येव्गेनी के इधर-उधर टहलने, पैर पटकने और दिलेरी से गाने की आवाज सुनाई देती रही। वह गा रहा था अपनी शक्ति, अपने अधिकार और सौतेले पिता की विवशता को अनुभव करते हुए। वह भला *गाता भी क्यों नहीं?* वह बहुत ही जल्दी उत्तेजित हो जानेवाला लड़का था, जबकि उसका बाप फूहड़, गंवार और तुच्छ था, तलछट में से आया था। यह अन्तिम शब्द अलेवतीना ने श्रीमती गोगोलेवा से सीखा था और उसके दिल दिमाग में इसने अपनी गहरी जड़ जमा ली थी।

इस तरह येव्गेनी बिल्कुल बेगाना बनकर रह गया था।

अब वह बैठा हुआ कचौरियां, सारडीन मछलियां और स्ट्राबेरी खा रहा था, चाय पी रहा था। बड़ी अजीब बात तो यह थी कि उसकी आंखों में अपनत्व और स्नेह झलक रहा था। अपने सौतेले बाप के लिए उसकी आंखों में जो भाव झलका करते थे वे उनसे बिल्कुल भिन्न थे। आह, कितनी जानी-पहचानी थी उसकी यह नजर। अलेवतीना की ऐसी नजर तभी होती थी जब लगातार बक-बक करने, प्र

पति की संतान के बाद वह घर मे शान्ति कायम करना चाहती थी। येव्गेनी भी घर मे शान्ति चाहता था, अपने सौतेले बाप के साथ अपने सम्बध बेहतर बनाना चाहता था, अपने को उनके अनुकूल ढालना चाहता था। बस, यही बात थी, इससे अधिक कुछ नहीं रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने अनुभव किया।

रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने गहरी जिज्ञासा से इस नौजवान अजनबी के चेहरे को बहुत गौर से देखा। कही भी तो कोई खराबी नही थी उसके चेहरे मे। सवलाया हुआ और साफ-सुथरा था उसका चेहरा आखे निर्मल थी, बाल नम और दात सफेद थे। उसकी नजर मे स्पष्टता थी, निश्छलता थी। रोदिग्रोन मेफोदियेविच लोगो के चरित्र को बहुत अच्छी तरह से पहचानते थे हजारो लोगो स उनका वास्ता पड चुका था। पहली ही नजर मे घटियापन और कमीनेपन को अच्छाई से अलग कर सकते थे। इस मामले मे बहुत ही कम, शायद कभी भी उनसे गलती नही होती थी।

"हा, मुझे एक और बात याद आई पिता जी," येव्गेनी ने कहा। "मुझे आपसे एक अनुरोध करना है। हमारे डीन बहुत ही भले बुजुर्ग हैं। खास प्रतिभाशाली तो नहीं है, किन्तु मुझ पर बडे मेहरबान है। उनकी बेटी मेरी सहेली है। कल उसका जन्मदिन है और आपको तथा मुझे वहा निमन्त्रित किया गया है।"

"मगर मेरे वहा जाने मे क्या तुक है?"

"तुक क्यो नही है। आप उन्हे अपने कुछ अनुभव सुना सकते हैं। निश्चय ही अपने शानदार अतीत के आधार पर आप कुछ न कुछ सुना ही सकते है। नेस्टोर माख्नो या फिर चेका के अपने काम के बारे मे ही कुछ बताइयेगा। आपके पास तो कई दिलचस्प बाते सुनाने को हैं, ठीक है न? जरूर चलियेगा, उन्होने बहुत अनुरोध किया है"

"मैं इस बात पर विचार करूगा," रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने बडी मुश्किल से जवाब दिया।

वे अपनी जेबो मे सिगरेटे टटोलने लगे, जो उनके सामने मेज पर ही पडी हुई थी।

पाचवा अध्याय

पोलूनिन

वोलोद्या के लिये पढाई काफी यातनाप्रद रही।

कालेज के पहले वर्ष मे उसने पिरोगोव की प्रसिद्ध किताब "सर्जीकल क्लीनिक का इतिहास" पढी। लेखक ने इस किताब मे अनेक ऐसे सत्यो के बारे मे सन्देह प्रकट किया था जो उनके समय मे सर्वस्वीकृत रहे थे। इससे कई बातो के बारे मे वोलोद्या के मन को भी सन्देहो ने आ घेरा। कई अध्यापको के आत्मविश्वास ने वोलोद्या को चौकन्ना कर दिया, जबकि उसकी स्थायी सन्देहपूर्ण दृष्टि से अध्यापक खीझ उठते। सेचेनोव मेडिकल कालेज की पढाई मे उसका सारा कस-बल लग जाता। वालोद्या यह समझ ही नही पाता था कि अध्यापको के व्याख्यान का गैरदिलचस्पी से, मगर तरीके-सलीके से लिखकर बाद म रटा क्यो जाये। येव्गेनी जो कुशलता और प्रोफेसरो के प्रति आदर सम्मान प्रकट करने की दृष्टि से आदर्श और सबको अच्छा लगनेवाला व्यक्ति था, ऐसा ही करता था। वालोद्या परीक्षाओ के लिये पागलो की तरह सामग्री को कभी रट नही सकता था। वह बहुत ध्यान स व्याख्यानो को सुनता और महत्त्वपूर्ण जरूरी और उपयोगी बातो को याद कर लेता। जो कुछ उसे घिसे पिटे निष्प्रभ प्रतीत होते, उनकी ओर वह इसलिये ध्यान देता कि इन अकाट्य सामान्य सत्यो के बारे म आपत्तियां ढूंढेगा और समय मिलने पर उन्ह गलत सिद्ध करेगा। फिर भी उसे हमेशा यह मालूम होता था कि उससे क्या जानने की आशा की जाती है। वास्तव म तो उसका ज्ञान अधिक ही होता था, किन्तु अपने ही

विचित्र ढग से। गानिचेव, जिन्ह वोलोद्या प्यार करता था, अक्सर उससे कहते—

"एक बहुत ही समझदार फ्रासीसी शरीर विकृति विज्ञानी कि द्रुतापूर्ण उपाधियो की खिल्ली उड़ाता, मगर ऐसा मानता था कि उन उपाधियो के शिखर पर पहुंचकर ऐसा करना कही अधिक सुविधाजनक होता है न कि नीचे खडे रहकर। याद रखिये, उस्तिमको, कि ज़ीने के नीचे खडा हुआ व्यक्ति यदि ऐसा करता है, तो उस पर मन्द-बुद्धिवाला और ईर्ष्यालु होने का आरोप लगाया जा सकता है।'

कालेज के तीसरे वर्ष मे वोलोद्या को प्रोफेसर पोलूनिन बहुत अच्छा लगने लगे। सुनहरे बालोवाले य लम्बे-तडगे व्यक्ति गानिचेव के बहुत घनिष्ठ मित्र थे और हर समय कुछ-कुछ हाफते रहते थे। पोलूनिन के गाल टमाटर की तरह लाल-लाल थे, गर्दन मोटी थी और बाल थे घुघराले तथा सन जैसे। उनकी आवाज़ भारी भरकम और दहशत पैदा करनेवाली थी। अन्य अध्यापक जिन बातो की प्रशसात्मक ढग से चर्चा करते, वे उनके प्रति उपेक्षा का भाव दिखाते और अक्सर ऐसे अजीबोगरीब किस्से-कहानिया सुनाते, जो सर्वथा असगत प्रतीत होते।

"मिसाल के तौर पर, फ्योदोर इवानोविच इनोज़ेमत्सेव को ले लीजिये," उन्होने एक बार विद्यार्थियो से कहा। "हमारे चिकित्साशास्त्र के इतिहास म काफी बडा नाम है उसका। बहुत प्रतिभाशाली, बहुत रोशन दिमाग, मैं तो यहा तक कहूगा कि बहुत-सी बातो म बहुत दूर की कौडी लानेवाला आदमी था वह। ज़ाहिर है कि बहुत ही शानदार नैदानिक था वह। मेरे ख्याल मे उसे आजकल सर्वश्रेष्ठ नैदानिक कहा जाता है। ज़ाहिर है कि अपने समय मे उनकी डाक्टरी खूब चलती थी। मेरे ख्याल मे तुम लोग प्राइवेट प्रेक्टिस का मतलब तो समझते ही हो?"

"जी हा," *विद्यार्थियो की धीमी सी आवाज़* सुनाई दी। प्राइवेट प्रेक्टिस के बारे म इन सब की जानकारी मुख्यत चेखोव की कहानी "इयोनिच" पर आधारित थी।

"तो इनोज़ेमत्सेव की यह प्राइवेट प्रेक्टिस खूब चलती थी और इसके साथ ही उसके अपने भी खूब मजे थे। वह अपने मन का चैन बनाये रखना चाहता था और बैंक में जमा होती हुई खासी बडी रकम

ऐसा करने म समय थी। चूकि वह अपने अनेक रोगिया का इलाज अकेला ही नही कर सकता था, इसलिय उसे अपने अनेक सहायक रखने पडे जो 'निकीत्स्काया के पट्ठे' कहलाते थ। उन्हें ऐसा नाम उस बडी इमारत के सम्मान म दिया गया था, जिसका मालिक इनोजेमत्सेव था और जो हमारे सबसे पवित्र नगर मास्का की निकीत्स्काया सडक पर थी। अपनी व्यावहारिक ख्याति के उन दिनो मे वह अमोनिया को बहुत सी बीमारियो के लिये, विशेषत नजले-जुकाम के लिये तो रामबाण मानता था। मेरे दोस्तो, यह अमोनिया का सिद्धान्त इनोजेमत्सेव के दिनो म प्रचलित अन्य सिद्धान्तो स कुछ बुरा नही था। मगर अजीब बात तो यह है कि जबकि ऐसे ही अन्य हवाई और मनगढन्त सिद्धात जल्द ही भूली बिसरी बाते हो गये, यह अमोनिया का सिद्धान्त खूब फलता फूलता रहा। आप बता सकते हैं कि क्या?"

पोलूनिन न उत्तर की आशा करते हुए अपने श्रोताओ पर एक पैनी दृष्टि डाली। किन्तु उत्तर नही मिला। उन्होंने निराश होते हुए गहरी सास ली और अपनी बात आगे बढाई।

'इसलिये कि सभी जवान अधेड और बूढे 'निकीत्स्काया के पट्ठे' बडे धूर्त्त लोग थे, बडे अनुभवी और अपनी गाठ के पक्के, व अपने मुखिया को केवल उन्ही रोगियो की सूचना देते, जिन्हें इस कमबख्त अमोनिया से खूब फायदा होता था। इनोजेमत्सेव का जी खुश करनेवाली बातो की चर्चा कर उन्होने वास्तव मे ही एक शानदार डाक्टर की ख्याति उसके विद्यार्थियो मे धूल मे मिला दी। वे तो अमोनिया के इलाज की खिल्ली भी उडाने लगे थे। फिर भी इनोजेमत्सेव अपने पट्ठो या नीम हकीम चाटुकारो के प्रति खूब दरियादिली दिखाता। उन्ह रोटी भी मिलती मक्खन भी और मुरब्बा भी। उसका आभार मानते हुए और अपने स्वामी और सरक्षक को निराश न करने के उद्देश्य से वे बडी बेहयाई से उसकी आखो म धूल झोकते रह। पिरोगाव के अनुसार वे 'खूब खाते माटाते, गुदगुदे गद्दो पर सोते और जनता की मुसीबत की घडियो म झूमते-झामते चलते'। जहा तक इनोजेमत्सेव का सम्बन्ध है, तो उसे विज्ञान की सेवाओ के लिये उसका यथोचित सम्मान मिला मगर वह अपने समकालीनो की नजर म उल्लू बनकर रह गया। चूकि समकालीनो म अनिवार्य रूप से इतिवृत्तकार भी होते

हैं, इसलिये कोई भी चीज़ बहुत समय तक रहस्य नहीं बनी रह सकती। मैंने इनोज़ेमत्सेव का महत्त्व कम करने के लिये यह कहानी नहीं सुनाई है। मेरा कतई ऐसा अभिप्राय नहीं है। मैंने तो केवल यह चेतावनी देने को यह घटना सुनाई है कि प्यारे साथियो, आएसकूलापिउस के सपूतो, कभी अपने टुकड़खोरों, अपने अधीनों और मातहतों को अपनी खाजें कसौटी पर कसने का काम न सौंपें। लोगों की नजरों में उल्लू बन जाना बड़ी भयानक चीज है। बहुत ही प्रतिभाशाली व्यक्ति के भूल करने पर वह देर तक उसका पिंड नहीं छोड़ती। खुद को और अपने सहयोगियों को बहुत सावधानी से इस खतरे से बचाये। उनकी भलाई को ध्यान में रखते हुए, दोस्ती और अपने डाक्टरी के पेशे के नाम का बट्टा न लगाते हुए उन्हें सच केवल सच और हमेशा सच ही बताइये "

जैसे-जैसे वक्त गुजरता गया, वैसे-वैसे पोलूनिन वोलोद्या की ओर अधिकाधिक ध्यान देने लगे। कभी-कभी वे दाना कालेज के शान्त बगीचे में बैठकर लम्बी-चौड़ी बातचीत करते। थेरापी की क्लीनिक में काम करने के बाद पोलूनिन इस बगीचे में आराम किया करते थे। वह खुद बनायी हुई मोटी-मोटी सिगरेटों के कश लगाते, आकाश को ताकते और ऐसे सोच विचार करते रहते मानो अधूरी रह गई किसी बात की कड़ियां जोड़ रहे हों।

"काश कि कोई महान डाक्टरों की गलतियों के बारे में एक किताब लिखता! अभी हाल ही में एक अक्लमन्द आदमी को मैंने यह सुझाव दिया। आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि वह कैसे आग-बबूला हो उठा और उसने कैसे भारी भरकम शब्दों का उपयोग किया— यह तो बदनामी करना, जोश पर ठंडा पानी डालना, वैज्ञानिक विश्व दृष्टिकोण के महत्त्व को कम करना होगा। बहुत ही बुरी तरह से लाल-पीला हो उठा वह अक्लमन्द आदमी! बड़ी अजीब बात है यह! अभी हमारे यहां बहुत कूपमंडूकता है। कभी कभी दम घुटने लगता है इस वातावरण में। सभी आदरणीय, श्रद्धेय किसी न किसी तरह महान लोगों की कतार में आ खड़े होने की आशा कर रहे हैं, बेशक हेराफेरी से, मगर ऐसी आशा बनाये रहते है वे। लेकिन ऐसा कर पाना इतना आसान तो नहीं है। इसीलिये वे पहले से ही अपनी सफाई

पेश करते है ताकि उनकी गलतिया की कोई चर्चा न करे। उन्ह चित्र
करने की जरूरत नही ऐसा तो हो ही जायगा। उनकी नहा, महान
लोगा की गलतिया दिलचस्प होती हैं। मगर नही, वे तो कान देने
को ही तयार नही है। पिरोगोव इतने महान थे कि उन्ह अपनी गलतियो
के बारे म लिखते हुए भी कोई झिझक नही हुई। आनेवाली पीढ़ियो
के लिये यह चीज़ बहुत शिक्षाप्रद रही। मगर नही, ये लोग कहते हैं
कि यह बिल्कुल दूसरी ही चीज थी। जाहिर है कि ऐसा ही है। फिर
भी मैंने जो सामग्री जमा की है वह बहुत कमाल की है। इस अक्लमन्द
आदमी ने इसके कुछ हिस्सा को देखा और मुझे याद दिलाया कि हमारे
डाक्टरो के कबीले ने वेरेसायेव की रचना 'एक डाक्टर की टिप्पणियां'
का कसा स्वागत किया था। उसने कहा कि वे तो केवल फूल ही थे,
हम तुम्ह यह दिखाना चाहते हैं कि उसमे कसे फल आये।"

एक दिन पोलूनिन की सडक पर मुलाकात वालोद्या से हो गई।
पालूनिन ने उसे वह किताब दिखाई जो उनके हाथ म थी। उसकी
जिल्द चमडे की थी सुनहरा हाशिया और सुनहरा शीर्षक था।

'कमीनेपन की हद हो गई।" पोलूनिन ने गुस्से से कहा। "जरा
ख्याल करे इस किताब का शीर्षक है—'ओदेस्सा म प्लेग'। यह शोध
काय है जो चित्रा काय योजनाओ खाका और रेखाचित्रा से सुसज्जित
है। सबसे पहले तो ड्यूक दे रिशेलियो का चित्र है, उसके बाद पूरी
सज धज के साथ वोरोन्त्सोव का। वह तो ऐसे लगता है, जसे कि
दुनिया के छोटे मोटे लोगो को खातिर म ही नही लाता हो। इसके
बाद बैरन मेयेन्दार्फ और ओदेस्सा की महामारी के अन्य विजताओ के
चित्र दिये गये ह। पर मैं आपसे इस बात की ओर ध्यान देने का
अनुरोध करता हूं कि वहा एक भी डाक्टर का चित्र नही है। इसम
चूहे का चित्र है। प्लेग की छतवाल काले चूहे की तिल्ली का, साथ
ही काले चूहे की ग्रन्थि का भी चित्र है मगर डाक्टरा के लिये इसमें
कही कोई जगह नही थी। वे इस सम्मान के योग्य नही थ। उनकी
यह नम्रता नीचता की हद तक पहुची हुई है। मैंने इस पुरानी किताबो
की दूकान स खरीदा उलट-पलटकर दखा तो मरे तन-बदन म आग
लग गई। क्या जरूरत थी इन तमगा और पदकोवाले ड्यूको काउण्ट
और बैरना के चित्र यहा छापने की और हमारे गामालेया को—उन

अदभुत, निडर और नेकदिल डाक्टर को इस सम्मान से वचित करने की? पर, खैर, नमस्ते!"

किसी और दिन, बगीचे की अपनी मनपसन्द बेंच पर बैठे हुए उन्होंने वोलोद्या से कहा—

"हम सभी यह जानते हैं कि हमारे महान बोतकिन ने रूसी चिकित्सा-क्षेत्र मे विदेशी प्रभुत्व के विरुद्ध बहुत बडा और साहसपूर्ण सघर्ष किया था। ऐतिहासिक दृष्टि से उनका सघर्ष न्यायपूर्ण भी था, क्योंकि महारानी मरिया के समय म मुख्य चिकित्सा निरीक्षक रियल न, जो दरबारी डाक्टर था, केवल कहा ही नही, बल्कि लिखा भी कि 'जब तक मैं महारानी मरिया की सस्थाओ का निरीक्षक रहा, कोई रूसी मेरे सचालन मे चलनेवाले अस्पताल म बडा डाक्टर बनने की बात तो दूर, मामूली डाक्टर भी नही बन पाया'। यह भी ध्यान म रहे कि रूस म ही ऐसा लिखा गया था और शासक परिवार ने, जो सयोगवश रूसी नही जानता था, इसका अनुमोदन किया था। बोतकिन का गुस्सा हमारी समझ मे आता है, पर भला उन्होंने, बोतकिन ने ही, ऐसा व्यवहार क्यो किया? रियूल के स्तर से ऊचा उठने के बजाय वे रियूल के स्तर पर ही आ गये। खीझ और गुस्से के कारण पूरी तरह आपे से बाहर होते हुए उन्होने ऐसी हरकते की, जिन्होने खुद उनकी और उनके देश की इज्जत पर बट्टा लगा दिया। अपनी इस झोक मे वे घटियापन की हद तक पहुच गये। आपको यह तो मानना होगा कि अधराष्ट्रवाद या राष्ट्रवाद किसी भी शक्ल मे बुरी चीज है। यह सही है कि रियूल बदमाश और नीच था, पर उसी के तरीको को क्यो अपनाया जाये? हमारे महान बोतकिन ने बिल्कुल ऐसा ही किया। वे इस मामले को यहा तक खीच ले गये कि जब उन्हे उम्मीदवारो मे से अपने डाक्टर चुनने होते थे, तो वे केवल उन्ही नामो की ओर ध्यान देते थे, जिनके कुलनामा का रूसियो के ढग पर 'ओव' या 'इन' के साथ अन्त होना था। इस सिलसिले मे मैं आपको एक घटना सुनाता हू, जो बहुत दुखद है। बोतकिन ने दोलगोह नामवाले एक बहुत ही प्रतिभाशाली नौजवान को नौकरी देने से इनकार कर दिया। वे अस्पताल म अपने परामर्श देने और घर पर मरीजो को देखने के कामो मे बहुत व्यस्त थे और इस तरह हमारे

महान बोतकिन ने यह तय कर लिया कि साइबेरियावासी यह नौजवान अन्य सभी मीनिहो लीविहो, 'रीतिहो' तथा अन्य 'इहो' की भांति जर्मन है जिनसे वे नफरत करते थे। बोतकिन के इस सिद्धान्त के अनुसार डाक्टरों का चुनाव कितनी लज्जा की बात है मैं इस बात पर बहुत ज़ोर नहीं देना चाहता पर मैं यह ज़रूर कहूंगा कि इस मामले में भी ईमानदार लोगों को बोतकिन की ज़्यादतियों के विरुद्ध संघर्ष करना चाहिये था। इसके बजाय उन्होंने यही बेहतर समझा कि इस मामले की ओर से आंख मूंद ली जाये, इसे देखा अनदेखा कर दिया जाये। इस तरह उन्होंने हमारे बोतकिन के नाम और उनकी महान का उनके जीवनकाल में और उसके बाद भी आलोचना का शिकार हो जाने दिया। क्या होने दिया गया भला ऐसा?"

एक दिन व्याख्यान देते हुए पोलूनिन ने कहा—

रूसी विज्ञान के साथ उन्होंने कैसी ज़्यादतिया नहीं की ओह, क्या कुछ नहीं किया उन्होंने। रूसी डाक्टरों की पूरी पीढ़ी के उन सबसे बड़े गुरू सर्गेई पेत्रोविच बोतकिन को उन्होंने उस बुढ़ाती हुई कुतिया उस महारानी मरिया का दरबारी डाक्टर नियुक्त करने का निर्णय किया। इस तरह उन्हें काफी अर्से तक अकादमी छोड़ने को विवश किया। पर अकादमी तो उनकी ज़िन्दगी थी। कारण कि ज़िन्दगी का मतलब है कुछ करना। बोतकिन की प्रतिभा अपने शिखर पर थी। यही तो वह समय था कि वे बड़ा श्रम करते। इसके बजाय उन्हें लिवादिया या कानस या सेंट रेमो अथवा मेनटोन में चहलकदमी करते हुए यह पूछना पड़ा— महारानी जी आपको नींद तो अच्छी तरह से आई? कितनी शर्म की बात है यह।

पोलूनिन अपने विद्यार्थियों के सामने इधर-उधर टहल रहे थे। उनकी मुस्कराती हुई स्निग्ध आंखों के गिर्द झुर्रियां उभरी हुई थीं। वे विद्यार्थियों से अतीत के शानदार डाक्टरों की चर्चा कर रहे थे, जिनके बारे में उन्हें इतनी अधिक और इतनी सविस्तार जानकारी थी, मानो उनसे व्यक्तिगत रूप से परिचित हों। वोलोद्या का इस बात की ओर ध्यान गया कि आलोचनात्मक दृष्टिकोण के बावजूद पोलूनिन को लोगों के बारे में अच्छी बात करके मज़ा आता था, वे उनकी प्रखर बुद्धि, विचार की गहराई और शक्ति, उनकी कार्य-क्षमता और

स्वय उनके शब्दो मे "अपने को अपने काय म पूरी तरह खो देने" पर मुग्ध होते थे।

"चिकित्साशास्त्र का इतिहास उनकी जीवनिया को बहुत ही नीरस ढग से प्रस्तुत करता है," उन्होने कहा। "हमारे सभी महान डाक्टर बहुत भले और चिकने चिकने से लगते है, दीप्तिचक्र स सजे धजे। ऐस प्रतीत होता है मानो वे न तो रोटी खात थे, न प्यार करते थे और न कभी गुस्से से लाल पीले होते थे। मगर वे भी इन्सान थे पुश्किन या अन्य किसी प्रतिभाशाली व्यक्ति की भाति। मैं एक और बात की ओर आपका ध्यान दिलाना चाहता हू कि किसी चिकित्साशास्त्री को उसके सही रूप मे प्रस्तुत करने के मामल म हम बहुत कजूसी से काम लेते है। मेरा अभिप्राय यह है कि उसके दिमाग तथा जिस महनत स उसने काम किया, हम उसे उसका पूरा श्रेय नही देते। हमारे चिकित्साशास्त्र-सबधी लेखक इस मामले मे बडी कजूसी दिखाते है। वे किसी मृत की कुछ अधिक प्रशसा करते हुए घबराते है। स्पष्टत इसका एक कारण तो यह है कि अपन सिद्धाता का प्रतिपादन करते हुए उनम से प्रत्येक ने कोई न कोई गलती तो अवश्य की होगी। इसलिय जरा बच-बचकर चलना ही बेहतर है। मैं एक ऐस महामूख को जानता हू, जिसने हमारे उस अद्भुत प्रतिभा-सम्पन्न जाखारिन की कीटाणु विज्ञान की जानकारी न होने के लिये कडी आलोचना की थी। मैं यह जानना चाहता हू कि जाखारिन के जमाने म यह महामूख स्वय ही क्या करता और कीटाणुशास्त्र के विकास के उस तूफानी दौर म खुद भला क्या तीर मारता? विद्यार्थी स्तेपानोव, आप मुझे ऐसी व्यग्यपूण दृष्टि से क्यो देख रहे हैं? क्या मैंने काई भयानक बात कही है? मैं आप लोगो को पहले से आगाह कर देन के लिये ही यह सब कुछ कह रहा हू। मेरे विद्यार्थियो, मैं यह नही चाहता कि विज्ञान के क्षेत्र म आप इस तरह की बेहूदा करवट के वासे म आ जायें"

विद्यार्थी मन्त्रमुग्ध स सब कुछ सुन रहे थे। येव्गेनी ने "बेहूदा करवट" समेत सभी कुछ बहुत ध्यान से लिख लिया। यह अनुभव करते हुए कि पोलूनिन उससे चिढे हुए है, येव्गेनी उनसे डरता था, उनसे नफरत करता था।

८

वालोद्या अपनी ठोडी को हाथ पर टिकाये बैठा था। उसे यकीन था कि कोई दिलचस्प बात सुनने को मिलेगी। और पालूनिन कह रहे थे-

"आइये, बोतकिन की चर्चा करें, हमारे लिये यह ज्यादा अच्छा है। सयोगवश यह भी बता दू कि सर्जरी की अकादमी मे उनका सहयोगी मेकलिन नाम का वनस्पति विज्ञान का प्रोफेसर, किसी समय शानदार डचेस येलेना पाव्लोव्ना का माली था। यह अत्यधिक सम्मानित विद्वान कागज पर लिखे अपने व्याख्यान शब्दश पढा करता था और वह शब्दश यह पढता था-'पौधा उसी भाति कोठरियो का बना होता है, जैसे पत्थर की दीवार ईंटो की'। पर आखिर वह तो स्वय शानदार डचेस का माली रहा था इसलिये प्रोफेसरी मे भी टाग क्यो न अडाया जाय? बोगदानोव्स्की एक प्रतिभाशाली व्यक्ति था, अपनी आस्थाओ पर अटल रहनेवाला और लिस्टर के सिद्धात का कट्टर विरोधी। वह भी उस समय अकादमी मे पढाता था। वह हर दिन की पोशाक मे ऑपरेशन करता था और अपने फ्राक-कोट को गन्दा होने से बचाने के लिये उसके ऊपर काले मोमजामे का पशबन्द पहन लेता था। शिराओ को बाधने के लिये रेशम की डोरिया खिडकी की सिटकिनी पर लटकी रहती थी और जब उसे डोरी की जरूरत पडती, तो उसका सहायक उसे मजबूत करने के लिये थूक से गीला करता और उसे अपने जनरल की ओर बढाते हुए बडे आदर से यह कहता-'हुजूर, यह लीजिये, यह अधिक भरोसे की है।' जाहिर है कि कार्बोलिक एसिड या कीटाणु-नाशक किसी घोल की एक बूद तक इस्तेमाल नहीं की जाती थी। मगर इसी समय प्रोफेसर पेलेखिन, जो लिस्टर का बहुत बडा प्रशसक था, सफाई की सनक मे इस हद तक आगे बढा कि उसने केवल अपनी मूछ और दाढी ही नही, भौहो तक की हजामत कर डाली

विद्यार्थी हस दिये।

"साथियो, हमारे भावी डाक्टरो, इसमे हसने की कोई बात नही है," पालूनिन ने बिगडते हुए कहा। 'विज्ञान का मार्ग दुखद होता है। पेलेखिन ऐसा मानता था-आप लोग यह समझते हैं न?-वह ऐसा मानता था और उसने खुद अपने को तथा अन्य लोगो को इस विचार का मानना का शिकार बनाया कि लोगो की जानें बचाने का

यही एक उपाय था। मैं महसूस करता हूं, साथी स्तेपानोव कि आपका पेलेखिन हास्यास्पद प्रतीत होता है, मगर मैन – और मैं यह स्वीकार करते हुए तनिक भी लज्जा अनुभव नही करता – जब मैंने अपन प्यार पेलेखिन की भौह साफ कर डालन की कहानी सुनी तो म रा पडा। कसी भयानक सूरत लेकर वह अपन परिवार के सामने इतना ही नही अकादमी के सामने गया होगा।

पोलूनिन ने अपने थैले म कुछ टटाला जरूरी पुर्जा निकाला और उस लहराकर बोले –

"सुनिये। रूस म प्रसाविकी और नारी रागविज्ञा की पहली काग्रस के उद्घाटन के समय प्रोफेसर स्नेगिर्योव न यह कहा था। यह काग्रेस १९०४ म हुई थी। वास्तव म काई बहुत समय ता नही बीता है यह हमारे समय और युग की ही बात है।

"'यह याद कर मेरे रोगटे खडे हो जात हैं कि एक, दा या तीन घटो तक पेट को चीरकर खुला रखा जाता था। रोगी सजन और उसके सहायका पर ५% कार्बोलिक एसिड के घोल की अविरत बौछार की जाती थी। (बौछार क्या होती है यह ता आप लोग जानत ही हैं।) हर किसी के मुह म उसका मीठा मीठा स्वाद पहुचता और श्लेष्मल झिल्ली का सूखापन-सा आ जाता। डाक्टरा और रोगी क पेशाब म ढेर-सा कार्बोलिक एसिड निकलता। इस तरह हम खुद अपन अन्दर और अपनी रोगिया के शरीर म विष पहुचात थ क्योकि हम यह मानते थे (मानते थे!) कि इस तरह रागी क शरीर और इद गिद की हवा म छूत के कीटाणुआ का नष्ट कर रह है। हमारी इस सनक के लिये हम क्षमा किया जाय। जब सबलामट न कार्बोलिक एसिड की जगह ली, ता स्थिति और भी खराब हा गयी। हम अपन हाथो और स्पजा को इस घोल म धाते थ हमार दात जात रहत थ और रोगी अपनी जाना से हाथ धा बैठती थी।'"

पोलूनिन के बडे-स चेहरे पर बल पड गये और पुर्जे का अपन थले म रखते हुए उन्हाने कहा –

"तो लिस्टर की महान शिक्षा को इस तरह शुरू म असली शक्ल दी गई। है न यह मजाक की बात? नही यह मजाक की बात नही है। एक शानदार रूसी सजन त्रोयानाव कार्बोलिक एसिड स रक्त

विषाक्त हो जाने के कारण गुर्दे की सूजन से मौत के मुह में चला गया। यह भी कोई मजाक की बात नही है। आइये, फिर से बोतकिन की चर्चा करे, उसी बोतकिन की, जो हमारे चिकित्साशास्त्र का पुण था और जो हमारे विज्ञान के लिये बहुत कठिन समय मे खिला। फिर भी उन्होने अपनी विचारधारा को जन्म दिया, चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र मे एक शक्तिशाली आन्दोलन शुरू किया और कोई बहुत अच्छा वक्ता न होने पर भी उनका व्याख्यान सुनने के लिये चार सौ और कभी कभी तो पाच सौ श्रोता तक सदा आ जाते थे। रोग निदान की दृष्टि से वे अपने सभी समकालीनो से बहुत ही बढ चढकर थे। वे जानते थे कि रोगियो की बाते कैसे सुनी जाये, कैसे तर्क वितर्क किया जाये, रोगी और रोग के लक्षणो को क्रमबद्ध किया जाय और समस्या का कुशलतापूर्वक हल ढूढा जाय। अनेक तथ्य नदानिक के रूप में उनकी योग्यता की पुष्टि करते है जिनका हम उल्लेख कर चुके है। पर मैं एक और तथ्य की चर्चा करना चाहता हू। एक दिन एक अधेड उम्र की नारी को क्लीनिक मे लाया गया। डाक्टरी जाच से कोई उपयोगी सूचना न मिली पर रोगिणी ने स्वय ही डाक्टरो को यह बतलाया कि कोई आठ दिन पहले पाइक मछली का शोरबा खाने के बाद वह बीमार पड गई थी, उसकी भूख मर गई थी और उसने चारपाई थाम ली थी। लक्षण ये थे—खासी, चेहरे पर नीलापन, अगो का ठडापन, खुराक से नफरत और नीद की खुमारी। अनुभवी डाक्टरो ने इसे ब्रोको निमोनिया बताया। तब बोतकिन आये और बहुत ध्यान से रोगिणी की परीक्षा करने के बाद उन्होने धीरे धीरे कहा—

'कल शरीर का व्यवच्छेदन करके मध्यस्थानिका के पिछले भाग मे भोजन नलिका के करीब सूजन ढूढने की कोशिश करो।

"अब जरा कल्पना कीजिये कि यह सुनकर उन अत्यधिक प्रतिष्ठित डाक्टरो, उन गम्भीर विद्वानो किन्तु प्रतिभाहीन लोगो के चेहरो पर कैसी हवाइया उड रही होगी। बोतकिन वास्तविक विभूति थे।

व्यवच्छेदन किया गया और यह निष्कर्ष निकाला गया—भोजन-नलिका की दीवार मे पीपदार सूजन उसका छिद्रण और फलत मध्यस्थानिका के पिछले भाग मे फोडा तथा रक्त विपाक्त हो गया है।

"सारी बात बिल्कुल साफ हो गई। भोजन-नलिका मे मछली की एक हड्डी फस गई थी, जिससे मध्यस्थानिका मे पीपदार सूजन हो गयी जिसके बाकी सभी परिणाम हुए थे।

"साथी विद्यार्थियो, मैंने विभूति शब्द का सयोगवश उपयोग नही किया है। बोतकिन विभूति थे, क्योकि जो चीज औरो को दिखाई सुनाई नही देती थी, वे उसे देख सुन लेते थे। व यह जानत थे कि क्लीनिकल विश्लेषण को दद के असली कारण और बहुत ही अदरूनी प्रक्रियाओ पर कैसे केन्द्रित किया जाय। सबसे महत्त्वपूण बात तो यह है कि वे बीमारी की 'जड' तक पहुचना जानत थे। मगर वे स्वय यह नही बता सकते थे कि कैसे यह सब अनुभव करत और जान जाते थे। अन्य किसी को भी दिल की धडकन की तब्दीली का पता न चलता, किन्तु वे ज़ोर देकर कहते कि उन्हे 'धडकन मे कुछ तेजी' अनुभव हो रही है और कुछ देर बाद उन्हे दिल म 'शोर' सुनाई देता। बीमारी जब उग्र रूप ले लेती, तभी अन्य प्रोफेसरो को दिल की धडकन म वह कुछ सुनाई देने लगता, जिसके बारे मे बोतकिन ने उन्हे शुरू स ही विश्वास दिलाया था। अपने चश्मे पर दूरबीनी शीशा रखते हुए वे कहते–'मुझे त्वचा मे कुछ भूरी-बैंगनी झलक मिल रही है।' उनकी नज़र कमज़ोर थी, फिर भी वे ऐसी चीजें देख लेते थे, जो दूसरे नही देख पाते थे। वे कहते–'मैं साफ तौर पर यहा छोटा-सा उभार अनुभव कर रहा हू।' कोई अन्य डाक्टर अभी इसे अनुभव नही कर पाता था। इसलिये बोतकिन के शब्द हमेशा और सवथा निर्विवाद रहते थे "

पोलूनिन अपने विद्यार्थियो के तनावपूण चेहरो को ध्यान से देखते हुए रुके। वे सभी जानते थे कि शीघ्र ही उन्हे सबसे अधिक महत्त्वपूण बात सुनने को मिलेगी। वह बात, जिसके कारण पिछले कुछ समय से बोतकिन का इतनी अधिक बार नाम लिया जाने लगा था।

"किन्तु निर्विवादता म भी एक अजीब दुखद तत्त्व निहित रहता है। इस छोटी-सी घटना का उल्लेख करत हुए मेरा उद्देश्य महान डाक्टर के माथे पर कलक का टीका लगाना नही, बल्कि आपको, भावी डाक्टरो को, इससे आवश्यक परिणाम निकालने के योग्य बनाना है। जिस

वष यह घटना घटी, उस वष वोतकिन न टाइफस के रोगिया म विशप दिलचस्पी ली। हुआ यह कि वोतकिन न अपन विद्यार्थिया के लाभ क लिये जिस व्यक्ति को अध्ययन और क्लीनिकल विश्लेषण के हेतु चुना, वह किसी दवाफरोश का सहायक था। रोगी स्वस्थ हो गया, मगर लगातार सिर-दद की शिकायत करता रहा। पर चूकि वोतकिन के विश्लेषण के ढाचे म सिर-दद ठीक नही बैठता था, इसलिय दवाफरोश के इस सहायक को अधिकृत रूप से – इस बात की ओर ध्यान दीजिये - छद्म रोगी घोपित कर दिया गया, जिसने क्लीनिक के डायरेक्टर के सूत्र – 'स्वस्थ, काम के योग्य' का पालन करने से इन्कार कर दिया था। क्लीनिक के कुछ डाक्टरो का वोतकिन से भिन्न मत था, किन्तु वे मौन साधे रहे। जहा तक उस सोलह वर्षीय किशोर का सम्बन्ध है वह तो चल बसा, बस, चल बसा। शव-परीक्षा से पहले प्रोफेसर रुदनेव ने अपन विद्यार्थिया से कहा –

''इस शव से हम एक रोग के रूप मे छद्म रोग का अथ समझने जा रहे हैं, जिससे अचानक मृत्यु हो जाती है।'

"रोगी दिमाग की सूजन से मरा था।

"इस मामले मे एक सच्चे प्रतिभाशाली डाक्टर की प्रतिष्ठा की निर्विवादता के फलस्वरूप उस किशोर की मृत्यु हुई। मेरे भावी डाक्टरो, कठिन समस्याओ का समाधान करते समय चाहे वोतकिन जसे योग्य प्रोफेसर भी क्यो न उपस्थित हो, सामूहिक निणय करना आवश्यक होता है। और अगर कोई जाना माना डाक्टर गलती करता है, तो आपका इस गलती के खिलाफ बोलना सच्चा कत्तव्य हो जाता है।"

पोल्निन एक दो मिनट तक विचारो मे डूबे रहे और फिर उन्होने अचानक ही पूछा –

"अच्छा यह बताइये कि अपने समकालीन प्रोफेसर क्लोदनीत्स्की, उसके सहायको और छात्रो के बारे मे आप क्या जानते हैं?"

विद्यार्थी खामोश रहे।

"मगर आप यह तो जानते ही हैं कि प्रोफेसर क्लोदनीत्स्की हमारा प्रमुखतम महामारी विशेपज्ञ है?"

अनेक पुस्तको के लेखक भी,' मीशा शेरवुड बोला, "प्रसिद्ध किताबो के लेखक।"

"एक प्रमुख वैज्ञानिक, सम्भवत अनेक पुस्तको का लेखक भी होता ही है," पोलूनिन ने वैमनस्यपूर्ण मुस्कान के साथ कहा। "सदा की भाति, आज भी ठीक ही हैं आप शेरवुड!"

पोलूनिन कुछ देर चुप रहे।

"इस बात से मुझे एक और बात याद आ गई। मैं मृत्यु और शव-परीक्षा के बारे मे एक अन्य घटना आप लोगो को बताना चाहता हू। अगर मैं गलती नही करता, तो २ अक्तूबर, १६१२ को देमीन्स्की नामक एक रूसी डाक्टर ने, जो प्रोफेसर क्लोदनीत्स्की का मित्र और सहायक था, सबसे पहले प्लेग से बीमार हुए एक मारमोट के रोग जीवाणु को अलग किया था। यह अस्त्राखान गुबेर्निया की बात है। वहा प्लेग की कई घटनाए हो चुकी थी। तो इस तरह देमीन्स्की को फेफडो की प्लेग हो गई। उसने अपने कफ का विश्लेषण किया और क्षानीवेक नगर मे क्लोदनीत्स्की को तार भेजा। मेरे भावी डाक्टरो, मेरा यह सुझाव है कि आप इस तार के शब्द लिख ले, ताकि उन्हे हमेशा याद रख सके "

सधे-सधाये कदम रखते हुए पोलूनिन ने सयत और शान्त प्रतीत होनेवाले स्वर मे तार के ये शब्द लिखवाये—

"'मुझे मारमोटो से फेफडो की प्लेग हो गई है। मैंने जो रोग जीवाणु प्राप्त किये हैं, उन्हे आकर ले लीजिये। मेरे सभी रेकार्ड सुव्यवस्थित हैं। बाकी चीजें आपको प्रयोगशाला से मालूम हो जायगी। मेरे शव को चीर फाडकर एक ऐसे प्रयोगीय व्यक्ति के रूप मे इस्तेमाल करे, जिसे मारमोटो से प्लेग की छूत लगी है। अलविदा। देमीन्स्की।' लिख चुके?"

"जी हा," पीच ने जवाब दिया।

"जी, लिख चुके," ओगुर्त्सोव ने दोहराया।

"जाहिर है कि क्लोदनीत्स्की वहा पहुचा," पोलूनिन ने अपनी बात जारी रखी। "उसने मृतक की अन्तिम इच्छा पूरी की और कब्रिस्तान मे, खुली हवा मे उसका शव चीरा और इस तरह खुद भी छूत लगने का खतरा मोल लिया। मैं चाहता हू कि आप ऐसे लोगो से शिक्षा ग्रहण करे।"

व्याख्या हॉल में खामोशी छाई थी, गहरी खामोशी और तनाव था।

पोतुगिन ने फिर से बातकिन की चर्चा शुरू की, मगर इस बार प्लेग की महामारी के सिलसिले में।

"मेरे नौजवान साथियो, डाक्टर को अपने विचारों के अनुसार बनाये ढांचे में खुद ही कभी खो नहीं जाना चाहिये। ऐसा होने पर वह बहुत-सी अप्रिय बातों का शिकार हो सकता है। उन्नीसवीं शताब्दी के नौवें दशक के अन्त में बड़ा ही प्रतिभाशाली और अद्भुत गर्वीला हमारे शानदार बातकिन को इस बात का लगभग विश्वास ही था कि वोल्गा तट के देहातों में फैली हुई प्लेग अवश्य ही सेंट-पीटर्सबर्ग में भी आयेगी। यह प्लेग 'वोल्यान्स्काया' नाम से जानी जाती है। ई... तो प्लेग फैलने का इन्तजार करते हुए बातकिन अपने रोगियों की ग्रन्थियों की सूजन की ओर ध्यान देते रहे। उन्होंने यह कल्पना की कि बहुत बड़ी संख्या में ऐसी ग्रन्थियों की सूजन प्लेग की बीमारी के सेंट-पीटर्सबर्ग में फैलने का व्याधिकीय आधार होगा। तभी नाऊम प्रोकोफियेव नाम का एक सड़क बुहारनेवाला रोगी के रूप में उनके पास आया। वह बोतकिन द्वारा पहले से तैयार किये गये खाके में खूब जंच गया। उसके सारे शरीर की ग्रन्थियां सूजी हुई थीं। इस प्रकार उसे कड़े निरीक्षण में रख दिया गया और डाक्टरी के विद्यार्थियों के सामने निर्विवाद रूप से यह घोषणा कर दी गई कि उसका रोग प्लेग है। खुद बातकिन ने कहा है कि प्लेग है! स्वयं महान बातकिन ने! और चूंकि सन्देह करनेवालों में से (ऐसे कुछ थे भी) किसी ने इस मामले में भी जबान खोलने की जुर्रत नहीं की, इसलिये बहुत बड़ा हंगामा हो गया। पीटर्सबर्ग के तानाशाही और काम-काजी लोग भाग खड़े हुए। शाही नगर से बहुत तेजी से बग्घियां भाग चलीं और भीड़ से अटी-अटायी गाड़ियां जाने लगीं। डर से थर-थर कांपते हुए बड़े पदाधिकारी, अवकाश प्राप्त जनरल, व्यापारी और मुख्य सैनिक कार्यालय के सभी अफसर अपनी जागीरों की तरफ निकल भागे। उन्होंने जितना भी सम्भव हो सका, प्लेग से दूर भाग जाने की कोशिश की। तो ऐसे रहा यह किस्सा, साथी स्तेपानोव!'

वाद-विवाद और झगडा

येव्गेनी को न तो गानिचेव और न पोलूनिन ही फूटी आखा सुहाते थे। वे क्या कहते हैं, उसकी समझ मे ही नही आता था। उनके व्याख्याना के दौरान उसके चेहरे पर परेशानी अकित रहती। उसने तो युवा कम्युनिस्ट लीग की एक सभा के सामने मामला पेश करते हुए यह शिकायत भी की कि मैं नकारात्मक व्याख्यान सुन-सुनकर तग आ गया हू। मुझे तो निश्चित निर्णीत ज्ञान चाहिये, मुझे विज्ञान की महान उपलब्धिया के बारे मे सन्देहपूर्ण फब्तिया म कोई दिलचस्पी नही। इनके दर्जे मे सबसे बडी उम्र का विद्यार्थी पीच, जिसके बाल पकने लगे थे और चाद निकलने लगी थी और जो हमेशा गुमसुम और व्यस्त रहता था, अचानक भडक उठा और एक टन ईटा के बोझ के समान येव्गेनी पर बरस पडा। पीच के बाद सभा म उपस्थित कम्युनिस्ट पार्टी और युवा कम्युनिस्ट लीग के सभी सदस्यो न येव्गेनी की खूब लानत-मलामत की। येव्गेनी ने अपना दष्टिकोण स्पष्ट करने के लिये फिर से बोलने की अनुमति मागी, मगर उसे इन्कार कर दिया गया। उसने अपनी भूल स्वीकारने के लिये कुछ शब्द बोलने की इजाजत चाही, पर उसे वह इजाजत भी नही दी गई। किन्तु "बूढा" पीच फिर से मच पर आया।

"साथियो!" उसने घुडसवार सैनिक की खरखरी सी आवाज मे कहा। "प्रोफेसर गानिचेव और पोलूनिन हमे सोचना, तक वितक करना सिखाते है। हा, हमे तो पाठ्यपुस्तको के साधारण सत्या के बारे म सन्देह प्रकट करना भी कठिन प्रतीत होता है। मगर वह समय भी आयगा, जब हममे से प्रत्येक अपने रोगी के साथ अकेला हागा। वहा न तो प्रोफेसर की सहायता उपलब्ध होगी और न ही क्लीनिक होगी। किसी दूर दराज के झोपडे मे बस डाक्टर और मरीज ही हागे। उस दिन हम जिन चीजो की जरूरत होगी, क्या उन सभी को जबानी याद करना सम्भव है? मगर हम जो सीख सकते है, वह है चिकित्सको की तरह, डाक्टरो की तरह सोचना, तक वितक करना। मैंने अपनी बात पूरी तरह स्पष्ट कर दी है न?"

व्याख्यान हाल म खामोशी छाई थी, गहरी खामोशी और तनाव था।

पोलूनिन न फिर स बोतकिन की चर्चा शुरू की, मगर इस बार प्लेग की महामारी के सिलसिले म।

"मेरे नौजवान साथियो, डाक्टर को अपन विचारा के अनुसार बनाय खाके से खुद ही कभी धाखा नही खाना चाहिये। ऐसा होने पर वह बहुत-सी अप्रिय बाता का शिकार हो सकता है। उन्नीसवी शताब्दी के नौवे दशक के अत म बहुत ही प्रतिभाशाली और अदभुत गणावाले हमारे शानदार बोतकिन को इस बात का लगभग विश्वास ही था कि वोल्गा तट के देहातो मे फली हुई प्लेग अवश्य ही सट-पीटसबग म भी आयेगी। यह प्लेग 'वेतल्यान्स्काया' नाम से जानी जाती है। हा तो प्लेग फैलने का इतजार करते हुए बोतकिन अपने रोगिया की रक्त ग्रन्थियो की सूजन की आर ध्यान देत रह। उन्होने यह कल्पना की कि बहुत बडी सख्या मे ऐसी ग्रन्थियो का सूजना प्लेग की बीमारी के सेट पीटसबग मे फैलने का व्याधिकीय आधार होगा। तभी नाउम प्रोकोफियेव नाम का एक सडक बुहारनेवाला रोगी के रूप मे उनके पास आया। वह बोतकिन द्वारा पहले से तैयार किये गय खाके म खब जच गया। उसके सारे शरीर की ग्रन्थिया सूजी हुई थी। इस अलग करके कडे निरीक्षण मे रख दिया गया और डाक्टरी के विद्यार्थियों के सामने निर्विवाद रूप से यह घोषणा कर दी गई कि उसका रोग प्लेग है। खुद बोतकिन ने कहा है कि प्लेग है! स्वय महान बोतकिन न! और चूकि सन्देह करनेवाला मे से (ऐसे कुछ थे भी) किसी ने इस मामले मे भी जबान खोलने की जुरत नही की, इसलिये बहुत बडा हगामा हो गया। पीटसबग के तानाशाही और काम-काजी लोग भाग खडे हुए। शाही नगर से बहुत तेजी से बग्घिया भाग चली और भीड से अटी अटायी गाडिया जाने लगी। डर से थर थर कापते हुए बड पदाधिकारी, अवकाश प्राप्त जनरल व्यापारी और मुख्य सैनिक कार्यालय के सभी अफसर अपनी जागीरा की तरफ निकल भागे। उन्होने जितना भी सम्भव हो सका, प्लेग से दूर भाग जाने की कोशिश की। तो ऐसे रहा यह किस्सा साथी स्तेपानोव।

वाद-विवाद और झगडा

येव्गेनी को न तो गानिचेव और न पोलूनिन ही फूटी आखो सुहाते थे। वे क्या कहते हैं, उसकी समझ मे ही नही आता था। उनके व्याख्याना के दौरान उसके चेहरे पर परेशानी अक्ति रहती। उसन तो युवा कम्युनिस्ट लीग की एक सभा के सामने मामला पेश करते हुए यह शिकायत भी की कि मैं नकारात्मक व्याख्यान सुन-सुनकर तग आ गया हू। मुझे तो निश्चित निर्णीत ज्ञान चाहिये मुझे विज्ञान की महान उपलब्धियो के बारे मे सन्देहपूण फब्तिया मे कोई दिलचस्पी नही। इनके दर्जे मे सबसे बडी उम्र का विद्यार्थी पीच, जिसके बाल पकने लगे थे और चाद निकलने लगी थी और जो हमशा गुमसुम और व्यस्त रहता था, अचानक भडक उठा और एक टन इटा के बाझ के समान येव्गेनी पर बरस पडा। पीच के बाद सभा मे उपस्थित कम्युनिस्ट पार्टी और युवा कम्युनिस्ट लीग के सभी सदस्यो ने येव्गेनी की खूब लानत-मलामत की। येव्गेनी न अपना दृष्टिकाण स्पष्ट करने के लिय फिर से बोलन की अनुमति मागी, मगर उसे इकार कर दिया गया। उसने अपनी भूल स्वीकारन के लिये कुछ शब्द बोलने की इजाजत चाही पर उसे वह इजाजत भी नही दी गई। किन्तु "बूढा" पीच फिर से मच पर आया।

"साथियो!" उसने घुडसवार सैनिक की खरखरी सी आवाज़ मे कहा। "प्राफेसर गानिचेव और पोलूनिन हमे सोचना, तक वितक करना सिखाते हैं। हा, हमे तो पाठ्यपुस्तका के साधारण सत्या के बार म सन्देह प्रकट करना भी कठिन प्रतीत होता है। मगर वह समय भी आयेगा, जब हमम से प्रत्येक अपने रोगी के साथ अकेला हागा। वहा न तो प्रोफेसर की सहायता उपलब्ध होगी और न ही क्लीनिक हागी। किसी दूर-दराज के झोपडे मे बस डाक्टर और मरीज़ ही हागे। उस दिन हम जिन चीजा की जरूरत होगी, क्या उन सभी को जबानी याद करना सम्भव है? मगर हम जो सीख सकते है, वह है चिकित्सका की तरह, डाक्टरा की तरह सोचना, तक वितक करना। मैंने अपनी बात पूरी तरह स्पष्ट कर दी है न?"

पीच बहुत देर तक बोलता रहा और सभी बड़े चाव और इच्छा से उसकी बात सुनते रहे। यह जानकर सभी को बड़ी प्रसन्नता हुई कि "बूढ़ा पीच, जिसे सभी प्यार करते थे और जो पढ़ने में इतनी मेहनत करता था, गानिचेव और पोलूनिन को इतनी अच्छी तरह से समझता था। चूंकि दुनिया में कोई रहस्य भी स्थायी रूप से रहस्य नहीं रहता, इसलिये गानिचेव और पोलूनिन से भी यह बात छिपी न रह सकी। उन्हें सभा के बारे में और यह भी मालूम हो गया कि विद्यार्थियों ने कितने उत्साह से उनकी चर्चा की थी

पोलूनिन इस प्रदेश के प्रमुख चिकित्सक थे। वे डाक्टरी के कालेज में व्याख्यान देते, थेरापी की क्लीनिक का संचालन करते और चिकित्सालय में रोगियों को देखते। दैव जैसे लम्बे-तड़गे और प्रायः सफेद कलफ लगे लबादे में, जिसकी आस्तीनें ऊपर को चढ़ी रहती थीं स्वास्थ्य का मूर्त रूप प्रतीत होनेवाले पोलूनिन यद्यपि प्रायः विद्यार्थियों से रुखाई से पेश आते, व्यंग्य करते, पर जब वास्तव में कोई पीड़ित कोई सख्त बीमार उनके सामने आ जाता, तो वे बहुत विनम्र हो जाते बड़े सब्र से काम लेते। तब ऐसा प्रतीत होता, मानो उन्हें अपनी भारी भरकम आवाज, अपने लाल-लाल गालों, अपने बढ़िया स्वास्थ्य और अक्षय शक्ति के कारण लज्जा अनुभव हो रही है। वे बहुत होशियारी-समझदारी से रोगियों की जटिल परीक्षाएं करते, बातूनी विद्यार्थियों की भीड़ अन्दर लाकर सभी रोगियों को नाराज या लज्जित न होने देते, उनकी बीमारियों का लम्बा वर्णन और प्रश्न कर उन्हें परेशान न करते। वे विद्यार्थियों की जरूरत की बातें उन्हें ऐसी भाषा में बताते जिसका वे विशेषतः क्लीनिक में ही उपयोग करते थे और विद्यार्थी उन्हें अच्छी तरह समझ जाते थे।

धीरे धीरे वारावा यह अनुभव करने लगा कि पोलूनिन के जीवन में क्लीनिक ही मुख्य चीज है। क्लीनिक में पोलूनिन किसी रोगी के रोग का स्पष्टीकरण करने के मामले में न तो समय की परवाह करते और न श्रम का। वे शरीर की सामान्य से भिन्न स्थिति का अधिक से अधिक स्पष्ट तौर पर विद्यार्थियों का समाधान की कोशिश करते। तब वे सभी तरह की गड़बड़ियों को एक तार में पिरोते और सार निकालते। शुरू में वे तनिक हिचकते झिझकते, उनकी भारी आवाज

में सावधानी की झलक होती, फिर उनकी आवाज में दृढ़ता आ जाती "क्या ऐसा है?" यह वाक्य गायब हो जाता और उनके दृष्टिकोण की ठोस तार्किकता खूब उभरकर सामने आ जाती। बार-बार छोटे मोटे और सायोगिक तथ्य उभरकर उनके दृष्टिकोण मे बाधा डालते, व भुनभुनाते हुए उनका सामना करते, अपनी चौडी हथेली से उन्हें एक ओर को हटाते प्रतीत होते और अपने बडे-बडे हाथो से सकेत करते हुए वे मीनार-सी खडी करने लगते, जिसका शिखर-बिंदु होता था–रोग निदान।

"देखा न?" वे विजयी ढग से फुसफुसाकर पूछते। विद्यार्थी मन्त्रमुग्ध-से उन्हे देखते होते, मानो वे कोई जादूगर हो। "मेरे नौजवान साथियो, हमे दिमाग से काम लेना चाहिये, एव कुशल रणनीतिज्ञ की भाति समस्या को हल करना चाहिये। हम शत्रु की सेनाओ की स्थिति, उसकी सेना-सख्या और सुरक्षित सेनाए निर्धारित कर चुके हैं। अब, हम क्या कुछ कर सकते हैं?"

वालाद्या का दिल ज़ोर-ज़ोर से धडकता होता। एक घटे पहले तक जो कुछ अस्पष्ट था, धुधला-सा प्रतीत हुआ था, ढेरो लक्षणो, चिह्नो और समानताओ के जगल मे उलझा-उलझाया हुआ था, अब उसने एक निश्चित रूप ले लिया था–रोग का नाम तय हो गया था। रोग कोई बहुत दुलभ, यहा तक कि बिल्कुल दुलभ नही, बहुत आम था। भावी डाक्टरो को निश्चय ही इससे बहुत बार वास्ता पडनेवाला था। पोलूनिन को वह चीज पसन्द नही थी, जो, दुर्भाग्यवश, अभी तक चिकित्साशास्त्र के कुछ अध्यापको मे लोकप्रिय है वे बहुत ही दुलभ रोगो का अपने विद्यार्थियो के सामने प्रदशन नही करते थे, क्योकि वे उन्हें या कुछ "दिलचस्प रोगियो" की अत्यधिक जटिल बीमारियो को युवा डाक्टरो के लिये बहुत जरूरी नही मानते थे।

"मेरे नौजवान दोस्तो, अगर आप असमजस मे पड जायें, तो हमेशा ही एम्बूलेस हवाई जहाज़ को बुला सकते हैं। हम किसी अधे युग में नही रह रहे, यह सोवियत राज्य है। आपके कालेज का कत्तव्य है कि वह आपको बड़े पैमाने पर डाक्टरी सहायता देने की शिक्षा दे, आपको जीवन का विस्तृत दृष्टिकोण रखनेवाला, योग्य और उत्साही डाक्टर बनाये, न कि विज्ञान की किसी सकरी शाखा का विशेषज्ञ "

पोलूनिन की विचार विधि और कसे वे एक अर्थ की भांति ला टेक-टक्कर एक के बाद दूसरे सवाल की ओर बढ़ते थे, यह सब न्यूरा बहुत खुशी होती थी। वे रोगी की तिल्ली और जिगर की जाच करते, एक्स र और प्रयोगशाला की परीक्षाओ के परिणामो का देखते और इस तरह शरीर विकृति, शरीर रचना और शरीर क्रिया विज्ञान से लस होकर वे अस्पष्टता की खाइयो और अन्तविरोधो की परवाह न करते हुए बधडक आगे बढते जाते और अचानक तथा ज्ञान का ज्ञान म गडबड-झाले, बेहूदगी और बक्वास तथा विरोधी लक्षणो को सान जस्यपूर्ण और सुदर-सुघड स्वरूप मे बदल देते तथा उनका मीनार के शिखर पर होता – रोग निदान।

पावन-सी कपकपी अनुभव करते हुए, जैसे कि कोई देव मन्दिर मे जा रहा हो, वोलोद्या न अन्य विद्यार्थियो के साथ चीरफाड़ के विभाग की इमारत मे प्रवेश किया, जिसके दरवाजे के ऊपर लातीनी भाषा म लिखा था – *«Hic locus est ubi mors gaudet succurrere vitam»* ('यहा मृत्यु जीवितो की सहायता करती है')। वह रोगी, जिसके बारे मे पोलूनिन ने एक महीना पहले ही कह दिया कि वह बच नही सकेगा चल बसा था। किस कारण मृत्यु हुई थी उसकी? यह उन्हे अब सबसे बडे और सबस खरे पारखी गानिचेव से पता चलेगा।

लम्बे-तडगे पोलूनिन चीरफाड की मेज क करीब ही एक कुर्सी पर बैठ गये। चीरफाड करनेवाले व्यक्ति ने, जिसे विद्यार्थी चाचा साशा कहते थे, अपना काम शुरु किया। गानिचेव जो चीर-फाड के कमरे मे न तो खुद कोई मजाक करते थे, न दूसरो को ही ऐसा करने देते थे समस्वर म कुछ स्पष्ट कर रहे थे जो विद्यार्थियो की समझ म नही आया। यह बात डरावनी और अजीब सी होती हुई भी खुशी प्रदान करनेवाली थी कि पोलूनिन न एक महीना पहले जो कुछ कहा था, वह सोलह आने सही था। एक्स र और प्रयोगशाला की परीक्षाओ की सहायता स उन्होने एक महीना पहले ही अदृश्य को देख लिया था। रोगी मर गया था। विज्ञान इस रोग के इस अवस्था म पहुच जाने पर इसका इलाज करने म असमर्थ था। किन्तु विज्ञान ने उन क्षेत्रो मे प्रवेश करना शुरू कर दिया था, जो कुछ ही समय पहले तक उसके लिये अगम्य थे। विज्ञान ने इस रोगी की भी जान बचा

दी होती, अगर वह कुछ समय पहले, बस, थोडा पहले इसके दरबार मे आ गया होता था

शव-परीक्षा खत्म हो गई। पोलनिन, गानिचेव और सभी विद्यार्थी बाहर बगीचे मे आकर बैठ गये थे। पतझर के दिनो का ठडा सूरज खूब चमक रहा था, मेपल और बच के पीले पत्ते धीरे धीरे जमीन पर गिर रहे थे। गानिचेव ने सिगरेट सुलगा ली। पोलनिन अपने चौडे माथे पर बल डाले, सिर झुकाये और खीझे-खीझे बैठे थे।

"काश कि हम ढग से इलाज करना जानते!" व अचानक और लगभग एक पागल की तरह कह उठे।

गानिचेव ने स्नेहपूवक उनका कधा थपथपाया। पोलूनिन उठे और वहा स चले गये।

"क्या कोई खास बात हो गई है?" वोलोद्या न गानिचेव से पूछा।

"नही, कोई खास बात नही हुई," गानिचेव ने हल्की सी आह भरते हुए जवाब दिया। "मगर सोचने-समझनेवाले डाक्टरो को कभी-कभी ऐसे दौरे पडा करते है, जैसा कि आपने अभी अभी दखा।"

उहोने फिर आह भरी और कहा—

"बिल्लरोथ ने, जो सयोगवश कुछ बुरा डाक्टर नही था, लिखा था कि 'हमारी सफलता का माग लाशो के पहाडो के बीच से होकर जाता है।' कुछ ऐस तथाकथित डाक्टर भी हैं, जो बडी आसानी से इस बात को स्वीकार कर लेते है और जिनके लिये तीस वष की उम्र होने के पहले «exitus letalis» (रोगी मर गया) लिख देना बहुत साधारण बात होती है। किंतु पोलूनिन जैसे दूसरे डाक्टर भी हैं, जो हर मौत के लिये अपने को जिम्मेदार मानते हैं। अधिकतर पोलूनिन जसे डाक्टर ही चिकित्साशास्त्र को आगे बढाते हैं। समझे?"

"सो तो हम समझते हैं," उठी हुई नाक और लाल-लाल गालोवाली न्यूस्या योल्किना ने कहा। "मगर, साथी प्रोफेसर, आपको यह तो मानना ही होगा कि आदमी जिन्दगी भर हर चीज को दिल से नही लगा सकता, मजबूत से मजबूत दिलवाले लोग भी यह तनाव सहन नही कर सकते। शान्त-सयत रहना भी एक डाक्टर के लिय बहुत महत्वपूर्ण चीज है न?'

"यह बिल्कुल सही है," गानिचेव ने झटपट स्वीकार कर लिया और फिर से चीर फाड़ के कक्ष में चल गये।

मगर वे फौरन ही लौट आये, बैठे नही और बलून की मजबूत छड़ी का सहारा लेकर बोलने लगे—

"पट्टेन्कोफेर और एम्मेरिख हैजा के रोगाणुओ को निगल गये थे। इतना ही नही ऐसा करने के पहले उन्होंने सोडा पी लिया, जिससे उनके मेदा के हाइड्रोक्लोरिक एसिड को निष्क्रिय कर दिया गया था। हमारे अपने मेचनिकोव डाक्टर हेस्टरलिक और डाक्टर लतापी ने भी ऐसा ही किया था। लगभग साठ वर्ष पहले तीन नौजवान इतालवियो —बोजिओनी गोजी और पास्सीली्ली—ने आतशक (सिफिलिस) के प्रोफेसर पेलीज्जारी से यह अनुरोध किया था कि वह उन्हे, स्वस्थ और नौजवान लोगो को आतशक के टीके लगाये। पेलीज्जारी ने शुरू म तो साफ इन्कार कर दिया किंतु बाद मे नौजवानो ने उसे राजी कर ही लिया। साथी योल्किना, आपको यह तो मालूम ही है कि उन दिनो आतशक का दूसरे ही ढग से—पारे से।—इलाज किया जाता था। डाक्टर लिडेमान हर पाच दिन के बाद अपने को लगातार दो महीने तक आतशक के टीके लगाता रहा। पेरिस की चिकित्सा विज्ञान अकादमी द्वारा नियुक्त किये गये एक आयोग ने उसकी हालत के बारे मे रिपोर्ट दी थी साथी योल्किना। मुझे उसका निष्कर्ष अच्छी तरह स याद है कधो से लेकर कलाइयो तक डाक्टर लिडमान की दोनो बाह फोडो से भर गई थी, जिनमे से कुछ फोडे आपस मे घुल मिल गये थे और उनके गिर्द अत्यधिक पीडायुक्त और पीपवाले नासूर हो गये थे और खैर, इस बात की तो चर्चा ही क्या की जाये कि उसके सारे शरीर पर ढेरो छाले भी हो गये थे। मगर इसके बावजूद डा० लिडमान यह क्रम जारी रखना चाहता था, इलाज नही कराना चाहता था। साथी योल्किना डाक्टर के मानसिक सन्तुलन के बारे मे, जिसे आप अभी से सुरक्षित रखने को इतनी उत्सुक हैं बस इतना ही काफी है ,

गानिचेव का थलथल चेहरा गुस्से से लाल हो गया और वे चिल्ला उठे—

'अभी कुछ नही बिगडा है। जाओ, जाकर सिलाई सीखो!

शाटहैण्ड की कक्षा मे दाखिल हो जाम्रो! अपनी मा, बाप, पति के पास भाग जाम्रो, जहन्नुम मे चली जाम्रो! "

न्यूस्या ने बाद मे शिकायत की—

"क्या मजाल कि मुह से एक शब्द भी निकालने दे! फिर सिलाई का और शाटहैण्ड की कक्षा का सवाल क्यो उठाया गया? हमारे देश मे सभी पेशे सम्मानित माने जाते है। मेरी समझ मे नही आता कि शाटहैण्ड को शरीर विकृति विज्ञान से घटिया क्यो समझा जाये "

न्यूस्या के गुलाबी गाल आसुओ से भीगे हुए थे और उसकी आखो म गुस्से की चमक थी।

"सचमुच, तुम शाटहैण्ड क्यो नही सीख लेती?" वोलोद्या अनचाहे ही वह उठा। "अगर आज की बातचीत से तुम्हारे हाथ-पल्ले कुछ नही पडा, तो अपनी मनमानी करती जाम्रो। वहा जीवन अधिक दिलचस्प और चैन भरा होगा।"

"मगर दूसरी ओर तुम हर डाक्टर से यह उम्मीद भी तो नही कर सकते कि वह अपने को आतशक के टीके लगाये?" येव्गेनी ने टोकते हुए कहा। "और कुछ नही, तो यह बडी बेतुकी बात जरूर है।"

"तुम्ह, ऐसा करने को कहता ही कौन है!" वोलोद्या आपे से बाहर होता हुआ चिल्ला उठा। "बात यह नही है!"

"समय बेरोक-टोक उडता रहा "

केवल वार्या ही ऐसी थी, जो चिकित्साशास्त्र से कोई सम्बन्ध न रखते हुए भी सब कुछ समझ जाती थी। वोलोद्या के लिये जो कुछ महत्त्वपूर्ण होता, जो उसके जीवन पर छा जाता, जिसमे उसकी आखो की नीद उड जाती, उसे दुख या खुशी होती, वार्या उसे अपने अनोखे ढग से सुनती और समझती। वह गानिचेव या पोलूनिन को नही जानती थी, किन्तु उन्ह महान व्यक्ति समझती थी। वालोद्या के मुह से न्यूस्या सम्बन्धी घटना सुनकर उसने उदासीनता से उसका अभिवादन किया। चिकित्सा के बारे मे आम तौर पर और विशेषत सर्जरी के सम्बन्ध म वह प्राविधिक विद्यालय मे अपनी सहेलियो को वह बताती, जो उसे मालूम होता। वह केवल वोलोद्या के ही विचारा

को अभिव्यक्त न करती। नही, नही, य उसके अपने विचार होते जो वालोद्या की प्रेरणापूर्ण कुछ अटपटी और सुखद बात सुनकर उसके मन म आते।

एक दिन यह घटना घटी। रविवार का दिन था और वे पुरानी चीजों के बाज़ार म यह देखने गये कि वहा उन्हे कौन सी किताबें मिल सकती है। कभी-कभी वहा अच्छी किताबें मिल जाती थी। वालो पुरानी किताबो के ढेर को देख रहा था कि इसी बीच वार्या अागन्त स्टाल दखने लगी और अचानक खुशी से मुह बाये जहा की तहा रह गई। उसे तह हो जानेवाली कुर्सी पर एक महिला तेज़ धप मे बैठी दिखाई दी, जिसकी बगल म एक पुराना कालीन प्रदशनाथ लटका हुआ था। जरूर यह कोई भतपूर्व काउटेस या कुछ ऐसी ही होगी," वार्या ने सोचा। यह महिला एक लम्बे और पतले होल्डर म लगी हुई सिगरेट के कश लगाती हुई बहुत ही अदभुत चीज़ें बेच रही थी। इन चीजा म एक कोर्सेट शुतुरमुग के कुछ पख, एक विचित्र सी वस्तु, जिसे महिला बोआ" कहती थी, दो काफी ग्राइडर, झूठ मोतियो की माला इत्र की कुछ शीशिया, शतरज का सेट और सबसे अधिक अदभुत चीज़–एक खोपडी एक इन्सान की असली, साफ-सुथरी और पीली खोपडी शामिल थी।

"क्या कीमत है इसकी?" वार्या ने पूछा।

'कुमारी जी को खोपडी मे दिलचस्पी है?' "काउटस" ने पूछा और दस्ताना लगा हाथ पीली खोपडी की गुद्दी पर फेरा।

"वास्तव मे तो मुझ पूरे पजर मे दिलचस्पी है," वार्या न कहा। आपके पास पजर है क्या?

'कुमारी ने मुझे क्या समझ लिया है!" काउटेस' ने चिल्लाकर कहा। "पूरा पजर! कहा मिल सकता है पजर आपको?'

'स्कूली साज-सामान की दुकान म कभी कभी आते हैं, पर वे लिखित आदेश होने पर और सो भी केवल सस्थाओ को ही बिकते हैं मिलनसार वार्या ने स्पष्ट किया। 'मैं तो सस्था नही, केवल एक व्यक्ति हू।

'आह आजकल व्यक्तिया पर भारी गुज़र रही है, 'काउटस' न सहमति प्रकट की।

वार्या ने खोपडी खरीद ली। इसके निचले भाग मे धातु की एक छोटी सी प्लेट लगी थी, जिस पर खुदा हुआ था कि यह फला फला व्यक्ति की ओर से फला फला को उपहारस्वरूप दी गयी।

"शायद कुमारी जी की शुतुरमुग के पखो मे भी दिलचस्पी हो?" "काउटेस" ने पूछा।

"कुमारी जी को न तो शुतुरमुग के पखो, न नथ और न ही इसानी मुड मे दिलचस्पी है!" वोलोद्या ने अचानक यहा आकर रुखाई से कहा। "कुमारी उसका अश नही है, जिसे तोड फोड और खत्म कर दिया गया है। वह युवा कम्युनिस्ट लीग की सदस्या है। आओ चले वार्या!"

वार्या ने खोपडी को अखबार मे लपेट लिया था, और घर पहुचने से पहले वोलोद्या को इस बात का आभास भी नही हुआ कि वह उसे कैसे आश्चर्यचकित करनेवाली है। वह अपनी सभी जेबो मे किताबें और गुटके ठूसे हुए था। वह बहुत ही पतली-सी एक पुस्तिका अपने हाथ में लिये था, जिसे रास्ते भर उलट-पलटकर देखता रहा।

धूल मिट्टी, बाजार के शोर शराबे और ग्रामोफोन के चीखते चिल्लाते रकार्डों से परेशान होकर वे घर लौटे। उन्होने नल का थोडा पानी पिया, किताबो की आलमारी पर खोपडी के लिये जगह बनाई, दम लिया और काल मार्क्स की हास्यपूर्ण स्वीकारोक्तिया पढने बैठ गये।

"जरा ठहरो, मैं तुम्हारा मुह पोछ दू, वह बिल्कुल तर हुआ पडा है," वार्या ने कहा।

वोलोद्या की देखभाल करने म उसे बडा सुख मिलता था। जब उसका कोई बटन गायब होता या उसका रूमाल मैला होता, तो उसकी तो बाछें खिल जाती। "तुम मर्द लोग तो बिल्कुल नाकारा होते हो!" वह कहती। "कुछ भी तो खुद नही कर सकते।" पर वह अनिवार्य रूप से यह अवश्य जोड देती, "पापा के सिवा। व तो सब कुछ कर सकते हैं। जहाजी तो ऐसे ही होते है!"

"तुम्हारी कमीज का कॉलर भी मैला है," वह बोली।

"मुझे परेशान न करो," वोलोद्या ने रुखाई से कहा।

सामने रखी किताब पर नजरे गडाये हुए ही उसने पूछा—

"वार्या स्तेपानोवा, सुख का अर्थ तुम क्या समझती हो?"

९

"गहरा और शाश्वत आपसी प्रेम!" वार्या ने लजाते हुए, किन्तु झटपट और दिलेरी से जवाब दिया।

"बैठ जाओ, सन्तोषजनक उत्तर नहीं है तुम्हारा।"

वार्या ने यह जानने की कोशिश की कि किताब में क्या लिखा है, मगर वोलोद्या ने उसे परे धकेल दिया।

"देखो मुझे तो इसमें कोई खास हास्यपूर्ण बात नहीं लगती," वोलोद्या ने कहा। "सम्भवत कुछ पाखण्डियों को यह पसन्द नहीं आयी होगी और इसीलिये उन्होंने इसे हास्यपूर्ण कह दिया। इसे सुनो और अगर तुम्हारा दिमाग काम करे, तो इस पर सोच विचार करो"

वोलोद्या पढ़ने लगा और गुलाबी गालोंवाली, सीधी-सादी वार्या, जो अपने सिर पर बड़ा-सा फीता बांधे थी, थोड़ा-सा मुंह खोले हुए सुनने लगी। वह अभी बच्ची ही तो थी।

"लोगों का कौन-सा गुण आपको सबसे अधिक पसन्द है?" वोलोद्या ने सवाल पूछा और उत्तर दिया—"सादगी! मर्दों की कौन-सी खूबी आपको अच्छी लगती है? ताकत। औरतों की? कमज़ोरी।'

'मैं कमज़ोर नहीं हूं,' वार्या ने कहा। "मेरा मतलब यह है कि बहुत कमज़ोर नहीं हूं"

"कौन, तुम?" वोलोद्या बोला। 'यह तो खूब रही, वार्या! तुम, जो एक मामूली और मासूम मेढक को देखकर चीख उठती हो!'

"उसके माथे पर यह तो लिखा नहीं रहता कि वह मासूम है। इसके अलावा उसकी आंखें तो फिर भी बाहर को निकली निकली होती हैं।

"तो, तुम अपने को मज़बूत समझती हो! ज़रा सूरत तो देखो इस मज़बूत औरत की। मुझे तो सुनकर उबकाई आती है"

वोलोद्या अचानक 'ओह' कह उठा—

"ज़रा इस पर विचार करो! विचार करो। सवाल यह है—आपका मुख्य लक्षण क्या है? उत्तर है—उद्देश्य निष्ठा।'

"कमाल!" वार्या ने कहा।

"कमाल नहीं गज़ब आगे सुनो—सुख से आपका क्या आशय है? उत्तर है—संघर्ष करना। सुनती हो, वार्या सुख का मतलब है

सघर्ष करना! अगला प्रश्न है—तुम्हारी दृष्टि मे दुख क्या है? अधीनता ''

"मैं तो बहुत सी बातो मे तुम्हारे अधीन हू, पर इससे मुझे कोई दुख नही होता," वार्या ने कहा।

"यह दूसरी बात है," वोलोद्या ने कडाई से कहा। "तुम दिमागी तौर पर मेरे अधीन हो, समझी?"

"उल्लू!"

"चुप रह री, पिद्दी!"

बगलवाले कमरे से बूआ अग्लाया ने चिल्लाकर कहा—

"वोलोद्या, बस करो, तुम उसे फिर रुला दोगे।"

मगर उन्हे बूआ की आवाज सुनाई नही दी। वे दोनो एक दूसरे से सटे हुए किताब पढने मे मस्त थे। उनके कधे आपस मे छू रहे थे।

"'अवगुण जिसे आप सबसे अधिक घृणा करते हैं?—जी हुजूरी। आपके मनपसन्द कवि?—शेक्सपीयर, ईसकिलस, गेटे। आपका मनपसन्द रग?—लाल। आपकी मनपसन्द सूक्ति?—जो कुछ मानवीय है, मैं उसे पराया नही मानता। आपका मनपसन्द मूलमन्त्र?—हर चीज पर सन्देह करो '"

बूआ अग्लाया दरवाजे के निकट दिखाई दी। वह फव्वारा स्नान करके निकली थी और उसके भीगे हुए काले बाल चमक रहे थे

"तुम दोनो मे कुछ अच्छी, कुछ बहुत ही अच्छी चीज है," उसने कहा। "पर फिर भी तुम दोनो हो बुद्धू ही।"

वह वार्या के पास बैठ गई।

"तुम दोनो तो मार्क्स और एगेल्स को आसानी से समझ लेते हो, क्योकि तुम खासे पढे लिखे लोग हो। पर हे भगवान, कितनी कठिनाई होती थी मुझे उन्हे समझने मे!" उसने दुखी होते हुए कहा।

इस रविवार के बाद वोलोद्या और वार्या अक्सर इकट्ठे बैठकर सोच विचार करते। वार्या उसकी तुलना मे बहुत कम पढती, पर जब वोलोद्या कुछ कहता, तो शब्द उसके मुह से निकलने के पहले ही वह सब कुछ समझ जाती। "पवित्र परिवार " पढने के बाद वोलोद्या ने वार्या के सामने इस विषय पर भाषण दिया। इसके बाद वह "दर्शन

की दरिद्रता" पढने म जुट गया, जिसे समझने म वार्या को कठिनाई हुई। इसके बाद उसने 'लुई बोनापार्ट की अठारहवी ब्रूमेर" को पढने मे कई रात लगाइ।

"तुम्हे मालूम है कि जब उन्होने यह पुस्तक लिखी थी, तो उनके पास बाहर पहनकर जाने को कुछ भी नही था। उनके सारे कपडे गिरवी रखे हुए थे" बूआ अग्लाया ने कहा।

वोलोद्या ने भावशून्य दृष्टि स उसकी ओर देखा, मुह म कुछ रोटी भर ली और आगे पढना जारी रखा। सुबह के समय उसने शिलर के सग्रह के पृष्ठ उलटे-पलटे और यह देखकर उसे सुखद आश्चर्य हुआ कि उस भारी भरकम ग्रन्थ म उसे अधिकाधिक हीरे-मोती मिलते जा रहे हैं।

समय बेरोक-टोक उडता रहा।
वह शाश्वतता के लिये यत्नशील है।
तुम भी शाश्वत रहोगे तो उसे बाध्र लागे

हा समय बेडा गर्क हो इसका! वह सचमुच हा उडता जाता था और वोलोद्या के लिये अभी बहुत कुछ करना बाकी था। हर चीज़ मनो रजक, महत्त्वपूर्ण और आवश्यक थी। गैरदिलचस्प चीजे भी दिलचस्प थी क्योकि वे भी ध्यान देने की माग करती थी। पर कभी-कभी उवा नदी म तैरने को उसका मन ललक उठता। उसका जी होता कि स्तेपानोव के पुराने घर के सामने जाकर किसी उठाईगीरे की भाति जोर से सीटी बजाकर वार्या को बुलाये, गयी रात तक नदी-तट पर उसके साथ घूमता रहे उसे जम्हाइया लेते देखे और कला के बारे मे उसकी बकवास सुने। वह थियेटर के बारे मे अब कुछ गपशप और इधर-उधर की बाते भी जानती थी। मसलन, उसने बताया था कि नगर का प्रमुख अभिनेता गालिलियेव प्रेस्मार्क केवल छोटी छोटी भूमिकाए ही खेल सकता है। "अभिनेताओ को हमेशा बडे तनाव का सामना करना पडता है" वह दावा करती। वोलोद्या खिल खिलाकर हस देता और वह उसे घूसा मार देती।

"ऐ, देखो, तुम्हारा हाथ बहुत भारी है!"

कभी ऐसा भी समय था, जब वह घूसे का जवाब घूसे से देता था, पर अब किसी कारणवश यह असम्भव हो गया था। अब उसने कुश्ती करना भी बन्द कर दिया था। वार्या अब बहुत जल्दी नाराज होने लगती थी और वह अपने जल्दी से उमडनेवाले प्यारे प्यारे आंसुओं को बहाती हुई रोने लगती। वोलोद्या को वार्या के लिए बहुत अफसोस होता और अपने पर बड़ी शर्म आती। पर वह उससे माफी कभी न मांगता और केवल इतना ही बुदबुदा देता—

"अब हटाओ भी! आखिर बात ही क्या है? तुम तो कविता पाठ करने के बजाय रो-रोकर उसका सत्यानाश ही कर देती हो। तुम्हारा कविता-पाठ सुनकर तो मतली होने लगती है।"

"उल्लू, कहीं के, छन्द और लय के बारे में खाक भी तो नहीं जानते और चले हो पारखी बनने। हमारी अध्यापिका इस्फीर ग्रिगार्येव्ना का कहना है कि..."

"ठीक है, ठीक है, पर मेहरबानी कर रोना बन्द करो।"

वोलोद्या बहुत ही परेशान करता था वार्या को। वार्या उससे उम्र में छोटी थी, अपनी पूरी कोशिश भी करती थी, पर कभी कभी कुछ चीजें उसके बस की नहीं होती थीं।

"तुम्हारी उम्र में हर्ज़ेन और ओगार्योव ने..." वोलोद्या कहना शुरू करता।

"मगर मैं न तो हर्ज़ेन हूं और न ओगार्योव!" वार्या चीख उठती। "मैं वार्या स्तेपानोवा हूं और अपने को कोई विशेष व्यक्ति नहीं मानती हूं।"

"पिछले शनिवार को मैंने तुम्हें 'ड्यूहरिंग मत-खण्डन' किताब पढ़ने को दी थी। तुमने अभी तक..."

"ओह, वोलोद्या..."

"मैं दोहराता हूं, पिछले शनिवार..."

"मगर पिछले शनिवार को हमारी ड्रैस रिहर्सल था," वार्या हताश होती हुई चिल्लायी।

"और आज कौन-सा दिन है?"

"शनिवार।"

"तो तुम्हें पूरे हफ्ते में किताब खोलने तक की फुरसत नहीं मिली?"

वार्या के लिये खामोश रहने के सिवा कोई चारा न रहा।

वहा बैठ जाओ जो कुछ मैं कहता हू, वह पढो और मुझे अपना काम करने दो उसने हुक्म दिया। "खबरदार, जो अब थियेटरो फिल्मो और क्लबो का नाम भी लिया तो! हा, और तुम यह इत्र क्या लगाये हुए हो? जानती हो या नही कि इत्र अधिकतर वही लोग इस्तेमाल करते है जो गन्दे होते है?"

मैं तुम्हे काट खाऊगी वार्या ने एक बार कहा और बहुत जोर से वोलोद्या के कान पर दात काटा। इसके बाद उसने यह कहकर उसे तसल्ली दी—

'नतीजा इससे भी बुरा हो सकता था! तुम्हे तो मालूम ही है कि मेरे दात कितने पने है। मैं तुम्हारे गन्दे कान का बिल्कुल सफ़ाया ही कर डालती।

'बूआ अग्लाया, वोलोद्या ने पुकारकर कहा। "अपनी इस प्यारी वार्या को यहा से ले जाइये वह दात काटती है।'

फिर भी इकट्ठ होने म बडा मज़ा था। उन्हे अपनी लम्बी खामोशी बहुत अच्छी लगती जब वे दोनो अपने ही खयालो म खोये रहते और एक-दूसरे की ओर कोई ध्यान न देते। अचानक इस चेतना से उनम खुशी की लहर-सी दौड जाती कि वे दोनो इकट्ठे हैं, एक दूसरे के निकट हैं—वोलोद्या अपनी मेज़ पर और वार्या खिडकी के करीब। हमेशा ही उनके पास बातचीत करने को झगडने और फिर फौरन दोस्ती कर लेने को कोई न कोई मसाला होता।

कभी-कभार वार्या अपनी किताबें साथ ले आती—यानी ललित साहित्य। अगर वोलोद्या दयालु या कुछ रग म होता तो वह उसे कुछ पृष्ठ पढ़कर सुनाती जिन्हे वह बहुत ही सुन्दर मानती थी। एसे अवसरो पर उसका चेहरा सुर्ख हो जाता अपने लाल हुए कानो के पीछे, जिनम वह बालियां पहने रहती बालो को ठीक करती और मानो मिन्नत-समाजत के लहजे म प्रार्थना [illegible]

पढ़कर सुनाती।

'यह बहुत [illegible] कुछ अश

कहता। "किस [illegible] कोलोद्या जा[illegible]

हुआ तोलिय की [illegible] की? [illegible] सन हुए

[illegible] रही थी? [illegible] या और

"मगर यहा तो ऐसे नही लिखा है वार्या विरोध करती। 'यहा तो बिल्कुल ऐसे नही है "

"आगे पढो!"

वार्या आगे पढने लगती जल्दी-जल्दी और मानो अपना सफाई देती हुई।

"तुम अभिनय नही करो ' वोलोद्या टोकता। तरह तरह का मुह बनाने मे क्या तुक है? तुम हुस्सारो का वर्णन तो नहीं कर रही!

"मगर मैं "

"आगे पढो!"

यातनाए सहन करती हुई वार्या पढ़ती जाती। वोलोद्या पाइप से ठक-ठक करता, कागजो को सरसराता और बाद मे अनचाहे ही बहुत ध्यान से सुनने लगता। पहले से ही यह अनुमान लगाना कभी सम्भव नही होता था कि किस चीज से उसके हृदय के तार झनझना उठेंगे। किन्तु धीरे धीरे यह बात वार्या की समझ मे आ गई कि वोलोद्या को किस तरह की रचनाओ की आवश्यकता है। 'आवश्यकता ' यही बिल्कुल सही शब्द थे। इससे अधिक सही शब्दो की वह कल्पना नही कर सकती थी। वोलोद्या को कैसी किताब पसन्द है यह बात वार्या की समझ मे पहली बार तब आई जब उसने तब तालस्ताय की रचना "दिसम्बर मे सेवास्तोपाल ' पढकर सुनाया।

"'आप सेवास्तोपोल के रक्षको को समझने लगते है वोलोद्या का कनखियो से देखते हुए वार्या घबरायी घबरायी सी पढ़ रही थी। वोलोद्या ने अब कागजो को सरसराना बन्द कर दिया था और निश्चल तथा विचारो मे डूबा हुआ बैठा था। ''किसी कारणवश इस आदमी की उपस्थिति में आपकी आत्मा आपको धिक्कारने लगती है। आप अनुभव करते हैं कि अपनी सहानुभूति और प्रशसा का अभिव्यक्त करने के लिये बहुत कुछ कहना चाहते है किन्तु आपको इसके लिए शब्द नहा मिलते अथवा उनसे सन्तोष नही होता जो आपके दिमाग में आते हैं। आप इस व्यक्ति की मूक चेतनाहीन महानता और आत्मा की दृढ़ता तथा अपने ही गुणो के प्रति झेंप पर नत मस्तक हो जाते हैं।'"

"यह है असली चीज!" वोलोद्या ने अचानक कहा।

वार्या के लिये खामोश रहने के सिवा कोई चारा न रहा।
“वहा बैठ जाओ जो कुछ मैं कहता हूँ वह पढो और मुझे अपना काम करने दो उसने हुक्म दिया। “खबरदार, जो अब थियेटरो फिल्मो और क्लबो का नाम भी लिया तो! हा, और तुम यह इत्र क्यो लगाये हुए हो? जानती हो या नही कि इत्र अधिकतर वही लोग इस्तेमाल करते है जो गन्दे होते हैं?”

“मैं तुम्हे काट खाऊगी,' वार्या ने एक बार कहा और बहुत जोर से वोलोद्या के कान पर दात काटा। इसके बाद उसने यह कहकर उसे तसल्ली दी—

नतीजा इससे भी बुरा हो सकता था! तुम्ह तो मालूम ही है कि मेरे दात कितने पैने हैं। मैं तुम्हारे गन्दे कान का बिल्कुल सफाया ही कर डालती।”

“बूआ अग्लाया, वोलोद्या ने पुकारकर कहा। “अपनी इस प्यारी वार्या को यहा से ले जाइये वह दात काटती है।”

फिर भी इकट्ठे होने मे बडा मजा था। उन्हे अपनी लम्बी खामोशी बहुत अच्छी लगती जब वे दोनो अपने ही खयालो म खोये रहते और एक दूसरे की ओर कोई ध्यान न देते। अचानक इस चेतना से उनमे खुशी की लहर सी दौड जाती कि वे दोनो इकट्ठे हैं, एक दूसरे के निकट है—वोलोद्या अपनी मेज़ पर और वार्या खिडकी के करीब। हमेशा ही उनके पास बातचीत करने को झगडने और फिर फौरन दोस्ती कर लेने को कोई न कोई मसाला होता।

कभी-कभार वार्या “अपनी' किताब साथ ले आती—यानी ललित साहित्य। अगर वोलोद्या दयालु या कुछ रग म होता, तो वह उसे कुछ पृष्ठ पढकर सुनाती जिन्हे वह बहुत ही सुदर मानती थी। ऐसे अवसरो पर उसका चेहरा सुर्ख हो जाता अपने लाल हुए कानो के पीछे जिनम वह बालिया पहने रहती, बालो को ठीक करती और मानो मिन्नत-समाजत के लहजे मे प्राकृतिक सौदय-सम्बन्धी कुछ अश पढकर सुनाती।

'यह बहुत लम्बा है! वोलोद्या जान बूझकर अगडाई लेते हुए कहता। किसे जरूरत है इस सब की? आकाश बनफशई था और हवा तौलिये की भाति थपेडे मार रही थी?”

"मगर यहा तो ऐसे नही लिखा है," वार्या विरोध करती। "यहा तो बिल्कुल ऐसे नही है "

"आगे पढो!"

वार्या आगे पढने लगती, जल्दी जल्दी और मानो अपनी सफाई देती हुई।

"तुम अभिनय नही करो," वोलोद्या टोकता। "तरह-तरह का मुह बनाने मे क्या तुक है? तुम हुस्सारो का कर्नल तो बनने से रही!"

"मगर मैं "

"आगे पढो!"

यातनाए सहन करती हुई वार्या पढती जाती। वोलोद्या पैंसिल से ठक-ठक करता, कागजो को सरसराता और बाद मे अनचाहे ही बहुत ध्यान से सुनने लगता। पहले से ही यह अनुमान लगाना कभी सम्भव नही होता था कि किस चीज से उसके हृदय के तार झनझना उठेंगे। किन्तु धीरे धीरे यह बात वार्या की समझ मे आ गई कि वोलोद्या को किस तरह की रचनाओ की आवश्यकता है। "आवश्यकता है" यहो बिल्कुल सही शब्द थे। इससे अधिक सही शब्दो की वह कल्पना नही कर सकती थी। वोलोद्या को कैसी किताबें पसन्द है, यह बात वार्या की समझ मे पहली बार तब आई, जब उसने लेव तोलस्तोय की रचना "दिसम्बर म सेवास्तोपोल" पढकर सुनायी।

"'आप सेवास्तोपोल के रक्षको को समझने लगते हैं,'" वोलोद्या को कनखियो से देखते हुए वार्या घबरायी-घबरायी-सी पढ रही थी। वोलोद्या ने अब कागजो को सरसराना बन्द कर दिया था और निश्चल तथा विचारो मे डूबा हुआ बैठा था। "'किसी कारणवश इस आदमी की उपस्थिति मे आपकी आत्मा आपको धिक्कारने लगती है। आप अनुभव करते हैं कि अपनी सहानुभूति और प्रशसा को अभिव्यक्त करने के लिये बहुत कुछ कहना चाहते हैं, किन्तु आपको इसके लिये शब्द नही मिलते अथवा उनमे सन्तोष नही होता, जो आपके दिमाग म आते हैं। आप इस व्यक्ति की मूक, चेतनाहीन महानता और आत्मा की दृढता तथा अपने ही गुणो के प्रति झेंप पर नत-मस्तक हो जाते हैं।'"

"यह है असली चीज!" वोलोद्या ने अचानक कहा।

"क्या है असली चीज़?" वार्या समझ न पाई।
अपने ही गुणा के प्रति झेंप। आगे पढो।"
वार्या पढती गई। वोलोद्या अपनी तग सी चारपाई पर सिर के नीचे हाथो को टिकाये हुए लेटा था। उसक चेहरे पर मानो अस्पष्ट-सी परछाइया चलक रही थी कभी तो उसकी त्योरी चढ जाती और कभी वह आन की आन म खुशी से मुस्करा देता। वह सुन रहा था और अपने ही विचारा मे खोया हुआ था। वोलोद्या हमेशा ही कुछ न कुछ सोचता रहता था कुछ ऐसी गुत्थिया सुलझाता रहता था, जिह केवल वही जानता था और जो हमशा जटिल और यातनाप्रद होनी थी।

"'किसी पदक किसी उपाधि के लिए या डर के कारण लोग ऐसी भयानक परिस्थितिया को स्वीकार नही कर सकते," वार्या पढत जा रही थी। " कोई दूसरा ऊचा और प्रेरक कारण होना चाहिये यह कारण है वह भावना जो बहुत कम प्रकट होती है रूसियो म दबी-सहमी रहती है पर हर किसी की आत्मा की गहराई मे छिपी होती है। यह है मातृभूमि के प्रति प्यार की भावना।'"

'खूब बहुत खूब मगर हम?" वोलोद्या ने अचानक कोहनिया के बल उचकते हुए पूछा।

"हम?" वार्या भौचक्की-सी रह गई।

"हा हम युवा कम्युनिस्ट लीग के दो सदस्य—कोई स्तेपानोवा और कोई उस्तिमको। हम कसा जीवन बिताते हैं? किसलिए जीते हैं? हमने पृथ्वी पर जम ही किसलिए लिया है?"

वार्या डरी-सहमी सी आखे झपकाने लगी। वह हमेशा इसी तरह अप्रत्याशित ही झपट पडता था। आखिर उसे क्या चाहिये? आखिर क्या चाहता है यह सतापक? तभी वोलोद्या शात हो गया और कडाई से बोला—

'खैर, आखें मत झपकाओ। सभी किताबें किसी लक्ष्य को सामने रखकर लिखी जानी चाहिये। समझी? यह सब कि सूर्यास्त के समय आकाश नीलगू था और हवा मानो जकडे हुए तौलिय के समान"

'ओह, अपन मन से बाते नही बनाओ, वोलोद्या।"

'या फिर वह—'पिछले वप की पिघलती हुई वफ म से नमी की हल्की गध आ रही थी'"

"तुम बक रहे हो!"

"मैं बक नही रहा हू। किताबें ऐसी होनी चाहिए कि आदमी को शानदार लोगो से ईर्ष्या होने लगे, खुद भी वैसा ही बनने की इच्छा पैदा हो, कि उन्हे पढकर हम आत्म आलोचना करने लगे। समझी, लाल बालोवाली?"

वार्या के प्रति विशेष स्नेह उमडने पर ही वह उसे "लाल बालावाली" कहता था, यद्यपि उसके बाल लाल नही, हल्के बादामी थे।

"और कविता?" वार्या ने पूछा।

"कविता–मयाकोव्स्की के अतिरिक्त सब बकवास है।"

"वाह? पुश्किन? ब्लोक? लेर्मोन्तोव के बारे मे क्या कहना है तुम्हे?"

वोलोद्या ने त्योरी चढा ली। तब वार्या ने बहुत धीरे-से ब्लोक की एक पक्ति का पाठ किया–

"'है शाश्वत सघर्ष! शान्ति के हम केवल सपने देखें '"

"यह क्या कहा है तुमने?" वोलोद्या न हैरान होते हुए पूछा।

वार्या ने सारी कविता सुनाई। वोलोद्या आखें बन्द किये हुए सुनता रहा और फिर उसने यह पक्ति दोहराई–

"'है शाश्वत सघर्ष! शान्ति के हम केवल सपने देखें '"

"कमाल की पक्ति है न?" वार्या ने पूछा।

"मैं इसके बारे मे नही," वोलोद्या ने अपने विचारो म खाये खोये ही कहा, "किसी दूसरी चीज़ के बारे मे सोच रहा हू। काश कि हम अपना जीवन ऐसे ही बिता सकते कि वह 'है शाश्वत सघर्ष! शाति के हम केवल सपने देखें' बन जाता "

"तुम्हारा दिमाग तो ठीक है?" वार्या ने सावधानी से पूछा।

"मेरा दिमाग बिल्कुल ठीक है। अब तुम अकेली ही कविता पाठ करो और मैं अपना काम करूगा। रसायनशास्त्र पढूगा। कभी नाम सुना है इस विज्ञान का?"

वह अपनी मेज़ पर जा बैठा, उसने मरम्मत किये हुए हरे शेडवाला पुराना लैम्प जलाया, किताब पर सिर झुकाया और उसे वार्या का तो होश ही न रहा। पीछे बैठी वार्या उसकी पतली गर्दन और कमज़ोर

कथा को देखती हुई बड़े उत्साह और उत्कर्ष से सोच रही थी—"तो यह बैठा है भावी महान व्यक्ति। मैं उसकी सबसे पक्की और घनिष्ठ मित्र हू। शायद मित्र से कही बढ़चढ़कर होऊ, यद्यपि हमने अभी तक कभी एक-दूसरे को चूमा भी नहीं।"

यह सोचे-समझे बिना ही कि वह क्या कर रही है, पीछे से वोलोद्या के निकट आ गई, उसने अपना हाथ वोलोद्या की ओर बढाया और मानो आदेश देते हुए कहा—

"चूमो इसे!"

"यह क्या किस्सा है?" वोलोद्या हैरान रह गया।

"चूमो मेरा हाथ!" वार्या ने दोहराया। "अभी, इसी घड़ी!"

"यह भी खूब रही!"

"खूब की कोई बात नहीं!" वार्या ने कहा। "हम नारियो ने तुम पुरुषो को जन्म दिया है और इस कारण तुम्हे सदा हमारा आभारी रहना चाहिये"

वोलोद्या ने वार्या को नजर उठाकर देखा, दात निपोरे और अटपटे ढग से वार्या की गर्म और चौड़ी हथेली को चूम लिया।

"अब ठीक है!" वार्या ने सन्तोष के साथ कहा।

छठा अध्याय

तलाक

उस वष की पतझर के अन्त मे रोदिग्रोन स्तेपानोव, जैसा कि उन्होंने कहा, "उधर से गुज़रते हुए" कुछ समय के लिए घर आय। उनकी पत्नी के पास मेहमान आये हुए थे। उनमे अधेड उम्र की सिगरेट पीनेवाली दो नारिया थी। दोनो ही मोटी थी और अपने बुरे मूड, अपन दिल की गुप्त धडकन की ही चर्चा करना पसद करती और यह बतानी कि इनका कारण "स्नायु-दुबलता" ही है। वहा डीन की बेटी इराईदा भी थी, लम्बी, छरहरे बदन की और हरी-हरी आखोवाली, अनेक ज़ंजीरे और लटकनें पहने तथा तमगे लगाये हुए मानो कुत्ता-प्रदशनी के सभी इनाम उसी ने जीत लिये हो। नगर की सबसे अच्छी दज़िन श्रीमती लौस भी वहा थी, जिसकी ओर सभी बहुत अधिक ध्यान दे रहे थे। इनके अलावा वहा दो मद थे—दनिइल पोल्यास्की या "दोदिक", जो बडे ठाठ से पाइप के कश लगा रहा था, तथा उसका दोस्त माकावेयेन्को। माकावेयेन्का बडी तोद और भूरे बालोवाला व्यक्ति था, जिसकी हसती हुई धृष्ट आखें मानो बाहर निकली पड रही थी। उन्हे प्रोफेसर झोवत्याक के आने की भी आशा थी, पर उसने टेलीफोन कर दिया था कि उसके लिये आना मुमकिन नही और उसे इस बात का "बेहद अफ़सोस" है। चोर बाजार मे खरीदे गय वेर्तीन्स्की और लेश्चेन्को के रेकाड सुनने के बाद उन्होने खाना खाया और फिर लिकेर मिली कॉफी की चुस्किया लेन लगे। उन्हाने स्पेन की घटनाओ की चर्चा की। दोदिक ने स्पेन के प्रधान मन्त्री हिराल का ऐसे ज़िक्र किया, मानो वह उसका अच्छा दोस्त हो। उसने होसे

दिग्रास के सम्बन्ध मे भी अपनी राय प्रकट की। रोदिग्रोन मेफोदियेविच वडे सब्र से दानो महिलाओ, माकावेयेको और डीन की बेटी इराईना की बात सुनते रहे। इन सभी ने स्पन की स्थिति के बारे मे अपने मत प्रकट किये और मिखाईल कोलत्सोव के सवादो को दिलचस्प और प्रेरणाप्रद बताया। किंतु दौदिक का मत इनसे भिन्न था।

"बात यह है कि स्पेन के बारे मे अपनी आखो से देखनेवाला कोई भी व्यक्ति कोलत्सोव की तुलना मे अधिक रगारग और सुन्दर ढग से लिख सकता है। मुख्य बात तो है—जनता के बीच होना "

"और साडो की लडाई, मेरे ख्याल मे वह भी स्पेन मे ही होता है? अपने सदा की भाति थके से स्वर मे वालेन्तीना आन्द्रेयेव्ना ने पूछा।

"बिल्कुल वहा ही होती है," माकावेयेन्को ने पुष्टि की। "यह उसी भाति उनका राष्ट्रीय खेल है, जसे कभी हमारे यहा हिडोले होते थे या मुक्केबाजी। मैड्रीड मे इस खेल को बहुत आदर की दृष्टि से देखा जाता है "

रादिग्रोन मेफोदियेविच ने कॉफी खत्म किये बिना ही अपना प्याला मेज पर रख दिया और बाहर चले गये। वार्या घर पर नही थी। येव्गेनी रसोईघर म बैठा शोरबा खा रहा था।

"तो क्या हालचाल है?" रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने पूछा।

"अखबार तयार करते रह हैं,' येव्गेनी न उदास भाव से कहा। "बुरी तरह थक गय हैं। टाइप हमारे पास हैं नही, सामग्री गरदिलचस्प और सनही है। सभी के लिए खुद ही लिखना पडता है, रात को जी हो जाता है। बात यह है, पापा, कि मैं कालेज के बहुत बडी प्रति सख्यावाले समाचारपत्र का सम्पादक हू।

"तुम सब के लिय मत लिखा करो!" रादिग्रोन मेफोदियेविच न सलाह दी। "दूसरो के लिय लिखना तो धोखेबाजी है "

"आप आदर्शवादी हैं, प्यारे पापा!' येव्गेनी ने गहरी सास ली।

रादिग्रोन मेफोदियेविच कमरा म टहलत रहे, उन्होने सिगरेट के कश लगाये और इसके बाद सयोगवश ही उन्हें ड्योढी म वालेन्तीना और दौदिक की बातचीत सुनाई दी और उनके माथे पर बल पड गये।

"इस सवाल को एकबारगी और हमेशा के लिए हल कर देना चाहिये। अब इस आदमी के इस घर म आने का मैं और अधिक सहन करने का इरादा नही रखती। वह मेरी आत्मा के लिए और वसे भी पूरी तरह अजनबी है। हे भगवान, तुम यह समझते क्या नही कि इस वातावरण म मेरा दम घुटता है "

"ठीक है, ठीक है, मैं राजी हू," दोदिक ने झटपट जवाब दिया। "पर आज ही तो ऐसा नही किया जा सकता

"मैं आज ही कह दूगी।" अलेवतीना न जोर देकर कहा।

प्रवेश द्वार फटाक से बन्द हुआ। वह नारी, जिसे रोदिओन स्ते पानोव अपनी पत्नी मानते थे, भोजन-कक्ष मे आई। कसकर मुट्ठिया भीचे, निश्चल और ज़र्द चेहरे के साथ रोदिओन मेफोदियेविच ने उसे आदेश देते हुए कहा—

"आज ही कह दो।"

"तो तुम छिप छिपकर बाते सुनते रहे हो।" अलेवतीना ने चीखते हुए कहा। "बहुत खूब। बस, अब इसी की कसर बाकी रह गई थी।"

"तुम खुद ही सब कुछ कह दो," उन्होने दोहराया। "मैं एक अर्से से यह सब कुछ जानता हू। कोई मूख ही यह समझे बिना रह सकता है। पर खैर तुम मुझे अपना आखिरी फैसला बता दो। बोलो।"

"क्या बोलू?"

"तुम तलाक चाहती हा?"

"मैं इन्सान के लायक जिन्दगी चाहती हू।" वह चिल्ला उठी। "तुम्हारा फज़ है मुझे ऐसी जिन्दगी देने का, किन्तु मेरे पास क्या है? किसलिये मैंने इतने वर्षो तक यातनाए सही? दूसरो के पास सभी कुछ है—निजी मोटरे, बगले और वे साल म तीन बार काले सागर पर आराम करने जाते है "

वही पुराना किस्सा शुरू हो गया था—वही आसू बहने लगे थे। अभी वह दिल को सम्भालने की दवाई मागेगी, फिर येव्गेनी उसकी नब्ज गिनेगा। नही, अब वे और अधिक बर्दाश्त नही कर सकते।

"आओ लडाई-झगडे के बिना अलग हो जाय," रोदिओन मेफो-दियेविच ने शान्त, पर कुछ-कुछ खरखरी आवाज मे कहा। "तुम दोदिक के साथ चली जाओ "

"यह भी खूब रही," वार्वेल्लीना आन्द्रेयेव्ना बोली। "मैं एक कमरे म रहूगी और तुम यहा मौज मनाओगे। कामरेड म्रेफानोव, यह तिकडम नही चलेगी "

"ता मामला कमर का है?"

"कमर का ही नही, बाकी सभी चीजा का भी। मैं भिखारिन बनने का इरादा नही रखती। जो कुछ हमने मिल-जुलकर जुटाया है, सब आधा आधा

रोन्प्रिओन मेफोदियेविच ने सिर हिला दिया, वे कुछ भी कह न पाये। दस मिनट बाद उन्हाने अलेक्सीना को अपनी सभी सहेलिया को बारी-बारी से टेलीफोन पर कामकाजी ढग स जल्दी-जल्दी कुछ कहते सुना। वह उनम अपनी तकलीफो की चर्चा करत हुए कुछ सिसकता सुबकती और एक से तो उसन भावनापूण ढग म यह भी कहा—

"आह, मरी प्यारी, दहकान का इसान नही बनाया जा सकता!"

इस किस्से को फौरन खत्म करना जरूरी था। जैसे ही वार्या घर लाटी, वैसे ही रोदिओन मफोदियेविच न परिवार के सभी लोगो को खान की मेज पर जमा किया, ठडे पानी का एक बडा गिलास पिया और रुक रुककर कहा—

हमने अलग होन का निणय कर लिया है। तुम दोना काफी बडे हो, सब कुछ समझ सकते हो। पर एक बात का निणय तुम्हे खुद ही करना हागा—तुममे से कौन मेरे साथ रहगा और कौन मा के साथ जायगा '

वार्या ने कसकर अपने पिता की आस्तीन पकड ली और मुह से कुछ नही कहा। उसके गालो पर लाली दौड गई थी। यव्गेनी, जो धारीदार नाइट सूट पहने था और बाला पर नट लगाये था, मेज और अलमारी के बीच की जगह पर इधर उधर आ-जा रहा था।

"येव्गेनी!" उसकी मा मिन्नत करत हुए चिल्लाई। "यव्गेनी, तुम कसे झिझक सकते हो?'

येव्गेनी ने राखदानी मे सिगरेट बुझाई, वह जरा हसा और उसने आखें सिकोडते हुए कहा—

"बहुत अजीब इसान हो मा, तुम भी। तुम यह सोच ही कैसे सकती हो कि मं रोदिओन मेफोदियेविच का प्यार उस सुदर,

बने-ठने और दिलकश, मगर, क्षमा करना, उस कमीने को दे सकता हू?"

स्तेपानोव एकटक येव्गेनी की ओर देख रहे थे। क्या आशय है उसका? क्या बात है इस समय इसके मन मे?

"तफसील मे न जाकर केवल इतना कहता हू कि मै उसी आदमी का बेटा रहना चाहता हू, जिनका हर चीज़ के लिए आभारी हू," येव्गेनी ने साफ-साफ कह दिया। "प्यारी मा, इससे तुम्हारे लिए भी रास्ता सीधा हो जायेगा। तुम आज़ाद हो जाओगी, अपने को जवान महसूस करोगी और नये सिर से जिन्दगी शुरू कर पाओगी। ठीक है न?"

उसने अपनी मा को गले लगाया, चूमा और बाहर चला गया।

सुबह को दोदिक अपनी कार मे आया। वह बहुत झल्लाया हुआ सा दिखाई दिया, रुखाई से रोदिओन मेफोदियेविच से सलाम की और वालन्तीना आन्द्रेयेव्ना के कमरे मे चला गया। फिर उसने रोदिओन मेफोदियेविच के कमरे पर दस्तक दी।

"हमे मर्दो की तरह बातचीत करनी है," उसने बैठते और अगूठे से पाइप मे तम्बाक दबाते हुए कहा। "हमे घर, फर्नीचर और दूसरी चीज़ो का प्रबन्ध करना है। वालेन्तीना आन्द्रेयेव्ना इसके बारे मे चिंतित है और आप जा रहे हैं "

"हा, मैं तो जा रहा हू," स्तेपानोव ने उसकी बात काटते हुए कहा। "येव्गेनी के साथ सभी कुछ तय कर लीजिये। वह समझदार लडका है और बस।"

उन्होने खिडकी की ओर मुह कर लिया।

स्तेपानोव को अलेवतीना और दोदिक के जाने की आवाज सुनाई दी। फ्लैट का दरवाज़ा फटाक से बन्द हुआ और कार चलती बनी। वाया दबे पाव भीतर आई।

"पापा, चाय पियेंगे?" उसन पूछा।

"नही," रोदिओन मेफोदियेविच ने उदासी से जवाब दिया।

"काफी बना लाऊ?"

"नही, कॉफी भी नही चाहिये।"

"तो शायद कुछ वोदका पियेंगे?"

"तुम मुझे तसल्ली देना चाहती हो क्या?" उन्होंने मुस्कराकर कहा। 'इसकी ज़रूरत नहीं है, बेटी। काफ़ी कुछ सहन की हिम्मत है मुझमें।'

'शायद आप यह चाहेंगे कि मैं और येव्गेनी आश्ताद्त में आपके पास आकर रहें?'

रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने कुछ देर तक सोचने के बाद जवाब दिया।

"देखो बिटिया, मैं जो कुछ कह रहा हूं, तुम इसकी किसी से चर्चा नहीं करना–फ़िलहाल तुम्हारे वहां आने में कोई तुक नहीं है, क्योंकि मैं अपने बारे में भी यह नहीं जानता कि कल कहां हूंगा।'

"क्या मतलब है आपका?"

'यही कि मुझे लम्बे सफ़र पर भेजा जा सकता है। वोलोद्या के पिता को गये हुए दो हफ़्ते हो चुके हैं।"

वार्या अपने पिता के कंधे से चिपटी रही।

"मैं समझती हूं, सब समझती हूं, पापा," वह फुसफुसायी। "पर वालोद्या को तो कुछ भी मालूम नहीं।"

"कुछ देर बाद हम उसके पास जायेंगे और तब उसे सब कुछ मालूम हो जायेगा।"

वार्या और उसके पिता जब घर में नहीं थे, उसी समय येव्गेनी दोदिक के साथ घर के भाड़े-बरतनों, किताबों, फ़र्नीचर और रिहायशी जगह को लेकर कभी खीझते और कभी हंसते हुए सौदेबाज़ी कर रहा था।

'सुनो, तुम क्या मुझे उल्लू बनाना चाहते हो?" दोदिक ने झल्लाकर कहा। मैं बच्चा तो हूं नहीं।'

"सो तो मैं भी नहीं हूं,' येव्गेनी ने जवाब दिया। "मैं सारी सम्पत्ति के चार हिस्से कर रहा हूं–तीन हिस्से हमारे हैं, एक आपका। किसी भी वकील से पूछ लीजिये। वह आपको यही हल बतायेगा। बस भी यह है बड़ी अजीब-सी बात आप प्यार करते हैं, आपको प्यार मिलता है और फिर भी आप छोटी-छोटी चीज़ों के लिए सौदेबाज़ी कर रहे हैं। मेरी राय में तो यह बड़ी भद्दी बात है। किसी अखबार के लिए दिलचस्प मज़मून हो सकता है यह तो "

"और यह बडा पियानो?" दोदिक ने क्षुब्ध होते हुए कहा।

"यह पियानो है, वडा पियानो नही। आप इसका क्या करेंगे? मा तो पियाना बजाती नही।"

"बडे ही सगदिल हो तुम," दोदिक भडक उठा।

स्तेपानोव रात की गाडी से चले गये।

हम लाल सिपाही

इस दिन के बाद वार्या और वोलोद्या की दोस्ती और भी अधिक गहरी हो गई। अब उनका एक साझा राज था, ऐसा राज, जो वे हर किसी से छिपाते थे। वे अपने पिताओ—हवाबाज अफानासी उस्तिमेको और नौसेना के अफसर रोदिओन स्तेपानोव—पर गव और उनकी निरन्तर चिता करते। वे किसी को भी अपना राजदा न बनाते, बूआ अग्लाया को भी नही। वोलोद्या और रोदिओन मेफोदियेविच के बीच यह तय हो गया था अग्लाया को परेशान करन मे कोई तुक नही है। उसने तो वैसे भी जिन्दगी मे बहुत दुख दद जाने थे, अब भाई की जान की चिन्ता के बारे मे उसे रात दिन और अधिक परेशान क्या रखा जाय? उन्होने उससे कह दिया कि उन्हे एक खास काम से भेजा गया है, पर कहा, यह मालूम नही।

"स्पेन?" उसन कडाई से पूछा था।

"हमे क्या मालूम," रोदिओन मेफोदियविच न मुख हाते हुए जवाब दिया था, क्योकि झूठ बोलन की कला म व बहुत कच्चे थे।

अग्लाया न तो केवल सिर हिला दिया था। ऐसा माना जाता था कि वह कुछ भी नही जानती। इसलिये स्पन का नक्शा भी जान बूझकर वोलोद्या के कमरे मे नही, वार्या के कमरे मे लटका दिया गया। वोलोद्या का बताये बिना अग्लाया न भी अपने लिए एक नक्शा खरीद लिया। रात को वह कमरे का ताला बन्द कर लेती, ताकि वालोद्या भीतर न आ जाये और फिर इस नक्शे को गौर स देखती रहती। वह जानती थी कि उसके भाई अफानासी स्पन म हैं। उनका वहा जाना जरूरी था, ठीक वैसे ही जस कि उसका दिवगत पति भी यकीनी तौर पर वहा गया होता। वह बोल्शेविका की उम

10

। स दृढ आवाजवान उन नौजवानो से भली भाति परिचित थी,
जिन्होने सभी तरह के दुख-द्वन्द झेल थे और कभी हिम्मत नही हारी
थी। गहयुद्ध के वर्षो मे वे लगभग अपढ थे और अब अकादमिया के
स्नातक। सभी कुछ तो कर सकते थे ये इस्पाती लोग। तन को काटते
हुए जाडे-पाले मे उन्होने पेत्र नगर के लिये लडाई लडी और तन
झुलसती गर्मी मे वे तुर्किस्तान मे बासमाची दलो के विरुद्ध जूझे। भूख
से निढाल होते हुए भी उन्होने अपने जीवन मे पहली बार पुश्किन की
रचना यव्गेनी ओनेगिन पर आधारित ऑपेरा सुना और दुश्मन
के अक्ख मे जोरदार हमले करने के बाद उन्होने ढग से सास भी नही
ली थी कि स्कूलो के डेस्को पर जा बैठ और अग्रेजी के दो कारका-
कर्त्ता और सबध-का ध्यान से पढने लग।

रात की निस्तब्धता मे बुआ अग्लाया घटा तक नक्शे को देखती
रहती और उसके कानो मे वह गीत गूजता रहता जिसे अफानासी
और उसका पति ग्रीशा बडे चाव से गाया करते थे-

भपतिया बकावालो से लोहा हम डटकर लेगे
सभी शापको सब कुलको को नष्ट एक दिन कर दे
सभी गरीबो की रक्षा को लाल सिपाही है बढते
खेतो-खलिहानो आज़ादी की खातिर हम तो लडते

बाहर नवम्बर महीने की तेज हवा सीटिया बजा रही थी। वोलो
सिर के नीचे हाथ बाध चित लेटा हुआ अधेरे को घूर रहा था अ
ाडो से जूझनेवाले सेविल्ल नगर के उन पटटो को बुरी तरह को
हा था जिन्होने विद्रोही जनरल कैयपो दे ल्याना के सामने घुटने टे
य थे। तभी उधानीदी मे उस मिनोरका द्वीप और जगी जहाज
ल्मीराटे मिराडा पर वालेसीआ का अभियान-दल दिखाई दिया।
ो जहाज ने अपने इजन बन्द कर दिय थे और रोदिओन स्तपानोव
ी दूरबीन से स्थिति का जायज़ा ले रहे थे। तभी वालोद्या न
पिता के निर्देशन मे जल विमानो को स्पेन के उजले नीले आकाश
डान भरते देखा। सभी सबसे अच्छे हवाबाज़ व सभी जो सबसे
और सच्चे थे इतालवी जर्मन फ्रासीसी, बुल्गारियाई, सभी
अगुआ उसके पिता के पीछे उडान भर रहे थे

वोलाद्या के दिमाग मे लातीनी शब्द स्पेनी नगरो के नामो से मिलकर गड्ड मड्ड हो गये। सारागोस्सा अचानक पट की पशी 'मुस्कुल्युस रेक्टी अवदामिनिस' और बारगास 'क्वादरीसेप्स फेमोरिस' से गडबडा गया। उसने बहुत समय से शव परीक्षा नही की थी! उसे अवश्य ही शव परीक्षा कक्ष मे गानिचेव के पास जाना आरम्भ करना चाहिये। और इवीजा मे उतारी गई फौजो का क्या हुआ? अब वहा क्या हो रहा है? समाचारपत्रो न इसके बारे म क्या नही लिखा?

वार्या अब स्पेनी टोपी पहनती। वह अधिक दुबली पतली और बडी उम्र की दिखाई देन लगी थी। वार्या के नाम पर "वहा" से पत्र आते थे। अगर सही तौर पर कहा जाय, तो "वहा" से पत्र नाम की काई चीज नही आती थी। कोई अजनवी साथी नियमित रूप से पिता की ओर से उन्ह शुभकामनाए और यह सूचना देता था कि सब कुछ ठीक-ठाक है। वोलोद्या और वार्या इसी को पर्याप्त मानते। किसी और चीज की आशा करना वेवकूफी होता। वह तो फासिस्टो का केवल उकसावा देना होता!

कभी महत्त्वपूर्ण प्रतीत होनेवाली जीवन की सभी बाते अब बेमानी-सी लगने लगी। यह ख्याल आने पर वार्या काप उठती कि जब उसके पिता इन्तज़ार करते होते थे, तो वह हमेशा घर पर क्यो नही होती थी। उसके वही पिता, जो अब सारी दुनिया की आज़ादी के लिये लड रहे थे उस दूरस्थ, अजीब और अद्भुत स्पेन मे। सम्भवत अब वे अपने प्यारे वोल्गा तटी उच्चारण के साथ स्पेनी भाषा बोलते, सम्भवत वे हमेशा अच्छी तेज चाय की तलाश मे रहते होगे। शायद स्पेन म चाय नही पी जाती? कोई भी तो वार्या के इस सवाल का जवाब देनेवाला नही मिलता था कि स्पेनी कभी चाय भी पीते हैं या केवल कॉफी ही?

जब कभी अखवारो म कोई बुरी खबर छपती तो वोलोद्या के माथे पर बल पड जाते और अच्छी खबर होने पर वह खिल उठता। उसे लगता कि जहा उसके पिता और उनके जवान जूझ रहे हो, वहा कुछ भी बुरा नही हो सकता। वोलोद्या के सामने उसके पिता का चित्र घूम जाता—धूप के कारण कुछ भूरे हुए कान और सफाचट

तारों तथा भाग्य दूर आकाश में जमा हुए। वे मानो शैविन में चढ़ते, डग में अपने मार्ग पर बढ़ जाते और आरम्भ होता—

'सावधान!'

रूसी भाषा में 'सावधान' को क्या कहते हैं? शासन के लिए 'असीमता' और दमन के लिए 'दमनशीलता' का उपयोग किया जाता है, पर 'सावधान' के लिए कौन-सा शब्द है? काश कि यह उन सभी का व्यवसाय रूप मानता—इजरीना, निकोलाई, जनरल सुराव और अपने पिता का। क्या पुराने हैं वे उतने बड़े? अन्तरिक्षगामी का इसका रूप क्या होगा? और रॉकेटयान सर्वाधिक विचित्र था? वे दानों-जहाजों और हवाबाज—क्या कभी मिलते भी हैं?

वोलोद्या अब मानव के अस्तित्व के उद्देश्य के बारे में बहुत देर तक और गहरा सोच-विचार करता। वह अपने उन सहपाठियों से अधिकाधिक दूर होता जा रहा था, जिनकी आकांक्षा केवल अच्छे अंक पाने तक ही सीमित थी, या जो कालेज में स्नातकोत्तर विद्यार्थी बने रहने के उपाय खोजते थे, या फिर उन चालाक नौजवानों से भी, जो अपने पेशे का चुनाव इस बात को ध्यान में रखकर करते थे कि कैसे उनके लिये देहातों-बस्तियों में जाने के बजाय नगर में रहने के अधिक अवसर हो सकते हैं।

और माता-पिताओं के प्रति उसका क्या रुख था?

उन माताओं के प्रति, जो रेक्टर के दरवाज़े के बाहर आँसू बहाती थीं? उन सैनिक अधिकारियों, बड़े कर्मचारियों, विद्वानों और मजदूरों के प्रति उसका क्या रुख रहता था, जो डीन पर "दबाव डालते थे" या यों कहना अधिक सही होगा कि अपने प्रभावशाली मित्रों से ऐसे पत्र लाते थे कि उस विद्यार्थी को एक और मौका दे दिया जाय, जो डाक्टर के लिए अनिवार्य विषय का सही उत्तर नहीं दे पाया था।

वोलोद्या युवा कम्युनिस्ट लीग के कालेज संगठन का सेक्रेटरी था। उसके पास फटकने की किसी को हिम्मत नहीं होती थी। सच तो यह है कि कभी-कभी तो डीन भी, जो कमज़ोर आदमी था, वोलोद्या से मदद करने को कहता। ऐसा तब होता, जब उससे बहुत अधिक अनुरोध किये जाते और वह परेशान हो उठता। वोलोद्या ऐसे लोगों को रुखाई से, निर्दयतापूर्वक और खरी-खरी सुनाकर चलता कर देता।

"ढागी।" यूस्या योल्किना ने उससे कहा।

वालोद्या उदासी से मुस्करा दिया।

"सेचेनोव चिकित्सा सस्थान से केवल उस्तिमेन्का ही स्नातक होकर निकला। वह और किसी को इसके लायक ही नही समझता।" स्वेत्लाना ने कहा।

"लकीर का फकीर।" मीशा शेरवुड ने उसके बारे मे कहा।

वोलोद्या ने आखें सिकोडकर शेरवुड की द्वेषपूण, भरी और फूली फूली आखो मे देखा। यह लडका अवश्य काफी आगे जायगा। अभी से, जबकि उसने काई तीर नही मारा है, वह सस्थान की पढाई खत्म करते ही शोध प्रबन्ध लिखने का विषय ढूढ रहा है। पर फिर भी उनके अको, परीक्षाओ और शोध-प्रबन्धो की इस दुनिया मे परवाह ही कौन करता है? केवल वे खुद ही तो?

बूढा पीच

इसी समय के दौरान पीच या पावेल चिर्कोव के साथ, जिसे विद्यार्थी "बूढा" कहते थे, वोलोद्या की गहरी छनने लगी। वह चौबीस वर्ष की आयु मे सस्थान मे दाखिल हुआ था।

पीच गुमसुम और रूखा था तथा उसकी जबान बहुत तेज थी। उसकी छोटी छोटी, हल्की नीली आखें अचानक किसी को इस्पाती बर्मे की तरह छेदना शुरू कर देती। वह आसानी से चीजो को न समझता दूसरो की तुलना म उसे ज्ञान अर्जन मे अधिक देर लगती। पर वह बडा मेहनती था और हर चीज की गहराई मे जाता था। इसलिये अपने अधिक प्रतिभाशाली साथियो की तुलना मे वही अधिक जानता-समझता था। वोलोद्या अक्सर उसकी मदद करता। पीच न तो कभी उसे धन्यवाद देता, न किसी और ढग से अपनी कृतज्ञता प्रकट करता और गहरी सास लेकर सिर्फ इतना ही कहता—

'वोलोद्या, तुम बडे समझदार हो।"

वह किसी तरह की ईर्ष्या के बिना, यहा तक कि कुछ रूखी कोमलता मे ऐसा कहता। ये दोनो ही गानिचेव और पोलूनिन के

श्रद्धालु थे और एक दिन व्याख्यान के बाद गानिचेव ने दोनों को ही रोक लिया।

"सुनिये, मेरे होनहार साथियो," दरवाजा बन्द करते हुए गानिचेव ने कड़ाई से कहा। "मैं पिछले कुछ समय से आप लोगों के बारे में एक चीज देख रहा हूं। वह यह कि आप दोनों को घृणित और लज्जाजनक बीमारी, जिसे चिकित्सा-सम्बन्धी सशयवाद कहते हैं, का छूत लग गई है। इसके लिये शायद मैं भी जिम्मेदार हूं। आपसे, क्षमा कीजिये, बालक जैसे मुंह से 'नीम हकीमी', 'वैज्ञानिक लफ्फाजी' और 'लातीनी शब्दाडम्बर' जैसे शब्द अक्सर सुनाई देते हैं। मेरे जवान शैतानो, आप अभी बच्चे हैं और आपके लिये यह उचित नहीं है कि सचाई जानने के लिये सदियों से जो खोज की जा रही है, आप उसकी खिल्ली उड़ायें। मैं और प्रोफेसर पाबूनिन आपकी चिन्तन शक्ति को बढ़ाना चाहते हैं, पर हमारा यह उद्देश्य कदापि नहीं कि आप लोग सामयिक विज्ञान की स्थिति की खिल्ली उड़ायें। आप लोग खोज कीजिये, किंतु खिल्ली नहीं उड़ाइये! आपको ऐसा करने की जुरत ही नहीं करनी चाहिये! मानव की अद्भुत बुद्धि किसी तरह के यन्त्र के बिना आदमी के दिल की धड़कन सुनकर यह बता सकती है कि उसके किस हृत्कपाट में क्या और कैसा दोष है, इस दोष का क्या स्वरूप है—कोई कमी है या हृत्कपाट में सकुचन है। दर्द की रोक थाम करनेवाली दवाइयों के बारे में क्या ख्याल है आपका! और वक्सीनों के बारे में!"

गानिचेव बहुत ही नाराज थे। उन्होंने बहुत जोर से अपनी नाक सिनकी और आदेश देते हुए कहा—

"जाइये, पिरोगोव को पढ़िये और निष्कर्ष निकालिये!"

गानिचेव ने उन्हें एक किताब दे दी, जिसमें आवश्यक स्थलों की ओर सकेत करने के लिये कागज के पुर्जे रखे हुए थे और वे चले गये।

"हमने उन्हें परेशान कर दिया है," पीच ने कहा।

"इसके लिये मैं दोषी हूं," वोलोद्या ने जवाब दिया। "तुम्हें याद है न कि कल जब मैंने औषधि विज्ञान में नीम हकीमी की बात चलाई थी, तो उन्होंने कैसे बिगड़ते हुए कहा था—'जब सिर में दर्द होता है, तो क्या तुम पिरामीदान नहीं पीते?

उस रात उन्होने छात्रावास मे पीच के बिस्तर पर बैठकर पिरोगोव की किताब पढी।

"भयानक है ये आकडे तो!" पीच ने अपनी थकी हुई आखो को बन्द करते हुए कहा। "ऑपरेशन किये गये लोगो म से तीन चौथाई पीप पडने के कारण मर जाते है।"

"ऐसा पिरोगोव के जमाने म होता था " वालोद्या ने कहा।

"साफ है "

"देखो, इसमे क्या लिखा है–'सरजरी की इस भयानक प्रवत्ति के बारे मे मैं कुछ भी तो अच्छा नही कह सकता। यह रहस्य है– इसका आरम्भ और विकास क्रम भी।'"

वोलोद्या ने अगला अकित पष्ठ खोलकर पढा–

"जब मुझे उन कब्रिस्तानो का ध्यान आता है, जहा उन लोगो की इतनी अधिक कब्रें है, जो अस्पतालो म पीप पडने से मरते हैं, तो मेरी समझ मे यह नही आता कि उन सजना की दृढता पर हैरान होऊ, जो अभी भी नये नये ऑपरेशन करते जाते हैं या समाज के उस विश्वास पर, जो वह अभी तक अस्पताला मे प्रकट कर रहा है?'

"तुम्हारा निष्कष?" पीच ने पूछा।

"अग्रेज सजन लिस्टर।"

"उसकी एन्टीसेप्टिक प्रणाली।"

"बिल्कुल सही! बहुत ही समझदार हो, तुम पीच!" वोलोद्या ने कहा। "तो ऐसा ही क्यो न कहा जाये कि सजन जो कभी पीप के सामने गुलामा की तरह सिर झुकाते थे, अब उन्होने उस पर विजय पा ली है। तब सारी बात पूरी तरह हमारे ओगुर्त्सोव की शैली मे हो जायेगी। उसे इस तरह की शैली बहुत पसद है।"

"तो इसमे बुराई भी क्या है? कभी-कभी इस तरह की शली अच्छी रहती है," पीच ने गम्भीरतापूवक जवाब दिया। "हम बाते ही करते रहते हैं, किन्तु डाक्टर बनने के लिये भविष्य के किसी लिस्टर पर विश्वास करना भी जरूरी है।

'केवल विश्वास से काम नही चल सकता,' वोलोद्या ने आह भरकर कहा। 'याद है कि प्राचीन यूनानी क्या करते थे? और बाद मे भी? आइसीपस ने अपन बुखार के रोगियो के लिये भोजन करने

और डिग्रास्सीपस ने पानी पीने की मनाही कर दी थी। सिलवियाम इस बात के लिये अनुरोध करता था कि उन्हे खूब पसीना आये और बूढा अस्से उनके बेहोश होने तक उनका खून बहाता रहता था, जबकि केरी उन्हे ठडे पानी से नहलाता था "

'खैर ठीक है, पर हमने अपने वेरेसायेव को भी तो पढा है न!" पीच ने चल्लाकर कहा।

'वह बढिया डाक्टर था!"

"सुनो अब तुम घर जाओ," पीच ने कहा। "मेरा तो वसे ही सिर फटा जा रहा है।"

पर वोलोद्या घर नही गया। पीच ने अपने घुटनो तक के फटे पुराने जूते उतारने शुरू किये। उसके साथ रहनेवाले विद्यार्थी लौट आये, किन्तु वोलोद्या ने अपनी बात जारी रखी।

'शरीर क्रिया विज्ञान हम अब तक बहुत कुछ दे चुका है और हर दिन हमारे ज्ञान मे अधिकाधिक वद्धि करता जाता है," उसने कहा। "मैंने कही पढा था कि सैद्धान्तिक चिकित्साशास्त्र तो वास्तव म शरीर क्रिया विज्ञान है। इस तरह शरीर क्रिया विज्ञान से ही हम अपनी जरूरत के निष्कर्ष निकालने होगे और तब व्यावहारिक चिकित्साशास्त्र तैयार हो जायेगा। जहा तक लातीनी शब्दाडम्बर का सम्बन्ध है "

"इस बीच हाथ पर हाथ धरे बैठे रहो, तुम्हारा यही मतलब है न?' साशा पालेश्चुक ने कहा।

कमरे म शारगुल मच गया। पीच ने अनजाने ही अपने जूते पहनने शुरू कर दिये। गृहयुद्ध के दिनो से ही उसे ऐसी आदत हो गई थी कमरे म किसी तरह का शोर होते ही वह पूरी तरह जागे बिना ही जूते पहनना शुरू कर देता था।

"तो तुम यह सुझाव देते हो कि हम शुद्ध विज्ञान की हवाई दुनिया म उडान किया करें?" विरले दातो और चित्तियोवाले नौजवान आगुतगोव न वोलोद्या पर आक्षेप किया। 'वोलोद्या, साफ-साफ कहो न! बस भी तुम यह क्या बेसिरपैर की बात कर रहे हो? "

'बेसिरपैर की बात क्या है? वोलोद्या न बिल्कुल सही कहा है, माशा नेरवुन न बातचीत म हिस्सा लेते हुए कहा। 'शायद तुमम

से किसी को याद हो कि किसी एक बुद्धिमान अरब हकीम ने एक बार यह कहा था कि ईमानदार आदमी को चिकित्साशास्त्र के सिद्धान्त से प्रसन्नता तो हो सकती है, पर बेशक उसका ज्ञान कितना ही अधिक क्या न हो, उसकी आत्मा उसे कभी भी डाक्टरी नही करने देगी "

"क्या?" पीच ने चिल्लाकर पूछा।

शेरवुड ने अपनी बात दोहराई।

"बहुत खूब, बढिया निष्कर्ष है हमारी इस बहस का," अपनी छोटी-छोटी नीली आखो से बोलोद्या को वेधते हुए उसने कहा। "हम इतने ईमानदार हैं कि केवल चिकित्साशास्त्र के सिद्धान्त का ही मजा लेते रहेगे। हम इतने ईमानदार और इतने सच्चे है कि जब तक सिद्धान्त पूरी तरह विकसित नही हो जाता, लोगो को मरने-सडने देंगे। नारिया बेशक प्रसव के समय मर जाये, बालक सैकडो की सख्या म दम तोडते रहे, बेशक सोवियत लोग डिपथीरिया, टाइफस और स्पेनी फ्लू के शिकार होते रह, मगर हम अपनी सीटो से हिलने का नाम नही लेगे। हम अपनी प्रयोगशालाओ मे बैठकर हर चीज का वैज्ञानिक निष्कर्ष निकालेगें, हर चीज पर सन्देह करने की कला म अधिकाधिक निपुण होते जायेंगे और आखिर अपने काम म पूरी तरह विश्वास खो बैठेंगे। ऐसा करना अधिक सुविधाजनक है।"

पीच उठा, उसने पानी का एक गिलास पीया और सभी पर छा जानेवाली खामोशी मे ऐसे जोश और प्रभावपूर्ण ढग से बोलने लगा कि बोलोद्या, जिसने "बूढे" को पहले कभी इस तरह बोलते नही सुना था, सकते मे आ गया।

"झीनिन हमारी रेजिमेन्ट का कमाडर था, बहुत ही बहादुर और एसा व्यक्ति, जिसके बारे म दन्त-कथाए प्रचलित थी। पर एक दिन कूच के दौरान वह बीमार पड गया। बर्फ का भयानक तूफान दहाड रहा था, बेहद ठड थी, हमारे पास खाने के लिय कुछ भी नही था और ऐसे म हमारा कमाडर सरसाम की हालत मे बेसिरपैर की बाते कर रहा था। हमारी रेजिमेन्ट म एक बूढा डाक्टर था, जिसने सिर्फ तीन वर्षों तक डाक्टरी के स्कूल मे पढाई की थी। उसका नाम था तूतोचकिन। उसे जबदस्ती सेना म भरती किया गया था। वह ऐसा बढिया घुडसवार था कि क्या कहिये! हमे उसके जीन पर पखा का

तकिया बाधना पडता था। अच्छा खासा मजाक था वह तो! उसने झीलिन को देखा और बोला कि इसे तो खसरा है। जाना-पहचाना खसरा। इसके अलावा झीलिन का दिल भी ढग स काम नही कर रहा था। चुनाचे हमने बहुत ही महगे दामो कही से थोडा-सा सूरजमुखी का तेल खरीदा, उसे उबाला, हमार कूनोवकिन न उसम थोडा-सा काफूर मिलाया और झीलिन को इसकी सुइया लगान लगा। उसके सारे शरीर पर बडे-बडे फोडे निकले। पर इसके बावजूद वह फिर स ठीक-ठाक हो गया और सफेद गार्डो के विरुद्ध उसने अपनी रेजिमेट का नतृत्व किया। तो खैर! यह वैज्ञानिक चिकित्सा है या तजरबे? मैं सिफ यह कहना चाहता हू कि सस्थान के प्रोफेसर मुझे ऐसी शिक्षा दे दें, मुझे कूनोवकिन जैसा बना दें, ताकि दम तोडते आदमी को झीलिन की भाति उसकी सेना म लाकर खडा कर दू, जो बाद म डिवीजन-कमाडर और फिर किस्से-कहानियो की ख्यातिवाला सेना कमाडर बना! बस इतना ही कर दें हमारे प्रोफेसर! मैं आप लोगो से एक कम्युनिस्ट के नाते बात कर रहा हू हमे अपन काम की जटिलता और कठिनाई को अवश्य ही समझना चाहिये! मेरा अभिप्राय है, जैसे कि गानिचेव और पोलूनिन हमारे अदर यह विचार भरना चाहते हैं, कि हर रोगी के सिलसिले मे हम किसी अनूठी और अनजानी बीमारी का सामना करने के लिये पूरी तरह तैयार रहना चाहिये। हमे हमेशा नई-नई चीजो की खोज करत जाना चाहिये, पर साथ ही हाथ मे लिये हुए काम भी जारी रखने चाहिये। साथी शेरवुड के वे सभी अरबी सिद्धात बेतुके है और हम उनकी धज्जिया उडा देनी चाहिये। और वोलोद्या मैं तुम्हे भी यह सलाह देता हू कि तुम थोडा सोच विचार करो। तुम्हे ऊची शैली म बात करना पसद नही है, मगर मुझे यह अच्छा लगता है। बस इतना ही कहना है मुझे! अब सोने का वक्त हो गया!"

पीच फिर से अपने बूट उतारने लगा। वोलोद्या चुपचाप कमरे से बाहर आया, सीढियो से नीचे उतरा और बर्फीली ठडी हवा मे उसने अपने तमतमाये हुए चेहरे को ऊपर किया। चक्कर खाती बर्फ मे सडक के लैम्पो की गोल और पीली पीली आखे अधी-सी लग रही थी। उसे शर्म आ रही थी, बेहद शर्म आ रही थी। स्थिति को और

अधिक बोझिल बनाने के लिये शेरवुड उसके पीछे-पीछे बाहर आया और उसने अपने नपे-तुले और साफ साफ वाक्यों में कहा—

"उस्तिमेंको, पीच अगर जली-कटी सुनाने पर उतारू हो जाये, तो तुम मेरी हिमायत करना। मेरा अपना सुसंगत दृष्टिकोण है और पीच का अपना। पर वह यह चाहता है कि सभी लोग उसी का दृष्टिकोण अपना लें, जबकि मैं "

"मैं पूरी तरह पीच से सहमत हूं," वोलोद्या ने कहा। "तुम्हारे उस अरब का सर्वथा विरोध करता हूं। इस तरह के दृष्टिकोणों की बड़ी बेरहमी से धज्जियां उड़ा दी जानी चाहिये।"

"ओह, तो यह बात है?!"

"हां, यही बात है," वोलोद्या ने दृढ़तापूर्वक कहा। "अगर तुम ऐसे दृष्टिकोण को ही अपने शोध प्रबंध का आधार बनाओगे, तो कूड़े करकट के ढेर में ही गिरकर रह जाओगे।"

"मेरा शोध प्रबंध ऐसे ही दृष्टिकोणों पर आधारित होगा, जो विश्व के प्रति हमारी धारणा के अनुरूप होंगे। अन्य कोई आधार नहीं होगा उसका। जहां तक 'कूड़े-करकट के ढेर' का सम्बन्ध है, तो मैं यही कहूंगा कि तुमने यह बहुत गुस्ताखी भरी और भोंडी बात कही है, जो तुम्हें शोभा नहीं देती।"

शेरवुड ने अपने कंधों पर झूलते ओवरकोट को सम्भालकर ऊपर किया और छात्रावास में वापिस चला गया। वोलोद्या ट्राम की ओर भागा, चलती हुई ट्राम पर चढ़ा, गाली बकी और उसने इसी समय वार्या से सारी बात कहकर अपना दिल हल्का करने का फैसला कर लिया। वह उसे यह बताना चाहता था कि खुद से कितना निराश है। स्तेपानोव परिवार के लोग अब क्रासीवाया सड़क पर रहते थे। वार्या के दादा ने दरवाज़ा खोला। वार्या के पिता ने जाने से पहले यह कड़ी हिदायत कर दी थी कि वह अपने दादा के साथ मिलकर घर की व्यवस्था करे और किसी भी सूरत में दादा को फिर से गांव न जाने दे।

"अच्छा मेहमान हमेशा खाने के वक्त ही आता है,' बुजुर्ग ने खुलकर कहा और रसोईघर की ओर चले गये, जहां से तले जाते आलुओं की प्यारी गंध आ रही थी।

"वोलोद्या आया है?" वार्या ने दादा से पूछा।

"और हो ही कौन सकता है!" दादा ने रसोईघर से जवाब दिया। "वार्या बिल्ले को अपने पास बुला लो। वह क्रीम को सूंघ रहा है!"

वार्या प्रवेश कक्ष में आई। वह कंधों पर ऊनी शॉल डाले हुए थी और उसके चेहरे पर ताज़गी झलक रही थी। बिल्ला उसकी टांगों से अपना तन रगड़ने लगा।

वोलोद्या तुम चाहे कुछ भी क्यों न कहो, भूगर्भविज्ञानी तो मैं कभी भी न बन पाऊंगी उसने हताशा से कहा। "मैंने अपना इरादा बना लिया है मैं तो रंगमंच को ही अपना पेशा बनाऊंगी। मैं यह बिल्कुल साफ-साफ कह दे रही हूं। तुम यह मुंह बाये क्या देख रहे हो?"

'वार्या तुम पहले प्राविधिक स्कूल की पढ़ाई खत्म कर लो," वोलोद्या ने मिन्नत करते हुए कहा।

'वह किसलिये?"

'इसलिये कि तुम मैं जानता हूं कि तुम कि तुम सफल अभिनेत्री नहीं बन सकोगी

क्योंकि मुझमें प्रतिभा नहीं है?'

वोलोद्या ने अपनी लम्बी-लम्बी बरौनियों के बीच से उसकी ओर उदासी से देखा और कोई जवाब नहीं दिया। वार्या ने शाल अपने इर्द गिर्द लपेट ली और प्रतीक्षा करती रही। बिल्ला उसकी मजबूत और सुघड़ टांगों के साथ अपना तन रगड़ता रहा।

सुनो वार्या वोलोद्या ने कहना शुरू किया। "बात यह है, लाल बालोंवाली, कि अभी-अभी छात्रावास में हम लोगों के बीच बहस होती रही है। बहस का विषय स्पष्ट करना तो ज़रा कठिन है मगर जो कुछ मैं समझता हूं वह यह है कि हम जो भी काम करें, वह न केवल हमारे लिये ही बल्कि हर किसी, समाज और जनता के लिये भी दिलचस्प और ज़रूरी होना चाहिये। किन्तु यदि वह केवल तुम्हारे लिये ही ऐसा महत्व रखता है तो अचानक अर्थहीन हो जायगा।

"अन्दर आ जाओ जहां ठंड नहीं है, वहीं मत खड़े रहो,' दादा ने रसोईघर से पुकारकर कहा। "आलू बन गये हैं, वार्या मेज सजाओ। तहखाने से कुछ अचार भी ले आओ।"

सभी न चुपचाप खाना खाया। दादा बातचीत मे बडी दिलचस्पी लेते थे और हर चीज के बारे मे खूब जोर शोर से राय जाहिर किया करते थे। इसलिये आम तौर पर वे अकेले ही बोलते रहते थे और खूब जी भरकर अपने मन की कहते थे। पर आज वे अपने रग म नहा थे और इसलिये केवल बिल्ले के बार म ही बडबडाते रहे।

"नाक मे दम आ गया है इसके मारे बहुत बिगाड दिया गया है इसे। चूहे पकडने का नाम नही लेता, उन्हे देखकर केवल आखे झपकाया करता है। सुबह एक चूहा आया और यह उसे देखकर भाग गया। शायद हमे इसकी दुम काट देनी चाहिये?"

"वह किसलिये?" वार्या ने घबराकर पूछा।

"इसलिये कि दुमकटी बिल्लिया अधिक फुर्तीली होती है," खट्टी पत्ता गोभी लेते हुए दादा न जवाब दिया। "साइबेरिया के किसान अपनी सभी बिल्लियो की दुम काट देते है। वे इसलिये ऐसा करते हैं कि ठड बडी जोरो की होती है और बिल्लिया अपनी लम्बी दुमो को घसीटती हुई अन्दर आने मे बहुत देर लगाती है। उनके अन्दर लाने और बाहर निकालने मे ही घर की सारी गर्मी खत्म हो जाती है। पर दुमकटी बिल्ली अन्दर आने और बाहर जाने मे आधा समय लगाती है। यह हिसाब की बात है। घर के अन्दर भी वे अधिक फुर्ती दिखाती है। उन्हे डर रहता है कि उनकी दुमे और न काट दी जायें।"

"दादा, अगर आप बिल्ले की दुम काट देंगे, तो मैं घर छोडकर भाग जाऊगी। बिल्कुल माल्यूता स्कुरातोव* है मेरे दादा तो,' उसने वालोद्या से कहा।

वार्या जब तक बतन साफ करती रही, वोलोद्या अपनी बात कहता रहा। उसने अपनी लानत मलामत की और पीच की तारीफो के पुल बाधे। यव्गेनी भी घर आ गया और उसने वोलोद्या को डाटते फटकारते हुए कहा—

'तुम क्लब मे क्या नही आये थे? तुम अपने सामाजिक कत्तव्यो स कन्नी काटते हो। विद्यार्थियो ने प्रसिद्ध लेखक लेव गूलिन का

---

*जार इवान रौद्र का एक निकटवर्ती दरबारी, जो अपनी निदयता के लिए विख्यात था।

ग्रामन्त्रित किया था। हम सोवियत विद्यार्थियो से यह ग्राशा की जाती है कि उसकी किताब पर बहस कर, साथीपन की भावना से उस पर खुलकर विचार विनिमय कर और हालत यह है कि दो तिहाई विद्यार्थी अपनी सूरत दिखाने की भी तकलीफ नही करते। यह तो सरासर बन्त मीज़ी है।"

"पर यदि मैंने लेव गूलिन की किताब ही न पढी हो, तो?" वोलोद्या ने पूछा।

'यह तुम्हारे लिये बहुत शर्म की बात है। लेव गूलिन सोवियत सघ की यात्रा करता हुआ अपने पाठकों से मिल रहा है।"

तो खैर ठीक है, तुम अनपढो मे ही हमारी गिनती कर सकते हो,' वार्या ने गुस्से से कहा। "तुम हमारा पिंड क्यो नही छोडते?"

"इसमे तो तुम्हारी ही भलाई है," येव्गेनी ने बुरा मानते हुए जवाब दिया। "सचमुच, क्या तुम इतना भी नही समझते कि ज़िंदगी ज़िंदगी है, कि तुम्हे लोगो से मिलना-जुलना चाहिये, दूसरो की सुननी और अपनी कहनी चाहिये। क्या खाने के लिये सिर्फ आलू ही बने है?" वह इसी अन्दाज़ मे कहता चला गया। मुह भरे भर ही उसने उन्हे यह बताया कि कसे वह मच पर गया था और साफ-साफ तो नही, फिर भी यह स्पष्ट कर दिया कि शेम्याकिन के रूप मे आधुनिक विद्यार्थी को पदलोलुप, चालाक और बेपेंदी का लोटा चित्रित करके लेखक ने जाने अनजाने सभी सोवियत विद्यार्थियो को कलकित कर दिया है।

"तुमने किताब पढी है?" वार्या ने पूछा।

'मैंने विचार विनिमय से पहले उसे उलट पलटकर देख लिया था। मैंने आलोचको की राय भी पढ ली थी। इसलिये मुझे अपना रास्ता मालूम था। तुम्हे मेरे बारे मे चिन्ता करने की जरूरत नही

"प्यारे येव्गेनी, तुम निश्चय ही बहुत दूर तक पहुचोगे,' वार्या ने आह भरकर कहा।

'प्यारी बहन मेरा कही नज़दीक ही ठहरने का इरादा भी नही है। मैं ऐसा कर ही नही सकता, क्योकि तब हर किसी को यह स्पष्ट हो जायगा कि येव्गेनी स्तेपानोव बहुत प्रतिभाशाली नही है। पर जब

मैं दूर पहुच जाऊगा, और अगर भगवान ने चाहा, कुछ ऊचा भी उठ जाऊगा, तब "

"जाओ यहा से!" वार्या चिल्ला उठी। "येव्गेनी, कृपया जाओ यहा से!"

अगली सुबह को वोलोद्या पीच के पास गया और बोला कि मैं पूरी तरह तुमसे सहमत हू और, अपने मूखतापूण सन्देहवादी दृष्टिकोण को त्याग दूगा। बूढे ने ऐसे इत्मीनान से इस स्वीकारोक्ति को सुना कि वोलोद्या के दिल को हल्की ठेस-सी लगी। पर बहुत जल्द ही वह सम्भल गया। कुछ ही देर बाद वे तथाकथित "चमत्कारी फूक" की रोगहर शक्ति की चर्चा करने लगे। वोलोद्या ने इसी सुबह को सस्थान जाते हुए ट्राम मे इसके बारे मे पढा था। उसने पीच को इसके बारे म बताया। तुर्की झाड फूक करनेवाले आम तौर पर अपनी जादुई चिकित्सा मे बहुत समय लगाते थे। वे रोगी के गले मे तावीज लटकाते, मन्त्र फूकते, धूप-लोबान, आदि जलाते, उसके इद गिद नाचते, चीखते-चिल्लाते और अन्त मे जोर की फूक मारते। किन्तु वास्तव मे खोजा— रोगहर—ही, जिसकी "चमत्कारी फूक" होती थी, रोगी का रोगमुक्त कर सकता था। पुस्तिका का लेखक एक विख्यात डाक्टर था, जिसने तुर्की झाड फूक की विधि का विस्तृत और गहरा अध्ययन किया था। उसने बहुत जोर देकर अपने पाठको को यह विश्वास दिलाया था कि "चमत्कारी फूक' रोगी को रोगमुक्त करने मे सहायक होती थी।

पीच ने घडी भर सोच विचार किया, अपनी थकी हुई आखो को मला जैसा कि वह अक्सर करता था, और फिर बोला—

"व्यक्तिगत रूप से मैं तो इसे डाक्टर म रोगी के विश्वास की बात ही समझता हू। मान लो अगर मै और तुम सही रोग निदान करे और ठीक इलाज बताये, तो भी हम किस काम के डाक्टर होगे, अगर रोगी का विश्वास नही जीत पायेगे? रोगी युद्ध क्षेत्र के सनिक के समान होता है, उसे अपने कमाडर पर पूरा भरोसा होना चाहिये, यह समझना चाहिये कि वह अपने सैनिको को कभी धोखा नही देगा, कि उसकी कमान मे वे दुश्मन के छक्के छुडा देगे और सही-सलामत लौटगे।"

"शायद तुम ठीक ही कहते हो "

इस दिन के बाद वालोद्या और पीच हमेशा इकट्ठे पढते। उनमे से किसी ने भी ऐसा सुझाव नही दिया, पर यह अपने आप ही हो गया। पीच शाम को वालोद्या के पास आता, बोश्च की बडी प्लेट भरकर खाता, देसी तम्बाकू की सिगरेट के कश लगाता और इसके बाद ये दोनो काम करने बैठ जाते। पीच बेहद मेहनती था, वालोद्या बहुत ही समझदार। पीच कभी-कभार बुरी तरह उलझकर रह जाता और वोलोद्या बहुत आगे निकल जाता। पर उसका ज्ञान अर्जन कभी कभी सतही होता। पीच गहरा हल चलाता, बहुत गहराई तक पहुचता, जबकि वोलोद्या कल्पना की ऊची उडानें भरता। वे आपस मे ज़रा की बहस करते, झगडते, एक दूसरे को भला-बुरा कहते, पर एक दूसरे के बिना उन्हे चैन भी न पडता।

"संस्थान की पढाई खत्म होने पर हमे अगर एक ही अस्पताल मे नियुक्त कर दिया जाये, तो कितना अच्छा रहे," वोलोद्या ने एक बार कहा।

"यह बुरा होगा," पीच ने रुखाई से उत्तर दिया। "हम एक दूसरे से गुस्ताखी से पेश आने के आदी हो गये हैं और तुम जानते ही हो कि अस्पतालो म कैसे काम चलता है—'माफ कीजिये, पावेल लुकीच।—'नही, नही, यह मेरा दोष है, प्यारे व्लादीमिर अफानास्येविच ' वहा डाक्टर की प्रतिष्ठा बनाये रखनी होती है।"

और इस तरह वसन्त आ गया।

सातवा अध्याय

प्राथमिक सहायता

वह बडी ही खुश्क गर्मी थी, पानी की एक बद भी नही बरसी, उमस रहती, धूल उडती और अक्सर आधिया आती। उचा नदी के दूसरे किनारेवाले जगल मे आग लगी हुई थी और नगर के ऊपर धुआ छाया रहता था। नगर म कई और जगह भी आग लग गई—यामस्काया स्लावोदा और पारचनाया सडक के पुराने गोदाम भी एक आधी मे जलकर राख हो गये।

वोलाद्या प्राथमिक डाक्टरी सहायता सेवा मे परिचारिक के रूप मे काम करता था। नगर की प्राथमिक डाक्टरी सहायता सेवा के पास केवल दो कारे थी, पुरानी 'रेनो' कारे, जिनके ढाचे नीचे और रेडिएटर छोटे थे। किन्तु बग्घिया बहुत-सी थी, अगल बगल रेड क्रास क चिह्न और खडखडाते हुए शीशोवालिया। इनके शीशो पर सफेद रोगन किया हुआ था। घोडा का खूब अच्छी हालत मे रखा जाता था। वोलोद्या आम तौर पर कोचवान की बगल मे ही बैठता और उसे डर रहता कि कही देर न हो जाय। वह लकडी का बक्स लिये हुए, जिस पर रेड क्रास बना होता था, डाक्टर के साथ रोगी के घर के दरवाजे पर जाता, दस्तक देता या घटी बजाता और जब यह पूछा जाता कि "कौन है?" तो जल्दी से जवाब देता—"प्राथमिक डाक्टरी सहायता"।

वोलोद्या ने अनक बार लोगो को मरते देखा था। उसने बहुत दुखद और लाइलाज रक्तस्राव से मृत्यु होते दखी थी। उसने मौत से पहले लोगा को छटपटाते भी देखा था। उसने मृतको को "उस

दुनिया' में जगा कि वह मन ही मन कहता था, सोचते भी दया था। बूढ़े और चतुर ही चमत्कार नज़रवाला डाक्टर मिरेशिन ऐसा 'वापसी' का चमत्कार नहीं मानता था। किन्तु बड़े जोर में उसकी सहायता करते हुए वोलोद्या को तो मानो स्वर्ग-सुख की अनुभूति होती। जब ऐसा चमत्कार न हो पाता, जब मिरेशिन अपने गाल प्रभाव में अपनी ऐनक को ऊपर करता, गला साफ करता और उस कमरे से बाहर जाने को घूमता, जहां "बिशाल अगमय हो गया था", तो उसे भारी निराशा होती।

'बात यह है वोलोद्या, कि," डाक्टर मिरेशिन बग्घी में चलता हुआ कहता "हम पहुंचने में कुछ देर हो गई। अगर हम एक या दो घंटे पहले पहुंच जाते, तो शायद "

दरवाजा फटाक से बन्द होता और बग्घी सड़कों पर धचके खाती तथा दायें-बायें होती हुई चलती जाती। वोलोद्या को मुड़कर देखते हुए डर लगता, बड़ी शर्म आती। उसे ऐसा प्रतीत होता, मानो शोकग्रस्त परिवार के लोग घृणित दृष्टि से उसे देख रहे हैं, कि वे विनान, मिरेशिन और वोलोद्या को कोस रहे हैं। पर किसी दूसरी जगह पर जाने का सन्देश मिलते ही वह कुछ मिनट पहले के अपने विचारों को भूल जाता।

कफर कैंफीन और मार्फिया की सूई लगने के फौरन बाद वह आदमी को फिर से जिन्दा होते देखता। उसका भयानक दर्द गायब हो जाता और वह भौचक्का-सा इधर-उधर देखने लगता। यह सूईवाली पिचकारी, एम्प्यूल और मिरेशिन के हाथों और तजरबे की करामात होती थी कि वह "उस दुनिया' से वापिस आ जाता था।

"तो यह बात है,' मिरेशिन कहता और अपने चश्मे को ठीक करता। "अब उसे थोड़ा चैन और शान्ति चाहिये और सब कुछ ठीक ठाक हो जायेगा।'

"सुनते हैं आप लोग, सब कुछ ठीक ठाक हो जायेगा!" वोलोद्या का मन होता कि वह चिल्लाकर कहे। "इसकी बीवी, इसकी बेटी और तुम सभी लोग–तुम समझ रहे हो न कि यह आदमी मर चुका था। अब वह कोई खट्टी चीज पीना चाहता है, पर कुछ देर पहले वह मुर्दा हो चुका था!"

बग्घी प्लातीनीस्त्काया स्लोबोदा सडक के खडजा पर खडखडाती हुई चलती जाती और कोचवान स्तीमशिचकोव अपनी "समृद्ध" दाढी को थपथपाता हुआ कहता—

"मेरा दिल कहता है कि आज ता लगातार बुलावे आते रहगे। स्नानघर मे भाप-स्नान का मजा लेन का मौका नही मिलेगा!"

एक घटना ने तो वोलोद्या को बहुत ही प्रभावित किया। वास्तव मे तो वह बहुत सीधा-सादा मामला था, पर वालाद्या का चमत्कार प्रतीत हुआ और अनक वर्षों तक उसके दिल म इसकी याद बनी रही। यह अगस्त के मध्य मे हुआ। आधी रात के बाद उन्ह कोसाया सडक पर एक अहाते के बाजू म रहनेवाले किसी बेल्याकोव के घर फौरन आने को कहा गया। नीची छतवाले साफ-सुथरे कमरे म चौडे स बिस्तर पर एक अधेड उम्र का आदमी लेटा हुआ था। कई घटा की पीडा स बेहाल वह धीरे धीरे और पीडायुक्त मृत्यु के मुह की ओर बढा जा रहा था। उभरी हुई पसलियावाली उसकी चौडी छाती असमान गति से ऊपर-नीचे हो रही थी, उसके माथे से पसीना चू रहा था जा उसकी आखो के गढा मे भर जाता और फिर गाला से नीचे बहता। लम्बी ऐंठन से वह कराहता और दात किटकिटाता।

एक दुबला-पतला स्कूली छोकरा मिकेशिन को जल्दी जल्दी बता रहा था—

"साथी डाक्टर, शुरू मे तो मेरे पिता को बेचनी महसूस हुई। वे कभी उछलकर खडे हो जाते, तो कभी बैठ जाते और अचानक ड्योढी मे भाग गये और फिर कापने लगे। ऐसी कपकपी तो मैंने पहले कभी देखी ही नही इसके बाद वे बोले कि मुझे भूख लगी है। 'अनाताली, आओ, खाना खायें,' उन्होने कहा। अनाताली मेरा नाम है"

"यह क्या है?" मिकेशिन न सूई लगाने की दवाई की खाली शीशी उठाते हुए पूछा।

"यह? वे अपने का इन्सुलिन की सूई लगाते है। उन्ह प्रमेह का रोग है," लडके ने बताया।

मिकेशिन न सिर हिलाया। वह एक-दो क्षण तक बेल्याकोव के चेहरे को ध्यान से देखता रहा और फिर बोला—"जल्दी-से थोडी

चीनी लाओ"। इसी समय वेल्याकाव को ऐंठन का ऐसा दौरा पड़ा कि छटपटाहट से उसका पलग चरमरा उठा। मिकेशिन न उसे सीधे लिटा दिया और तेजी तथा कुशलता से उसके मुह म चीनी डालने लगा। साथ ही उसने वालाद्या को आदेश दिया कि वह ग्लूकोस की अत शिरा सूई लगान के लिये सारा सामान तैयार कर द। कोई बीस मिनट बाद, जब ऐंठन जाती रही, वेल्याकोव को ऐड्रेनलिन की सूई लगाई गई। वह अब बेहद खुश और आश्चयचकित-सा लेटा हुआ था। दुबला पतला छोकरा कोन मे खड़ा हुआ उस भयानक दृश्य को याद कर रो रहा था।

"भरे दोस्त, आपने अधिक मात्रा म इन्सुलिन की सूई लगा ली थी ' मिकेशिन ने रोगी से कहा। "भगवान न करे, अगर फिर कभी ऐसे तबियत खराब हो जाये, तो झटपट सफेद रोटी का टुकड़ा या चीनी की दो डलिया खा लीजियगा। आगे को अधिक सावधान रहियगा। कल अस्पताल मे आइयेगा "

अधेरी ड्योढी को लाघते हुए मिकेशिन ने अचानक गाली बकी और झल्लाकर कहा—

"मैं कोई पादरी, बडा पादरी या ऐसा क्या हू?"

बग्घी मे बैठते हुए वह कहता गया—

"उस छोकरे ने तो मेरा हाथ चमने की कोशिश की!"

वोलोद्या कोचवान की बगल मे जा बैठा और दबी घुटी आवाज म बोला—

"साथी स्तीमश्विकोव, विज्ञान के बराबर कोई दूसरी शानदार चीज नही है। घडी भर पहले डाक्टर मिकेशिन ने एक आदमी को मौत के मुह से निकाल लिया, यकीनी मौत के मुह से।"

"यकीनी मौत से कोई किसी को नही बचा सकता," कोचवान न कड़ाई से कहा। "अगर मौत यकीनी हो, तो उस आदमी को बचाया ही नही जा सकता। तुम तो अभी हमारे साथ जाने लगे हो पर मैं तो कोई बीस साला स तुम्हारे इस विज्ञान को देख रहा हू। यकीनी मौत से बचा लिया यह भी अच्छी रही। हमारे बूढे मिकेशिन की तो बात ही क्या है, प्रोफेसर भी कुछ आदमियो को नही बचा सकते, जिसकी मौत यकीनी हो।"

स्नीमश्चिकोव स`देहशील मन का व्यक्ति था और डाक्टर मिकेशिन की ज़रा भी इज्जत नही करता था। बात यह है कि मिकेशिन बेहद विनम्र था और हर समय—"कृपया ऐसा कर दीजिये", "आपका बडा आभार मानूगा", "आपकी बडी मेहरबानी होगी", आदि वाक्य कहता रहता था। इसके अलावा उसके पास केवल एक ही ओवरकोट था, जिसे वह हमेशा पहने रहता था और कोचवान उसे "सबमौसमी" ओवरकोट कहता था।

रात के दो बज चुके थे। चाद नगर के ऊपर, उसके धूलभरे चौको, कुलीनो के भूतपूर्व पार्क, व्यापारियो के भूतपूर्व पार्क, गिरजाघर के गुम्बजो और चौडी ऊची नदी के ऊपर तैर रहा था। भूखे और गस्से मे आये हुए कुत्ते भौक रहे थे और अपनी जजीरो को खनखना रहे थे। नदी के दूसरे तट से जलते हुए जगल की गध आ रही थी। प्राथमिक डाक्टरी सहायता केन्द्र पहुचने पर डाक्टर मिकेशिन बग्घी से निकला, उसने अपनी सफेद टोपी उतार ली और बठी-सी आवाज़ मे कहा—

"सुदर दश्य है न, वोलोद्या।"

"धन्यवाद, अन्तोन रोमानोविच," वोलोद्या बुदबुदाया।

"किस चीज के लिये?"

"यही मुझे शिक्षा देने के लिये।"

"मैं? तुम्हे शिक्षा देता हू?" मिकेशिन ने सचमुच हैरान होते हुए कहा।

"मेरा मतलब उस शिक्षा से नही है। मेरा अभिप्राय है मसलन आज रात को " वोलोद्या बिल्कुल घबरा गया था।

"आह, आज रात का।" मिकेशिन ने उदासी से कहा। "तुम्हारा मतलब उस बेत्याकोव से है? मगर वह तो बहुत साधारण, बहुत ही मामूली बात थी।"

मिकेशिन की आवाज़ मे वोलोद्या को एक जाने-पहचाने अन्दाज़—पोलूनिन के अन्दाज—की झलक मिली। उसी अन्दाज की, जिसमे कुछ मज़ाक, कुछ व्यग्य और थकान का पुट होता था।

पढाई शुरू ही हुई थी कि नदी के दूसरे तट पर लकडी के गोदामो मे आग लग गई। पौ फटने के समय उन बैरको मे आग भडक उठी

जहा खुली मो रह थे और किसी की भी बसन पर आग नहीं खुली। तेज हवा के झोके लाल अगारा और सुलगती राख का इधर-उधर बिखेर रह थे। म्नीमश्चिराव के मुश्री घोडे हिनहिनाय, श्रड और खाई म उतर गय। आग बुझानेवाली मोटर घटियां बजाती हुई एक दूसरी के पीछे तेजी से पुल के पार जा रही थी। तिरपाल के लबादे पहने हुए जिनम धुआ निकल रहा था, आग बुझानेवाल लोग जल हुआ का लपटा म स बाहर निकाल रह थे और अस्पताल के परिचारिक भाग भागकर उन्ह एम्बुलस बग्घिया और कारा म पहुचा रह थे।

"जल हुआ का इलाज करन के मामले म हम अभी भी असमय है" जब इस भयानक दिन का अन्त हुआ, ता मिवेशिन न कहा। उसकी आखें सूजी हुई था और होठा पर पपडी जमी थी। उसकी सफेद टोपी कहीं खो गयी थी और अब उसके बाल रायो की तरह सीधे खडे हुए थे।

इसी परेशानी के दिन की दोपहर को वोलोद्या ने वार्या को लेनिन सडक पर जाते देखा। वार्या न उसे दूर से ही पहचान लिया। वह सदा की भाति कोचवान की बगल मे बैठा था। वार्या ने अपना हाथ जरा ऊपर भी उठाया, पर हिलाने की हिम्मत न कर पाई। वोलोद्या के चेहरे पर बेहद परेशानी और कठोरता झलक रही थी।

पतझर के दिनो की पढाई शुरू होते होते वोलोद्या न बहुत-सी बाता को अतीत की चिन्ताए मान लिया। इन्ही मे सूजन के लक्षण थे, जिन्ह उसन एकबार कविता की भाति मुह जबानी याद कर लिया था—कालोर, डोलोर, टयमर, रूबोर एत फुक्तिसओलेसा। इनका अर्थ था—जलन, दर्द, अर्बुद, लाली और काय-बाधा। उसका यह विश्वास भी कि किसी विषय का सार-तत्त्व आसानी से समझा जा सकता है, बीती बात बन चुका था। मध्ययुगीन चिकित्सा प्रणाली की पहेलिया और डाक्टर पारासेलसस के बारे मे वाद विवाद भी अतीत की कहानी हो गया था। पारासेलसस दिल की शकलवाले पत्ता स दिल का और गुर्दे की शकलवाले पत्ता स गुर्दे का इलाज किया करता था। शव परीक्षा कक्ष के भारी दरवाजे का देखकर जिस पर यह लिखा हुआ था—'यहा मृत्यु जीवितो की सहायता करती है," उसके दिल मे जो डर पैदा होता था वह बहुत पहले ही उससे निकल गा

चुका था। अब इस कक्ष मे वह आत्मविश्वास और अपने को पूरी तरह शान्त अनुभव करता। यहा मौत उसके लिये रहस्य न रहकर "कलमुही चुडल" बन गई थी, जिससे हर दिन चौक्स रहना और मोर्चा लेना जरूरी था। पर विजय को कैसे सुनिश्चित किया जाये?

शव देखकर अब वोलोद्या भयभीत नही होता था। पर एक दिन शव-परीक्षा कक्ष की मेज़ पर एक उन्नीस वर्षीय नौजवान खिलाडी का सवलाया हुआ और शानदार शव देखकर उसके दिल की बहुत बुरी हालत हुई। उसे लम्बे और स्वस्थ जीवन के लिये तयार किया गया था। उसकी जान क्यो नही बचायी जा सकी? उस "कलमुही चुडैल" की क्यो जीत हुई? कब तक डाक्टर आह भरते और हाथ झटकते हुए बेकार ही यह कहते रहगे कि विज्ञान अपनी निहित शक्तिया से अभी तक अनजान है?

वह बहुत कुछ पीछे छोडकर आगे बढ चुका था पर अभी कितने दरवाज़े उस खोलने थे और क्या कुछ उनके पीछे छिपा हुआ था?

अब वोलोद्या ने जवानी के दिना की कट्टरता और निर्णयिकता स अपन प्रोफेसरो और अध्यापको को समझदार और बुद्धू की कोटिया मे बाट दिया। पाच ठीक ही कहता था कि मानवजाति को लेव तालस्तोय, चायकोव्स्की, मेदेलेयेव, लोमोनोसोव, मयाकोव्स्की और शोलाखाव की इसलिये जरूरत है कि वे ऐसे प्रतिभाशाली गिने गिनाये हैं, जबकि सभी डाक्टर प्रतिभाशाली नही हो सकते। "सभी क्षेत्रा के लिय उनकी सख्या काफी नही रहगी। समझे, मेरे गममिजाज दास्त!"

साल के आरम्भ मे काफी कठिनाइयो का सामना करना पडा। "अपना आप जलाकर दूसरो को रोशनी देना' इतना आसान नही था, जितना कि लगना था। सबसे पहले ता यह जानना जरूरी था कि ऐसी "रोशनी" कैसे दी जाये, जो कुछ काम आ सके। पर तब क्या किया जाये अगर मिकेशिन जसा अनुभवी अच्छा और ईमानदार डाक्टर भी गर्मी के दौरान उससे बार-बार यह कहता रहता था—

"सहयोगी, यह अभी हमारे बस की बात नही है।'

या फिर यह—

"हम इस प्रक्रिया को नही रोक सकते।"

अथवा यह—

"वोलोद्या क्या बेकार अपने को परेशान कर रहे हैं, हम तो अभी जुकाम का इलाज करने में भी असमर्थ हैं।"

पोलूनिन, जो बेहद समझदार व्यक्ति थे, यह पूछे जाने पर कि मरीज के लिये क्या दवाई लिखी जाये, कभी-कभी जवाब देते—

"कुछ भी नही। बीमारी अपने आप ही ठीक हो जायगी।"

पोलूनिन ने उस पोलिश नारी के सिलसिले में ऐसा जवाब दिया था, जो नील नयना और गौरवदना थी तथा पोलूनिन की क्लीनिक में वोलोद्या जिसकी देखभाल कर रहा था।

'बीमारी अपने आप ही ठीक हो जायगी।"

"पर कैसे?' वोलोद्या ने हैरान होकर पूछा।

ऐसे ही!'

' खुद-ब खुद?"

"इसे अच्छी संतुलित खुराक आराम, नींद और आपके साथ जब तब कुछ गपशप करनी चाहिये। आप समझदार, पर कुछ अधिक ही गम्भीर नौजवान हैं। कुछ समय बीतने पर यह बीमारी ठीक हो जायेगी। आप कुछ आपत्ति करना चाहते हैं?"

आपत्ति करने को कुछ नही था।

खुद प्रोफेसर झोवत्याक

कुछ अजीब बातों की ओर वोलोद्या का ध्यान गया, जिससे उसे परेशानी हुई। "इलाज' के सिलसिले में जितनी अधिक दौड़ धूप की जाती जितनी अधिक विविधतापूर्ण चिकित्सा होती जितनी अधिक बार दवाई पिलाई जाती, रोगी उतना ही अधिक आभार मानता। दूसरी ओर, अगर रोगी को कम दवाई दी जाती, प्रयोगशाला सम्बन्धी तरह-तरह के परीक्षण लगातार न किये जाते, तो रोगी यह शिकायत करते कि उनका बहुत "कम इलाज ' किया जा रहा है, कि "उन्हें कोई लाभ नहीं हो रहा, कि उनकी उपेक्षा की जा रही है '। वोलोद्या का इस बात की ओर भी ध्यान गया कि मेहरबान" किस्म के डाक्टर ही, वे कुशल ईमानदार और प्रतिभाशाली हों या न हों, सबसे अधिक लोकप्रिय थे। रोगियों को यह भी पसंद था कि उनका

डाक्टर "प्राफेसर जैसा" प्रतीत हो, उसकी कटी छटी बढ़िया दाढ़ी हो और वह उंगलियों में अंगूठियां पहने हो। जब अपने धंधे में शान-बान का महत्त्व समझनेवाला कोई डाक्टर ठाठ से कमरे में प्रवेश करता तो रोगियों पर बहुत प्रभाव पड़ता।

"आह, कैसे प्रभावशाली आदमी हैं!" वालोद्या ने एक बार एक बूढ़ी बीमार औरत को झोवत्याक की प्रशंसा करते हुए सुना। वह खासा मूर्ख और अत्यन्त आत्मविश्वासी आदमी पर लोकप्रिय डाक्टर और सिर से पैर तक प्रोफेसर था। "वे औरों जैसे नहीं हैं! इन्हें मैं असली प्रोफेसर मानती हूं!"

मधुर मुस्कान, बोलने से प्यार भरी छेड़छाड़, कोई छोटा मोटा मजाक, झोवत्याक ऐसे सभी उपायों का उपयोग करता और अपनी लोकप्रियता बनाये रखने के लिये कोई कोर-कसर न उठा रखता। उसे देखकर रोगी ऐसे ही खिल उठते जैसे सूरज को देखते ही सूरजमुखी के फूल। दूसरी ओर, धीर-गम्भीर, गुपचुप और उदासमुख सर्जन पोस्तनिकोव को, जिसके पास कोई भी उपाधि नहीं थी, अक्सर वही लोग निन्दा-बुराई करते जिन्हें वह ऐसी मुसीबत से निजात दिलाता था, जहां प्रोफेसर झोवत्याक नजदीक फटकने की हिम्मत भी नहीं करता था। जब जोखिम का मामला होता, तो वह पोस्तनिकोव को ही आगे करना बेहतर समझता। बहुत इने गिने और ऐसे रोगियों के सिलसिले में, जिनके बचने की कोई उम्मीद न होती, जब पोस्तनिकोव कोई "भूल" करता, तो प्रोफेसर झोवत्याक इत्र लगी चांदवाले अपने सुन्दर सिर को भर्त्सना से देर तक हिलाते हुए मीठी-कोमल आवाज में उसकी आलोचना करता।

"आह, सहयोगी, आपने यह बेसमझी का काम किया!" वह कहता। "जो आपरेशन करने के लायक नहीं था, आपको उसका आपरेशन करने की क्या सूझी थी? हमारे आंकड़े खराब करने की क्या जरूरत थी? वह अपने सगे-सम्बन्धियों के बीच बड़े चैन से घर पर ही चल बसता, पर नहीं, आपको तो अवश्य ही मेरे अच्छे रिकार्ड पर पानी फेरना था। आपको इससे क्या लाभ हुआ? नहीं, मेरे दोस्त, आप फिर कभी ऐसा मत कीजिये, मेरा नाम नहीं बिगाड़िये। मेरी प्रतिष्ठा का तो ख्याल रखिये। एक बार फिर ऐसी ही जोखिम उठायेंगे

तो लोग खुद मेरे ही बारे मे बात करने लगेंगे, कहेंगे कि प्रोफेसर झोवत्याक ही लापरवाह है। मैं अपने नगर या प्रदेश म कोई ऐरा गैरा तो हू नही और आपके कारण मैं अपनी इज्जत को धूल म नही मिलाना चाहता।"

गानिचेव या पोलूनिन से भिन्न, झोवत्याक अपना परिचय देते हुए हमेशा अपनी उपाधि पर जोर देता हुआ कहता—

"प्रोफेसर झोवत्याक।"

वह कभी-कभार और भद्दे ढग से आपरेशन करता, पर उसका खूब दिखावा करता और काम करते हुए जाने मान वाक्य दोहराता रहता, जिनके बारे मे पोलूनिन ने एक बार गुस्से म आकर कहा था कि वह "उद्धरणो को उद्धृत करता रहता है"। अगर पोस्तनिकोव उसकी बगल मे न होता, तो झोवत्याक कोई छोटा-सा आपरेशन भी न करता। वह तो अभ्यास करनेवाले विद्यार्थी के समान प्रतीत होता। कोई भी यह देख सकता था कि पोस्तनिकोव घबराहट से उसे देख रहा है, कि हर किसी को, यहा तक कि खुद झोवत्याक को भी शर्म आ रही है। आखिर वोलोद्या ने एक बार उसे भद्दे-से आपरेशन के बाद अजीब से अन्दाज़ म यह कहते सुना—

"बुढापा बुरी बला है कभी वह भी ज़माना था "

"कौन-सा जमाना था?" पोस्तनिकोव ने रुखाई से पूछा।

कभी-कभी पोस्तनिकोव अपनी हल्की नीली और कठोर आखो को अपने सचालक के असीरियाई दाढीवाले चमकते दमकते चेहरे पर देर तक गडाये रहता। उस समय कोई भी यह नही कह सकता था कि वह क्या सोच रहा है। धारा प्रवाह अपनी बात कहता और खुद अपनी ही आवाज़ मे रस विभोर होता हुआ झोवत्याक अचानक चुप हो जाता, उसके चेहरे पर घबराहट और परेशानी अकित हो जाती, शब्द अधूरे ही रह जाते और वह झटपट बाहर चला जाता।

झोवत्याक को पोस्तनिकोव फटी आखो नही भाता था, पर उसके बिना उसका काम नही चलता था। पोस्तनिकोव ही अस्पताल की सारी जिम्मेदारी सम्भालता था, वह विद्यार्थियो को अभ्यास कराता और कठिन ऑपरेशन करता। ऐसा भी सुनने म आया था कि वही अपने सचालक यानी झोवत्याक के लेख लिखता था। झोवत्याक बेहद व्यस्त

व्यक्ति था। वह सभी जगह परामश देता था (जाहिर है कि जहा मामला पेचीदा होता, वह गुपचुप पोस्तनिकोव को साथ ले जाता), अपने अधिकारियो के साथ वह शिकार करने जाता, बैठका और सभाओ म गम्भीर तथा कामकाजी ढग मे हिस्सा लेता जब उमे अपना कोई अहित होता दिखाई न देता, तो कभी कभी चुभती हुई बात भी कह देता, डाक्टरा के नगरीय और प्रादेशिक सम्मेलना का उदघाटन भी करता, उसे यह भी मालूम था कि किसी सभा-सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए कितनी दर नक तालिया बजानी चाहिय और अपन सभी भाषणा को इस तरह आरम्भ करता—

"प्यारे साथियो! सबसे पहले तो में सेचेनोव डाक्टरी सस्थान के वज्ञानिको की ओर से आपको नमस्कार करता हू!" (इतना कहकर वह तालिया बजाने लगता और फिर अपनी लम्बो तथा तग नाटबुक का पष्ठ उलटता)। "मै आकडो से शुरू करता हू। १९११ मे हमारे सारे प्रदेश मे केवल १२२ पलग थे "

"जरा गौर से सुनिये!" पोलनिन कहते। "अब आप कोई आश्चयचकित करनेवाला समाचार सुनेंगे। यह तो जाहिर ही है कि जब निकोलाई सत्तारूढ था, उस समय स्वास्थ्य रक्षा की ओर इतना ध्यान नही दिया जाता था, जितना सोवियतो के अन्तगत!'

पोलूनिन की वात हमेशा सही निकलती। झोवत्याक घिसी पिटी बाता को वार-वार दोहराता, प्रादेशिक वित्तीय विभाग के सचालक तक के छोटे माटे अधिकारियो की हल्की सी आलोचना करता जबकि अध्यक्षमडल के अय सदस्य फुसफुसाकर बाते और विचारो का आदान-प्रदान करत रहत और श्रोतागण भी लगातार खुसुर फुसुर करते जाते। झावत्याक किसी भी बात की परवाह किय बिना अस्पताल के पलगा के वारे मे अपना पाठ पढता जाता, वष भर म जितने पलगा का उपयाग होता, उनके औसत को साल के दिना से गुना करता, दश भर म उपलब्ध पलगो का विश्लेषण करता, अस्पताल के पलगा की किस्मो का बखान करता और अपन भाषण के समय को तीन बार बढवान के बाद आखिर सिर ऊचा किये हुए मच स नीचे उतरता।

"वह ऐसा क्या करता है?" वोलोद्या न पोलूनिन से एक बार पूछा।

"तारपीन का भी कुछ उपयोग तो होना ही है," पालूनिन ने पहेली की शक्ल म जवाव दिया।

"तारपीन यहा कहा से ग्रा गया?"

"जानत हो कि कोजमा प्रुत्काव ने 'चिन्तन के फल' म क्या लिखा है—'जाश की जय होती है'। उसने ऐसी ही एक ग्रय स्वत सिद्ध वात कही है—'हमेशा डीग मारो'।" पोलूनिन ने उदासी स मुस्कराकर दूसरी ग्रोर मुह कर लिया।

झोवत्याक विद्याथिया की, ग्रौर विशेपत ऐसे विद्यायियो की, पीठ ठोकता रहता, जिह समझदार माना जाता था। वह येव्गेनी स्तेपानोव के साथ भी बहुत ग्रच्छी तरह पेश ग्राता, क्योकि वह सस्थान के समाचारपत्र का सम्पादक था। वह खुश्क पीच को भी खुश रखने की कोशिश करता, क्योकि किसी के भूक ग्रसन्तोप प्रकट करन पर भा झोवत्याक परेशान हो उठता। पर सबसे ग्रधिक तो वह थपथपाता वोलोद्या की पीठ, क्योकि उसे बहुत ही योग्य विद्यार्थी माना जाता था ग्रौर इसलिये भी कि वोलोद्या उसे शत्रुता की भावना से देखता था। झोवत्याक के वेहद स्नेह प्रदशन के बावजूद वोलोद्या को इस वात बातूनी प्रोफेसर को समझने मे देर न लगी ग्रौर गमसुम तथा धीर गम्भीर पास्तनिकोव के प्रति उसे जितने ग्रधिक प्यार की ग्रनुभूति होती, झोवत्याक के प्रति उतनी ही ग्रधिक घृणा की। पर मुमकिन है कि वोलोद्या ने झोवत्याक को बहुत ग्रच्छी तरह से न समझा हो। शायद स्वाभाविक तौर पर हर चीज के प्रति सजग होने के कारण वोलोद्या का ध्यान मजाक की हद तक जानेवाली उस ग्रतिशयोक्तिपूण नम्रता की ग्रोर गया था, जो पोलूनिन सजरी क्लिनिक के सचालक के प्रति प्रकट करते थे।

वृद्ध झोवत्याक यह नही समझ पाया कि पोलूनिन ऐसी नम्रता उन लोगा के प्रति ही व्यक्त करते थे, जिह वेहद घृणा की दष्टि म दखते थे। पर वोलोद्या तो गानिचेव ग्रौर पालूनिन को बहुत ग्रच्छी तरह समझता था। उसने इस वात की ग्रोर ध्यान दिया कि झोवत्याक की वात सुनते हुए वे कसे एक-दूसरे की ग्रोर देखत हैं। एक बार बगीचे मे ग्रपनी मनपसद बेंच पर बठे हुए व जा वात कर रहे थे,

वह भी उसके कानो मे पड गई और वोलोद्या ने उसकी तरफ विशेष ध्यान दिया।

"हम उसे उचित तौर पर ही उपक्षा की दृष्टि से देखते है," गानिचेव ने ऊब भरे अदाज मे कहा। "उपेक्षा ऐसी घणा को कहते हैं, जो शान्ति से अनुभव की जाती है।"

"क्या बहुत जल्द ही हम शान्ति की अवस्था मे नही पहुच गये है?" पोलूनिन ने झल्लाकर पूछा। "क्या हम समाज के इस लोकप्रिय तिकडमवाज के प्रति ऐसा जरूरत से ज्यादा ही बेसरोकारी का रवैया नही अपना रहे है?"

"ओह, हटाइये भी " गानिचेव न लापरवाही स जवाब दिया। "हम लाग ईमानदारी से अपना काम कर रहे हैं, आप और क्या चाहते है? आप जानते ही है कि उससे उलझने म कितना अधिक समय नष्ट हो जायेगा।"

वोलोद्या उनके निकटवाली बेच पर बठा था। यह साचते हुए कि कही वे ऐसा न समझ ले कि वह चुपके-चुपके उनकी बाते सुन रहा है, वह खास दिया। पालूनिन ने लापरवाही से उसकी ओर देखा और ऐसी बात कही, जो वोलोद्या के मानस पटल पर बहुत समय के लिये अकित होकर रह गई।

"हमारी सबसे बडी मुसीबत है उदासीनता। मैं कम उदासीन हू और आप अधिक। हम अच्छी तरह से जानते हैं कि वह बेहद कमीना है और हमे निदयता से उस पर कडी चोट करनी चाहिये। किन्तु हम क्या करते है? बस हस देते है।"

वोलाद्या न निष्कष निकाला—"उदासीनता। यह उदासीनता ही है। पोलूनिन की बात सही है। क्या उम्र अधिक होने के कारण ही लोग ऐसे थक जाते है या किसी दूसरे कारणवश? पर झोवत्याक तो हसता चहकता रहता है। वह तो शायद डक मारना भी जानता है।"

इसी दिन से वोलाद्या के लिय गानिचेव का प्रकाश मन्द और पोस्तनिकोव का प्रखर होन लगा। इस ढग के नियमनिष्ठ, कठोर और ऊपर को मुडी हुई पकी मूछावाले व्यक्ति का ध्यान भी वोलोद्या की ओर गया। पोस्तनिकोव उसे केवल उपस्थित ही न रहने देता, बल्कि अपने काम मे सहायता करने को भी कहता, निरतर वह काम

सिखाता, जिसे इतने बढिया ढग से करता था कि वोलोद्या को वहद ईर्ष्या होती।

पोस्तनिकोव के बारे म वोलोद्या की प्रशसा की उसके सहपाठियो पर विभिन्न प्रतिक्रिया हुई। "वह असली आदमी है," पीच न कहा। "पर उसके पास कैंडीडेट की उपाधि भी क्या नही है?" यूस्या यात्किना ने कहा। येव्गेनी स्तेपानोव ने धीरे धीरे कहा—"वालोद्या, तुम तो हमेशा किसी न किसी पर लट्टू होते रहते हो! उसमे कोई खास बात नही है पर यह मानना पडेगा कि वह असली तौर पर काम करनेवाला एक अच्छा डाक्टर है। किन्तु यूस्या की बात बिल्कुल सही है। यह बडी अजीब सी बात है कि हमारे देश मे प्रगति की जो सम्भावनाए है, उन्ह देखते हुए उसके पास कैंडीडेट की उपाधि भी नही है। बहुत मुमकिन है कि उसकी जीवनी मे कुछ 'सफेद' धब्बे हैं?" स्वेतलाना ने यह कहा कि उसे झोवत्याक इसलिये पसद है कि वह खुशमिजाज है, उसमे घमड नही है, कि वह विनम्र है। ओगुर्त्सोव ने पोस्तनिकोव की हिमायत की, साशा पोलेश्चूक ने स्वेतलाना को किसी कारण बेपेंदे की लुटिया की सना दी। मीशा शेरवुड ने चुप रहने मे ही अपनी भलाई समझी। वह अब अपनी जबान को लगाम दिये रहता था। इसके अलावा पोस्तनिकोव तो नही, झोवत्याक ही उन्ह परीक्षा के अक देता था।

पोस्तनिकोव

यह बात उस दिन से आरम्भ हुई, जब पोस्तनिकोव पोलूनिन के विभाग म परामश देने आया, सफेद रोगन किये हुए स्टूल पर बैठा और भूमापक मरीज़ दोब्रोदोमोव की जाच करने लगा। पाच मरीज़ोवाले वार्ड मे एकदम खामोशी छायी हुई थी। पोलूनिन ने उन्ह पहले से ही यह कह दिया था कि वे बिल्कुल कोई शोर न होने दे। पोस्तनिकोव उगलियो से रोगी के शरीर की जाच रहा था। उसे औज़ारो मे यकीन नही था। अपनी भावशून्य आखो को सिकोडकर कभी वह ज़ोर से और जल्दी जल्दी उगलिया चलाता और कभी बहुत ही धीरे धीरे। इसी तरह कोई आध घटा बीत गया। नीरस और एक ही ढग की थपथप से

ऊब-सी अनुभव होने लगी थी और वोलोद्या ने झल्लाकर यह सोचा—
"वह दिखावा कर रहा है, रोब जमा रहा है!"

पोस्तनिकोव अचानक सीधा होकर बैठा, उसने नर्स के हाथ से आयोडीनवाला शीशे का बर्तन लिया और दोब्रोदोमोव की नीली त्वचा पर एक समकोण बना दिया।

"यहां पीपदार फोड़ा है। इसे मेरे सर्जरी के वार्ड में भेज दीजिये।"

पोस्तनिकोव उठा, उसने सावधानी से मरीज को ढंक दिया और अपना सिर ताने हुए वार्ड से बाहर चला गया।

"देखा आपने?" पोलूनिन ने प्रशंसा करते हुए वोलोद्या से कहा।

"हां, देखा," वोलोद्या ने यन्त्रवत जवाब दिया।

"क्या देखा?"

"कमाल होते देखा!"

अगले मंगल को दोब्रोदोमोव का आपरेशन किया गया और पोस्तनिकोव का रोग निदान बिल्कुल सही निकला।

पालूनिन ने वोलोद्या को सलाह दी—

"अब पोस्तनिकोव से यह सीखिये कि ऐसे ऑपरेशन के बाद रोगी की कैसे देखभाल की जाती है। १६वीं शताब्दी में अम्ब्रुआज़ पारे कहा करता था—'मैंने ऑपरेशन कर दिया, अब भगवान उस घाव को ठीक करे'। आप भगवान से शिक्षा लीजिये। पोस्तनिकोव बहुत गहराई में जाता है, महज़ तजरबे नहीं करता। वह तो बहुत ही सोच समझकर कदम उठानेवाला सर्जन है। उससे शिक्षा लेने का अर्थ यह है कि आप हर तरह की परिस्थितियों में काम करना सीख जायेंगे और यह बहुत लाभदायक रहेगा। कौन जानता है युद्ध ही छिड़ जाये! हर जगह पर तो एक्स रे की मशीन का होना तो सम्भव नहीं। मैं आपको चेतावनी भी दे देना चाहता हूं अगर पोस्तनिकोव कुछ बुरी तरह से पेश आये, तो आप इसकी परवाह नहीं कीजियेगा। वह निपुणता प्रिय व्यक्ति है और उसे यह कतई पसंद नहीं कि कोई उसके रास्ते में बाधा बने। बेकार की जिज्ञासा उसे फूटी आंखों नहीं सुहाती। जो कुछ भी सम्भव हो, उससे सीख लीजिये। मैं तो यह कहूंगा कि जितना भी हो सके, उसे निचोड़ लीजिये और इसके लिये आप हमेशा उसके आभारी रहेंगे'

वोलोद्या ने अपने सहपाठियों के सामने पोलूनिन के शब्द दोहराये।

"बात नहीं, मेरे दोस्त मैं अपने को ऐसी परिस्थितियों में काम करने को तैयार नहीं करना चाहता, जहां एक्स रे की मशीन भी न हो," यव्गेनी ने चिल्लाकर कहा। "वास्तव में मैं तो ऐसी परिस्थितियों की कल्पना ही नहीं कर सकता। कुल मिलाकर, तुम्हारे पोलूनिन का दृष्टिकोण बड़ा अजीब-सा, कुछ बहुत ही "

"फिर वही बात?" पीच ने बिगड़ते हुए कहा।

'हां फिर!' यव्गेनी ने चुनौती के स्वर में जवाब दिया। "हां, फिर! अब तक गानिचेव और पोलूनिन थे और अब पास्तनिकोव की और वृद्धि हो गई है। ये हमारे लोग नहीं हैं, समझे! हमारे नाम नहीं हैं! मैं तो ऐसा ही समझता हूं!"

लगभग दो सप्ताह बाद पोलूनिन ने वोलोद्या से पूछा—

कहिये, निचोड़ रहे हैं न?'

'हां, निचोड़ रहा हूं।'

"आसान है या मुश्किल?'

"काफी मुश्किल।"

"इसीलिये इतने दुबले हो गये हैं।"

"पर मैं तो अभी भी इतना कम जानता हूं," वोलोद्या ने असन्तोष प्रकट किया। "बहुत ही कम जानता हूं!"

पोलूनिन ने अपनी बरसाती के ऊपर तक बटन बन्द किये, वोलोद्या की ओर अपना बड़ा-सा और गर्म हाथ बढ़ाकर कहा—

"अच्छा, मैं चल दिया। यह कोई बात नहीं कि आप बहुत कम जानते हैं। आपका दोस्त स्तेपानोव तो बहुत कुछ जानता है और उसका सारा ज्ञान साधारण है।"

वोलोद्या ने गहरी सांस ली और थका-हारा-सा मेपल वृक्षों की वीथिका पर चलते हुए सर्जरी विभाग की कम ऊंची इमारत की ओर चला गया। वहां, प्रयोगशाला में एक तिरंगा दोगला कुत्ता—शारिक—पिंजरे में बन्द था। वोलोद्या उस पर तजरबे करता था।

दरवाज़ा फटाक से बन्द हुआ, वोलोद्या ने बत्ती जलाई और कुत्ते को आवाज़ दी। शारिक ने अपने पिंजरे में से हल्की सी भूंक के साथ जवाब दिया और धीरे से पूंछ हिलाई। "मैं तो इसे केवल यातना

ही देता हू और यह है कि मेरा स्वागत करता हुआ पूछ हिलाता है!" वोलोद्या ने गुस्से से सोचा। जब उसे किसी पर दया आती, तो वह अवश्य ही यल्ला उठता।

प्रयोगशाला की खामोशी मे उसे पत्तागोभी के डठल चबाते हुए खरगोशा की आवाज़ सुनाई दे रही थी, सफेद चूहे शीशे के भरतबाना म भाग दौड रह थे और जिस कुत्ते पर मीशा शेरवुड तजरबे कर रहा था, उसने गहरी सास ली। पोस्तनिकोव बगलवाले कमरे मे काम कर रहा था। वोलोद्या को उसके "हा तो, हा तो" शब्द सुनाई दे रहे थ। पोस्तनिकोव यहा कम से कम दो घटे बिताता था, तजरबे करता था, सोचता था और फिर तजरबे करता था। "मेरे सचालन मे काम करनवाले अस्पताल म ' वोलोद्या को झोवत्याक के शब्द सुनाई दिय।

शारिक घसिटता हुआ पिजरे के दरवाज़े तक पहुच गया। वह अपन घावा को चाटता जाता था और दद से कापकाप उठता था।

"अरे उल्लू, बाहर आ न!" वोलोद्या फुसफुसाया। "मैं तरे लिय कटलेट लाया हू और कुछ चीनी भी। ले, शारिक, यह ले!"

खुद वोलोद्या को भी बहुत भूख लगी थी। सच तो यह है कि वह कटलेट, बल्कि यह कहना चाहिये कटलेट सैंडविच अपने लिये लाया था। पर चूकि शारिक ने रोटी खाने से इनकार कर दिया और वह ही दोनो मे से अधिक कमज़ोर था, इसलिये वोलाद्या ने उसे कटलेट द दिया और खुद पाव रोटी खाने लगा।

"ओह, यह भी पसद नही," वोलोद्या ने कहा। "तो अब कटलेट भी जनाब का पसद नही आता!"

शारिक ने उदासीनता से कटलेट को सूघा, मुह मोडकर दूर हट गया और सामनेवाले पजा पर सिर रखकर अपनी भीगी हुई और शोकग्रस्त आखें मूद ली। वोलोद्या ने ज़रा-सा कटलेट तोडा, उसे उगलियो से मथा और कुत्ते के मुह मे डाल दिया। इसी समय अपन रबड के दस्ताने उतारता हुआ पास्तनिकोव अ दर आया।

मानकिन बीमार पड गया है, उसे टानसिलाइटिस है," उसन कहा। (मानकिन अस्पताल का पुराना नौकर था, जो उन जानवरो को खिलाता पिलाता था, जिन पर तजरबे किये जाते थे)। "जानवरो

12

को खिलाया पिलाया नही गया। मुझे और आल्ला का आज इस भानमती के कुनबे का खिलाने पिलाने म काफी सिरदर्दी करनी पडी "

सुदर आल्ला ने पास्तनिकोव के कधे की आट से वोलोद्या का आख स इशारा किया। पोस्तनिकोव ने आखिर झटके के साथ अपने बाये हाथ का दस्ताना उतारा, उसे मेज पर फेंका और चूहावाले शीश के बतन पर नाखून रगडते हुए बोला--

"वोलोद्या, मैं तो आपको यही सलाह देता हू कि शारिक का घर ले जाइये। आपने उसकी जो चीरफाड की है, उसके बाद आप उसे यहा रखकर स्वस्थ नही कर सकेंगे। घर पर शायद आप फिर से उसकी ताकत लौटा सके। खैर, यह आपका निजी मामला है। शेरवुड न तो यह जवाब दिया था कि उसके मा बाप को कुत्ते पसन्द नही है।"

वालोद्या उस शाम का शारिक को घर ले आया और उसने वार्या का टेलीफोन किया।

"स्तेपानोवा," उसने पास्तनिकोव जैसी रूखी आवाज मे कहा, "तुम फौरन यहा आ जाओ, यह बहुत जरूरी है।"

"पर मुझे तो अपना काम " वाया ने कहना शुरू किया, किंतु वालोद्या ने उसकी बात बीच मे ही काटते हुए कहा--

'तुम्हारा काम तुम खुद जानो, पर यहा जरूर और फौरन चली आओ!'

बूआ अग्लाया घर पर नही थी। वोलोद्या ने अपनी "माद" म एक पुरानी रजाई पर शारिक को बिठा दिया। कुत्ता सिर से पैर तक कापता, अपने घावो को चाटता और लगभग इसानो जैसी आवाजें निकालता रहा। वोलोद्या ने थोडा सा दूध गम किया और उसम कुछ चीनी और एक अडा मिलाया। शारिक ने दूध सूघा और मुह फेर लिया।

"'ऐसी स्थिति मे डाक्टर को कब्र खादनेवाले के हाथ म मामला सौंप देना चाहिये,'' वोलोद्या को किसी पुरानी किताब म पढा हुआ यह वाक्य याद हो आया। उसने घणा से 'शरीर रचना विज्ञान के पाठ' चित्र की ओर देखा। दे ला दूसरो को प्रकाश, जबकि कुत्ते का भी इलाज नही कर सकते! सो भी तब, जब यह स्पष्ट है कि उसे क्या तकलीफ है।

वह अभी शारिक पर झुका हुआ उबले हुए ठडे आलू खा रहा था कि वार्या आ गई।

"कुत्ता!" वह खुशी से चिल्ला उठी। "तुम मेरे लिये कुत्ता खरीद लाये!"

"चिल्लाओ नही!"

"क्या यह बीमार है? तुम इसका इलाज कर रहे हो? ओह, वोलोद्या, मेरे लिये इसे भला चगा कर दो!" वार्या फिर जोश से चिल्लाई। "यह बढिया नसल का है न?"

वह वोलोद्या की बगल मे बैठ गई।

"यह मुझे काटेगा तो नही?"

"मैंने इसकी अतडियो का बहुत बडा हिस्सा काट डाला," वोलोद्या ने उदासी से कहा। "इसके अलावा मुझे कुछ और भी करना पडा। फिर भी वह मुझे अपना दोस्त मानता है और मेरे हाथ चाटता है। शायद केवल यही एक ऐसा जीवित प्राणी है, जो मुझे डाक्टर समझता है।"

"और मैं? क्या मैं तुम्हे डाक्टर नही समझती?"

"पर खैर, मुझे शारिक को ठीक करना है और तुम इस काम मे मेरी मदद करोगी। समझ गइ?"

"हा।"

"तो, इसकी देखभाल करो। मैं तो रात भर अस्पताल मे काम करुगा। अगर कुछ गडबड होने लगे, तो सर्जरी विभाग मे मुझे टेलीफोन कर देना। टेलीफोन नम्बर लिख लो "

वार्या ने आज्ञा का पालन करते हुए टेलीफोन नम्बर लिख लिया। वोलोद्या ने दाढी बनायी, स्नान किया और वार्या द्वारा तवे पर तैयार किये गये अजीब से भोजन के बाद, जिसे उसने "कल्पना" की सज्ञा दी, वह वार्या को नमस्कार कहे बिना ही चला गया। वास्तव मे वह मिलन और जुदा होने के समय नमस्कार कहना, हालचाल पूछना, दाढी बनाना और बाल कटवाना तो हमेशा ही भूल जाता था। वह हमेशा ही वह भूल जाता था, जिसे वार्या "इन्सान की तरह बर्ताव करना" और येव्गेनी "सार्वजनिक सफाई के नियमो का पालन करना" कहता था।

दरवाज़ा फटाक से बद हो गया। वार्या ने अपनी जेब म कभी की पडी हुई मीठी गोली निकाली, उसे नल के पानी से धाया और कुत्ते के मुह मे ठोस दिया। शारिक ने उसे दातो से चबाया और पूछ हिलाई। तब वाया ने दाढी मूछोवाले रोगी के मुह के करीब फश पर चीनीदान की सारी चीनी उलट दी। शारिक ने चीनी चाटी और कुछ ही क्षण बाद फश पर चीनी का एक कण भी बाकी नही बचा।

"बहुत अच्छा, बहुत प्यारा कुत्ता है तू! प्यारा, प्यारा, राजदुलारा है तू!" वार्या उसी अजीब और बेहूदा ढग से गुनगुना रही थी, जैसा कि लाग अपने पालतू जानवर के साथ अकेले रह जाने पर करते है। "मेरे प्यारे कुत्ते, अब तू दूध पियेगा, मेरी बात मानेगा, अच्छा मुन्ना बनेगा शारिक! तेरी बढिया नई अन्तडिया बन जायेंगी। यह ले, मेरे प्यारे कुत्ते, यह ले! अब मैं तुझे शारिक नहा कहूगी अब तेरा नाम एस होगा। समझा? मेरे समझदार, रोबीले और सुदर एस!"

वोलोद्या मरहम पट्टी के कक्ष मे से एक ट्राली को बाहर निकाल रहा था, जब रात की ड्यूटी करनेवाली नस आल्ला ने उसे टेलीफान पर बुलाया। रात के दस बज चुके थे और प्राफेसर झोवत्याक की क्लीनिक के रोगी सोने की तैयारी कर रहे थे। इसलिये वोलोद्या ने फुसफुसाकर ही बातचीत की।

"वह खाने लगा है!" वार्या ने चिल्लाकर कहा। "वह खाने लगा है! उसने थोडा सा दूध भी पिया है!"

"धयवाद," वोलोद्या न जवाब दिया।

"अब वह शारिक नही रहा, एस हो गया ह। मैं उसके नाम के हिज्जे करू? मैं उसे बाहर ले जाऊ? या शायद वह पुरानी पलीता ही ठीक रहेगी, जो मुझे रसोईघर म से मिल गई है "

'बहुत, बहुत धयवाद," वोलोद्या न कहा और रिसीवर रख दिया।

'वोलोद्या, क्या तुम यह ट्राली यही छोड दोगे?' अपनी सुदर आखो को मटकाते हुए आल्ला ने पूछा। उस मोटी मोटी बरौनिया और रसीले होठोवाला यह प्रचण्ड स्वभाव का विद्यार्थी बहुत अच्छा लगता था। "क्या मैं तुम्हे दिखा दू कि ट्रालिया कहा खडी की जाती हैं?"

आल्ला तो वोनाद्या को प्यार ही करने लगी थी, पर इसके बावजूद वह उससे यह अनुरोध करते हुए न झिझकती कि वोलोद्या एक दो घटे तक उसकी ड्यूटी पूरी कर दे, ताकि वह जरा झपकी ले ले। वह उन लोगो मे से थी, जो यह मानते हैं कि तुम चाहे कितना ही जोर क्या न लगाओ, दुनिया भर के काम तो कभी पूरे नही होगे। वह तो साफ तौर पर यह कहती थी—"अपनी सेहत अपने जिस्म के लिये कही ज्यादा जरूरी है । वोलोद्या इसके जैसी सभी लडकियो को यूस्या योल्किना की ही टोल के पछी मानता था। उसे इस बात की हैरानी होती थी कि पोस्तनिकोव को यह एहसास क्यो नही होता था। वेशक नपे-तुले ढग से ही सही, पर वह उसकी प्रशसा भी करता था, जबकि वह ढोग कपट की जीती जागती तस्वीर थी।

दो, तीन, चार घटे बीत गये, पर आल्ला अभी भी सो रही थी। रोगियो के सकेत मिलने पर वोलोद्या उनके पास गया। एक को उसने मार्फिया की सूई लगाई, दूसरे रोगी की उस टाग को आरामदेह स्थिति मे टिकाया, जिसका आपरेशन किया गया था, और कुछ देर तक तीसरे रोगी के पास बैठा रहा, क्योकि रात के समय उसका दिल बहुत डरा सहमा हुआ था। सुबह के ४ बजे ड्यूटी करनेवाली लम्बी और तीखी नाकवाली सर्जन डाक्टर लूश्निकोवा ने पोस्तनिकोव के घर पर टेलीफोन किया और उससे उस फौरी ऑपरेशन के बारे मे कुछ परामर्श लिया, जो वह करनेवाली थी। उसने पोस्तनिकोव को टेलीफोन किया था, झावत्याक को नही।

वोलोद्या टेलीफोन के इतना निकट खडा था कि उसे पोस्तनिकोव द्वारा आम तौर पर कहे जानेवाले ये शब्द "शुभकामना करता हू!" सुनाई दिये।

आराम करने के बाद ताजादम नजर आनेवाली आल्ला ने फिर से आखें मटकाई और फुसफुसाकर कहा—

"नीद से बडा प्यार है मुझे!"

वोलोद्या ने मुह फेर लिया।

जब ऑपरेशन चल रहा था, तो पोस्तनिकोव आया। उसकी चुभनेवाली मूछो के सिरे उभरे हुए थे, उसकी हल्की नीली आखें बर्फ की तह की भाति मद और शान्त थी। वह हमेशा इसी तरह आता

था और जब तक उसकी सलाह, हिदायत या मदद बिल्कुल ज़रूरी न हो जाती, कभी दखल नहीं देता था। अगर सब कुछ ठीक-ठाक होता, तो अपना सिर अकड़ाये और जवानो की भाति सधे कदम रखता हुआ चुपचाप वहा से चला जाता।

उस सुबह को वहा से जाते हुए उसने वालोद्या से कहा—

"कल इतवार है। अगर कोई खास दिलचस्प कार्यक्रम न हो, तो लगभग आठ बजे मेरे घर आ जाना। पर नौ बजे तक तो ज़रूर ही आ जाना।"

"धन्यवाद," वोलोद्या तो ऐसे हक्काबक्का गया था कि उससे और कुछ कहते ही नहीं बना।

'ज़रूर आना," पोस्तनिकोव ने सिर हिलाकर कहा।

"उसने तुम्हे अपने घर आने को कहा है?" पोस्तनिकोव के जाते ही आल्ला ने पूछा। "अपने फ्लैट पर?"

"हा।"

"ओह, तकदीर के सिकन्दर हो।"

हमारी राहें अलग-अलग हैं

वोलोद्या सुबह के छ बजे लौटा और चुपचाप घर मे दाखिल हुआ। शारिक लडखडाता हुआ उसकी ओर आया। वार्या कपडे पहने और हथेली पर चेहरा टिकाये हुए वालोद्या के बिस्तर पर सो रही थी। मेज का लैम्प ढका हुआ था, ताकि फर्श पर उस जगह रोशनी न पडे, जहा शारिक के लेटने की सम्भावना थी। स्वस्थ होते हुए भावी एस के बिस्तर के नज़दीक ही गुलाबी गत्ते से बहुत सुन्दर ढग से ढकी हुई पुरानी पनीली रखी थी।

"वालोद्या!' बूआ अग्लाया ने धीरे से आवाज़ दी।

वोलोद्या जुर्राबे पहने और इस बात की कोशिश करते हुए कि शोर न हो, बूआ के कमरे मे गया। बूआ अग्लाया गर्दन तक अपने को कम्बल से ढके हुए बिस्तर पर बैठी थी। अपनी तनिक तिरछी और प्यार भरी नज़र से उसने वोलोद्या की ओर देखा।

"थककर चूर हो गये हो न?'

"लगभग।"

वालोद्या ने खुसुर-फुसुर करते हुए पोस्तनिकाव के निमन्त्रण की चर्चा की। घड़ी भर को उसे लगा कि वह भी कुछ कहना चाहती है, पर उसे पूछने का ध्यान न रहा क्योंकि विद्यार्थी जीवन सम्बन्धी और भी ढेरों समाचार उसे अपनी बूआ को सुनाने थे। जब उसकी बात खत्म हुई, तो नींद की बारी आ गई। जैसे ही उसका सिर तकिये को छूता था, उस पर नींद हावी हो जाती थी। नर्म-नर्म और गुदगुदे बिस्तर में धसते हुए उसे बूआ की धीमी धीमी आवाज सुनाई देती रही। पर उसी क्षण वह गहरी नींद सो गया।

"तो शारिक, देखते हो यह हाल है," भावी एस के कान के पीछेवाले सख्त बालों को थपथपाते हुए बूआ अग्लाया ने कहा। "कोई भी तो मेरी परवाह नहीं करता।"

शारिक ने नाक से सू सू की और बड़ी सावधानी से अपने को तनिक खुजलाया। बहुत ध्यान रखता था वह अपना।

"मैं उसकी हर बात में दिलचस्पी लेती हू," कुत्ते का कान सहलाते हुए उसने धीरे से कहा। "ऐसा क्या होता है? अब तुम बेकार कू-कू नहीं करो, दर्द थोड़े ही होता है। बहुत ही कमजोर दिल के हो तुम।"

वार्या नाश्ते के लिये ठहर गई, यद्यपि उसके दादा मफोदी ने चीख चीखकर टेलीफोन पर यह कहा–

"कोई लड़की किसी पराये घर में सोये और वहीं खाये पिये, यह बड़ी बेहूदा बात है! भगवान की दया से हम भूखे नंगे नहीं है। हमारा अपना घर-बार है और खान पीन की भी कुछ कमी नहीं है!" बूआ अग्लाया प्रश्नसूचक दृष्टि से वालोद्या की ओर देखती रही–वह पिछली रात की उसकी खबर के बारे में पूछता है या नहीं? पर नहीं, उसने नहीं पूछा। वार्या भूतपूर्व शारिक को, जो अब कुछ सजीव हो उठा था, अपनी ओर पंजा बढ़ाना सिखा रही थी। कुत्ते ने उदास मन से जम्हाई ली और मुह फेर लिया।

"तुम्हारे ख्याल में एस ठीक हो जायगा?" वार्या ने वोलोद्या से पूछा।

"हू," वोलोद्या ने जवाब दिया।

"यह जम्हाइयां क्या लेता रहता है? ऑक्सीजन की कमी अनुभव करता है क्या?"

वालोद्या ने इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया।

"वह ऐसी मेहरबानी क्या करने लगा!" वार्या ने बूआ अग्लाया से कहा। 'वह तो महान व्यक्ति ठहरा, भावी चमकता हुआ सितारा।'

'सभी महान व्यक्तियों की भांति भुलक्कड़ भी!" उसकी बूआ ने जवाब दिया।

पर महान व्यक्ति साधारण लोगों की उपेक्षा तो नहीं करते न? पर आपका भतीजा ऐसा करता है।"

वार्या और बूआ अग्लाया एक-दूसरी की कमर में बाहें डालकर एक ही कुर्सी पर बैठ गईं और वालोद्या की ऐसे चर्चा करने लगीं, मानो वह वहां उपस्थित ही न हो।

"यह अपने में ही मस्त रहनेवाले लोगों में से है।'

"महान होने का ढोंग करनेवालों में से एक। दिमाग कम, घमंड ज्यादा।'

वालोद्या ने खोयी-खोयी नज़र से अपनी बूआ और वार्या की ओर देखा, वक्त पूछा और फिर से अपने कागज़ों में डूब गया।

"यह भी हो सकता है कि वह टाय-टाय फिस होकर ही रह जाय!" बूआ अग्लाया ने कहा। "बाहर से तो शानदार विज्ञान और अन्दर से बिल्कुल खाली।'

वार्या ने दुःखी मन से सहमति प्रकट की—

'देखने का जी नहीं होता!'

'बिल्कुल! वास्तविक ज्ञान तो नाममात्र को नहीं, केवल दिखावा ही दिखावा है। हमारे मजदूरों के स्कूल में ऐसों को '[illegible]' कहा जाता था।'

[illegible] बहुत मुश्किल है कि वह [illegible] और [illegible] जाता हो?

[illegible] है। [illegible] था।

[illegible] है? [illegible] से पूछा।

वूग्रा ग्रग्लाया ग्रचानक रो पडी। वह ग्राम ग्रौरता की भाति नही ग्रपने ही ढग से राई। वह ता हस भी रही थी, पर ग्रासुग्रा की झडी लगी हुई थी।

"यह क्या हुग्रा? क्या बात है?" वालोद्या न कुछ भी न समझते हुए हैरान होकर पूछा। पर ग्रव उससे यह पूछने म कोई तुक नही थी।

उसन उगलियो से ग्रपने माटे माटे ग्रासुग्रा का पाछ डाला ग्रौर चुप रही। वार्या न उसे पानी ला दिया। ग्रग्लाया खिडकी के पास गई, उसे चौपट खोल दिया ग्रौर वाहर की ग्रोर मुह करके खडी हो गई। उसके कधे हिलते रह। फिर ग्रचानक ग्रपने को सम्भालते हुए बोली—

"बच्चा, मेरी ग्रार ध्यान न दो। पिछले कुछ समय मे मैं वहुत थक गई हू। जानते हा कि कभी कभी ऐसा भी होना है—ग्रादमी चलता जाता है, चलता जाता है ग्रौर ग्रचानक वुरी तरह थकान ग्रनुभव करने लगता है। ग्रव मेरे लिय ग्रागे चलना वहुत ही बोझिल हो गया है। नही जानती, निभा सकूगी या नही?"

"क्या निभा सकेगी या नही?" वार्या न धीरे से पूछा।

"सभी कुछ," ग्रग्लाया ने सोचते हुए जवाब दिया।

ग्रग्लाया ने वरसाती पहनी ग्रौर वाहर चली गई।

वार्या ने ग्रपन को ग्रच्छी लडकी जाहिर करते हुए प्लेटें साफ करनी शुरू कर दी ग्रौर वोलोद्या ग्रखवार पढता रहा। ग्रचानक वोलोद्या को यह स्पष्ट हो गया कि पिछली रात वूग्रा उसे क्या बताना चाहती थी। ग्रखवार म कामेन्का जिले के ग्रध्यापका के सम्मेलन के बारे मे एक टिप्पणी थी। प्रादेशिक जन शिक्षा विभाग की ग्रध्यक्षा ग्रग्लाया उस्तिमेन्को इस सम्मेलन म भाषण देनेवाला मे से एक थी।

"तुम समझी, वार्या?' वोलोद्या ने पूछा। "ग्रोह, मैं बिल्कुल उल्लू हू। जाहिर है कि इस नये काम मे शुरू-शुरू म कठिनाई ग्रनुभव हा रही है। कल जब मैं लौटा, तो ग्राह, कैसी हिमाकत हुई मुझसे "

वार्या न पेशबन्द खाला, प्लटे पाछने का तौलिया मेज पर फेंका ग्रौर बैठ गई।

"कुछ कहो न?" वोलोद्या ने ग्रनुरोध किया।

"क्या कहू?"

"बहुत बडी भूल तो नही हुई है न मुझसे "

'पर हो ही क्या सकता है," वार्या ने आह भरी। "तुम हो ही ऐसे! तुम्हारे लिये मुख्य चीज यहा नही, वहा है।"

वहा, वहा? किस मुख्य चीज की बात कर रही हो, तुम?'

"बुरा नही मानना!" वार्या ने उदासी से अनुरोध किया। "शायद यह अच्छी चीज है, लेकिन दूसरो पर बहुत भारी गुजरती है, वोलोद्या। शायद सस्थान मे तुम स्वार्थी नही हो, पर यहा—भयानकता की हद तक स्वार्थी हो।"

इस बात से हैरानी होनी थी कि यह लडकी इतनी समझदार है। उसका तीर बिल्कुल निशाने पर बैठा था। पर अगले ही क्षण उसने ऐसी बेहूदा बात की कि बयान से बाहर।

"पिछले रविवार को एक बजारन ने मुझे मेरी किस्मत बताई। मैं सच कहती हू तुम्हे यकीन नही आता, मैं कसम खाती हू। बहुत ही भयानक बूढी-खूसट थी वह यह लम्बी-सी नाक और तन को चीरती हुई बडी-बडी आखें। उसने मुझे बताया कि खैर, उसने तुम्हारे और मेरे बारे म बताया। उसने कहा कि तुम्हे मेरी जरूरत नही है। हमारी राह अलग-अलग है "

वोलोद्या ने कुछ देर बाद ही जवाब दिया। वह उसकी ओर पीठ करके खडा था, खुली खिडकी म से एश के लाल फलो के गुच्छो को एकटक देखता हुआ पतझर की ठडी हवा मे काप रहा था।

"अच्छा, वार्या मान लिया कि मैं जगली हू पर सच कहता हू कि इतना अधिक बुरा नही हू,' उसने दुखी होते हुए कहा। "मैं सवेदनशील हो जाऊगा और और अन्य मीठे-मीठे शब्दो के अनरूप हो जाऊगा '

"तुम ऐसा कर ही नही सकते।'

'और अगर कर दिखाऊ तो?"

'नही कर सकते!' वोलोद्या की आखो म झाकते हुए वार्या ने दोहराया। 'तब तुम तुम नही रहोगे। तुम कुछ और ही बन जाओगे। मैं यह चाहती हू कि तुम ही दूसरे मार्ग पर न जाओ!'

"और तुम?' वोलोद्या ने पूछा।

"मैं?"

"तुम भी दूसरी राह चुन सकती हो। तुम्हारी उस सिरफिरी बजारन ने तो तुम्हें बना ही दिया है कि हमारी राह अलग अलग है।"

वोलोद्या वार्या के पास गया और उसकी कलाई थाम ली। यद्यपि वह उसे प्यार करता था, तथापि शब्दों में इसे कभी व्यक्त नहीं कर पाया था। उसे ज्यादा झेंप तो यह सोचकर होती थी कि मान लो वह उससे कहे कि "मैं तुम्हें प्यार करता हूँ" और वह जवाब दे—"तो क्या हुआ?"। वह निश्चय ही ऐसा जवाब दे सकती है। वैसे भी तो वह जानती है कि मैं उसे प्यार करता हूँ।

"ऐ लाल बालोंवाली, तुम समझती हो न?"

"क्या?" उसने सरलता से पूछा।

वोलोद्या ने उसकी कलाइयाँ दबा दीं। बाल खींचने और कलाई मरोड़ने की स्कूली आदत को उसने अभी तक नहीं छोड़ा था। पर अब इनमें पहले का सा रस नहीं रहा था। अब ऐसी आँख मिचौनी का जमाना बीत चुका था। वार्या के प्रति दया और कोमलता की भावना इन छोकरोंवाली हरकतों से कहीं अधिक प्रबल थी।

"तो तुम कुछ भी नहीं समझती?"

"कुछ भी नहीं," वार्या ने अपना मुँह छिपाते हुए उत्तर दिया।

"तो, सम्भल जाओ!" वोलोद्या ने रुखाई से कहा और भद्दे ढंग से वार्या को बाहों में कसते हुए उसे खिड़की के दासे के साथ सटा दिया।

ठंडी हवा उसके गालों पर थपेड़े लगाती हुई ऐश वृक्ष की शाखाओं को बहुत जोर से झुला रही थी। किन्तु वोलोद्या का इस बात की ओर ध्यान नहीं गया। उसे तो यह भी पता न चला कि वार्या ने अपने हाथ छुड़ाकर उसे हथेलियों से धकेल दिया। उसे तो तभी होश आया, जब वार्या ने ऐन मौके पर उसके मुँह और अपने गुलाबी होंठों के बीच हथेली रख दी।

"कैसी रही!" वार्या बोली।

"बहुत बड़ी मूर्खता है तुम्हारी!" अभी तक हाँफते हुए वोलोद्या ने गुस्से से जवाब दिया।

"तुम ढंग से अपने प्यार की मुझसे चर्चा करो," वार्या ने अपने बाल ठीक करते हुए मुस्कराये बिना, बहुत गम्भीरता से कहा। "समझे?

तुम्हारे पास कीटाणुओं, पास्तर और काख के लिये समय है, पर वार्या के लिये नहीं? तुम चिन्ता न करो मैं तुम्हारी खिल्ली नहीं उड़ाऊंगी।"

क्या मैं विवाह का प्रस्ताव करते हुए तुम्हें अपना दिल और हाथ पेश करूं?'

"दिल—वह तो हां, पर हाथ के बिना मेरा काम चल जायेगा।"

"इसका मतलब है कि तुम मुझसे शादी नहीं करोगी?"

"यह मैं खुद तय करूंगी।"

"पर मैं तो यही समझता था कि यह तय ही है।"

"वह क्या? वार्या ने हैरान होकर पूछा।

"यह तो बड़ी सीधी सी बात है—हम दोनों शादी कर लेंगे।"

तुम्हारे फुरसत के समय में, ठीक है न, प्यारे वालोद्या?"

वह जल्दी से आंखें झपकाने लगा और उसने कोई उत्तर नहीं दिया। उसका दिल अभी भी जोर से धड़क रहा था। वार्या अपनी कोहनियां ऊपर उठाकर वयस्क नारियों की भांति अपना ऊंचा जूड़ा ठीक करने लगी।

"मैं तुम्हें बेहद प्यार करता हूं, वार्या!" वोलोद्या ने कहा।

"साथी के नाते!" उसने चालाकी से पूछा।

"साथी के नाते भी! वोलोद्या ने कुछ परेशान होते हुए जवाब दिया।

"फुरसत के वक्त?

"आखिर तुम चाहती क्या हो? हाथी दांत की मीनार या कुछ और?"

'मीनार भी बुरी नहीं रहेगी,' वार्या ने नम्रता से सहमति प्रकट की। "किन्तु किसी झील के तट पर लट्ठों की झोपड़ी और भी अधिक अच्छी रहेगी। वहां हम दोनों ही होंगे और बाद में कुछ नन्हे-नन्हे सफेद मेमने। हम नये नामवाले शारिक को भी अपने साथ ले जायेंगे," वार्या ने आंखों में चमक लाते हुए कहा।

"तुम भावुक होने हुए बहुत डरते हो वोलोद्या। बहुत ही! तुम तो मौत से भी अधिक इससे डरते हो। पर यह बहुत दुख की बात है! जब तुम मेरे बाल खींचते थे बांह मरोड़ते थे, तो उसमें भी कुछ रोमांस होता था, पर अब तुम, हमारे येव्गेनी के शब्दों में बड़े 'नपे-तुले' आदमी हो गये हो! तुम मुझसे शादी कर लोगे और बस!

ओह, वोलोद्या, वोलोद्या। कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं तुमसे उम्र मे कही अधिक बडी हू।

"मेरी समझ म कुछ नही आ रहा — क्या मैं इतना बुरा हू?"

"ओह, तुम बुरे नही, बल्कि यह कि अच्छे हो। पर अपने फुरसत के समय मे।"

वोलोद्या की ओर देखे बिना ही वह मेज़ पर से रोटी के कण साफ करती रही। वालोद्या ने एक बार फिर यह अनुभव किया कि वह हकीकत का कितनी अच्छी तरह भाप लेती है और कितने सही ढग मे सोचती-समझती है। कितनी अद्भुत चीज़ है यह किशोरावस्था। वह अभी छोकरी ही तो थी पर फिर भी मानव के भद्दे और हास्यास्पद पहलू को पहचान सकती थी, एक शब्द के तीर से तन बेध सकती थी और दुखती हुई रग पर चोट करने मे समर्थ थी।

वार्या ने इस दिन उसकी खासी खबर ली।

वह तो केवल कधे झटकता और नाक-भौंह ही सिकोडता रहा।

पर कुछ देर बाद वार्या न उसकी प्रशसा की।

"तुम अपना काम कुछ बुरा नही करोगे।"

"बस इतना ही? 'काम कुछ बुरा नही करूगा'?" वालोद्या ने दुखी होते हुए कहा। "जहा तक तुम्हारा सम्बन्ध है, तुम मेरी बात गाठ बाध लो, तुम कभी अपना काम ढग से नही कर पाओगी।"

"इस पाप भरी दुनिया मे सभी तो प्रतिभासम्पन्न नही होते।"

"यह कमीनी बात कही है तुमने।"

"मेरे मुह पर मेरी साधारणता को दे मारना, क्या यह कमीनापन नही है?"

"अब बस करो, नाक मे दम आ गया है," वोलोद्या ने बिगडते हुए कहा।

"तुम एक और बात भी जानते हो अपने बारे मे?" वार्या ने ऐसे पूछा, मानो उसने उसकी बात ही न सुनी हो। "जानते हो? तुम बडे निर्दयी हो। ओह, बहुत ही बेरहम हो। बडी यातना देते हो। मैं ढग से अपना मतलब स्पष्ट नही कर सकती, पर तुम या तो घृणा करते हो या पूजा।"

"तुम्हारी ता मैं पूजा करता हू," वोलोद्या खीझते हुए बडबडाया, खास तार पर जब तुम लम्बे लम्बे भाषण नही देती हो।"

शारिक रसोईघर मे आ गया, उसके पजे फश पर बज रहे थे। उसने वोलोद्या के पैरो के पास कुछ चक्कर काटे और फिर लेट गया। वार्या ने किसी कविता की दो पक्तिया सदा की भाति गलत ढग से पढी

मैं अगीठी गम कर औ' जाम भरू
अच्छा हो यदि कुत्ता भी कोई ले लू

वह गुस्से मे थी और उसके गाल दहक रहे थे।

'तुम जानते हो कि तुम्हे मेरी किस लिये जरूरत है? जानते हो?' वार्या ने कुछ देर बाद कहा। "वोलोद्या प्यारे, तुम्हे मेरी इसलिये जरूरत है कि मैं तुम्हारी बकवास को तब ही नही सुनती हू जब मुझे दिलचस्पी होती है, बल्कि तब, जब तुम उसे उगलना चाहते हो, सुनाना चाहते हो। मैं अपना और तुम्हारा महत्व भी समझती हू। तुम जो कुछ कहते हो वह दिलचस्प और महत्त्वपूर्ण होता है। पर मेरी बात तुम्हारे लिये न तो कोई महत्त्व रखती है और न दिलचस्पी। मेरी हर बात का मूखतापूर्ण होना लाजिमी होता है। क्या तुम इस बात से इनकार कर सकते हो? अगर जानना ही चाहते हो तो सुनो कि पिछली रात मैंने किसी किताब मे बहुत ही सही शब्द पढे थे—'उनकी दोस्ती मे पतझर आ गई थी ' ये शब्द हम दोनो पर सोलह आने सही घटते है।"

तुम तो अभी बिल्कुल बच्ची ही हो,' वोलोद्या ने दया का भाव दिखाते हुए कहा।

वोलोद्या की यह बात उसे बुरी तरह चुभ गयी। वह गुस्से मे आकर चली गई, उसने तो दरवाजा भी फटाक से बन्द किया। वोलोद्या अपने उदासी भरे विचारो और बीमार कुत्ते के साथ रह गया। खुद अपने साथ न्याय करते हुए उसने अपनी लापरवाही, कठोरता, गुस्ताखी, अभिशप्त स्वार्थपरता और कूआ अरनाया के साथ नीचता से पेश आने के लिये अपनी कडी आलोचना की। उसने वार्या की तुलना मे कही अधिक कटु शब्दो मे अपनी लानत मलामत की। उसने समझ पाई कि

फिर कभी ऐसा जगलीपन नही दिखायगा। पर क्या यह उसका दोष था कि जब वह अपने को भला-बुरा कह रहा था, उसी समय उसके विचार चुपके-चुपके, मानो फुसफुसाते हुए, उसके दिमाग मे चक्कर काटने लगे? ऐसे विचार, जो उसे बीमारियो के वर्गीकरण और मानवीय शरीर मे रासायनिक तत्त्वो की गडबडी के बारे मे बहुत अर्से से परेशान करते रहे थे। तब एक चोर की भाति लुके-छिपे, अपनी हरकत से लजाते हुए उसने किताबो की आलमारी से रासायनिक का एक खण्ड निकाला, ताकि उसमे से एक, केवल एक दिलचस्प पैरा पढ ले। केवल एक ही पैरा, उस विचार को जाचने के लिये जो उसके दिमाग मे था

इसके बाद उसके लिये दूसरी किताब को देखना जरूरी हो गया। जाहिर है कि उसे पता भी नही चला कि बूआ अग्लाया कब दरवाजा खोलकर अदर आई और उसने उसकी "याद" मे आकर पूछा—

"भोलेराम, खाना खाया जाये?"

"हु म म," पुस्तक के पन्ने उलटते हुए उसने कहा।

"वार्या को गये काफी देर हो गयी?"

"किसे?"

पोस्तनिकोव के घर जाते हुए ही उसे इस बात का ख्याल आया कि वह फिर बूआ अग्लाया से उसकी परेशानियो के बारे मे पूछना भूल गया है।

मैंने पी

वोलोद्या ने जैसी कल्पना की थी, स्थिति उससे भिन्न निकली। उसने तो यह सोचा था कि पोस्तनिकोव अपने व्यक्तिगत जीवन मे भी एक सन्यासी का सा कठोर जीवन बिताता होगा, मामूली-सी चारपाईवाले साधारण-से कमरे मे रहता होगा, जिसमे एक मेज और कुछ स्टूल रखे होगे और चारो ओर ढेरो ढेर किताबें होगी। "जाहिर है कि वह मुझसे चाय पीने को कहेगा, पर मैं इनकार कर दूगा," वह रास्ते मे सोचता गया।

दरवाजा पोलूनिन ने खोला। वे पेशबन्द बाधे थे, बहुत ही साधारण पेशबन्द, जैसा कि वार्या खाना पकाते समय बाधे रहती थी। गानिचेव

पेशबन्द की जगह तौलिया बाधे थे। वहा वोलोद्या के लिये एक अपरिचित आदमी भी था और वह भी पेशबन्द की जगह प्लेटें पोछने का तौलिया बाधे था। वह मोटा सा और सावला था, उसका कलफ लगा कालर खब अकडा हुआ तथा उसका नाक-नक्शा काल्मिक जाति के लोगो जैसा था। इन तीनो के हाथ और गानिचेव का चेहरा भी आटे से सना हुआ था। "यह इह क्या हुआ है?" घडी भर को वोलोद्या को कुछ परशानी भी हुई, पर अगले ही क्षण वह रसोईघर की उस बडी सी मेज के पास जा बैठा, जहा 'पेल्मेनिया' (मास के समोसे) बनायी जा रही थी। पोस्तनिकोव गुधा हुआ आटा बेल रहा था और उसने सिर हिलाकर वोलोद्या का स्वागत किया। पोलूनिन ने कहा—"वोलोद्या निकोलाई यव्गेयेविच से तो शायद आप परिचित नहीं हैं?" सावले व्यक्ति ने तन चीरती पैनी नजर से वोलोद्या की ओर देखा और कहा—

"मिलकर बहुत खुशी हुई। नमस्ते। मैं बागोस्लोव्स्की हू।"

वोलोद्या को नाम परिचित सा लगा। हा, उसे अब याद आ गया था। उसने पोलूनिन और पोस्तनिकोव के मुह से अक्सर यह नाम सुना था और नगर म भी उनकी चर्चा होती रहती थी, क्योकि बोगोस्लोव्स्की चोर्नी यार अस्पताल के मुख्य चिकित्सक और प्रधान सर्जन भी थे। घुटे हुए सिर और देहाती से लगनेवाले इस डाक्टर के बारे मे उसे बहुत सी दिलचस्प बाते सुनने को मिली थी। अब वोलोद्या इस डाक्टर को ध्यान से देख रहा था जिन्ह प्रशसा के मामले म बेहद कजूस पोलूनिन ने कभी 'प्रभु प्रदत्त प्रतिभावाला' व्यक्ति कहा था।

इसी बीच उन्होने अपनी बातचीत के तार जोडते हुए उसे आगे बढाया।

'मैं केवल एक और बात, आखिरी बात कहना चाहता हू" पोलूनिन ने कहा, "इसके बाद मैं तुम लोगो को ज्यादा परेशान नहीं करूगा, वरना तुम नाराज हो जाओगे। हा, तो चिकित्साशास्त्र के इतिहास मे एक ही ईमानदार आदमी है और वह है समय। सहमत हैं?"

"यह तो तुम कहा के कहा जा पहुचे!" बोगोस्लोव्स्की ने बहुत ही हल्की-सी मुस्कान लाते हुए कहा। "अब यह कहता है—एक आदमी। चिकित्साशास्त्र के इतिहास म केवल एक आदमी!'

"पर हम व्यक्तिगत ईमानदारी की नही, वस्तुगत ईमानदारी की बात कर रहे हैं।"

पोलूनिन ने आटा लगी प्लेट मे बढिया बनी हुई पेल्मेनिया बडी दक्षता से फकी और कहा—

"तुम निकालाई यर्ग्येयेविच जरा अतीत पर नजर डालो और बताओ कि यह सही है या नही। सबसे पहले ईमानदार अग्रगामियो ने गलत होते हुए भी अपनी ही बात का समर्थन किया और सबसे अधिक ईमानदार लोगो ने भी गलती करते हुए उन सत्यो का विरोध किया, जो आज सर्वस्वीकृत हैं। मैं जीवन भर सोचता रहा हू कि "

"वर्षो के बीतने से आदमी बूढा होता है, समझदार नही,' पास्तनिकोव ने कहा। "मै व्यक्तिगत अनुभव मे यह जानता हू।"

पास्तनिकोव ने बेलन एक तरफ को रख दिया और अपनी लम्बी-लम्बी उगलियो से पेल्मेनिया बनाने लगा। वोलोद्या तो इस मामले मे बहुत ही असफल सिद्ध हो रहा था—बेला हुआ पतला आटा टूट जाता, पर इस बात की ओर किसी का ध्यान नही गया या कम से कम उन्होंने ऐसा जाहिर नही होने दिया।

पल्मेनियो के लिये पानी उबल गया। पोलूनिन ने कहा कि मैं मेज लगाता हू और उन्होने वोलाद्या को भी खाने के कमरे मे चलने को कहा।

"पोस्तनिकोव बेमिसाल पेल्मेनिया बनाता है," प्लेटें लगाते हुए पोलूनिन ने कहा। "उन्ह कई तरीको मे खाया जाता है, पर इस घर मे तो इन्हे उनके बिल्कुल असली रूप मे खाया जाता है, न कोई मिलावट, न कोई सजावट और न कोई हेर फेर। वोद्का पीते हैं?"

"पीता हू," वोलोद्या ने जल्दी-से झूठ बोल दिया।

"पी भी सकते हैं?"

"इसमे खास बात ही क्या है?"

"खैर, यह बात जाने दीजिये।"

छोटी अलमारी से छोटी-बडी तश्तरिया, जाम, और छुरी-काटे निकालते हुए वोलाद्या ने सारे कमरे पर नजर डाल ली। कभी यह जरूर बहुत अच्छा कमरा रहा होगा, पर अब हर चीज ऐसे लगती

थी जिसकी जैसे काई सुध-सार ही न लेता हो, जैसे कि यहा कोई रहता ही न हो। ऐसा प्रतीत हाता था, माना मालिक को यहा ग्राने पर कोई खुशी ही न होनी हो, माना वह ग्रभी ग्रभी ग्राया या ग्रभी ग्रभी जानवाला हा। फश पर कालीन टेढा मेढा बिछा हुग्रा था, फट अस्तर का पर्दा केवल एक ही खिडकी पर लगा हुग्रा था। मेजपोश को सूटकेस मे से निकालना पडा। फश पर, ग्रलमारिया ग्रौर खिड कियो के दासा पर किताबो के ढेर लगे हुए थे। मेज पर एक लम्प रखा हुग्रा था, जो जलता नही था। लिखने की मज पर एक बिल्ली फैलकर लेटी हुई थी। वह तथाकथित "घर घर, द्वार-द्वार भटकने वाली बिल्ली थी। उसके स्वामी ने उसे पूरी छट द रखी थी ग्रौर कमरे म इसान की नही, बिल्ली की गध बसी हुई थी।

"हम लोगो की पेल्मेनी की एक परम्परा बन गई है,' पोलूनिन ने सिगरेट जलाते हुए कहा। "हम हर वष पोस्तनिकाव के जम दिवस पर पेल्मेनी दिन मनाते हैं। वह विधुर है, हम ग्रपनी पत्नियो के बिना यहा ग्राते है ग्रौर सही ग्रथ म छडो की दावत उडाते हैं। हम ग्रोल्गा का हमेशा स्मरण करते है।"

"ग्रोल्गा कौन है?"

"ग्रोल्गा मिखाइलोव्ना उसकी स्वगगता पत्नी का नाम है। यह देखिये, उसका चित्र।"

वोलोद्या ने सिर ऊपर किया ग्रौर मानो हसती तथा जवानी की उमग भरी ग्राखो से ग्राखें मिलायी। ये ग्राखें थी एक प्यारी फूले फूले ग्रौर स्पष्टत नम बालोवाली एक नारी की। उसका वेश विन्यास कुछ ग्रजीब सा था, "क्रान्तिपूव के ढग का", वोलाद्या ने सोचा। वह ग्रपने हाथ मे स्टेथॉस्कोप लिये थी।

"क्या वे भी डाक्टर थी?"

"हा, ग्रौर बहुत ही ग्रच्छी डाक्टर।'

"उनकी मृत्यु कस हुई?

"१६१८ मे सैनिक ग्रस्पताल म उसे छूत की बीमारी लग गयी थी," ग्रपनी मोटी सिगरेट का जोरदार कश लगाते हुए पोलूनिन ने उत्तर दिया। 'वही उसकी मृत्यु हा गयी।'

'सच?" वोलोद्या ने कहा।

अचानक आल्ला के फोटो पर वोलोद्या की नजर पडी, उसी आल्ला के फोटो पर, जिसे "नीद से बडा प्यार था"। फोटो सुनहरे सिरोवाले चमडे के सुदर फ्रेम मे लगा हुआ था। आल्ला की चुनौती देती हुई नजर मानो यह कह रही थी कि इस घर की असली स्वामिनी मैं हू, न कि वह नारी, जो १९१८ मे सैनिक अस्पताल म परलोक सिधारी।

"यह बताइये," वोलोद्या ने दीवार पर लगे चित्र और फिर चमडे के फ्रेम मे जडे फोटो की ओर देखते हुए कहा, "यह बताइये, क्या पोस्तनिकोव अपनी पत्नी को प्यार करता था?"

"बेहद," पोलूनिन ने शात भाव और दृढता से जवाब दिया। "वह अभी तक उसे नही भूला है और अब भी प्यार करता है।"

"तो यह आल्ला यहा किसलिये है?" वोलोद्या ने कडाई से पूछा। "मेरा मतलब, उसके फोटो से है।"

"तो उसकी भर्त्सना भी कर दी आपने?" पोलूनिन ने फीकी सी हसी हसते हुए कहा। "जरा भी देर न लगी आपको? बडे कठोर इन्सान बनते जा रहे है आप, वोलोद्या, बहुत ही कठोर। मेरी सलाह मानिये—लोगो के प्रति ज़रा नर्मी से काम लिया कीजिये, विशेषत असली इसानो के मामले मे "

वोलोद्या ने जवाब देना चाहा, पर उसे इसका अवसर नही मिला।

इसी समय पोस्तनिकोव ने ठोकर मारकर दरवाज़ा खोलते हुए अदर प्रवेश किया। वह बडे बर्तन म पल्मेनिया लाया था। पल्मेनिया पर हाथ साफ करने के पहले उन्होने दीवार पर लगे छविचित्र को देखते हुए ठडी की हुई वोदका के भरे हुए गिलास पिये। किसी ने भी कोई शब्द नही कहा। वास्तव म पोलूनिन के अतिरिक्त पोस्तनिकोव की पत्नी को और कोई जानता भी नही था। पेल्मेनिया सचमुच ही बहुत जायकेदार थी, प्यारी गधवाली, हल्की-फुल्की और खूब गमागम। पोस्तनिकोव ने 'विशेष रूप से" हर किसी की प्लेट पर पिसी हुई काली मिर्च बुरक दी। बडा ही खुशमिज़ाज मेज़बान था वह। उसका कहना था कि खाना जब खुशी से खिलाया जाता है, तो अधिक लज़ीज लगता है। इसके बाद उन्होने मिर्चवाली, बेरियावाली और अन्त मे गेहू से बनाई गई वोद्का के जाम पिये। गेहूवाली वोद्का को

पास्तनिकोव "सभी वाद्यशास्त्रों का गवर्नर-जनरल" कहता था। वोलोद्या को तो पीते ही चढ गई, उसका चेहरा लाल हो गया, वह बार-बार हाथ झटकने लगा और उसने छुरी फर्श पर गिरा दी।

"वोदका कम पीजिये, पेल्मेनिया ज्यादा खाइये," पोलूनिन ने उसे सलाह दी।

पोलूनिन किसी से जाम खनखनाये बिना ही पीते। उन्होंने अपनी कोहनी के करीब वोद्का से भरी सुराही रखी हुई थी। वे जाम में नही, बल्कि हरे रंग के एक भारी-से गिलास में अपने लिये वोद्का ढालते थे।

"यह आपकी सेहत का जाम है, प्राव यावाव्लेविच," वोलोद्या ने जाम उठाया।

"बेहतर यही है कि आप पेल्मेनियों से मेरी सेहत की कामना करें," पोलूनिन ने सुझाव दिया।

"मैं बच्चा नही हूं!"

"बेशक, यह कहता ही कौन है!"

खाना हंसी-खुशी और शोर शराबे के वातावरण में खूब मजे से खाया गया।

वोलोद्या को इस बात की शर्म महसूस होने लगी थी कि उसने पोलूनिन से आल्ला के फोटो की वह बेतुकी सी बात कही थी। वास्तव में अगर देखा जाये तो बहुत सी बातें हो जाती हैं इस दुनिया में।

"मेरे अस्तबलों में " बोगोस्लाव्स्की कह रहे थे।

"अस्तबलों में? क्या आप अस्पताल में काम नहीं करते?" वोलोद्या ने पूछा।

"अस्पताल की सहायता करने के लिए मैं एक छोटा सा फार्म भी चलाता हूं," बोगोस्लोव्स्की ने रुखाई से जवाब दिया।

"आह, लगता है कि मुझे चढ गई है! वोलोद्या ने परेशान होते हुए सोचा और पेल्मेनियों पर हाथ साफ करने लगा। "खैरियत इसी में है कि मुंह में ताला लगा लिया जाये!

घडी भर को वे तश्तरियां वोलोद्या की आंखों के सामने तैरने लगीं, जिन पर नीले रंग के कुलीन, मकान पवनचक्कियां, नावें और

कुत्ते चित्रित थे। वोलोद्या ने अपने दात ज़ोर से भीचे और चित्रित तश्तरिया न तैरना वन्द कर दिया। "असली चीज़ तो दढ इच्छा-शक्ति है," उसने अपने आपसे कहा। तश्तरिया फिरसे तैरने लगी। "रुक भी जाओ, कम्बख्ता!"

ओह यह सब कुछ कितना बढिया था! कितनी दिलचस्प थी उनकी बात। काश कि वह ऐसी स्थिति मे होता कि इक्के दुक्के वाक्य नही, उनकी पूरी बातचीत सुन सकता!

"खर, हटाइये इस बात को! हर जाल मे आखिर सूराख ही तो होते हैं" पोलूनिन ने अचानक कहा।

"बहुत खूब!" वोलाद्या ने फिर से अपना ध्यान उनकी ओर केन्द्रित किया। "कितनी सही है यह बात! हर जाल म सूराख होते है। वार्या का यह बात पसन्द आयेगी। पर वह तो मुझसे नाराज़ है।"

वोलाद्या ने उनकी बुद्धिमत्तापूण बाता मे दिलचस्पी लेने की पूरी कोशिश की। पर वे अब जाल की नही, सर्जरी की बात कर रह थे।

"स्पास* सही है," वोलाद्या के सामने बैठे हुए पोस्तनिकोव न ऊची आवाज मे चिन्तन करते हुए कहा। "स्पास हर बात मे सही होता है "

"क्या पास्तनिकोव का अभिप्राय ईसा मसीह से है?" वोलोद्या ने नशे म आश्चयचकित हाते हुए सोचा और कुछ दर बाद ही उसे इस बात का एहसास हुआ कि प्राफेसर स्पासाकुकात्स्की की चर्चा चल रही है।

"सजन अक्सर अपने औज़ारा का ढग से इस्तेमाल करना नही जानते," पोस्तनिकाव ने कहा। "आज भी किसी बढई, तरखान या दर्ज़ी को काम करते हुए देखकर मैं मुग्ध हो जाता हू। कितन कलात्मक ढग से वे अपनी छेनी, आरी और सूई का उपयाग करते हैं। उनकी हर गति विधि कितनी सधी और नपी-तुली होती है। किन्तु हम जस कि लडके ढीले-ढाले ढग से पत्थर फेंकने के लिए लडकिया का

---

*स्पास – रूसी मे ईसा का एक नाम।—स०

मजाक उडाते हैं, ठीक वैसे ही, लडकियो की तरह ही हम भी गीत ढाले ढग से अपने औजारो का उपयोग करते है। पर, खर हटाओ! बढई और दर्जी का वास्ता होता है लकडी या कपडे के टुकडे से और हमारा इन्सानी जिन्दगियो से "

"बिल्कुल ठीक है, सालह आने सही है, मैं सहमत हू!" वोलोद्या ने चिल्लाकर कहा। इसी समय उसने ईर्ष्याभाव से सोचा–"क्या आल्ला से भी उसने यही बात कही होगी?"

मुझे बहुत खुशी है कि आप सहमत है!" पोस्तनिकोव ने सिर हिलाया। "निकोलाई येव्गेनेविच किशोर को कुछ पल्मेनिया और खाने को दीजिये।"

वोलोद्या ने पल्मेनिया से भरी हुई एक और प्लेट साफ कर डाली। 'किशोर! वोलोद्या ने सोचा। "क्या मतलब हो सकता है इसका?"

प्रसगवश अगर मेरी याददाश्त धोखा नही देती, तो शायद प्रोफेसर स्पासोकुकोत्स्की ने यह कहा था–'हार्निया के आपरेशन के बाद सर्जन की उगली पर रक्त की एक बूद भी नही होनी चाहिये!' ठीक है न? शब्दो को तोल-तोलकर और यह जाहिर करते हुए कि वह नशे मे नही है वोलोद्या ने कहा।

"बिल्कुल ठीक है!' हसती हुई आखो से वोलोद्या की ओर देखते हुए पोगोस्लाव्स्की ने पुष्टि की। "पर किसलिये आपने इसका यहा उल्लेख किया है?'

ऐसे ही पूछ लिया है " अपने होठो को जोर से हिलाते हुए वोलोद्या ने कहा। "ऐसे ही एक सवाल पूछ लिया है। पर खर, मैं माफी चाहता हू। मेरे ख्याल मे मैंने आपकी बातचीत मे खलल डाल दिया है। केवल दो शब्द और, नहीं, एक बहुत ही अत्यधिक महत्वपूर्ण बात और कहना चाहता हू–प्रोफेसर स्पासोकुकोत्स्की के अनुसधानकार्य सम्बन्धी दृष्टिकोण के बारे मे "

सभी चुप हो गये। खामोशी छा गयी और वातावरण तनावपूर्ण हो गया। वोलोद्या ने फिर से दात भीचे "आप लोग समझते हैं कि मैं नशे मे हू? अभी आप जान जायेंगे कि मैं नशे मे हू या नहीं!" उसने अपने आपसे कहा और अपनी बची-बचायी शक्ति समेटकर हर शब्द को ढग से तथा ऊची आवाज मे कहते हुए उसने पूछा–

"क्या यह सही है कि पोफेसर स्पासोकुकोत्स्की ने ही यह कहा था कि वैज्ञानिक **पहलक़दमी ही** किसी वैज्ञानिक कार्यकर्त्ता की योग्यताओं का मुख्य लक्षण होती है?"

"हा, सही है!" पोस्तनिकोव ने इस बार वोलोद्या को स्नेहपूर्ण दृष्टि से ध्यान से देखते हुए जवाब दिया। "उन्होंने वैज्ञानिक काय को निरन्तर **'गुना' करते जाने** से भी मना किया है, अर्थात एक ही विषय पर हेर फेर के साथ शब्द नही लादते जाना चाहिये।"

"बहुत बढिया!" वोलोद्या ने फिर से ढीले होते हुए कहा।

भयानक क्षण गुजर चका था। वह इस परीक्षा म सफल हा गया था। अब वह सोफे पर बैठकर ऐसे आराम कर सकता है, मानो चिन्तन कर रहा हो।

"ओह, प्यारी बिल्ली!" उसने बडे रग मे आकर आवारा बिल्ली को आवाज दी! "नमस्ते, प्यारी बिल्ली!"

इसके बाद उसने आखें मूद ली। बिल्ली उसी क्षण उसकी गाद मे बैठकर म्याऊ म्याऊ करने लगी। खैर, वोलोद्या काफी देर तक चिन्तन म डूबा रहा। जब वह मेज पर लौटा, तो पल्मेनिया खत्म हो चुकी थीं और सभी लोग बहुत गाढी और बेहद काली कॉफी पी रहे थे।

"काश कि यौवन मे ज्ञान और बुढापे म शक्ति होती," वोलोद्या ने पोस्तनिकोव के ये शब्द सुने।

"क्या बातचीत हा रही है?" वोलोद्या ने बैठी-सी आवाज ने बोगोस्लोव्स्की से पूछा।

"ता झपकी ले ली?"

"नही, मैं सोच रहा था "

" भोला भाला आदमी है। पर खान की मज पर ऐसे भले और भोले भाल लोगा को जब कसौटी पर परखा जाता है, तो व खरे नहीं उतरते,' पोलूनिन ने झल्लाकर कहा। "कुल मिलाकर," उन्होंने गानिचेव का सम्बोधित किया, "यह उसी सुखद सिद्धान्त का एक अग है कि दयालु लोग लगभग अनिवाय रूप स शराबी हाते हैं और शराबी लोगो का दयालु होना यकीनी है।'

वोलोद्या ने काफी का बडा-सा प्याला अपनी आर खीच लिया तथा ब्राडी की बोतल की तरफ हाथ बढाया।

"वालोद्या अब बस कीजिये!" पोलूनिन ने आदेश दिया।

"आप यह समझते है कि मैं नशे म धुत्त हू?" वोलाद्या न चुनौती के स्वर म कहा। "मै एक और गिलास चढा जाऊगा और मेरा कुछ भी नही बिगडेगा।

"बस काफी है! चैन से बठिये! आप ता झपकी ल आये है!

'शायद आप यह चाहते है कि मैं यहा से चला जाऊ?"

जाने की जरूरत नही पर बडा को परेशान नही कीजिये।"

उन्होंने फिर से झोवत्याक के बारे मे बहस शुरू कर दी। वोलोद्या की उपस्थिति मे वे शायद शिक्षा के सिद्धान्तो को ध्यान म रखते हुए उसका नाम नही लेते थे। गानिचेव झल्ला उठे। उन्होंने कहा कि पालूनिन से पार पाना मुमकिन नही और इसलिए पडोसियो म रग बिरगे फीतवाली गिटार माग लाया।

'इसे सुना पालूनिन ने वोलोद्या स कहा, "लातीनी भाषा मे यह रूसी गीत है—'नदी के निकट, पुल के निकट'।"

गानिचेव गिटार की सगत म धीर धीर गात रहे।

" प्रोप्टेर फ्लूमेन, प्रोप्टेर पाटेम

कुछ देर बाद पोलूनिन न कहा—

मैं उसकी जबानी सब कुछ, एक एक शब्द सुन चुका हू। उसके जैसे लोग शर्म-हया जसी कोई चीज नही जानते। वह तीन वर्षीय डाक्टरी स्कूल की पढाई खत्म करनेवाले कम्पाउडर-डाक्टरा म से एक था। बहुत चालाक दरअसल ही चलता पुर्जा है वह "

चलता पुर्जा ता वह जरूर है पर जरा देर स इस दुनिया म आया ' बोगास्लाव्स्की न चुटकी लेते हुए कहा। "जरा बेवक्त आया है।

गानिचेव न तारा पर उगलिया फेरते हुए मानो साज की सगत म चिन्तनपूर्ण ढग स गाया—

हमशा ऐसा का ही वक्त होता है, आह, वक्त हमेशा एसा का ही होता है।

बेहतर, आप लाग अब यह किस्सा सुनें!'' पालूनिन चिल्लाये। 'ऐसी मार्के की बात मसगर सुनन को नहा मिलती। युद्ध म जिन

म, जब वे वोलोचिस्क के नजदीक कही डेरा डाले हुए थे, तो छोटे कप्तान की बीवी, जिसका जन्म-कुलनाम जू स्टाकेलबेग ऊड वारडेक था, के बच्चा हुआ। मुझे यह नाम बहुत अच्छी तरह से याद है, क्योकि हमारे खुशामदी और चाटुकार ने बडे हर्ष और उत्साह से, जिसके कारण घृणा होने लगती है, 'जू' और 'ऊड' की चर्चा की थी। खैर, बच्चा हो गया, पर उसे कोई भी डाक्टर पसन्द नही आता था, क्योकि वे उसके 'ऊड-जू' बच्चे की बढिया देखभाल नही करते थे। उस शैतान की नानी ने सभी अरदलियो की नाक मे दम कर दिया। छोटा कप्तान भी दिल को शात करने की दवाई पीने लगा। उस समय हमारे इस भलेमानस न कहा कि मुझे बुलाया जाये। 'हुजूर मैं आन की आन मे सारा मामला ठीक ठाक कर दूगा,' उसन कहा। 'किसी तरह की कोई शिकायत नही रहेगी।' चुनाचे उसे बुलाया गया। उसने अपने एक डाक्टर मित्र से टयूनिक और कधे के पद चिह्न माग लिये। तो हमारा यह सेवक, प्रादेशिक डाक्टरी सेवा के अस्तबल का बडा घोडा किसी पशु चिकित्सक के उपकरण लिए हुए, जिनका घोडो के लिए इस्तमाल किया जाता है, वहा पहुचा। जाहिर है कि वह सैनिक इजीनियरो से भूमापन यन्त्र और तिपाई लाना भी नही भूला। श्रीमती ज स्टाकेलबेग ऊड वारडेक बडी आश्चर्यचकित और प्रभावित हुई। हमारे इस अनाडी और ढोगी ने जब घोडो के लिए इस्तेमाल किये जानेवाले चिकित्सा उपकरणो स उसे और उसके बच्चे का जाचा परखा और भूमापन यन्त्र का भी उपयोग किया, तो श्रीमती जी का जीवन भर के लिए चिकित्सा विज्ञान म आस्था हो गई। दो घटे बाद उसने अपना यह निदान कह सुनाया—'वैसे तो सब कुछ ठीक-ठाक है, पर बच्चा जरा चिडचिडा है। उसकी खास देखभाल होनी चाहिये, जो मोर्चे की परिस्थितियो मे सम्भव नही।' श्रीमती अपने मिया, अपने छोटे कप्तान को छोडकर चली गई, जो रेड क्रास की नस के साथ रग रेलिया मनाता था। हमारे इस पट्ठे को सौ रूबल श्रीमती और सौ रूबल श्रीमान से बख्शिश मे मिल गये। उसने उसी क्षण चिकित्सा-सस्थान मे दाखिल होने का निर्णय कर लिया, क्योकि उसे यह स्पष्ट हो गया था कि दाशनिक सेनेका के इस मत के बावजूद कि सितारो का मार्ग कटकपूर्ण है, वास्तव म इतना कटीला नही है। उसने इस

बात को सुनाया कि वह गरीब और मजदूर मा-बाप का बटा है। अब कोई पता तो लगा ले कि वह सचमुच दानतस्व के धनिक परिवार से सम्बन्ध रखता है या जैसा कि कुछ दूसरे लोगो का कहना है, चानाव व्यापारी वग स। कोई मालूम तो करके बताये।"

हम मानने वर लगे ' वागोस्लोव्स्की ने दढतापूवक कहा।

सच ? गानिचेव ने हैरान होते हुए पूछा।

दर-सावर

'आह खत्म भी कीजिये अब इस किस्से को," पोस्तनिकोव ने ऊबते हुए कहा। "उससे भी बुरे लोग है इस दुनिया म। इसके अलावा वह शाश्वत है। अतीत म भी एसे लोग थे और आज भी हैं।"

जब तक आप सभी लोग उससे डरते रहगे, वह शाश्वत है,' वोगोस्लोव्स्की ने कडाई से और असहमति प्रकट करते हुए जवाब दिया। "पर अगर लोग उसकी जगह काम करना, लेख लिखना और रोग निदान करना बन्द कर दें तो ,

पोलूनिन ने हाथ ऊपर उठाया।

बस बातचीत खत्म की जाय ' उन्होने कहा। "अब घर चलना चाहिये वरना महाभारत हो जायगा।"

"आइये थोडा घूम लिया जाय। अभी से घर जाने की क्या जल्दी है।" सडक पर आने के बाद उन्होने कहा।

वोगोस्लोव्स्की और गानिचेव ने तो रात काफी हो जाने के कारण इनकार कर दिया और जाहिर है कि वोलोद्या राजी हो गया। रात ठडी थी पतझर अपने आखिरी दिन गिन रही थी, जमीन पर बर्फ की पतली-सी परत जमी हुई थी और वह उनके पैरो के नीचे कडकडाकर टूटती थी। पोलूनिन ने अपने टोप को कानो पर खीच लिया और कोट का कालर ऊपर उठा लिया।

आठवा अध्याय

रात की बातचीत

"'वैज्ञानिक पहलकदमी ही किसी वैज्ञानिक कार्यकर्त्ता की योग्यताओ का मुख्य लक्षण होती है,' आपने पोस्तनिकोव से यह जो सवाल पूछा था, वह याद है? याद है या उस समय नशे मे धुत्त थे?" पोलूनिन ने अचानक पूछा।

"हा, याद है," वालोद्या बुरा मानते हुए बुदबुदाया।

"आप म्स्तिस्लाव अलेक्साद्रोविच नोवीस्की के बारे मे जानते हैं?"

नोवीस्की के बारे मे वोलोद्या कुछ भी नही जानता था।

"तो, मेरे साथ चलिये, मेरे घर पर,' पोलूनिन ने कडाई से आदेश दिया। "खासी ठड है। गर्मागर्म चाय पियेगे, क्या ख्याल है?'

उन्होने बाजार का चौक लाघा, गिरजे को पीछे छोडा और नदी की ओर बढ गये। पोलूनिन घाट के करीब ही एक अलग थलग घर मे रहते थे। उन्होने दरवाजा खोला, वालोद्या को गर्म, अधेरी ड्योढी मे जाने दिया और फिर स्वय भीतर आकर बत्ती जलाई तथा अपने अध्ययन-कक्ष का दरवाजा खोला। वोलोद्या ने अपने अस्त-व्यस्त बालो को ठीक किया और किताबो की अलमारियो, कार्ड-सूचिका के पालिश किये हुए पीले डिब्बो और पाण्डुलिपियो से लदी हुई बडी मेज पर नजर डाली। पोलूनिन के भारी कदमो की आवाज घर के भीतरी भागो से आ रही थी। उनकी आवाज पर कान लगाये हुए वोलोद्या ने धीरे-से पीले एरिक्सान टेलीफोन का हत्था घुमाकर रिसीवर उतारा।

'कृपया नम्बर बताइये," उसे ऑपरेटर की आवाज सुनाई दी।
छ सौ सतीस,' बोलोद्या ने जवाब दिया और वार्या की अलसायी-सी आवाज सुनकर झटपट कहा–"स्तेपानोवा, साना नही। मैं जल्द ही लौट आऊंगा। हो सकता है कि बहुत जल्द ना नही। मझ तुमम कुछ बातचीत करनी है

पोलूनिन के परो की आहट निकट आ गई। किसी नारी ने प्यार भर और जम्हाई लते हुए बडे इत्मीनान के अन्दाज मे कहा–
'प्राव प्यार, चाय रायेवाले खाने म है और मिठाइया '
"मिठाइया मिठाइया," पालूनिन बडबडाय। "अभी बारह भी नही बजे और तुम सा गइ। कुछ बढिया बातचीत ही हो जाती।"
'बातचीत बस बातचीत," नारी ने मजाकिया ढग स उसकी नकल की। "बाईस साला स तुम और तुम्हारी बढिया बातचीत ने मरी नीद हराम कर रखी है "

पोलूनिन अपने अध्ययन कक्ष मे लौट आये और एक गहरी, पुरानी तथा चमडे मे मडी हुई आरामकुर्सी पर आराम स बठ गय। सिर हिलाकर काड-सूचिका की ओर सकेत करते हुए उन्होन कहा–
'बहुत ही दिलचस्प शौक है यह। हमारे ज़माने का बडा ही कारगर हथियार है जो लडाई शुरू होने के पहले ही उसका निर्णय कर सकता है। इन कार्डों को क्रम से व्यवस्थित करना बहुत ही महत्व की बात है। क्रम-व्यवस्था का मैंने स्वय आविष्कार किया है और मुझ उस पर बहुत गर्व भी है। इनमे दर्ज की गई घटनाए बहुत शिक्षाप्रद और बिल्कुल सच्ची है। हा तो आप नोवीत्स्की के बारे में जानना चाहते है न? जब तक चाय तयार होती है, तब तक बहुत सक्षिप्त रूप स

उन्होन काड सूचिका का एक खाना बाहर को खीचा, जिस पर "सार्जेंट" की चिप्पी लगी हुई थी। उन्होने उसम स कुछ काड निकाल, जिन पर घनी लिखावट म कुछ लिखा हुआ था, और उन्हें पत्ते की भाति मेज पर फैला दिया।
'तो क्या नोवीत्स्की सार्जेंट था?" वोलोद्या न पूछा।
"कतई नही पालूनिन न चटखारा भरत हुए कहा। "इस स्थान पर लिखे हुए सार्जेंट शब्द का सम्बन्ध है लयव प्रिवायदोव का

रचना से 'मैं सार्जेंट को वाल्तेयर का स्थान दे सकता हू'। आपने स्कूल मे यह रचना पढी थी न? हा तो, नोवीस्की "

पोलूनिन ने कुर्सी से टेक लगा ली, आखें ज़रा मूद ली और कार्डों का तनिक हिलात-डुलाते, पर देखे बिना ही नावीस्की की चर्चा करने लगे।

"१८७७ मे घातक ट्यूमरा का स्वस्थ शरीर मे स्थानान्तरण के कई तजरबे करन के बाद नोवीस्की न सारी दुनिया के लिए महत्त्व रखनेवाला एक शाध प्रबन्ध लिखा। इसका शीपक था—'घातक ट्यूमरा के स्थानान्तरण की समस्या (प्रयोगीय अनुसधान)'। इस शोध प्रबन्ध ने अबुदा रसौलियो के प्रयागीय विनान के विकास को प्रोत्साहन दिया। केसर पर पहला असली हमला किया गया।

"समझे, वोलोद्या?'

"जी, समझा।"

"अब आप कल्पना कीजिय कि इसी वैज्ञानिक को, जा शायद बहुत ही वडा वैज्ञानिक और सही अथ म पथ प्रदशक बनता, लेफ्टीनेंट-जनरल काउट लारिस मेलिकोव की कमान मे दूसरी दान कज्ज़ाक रेजिमेंट म भेज दिया गया और वह फिर कभी विज्ञान की ओर नही लौट सका।"

"पर ऐसा क्यो किया गया?" पोलूनिन की आखा को गुस्से स धधकते हुए देख वोलाद्या ने दृढता से पूछा।

"इसलिए!" पोलूनिन ने चिल्लाकर कहा। "इसलिए कि डाक्टर नोवीस्की के लिए कम्बख्त नियमा के अनुसार फौजी सेवा करना जरूरी था। सजरी की अकादमी म शिक्षा पान की सुविधा का क्या वह गरीब पसे की शक्ल मे बदला चुका सकता था? जाहिर है कि नहीं। तो बस, जाये और अपन जार तथा देश की सेवा करे। आवेदनपत्र भेजे गये, पत्र व्यवहार हुआ, समाज के भले लागो न नोवीन्स्की के लिए कडा सघप किया, पर उसे भेज ही दिया गया। जनरल न हुक्म दिया—'जाओ, जार की सेवा करो' और इस तरह रूस का एक महान सपूत छीन लिया गया और अबुदा रसौलिया का विज्ञान अनेक वर्षों तक जहा का तहा ही रह गया। फौजी सेवा खत्म हाने पर उसे राज़ी तो कमानी थी, परिवार का पेट पालने के लिए काई धधा तो करना था, इसलिए अपन तजरबे कैसे जारी रख सकता था वह?"

पोलूनिन चायदानी और एक डिब्बे म कुछ मिठाइया लाय और उन्होने अपने और वालोद्या के लिए चाय डाली। बुझी हुई सिगरेट को मुह के एक ओर फिर दूसरे कोने मे दाता तले दवाते और कनखियों से एक अन्य कार्ड को देखते हुए उन्होने पढा—

"'सेंट पीटसबग मे जिले का पशु-भजन नियुक्त कर दिया गया। उसका काम था घोडो समेत नगर म वध या पालन के लिए लाये और नगर से बाहर ले जाये जानेवाले जानवरा की जाच करना।' बस, सक्षिप्त मे इतनी ही कहानी है उसकी।'

' वह मर गया?" वोलोद्या ने दबी-सी आवाज म पूछा।

और क्या!" पालूनिन ने दुख और खीझ से झल्लाकर जवाब दिया। "निश्चय ही। और अब पूरी तरह भुलाया जा चुका है उसे। १६१० तक तो पत्राव उसका उल्लेख करता रहा, पर किसी एक विदेशी ल्यूमन्थन की लिखी हुई जा किताब अभी निकली है, उसम हमारे नावीस्की का कही कोई जिक्र नही। फिर से हानाऊ और मोरो नाम के विदेशिया की ही चचा की गई है। पर खर, असली बात यह नही है वह कुछ अधिक ही गम्भीर है। बात यह है कि किसी 'सार्जेंट' की कलम की एक धसीट से वह चीज जहा की तहा रह गई जो विज्ञान के क्षेत्र म एक महान युग का शुभारम्भ कर सकती थी, उसने एक ऐसे व्यक्ति के विचारो का गला घोट दिया, जो सम्भवत एक महान वैज्ञानिक हो सकता था।"

पालूनिन ने कार्ड खाने मे वापिस रखकर उसे बन्द कर दिया। व उठे और उन्होंने कमर मे चुपचाप दो चक्कर लगाये और उदासी भरे लहजे म कहा—

"यह 'सावधान, सम्मानित जनरलो!' शीषकवाले लेख के लिए बढिया विषय भी रहेगा।"

"आपको वागोस्लाव्स्की जचे?" पालूनिन ने अचानक पूछा और वालोद्या के उत्तर की प्रतीक्षा किय बिना ही कहते गये—

बहुत ही अदभुत आदमी है वह। उदासी या गुस्से के क्षणा म उसका ध्यान आने पर दिल को जरा राहत-सी मिलती है। वागोस्लाव्स्की जैसे लोग ही दुनिया म शान्ति करेंगे, उसम वास्तविक कानून और व्यवस्था कायम करेंगे और हर चीज को उसका उचित स्थान देंगे।

आपका देर-सवेर उससे वास्ता पडेगा, इसलिय इस बात को सुनिये, यह खासा दिलचस्प किस्सा है।"

वोलोद्या ने एक गिलास चाय पी ली, हर चीज अब साफ तौर पर उसकी समझ मे आ रही थी और पोलूनिन की भारी तथा सुस्थिर हुई आवाज सुनकर उस खुशी हो रही थी। वे अपने मनपसन्द विषय की चर्चा कर रहे थे, एक असली इन्सान की कहानी सुनान जा रह थे और अब प्रशसा न उसके क्रोध की जगह ले ली थी।

" बोगोस्लोव्स्की तब बहुत ही जवान डाक्टर थे, जब वे अपनी पत्नी नारी रोगविज्ञा क्सेनिया निकालायेव्ना और छोटी-सी बच्ची साशा के साथ चार्नी यार में पहले-पहल आये। चार्नी यार के अस्पताल का बडा डाक्टर कोई सुतूगिन था। वह 'यमदूत सभा' का सदस्य और लुटेरा था, जिसने कभी वाइत्सेखोव्स्की जमीदार परिवार और चोर्नी यार के व्यापारी वग की बडी वफादारी से सेवा की थी। शैताना के उस गुट ने कभी उसे एक प्राथनापत्र देकर पेत्रोग्राद मे दूमा के पास भी भेजा था। जाहिर है कि उसने बोगोस्लोव्स्की का शत्रुतापूण स्वागत किया। 'आह, तो आप बोल्शेविक है? तो, साथी बाल्शेविक, हम आपको हमारे चोर्नी यार की मेहमाननेवाजी का जरा मजा चखायेंगे।' सुतूगिन बाहरी तौर पर अग्रेज जैसा लगता था। वह सिगार पीता, गेटिस पहनता, घुडसवारी करता और बर्फीली नदी मे तैरता। अस्पताल म जुए रेगती ठड और बदबू रहती और पाखाना की हालत बडी खराब थी। मुझे वहा जाच करने के लिए भेजा गया और उस समय भी यह स्पष्ट था कि सुतूगिन सोवियत सत्ता विरोधी गुट्ट का प्रत्यक्ष विध्वसक है। वह बीमारो की न ता देखभाल और न ही कोई ऑपरेशन करता। जरूरत होने पर नगर स सर्जन बुलवा लेता, पर ऑपरेशन के बाद अपने किसी भी डाक्टर को रोगी के नजदीक न फटकने देता। 'हमने तो ऑपरेशन किया नहीं, फिर हमारी कैसी जिम्मेदारी,' वह कहता। उसका एक अन्य मनपसन्द सिद्धान्त यह था—'जितना बुरा, उतना ही अच्छा'।

"बोगोस्लोव्स्की से मुलाकात होते ही सुतूगिन ने पूछा कि क्या आप कामेन्स्की गिरजे के बडे पादरी येव्गेनी बोगास्लाव्स्की के बेटे नही है। बोगास्लाव्स्की ने हामी भरी। 'ता क्या आप इस नास्तिकता

के जमाने म अपनी जान बचाने के लिए ही कम्युनिस्ट बने हैं ?' सुतूगिन ने पूछा। 'नही, इसलिए नही,' बोगोस्लोव्स्की ने जवाब दिया। 'इसलिए कि आप जैसे बदमाश अस्पताल के पास भी न फटक पायें।

तो इस तरह आग भड़कने लगी।

बोगोस्लोव्स्की काम करते जबकि अग्रेज जैसा साहब उनके खिलाफ शिकायत लिखता। किसको उसने शिकायती चिट्ठिया नही भेजी! गुबेनिया कमिटी को उयेज्द कमिटी को फौजी कमिसारियत को और फौजी कमिसार को भी। बोगोस्लाव्स्की जितना ही बढ़िया काम करते, उनके विरुद्ध उतने ही अधिक परेशान करनेवाले आयोग नियुक्त किये जाते उतनी ही अधिक शिकायत होती और जाच पड़ताल की जाती।

'शिकायत बेनाम न होती कि उन्हे चुपचाप आग की नजर कर दिया जाता। उनके नीचे भेजनेवाला के हस्ताक्षर होते और इनम शामिल रहते चोर्नी यार के समाज के सभी भूतपूर्व बढ़िया लोग, सुतूगिन के सभी यार दोस्त।

'बोगोस्लाव्स्की भी परेशान रहने लगे। यह तो सभी जानते हैं कि किसी पर लगाये जानेवाले आरोप और उनसे सम्बन्धित पूछ-ताछ ढग से काम करने म बाधा डालती है। दिन भर वे कड़ा श्रम करते और रात को मीठी नीद सोने के बजाय जागते हुए कटुतापूर्ण विचारों म खोये उलझे रहते।

'एक दिन रूसी कम्युनिस्ट पार्टी की उयेज्द कमिटी का सेक्रेट्री कोमारेन्को अस्पताल मे आया। मैं उसे जानता था। कभी वह उचा नदी का बेडा निदेशक था सुन्दर लाल बालोवाला, बाका, दिलेर जवान जो बढ़िया गीत पर जान देता था। रू० क० पा० की गुबेनिया कमिटी की कार्यकर्त्री एक जवान औरत भी उसके साथ आई। उसका नाम अग्लाया पत्रोव्ना उस्तिमेन्का था। वह शायद वोलोद्या उस्तिमेन्का की कोई रिश्तेदार थी?"

नही, नही वोलोद्या ने गम्भीरता से झूठ बोल दिया। शहर म बूआ को बहुतेरे लोग जानते थे और वोलोद्या अपने को प्रमुख नारी का रिश्तेदार जाहिर नही करना चाहता था।

"आप जानते-बूझते झूठ बोल रहे हैं। पर खैर, अपना जी खुश कर लीजिय," पोलूनिन ने कहा और फिर स अपनी बात आगे बढान लगे।

"कोमारेत्स ने अस्पताल के सभी कमचारियो को इकट्ठा करके यह सुझाव पेश किया कि वे सस्था की वत्तमान आवश्यकताओ और भावी योजनाओ पर विचार-विनिमय करे। इस अस्पताल की इमारत की अजीबोगरीब बनावट के कारण स्थानीय लाग इसे 'हवाई जहाज' कहते थे। चलने फिरने लायक मरीज भी इस सभा मे शामिल हुए। विचार विनिमय के दौरान यह स्पष्ट हुआ कि वोगास्लाव्स्की ने बहुत-सा अच्छा काम किया था। गुबेनिया कमिटी स आनेवाली नारी खडी हुई और उसन विभिन्न हस्ताक्षरावाली मास्को, सरकारी वकील के कार्यालय, मिलीशिया, मजदूर और किसान निरीक्षण सस्था राजकीय राजनीतिक विभाग और सैनिक कमिसारियत के दफ्तर म डाक्टर सुतूगिन द्वारा भेजी गई शिकायत समस्वर मे पढकर सुनाई। उसन जाचकर्त्ताओ के निणय भी पढे। अस्पताल के कमचारियो और मरीजो के चेहरो के रग उड गये, सभी भयभीत हो गये, वे बोगोस्लोव्स्की को भली भाति पहचानने समझन और प्यार करन लगे थे। सुतूगिन की कमीनी हरकतो से उन्हे बडी ठेस लगी। सुतूगिन के होठो पर अस्पष्ट, भयावह तथा कायर की सी मुस्कान दिखाई देती रही।

"'हा तो, सुतूगिन, क्या ख्याल है आपका? यह सब किस्सा क्या है?' कोमारेत्स ने पूछा।

"सुतूगिन की छुट्टी कर दी गई। कोमारेत्स और अग्लाया पेत्रोव्ना ने बोगोस्लाव्स्की की प्रशसा करते हुए बहुत से अच्छे शब्द कहे और यह सलाह दी कि वे इस कड़ुवाहट और गदगी को भूलकर हल्के मन से अपना काम करते रहे। रवाना होन के पहल उन्होन फिर से अस्पताल का चक्कर लगाया। इमारत की मरम्मत हो गई थी, ताप-व्यवस्था ठीक-ठाक थी, पर उपकरण बहुत कम थे। चादरो, कम्बलो और पलगो की भी कमी थी। मरीजो की सख्या बढती जा रही थी। इस वप 'हवाई जहाज' मे २०० से अधिक आपरेशन किये गये थे। यह अभूतपूव सख्या थी।

"'हम बहुत कुछ सोचना विचारना होगा, पर हम मदद करने का वादा करते है,' कोमारेत्स ने कहा।

"कोमारेत्स तो सोच विचार ही करता रहा, इसी बीच बाग स्लोव्स्की सीबीर्त्सी के शीशे के कारखाने मे गये और वहा उन्होंने एक सभा की। मजदूरो ने एकमत होकर अस्पताल के लिए नया साज सामान खरीदने के हेतु एक दिन की मजदूरी देने का निर्णय किया। राज़ा लुक्ज़म्बुर्ग नामक आरा मिल, इटा के भट्टे और क्राति के सनिक नामक भाप मिल के मजदूरो ने भी ऐसा ही किया। इस तरह मजदूर वर्ग ने यह स्पष्ट कर दिया कि वह अपने अस्पताल और बोगोस्लोव्स्की जैसे डाक्टर का समर्थन करने की जरूरत के महत्त्व को बहुत अच्छी तरह समझता है।

"बोगोस्लोव्स्की ने ७,४४७ रूबल ९ कोपक जमा किये और उन्हे लिनन के टुकडे म लपेट लिया। उनकी पत्नी ने वह टुकडा मोटे और मजबूत धागे से बोगोस्लोव्स्की की वास्कट के साथ सी दिया और वे मास्को की ओर रवाना हो गये। इसी बीच सुतूगिन ने गुबेर्निया कमिटी के नाम बोगोस्लोव्स्की के विरुद्ध कलकपूर्ण शिकायत लिख भजी। शिकायत मजदूरो के एक दल की ओर से की गई थी, जिसने यह माग की थी कि नीमहकीम और ढोगी बोगोस्लोव्स्की से उनकी रक्षा की जाये जो उनसे पसे ठगता है। हस्ताक्षर साफ पढे जा सकते थे। अस्पताल के एकाउटेट सीदीलेव ने बहुत ही सफाई से जीते जागते आरावश अर्त्युखाव और ऐसे ही जिजनी मिस्त्री के हस्ताक्षरो की नकल की थी। दफ्तर के रजिस्टर से ऐसे अन्य हस्ताक्षर भी मिल गये, जिनकी बढिया नकल की जा सकती थी। सुतूगिन की पत्नी ने मिल मजदूरो और अन्य कई लोगो के बढिया जाली हस्ताक्षर बडे अच्छे ढग से उतार लिये थे। बडी चालाकी से तयार की गयी इस शिकायत की जब तक बार-बार जाच-पडताल होती और गन्दगी को पूरी तरह साफ किया जा सकता, तब तक के लिए गुबेर्निया कमिटी ने मास्को के अधिकारियो को तार भेजकर यह प्रार्थना की कि बोगोस्लोव्स्की कोई भी चीज न खरीदने पायें और जमा की हुई सारी रकम उयेज्द कमिटी को भेज दे। बोगोस्लोव्स्की ने अभी तक कुछ भी नही खरीदा था, इसलिए उन्होंने डाक द्वारा सारी रकम उयेज्द कमिटी के कोमारेत्स के नाम भेज दी। इसके बाद उन्होंने अस्पताल की जरूरत की सभी चीजें भी कोमारेत्स के नाम ही वी० पी० पी० द्वारा

भिजवा दी। घर लौटते हुए वोगोस्लोव्स्की को गाडी मे केवल पके हुए खीरे और डबलरोटी ही नसीब हो सकी।

"अस्पताल के लिए भेजा गया साज़-सामान कुछ समय बाद पहुच गया। कोमारेत्स इस समय तक सुतूगिन की नई मक्कारी की तह मे पहुच चुका था। उसने चीज़ो की रकम चुका दी। आखिर सुतूगिन को गिरफ्तार कर लिया गया और अस्पताल का रग-ढग ही बदल गया। लोग अपने पुराने हानिया को ठीक कराने, बुरे ढग से जोडी गयी हड्डियो को फिर से जुडवाने और साम्राज्यवादी युद्ध के समय से तन म घुसे हुए छर्रों के टुकडो को निकलवाने के लिए यहा आते। औरत भयानक, जानलेवा, तडपानेवाले और अन्य सभी तरह के दर्दों और रहस्यपूण रागो का इलाज कराने आती। 'हवाई जहाज' मे काम करना अब बडे सम्मान की बात समझी जाती और वोगोस्लोव्स्की की बाछें खिली रहती। लोगा के चेहरा पर अपने अजीब अदाज़ मे नज़र जमाकर और चटखारा भरकर वे कहते—

"'अगर आप सोवियत राज्य व्यवस्था मे निहित सभी सम्भावनाओ का उपयोग कर, तो बहुत कुछ कर सकते हैं।'

"विश्वसनीय और भले ढग का अत्युखोव उन तीन व्यक्तियो का मुखिया था, जिन्होंने अस्पताल की मदद करने का बीडा उठाया था। सीवीर्स्की के शीशा बनाने के कारखाने का व्यापार प्रबधक, जो इन तीन व्यक्तिया मे से एक था, अस्पताल को रद्द किया हुआ शीशा ला देता और तीसरा, खोलादवेविच, मिल से भूसी लाता।

"अब वोगोस्लोव्स्की ने अपने प्रतिभाशाली व्यक्तित्व का एक और पहलू स्पष्ट किया। उन्होने बढिया किसान होने की अपनी कुशाग्रता प्रकट की। उनमे अच्छी व्यावहारिक समझ-बूझ है, वे 'हमारे दैनिक भोजन' का महत्त्व समझते हैं, खेती से अनजान नही हैं और धरती तथा उसके वरदाना से बहुत प्यार करते है। उन्होंने पशु-पालन, सूअरा का खिलाने पिलाने, सब्जी-तरकारियो के बागीचे तथा गमले उगाने की पत्र-पत्रिकाए डाक द्वारा मगवानी शुरू की। बोगोस्लोव्स्की और मैनेजर प्लेमचक ने अस्पताल के एक हिस्से में लाड्री कायम कर दी और चोर्नी यार के लोगा के कपडे धान के लिए लेने लगे। छोटे-से नगर के लोग शुरू म तो इस लाड्री स बहुत हैरान हुए, पर फिर

उन्होंने आजमाइश करने की ठानी। वैसे उन्हें आशा यही थी कि उनके कपड़ा का क्लोराइड पानी में पूरी तरह सत्यानास हो जायगा। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। 'स्नोव्हाइट' (बर्फ-सा सफेद) जैसे प्यारे नामवाली लाड़ी से जो नफा हुआ, उससे बोगोस्लोव्स्की ने अस्पताल के लिए पहली गाय खरीदी और उसे भी 'स्नोव्हाइट' का नाम दिया। तो इस तरह यह सिलसिला शुरू हो गया। तीन सालों में अस्पताल के पास बहुत सी गायें हो गई, रोगियों को उनकी जरूरत का दूध, क्रीम और पनीर मिलने लगा और अस्पताल के कर्मचारियों को भी 'निजी उपयोग' के लिए ऐसी चीजें खरीदने की अनुमति दे दी गई। नाटे मोटे प्लेमेन्चूक ने पड़ोस के गुबेनिया के राजकीय फार्म से कुछ सूअर खरीद लिये। इस तरह सूअर पालन फार्म का श्रीगणेश हुआ। कुछ समय बाद वे सप्ताह में एक सूअर जिबह करने लगे। बोगोस्लोव्स्की अपना सारा फालतू समय फार्म के प्रबन्ध में, खेतों, डेयरी और अस्तबलों में काम करते हुए बिताते। गर्मियों में उनके चेहरे की खाल उतर जाती और उनकी कमीज पसीने से तर-ब-तर होती। वे चिकित्सा सम्बन्धी पत्र-पत्रिकाएं, बछड़ों-बछड़ियों, घास सुखाने और मुर्गी पालन के बारे में लेख पढ़ते।

''अगर पनीर की डेयरी बना दी जाये, तो मजा ही आ जाय!'' प्लेमेन्चूक बड़े उत्साह से कहता। 'यह कोई खास मुश्किल काम नहीं और मैं इससे परिचित भी हूं। खूब नफा होगा इससे। कुछ अर्से बाद हम एक नया और बढ़िया शवगृह बना सकेंगे ।'

''आपकी बहुत ही व्यापारिक प्रवृत्ति है, प्लेमेन्चूक। मुझे यह पसन्द नहीं ' बोगोस्लोव्स्की उसके इस सुझाव को रद्द कर देते।

"कुछ ही समय बाद प्लेमेन्चूक काफी बड़ी हेरा-फेरी करता हुआ पकड़ा गया। उसके वकील ने, जो किसी दूसरे नगर से आया था, खूब जोर-शोर से उसकी वकालत की और अपनी अभिव्यक्तिहीन आंखें बोगोस्लोव्स्की पर टिकाये हुए यह संकेत किया कि मेरा मुवक्किल तो केवल अपने बड़े डाक्टर का हुक्म बजाने का अपराधी है। जज ने वकील को अनेक बार रोका-टोका, पर फिर भी बोगोस्लोव्स्की को लगा कि उनके मुंह पर कीचड़ पोत दिया गया है और उन्हें शर्म महसूस हुई। प्लेमेन्चूक ने अपनी आखिरी सफाई पेश करते समय आंसू

बहाकर कहा (उसे रोने की आदत थी) कि अगर अस्पताल मे उम तरह का 'वातावरण' न होता, तो वह बिल्कुल दूध धोया रहता।

"अदालत ने उसे केवल तीन साल की सजा दी, पर अभियोक्ता ने इसका विरोध करके उसे पाच साल तक बढवा दिया।

"यह तो खैर ठीक ही हुआ, पर फाम पर गन्दगी उछाली जाने लगी। प्लेमेचूक की हेरा फेरी ने उस प्रशसनीय और बहुत जरूरी उद्यम पर एक स्थायी धब्बा छोड दिया। प्लेमचूक की बीवी उयेजद के वित्त विभाग मे टाइपिस्ट थी। उसन खूब जार शोर से सभी तरह की अफवाह और झूठी बात फैलानी शुरू की। बोगोस्लाव्स्की उन्ह रोकन मे असमथ थे। ठडे-ठडे और मजेदार दूध की चुस्किया लेत हुए रोगी अक्सर यह कहते सुने जाते कि इधर हमे भी किसी चीज के लिए इनकार नही किया जाता और उधर अस्पताल के अधिकारीगण के चुरान के लिए भी बहुत कुछ बच जाता है। इसका मतलब है कि खूब हाथ रगते हैं वे लोग! इस सिलसिले मे कुछ-कुछ भूले बिसरे प्लेमेचूक का अवश्य ही जिक्र किया जाता। काई उसे गद्दी से उतारा हुआ बडा सजन कहता, तो काई छाटे सजन की बीवी और काई बडी नस। उयज्द की कायकारिणी समिति के अध्यक्ष न, जा नमदिल और दयालु व्यक्ति था, एक बार बोगास्लोव्स्की से कहा—

"'मेरे दोस्त, क्या अब तो गडबड घुटाले को दूर नही कर दना चाहिए? लोग तरह-तरह की बातें कर रहे हैं।'

"'गडबड घुटाला तो कभी का दूर किया जा चुका है,' बोगास्लाव्स्की न थकी-सी आवाज मे जवाब दिया। 'लोगा की जबान कौन बन्द कर सकता है?'

"हिसाब किताब की जाच करनवाला के आयोग अस्पताल म आ धमके। ऐनकवाले निरीक्षका ने रजिस्टरा की खाक्छानबीनी की, अपन विचार लिखे और अपन पेशे की दो मानी 'हूम' की। उन्हाने यह माग की कि हमे व आदेश दिखाये जायें, जिनके अनुसार अस्पताल अपने अधीन फाम स्थापित कर सकता है। उन्हाने जन-कमिसार, जनतन्त्र और गुर्बेनिया की प्रशासकीय सस्थाआ के लिखित अनुमति-पत्र दिखान के लिए कहा। उन्होंने यह भी कहा कि रागिया द्वारा इस्तेमाल किय जानेवाले दूध की कीमत मनमाने ढग स तय की गई है और चार

दिन तक और काम करने के बाद उसे बढाकर २६ कोपेक कर दिया।

"'आप तो सर्जन हैं न,' जाच पडताल के लिए आनेवाले पाचव आयोग के मुख्य जाचकर्त्ता ने कहा। वह स्पज की भाति छिद्रोंवाली नाक और लम्बे होठवाला व्यक्ति था। 'आप सर्जन होते हुए इस कोयलो की दलाली मे क्या अपने हाथ काले करना चाहते हैं? सब कुछ मई दिवस नामक राजकीय फाम के हवाले कर दीजिये। हम इस हस्तातरण की व्यवस्था करा देगे और किस्सा खत्म हो जायेगा। मैंने डाक्टर हासे के बारे मे एक किताब पढी थी। वह मधुमक्खियो के छत्तो, गोशालाओ, सूअर पालन और मुर्गाखानो के झझट मे पड़े बिना ही अपना महान काम करता था '

"बोगोस्लोव्स्की ने अपना थका हुआ सिर ऊपर उठाया और रुखाई से, बिना लाग लपेट के तथा धाराप्रवाह वह खरी-खोटी सुनाई कि सभ्य और सुसस्कृत हिसाब किताब जाचकर्त्ता तो भौचक्का-सा रह गया। बोगोस्लोव्स्की की ज़बान पर गालिया चढी हुई है और कभी कभी वे उनकी लगाम ढीली छोड देते हैं। जाचकर्त्ता का होठ और भी नीचे लटक गया और उसकी मोटी, स्पजी नाक सुर्ख हो गई।

"'मैं अपना कर्त्तव्य पालन कर रहा हू,' जाचकर्त्ता ने कहा।

"'मैं भी वही कर रहा हू,' बोगोस्लाव्स्की ने जवाब दिया। 'पिछले कुछ समय से भाड मे जायें आप सभी लोग, सभी इस हकीक़त को भूल जाते हैं कि फाम के अलावा एक अस्पताल का ज़िम्मेदारी भी मेरे कधो पर है। मैं उस अस्पताल का बडा डाक्टर ही नही बल्कि मुख्य सर्जन भी हू और इसके क्या मानी हैं यह बाई भी ध्यान मे '

"उस वसन्त म बोगोस्लाव्स्की के सब्र का प्याला छलक गया। उनकी पत्नी ने बूढे अर्त्युखाव के नेतृत्व म सहायको की तिकडी को चुपचाप इकट्ठा किया। उन्होंने एक पत्र तैयार किया और उस पर उन लोगो के हस्ताक्षर करवाये, जिनका बोगोस्लोव्स्की न इलाज या आपरेशन किया था। बहुत सोच विचार के बाद उन्होंने स्वय अग्लाया पत्रोव्ना उल्यानोवा के नाम यह पत्र भेजा, क्योंकि वह नगर, गुबर्निया, मीचीर्गो और चार्नी यार म काफी जानी-मानी हुई थी। उन्हें आशा थी कि वह स्वय आयेगी, पर उसकी जगह नाटा मोटा और मोटे मोटे

शीशोवाला चश्मा चढाये हुए 'उचा मज़दूर' समाचारपत्र का एक सवाददाता आ पहुचा। बोगोस्लोव्स्की ने खीझ मे उसे भी एक अन्य जाचकर्त्ता समझ लिया और उसके साथ रुखाई से पश किया। पर गुबेनिया समाचारपत्र के विभागीय सचालक श्तूब ने बुरा नही माना। उसने किसानो के होस्टल मे डेरा डाला और चुपचाप तथा ठडे दिल से अपना काम शुरू किया। रोगिया के हस्ताक्षरोवाले ममस्पर्शी पत्र का भी उसके मन पर उसी भाति कोई प्रभाव नही हुआ, जिस भाति डाक्टर के विरुद्ध लिखे गये ढेर सारे पत्रो का। वह सचाई जानना चाहता था। दूरी से धीरे धीरे केन्द्र बिन्दु की ओर बढने के अपने निजी ढग के प्रति वफादार रहते हुए उसने बागोस्लोव्स्की को तनिक भी परेशान किये बिना देहात के इस डाक्टर की दिना, महीनो और बरसा की जिन्दगी के बारे मे तथ्य जमा कर लिये। बोगोस्लोव्स्की का काम शानदार, मानवीय, साहसपूण और सच्ची पार्टी भावना के अनुरूप था। उसने यह भी मालूम कर लिया कि जब बोगोस्लोव्स्की ने अपने पिता से भिन्न रास्ता अपनाया, तो भगवान के उस कठोर सेवक ने कामेस्की गिरजाघर के मच से अपने इकलौते बेटे को अभिशाप दिया। उसने यह भी मालूम कर लिया कि स्नातक हाने के बाद बोगास्लाव्स्की को डाक्टरी सस्थान मे ही काम करने की भी सम्भावना प्राप्त थी, पर उन्होने जान-बूझकर किसी दूरस्थ गाव म काम करन का निणय किया था। अन्य महत्त्वपूण तफसीलो के अलावा उसने यह पता चलाया कि बोगोस्लोव्स्की के परिवार न फाम से 'दूध, शहद, अडे, पनीर या सूअर का मास,' कभी कुछ भी नहीं लिया था। गहराई मे जानेवाले श्तूब ने रोगिया के बारे मे भी सभी कुछ जानन की कोशिश की, जो सारे गुबेनिया, यहा तक कि दूर दराज के नगरा से भी इस अस्पताल मे आते थे। एक पगु लडका अस्त्राखान से यहा लाया गया था, एक बुजुग भूमापक कालूगा से आया था। सजरी की नस मारीया निकानायव्ना, काले बालोवाला उत्साही बाल चिकित्सक डाक्टर स्मुश्केविच, अदली चाचा पेत्या, उप प्रधान बुजुग डाक्टर विनाग्रादोव, कपडा-लत्ता की इचाज और मैनजर रवावीशिनकाव ने श्तूब को बहुत दिलचस्प बात बताइ।

"समझदार, फुर्तीली और सलोनी तथा बहुत ही सुन्दर डाक्टर अलक्साद्रा पत्राविच न श्तूब से उस खनिज-जल के चश्म की भी

चर्चा की, जो फव्वारा कुआ खोदते समय खोजा गया था। मुतूगिन इस चश्मे के बारे मे जानता था। गुबेनिया के पुरालेखागार मे एक पुराने ढग का पत्र विद्यमान था, जिसमे उसने इस पानी को इस आधार पर निजी सम्पत्ति बताया था कि वोइस्तेखोव्स्की ने मुझे यह उपहार के रूप मे दिया था। उसने लिखा था कि मैंने खुद ही उसे खोजा था और 'चेर्नोयास्कीया' की सज्ञा दी थी। डाक्टर पलोविच की कहानी सुनने के बाद ही शतूव ने ये तफसीले मालूम की। उसने शतूव को यह भी बताया था कि बोगोस्लाव्स्की इस पानी का विश्लेषण कराने के लिए उसे मास्को ले गये थे। इसके बाद उन्होने किसी नीरस रूखे आदमी के साथ देर तक बातचीत की और उसे इस बात के लिए राजी करने की कोशिश की कि वह अस्पताल के करीब ही खनिज जल की छोटी सी फैक्टरी लगाने की अनुमति दे दे। पर उस बुड्ढे ने जवाब दिया कि खनिज-जल के फव्वारे एक बीमारी बनते जा रहे हैं और जिसे देखो, वही उन्हे खोज लेता है। उसकी समझ मे नही आया था कि कौन उनका सारा पानी पियेगा। फिर उसने कहा कि बोतलो के कारण भी कुछ परेशानी है। अपने स्वभाव के मुताबिक बोगोस्लाव्स्की ने सम्भवत उसे कुछ भला-बुरा कहा होगा और इस तरह इस मुलाकात का अन्त हो गया होगा। वे गुस्से मे उबलते हुए वापिस आये। उन्होने अपनी तिकडी को जमा किया और स्वास्थ्यप्रद जल को पाइपो द्वारा वार्डों, मरहम-पट्टी के कक्ष, चलते फिरते रोगियो के लिए भोजनालय और रसोईघर मे पहुचाने का सस्ता तरीका निकाल लिया। स्कावोरिन्कोव सब्जियो के बगीचे मे खनिज जल पहुचाने के लिए नगर से धातु की कुछ पतली-पतली पाइपें ले आया। जमीन ने झटपट अपना ऋण चुका दिया सब्जिया लगभग दुगुनी पैदा होने लगी। तब बोगोस्लाव्स्की ने कुछ काच गह बनवाये और रोगियो को मौसम के बहुत पहले ही हरे प्याज, अजमोदा, सायबीर और दूसरी चीजें मिलने लगी। उन्हे तो हरे खीरे भी उस समय मिल जाते, जब चोर्नी यार मे कोई उन्हे देखने तक की कल्पना भी नही कर पाता था।

"उस समय तो शतूव खूब ही हसा जब बूढे अर्त्युखोव ने, जो बोगास्लोव्स्की की पूजा करता था, यह बताया कि बोगास्लोव्स्की ने 'कमीन शैतान' स्थानीय पादरी येफीमी के कैसे छक्के छुडाये थे।

"बात यह थी कि सेंट पीटर और पाल का गिरजाघर पिछली शताब्दी में अनाज के व्यापारियों जूकोव भाइयों ने बनवाया था। यह गिरजा एक विराट पार्क में खड़ा है। उसका दूरस्थ सिरा धीरे धीरे अधिक जाने माने नागरिकों का कब्रिस्तान बना दिया गया था। नगर के लोग तो अब भी इस पार्क में जाते थे, पर कब्रिस्तान में किसी को दफनाया नहीं जाता था। वह उपेक्षित हो गया था और सलीबों-सा सजा हुआ इसका पक्के लोहे का शानदार जंगला बिल्कुल बेकार हो गया था। 'हवाई जहाज' के गिर्द तो जंगला था ही नहीं। बोगोस्लोव्स्की डंडों की बाड़ नहीं लगवाना चाहते थे और इससे अधिक के लिए पैसे ही नहीं होते थे, जो अस्पताल के सभी सपाट मैदानों, बगीचों, अहाते और बाहरी इमारतों को घेरे में ले सकती। इस बाड़ की बेहद जरूरत महसूस होती थी बाग में टहलते हुए रोगियों के सगे-सम्बन्धी उन्हें खुमियां, खीरों और पत्तागोभी का अचार दे जाते और कभी-कभी तो छिपाकर वोद्का का अद्धा भी। उन्हें किसी तरह भी रोका नहीं जा सकता था।

"बोगोस्लोव्स्की ने मामले पर सोच विचार किया, अपना काला सूट पहना, जो मास्को के दौरों के लिए खास तौर पर बनवाया था, और स्थानीय पादरी यफीमी से मिलने गये। वे हर रोज़ उस कमीने और मानवद्वेषी पादरी के पास जा पहुंचते और आखिर गिरजे के दस सदस्यों की सभा बुलवाने में सफल हो गये। अर्त्युखोव के नेतृत्व में तिकड़ी भी बोगोस्लोव्स्की के साथ उस सभा में गई। वहां बोगोस्लोव्स्की ने इंजील, नये टेस्टामेन्ट, भजनावली और अन्य धार्मिक पुस्तकों की गहरी जानकारी का परिचय दिया। वहां बहस शुरू हो गई। शुरू में तो धीरे धीरे बातचीत हुई, फिर गर्मी आई और आखिर गाली-गलौज के साथ खत्म हुई। पादरियों के कथनों के शानदार चुनाव के आधार पर बोगोस्लोव्स्की ने निर्विवाद रूप से इस सदस्यों की समिति के सम्मुख यह सिद्ध कर दिया कि गिरजों को खजाने की तुलना में किसी पीड़ित की सहायता करना ईसाई धर्म के कहीं अधिक अनुरूप है। पादरी येफीमी ने गला फाड़फाड़कर अपना पक्ष पोषण किया, पर कुछ देर तक टुनमुन रहने के बाद दस की समिति में मतभेद हो गया और आखिर दस में से आठ ने बोगोस्लोव्स्की का समर्थन किया।

अस्पताल के ठेलो मे सेंट पीटर और पाल गिर्जे का जगला 'हवाई जहाज' मे पहुच गया और सही-सलामत वहा पर लगा दिया गया। कुछ ही समय बाद वोगोस्लोव्स्की ने उस कमीने बूढे पादरी के हार्निया का बहुत ही सफल ऑपरेशन किया। गिरजाघर से लाये गये जगले से घिरे अस्पताल के बगीचे मे चहलकदमी करता, खनिज जल की चुस्किया लेता और खीरो, प्याजो, पत्तागोभी और अन्य 'नेमतो' की बढिया फसल पर आश्चर्यचकित होता हुआ वह द्रवित होकर पतली, खरखरी आवाज मे भजन गुनगुनाता और सन्तोष की सास लेता। आखिर उसने वोगोस्लोव्स्की के सामने कुछ समय पहले दिखाई गई अपनी गुस्ताखी और 'गन्दे शब्दो' के उपयोग के लिए अफसोस जाहिर किया।

"श्तूव कोई एक महीने तक चोर्नी यार मे रहा। जाने से पहले उसने व्यक्तिगत रेकाडफाइल से वोगोस्लोव्स्की का फोटो चुराकर उसकी कापी तैयार की। उसके जाने के एक सप्ताह बाद 'उचा मजदूर' मे उसी फोटो के साथ एक लेख छपा। उस लेख को पढ़ते हुए वोगोस्लोव्स्की की पत्नी की आख छलछला आई और उसने अपनी बेटी से कहा-

"'प्यारी साशा, तो तुम्हारे पिता ही सही थे। उन्हे मुसीबत का सामना करना पडता है, पर वे हमेशा सही होते हैं। मुझे आशा है कि तुम भी ऐसी ही बनोगी।'

"साशा भी रोई। उसे अपने पिता से बहुत प्यार था और जब वे हिसाब किताब के निरीक्षक उनका अपमान करने आये थे, तो वह मन ही मन पीडा सहन करती रही थी। पिता जब मा से अपनी परेशानियो की चर्चा करते थे, तो वह छिप छिपकर उनकी बात सुनती थी। अब इन सभी चीजो का अन्त हो चुका था। श्तूव वास्तव मे है कौन? उसे सारी बाते कैसे मालूम हुई? उसने जो कुछ लिखा, वह सब ठीक क्या है? क्या इस दुनिया मे ऐसे अदभुत लोग भी है!

"वोगोस्लाव्स्की उस दिन देर से घर आये। वे कुछ बदले-बदले से लगते थे, कुछ झेंपते और मजाकिया-सा। उनकी बीवी क्सेनिया निकोलायेव्ना ने उस दिन बिलबेरियो की कचौरिया पकाई और शाम को उनके घर मेहमान आये—डाक्टर विनाग्रादोव, डा० अलेक्सान्द्रा पेत्रोविच, डा० स्मुश्केविच जो घर की बनी हुई सेब की ब्राडी लाया,

अस्पताल का अदली बूढा चाचा पेत्या, सजरी की नस मारीया निकोलायेव्ना, जो घर की बनी कुछ मीठी तेज शराब लाई। अत्युखोव भी आया। उन्हान 'गाऊदग्रामुस इगीतूर', 'मै ऊची-ऊची रई म से गुजरा', 'आखे काली काली' और 'गगाचिली', जिसे 'किसी अनजाने शिकारी ने मजाक म घायल किया और फडफडाकर मरकडा मे मरने के लिए छाड दिया,' गीत गाये। इसी समय लाल बालावाला कोमारेत्स घोडे पर आया, उसने बोगोस्लोव्स्की को गले लगाया, चूमा और 'दूसरो की ओर से बधाइया दी' तथा तारो भरी गम रात मे गायब हो गया।

"'जब प्रेस बढिया ढग से अपना क्तव्य पालन करता है,' काले बालावाला दुबला-पतला डाक्टर स्मुश्केविच कह रहा था, 'जब प्रेस जिम्मेदारी निभाता है और अपने उद्देश्य को समझता है, जब प्रेस '

"'सुनिये, आइये नाचे,' क्सेनिया निकोलायेव्ना ने अनुरोध किया। 'सच कहती हू कि मैं और मेरा पति ता खूब बढिया नाचते हैं। माजूरका, पोल्का, वाल्ज और त्राकाव्याक '

"विनोग्रादोव न अपनी कमीज के बटन खोल दिये थे और बालावाली छाती पर हाथ फेरते हुए वह अलेक्सान्द्रा वसील्यव्ना को समझा रहा था—

"'मेरे ख्याल मे तो हमारी बातचीत का यह निष्कष हो सकता है—वही ऑपरेशन करो या रोगी को केवल ऐसा ऑपरेशन कराने का परामश दो, जिसके लिए ऐसी ही परिस्थितियो मे तुम खुद अपने अथवा सबसे प्रिय व्यक्ति के लिए राजी हो जाते।'

"'यह कौन-सी नई बात कह दी है आपने!' अलेक्सान्द्रा वसीरयेव्ना न चिल्लाकर कहा। 'अग्रेज डाक्टर सिडनम ने अठारहवी शताब्दी मे ही यह तो कह दिया था '

"उसके गाल तमतमाये हुए थे और वह नाचना चाहती थी। पर नाचती तो किसके साथ! स्मुश्केविच अभी तक प्रेस का ही राग अलापता जा रहा था।

"जाहिर है कि मैं भी उस दावत मे शामिल था, मजे उडाता रहा था," पोलूनिन ने अपनी बात खत्म करते हुए कहा। "वैसे मैं तो परामश के लिये आया था और सयोगवश मुझे दावत मे शामिल होना पड गया। पर इस तरह बोगोस्लोव्स्की और आपकी रिश्तेदार

अग्लाया पेत्रोव्ना की विजय का साक्षी बना। एक अच्छे उद्देश्य को ढग से पूरा किया गया था।"

"तो यह सब कुछ भी आपने कार्ड मे दर्ज किया हुआ है?" वोलोद्या ने पूछा।

'नही। इस पीले डिब्बे मे तो केवल वही हैं, जो दूसरी दुनिया मे पहुच चुके है केवल वही हैं। जो जिन्दा है, उन्हे आप अपने कार्डों मे दर्ज कीजियेगा। जब डाक्टर बन जायेंगे, तो वोगास्लाव्स्की जसे लोगो को अपना आदर्श बनाइयेगा।"

फ्लैट के अन्दर कही घडी ने एक बजाया। वोलोद्या उठा। पालूनिन उसे दरवाज़े तक छोडने गये और विदा होते समय बोले—

'सोचना अच्छी चीज है। इससे मदद मिलती है। पर बहुत अधिक नही। असली चीज़ तो आदमी के अमली काम ही होते हैं।"

वोलोद्या जब वार्या के घर पहुचा, तो काफी देर हो चुकी थी। आखिर उसे अपना जी तो हल्का करना था।

"तो मुझे सब कुछ सुनाना चाहते हो?" टागो को अपने नीचे मोडकर बैठते हुए वार्या ने पूछा।

"हा, सुनाना चाहता हू। तुम नाराज़ तो नही होगी?"

वह नाराज़ नही हुई। क्या वह उससे नाराज हो भी सकती थी?

'तुम बहुत अच्छी हो और मैं निरा उल्लू हू!" वोलोद्या ने कहा। "पर लाल बालोवाली, असली चीज तो आदमी के अमली काम ही होते है!"

फिर उसने अटपटे ढग से यह और जोड दिया—

"यह मेरे शब्द नही, पालूनिन के शब्द है "

"खर, सुनाओ सारी बात!" वार्या ने कहा। "मगर सिलसिलेवार, मुझे बीच-बीच मे से बात सुनना पसन्द नही। हा, तो तुम पोस्तनिकोव के घर गये। तुमने अन्दर प्रवेश किया "

'हा, मैंने प्रवेश किया और पेल्मनिया बनाने लगा "

वोलोद्या "हवाई जहाज़" में

व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए जाने के एक दिन पहले वोलोद्या की अचानक पालूनिन से पार्क मे मुलाकात हो गई। सफेद मेज़ पर

बैंडवाले बैंड बजा रहे थे। लाइलैक के फूल खिल चुके थे बुजुग नागरिक रेशमी सूट पहने चहलकदमी कर रहे थे और गहरे, काले आकाश म सितारो की धीमी धीमी, गम लौ टिमटिमा रही थी। वार्या का हाथ भी गम था।

"हेलो, वोलोद्या!" पालूनिन ने आवाज दी।

वोलोद्या ने जोर से वार्या की कोहनी दबाई और इस तरह उस चेतावनी दी कि कोई असाधारण और महत्त्वपूण बात होनेवाली है। वार्या फौरन समझ गई कि लम्बे चौडे डील-डौलवाला यह व्यक्ति वोलोद्या के किस्से-कहानियो का नायक प्रोफेसर पोलूनिन ही है।

"अपने को बहुत ही समझदार दिखाना वालोद्या ने वार्या से कहा और नीरस ढग से पालूनिन को सम्बोधित करते हुए कहा— "नमस्ते, प्रोव याकोव्लेविच!'

वोलोद्या पोलूनिन और पोस्तनिकोव के जितना अधिक निकट हुआ, उसे वे जितने ही अधिक महान प्रतीत हुए, उनके चरित्रो मे जितने ही अधिक अच्छे लक्षण उसे दिखाई दिये, वह उतना ही अधिक औपचारिक होता चला गया। वह यह नही चाहता था कि वे मीशा शेरवुड की भाति उसे खुशामदी समझे या फिर इससे भी बुरा यह कि उस 'दास्ती बढाकर लाभ उठानेवाला" मानें।

"तो जा रह है?"

"हा।"

"सुना है कि आप बोगोस्लाव्स्की के पास चोर्नी यार जा रहे हैं?" (पालूनिन ने पक्के तौर पर जानते हुए कि वह वहा जा रहा है, यह पूछा।)

"हा, यह सही है।"

"मुझे खुशी है। डाक्टरी के विद्यार्थी की बात ता एक तरफ रही, खासा अनुभवी डाक्टर भी बागोस्लोव्स्की से बहुत कुछ सीख सकता है। खैर, आप तो उनसे परिचित हैं न?"

पेल्मेनी पार्टी का ध्यान करके वोलोद्या जरा झेंप गया। उसे याद आया कि वह वहा कितनी जल्दी नशे मे धुत्त हो गया था।

'आप अपनी मित्र से मेरा परिचय क्यो नही कराते?" पोलूनिन ने विषय बदलते हुए कहा।

वार्या ने अपना चौडा और सदा गम रहनेवाला हाथ पालनिन की ओर बढाते हुए कहा—"वार्या।" उस लम्बे-तडगे व्यक्ति का देखने के लिए उसे अपनी गदन अकडानी पडी।

"आइये, ज़रा बैठकर दम ले," पोलूनिन ने सुझाव दिया। "आज बडी उमस है गर्मी से पिंड ही नही छटता।"

पोलूनिन की चौडी छाती मे मुश्किल से सास आ-जा रही थी। उनके चेहरे पर तनाव और थकान थी। अपनी सिगरेट जलाकर व मजे से उसका एक लम्बा कश खीचकर उन्होने सामान्य ढग से कहा—

"सयोगवश मैं आज सुबह ही आपके कैरियर और बोगोस्लाव्स्की के बारे मे सोच रहा था। वैसे यह सही है कि एक बार हम उन पर काफी अच्छी तरह से विचार कर चुके हैं। वोलोद्या, मैं चाहता हू कि बोगोस्लोव्स्की से प्रशिक्षण पाते हुए आप इस तरह की छोटी मोटी बातो की ओर खास ध्यान दे, जैसे कि किसी सर्जन की योग्यता इस बात से स्पष्ट होती है कि कैसे वह बिना ऑपरेशन के रोगी का इलाज कर सकता है न कि उसके द्वारा किये जानेवाले ऑपरेशनो से।"

"बहुत खूब!" वार्या ने दाद दी।

"मैं भी ऐसा ही समझता हू," पोलूनिन ने सहमति प्रकट की। "ऑपरेशन करना तो एक तरह से सीखी हुई तकनीक का उपयोग करना है, जबकि इसमे इनकार करने के लिए ऊची मानसिक योग्यता, कठोरतम आत्मालोचना और अचूक निरीक्षण की ज़रूरत होती है।'

"मेरी समझ मे कुछ नही आया," अपने माथे पर बल डालते हुए वार्या ने कहा।

"चुप रहो!" वोलोद्या ने धीरे-से कहा।

"बोगोस्लोव्स्की के साथ काम करते हुए आपको एक और चीज़ की तरफ ध्यान देना चाहिए। वह यह कि रोगी की चिकित्सा के मामले मे डाक्टर का व्यक्तित्व क्या भूमिका अदा करता है,' पोलूनिन ने गम्भीरतापूर्वक अपनी बात जारी रखी। "बात यह है कि कुछ लोग डाक्टर पर तभी विश्वास करते हैं, जब वह प्रोफेसर हो। फिर भी कोई व्यक्ति ढग का डाक्टर बने बिना आसानी से प्रोफेसर बन सकता है "

"वोलोद्या, क्या इनका अभिप्राय झोवत्याक से है? वह, जो अपनी चाद पर इत्र लगाता है?" वार्या ने पूछा।

पोलूनिन तनिक मुस्कराये। वोलोद्या ने वार्या का कोहनी मारी कि वह योही टाग न अडाये।

"हा, किसी तरह का डाक्टर बन बिना। एक बात और," पोलूनिन कहते गये, "मेरे बारे म आप चाह कैसी भी राय क्या न बनायें, पर मुझे इस बात म कोई गुनाह दिखाई नही देता कि कभी-कभी मैं स्टेथॉस्कोप और थर्मामीटर, अपने अनुभव, कुशाग्रबुद्धि नि रीक्षण और तर्क शक्ति पर भरासा करनेवाल और सबसे बढकर यह कि सच्चे मानव होनेवाले देहाती डाक्टर को अधिक महत्व दता हू। हा, हा, एक्स रे, प्रयोगशाला—यह सब कुछ ठीक है अपनी जगह पर उचित है, मगर तक्नीक के मुकाबले मे मनुष्य पर ज्यादा विश्वास करन को मन होता है। आपका और मेरा काम मानवीय काम है, आपको यह याद रखना चाहिये। इसी चीज को ध्यान म रखते हुए काम के प्रति बोगोस्लाव्स्की के रवैये और तरीका का अध्ययन कीजिये। वे बहुत ही ऊचे विचारावाले, दढ सकल्प तथा सघप मे तपे हुए डाक्टर हैं। वे विज्ञान और यत्रो पर भरोसा करते हैं, किन्तु डाक्टर के व्यक्तित्व, हमारे साधारण और बहुत ही अदभुत डाक्टरा पर अधिक भरोसा करते है। जाहिर है कि सबसे अच्छे डाक्टर वही होत हैं, जिनमे ये तीन गुण एकसाथ पाये जाते हैं—ज्ञान, यन्त्रा का उपयोग करने की क्षमता और व्यक्तित्व। जब तक वहा रह अपने व्यक्तित्व का जितना अधिक निर्माण कर सके, करे, अधिक से अधिक उस असली गव का सचय कीजिये, जिसन एकबार मौत के किनारे पहुचे हुए रोगी के पास बैठे जमन डाक्टर श्वेनिनगेर को यह कहन का बल दिया था—'मेरे तरकश म अभी और भी तीर बाकी है।' मैं तो ऐसा ही मानता हू कि उस जमन डाक्टर ने इस आत्मविश्वास, इस मानसिक बल ने ही रोगी की जान बचाई, न कि किसी दवाई न।'

"मैं सहमत हू, आपसे बिल्कुल सहमत हू," वार्या ने कहा।

"मैं यह सुनकर खुश हू," पोलूनिन न विनम्र ढग से सिर झुका दिया। 'क्या आप भी डाक्टरी की विद्यार्थिनी है?'

"मैं? नहीं, मैं तो कला क्षेत्र म काम करती हू। मरा मतलब यह है कि मैं अभी तो कालेज म पढ रही हू, पर '
'घर पर कला सीखती हैं?"
"नही, स्टडिग्रा म।"
"सच? मूत्तिकला? या शायद चित्रकला?"
'नही, रगमच की कला।"
"मतलब यह कि अभिनेत्री बनने जा रही हैं?"
हा। एस्फीर ग्रिगार्येव्ना मेश्चेर्याकोवा हमारी शिक्षिका हैं।'
'पर क्या उसका नाम एस्फीर है? उसका नाम तो यव्गेनीया है और कुलनाम तो दोहरा है – मेश्चेयाकावा प्रूस्काया।'
वार्या न सिर हिलाकर हामी भरी। अपनी शिक्षिका के प्रति श्रद्धा होने के बावजूद वार्या का हमेशा इस बात से थाडी शम आती थी कि उसका नाम और कुलनाम दोना ही दाहरे थे।
"पुराने कलाकारो के बारे मे यह अजीब-सी चीज है, नौजवान ऐसा नही करते,' पोलूनिन ने कहा। "पुराने कलाकारा के तो अवश्य हा दोहरे नाम हात थे और सा भी गजवाले। एक बार मेरे एक वाड मे बूढा अभिनता ग्रोरकी गोलदो और एक भूतपूव चार, लोह की तिजोरिया तोडने के फन का उस्ताद इक्ट्ठे रहे। चार अभिनेता गोलदो को चिढाता रहता–'मेरे छ नाम हैं – श्कूरिन-बारोविकोव-उडर प्रेतकोव्स्की इवानोव-कासिंस। मैंने इनके बल पर खूब मौज उडाई है' पर खैर मेश्चेर्याकोवा भला आपको क्या सिखा सकती है?'
"सिखा क्या नही सकती, उसका शिल्प तो बहुत बढिया है।' वाया ने कहा।
'पर वह अभिनत्री ता बहुत ही घटिया है। आप मुझे क्षमा कीजिये मैं एक अनाडी आदमी की तरह बात कर रहा हू, पर मेरे ख्याल मे तो केवल प्रतिभाशाली लागो से ही अभिनय की कला सीखी जा सकती है। दूसरो को शिक्षा देनेवाले डाक्टर के पास शिल्प के अलावा कुछ प्रतिभा भी अवश्य होनी चाहिए।"
'मेश्चेर्याकोवा की प्रतिभा बहुत बारीक और अपन ढग की है। इस सिलसिले म आपका मत सही नही है,' वार्या ने कहा। "रही शिल्प की बात तो खुद स्तानिस्लाव्स्की ने उसकी प्रशसा की है।'

"आह ग्लामा ने?" अपने विशिष्ट ढग से हसते हुए पोलूनिन ने हैरानी जाहिर की। "अगर ग्लामा ने प्रशसा की है, तो जाहिर है कि मुझे बहस करने का कोई अधिकार नही है। पर क्या सचमुच ग्लामा ने उसकी प्रशसा की है? और फिर क्या प्रशसा ही सब कुछ होती है? मिसाल के तौर पर, वोलोद्या के अध्यापक गानिचेव को ले लीजिये। उसकी अक्सर बहुत कडी यहा तक कि अपमानजनक आलोचना की गई है, पर फिर भी गानिचेव तो गानिचेव ही है। हा तो "

वोलोद्या को सम्बोधित करते हुए उन्होने कहा–"मैं फिर से यह कहना चाहता हू कि आप अन्य किसी के साथ नही, बल्कि बोगोस्लो व्स्की के साथ काम करने जा रहे हैं, मुझे इस बात की बहुत खुशी है। उसे मेरी ओर से नमस्ते कहना और शुभकामनाए देना। आपका जहाज कब जायगा?"

"रात के तीन बजे।"

"तो फिर सितम्बर म मुलाकात होगी। बडे अफसोस की बात है कि आप बोगोस्लोव्स्की के साथ अधिक समय तक काम नही कर सकते। मैंने एकबार कही पढा था कि किसी प्रोफेसर को पढाने की इजाजत देने के पहले उससे यह पूछना चाहिए–श्रद्धेय विद्वान महोदय, एक देहाती डाक्टर के रूप म आपने एक वर्ष तक भी अभ्यास किया या नही?"

वे हसे और वोलोद्या से हाथ मिलाया।

"तो आपसे पहली सितम्बर को मुलाकात होगी। नमस्ते, हमारी भावी अभिनेत्री। 'मेरी प्यारी अभिनेत्रिनी'–चेखोव ने अपनी पत्नी को ऐसे ही सम्बोधित किया था न? सयोगवश, चेखोव सचमुच बहुत ही शानदार डाक्टर था और बहुत ऊचे ग्रथ म 'देहाती डाक्टर'।"

वोलोद्या और वार्या चलने के लिए उठे।

चोर्नी यार मे वार्या का पत्र पहुचने पर ही वोलोद्या को मालूम हुआ कि पोलूनिन का उसी रात को, उसी बेंच पर देहात हो गया था, जिस पर वे तीनो बैठे रहे थे। उनका दिल बडा गडबड था, पर उन्होने कभी ढग से उसका इलाज नही करवाया था। उनकी मृत्यु अचानक ही हुई और जलती हुई अधूरी सिगरेट उनकी उगलिया

के बीच रह गयी। शायद यह वही सिगरेट थी, जो उन्होंने बड रुम में उस समय जलाई थी, जब वे उनके पास बैठे थे, शायद बड लाउडस्पीकर वाल्ज की धुन बजा रहा था, शायद वोलोद्या और वार्या बहुत दूर नहीं गये थे और ट्रिल के दौर का शुरू होते अनुभव कर उन्होंने उन्हें पुकारा भी था। हर चीज़ मुमकिन है। किसी को भी सही तौर पर मालूम नहीं था कि यह कैसे हुआ, *किसी को भी कभी यह मालूम नहीं हो सकेगा।*

केवल वार्या ही वोलोद्या को विदा करने आई। बूआ अग्लाया काम-काज के सिलसिले में दूसरे नगर में व्यस्त थी। वोलोद्या का सामान यह था—घुटनों तक के मजबूत जूते, तिरपाल की बरसाती, पिरोगोव की रचनाओं के दो खण्ड और रस्सी से बंधी हुई कुछ किताबें। एक पोटली में वार्या के ज्यादा के जोर देने पर खरीदी गयी हेरिंग मछलियां भी थीं। वार्या के दादा ने कहा था कि चोर्नी यार में हेरिंग मछलियां बहुत मुश्किल से मिलती हैं। इन चीज़ों के अलावा कुछ अंडरवीयर फूंक मारकर भरा जानेवाला तकिया और डाक के कुछ लिफाफे भी थे, जिन पर वार्या ने अपने हाथ से अपना पता लिख दिया था। उसने वार्या का एक छोटा-सा फोटो और गृहयुद्ध के दौरान खींचा गया अपने पिता का एक फोटो भी अपने साथ ले लिया। इसमें उसके पिता बिल्कुल जवान दिख रहे थे बेहद सीधे सरल, बड़े अन्दाज में अपने हवाई जहाज 'सोपविच" के पास खड़े हुए मुस्करा और मानो यह कह रहे थे—'देखो तो लोगो, मैं कैसा हृष्ट-पुष्ट, कितना जवान और भला हूं।'

पीच जा चुका था और ओगुर्त्सोव भी। वार्या कांप रही थी—रात ठंडी थी और वह इस अवसर के लिए विशेष रूप से बनवाया गया अपना सफेद, आस्तीनहीन फ्राक पहने थी। *वह चाहती थी कि वोलोद्या* उसे इसी रूप में याद रखे—बहुत खास, बहुत असाधारण लड़की के रूप में। मगर वोलोद्या का तो नये फ्राक की ओर ध्यान भी नहीं गया। वह तो अगले दिन से सम्बन्धित विचारों में कुछ इस तरह खोया हुआ था।

"ऐ नयी जोड़ी एक तरफ हो जाओ एक भारी बोरा उठाये हुए जहाज़ी ने चिल्लाकर कहा।

जहाज़ के नीचेवाले भाग से इजन की घरघर सुनाई दे रही थी। जहाज़ पर चढने का फलक हिल-डुल रहा था और उसका पहलू घाट के साथ टकरा रहा था।

"मुझे बाहो मे कस लो, ठड लग रही है," वार्या ने कहा।

"लो, यह और भावुकतापूर्ण लाड प्यार," वोलोद्या ने जवाब दिया।

वार्या उसकी बाह के नीचे से खिसककर उसके कोट से सट गई। वे अब तक कभी इतने निकट नही हुए थे। वालोद्या ने सुखद आश्चय से वार्या की सुखी और शरारत भरी आखो मे याका। उसके बालो म प्यारी प्यारी, सीली-नम ताज़गी थी उसका दिल वोलोद्या के दिल के निकट धडक रहा था और वह उसका हाथ अपने हाथ मे लिये हुए था। वोलोद्या ने अपनी घनी बरौनिया झुका ली, अपने गाल को उसके फूले फूले बालो के साथ सटाया और खरखरी आवाज़ मे कहा—

"लाल बालोवाली! मैं तुम्ह प्यार करता हू।"

"यह तुम कह रहे हो," अचानक मीठे आसू बहाते हुए उसने कहा। "तुम्हे तो पाव्लोव और सेचेनोव, मानव ने किसलिए जम लिया तथा हर्ज़ेन, आदि के सिवा और किसी चीज मे दिलचस्पी ही नही थी। वे अभी तीसरा भापू बजा देंगे, मुझे चूमो "

वोलाद्या ने आसुओ से तर उसका बद मुह चूमा।

"ऐसे नही," उसने कहा। "ऐसे तो मुर्दे को चमा जाता है। उमग के साथ चूमो "

वालोद्या ने खीचकर अपने दातो से उसके आठो को खोला और वार्या अपने जवान और मजबूत शरीर को उसके साथ चिपकाये रही। उनके ऊपर, कही निकट ही जहाज़ का भापू गूज उठा।

"खैर, कुछ खास बात तो नही,' उसकी मजबूत बाहो से छटते हुए उसन कहा। "मैंन किसी किताब मे पढा था कि चुम्बन कमीले होत हैं।"

"उल्लू " वोलोद्या ने दुखी होते हुए कहा।

जहाज़ पर जाने का तख्ता वोलोद्या के पैरो के नीचे से खिसकन लगा था। वह कूदकर जहाज़ पर पहुच गया और "उचा वीर" कहलानवाला जहाज़ धीरे धीरे आगे बढन लगा। वह रात भर डेक पर

बैठा हुआ बुदबुदाता रहा—"लाल बालोंवाली, मैं तुम्हें प्यार करता हूं, प्यार करता हूं, प्यार करता हूं!" उसे उस समय के लिए अफसोस होने लगा, जो वे इकट्ठे बिता सकते थे, पर जो उन्होंने अलग-अलग या दूसरों के साथ बिताया था। उसे वार्या को शिकार बताने हुए किये गये अपने बेवकूफी भरे मजाक याद आये, ताने-वालियां और बहुत व्यंग्यपूर्ण अन्दाज का ध्यान आया। उसे याद आयी वार्या की आंखें, जो हर समय उसका स्वागत करती थीं, दिन और रात को किसी भी समय मिलने की उसकी तत्परता, उसकी प्यारी विनोदप्रियता का स्मरण हुआ। उसे याद आया कि किस तरह वह बड़े सब्र से घंटों तक वे बातें सुनती रहती थी, जिनमें उसकी दिलचस्पी थी, पर वार्या की नहीं हो सकती थी। "मेरी प्यारी, बहुत प्यारी, बहुत ही प्यारी लाल बालोंवाली वार्या!" डेक पर इधर-उधर टहलता और सोये हुए मुसाफिरों से ठोकर खाते और उनकी लानत-मलामत पर कान न देते हुए वह लगातार यही दोहराता रहा। "प्यारी मैं मूर्ख हूं, जंगली हूं, कमीना हूं।

सुबह होते-होते उसे नींद ने धर दबाया। आंख खुलने पर उसने कुछ रोटी और उबले हुए सासेज खाये और डेक पर पीने के पानी के टैंक से कुछ घूंट नीम गर्म पानी पिया। वह वार्या के बारे में ही सोचते रहना चाहता था पर उसे इसका अवसर नहीं मिला जहाज के पैडल छपछपा रहे थे भाप गूंज रहा था और वह धीरे-धीरे वोल्गो घाट की ओर बढ़ता जाता था

'हलो, वोलोद्या! मुझे नहीं पहचानते? पतझर की तुलना में भी अधिक सवलाये हुए वागोस्लाव्स्की ने वोलोद्या को पुकारकर कहा।

बागोस्लोव्स्की की बहुत बार धुली हुई सूती कमीज का गला खुला हुआ था, वे अपने गाढ़े के पतलून को घुटने तक के बूटों में ठूंसे थे और उनके हाथ में चाबुक था। यह कमीज और टोपी, जिसे वे गुद्दी पर पहने थे, उन्हें उस काले सूट तथा टाइट कालर से अधिक जंचती थी, जो वे उस रात को पास्तेनिकोव के घर पहने हुए थे।

आप कहां जा रहे हैं? यह सोचते हुए कि बागोस्लाव्स्की जहाज पर चढ़ने के तख्ते की ओर बढ़ेंगे, वोलोद्या उन्हें गुजरने का रास्ता देने के लिए एक ओर को हट गया।

"नही तो! आपको लिवाने आया हू।"

लोग अपने सूटकेस, थैले और टोकरिया उठाये हुए उनसे टकराते थे। उनमे से अनेक बोगोस्लोव्स्की को जानते थे और उनका अभिवादन करते थे। वोलोद्या उन्हे देखता हुआ हैरान हो रहा था। यह तो अनसुनी बात थी कि कोई बडा डाक्टर किसी विद्यार्थी का लिवाने आये। अगर वह सस्थान म लौटकर अपन साथियो का यह बताय, ता वे विश्वास नही करेगे।

"मुझे भी अपनी पहली नौकरी के सिलसिले मे जाने का तजरबा हुआ था। अतर केवल इतना है कि मैं डाक्टरी की पढाई खत्म कर चुका था," बागोस्लोव्स्की ने माना वोलोद्या के विचारा का पढते हुए कहा। "मेरे लिए स्टेशन पर घोडा-गाडी नही आयी थी और एक बूढा, जो भूतपूव समाजवादी क्रातिकारी, लेकिन अच्छा डाक्टर था मरे साथ बडी रुखाई से पेश आया था। अपनी मजिल पर पहुचन म मुझे अडतालीस घण्टे लगे थे। बहुत अर्से तक मेरे मन म कटुता बनी रही थी "

मजबूत और चितकबरा घाडा बग्घी को घाट से नगर की ओर ऊपर को खीच ले चला। बागास्लोव्स्की स्प्रिंग की आरामदेह सीट पर वोलाद्या की बगल मे बैठे हुए बडी कुशलता से लगामा को सम्भाले थे आर दायें-बायें लोगो से दुआ-सलाम कर रह थे।

"नमस्ते, मारीया व्लादीमिरोव्ना। क्या हालचाल है अकिनफिच! मेरे बेटे प्यातर, तुम कस हा! येलिज़ावेता निकानाराव्ना, नमस्त!"

पतली सी सिगरेट को जीभ स मुह के एक सिरे से दूसरे सिर पर करते हुए वे अपनी देहाती बोली मे बता रहे थे—

"हमन उचित खच पर आपके रहन सहन और खान पीने की व्यवस्था कर दी है। मकान मालिकिन एक लातवियायी बुढिया डौन है। उसे बागवानी मे कमाल हासिल है। मैंने उससे बहुत कुछ सीखा है। दूध आपको अस्पताल के फाम से मिला करेगा। जिन्दगी की दहलीज पर खडे हुए आपके जस शहरी आदमी को ज्यादा स ज्यादा दूध पीना चाहिए। हम बिना नफे के २६ कापेक लीटर के हिमाब से दूध बेचते है। क्या हालचाल है आन्ना सेम्योनोव्ना! सहयोगी, यह सेट पीटर और पाल का गिरजा है। हम बाद म इसकी चचा करेगे।

आपको बहुत काम करना होगा, इसलिए अपनी खुराक का ध्यान रखियेगा। सम्यक् बोल्शेविक नमस्ते। सहयोगी, आप वक्त पर प्रधान होंगे। मैं एक व्यक्ति के प्रबंध का स्तुति-गायक, उसका सच्चा प्रशंसक हूं। जनवादी केन्द्रीयतावाद एक महान चीज है ”

भूरे नियनर घोड़े के पुट्ठे पसीने से काले हो गये थे। बोगोस्लोव्स्की ने बड़ी निपुणता से एक गोमक्खी को चाबुक से मार गिराया और उस वर्ष की फसलों की चर्चा करने लगे। कोनोद्या एकटक बोगोस्लोव्स्की के हाथों को देख रहा था। कहीं मेरी आखें मुझे धोखा तो नही दे रहीं? क्या कहीं ऐसे सर्जन भी होते हैं? बात बड़ी चतुराई से और धाराप्रवाह करते हैं। बिना नफे के दूध की चर्चा करते हुए उनकी आखों म खास किस्म की चमक आ गई थी और वे रासों को ऐसे सम्भालते हैं मानो खानदानी रईस हों। मगर उनके हाथ, आह कैसे गजब के हाथ हैं! बड़े-बड़े, चौड़े चौड़े, मजबूत और पीली चित्तियोंवाले। हे भगवान ऐसे हाथों से क्या करना सम्भव नही! इस अदभुत सर्जन ने शायद फिर से कोलाद्या के विचारों या नजरों को भाप लिया—

“मेरे प्यारे सहयोगी, मैं तो जन्म स ही बयहत्था हू,” वे बोले। “अगर किसी जन्मजात दोष का सदुपयोग किया जाय, तो बहुत फलद परिणाम होते ह। मेरे बायें हाथ ने कोल्चाक से मोर्चा लेने और सर्जरी म भी मेरी मदद की है। बडे अफसोस की बात है कि इस क्षेत्र मे मै अपना अनुभव और किसी को नही दे सकता। अगर आपका कोई बयहत्था विद्यार्थी मित्र हो, तो उसे अवश्य ही मेरे पास भेज दीजियगा। मैं उसे शानदार सर्जन बना दूगा।

उनकी बग्घी खेतो के बीच से जा रही थी। गर्म, नीले आकाश मे भरद्वाज पक्षी अपनी ऊची तान उडा रहे थे। बोगोस्लोव्स्की की कमीज भीगी हुई थी। हवा म घोड के पसीने, सडक की धूल, चमडे और तारकोल की प्यारी सी गध बसी हुई थी।

‘अब यहा से आप हमारा ‘हवाई जहाज’ देख सकते है,” बोगोस्लोव्स्की ने धूप के कारण आख सिकोड़ते और कोचवान के पुरातन जाने माने ढग से चाबुक के दस्ते से सकेत करते हुए कहा। ‘वाइत्सेखोव्स्की परिवार के लोगो का पहले देहात मे रहने का यही

स्थान था। प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान उन शानदार रूसी देशभक्तो को यही बात सबसे अधिक अच्छी लगी कि वे आस्ट्रिया के जगी कैदी बनाये गये अफसरो के लिए एक अस्पताल बनवा दें। एक आस्टियाई वास्तुशिल्पी, एक नवाब ने, उनके लिए ऐसा हिमाकत भरा डिजाइन तैयार किया।"

वोलोद्या आखें फाडकर नीचे घाटी म दख रहा था। हवाई जहाज़ की शक्लवाली इमारत के पख, ढाचा दुम और बाकी सब कुछ भी था। बच और लाइम के ऊचे-ऊचे वक्षा के बीच फैली हुई यह इमारत बडी बेहूदा और अटपटी सी दिख रही थी। अचानक उसे पोलूनिन के घर पर आधी रात के समय बोगोस्लोव्स्की के बारे म हुई बातचीत ऐसे स्पष्ट रूप से याद हो आई मानो यह पिछली रात ही हुई हो।

"आप पीते है?" बोगोस्लोव्स्की ने अचानक पूछा।

"आपका मतलब?' वोलाद्या ने शम से लाल-सुख होते हुए कहा।

"मेरा मतलब वोदका से है। जब हमारी पहली मुलाकात हुई थी, तो आप नशे मे धुत्त हा गये थे और आपने मुझ पर बहुत ही बुरा प्रभाव डाला था।"

"जिदगी मे केवल एक बार ही ऐसा हुआ था, वालोद्या ने मरी सी आवाज़ मे जवाब दिया। "मैंने अपनी क्षमता को अधिक समझा होगा या काफी खाया नही होगा।'

"हम मनोविज्ञान के फेर मे नही पडेंगे," बोगास्लाव्स्की ने उसे टोक्त हुए कहा। "हमारे फाम पर नज़र डाल लीजिये। यहा से आप उसे पूरी तरह देख सकते हैं। हमे उस उल्लू नवाब की कल्पना की उडान का कोई सिर पैर बनाने के लिए काफी मेहनत करनी पडी।"

खडी ढाल पर नीचे जाते हुए घाडे को कडे आदेश देते और रासो का बडी चतुराई से सम्भालते हुए बागोस्लाव्स्की न चाबुक के दस्ते से इमारत के भागो की ओर सकेत किया—वह अस्पताल है, वह रही सहायक इमारते, फाम, डेयरी, बगीचा और गाव

उनकी बग्घी बालको के एक दल के पास से गुज़री, जो शोर गुल मचाते हुए एक पिल्ले के साथ दिलचस्प खेल खेल रहे थे। दोपहर का अलस भरा समय था। यहा बहुत ही कम लोग आ-जा रहे थे, लेकिन सभी बागोस्लोव्स्की का अभिवादन करते थे। बागोस्लाव्स्की न

टीन की छतवाले एक साफ-सुथरे और सफेद घर के पास बग्घी रोकी, घोडे का साज़ ढीला किया, सुखद चू चर करता हुआ फाटक खोला और बगीचे के सिरे पर काम करती हुई नारी से कहा—

'बेटा एर्नेस्टाव्ना, इनकी अच्छी देखभाल करना। व्लादीमिर आपका पैतृक नाम क्या है?"

"बस वोलोद्या ही काफी रहेगा।"

"नही, नहीं, हर कोई आपका पूरे नाम से ही बुलायेगा," वोगोस्लोव्स्की ने कडाई से यहा तक कि बिगडते हुए कहा। "अगर हमारी सर्जरी की नर्स मारीया निकोनायेव्ना आपको केवल वालोद्या कहकर बुलाये तो आप उसे सही कर दीजियेगा। समझ गये?"

'हा।

"तो आप व्लादीमिर '

'अफानास्यविच उस्तिमेन्को "

'तो आपका पूरा नाम है व्लादीमिर अफानास्येविच उस्तिमेन्को। बहुत खूब। आइये अब चलकर देखे कि आपके लिये वहा क्या हुआ है।'

कुछ सहमी हुई बडी मालकिन उन्हे वालोद्या के कमरे में ले गई। वहा ताजा धुले फर्श और ताज़ा पकायी गई रोटियो की गध थी और नीची खिडकियो के बाहर बहुत बडे-बडे गुलाबी सुन्दर फूल हवा में लहरा रहे थे। मालकिन फौरन ही खूब चमकता, जोर से सन्-सू करता और ठसाठस भरा समावार ले आई। इसके बाद वह जीरेवाली कुछ पाव रोटिया और पारदर्शी रकाबी में रसभरी की बढ़िया मुरब्बा लाई।

कमरा पसन्द है?' बोगोस्लोव्स्की ने पूछा।

'बहुत ही!' वालोद्या ने जवाब दिया।

आप बेटा एर्नेस्टाव्ना को एक महीने का किराया पहले दे दीजियेगा, बोगोस्लोव्स्की पहले की भाति ही कडाई से कहते गये। 'दूध के लिए भी कुछ पैसे दे दीजियेगा। वह दूध ला दिया करेगी। मैं इस बात की गारन्टी करता हूं कि यहा खटमल या और किसी तरह के कीडे मकोडे नही है। अब आइये चटपट चाय पियें। मुझे थकावट महसूस हो रही है। आज सुबह मैंने आपरेशन किया और पिछली रात भी नही सो पाया। दो बार मुझे अस्पताल में बुलाया गया।'

बोगोस्लोव्स्की बैठ गये, उन्होने बहुत ही साफ और बडे से रूमाल से गदन और मुह पोछा और अपने लिए तेज तथा वोलोद्या के लिए हल्की चाय बनायी। उनके सवलाये हुए चेहरे पर चिन्तन का भाव था और इस समय वह बहुत ही प्यारा लग रहा था – एक रूसी किसान का चेहरा, गालो की उभरी हुई हड्डिया और उभरा हुआ माथा। मानसिक और शारीरिक दृष्टि स बहुत ही स्वस्थ आदमी का चेहरा था वह।

वोलोद्या भी चुप था, नीरवता, ठडी हवा, चाय और बोगोस्लोव्स्की की सगत का मजा लेता हुआ। उसन सगव यह सोचा – "यह अदभुत आदमी मेरे पास यहा बैठे हैं जान की जल्दी म नही हैं। इसका यह मतलव है कि उन्ह मेरी सगत अच्छी लगती है।

गालियो की बौछार

चाय का दूसरा प्याला खत्म करने और रूमाल से और अच्छी तरह अपने चेहरे का पोछने के बाद बोगोस्लोव्स्की न वोलोद्या की ओर देखे विना ही रुखाई से कहना शुरू किया –

"व्लादीमिर अफानास्येविच, एक बात के बारे म मैं आपको चेतावनी दे देना चाहता हू। आप खासे सुदर-सलोने और जवान है। अगर प्यार हो जाये या ऊचे आदर्शो और उससे सबधित भावनाओ का सवाल हो, जिनके फलस्वरूप समय आने पर हम सभी शादी के रजिस्ट्री-वाले दफ्तर मे, या जो कुछ भी इसे कहते हैं, जा पहुचते है, तो यह आपका व्यक्तिगत मामला होगा। पर, प्यार सहयोगी, अगर आप मेरे अस्पताल की नर्सो से आख मिचौनी शुरू कर देंगे तो '

इतना कहकर बोगोस्लोव्स्की न अप्रत्याशित ही अपने रुखाई भर, बल्कि नीरस स्वर मे ऐसी रसीली चटकीली और अभिव्यक्तिपूण गालिया की बौछार की कि वोलोद्या ने नजर घुमाकर इधर उधर देखा कि बढी मकान मालकिन तो कही आस-पास नही है।

'यह मैं बर्दाश्त नही करूगा, बोगोस्लोव्स्की न फिर से अपने सभ्य ढग को अपनाते हुए बात जारी रखी। 'अगर ऐसी कोई चीज मेरी नजर मे आई और वह आयेगी जरूर, तो निश्चय समझिये कि

मैं आपको फौरन निकाल बाहर करूगा और घाट तक पहुचाने के लिए सवारी तक नही दूगा। इसी अर्थ मे हमारा अस्पताल 'बोगाम्लोव्स्की का मठ' कहलाने लगा है। तो आपको पर्याप्त चेतावनी मिल गई है?"

"हा।"

"मुझे इसलिए आपको चेतावनी देनी पडी कि यहा ऐसी घटना घट चुकी है। हा तो आइये अब काम-काज की बात करें।'

बाद के परिपक्व वर्षो म व्लादीमिर अफानास्येविच उस्तिमेन्को का जो स्वभाव से दब्बू या डरपोक नही था, जब इन दो घटो की बातचीत का ध्यान आता, तो ठडे पसीने आ जाते। चाय का पाचवा प्याला खत्म करने और वालोद्या को चालाकी भरी पैनी और स्नेहपूर्ण दृष्टि से देखते हुए बोगाम्लोव्स्की उस पर बिल्कुल अप्रत्याशित ही सवालो की बौछार करने लगे। वे हर दृष्टि से उसके ज्ञान की जाच करते उस पर हावी हो जाते, उसके उत्तरो के बारे मे खुद उसी म सन्देह पैदा करते, जरा हसकर अपने सवालो को दोहराते, यहा तक कि वोलोद्या उनके कम्बख्त "मान लो कि हम इन लक्षणो म यह और जोड दे" के अन्तहीन प्रश्न प्रवाह मे बह गया। दूसरे घटे के समाप्त होने तक बेचारे वोलोद्या का रग पीला पड गया और उसे ऐसी अनुभूति हुई, जसी कि ऊचाई पर जोडाई का काम करनेवाले व्यक्ति को पहली बार होती है या पहली हवाई यात्रा के समय हुआ करती है।

"थक गये?"

"मुझे उबकाई-सी महसूस हो रही है," वालोद्या ने स्वीकार किया।

"आप बातचीत करते हुए मुरब्बे से भरा हुआ प्याला हडप गये हैं। यह उसी का नतीजा है। कम से कम आध सेर तो होगा ही। कुछ चाय पी लीजिये, आपकी तबीयत हल्की हो जायेगी।"

'मुरब्बे का नतीजा है!' वोलोद्या ने बिगडते हुए मन ही मन सोचा। "तो वे मुरब्बे का जिम्मदार ठहरा रहे है। अपने को भले आदमी जाहिर करना चाहते हैं। आदमी नही, पूरे शैतान हैं।'

वालोद्या का इस कहकहे और गालो की ऊची हड्डियोवाले सख्त चेहरे म, चाय पीते समय उनके चटखारो मे और जिस तरह वे मुर्गे

भाति कनखिया से देखते थे, कुछ शैतानी झलक मिली। फिर भी वोलोद्या यह जानता था कि मैंने यह मोर्चा मार लिया है। पर बोगोस्लोव्स्की के साथ उसका पहला युद्ध तो केवल वाक् युद्ध था। अभी काम की बाज़ी मारना बाकी था। उसन यह सोचते हुए कि चोर्नी यार अस्पताल के बडे डाक्टर, साथी बोगोस्लोव्स्की के रूप मे उसे कैसी आज़माइश का सामना करना पडेगा, सिर हिलाया।

इसी बीच बोगोस्लोव्स्की खिडकी के दासे पर बैठे हुए मकान मालिकिन से बाते करने मे व्यस्त थे। वे उससे पूछ रहे थे कि वह जवान **डाक्टर** को दोपहर के खाने के समय क्या खिलानेवाली थी। वे उसे यह समझा रहे थे कि वह **डाक्टर** व्लादीमिर अफानास्येविच को बहुत ही अच्छे, बहुत ही योग्य, यद्यपि अभी जवान **डाक्टर** को अधिक से अधिक दूध पिलाये ताकि बहुत ज्यादा पढने के कारण खराब हुआ उसका स्वास्थ्य सुधर जाये।

"डाक्टर! वे मुझे डाक्टर कह रहे है!" वोलोद्या ने सोचा। "मैं तो अभी डाक्टर बना भी नही और वे मुझे डाक्टर कहते है!"

एक बार फिर उसे गर्व की अनुभूति हुई, पर बहुत देर के लिए नही, क्षण भर को ही।

"तो कल मिलेगे," बोगोस्लोव्स्की ने दो मानी ढग से कहा, "आप आठ बजे मेरे पास पहुच जाइये और बाकी तब देखा जायेगा।"

क्या मतलब है उनका "बाकी तब देखा जायेगा?"

"मेरी चिता करने के लिये धयवाद," वोलोद्या न रुखाई से जवाब दिया। उसने भी कुछ कच्ची गोलिया नही खेली थी, आसानी से जाल म फसनेवाला नही था वह भी। "आप मुझे बेकार का आदमी समझते हैं, पर खैर हम देखेंगे। यह तो अभी हमे देखना है," चरमराते फर्श पर चहलकदमी करते हुए वोलोद्या ने अपने आपसे कहा।

उसके मन मे कुछ अजीब-सी मिली जुली भावनाए आ रही थी—बोगोस्लोव्स्की के लिए प्रशसा और खीझ की भावनाए। पर प्रशसा की भावना कही अधिक प्रबल थी।

"आध सेर मुरब्बा मैंने कहा से खा लिया! उसम था ही चम्मच भर," वोलोद्या को यह याद करके फिर गुस्सा आया। उसे दोपहर के खाने की भूख महसूस होने लगी थी, उबकाई की अनुभूति जाती

क्या है। मैं तुम्हे यह भी बताना चाहता हूं कि भविष्य मे जब कोई जवान डाक्टर मेरे पास काम करने आयेगा, तो मैं भी ...

वोलोद्या ने इस पर कुछ विचार किया और "जवान डाक्टर" काटकर "विद्यार्थी" लिखा दिया।

"जब चौथे दर्जे का विद्यार्थी मेरे साथ काम करने आयगा, तो मैं उसका उसी तरह स्वागत करूंगा, जैसे मेरा स्वागत किया गया।"

उस सारी शाम को वह न जाने क्या कुछ बकवास लिखता रहा। बाद मे उसे बहुत समय तक यह सोचकर हैरानी होती रही कि वार्या उसकी भावनाओ, विचारो, धमकियो, अभिमान और भय के गडबड झाले का सिर पैर समझ गई थी। रात के खाने के पहले डाक्टर उस्तिमेको जल्दी से उचा नदी की सहायक नदी योचा पर जा पहुचा, खिली हुई चादनी मे उसने अपने तन की बढिया सफाई की, कुछ देर तैरा, बाहर निकलकर कपडे पहने, घास मे किसी छोटे और अजीब से जानवर के पीछे दौडा और फिर गम्भीर बना हुआ घर आ गया। उसका बिस्तर लगा हुआ था, घर मे कही कोई झीगुर झी झी कर रहा था। उसने सारी स्थिति पर विचार करना चाहा, वार्या के शब्दो मे "अपने सामने हर चीज का लेखा-जोखा तैयार करना" चाहा, किन्तु तकिये पर सिर रखते ही वह गहरी नीद सो गया और सुबह के छ बजे तक मुर्दे की भाति सोया रहा।

बोगोस्लोव्स्की ने वोलोद्या को अपने साथ ले जाकर अस्पताल मे काम करनेवाले सभी लोगो से परिचित कराया। वे अभिव्यक्तिहीन ढग से कहते—

"ये डाक्टरी का अभ्यास करनेवाले विद्यार्थी व्लादीमिर अफानास्येविच उस्तिमेको है।"

वोलोद्या अटपटे ढग से सिर झुकाता, बुरी तरह झेपता शर्माता और दालान मे अलमारियो के पीछे छिपने की कोशिश करता। अस्पताल का चक्कर दो घटे तक चलता रहा। इसके बाद बोगोस्लोव्स्की ने दूसरे डाक्टरो से बातचीत की। बातचीत तो वोलोद्या के पल्ले बिल्कुल न पडी, पर एक बात वह फौरन समझ गया कि बोगोस्लोव्स्की के साथ बहुत सम्भलकर काम करना होगा। काले बालोवाली, सुदर डाक्टर

रही थी, और अब अगले दिन का ख्याल करके उसे ज़रा-सा डर भी अनुभव होता था। पर वह सुखद डर था। "कोई बात नहीं, देखा जायगा," उसने सोचा। "साथी वोगोस्लाव्स्की, तुम सर्जन ही तो पैदा हुए नहीं थे। कभी तुम भी मर ही जाते थे।"

दूध का शोरबा, खट्टी क्रीम के साथ छेने की पुडिंग, अलग से खट्टी क्रीम और शहद के साथ भरपेट छेना खाने के बाद डाक्टर उस्तिमेन्को बगीचे में गया, दिखावा करने के लिए न० इ० पिरागोव का पहला खण्ड अपने करीब रख लिया, दातों से पेंसिल काटी और वार्या को प्रेम-पत्र लिखने बैठ गया। एक छोटा और सुनहरे बालोंवाला बालक सीटी बजाता और भागता हुआ बगीचे में से गुज़रा।

"शोर नहीं करो, सीजर, डाक्टर काम कर रहे हैं," मकान मालिकिन ने उसे डाट बतायी।

सीज़र अभी बहुत छोटा था और इसलिए नंग धडंग भागा फिरता था। उसने सहमी सहमी नज़र से वोलोद्या की ओर देखा और बदाम की झाडियों में जा छिपा। वहां से उसके हिलने डुलने और सू सू करने की आवाज़ आती रही। वोलोद्या लिखता जा रहा था। उसने कभी यह नहीं जाना था कि वह वार्या को इतना अधिक और इतने लम्बे अर्से से प्यार करता है। उसे अपनी इस जोश की स्थिति में हर चीज़ बहुत बडी, बहुत असाधारण और वास्तव में बहुत अधिक शानदार प्रतीत हो रही थी। यह बगीचा, वह मेज जिस पर बैठा हुआ वह लिख रहा था, मकान मालिकिन की बेटी या पोती—लम्बी, मज़बूत, चौडे कंधोंवाली लाटवियाई लडकी, प्यारा प्यारा झुटपुटा, अगले दिन डाक्टर के कमरे में जाने का ख्याल यह सभी कुछ अद्भुत था, असाधारण था उसे पहले कभी ऐसी अनुभूति नहीं हुई थी।

"हम लाल घुडसवार है," वोलोद्या गुनगुनाने लगा और उसकी पेंसिल कागज़ पर भागती चली जा रही थी।

हां तो लाल बालोंवाली बहुत मुमकिन है कि कल वे मुझे निकाल बाहर करेंगे, यह संगदिल पर मैं नहीं जाऊंगा,' वोलोद्या लिखता गया और उसे इस बात का ध्यान ही न रहा कि इससे पहलेवाले पर में उसने केवल प्रेम की चर्चा की थी। 'मुझे उनके साथ काम करना और यह पता लगाना ही है कि इस आदमी का शक्ति स्रोत

क्या है। मैं तुम्हे यह भी बताना चाहता हू कि भविष्य में जब कोई जवान डाक्टर मेरे पास काम करने आयेगा, तो मैं भी ...

वोलोद्या ने इस पर कुछ विचार किया और "जवान डाक्टर" काटकर "विद्यार्थी" लिख दिया।

"जब चौथे दर्जे का विद्यार्थी मेरे साथ काम करने आयेगा, तो मैं उसका उसी तरह स्वागत करूंगा, जैसे मेरा स्वागत किया गया।"

उस सारी शाम को वह न जाने क्या कुछ बकवास लिखता रहा। बाद में उसे बहुत समय तक यह सोचकर हैरानी होती रही कि कार्यो उसकी भावनाओं, विचारों, धर्मक्रिया, अभिमान और भय के गडबड झाल का सिर-पैर समझ गई थी। रात के खाने के पहले डाक्टर उस्तिमेन्को जल्दी से ऊचा नदी की सहायक नदी याचा पर जा पहुचा, खिली हुई चादनी में उसने अपने तन की बढिया सफाई की, कुछ देर तैरा, बाहर निकलकर कपडे पहने, घास में किसी छोटे और अजीब से जानवर के पीछे दौडा और फिर गम्भीर बना हुआ घर आ गया। उसका बिस्तर लगा हुआ था, घर में कही कोई झीगुर झीझी कर रहा था। उसने सारी स्थिति पर विचार करना चाहा, कार्या के शब्दों में "अपने सामने हर चीज़ का लेखा-जोखा तैयार करना" चाहा किन्तु तकिये पर सिर रखते ही वह गहरी नीद सो गया और सुबह के छ बजे तक मुर्दे की भाति सोया रहा।

बोगोस्लोव्स्की ने वोलोद्या को अपने साथ ले जाकर अस्पताल में काम करनेवाले सभी लोगों से परिचित कराया। वे अभिव्यक्तिहीन ढग से कहते–

"ये डाक्टरी का अभ्यास करनेवाले विद्यार्थी व्लादीमिर अफानास्येविच उस्तिमेन्को है।"

वोलोद्या अटपटे ढग से सिर झुकाता, बुरी तरह झेपता शर्माता और दालान में अलमारियों के पीछे छिपने की कोशिश करता। अस्पताल का चक्कर दो घटे तक चलता रहा। इसके बाद बोगोस्लोव्स्की ने दूसरे डाक्टरों से बातचीत की। बातचीत तो वोलोद्या के पल्ले बिल्कुल न पडी, पर एक बात वह फौरन समझ गया कि बोगोस्लोव्स्की के साथ बहुत सम्भलकर काम करना होगा। काले बालोवाली, सुदर डाक्टर

ने आसू बहाए और वादे किये, पर इमस भी बोगोस्लोव्स्की का [illegible]
नही पसीजा।

"मैं आपको निकालने का फैसला कर चुका हू," बोगोस्लोव्स्की
ने साफ-साफ और कडाई से कहा। "इसके अलावा, मैं प्रमाणपत्र
आपको बहुत बुरा दूगा। आप कही भी मेरे खिलाफ़ शिकायत
सकती हैं। चोर्नो यार अस्पताल का बडा डाक्टर, विख्यात सर्जन
पादरी का बेटा कुतर या और जो कुछ भी चाहे मेरे खिलाफ लि
सकती है मैं किसी भी चीज़ से डरनेवाला नही हू। यह बात
अपनी शिकायत मे जोड दीजियेगा। अब इस सिलसिले म और बा
नहीं की जायेगी। व्लादीमिर अफानास्यविच, आप यहा ही हैं?"

"जी मैं यहा ही हू," वोलोद्या ने दबी सी आवाज़ म जवा
दिया।

"आपरेशन के कमरे म चलिये। आप मेरी सहायता करेंगे।"

बोगोस्लोव्स्की किसी से बातचीत करने के लिए दालान में ठह
गये और वोलोद्या अकेला ही अन्दर पहुचा। उसने अपने हाथ धो
शुरू कर दिये थे कि उस हाथ धोने के स्टैंड के क़रीब साइकिल की
गद्दी जसी एक सीट दिखाई दी। घुटने से उसे अपनी ओर करके वो
लोद्या उस पर बैठ गया।

"आहो!" किसी ने पीछे से कहा। यह सर्जरीवाली नर्स मारीया
निकोलायेव्ना थी, दुबली-पतली सी नारी, शहीद के से चेहरेवाली।

वोलोद्या ने "ओहो" की ओर कोई ध्यान नहीं दिया और अधिक
इतमीनान से बैठकर सीटी बजाते हुए नियमानुसार अपने हाथ धोता
रहा।

"सीटी भी बजायी जा रही है!" बोगोस्लोव्स्की ने कमरे में
प्रवेश करते हुए कहा। "अभी आपकी बैठकर हाथ धोने की उम्र नहीं
हुई, भलेमानस।'

अब वोलोद्या "आहो' म निहित व्यग्य का मतलब समझा। वह
झटपट उठकर खडा हुआ पर बोगोस्लोव्स्की ने कहा--

'जब शुरू ही कर लिया है, तो धो डालिये अपने हाथ।

हाथ धोने के दूसरे स्टैंड का हैंडल दबाते हुए बोगोस्लोव्स्की लाल
लाल रोयोंवाले अपने बड-बडे हाथ धोने लगे। उन्होंने यह काम बडी

शान से किया। वोलोद्या ने कनखियों से उनकी ओर देखा। बोगोस्लाव्स्की त्योरी चढाये हुए विचारमग्न थे।

वे दोनों दोपहर के दो बजे तक ग्रापरेशन के कमरे में काम करते रहे। वोलोद्या को अपने घुटने जवाब देते से हुए प्रतीत हुए उसका सिर दर्द से फटा जा रहा था और उसकी कमीज़ पसीने से सराबोर होकर पीठ के साथ चिपकी हुई थी। बोगोस्लाव्स्की तो ऐसे ताज़ादम थे, माना उन्होंने अपना दिन का काम शुरू ही किया हो। हाथ धोते हुए वे धीरे धीरे गुनगुना रहे थे—

चमको, चमको, मेरे तारे
मेरे तारे, मेरे प्यार
है मन का अनुराग तुम्ही-से
और न होगा, कभी किसी से

वोलोद्या के काम के बारे में कोई राय ज़ाहिर नहीं की गई। वन-देव से मिलते जुलते यह सज्जन शायद भूल गये थे कि वोलोद्या भी वहां उपस्थित है।

बोगोस्लाव्स्की ने बडे ढंग से तौलिया टांग दिया और अचानक वोलोद्या को सम्बोधित करते हुए बोले—

"जानते हैं कि वह कौन था, जिसका आज हमने ग्रापरेशन किया है?"

"आपका अभिप्राय गैस्ट्रो-इंटेस्टिनल अनास्टोमोसिस (आमाशयान्त्रीय सम्मिलन) से है?"

"नहीं, छिद्रणवाले रोगी से है। इस रोगी का नाम सीदोरोव है।

"वह हमारे यहां एकाउंटेंट होता था। यह वही आदमी है, जिसने मुतूगिन को मेरे खिलाफ़ झूठी सामग्री जुटाने में मदद दी थी। उन्होंने विभिन्न स्थानों पर कुल चौदह रिपोर्टें भेजी थीं। आखिर इस बूढ़े की जगह में तब्दीली कर दी गई थी, पर क़िस्मत उसे फिर यहां ले आई। सीदोरोव की पत्नी को इस बात का यक़ीन है कि मैं ग्रापरेशन

की मेज़ पर उसका काम तमाम कर दूगा। उसन आज सुबह सभी के सामन औपचारिक रूप स इसकी घोषणा भी कर दी थी। ईमान की बात यह है कि उसे बेहोश करने के पहल तो मुझे बहुत बरा लग रहा था। बूढा मुझे एकटक देख रहा था और उसकी नजर यह कह रही थी कि वह सचमुच ही ऐसा मानता है कि मेरा प्रतिशोध लन का समय आ गया है। हे भगवान, है न यह भयानक चीज़।"

बोगोस्लाव्स्की सिहरे और उनके चेहरे पर गहर दुख की भावना झलक उठी।

"पर उसन आपके खिलाफ यह सब कुछ लिखा क्यो?" वालोद्या ने धीरे स पूछा।

वह अकेला ही थोडे था? दूसरा की तुलना मे तो वह बच्चा, बिल्कुल फरिश्ता ही है। उन दिनो यहा क्या कुछ नही हुआ।'

इन दोनो न डयोढी लाघी दालान म मे गुज़रे और जस कि वालोद्या को लगा वास्तुशिल्पी फान स्ताउबे की इमारत के पिछल भाग म पहुचे। गोल खिडकियो के बाहर वच वक्ष धीरे धीरे सरसरा रह थे। बागोस्लोव्स्की को देखकर डयटीवाली नस उठकर खडी हो गई। बोगास्लोव्स्की ने ज़रा सिर हिलाकर यह अभिवादन स्वीकार किया। वोलाद्या ने भी वडी शान से एसा ही किया, पर वह नही जानता था कि कुछ ही देर बाद उसे लज्जित होना पडेगा।

बोगास्लाव्स्की रोगी की बगल म सफेद पालिश किये हुए स्टूल पर बैठ गये। उन्हान मरीज़ का हडीला पीला और निर्जीव सा भारी हाथ अपने हाथ म लकर उसकी नब्ज़ देखी। उसक राग की रिपाट रोगी के बिस्तर के करीबवाली मज़ पर रखी थी। अगर वोलोद्या न कनखिया स भी उस पर एक निगाह डाल ली होती तो स्थिति बिल्कुल दूसरा ही रूप ल लती, किन्तु उसकी जन्मजात भलमनसाहत न उस ऐसा नही करन दिया।

'यगारोव।' बागास्लाव्स्की न रागी का सम्बोधित किया।

"इस ता हाश ही नही है" नस न कहा। "बहुत बुरी हालत म लाया गया था इस यहा।'

'इसकी अच्छी तरह जाच कीजिय बागास्लाव्स्की न वालाद्या का आदेश दिया। "जाच करक अपन निष्कष निकालिय।'

नस ने उस चीज़ की जाच करने म वोलोद्या की मदद की, जिसे उसने कावनकल समझा था। उसे तो यह बेहद साफ प्रतीत हुआ था। "क्या वोगोस्लोव्स्की का मुझे एसी साधारण चीज भी दिखानी चाहिए?"

"तो क्या ख्याल है?" वोगोस्लाव्स्की ने कुछ दर वाद पूछा।

"आपरेशन करना होगा, वालोद्या ने जवाब दिया।

"पूरा यकीन है इस बात का? यह ध्यान म रखिये कि येगोराव नमद के जूते बनानेवाले कारखाने म काम करता है।"

ओह, उसने नमद के जूतावाली बात की ओर क्या कान नही दिया? पर जवान लोग तो गम मिज़ाज और सवदनशील होते हैं। "नमदे के जूतो का रोगी से क्या सम्बन्ध हो सकता है?' वालोद्या के दिमाग म यह विचार कौधा। आप मुझे बेवकूफ नही बना पायगे, डाक्टर वागोस्लाव्स्की, हरगिज़ नही।'

"ऑपरेशन बिल्कुल जरूरी है,' वालोद्या न दृढतापूवक कहा। "खुद ही सूजन पर नज़र डाल लीजिय। बीमार की आम हालत भी काफी खराब है। गदन पर बडा जमाव है। इस तरह के कावनकल स मस्तिष्कावरण प्रदाह हो सकता है "

वोगोस्लाव्स्की की तातारा जमी आखें अधिकाधिक गुस्स स वालोद्या को दख रही थी।

"तो, आपरेशन कसे करगे? उसने पूछा।

'मैं स्वस्थ शिराओ तक घुसी आस के आकार की काट बनाऊगा, त्वचा के सिरा का मुक्त कर दगा, मृत शिराओ का निकाल दूगा, सूजन का चीरकर सूराख को अच्छी तरह साफ करूगा "

अचानक नस न गहरी, ठडी सास ली।

"और आप पीप के कीटाणु-सम्बन्धी विश्लेषण की आवश्यकता नही समझते?" वागोस्लाव्स्की न चुभती हुई शान्त आवाज़ म पूछा। "क्या? ऐसा न करन स तो बहुत भयकर भूल हो सकती है।

रोगी धीरे-से कराहा और छटपटान लगा।

उसके रोग की पूरी रिपोट पढिय डाक्टर उस्तिमन्को," वोगोस्लाव्स्की ने किसी तरह क व्यग्य के बिना, केवल डाक्टर शब्द पर ज़ोर दते हुए कहा।

वोगोस्लोव्स्की न किसी काम स नस का वहा स भज दिया। वोलाद्या का माना घनी धुध क पार से वोगास्लाव्स्की की आवाज आती प्रतीत हुई। किन्तु वह समझ गया कि वागास्लाव्स्की उस पर दया कर रहे है।

साइवेरियाई फोडा

रोग की रिपोट म वालाद्या ने पढा "पूस्तुला मालिग्ना–साइवेरियाई फोडा'। उसके माथे पर पसीन की वूद झलक उठा। उसने इस वात की ओर ध्यान दिया कि राजगोन्य गाव म नमदे के जूता की वकशाप है, इन शब्दा के नीचे लाल पेसिल से रेखा खीची गइ थी।

"तो क्या ख्याल है?" वोगोस्लाव्स्की ने फिर से पूछा।

वोलाद्या को वोगोस्लोव्स्की की आर देखन की हिम्मत न हुई। पर जब उसन देखा ही, तो वोगोस्लोव्स्की के चेहरे पर उसे विजयोल्लास की नही, वल्कि उदासी और निराशा की झलक मिली।

"आपको अधिक सजगता स काम करना चाहिए, मेर प्यारे नौजवान," वोलाद्या को माना कही दूर स यह सुनाई दिया। "आप जानते ही है कि अधिक सजग रहने के लिए भी शक्ति का व्यय करना पडता है। हम उस डयोढी म से यहा आये हैं, जिसके दरवाजे पर लिखा हुआ है–'छूत के रोगिया का विभाग'। हमने दो दालान पार किये और फिर ऐसे दरवाजे के सामने पहुचे, जिस पर लिखा हुआ है–'छूत के रोगियो के विभा ा का प्रवेश-द्वार'। इसके अलावा मैंने इस बात की ओर भी आपका ध्यान आकृष्ट किया था कि येगोरोव नमदे के जूते बनाने का काम करता है। इसका मतलब यह था कि उसे ऐसे ऊन से वास्ता पडता है, जिसम रोग के कीटाणु हो सकते है फिर भी आपने यह कहा कि ऑपरेशन करना जरूरी है। नश्तर के मामले म वहुत जल्दी करत ह आप! ऑपरेशन तो निश्चय ही गलत उपचार है!"

"अव तो मैं भी यह समझ गया " वोलोद्या ने कहा।

'विल्कुल ही गलत उपचार है," बोगोस्लोव्स्की न ऐसी इस्पाती आवाज म कहा जिसकी गूज इस वात की द्योतक थी कि इस बात को काटा नही जा सकता। "चीरफाड, धाव की जाच, यह सभी

कुछ निश्चित रूप से गलत होगा" बोगोस्लाव्स्की ने वोलोद्या को उंगली दिखाते हुए अन्तिम शब्दों पर जोर दिया। सूजन को चीरने से क्या होता है?"

"कीटाणुओं का संक्रमण," वोलोद्या ने राहत की सास लेते हुए कहा। इससे कीटाणु रक्त मे चले जाते है और रक्त बुरी तरह विषाक्त हो जाता है।"

बोगोस्लोव्स्की मुस्कराये।

"ठीक है! क्या इलाज करना चाहिये?"

वोलोद्या ने कहा कि सीरम का टीका और शिराभ्यन्तर इंजेक्शन लगाया जाय। बोगोस्लोव्स्की अपने विचारो मे डूबे हुए और उदास से खडे थे।

नर्स लौट आई। इसी समय इस बात की ओर वोलोद्या का ध्यान गया कि इस विभाग मे आने का दरवाजा अलग था और बाहर जाने का अलग। वोलोद्या और बोगोस्लाव्स्की ने बडी सावधानी से अपने हाथ धोये, सफेद गाउनो को ड्योढी मे छोडा और बगीचे मे बाहर आ गये।

"मै आपको एक अप्रिय काम सौपने जा रहा हू," थकान को व्यक्त करनेवाली गहरी सास लेते और बैठते हुए बोगोस्लाव्स्की ने कहा। 'आज शनिवार है। कल राजगोये मे रविवारीय मेला होनेवाला है। इस इलाके को अवश्य ही खतरनाक घोषित करना और जरूरी कदम उठाने चाहिये। पशुओ के इन्स्पेक्टरो की मदद से नमदे के जूतो के उस गडबड कारखाने को अवश्य ही छूत रोग मुक्त करना चाहिये। छूत की जड का खत्म करना जरूरी है, व्लादीमिर अफानास्येविच। बात यह है कि यगोरोव वहा से आनेवाला तीसरा रोगी है। इसके पहले दो ऐसे रोगी आ चुके है, जिनकी जान नही बचाई जा सकी। उनमे से एक की अन्तडियो मे छूत लगी थी और दूसरे के फेफडो मे। हमारी महामारी विशेषज्ञा जा चुकी है (वोलोद्या को उस सुबह की घटना का ध्यान आया)। मुझे उसे निकालना ही पडा। वह बिल्कुल निकम्मी, कमजोर, बुजदिल और झगडालू औरत थी। मैं खुद नही जा सकता। मुझे कल कई ऑपरेशन करने है। वसे भी मैं इस समय अस्पताल से नही जा सकता। आपका काम यह होगा कि उस जगह लोगो के आने-जाने की मनाही कर दे, मेले को बन्द कर दे, वहा विस्तृत जाच-

पडताल कर और राजगाय गाव के लोगो को साइबेरियाइ फोड़े से मुक्ति दिलाये। आइये, मैं जरूरी कागजात और उन लोगो की सूची तैयार कर दू, जा आपकी सहायता कर सकते हैं। कुछ और भी बताना-समझाना होगा।"

बोगोस्लाव्स्की जब तक कागज़ात तैयार करते रहे, वोलोद्या ने बगल ही मे विद्यमान पुस्तकालय म जल्दी जल्दी किताबा को उलट पलटकर देखना शुरू किया। जहा तक रोक थाम-सम्बन्धी उपचार का ताल्लुक था वह सभी कुछ जानता था। उसने असकोली परीक्षा को एक बार फिर मे पढ लिया और अब अपने का पूरी तरह तयार अनुभव किया।

वालाद्या न अहाते म मूछोवाले एक परिचारक को बग्घी म रबड की नलीवाल कुछ टब घास फूस से ढकी हुई कुछ बडी बोतल, और न जाने क्या दो कुल्हाडे और लाह का एक डाड भी रखते हुए देखा।

"आप पूरी तरह इस आदमी पर भरासा कर सकते है," बोगोस्लाव्स्की न खिडकी स बाहर झाकते हुए कहा। "मै कई वर्षों स उसके साथ काम कर रहा हू और उस पर विश्वास करता हू। वह आपका जो भी सलाह दे आप वही कीजिये। मुझे एक और बात की भी आपको चेतावनी देनी है। वहा गाशकाव नाम का एक अधिकारी काम करता है, बहुत ही निकम्मा बडा ही जहरीला, घृणित और चार किस्म का आदमी है वह। मैं अभी पूरी तरह तो सब कुछ नहा समझता हू, पर वह कोई गडबड अवश्य करनेवाला है"

एक घटे बाद भूखा थका-हरा खीझा हुआ, पर गर्व की अनुभूति के साथ वालोद्या बग्घी म सवार हुआ। उसम वही चितकबरा घोडा जुता हुआ था जो उसे चौर्नी यार लाया था। दिन बडा उमस भरा और उदास उदास था मानो आधी-तूफान के आने की पूर्वसूचना दे रहा था। गेहुआ मूछो और बूढे सैनिक जस चेहरेवाले परिचारक चाचा पत्या न गम्भीरतापूर्वक लगाम सम्भाली और दरवान से कहा—"ए, फामाकिन, खोला फाटक।"

घोडा सधी हुई दुलकी चाल स चल दिया। वालोद्या न सरसराहट क साथ अखबार खोला। विद्रोही फिर स बिल्बाओ की ओर बढ रहे थे। फासिस्टो की हवाई सेना भयानक अत्याचार कर रही है

शहरी ग्रावादी को वडे पमान पर नष्ट किया जा रहा है " उसने पढा। "'जक्र' हवाई जहाजा न वास्की लागा के पवित्र नगर गुएर्नीका को भी नष्ट कर दिया है और अब विल्बाग्रो का एक ग्रय और वडा गुएर्नीका बनान जा रह है।"

वालाद्या न दात पीसे।

"पिता जी, ग्राप क्हा है? ग्राप जिदा भी है? सम्भवत ग्रापको वहा वडी कठिनाइया का सामना करना पड रहा हागा? एक लडाई से दूसरी लडाई, एक उडान के वाद दूसरी उडान? ग्राप उन लोगा म से नही है, जो ऐसे कठिन समय म जव दुनिया म इतनी गडवड हो, कॉफे म ग्राराम स वटे रह।"

चाचा पेत्या वडा वातूनी था। गाव से वाहर ग्रात ही उसन बोलना-वतलाना शुरू कर दिया। वह खुशबूवाली घास की ग्रपनी हाथ की वनी हुई सिगरट जलाने के लिए कुछ क्षण का जव-तव ही खामाश हाता।

"हमार सजन कोई माधारण व्यक्ति नही ह," चाचा पत्या ने यह ऐस कहा, माना वालाद्या कोई ग्रापत्ति करनेवाला हो। "हम छाटे चिकित्सा-कमचारी, जा उनके साथ काम कर चुके है, उनका सवस ग्रधिक ग्रादर करते है और हमशा उनका साथ दत है। हम उह किमी तरह की हानि नही हान दगे। तुम जवान डाक्टर हो, ग्राज यहा हा कल कही और होगे। वहुत-से देखे है तुम्हार जसे हमन। जरूरत हाने पर हम खुलकर ग्रपनी वात भी कह दते हे। पर वे, व ता हमारे ग्रपन है। चिकित्सा विज्ञान ग्रभी सभी कुछ तो नही कर सकता किन्तु जो कुछ कर सकता है, उसे हमारे सजन वहुत ग्रच्छी तरह म जानते है। तुम जवान डाक्टर हा और ग्रक्सर मुझे तुम्हारे जसा का जहाज पर वापिस पहुचाना होता है "

"मरी जवानी का इस वातचीत स क्या सम्वध ह?" वालोद्या खीझ उठा। 'रही जहाज पर लौटन की वात, तो मैं ता डाक्टर नही, ग्रभी विद्यार्थी ही हू, ग्रभी ता मुझे सस्थान की पढाई खत्म करनी है।"

'खैर, यह तुम्हारा ग्रपना मामला है, हम दखल नही देना चाहते,' चाचा पत्या उसी समस्वर म कहता गया। "किन्तु हम यह

जरूर देखते है कि नौजवान यहा कुछ समय के लिए दिखाई देते हैं हमारे सजन से कुछ सीखते हैं और फिर धन्यवाद तक दिये बिना ही नौ दो ग्यारह हो जाते हैं। हम छोटे चिकित्सा-कमचारी सभी कुछ देखते भालते है। जाहिर है कि हम कुछ कहते नही, हमसे पूछा भी नही जाता पर हम आत्म मूदन के लिए तो कोई मजबूर नही कर सकता। जब पार्टी के सदस्यो की बैठक होती है, तो वहा हम अपनी बात कहते है। तुम पार्टी-सदस्य हो?"

'नही अभी तो युवा कम्युनिस्ट लीग म हू।"

"मतलब यह कि गैरपार्टी हो। तो हम पार्टी की गुप्त बातो की चर्चा नही करगे। पर पार्टी के सदस्यो की बैठको म हम जो कुछ कहते है सो तो कहते ही है। किसी को इससे कोई सरोकार नही।'

वालोद्या ने ऊबते हुए आह भरी। रास्ता काफी लम्बा था और चाचा पेत्या सास लिये बिना बोलता चला जा रहा था। दिन बहुत गम और उमस भरा था। खड्डो के पार हल्की-हल्की धुध के बीच से देहाती घरो की धुधली सी रेखाए दिखाई दे रही थी, पश्चिम से धीमी धीमी गडगडाहट सुनाई देने लगी थी और आकाश मे आधी उमडने लगी थी।

"यही राजगोये है?"

"हा,' अपनी गेहुआ मूछो को थपथपाते हुए चाचा पेत्या ने जवाब दिया। "वह मात्वेय कभी परेशान करेगा।"

"वह कौन है?"

"वही, उस उद्यम का सचालक गोशकोव। मना तो कल होगा पर मैं शत लगाकर कह सकता हू कि वह तो आज सुबह से ही पिये होगा।"

सचमुच ऐसा ही था भी। गोशकोव पिये हुए था। उसने उसे अपने घर के सामने बैठा और एक दोगले कुत्ते को कुछ करतब सिखाते हुए पाया। उसकी आखे नशे से भारी थी।

पास ही चौक म एक हिडोला खडा किया जा रहा था। वहा से हथौडो की टनटनाहट सुनाई दे रही थी। अस्त-व्यस्त बालो और मोटी गदनवाला एक व्यक्ति उस स्टाल के सामने खडा हुआ ऊची

आवाज मे हिदायत दे रहा था, जिस पर 'शराब, खान और पान' का बोर्ड टागा जा रहा था। एक सुगठित मिलिशियावाला सूरजमुखी के बीज बेचनवाली एक बुढिया को कुछ व्याख्यान दे रहा था।

एक जवान औरत, जो स्पष्टत गर्भवती थी, घर से बाहर आयी और उसने गोशकोव को क्रीम निकले दूध का भरा हुआ प्याला दिया। गोशकोव ने लम्बी उगलियो से उसमे स एक मक्खी निकाली, फूक मारी, एक घूट दूध पिया और फिर वोलोद्या को ध्यान से देखते हुए कहा –

"मुझसे कोई काम है?"

"हा, अगर आप ही गोशकोव है," वोलोद्या ने उसी घृणा के साथ कहा, जो वह पियक्कडो के प्रति हमेशा अनुभव करता था।

"कारखाने से आये है?"

"नही। आपके उद्यम म साइबेरियाई फोडे की तीन घटनाए हो चुकी है। मैं इसी सिलसिले मे यहा आया हू।"

"तो फिर वही चक्कर," गोशकोव ने ऊब भरी आह भरते हुए कहा। "अभी एक मुसीबत से पिड छुडाया था कि दूसरी आ धमकी। तोबिक, काट लो इसे।"

कुत्ते ने वोलोद्या के जूतो को सूघा और जमीन पर लेट गया।

"कल मेला नही होगा," वोलोद्या ने साफ-साफ और दृढतापूर्वक कहा। गाव के गिर्द गारद खडी करनी होगी। हम इसी समय आपके उद्यम, यानी कच्चे माल को छूत मुक्त करना शुरू करेगे। उसके बाद "

"यह सब नही होगा," गोशकोव न कहा।

"क्या मतलब?"

"मतलब साफ है। नही होगा और बस। हमने छूत के स्रोत, यानी वर्कशापो को जला डालने का भी फैसला कर लिया है। हमने मौके पर मिट्टी का तेल, छीलन और पानी के टब भी भेज दिये है। ऐ, बाबिचेव।" उसन अचानक सुगठित मिलिशियावाले को आवाज़ दी।

बाबिचेव अपन जूतो से धीमी आवाज़ पैदा करता हुआ धीरे धीरे आया।

"हम वर्कशॉप जला रहे हैं, न?"

"हां," वाविचेव ने अपनी तरल आंखों से वोलोद्या की ओर देखते हुए जवाब दिया।

"और ये हम मला लगाने की मनाही कर रहे हैं।"

मिलिशियावाला अपने सुंदर, सफ़ेद दांत दिखाता हुआ हंसा।

"छूत का तो मूलनाश करना चाहिये," वह बोला। "अगर बीमार पशुओं के पंजर जलाये जाते हैं, तो निश्चय ही कीटाणुग्रस्त ऊन और तैयार माल को भी जलाना चाहिये। हम यहां बिल्कुल ही अनाड़ी नहीं हैं, काफ़ी कुछ जानते हैं" उसने वोलोद्या को आंख मारी और शब्दों पर ज़ोर देते हुए कहा—

'हमने मशविरा कर लिया है"

"किसके साथ?'

'हम जानते हैं कि किसके साथ हम मशविरा करना चाहिये।"

'सुनो वाविचेव, तिकड़मबाज़ी नहीं करो। मैं तुम्हें जानता हूं और तुम मुझे" चाचा पेत्या ने अचानक आगे आते हुए कहा।

उन्होंने आंखें चार कीं और लगा कि वाविचेव झेंप गया।

"किससे मशविरा किया है तुमने?"

मैंने नहीं, संचालक ने मशविरा किया है" वाविचेव ने सिर से गोशकोव की ओर इशारा करते हुए कहा।

वह एक दो क़दम पीछे हट गया।

"ज़रा रुक जाओ," चाचा पेत्या ने कहा। "आपने सारे माल की सूची तैयार कर ली है? लेखा-परीक्षक की रिपोर्ट कहां है?"

वोलोद्या, बालक की तरह मुंह बाये गोशकोव को एकटक देख रहा था। अब सचाई उसके सामने आने लगी थी। गोशकोव ने होंठों पर ज़बान फेरी, उठने को हुआ और फिर बैठ गया।

'ऐ मूछोंवाले शैतान, तुम्हारा दिमाग़ तो ठीक है?" गोशकोव ने चिल्लाकर चाचा पेत्या से कहा। "मैं वहां लोगों को भीतर जाने ही कैसे दे सकता हूं, जबकि वहां कम्बख़्त तुम्हारे कीटाणु हर जगह कूदते फिर रहे हैं? मान लो कि वे लेखा परीक्षक को काट लें, तो कौन दोषी होगा? गोशकोव ही न? या फिर अगर तुम अन्दर जाओ और बीमार पड़ जाओ तो कौन ज़िम्मेदार होगा? मैं ही तो? आह,

नही। मैं किसी को अन्दर नही जाने देता हू। साथी वाबिचेव की उपस्थिति मे उस जगह को वन्द करके उस पर बोर्ड की मुहर लगा दी गई है। वहा तो मक्खी भी नही जा सकती!"

वाबिचेव कुछ कदम और पीछे हटा, चौक की ओर लौट चला। चाचा पेत्या उसे शान्त, लगभग खाली सी नजर स जाते हुए दखता रहा।

"खैर, हम तो छाटे आदमी है, हम इसका निणय नही कर सकत," उसने वोलोद्या की ओर आख मारते हुए वडे महत्त्वपूण अन्दाज मे कहा। "मैं यहा छाया में तुम्हारे साथ वठकर ज़रा अपनी टागा को आराम दूगा। इसी बीच व्लादीमिर अफानास्येविच जाकर इस बात की हिदायत ले आयेगा कि जलाने का काम कस किया जाय। यह साधारण ढग से नही, वज्ञानिक ढग से किया जाना चाहिये। महज़ जलाना ही नही, पूरी तरह से 'नोर्मालिस' छूत-मुक्त करना जरूरी है।'

चाचा पेत्या की वैज्ञानिक शब्दावली न पिय हुए गोशकोव का बिल्कुल दम निकाल दिया। अपने लाल मुह स वह कोई मजाकिया गीत गाने लगा।

"इस मामले म जुम और पसे की हेरी फेरी की गन्ध आती है," चाचा पेत्या ने फुसफुसाकर वालोद्या से कहा। "चिकित्सा-काय के क्षेत्र म आन पर ऐसी चीजा से वास्ता पडता है। मैं ता घिसा हुआ सिक्का ह और इस वदमाश का 'नोर्मालिस' शब्द से ठण्डा कर दिया।"

सचालक के नये और बढिया वन मकान के पीछे, झाऊ के झुरमुट के ऊपर बादल की गरज सुनाई दी। असह्य उमस हा गई। मनहूस-सी, वरखाहीन और धूल भरी आधी आकाश म छाती जा रही थी।

"बग्घी लो और जितनी भी तेजी से मुमकिन हो, पुरानी बडी सडक पर पुल क पार सनिक शिविर तक भगा ले जाओ," चाचा पेत्या ने फुसफुसाकर वालाद्या स कहा। "जब तुम्ह अपनी दायी ओर तम्बू और घाडा क अस्तबल नजर आये, ता रुक जाना। सनिक डाक्टर साथी कुदीमोव स मिलकर अपने साथ कुछ फौजी घुडसवार ले आओ। वरना वे खाली गादामा को जला देंगे और फिर साइबेरियाई फाडे का ढूढते फिरना। हजारा रूवल का तैयार माल भी बट्टे-खात डाल दिया जायगा। उनस कहना कि अभियाजक या जाच अफसर को बुलवा भेजें। कुछ मिलिशियावाला का भी साथ ल आना। दुश्मन का दम खुश्क

करने के लिए हमारे चोर्नी यार मे भी कुछ घुड़सवार मिलिशियावाले है।"

"सावधान रहियगा, कही वे आपकी मरम्मत न कर डाले," वोलाद्या ने फुसफुसाकर कहा।

चौक मे हिंडोले का घुमाकर देखा गया। गाशकोव गला फाड फाडकर गा रहा था।

युवती फिर घर से बाहर आई और इस बार वोदका की बोतल और एक तश्तरी मे कुछ मूलिया और नमकीन हेरिंग मछली लाई।

"ऐ डाक्टर की दुम, इधर आओ," गोशकोव ने चाचा पेत्या को आवाज दी। "आओ, 'नोमालिस' छूत मुक्ति करे। बिजली की कड़क हो, हमारा जाम हो और फिर हम यह अनुमान लगायगे कि हमारी इच्छा पूरी होगी या नही।"

चाचा पेत्या बैठ गया उसने अपनी शानदार मूछो को थपथपाया और मजबान से वोदका का गिलास ले लिया। वोलोद्या ने चाचा पेत्या पर एक और नजर डाली अटपटे ढग से लगाम सम्भाली और प्यार से भूरे घोड़े को कहा--

'चल भई क्या तुम्हारा नाम है! चल दे!"

बग्घी चौक म से खडखडाती हुई चल दी।

"माल्येव बाविचेव कहा है?" चाचा पेत्या ने गाशकोव से पूछा।

अपनी ड्यूटी बजा रहा है।

यह ड्यूटी का भी खूब रही!" गाशकोव से जाम खनखनाते हुए चाचा पेत्या ने कहा। "आखे मूद रहना, बस यही तो है उसकी ड्यूटी।"

"क्या मतलब है तुम्हारा?

चाचा पेत्या को गमागम बातचीत और जोखिम की परिस्थितिया म प्यार था। अब उसे ऐसे लगा माना वह भूल रहा हो।

'क्या मतलब है? मतलब यह है, नागरिक गाशकोव कि चोर वह नहा होता जो चोरी करता है बल्कि जो उसे चोरी का मौका देता है।

फिर से पुरे के नजदीक आवाज की तरह गूद पानी छिनता छडका। गाशकोव उधर पटा और उसकी आखे उधर गड।

वोलोद्या चितकबरे घोडे को अटपटे ढग से हाक रहा था। घोडा कुछ देर तक तो धीरे धीरे चलता रहता और फिर सरपट दौडने लगा। वोलोद्या लगभग पीछे की ओर गिर पडा, उसने लगामो को हाथो के गिर्द लपट लिया और इस बात की कोशिश करते हुए कि उसकी आवाज बिजली की कडक के बीच से सुनाई दे जाये, ज़ोर से चिल्लाया – "धीरे, धीरे, ऐ सिरफिरे घोडे!"

काश कि मुझे घोडे का नाम मालूम होता, वह बहुत चाह रहा था। वसे घोडो को बुलाया किन नामो स जाता है?

वाद की सभी चीज़ें उलझी-उलझायी अनुभूतियो का ताना-बाना बन गयी। वोलोद्या की कुदीमोव से मुलाकात हुई, जो दोपहर के खाने के बाद झपकी लेकर उठा था और उसकी आखें अभी भी अलसायी-अलसायी थी, बिजली की लगातार और ज़ोरदार कडक, "घोडो पर सवार हो जाओ!" आदेश, सडक पर धूल का मोटा, पीला बादल, तेज़ दुलकी चाल से घोडो को दौडाते हुए घुडसवार, एम्बूलेस, हूक जैसी नाक और बहुत कसकर दाढी बनाने के कारण नीले गालवाला दल-कमाडर, कुदीमोव, जो काले घोडे पर सवार था, और फिर से चाचा पेत्या स साक्षात्कार, जो पिये हुए, किन्तु सही-सलामत था। इसके बाद फिर से बिजली कौधी, पर कडकी नही और पानी नही बरसा, घुडसवार मिलिशियावाले, नमदे के जूतो के मुहरबद उद्यम के पास मिट्टी के तेल के डिब्बे, ऊन छाटनेवाले और अन्य मजदूरो की गुस्से से चीखती चिल्लाती भीड, लोहे का डाड जिससे मिलिशियावाला मुहर लगा ताला तोड रहा था और गोशकोव की धमकिया – "आपको जवाब देना होगा! जवाब देना होगा! कीटाणुशोधन!" फिर से कुदीमोव सामने आया, हसते हुए चेहरे पर उसकी आखे बटन जसी हो गई थी। वह कह रहा था – "उस्तिमन्को, देख लीजिये बिल्कुल खाली गोदाम पडा है। बदमाश, सभी कुछ चुरा ले गये है, सभी कुछ। ओह, यहा कुछ ऊन पडा है, पर वह दस किलोग्राम से अधिक नही है। तैयार माल कहा है? नमदे के जूते कहा है? कागज़ात के मुताबिक चार हज़ार से ज्यादा जोडे होने चाहिये। ठीक है न, साथी अभियोजक?"

नमदे के जूतो का एक जोडा भी कही नही मिला। गोशकोव और बाबिचेव को फौरन गिरफ्तार कर लिया गया। अभियोजक एक

जाचकर्त्ता को भी अपने साथ लाया था। वह बगल म लम्बी पिस्तौल लटकाये हुए एक रहस्यपूर्ण व्यक्ति था। उसकी नाक बतख की चोच जसी थी। वालोद्या को लगा कि उसकी नजर सीधी दिल मे उतर जाती है। पद चिह्ना और सुराग दनवाल दूसरे निशाना क बारे म उसकी बात सुनकर वालोद्या को उन दिना का स्मरण हो आया, जब वह कानान डायल की कहानिया पढता हुआ उन्ही म खो जाया करता था।

घुप अधेरा छाया हुआ था, हर कोई हाथ मे लालटन लिये था। सभी कुछ बहुत रहस्यमय और बचपन के दिना की भाति डरावना लग रहा था।

वालोद्या ने अभियोजक का सम्बोधित किया, जो छोटा सलेटी कोट और चमडे की टोपी पहने हुए जवान आदमी था।

'हमे फौरन यह मालम करना चाहिये कि ऊन और जते कहा गये, वोलोद्या न कहा। साइबेरियाई फोडे के जीवाणु बहुत ही जानदार होते है। दस मिनट तक उबालने पर ही उनका नाश किया जा सकता है। १२० सेटीग्रेड की खुश्क गर्मी तो केवल एक या दो घटे के बाद हो उनका काम तमाम कर पाती है।"

'पर यह कुत्ते का पिल्ला तो इस समय नशे म धुत्त है। इस वक्त तो उससे कुछ भी उगलवाना मुमकिन नही," अभियोजक ने जवाब दिया। "आप स्वय ही देख सकते है कि वह बिल्कुल नशे म चूर है।'

लोग इस बात की कोशिश कर रहे थे कि सचालक पर खुला मुकदमा चलाया जाये। वन जसी आखोवाला बाबिचेव औरतो की भाति रो रहा था, खूबसूरत रुमाल से आखें पोछ रहा था। चाचा पेत्या घुडसवारो से गपशप कर रहा था, उन्हे समझा रहा था कि साइबेरियाई फोडा इनसानो के लिए भी जानवरो की भाति ही खतरनाक है।

उसी रात को काफी देर से गाशकोव का नशा दूर हुआ। यह एहसास होने पर कि उसे गिरफ्तार किया जा चुका है, उसने उतावली म शब्दो को गडबडाते हुए झटपट सभी कुछ स्वीकार कर लिया। आरखन्स्क के दो व्यापारी दो रात पहले सारे माल को ट्रका

मे लादकर ले गये थे। रुपया सही-सलामत था। साथी अभियोजक उस सोवियत कोश के लिये ले सकता था। नोटो की गड्डिया कीला के नीचे दूध दुहने की पुरानी बालटी म छिपाकर रखी हुई थी। अभियोजक एक मेज पर बैठ गया, उसने चेहरे स पसीना पाछा और रुपये गिनन लगा। नोट वक से लाय गये बिल्कुल नये थे, और उनवे रैपर तक भी नही उतारे गये थे। वह नोटो के बडलो को अपनी टोपी म रखता जाता था। गिनती करते हुए उसम गलती हो गई और वह फिर से गिनने लगा। वाविचेव न कमरे के कोने से पुकारकर कहा—

"मेरे घर पर २,२०० रूबल और हैं। मुझे इस मामले म आख मूद लेन के लिए यह रकम दी गई है। साथी अभियोजक, कृपया यह चीज दज कर ले कि मैं तो स्वय उसे स्वीकार कर रहा हू।"

यह सभी कुछ बहुत दिलचस्प था। कुदीमोव कुछ घटो की नीद लेन के लिए चला गया और मेले पर राक लगानेवाले सन्तरियो को तैनात करने का काम वोलोद्या को सौप दिया गया। वोलोद्या ने बारी बारी से सभी सनिको का नम्रतापूर्वक यह स्पष्ट किया कि किसी भी किसान को मले मे न आने दिया जाये, कि इस जगह पर रोक लगा दी गई है, कि यह कोई मजाक की बात नही है। सनिक जीनो पर ही ऊघ रहे थे, वोलोद्या के पुरजोर भाषण कुछ अधिक लम्बे और भारी भरकम शब्दो मे उलझे-उलझाये थे, पर उसे इसका एहसास नही था। उस व शब्द, जो उसने साइबेरियाई फोडे के बारे म एक दिन पहले ही किसी पुस्तिका म पढे थे कि—'रोग को अधिक महत्त्व नही देना चाहिये" याद नही रह थे। वोलोद्या को लगा कि वह प्लेग के विरुद्ध जूझ रहा है।

पौ फटने पर दो मिलिशियावाले अपराधियो और रुपया को चोरो पार ले चले। अभियोजक और जाचकर्त्ता चाचा पत्या की बग्घी म सवार हो गये। छ घुडसवार रक्षाथ साथ हो लिए। जाचकर्त्ता को वोलोद्या अच्छा श्रोता लगा और इसलिये उसने उसे उन भयानक अपराधो की खूब बढा चढाकर कहानिया सुनाई, जिनको खोज निकालने का वह दावा करता था। वह बडा ममन था, हसी-मजाक पसन्द करता था और जहा भी मुमकिन होता, मजा लेता। धनी बरोनिया

के बीच वोलोद्या की चमकीली आखें जिज्ञासा से चमक रही थी। ऐसे व्यक्ति को कहानिया सुनाने मे भी आनन्द मिलता है, विशेषत उस समय जबकि आखे नीद से बन्द हुई जा रही हो। अभियाजक खर्राटे ले रहा था, चाचा पेत्या सिगरेट के कश लगा और आह भर रहा था। जारचेन्स्क म और अधिक मिलिशियावालो के आने का आशा थी।

"मुझे यकीन नही कि हगामा नही होगा," जाचकर्ता ने कहा।

"आपका मतलब है कि गोली चलेगी?" वोलोद्या ने सतर्कता से पूछा।

ऊन और नमदे के जूतो का केवल अगले दिन ही पता चला और सो भी जारेचेन्स्क म नही, ग्लीनीश्ची के एक खेतघर म। वोलोद्या और चाचा पत्या को ४८ घटो तक और भी उनीदे रहना पडा। जारेचेन्स्क के पशु चिकित्सक से उनका झगडा हुआ, अस्पताल का टब खो गया और केवल मगल की शाम को ही क्लोरीन की गध से सरा बोर वे चोर्नी यार लौटे। वोलोद्या ने नदी मे स्नान किया, धुले हुए दूसरे कपडे पहने, अपने धूल-धूसरित, उलझ उलझाये बाल सवारे और बोगोस्लोव्स्की को ऐसे सारा किस्सा सुनाने गया माना कोई गढ जीत कर आया हो।

"यह बताइये कि राजगायेव के गोदामो और वकशापो का आपने क्या किया?" ध्यान से सारा किस्सा सुनने के बाद बोगोस्लोव्स्की ने पूछा। "उन्हे ऐसे ही छोड आये? उन्हे कीटाणु-मुक्त भी नही किया?'

वोलोद्या से कुछ भी कहते न बना। उन खाली कोठरियो का तो उसे ध्यान ही नही रहा था। मामले की खोज इतनी दिलचस्प थी, बिजली ऐसे कौंधती रही थी घुडसवार ऐसे भयानक ढग से खर्राटे लेते रहे थे अभियाजक ने ऐसे मार्मिक ढग से अपने अनुभव सुनाये थे और चुराये जूतो तथा ऊन का पता लगाना इतना जरूरी था कि

आप तो सचमुच ही एक गैरजिम्मेदार डाक्टर हैं। मुझे इस बात म कोई हैरानी नही हुई कि आप ऐसा करना भूल गये। मैं आप पर बहुत भरोसा भी नही कर रहा था। पर सबसे भयानक चीज तो यह है कि हमारे सबसे अधिक अनुभवी परिचारक स्योमाच्किन ने एक

मूख की सी हरकत की है," बागोस्लोव्स्की ने कडाई से कहा और चाचा पत्या को फौरन जगाने का आदेश दिया।

"यह सब मेरा ही अपराध है," वोलोद्या न कहना शुरू किया, पर बोगोस्लोव्स्की ने रुखाई से उसे टोकते हुए कहा—"चुप रहिये।"

काई चालीस मिनट वाद वे फिर से राजगोय की ओर चल दिये। आकाश मे सितारे झिलमिला रह थे, रात गम और नीरव थी। चाचा पत्या लम्बी-लम्बी और जोरदार जम्हाइया लेता रहा, जवान मुश्की घोडी सधी चाल से दौडती रही और बग्घी के स्प्रिग धीर धीरे चरमरात रहे। वोलोद्या इस डर से चुप्पी साधे रहा कि अगर वह बातचीत शुरू करेगा, तो चाचा पेत्या ऐसी डाट पिलायेगा कि तबियत साफ हो जायगी। पर ऐसा कुछ नही था। चाचा पेत्या तो जरा भी गुस्से म नही था।

"मैंने आपसे कहा था न कि हमारे सजन जैसा दूसरा आदमी इस दुनिया म मिलना मुश्किल है। हर चीज की गहराई म पहुचते हैं वे। बडे ही सख्त आदमी है, पर उनकी डाट के बाद आदमी फिर से गलती नही करता। अपराधी तो मैं भी हू। उस चार के साथ मैं कुछ अधिक ही पी गया और मुझे अपन उद्देश्य का ध्यान ही नही रहा।"

उसने फिर से जम्हाई ली और सोचते हुए कहा—

"तो हमारा सोवियत स्वास्थ्य रक्षा विभाग इस तरह से जारशाही के अवशेषो के विरुद्ध जूझ रहा है। हमारे सजन इस मामले म सालह आने सही है।"

नौवा अध्याय

"मेरे सहयोगी"

इस बार भी किसी तरह की कोई प्रशसा नही हुई। किसी ने वोलोद्या का नाम तक नही लिया। वह पालिश की हुई पीली अलमारी के पीछे अपनी हर दिन की जगह पर वठा हुआ था, सूरज हमेशा की भाति उसके चेहरे पर अपनी किरणें बिखरा रहा था और अब ऐसा लगा कि तीन दिन पहले जो कुछ हुआ था—दौड धूप, ढढ-तलाश, घुडसवार सनिक, अदभुत जाचकर्त्ता नशे म धुत्त गोशकाव और बिजली की कौंध, ये सब बहुत ही मामूली और ऐसी बात थी कि किसी को उनकी ओर ध्यान देने की आवश्यकता ही नही महसूस हो रही थी। जाहिर है कि वोलोद्या को यह बहुत अखरा, पर वह कर ही क्या सकता था? खडा हो जाये और उ हे बताये कि यह काम कितना कठिन और भयानक भी था? उनसे कहे कि मैं और चाचा पेत्या भले आदमी है? पर नही वह ऐसा नही कर सकता था। किन्तु बहुत जल्द ही वह अस्पताल की दुनिया, कामकाजी और नपी-तुली दुनिया की लय-ताल का अभ्यस्त हो गया और राजगोन्ये म घटी घटनाओ के बारे म भूल गया।

उस सुबह बोगोस्लोव्स्की ने वालोद्या स कहा कि वह वाड न० ५ के रोमान चुखनीन को आपरेशन के लिये तैयार करे। उस हट्ट-कट्ट जवान को बाकी रोगी रोम्का कहते थ। आपरेशन क नाम स उसका दम खुश्क होता था जान निकलती थी और इस डर को वह खुद अपने से और अस्पताल क लोगो से छिपाता था। उसन परिचारको, नर्सों रागियो और बहुत ही शरीफ डाक्टर नीना सर्गेयेव्ना को, जिसक

माथे पर केश-कुण्डल लहराते रहते थे, परेशान कर रखा था। सबसे भयानक बात तो यह थी कि राम्का, जिसने चिकित्सा सम्बधी कुछ लोकप्रिय किताबें पढ रखी थीं, खुले तौर पर यह दावा करता कि चोर्नी यार के सभी डाक्टर बुद्धू, छोटे नगर के अनजान चिकित्सक हैं और "आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की उपलब्धियो" के मामले में बहुत पिछडे हुए है। पसीने से तर, थलथल चेहरा लिये और खीझा खीझा-सा वह दालाना म इधर-उधर घूमता रहता हर जगह सूघा-साघी करता और फिर तथ्यो को तोड़-मरोडकर बडे चटखारे लेता हुआ रोगियो को सुनाता।

"पिछली रात उन्होने यहा से एक रोगी को चुपचाप शवघर में पहुचा दिया। गलत रोग निदान किया था। इन सभी पर मुकदमा चलाया जाना चाहिये इन पर जरा भी दया नही करनी चाहिये। ये डाक्टर नहीं, बदमाशो का एक टोला है। उन्होने एक जवान लडकी की भी जान ले ली। गलती से उसके दिल म कुछ हवा घुस गई। वार्ड न० ३ म आक्सीजन का सिलडर लाया गया है। भला क्यो? क्योकि इनकी मेहरबानी से वहा भी एक व्यक्ति अपनी आखिरी सासे गिन रहा है।"

वह कहता कि खुराक बहुत खराब है, जवान सोन्या नर्स के बारे म गन्दी से गन्दी कहानिया सुनाता और अपने साथी रोगियो को यह यकीन दिलाता कि यहा से केवल उनकी लाश ही बाहर जायेगी।

"आपके यहा लीज़ाट थेरापी का बिल्कुल इस्तेमाल नही किया जाता। मेरा मतलब यह है कि जब पेशाब से, इस शब्द का उपयोग करने के लिये क्षमाप्रार्थी हू, इलाज किया जाता है," उसने एक बार वोलोद्या से कहा, जिसे यह सुनकर बडा आश्चर्य हुआ। "खैर, साथी नर्स, परिचारक या आप जो भी हो, मेरे हीमोग्लोबीन और एरिथ्रोसाइट सामान्य से बहुत कम है। इसके लिये फौरन कुछ न कुछ करना चाहिये और इसके बजाय आप लोग ऑपरेशन करना चाहते है।"

"आप चिकित्सा क्षेत्र से कोई सम्बध रखते है क्या?"

"मैं एक साधारण सोवियत बुद्धिजीवी हू," राम्का ने चुटकी लेते हुए कहा। "हम anamnesis के बारे में और कुछ अन्य बाते भी जानते हैं।"

उसने गुस्ताखी भरी और नफरत की नजर से वोलोद्या की ओर देखा। अन्य रोगी मानो समर्थन करते हुए मुस्करा रहे थे। जांघ की हड्डी के बुरी तरह टूटने के कारण एक परेशानहाल बुजुर्ग ने तड़पते और कराहते हुए कहा—

इस कुत्ते के पिल्ले को आप यहां से निकाल बाहर क्यों नहीं करते? वह तो मुसीबत बन गया है। हमारे सब्र का प्याला छलकता जा रहा है। कहीं ऐसा न हो कि हम क़ानून को अपने हाथ में लेकर इसका वही हाल कर डालें, जो घुड़चोरों का किया जाता है। यह कुछ अच्छी बात नहीं होगी।"

"क्या कमाल का वातावरण है," रोम्का ने आह भरकर कहा। "काश कि स्वास्थ्य विभाग का जनकमिसार यह दृश्य देख पाता। दिल बाग बाग हो जाता उसका।" फिर उसने फुसफुसाते हुए कहा— "यह ध्यान में रखिये कि कम से कम २५ प्रतिशत रोगी बहानेबाज हैं। अब बात यह है कि मेरी भोजन नलिका में कुछ गड़बड़ी है और इसलिये मैं आपरेशन कराने को राजी नहीं हो सकता। बस, बात खत्म।

वोलोद्या ने एक नर्स को भेजा कि वह बोगोस्लोव्स्की को बुला लाये। नर्स जब तक बोगोस्लोव्स्की को ढूंढकर लायी, रोम्का वोलोद्या का मजाक उड़ाता रहा उसकी जवानी, घनी बरौनियों और झेंप की खिल्ली उड़ाता रहा। वोलोद्या ने ऐसे जाहिर किया कि वह कुछ भी परवाह नहीं करता, किन्तु यह वास्तविक यातना थी।

'सुनिये, चुव्रनीन, रोम्का की चारपाई के नजदीक स्टूल पर बैठते हुए बोगोस्लोव्स्की ने कहा। आप अपनी ही इच्छा से हमारे अस्पताल में आये थे और आपने यह इच्छा प्रकट की थी कि हम आपका चेहरा संवार दें जिसे किसी गुप्त, किन्तु वीरतापूर्ण कार्य में क्षति पहुंची है। अब राज भी कोई राज नहीं रहा। मैंने सब कुछ मालूम कर लिया है। धार्मिक पर्व के अवसर पर नशे में आम तौर पर होनेवाली हाथापाई का ही यह नतीजा है।"

बोगोस्लोव्स्की ने जान बूझकर ऊंची आवाज में अपनी बात कही ताकि सभी रोगी सुन सकें।

"आपका उस हाथापाई मे हिस्सा लेना और भी ज्यादा अफसोस की बात है, क्योकि आप खासे पढे-लिखे आदमी है, एकाउटेन्ट है। आप टाई और टाप पहनते है और उन लोगो से नफरत करते है, जो इनके बिना ही काम चला लेते हैं। आप चोरी चुपके इस लडाई-झगडे म शामिल हुए और यद्यपि मैं मुक्केबाजी का बिल्कुल समथक नही हू, पर मेरे विचारानुसार इस किस्से मे तो बिल्कुल न्याय ही हुआ। आपका कान घायल हो गया तथा अपनी शक्ल-सूरत सुधारने के बारे म आपकी इच्छा को भली भाति समझा जा सकता है। जहा तक अस्पताल म आपके व्यवहार का सम्बध है, तो वह बहुत ही निद्य रहा है। हम आज ऑपरेशन नही करेगे पर शुक्रवार को या तो आप आपरेशन के लिये राजी हो जायेगे, वरना उसी दिन आपकी यहा से छुट्टी कर दी जायेगी। अगर आप फिर कोई मुसीबत पैदा करगे, तो हम आज ही आपको यहा से भेज देगे। आइय चले, व्लादीमिर अफ़ानास्येविच।"

"व्लादीमिर अफानास्यविच, हमारा काम कठिन और कृतज्ञताहीन है," बरामदे म आ जाने पर बोगोस्लोव्स्की ने कहा। "जब मैं अपना श्रम जीवन शुरू ही करनेवाला था, तो यह मानता था कि चकि हम डाक्टर लोग अपनी पूरी ताक्त और क्षमता स, पूरी ईमानदारी से काम करते है, इसलिये लोगा को भी हमसे मधुर शब्द कहने चाहिये, कृतज्ञतापूण हाथ मिलाना चाहिये और इसी तरह की अन्य भावनाए व्यक्त करनी चाहिये, जो जीवन को सुखद बनाती ह। पर ऐसा कुछ नही है। सीदीलव, जो मरे खिलाफ तरह-तरह की साजिशे किया करता था और जिसे हमने खासी बुरी हालत से निजात दिलाई, अब आपरेशन के समय के अपने भय को भूल गया है। याद है न कि वह यही समझता था कि मैं उसके टुकडे टुकडे कर डालूगा। अब वह मुझसे इस बात के लिए नाराज़ है कि मने 'जरूरत स ज्यादा नश्तर चलाया है'। उसकी बीवी आज सुबह ही मुझ पर इस बात के लिए बिगड रही थी कि 'मैं अपने पुरान सहयोगी का अधिक ध्यान स आपरशन कर सकता था'। हम यह सभी कुछ सुनना पडता है, क्योकि हम मिलिशियावाला को अपनी रक्षा के लिए नही बुला सकते। ठीक ह न? अब चौथ वाड म एक नारी है आज़ा ल्यादोवा, खासी सभ्य-

सुसंस्कृत है वह। उसका पति भी खास बड़े ग्रोहदे पर है। मैं डींग नहीं हाँकना चाहता पर हमने उसे बहुत ही बड़ी मुसीबत से बचाया है। जाहिर है कि अब उसे दर्द तो होता है। जानते हैं कि अब वह क्या कहती है? वह मुझे और हमारी बहुत ही विनम्र डाक्टर नाता सेर्गेयेव्ना को कसाई, संगदिल और क्रूर तक कहती है। आयाओं-नर्सों पर ख्याल फेरती है। उसका पति ढंग का आदमी है, सदगृहस्थ और प्यार करनेवाला व्यक्ति। वह हमें भेड़िये की सी खूनी नज़र से देखता है। केवल देखता ही नहीं, बल्कि कटु शब्द भी कहता है और वे भी हमें सुनने पड़ते हैं। यह तो फिर भी खैरियत ही है! अभी कुछ ही दिन पहले ममता की मारी एक माँ हमारे बहुत ही सज्जन विनो ग्रादोव पर डंडा लेकर झपटी। मैं आपको इसलिये यह सभी कुछ बता रहा हूँ कि आप कुछ ही समय बाद अपना करियर शुरू करनेवाले हैं। आपको रोगियों के द्रवित सम्बन्धियों से कृतज्ञता के आँसुओं और हाथ मिलाये जाने की या बालकों की कृतज्ञतापूर्ण छोटी-छोटी उँगलियों द्वारा चुने गये जंगली फूलों के गुलदस्ते पाने की आशा नहीं करनी चाहिए। विशेषतः उस समय, जब आपके किये धरे कुछ न बने। तब बुरी से बुरी चीज़ के लिए भी आपको तैयार रहना चाहिए। अदालत में पेश होने का संदेश मिलने पर भी माथे पर शिकन नहीं पड़नी चाहिए। प्यार करनेवाले रिश्तेदार का दिल बहुत प्रतिशोधपूर्ण होता है। अपने सीमित ज्ञान में एड़ी चोटी का पसीना एक करने पर भी आपको अपराधी माना जायगा, शायद पक्का अपराधी नहीं, फिर भी 'सन्देह' तो किया ही जायगा। ज़ाहिर है कि इससे दिल पर बहुत भारी गुज़रती है। शायद यह बताने की तो ज़रूरत नहीं है कि कुछ अपवाद भी होते हैं—धन्यवाद के कुछ व्यक्तिगत पत्र आते हैं, कभी कभी अखबारों में भी कुछ लिखा जाता है। यह बहुत अच्छा लगता है, मर्म को छू लेता है और कभी-कभी आँखों में आँसू भी आ जाते हैं। पर सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि अक्सर हमें वहाँ धन्यवाद दिया जाता है, जहाँ हम धन्यवाद के पात्र नहीं होते। यह तो महज़ किस्मत साथ दे देती है या कुदरत मदद करती है। आभार माननेवाला हमारा रोगी तो डाक्टर नहीं और जो हमें मालूम होता है, उसे उसका आभास भी नहीं होता। मेरे अच्छे मित्र और आपके अध्यापक पालनिन

अक्सर गाधी के शब्द उद्धृत किया करते थे और मुझे वे बिल्कुल सही प्रतीत होते हैं। वे शब्द हैं—मैं केवल एक ही उत्पीड़क को जानता हू और वह है मेरी आत्मा की धीमी सी आवाज़।"

बोगोस्लोव्स्की ने आह भरी, भारी गिलास मे कुछ सोडा डालकर पिया और मानो फिर से वोलोद्या के मन की बात भापते हुए कहा—

"सयोगवश मैं यह भी कह देना चाहता हू कि ऐसी कल्पना करना कि आत्मा, प्रतिष्ठा और भलमनसाहत जसे शब्दा से हम डाक्टरा का कोई वास्ता नही, वहुत गलत होगा। ये हमारे लिये, विशेषत हमारे लिय ही हैं। कारण कि पूजी की दुनिया म सजन इसलिये ऑपरेशन नही करते कि ऐसा करना जरूरी होता है, बल्कि इसलिये कि रोगी धनी है और अगर उसे ढग से निचोडा जाये, तो काफी पाउड, फ्राक या अमरीकी डालर हाथ लग जायेंगे। उनकी पेटेंट दवाइयो का विज्ञापन भी तो पसे देकर खरीदे गये वज्ञानिका के नामा के साथ किया जाता है। उन्ही के द्वारा विज्ञापन होता है। दूसरी ओर, हम लोग प्रतिष्टा, आत्मा और भलमनसाहत की दुनिया म काम करते है। जिस प्रकार हम अपनी विचारधारा के शत्रुओ के विरुद्ध सघप करते हैं, उसी भाति हम उनके विरुद्ध भी सघष करना चाहिये जो अपनी 'आत्मा की धीमी सी आवाज़' को दवाते है। कारण कि मिसाल के तौर पर झावत्याक, जिसे हम आगे केवल 'प्रोफेसर' ही कहेगे "

इतना कहकर वोगास्लोव्स्की ने वोलोद्या की ओर देखा और यह ध्यान आने पर कि आखिर वह वालाद्या का अध्यापक है, वे सकपकाकर रुक गये, झेंपे, उन्हाने चटखारा भरा और वोले—

'आइये, चलकर ऑपरेशन करे, मरे सहयोगी। आज हम दोना का दिन काफी व्यस्त रहेगा।'

"मरे सहयोगी!", "हम दोना का दिन," ये वोगास्लाव्स्की के शब्द थ। मज़वूत काठी, चौडे कधावाले, सवलाये हुए और इस अद्भुत व्यक्ति के शब्द ये ये। वोगोस्लाव्स्की जब तक ऑपरेशन करते रहे, वालोद्या रोगी को बेहोश रखने की सूई लगाता, उसके तन म रक्त पहुचाता या क्षारीय घोल की सूई लगाता और नब्ज़ गिनता रहता। "हम दाना" य शब्द लगातार उसके काना म गूजते रहते। य शब्द किसी तरह की बनावट के विना खरखरी आवाज और देहाती अन्दाज़

म कहे गये थे। यह इस बात की मान्यता थी कि वह उनमे से एक है। यद्यपि वह वोगोस्लोव्स्की का मुख्य सहायक नही था, फिर भी सहायक तो था ही। वह उन कटु सत्यो को जानने का अधिकारी है, जो उचित रूप से ही हर किसी को नही बताये जाते थे

प्रवेश-कक्ष की घडी ने उस समय दिन का एक बजाया जब वोगोस्लाव्स्की ने चिमटी से पकडकर सिगरेट सुलगाई। वालोद्या अपने हाथ साफ करता हुआ यह अनुभव कर रहा था कि उसकी बिल्कुल जान निकल गई है। वह पसीने से बिल्कुल तर था और ईथर की गध, जिसका वह अभ्यस्त नही हो पा रहा था, उसके गले मे अटकी हुई थी।

"टागो के रिसनवाले नासूर तो सचमुच ही निरी मुसीबत हैं," बुजुर्ग डाक्टर विनोग्रादोव मानो अपने आपसे ही कह रहा था। "मुझे याद है कि हमारे यहा एक ऐसा रोगी "

दरवाजा थोडा-सा खुला और पूर्ति प्रबन्धक रूकावीश्निकोव ने अन्दर झाका। वह बडा हृष्ट पुष्ट खुशमिजाज और शान्त स्वभाव का व्यक्ति था।

'मैं आपको यह बताने आया हू कि घास काटने की मशीन को जोड दिया गया है और अभी वाख्रामेयेव तथा अन्तोश्का उसे चलाकर देखनेवाले हैं, यानी उसकी आजमाइश करनेवाले है। वह रही मशीन है न बहुत सुदर।'

अस्पताल की बाड के दूसरी ओर घास काटने की बढिया रोगन की हुई मशीन धीरे धीरे हिलती डुलती हुई दिखाई दे रही थी। वालोद्या पर इसका कोई प्रभाव नही पडा, किन्तु वोगोस्लाव्स्की ने गुस्से से कहा—

'मुझे हैरानी हो रही है कि तुमने अन्तोश्का को क्यो उसे चलाने दिया। वह हमेशा चीजे तोडता फाडता रहता है। उससे जाकर कहो कि वह मशीन को हाथ तक न लगाये।"

वालोद्या ने वोगोस्लाव्स्की के व्यक्तित्व का एक अजीब पहलू भी देखा। वे खुद जाकर घास काटने की मशीन की आजमाइश करने के लिए बेकरार थे किन्तु ऐसा कर नही सकते थे। कारण कि उन्हे आपरेशन हाल मे जाकर उस दिन का सबसे लम्बा और जटिल आपरेशन करना था। "नास्त्या तूदा" राजकीय फार्म के बुजुर्ग सईस,

वोबिशेव के पेट मे घोडे ने लात मार दी थी। बाविशेव को उसी दिन अस्पताल म लाया गया था। वोगोस्लोव्स्की उसे व्यक्तिगत रूप से जानते और पसन्द करते थे। वे अडोस-पडोस के ऐसे ही मेहनती और मन लगाकर काम करनेवाले लोगो को इसी तरह पसन्द करते थे।

"मुझे लगता है कि उसकी तिल्ली फट गई है, व्लादीमिर अफानास्येविच। देखिये न उसका रग अधिकाधिक जर्द होता जा रहा है, रक्त-चाप कम हो रहा है, त्वचा ठडा होती जा रही है। फिर उसे लगातार उबकाई भी तो आ रही है। ओह खर, तो आइये आरम्भ कर," उन्होने दद भरी आवाज म कहा। यह बडी अजीब सी बात प्रतीत हो सकती है, किन्तु इतने वर्षो तक डाक्टरी करने के बाद भी उनम करुणा की भावना पहले के समान ही बलवती थी।

जोरदार और बडे सुन्दर झटके के साथ बोगास्लाव्स्की ने पेट चीरा और समस्वर मे वालोद्या को समझाया कि तिल्ली कसे फटी है। मारीया निकालायेव्ना जल्दी जल्दी एक के बाद एक औजार देती जा रही थी। इस्तेमाल करने के बाद मेज़ पर फेंकी जानेवाली कची, चिमटी, शिकजे या नश्तर की टनटनाहट और रोगी की कठिनाई से आ जा रही सास से ही निस्तब्धता भग हो रही थी।

"नब्ज़"? वागास्लोव्स्की जब-तब पूछते।

वोलोद्या चोर्नी यार के अस्पताल म व्यवहार के प्रचलित ढग के अनुसार धीमी आवाज म इसका उत्तर देता। भारी भरकम डाक्टर विनाग्रादोव हाफ रहा था। प्रवेश कक्ष की घडी न दो, फिर ढाई बजाये। ३ बजकर ३२ मिनट पर बाविशेव को आपरेशन हाल से भेजा गया। वोगोस्लोव्स्की स्टूल पर बैठ गये और मिनट भर की गहरी खामोशी के बाद बोले--

"हमने बूढे की जान बचा ली है न?'

अचानक उन्ह घास काटने की मशीन सीधी लोहे के जगले की ओर बढती दिखाई दी। "फिर अन्तोश्का अकेला ही उस चला रहा है? आह, कम्बख्त, उसका सत्यानास कर डालगे। मैं दूसरी मशीन वहा से लाउगा।"

वोगोस्लोव्स्की तेज़ी से बाहर गय और गुस्स से अपना चोगा और नकाब उतारकर रास्ते म ही फेकत गय। उन्होने फाटक का सपाट

खोल डाला और अपनी बाहों को हास्यास्पद ढंग से हिलाते डुलाते और मुह का बहुत चौडा खोलकर निडर, सुनहरी बरौनियो और सन जसे झबरीले बालोवाले अन्तोश्का को डाटने-डपटने लगे। आपरेशन हाल की खिडकी स वालोद्या ने वोगास्लोव्स्की का घास काटने का अपनी कीमती मशीन पर कदकर चढते देखा। अन्तोश्का उनके साथ साथ भागने लगा जबकि लम्बी-लम्बी टागोवाला परिचारक वाख्रामयेव, जा अचानक ही कही से प्रकट हो गया था, ढालो पर अपने हाथ रखने और जल्दी जल्दी मनीव बनाने लगा था।

हे भगवान कैसे कमाल के आदमी है!" वोलोद्या की बगल मे खिडकी के पास खडी हुई नीना सर्गेयेव्ना ने कहा। "अभी अभी तो उनका दम निकला जा रहा था। आपने ध्यान दिया, उस्तिमेको?

'वे तो जनूनी है जनूनी! भगवान मुझे क्षमा करना," मारीया निकोलायव्ना न प्यार से कहा। सच तो यह है कि वाख्रामयेव के साथ व आधी रात तक मशीन के पुर्जे जोडते रहे थ।"

कोई बीस मिनट बाद, जब वोलोद्या अस्पताल स बाहर निकला, तो उसने बोगोस्लाव्स्की का केवल कमीज पहने हुए वाख्रामयेव को डाटते सुना--

'मैने कहा नही था कि रोलर कसने की जरूरत है? और तुमने क्या किया?'

बोगोस्लाव्स्की के उस्तरे से मुडे हुए सिर पर सर्जन की सफेद टोपी अभी भी रखी हुई थी, पर वह एक कान की ओर खिसक गई थी। इससे वे बडे अजीब और फक्कड-से प्रतीत हो रहे थे। बगीचे मे टहलते और खिडकियो से झाकते हुए उनके रोगियो को बोगास्लोव्स्की का लम्बे-तडगे मिस्त्री को धमकाना और गुस्से से, किन्तु किसी प्रकार की दुर्भावना के बिना यह पूछना बडा दिलचस्प लगा--

'अब हम एक अन्य चक्का कहा से लायें? कहा स लायें? शायद अन्तोश्का को चोरवर बना ले?

हा, हा अगर मेरा दोष है, तो बना लीजिये मुझे चोरवर " अन्तोश्का न आसू बहाते हुए कहा। आपने खुद ही तो रोलर का

दूसरी जगह पर जोड दिया और अब मुझ पर बरस रहे है। अन्तोश्का ही हमेशा हर चीज के लिये दोषी होता है। बडा बदकिस्मत आदमी हू मैं, शायद मुझे अपने को सूली लगा लेनी चाहिये।"

"मैं लगा दूगा तुम्हे सूली।" बोगोस्लोव्स्की ने गुस्से स कहा।

दो मजबूत घाडो ने मशीन को मरम्मतखाने मे पहुचा दिया। बोगोस्लोव्स्की ने अपना पुराना, उल्टाया हुआ कोट पहना और "हवाई जहाज" के बायें भाग म अपने छोटे-से दफ्तर म चल गये, जहा उन्ह कागज़ात पर हस्ताक्षर करने थे। वोलोद्या उस कमरे की खिडकी से बागोस्लोव्स्की का दख रहा था, जहा बोविशेव को आपरेशन के बाद लाया गया था। उसने देखा कि बोगोस्लोव्स्की ने माली से कुछ बातचीत की, दिल के रोगी पाउश्किन का तजनी से धमकाया, जो घर के बने हुए सिगरेट के लम्बे-लम्बे कश लगा रहा था और इसके बाद वे इमारत म घुसकर गायब हो गये।

नमस्कार, प्यारी जिन्दगी।

वाड के दरवाज़े के करीब बोविशेव की बेटी – सुन्दर और घबरायी हुई नारी – धीरे धीरे सिसक रही थी। मासी क्लाशा उसे इस तरह तसल्ली दे रही थी –

"तुम जी छोटा न करो, बेटी। बडे करामाती हाथ है हमारे डाक्टर के, जिन्दगी देनेवाल। बेशक है तो व नास्तिक, पर क्या बराबरी करेगा कोई पादरी उनकी। पादरी तो धूप दीप ही जलाता है, मगर व सच्ची सेवा करत है। इसलिये, बेटी, मरी बात पर ध्यान दो, अपना जी छोटा न करो।"

"पादरी की तरह धूप दीप ही जलाना नही, मगर सच्ची सवा करनी चाहिये," वोलाद्या ने बहुत खुश होते हुए अपन लिये शब्दो को दृढतापूवक दाहराया। "कितनी सही बात कही है उसने – मौसी क्लाशा न, बहुत ही सही बात कही है।"

दरवाज़े के बाहर खामोशी छा गयी, निकालाई येव्गेन्येविच भीतर आये। वोलोद्या उठकर खडा हो गया। "बढिया!" निकोलाई येव्गेन्येविच

न कहा और स्वय दूसरे स्टूल पर बैठ गये। वे अपनी तनिक तिरछी नजर से वार्गिनेव के पीले चेहरे को बहुत देर तक, बहुत ध्यान से, टकटकी बाधकर और शान्त भाव से देखते रहे।

'बडा ही समझदार आदमी है यह," उन्होंने धीरे-से कहा, अपने ही ढग का बडा हसोड, सिर से पैर तक रूसी इनसान है। मेरे मधुरतम क्षण इसके साथ बीते हैं। बस आपको यह जान लेना चाहिये कि हमारे प्रदेश मे अनेक बढिया आदमी हैं। अभी कुछ ही दिन हुए कि शहर मे अपने एक सहपाठी से मेरी भेंट हो गयी। अब वह भी डाक्टर और प्रोफेसर है बेशक उसने आम विषयो पर चिकित्सा सम्बन्धी अनेक लेख भी लिखे हैं, फिर बडे नाम और इज्जतवाला आदमी है देखभालने मे भी खूब जचता है। तो उसने मुझसे पूछा, निकोलाई सम्भवत ऊबते और चुपचाप बीयर पीते होगे?' है न हैरानी की बात कि सोवियत सत्ता की स्थापना हुए इतने बरस हो चुके है कितने मार्के मारे जा चुके हैं कितनी कल्पनाओ को यथार्थ मे बदला जा चुका है, फिर भी सही दिमाग रखनेवाला एक प्रोफेसर कभी पढी गयी चेखाव की कहानी 'वार्ड न० छ' के आधार पर आपके और मेरे बारे मे यही सोचता है कि हम अवश्य ही ऊबते और बीयर पीते है। खैर, शाम को मैं अपने सहपाठी के घर गया, मुझे उस दावत मे शामिल होने का सौभाग्य प्रदान किया गया, जिसकी मेरे सहपाठी ने व्यवस्था की थी। जानते है वहा जाकर मैंने क्या देखा? व्हिस्ट का मजा लिया जा रहा है।'

'व्हिस्ट का?' बात वोलोद्या की समझ मे नही आई।

'हा ताश का एक ऐसा खेल है खासा दिमाग लडाना पडता है उसमे। बडे जोश के साथ और बहुत मन लगाकर वे लोग खेल रहे थे पूरी तरह इसी मे डूबे हुए थे। सारी शाम मे किसी ने एक भी शब्द नही कहा, एक भी ऐसा समझदारी का विचार प्रकट नही किया। मैंने मन ही मन सोचा – आह कम्बख्त बडा गधा हू मैं भी, किसलिये मे यहा आया? यह आदमी मास्टर है प्रोफेसर है, इसने कई किताबें लिखी है। लोग ठीक ही कहते है – 'उसकी ख्याति के लिये तो सभी कुछ है केवल युद्ध ही हमारे लिये नही है। तो वह प्रोफेसर ही क्या बना? नही मैंने सोचा ऐसा नही हो सकता, मैं ही गलती कर रहा

हू, बहुत जल्दी कर रहा हू निष्कर्ष निकालने की। चुनाचे मैंने अपने सहपाठी के साथ शल्य अन्तःस्रावशास्त्र की चर्चा शुरू कर दी। जरा गौर फरमाइयगा कि उसन मानो मरे प्रति दया भाव दिखाते हुए इस तरह मेरा कधा थपथपाया और बोला—'भई, इस वक्त तो हम जरा अपना दिल बहला रहे है न। अगर चाहो, तो कल हमारी क्लीनिक म आ जाना और वहा मेरे सहायक से बातचीत कर लेना।' ज़ाहिर है कि मैं किसी क्लीनिक-ब्लीनिक मे नही गया।"

निकोलाई यव्गेन्यविच खुशमिज़ाजी स ज़रा हस दिय, बरामद म उन्होने बाबिशेव की बेटी से कुछ दर बातचीत की और फिर पालीक्लीनिक के मरीजो का देखन चले गये।

वालोद्या ने बोगोस्लाव्स्की की बीवी क्सनिया निकोलायेव्ना के साथ नाइट ड्यूटी की और कठिनतम प्रसव म उसका हाथ बटाया। छरहरी, सुघड, डाक्टरी टोपी के नीचे चोटिया का ऊचा जूडा बनाये, गालो पर हल्की लाली और प्यार भरी कठोर नज़र—ऐसी थी क्सेनिया निकालायव्ना। वह एकदम जवान थी और दखन म बिल्कुल लडकी-सी लगती थी। वह अपना काम करती हुई वोलाद्या का सभी कुछ इस ढग स समझाती जाती थी मानो वह कोई अनुभवी डाक्टर न होकर उसकी सहपाठिनी, उसकी साथी हो और वालोद्या की तुलना म कुछ अधिक जानकारी रखती हो।

जच्चा फटी-फटी और यातना भरी आवाज म चिल्ला रही थी। प्रसूति-कक्ष म गर्मी थी। क्सेनिया निकोलायव्ना उस सलाह द रही थी—

"जोर लगाइय, मेरी प्यारी, बच्चा जनन के लिय जोर लगाइये। यह बहुत कठिन काम है, पर बाद म अपन परिश्रम का फल पाकर—बेटी या बेटे का मुह दखकर तुम्हारा मन खिल उठेगा "

क्सेनिया निकोलायेव्ना का मरीजो स बातचीत करने का ढग निकोलाई येव्गेन्येविच से बहुत मिलता-जुलता था और वालोद्या भी यह ढग सीखना चाहता था।

"आपके तो बेटा होगा "

"मैं बेटी चाहती हू," भावी मा ने रोते हुए कहा। "लडके तो सभी शैतान होते है। अभी हाल ही म हमारे पडोस के बालक ने हमारी गाय पर कमान स तीर चला दिया था "

वह फिर से चिल्लान लगी। क्सेनिया निकोलायेव्ना उसके ऊपर झुककर उसे प्यार से तसल्ली और दिलासा दने लगी। वोलोद्या को जच्चा पर बहुत दया आ रही थी, उसके माथे पर परशानी स बल पड गये और फिर खुद भी थाडा ज़ोर लगाने लगा। यह बडा अटपटा बात रही। बूढी दाई ने इस ओर ध्यान दिया और मजाक करते हुए बाला –

"तो आप भी ज़ोर लगाने लगे, व्लादीमिर अफ़ानास्यविच? यह बडी दिलचस्प बात ह कि अभ्यास के लिय आनेवाले सभी विद्यार्थी मदद करने का खुद ही ज़ोर लगाने लगते है। बडे ही अजाब हैं आप नौजवान लोग!"

पौ फटनेवाली थी, जब दाई ने बालक को टागा स पकडकर उठाया, अपने बडे लाल हाथ से उसका चूतड थपथपाया और उसकी चीख सुनकर यह घोषणा की –

"शैतान ने ही जन्म लिया है। कमान से ही नहीं, वह ता गुलेल स भी निशाने लगायगा।"

वालोद्या ने टाके लगाने म क्सेनिया निकोलायेव्ना की मदद की। मोमजामा, चादर और तश्त – सभी खून से लथपथ थे। जच्चा निश्चल लेटी हुई थी, उसके गाल और माथा बुरी तरह पीले होते जा रहे थे। वोलोद्या ने नब्ज देखी – हाथ पसीने से चिपचिपा हुआ पडा था।

"आइये, इसे खून देना शुरू कर!" क्सनिया निकोलायव्ना ने कहा। "शीशी को ज़रा ऊचा कीजिये। इस तरह "

उन्हाने पाच मौ क्यूबिक सटीमाटर खून दिया। सुबह होने पर नस क्षाराय घोल का इजेक्शन दने का सामान लायी। हाश-बाख्ता-सा वोलोद्या क्सेनिया निकालायेव्ना के आदेश पूरे करता जाता था। 'मौत,' उसन सोचा, "मौत! हम और क्या कर सक्ते हैं? हम सभी डाक्टरा का क्या नही बुलवा भेजते, बोगोस्लोव्स्की का क्या नही बुलवाते?"

शीशे की खनक सुनायी दी। दुबली-पतली क्सेनिया निकोलायेव्ना इत्मीनान से आदेश देती जा रही थी—क्या अभी भी बात इनकी समय मे नही आ रही?

किन्तु वह स्वय ही नही समझ रहा था। जब पूरी तरह उजाला हो गया, तो वोलोद्या ने देखा कि जच्चा के गालो पर सुर्खी आ गयी है। नारी की खुली हुई आखो मे अभी तक धुध-सी छाई थी, वह कुछ भी समझ नही पा रही थी, पर यह मृत्यु नही थी, अन्त नही था, बल्कि जीवन था, आरम्भ था

दिन पूरी तरह निकल आया था और बरामदे से दूर कही नन्हे मुन्ने ज़ोरो से चीख चिल्ला रहे थे। लिपटे लिपटाये बच्चो को दाइया दूध पिलाने के लिये उनकी माताओ के पास ले जा रही थी। जल्दी यह मा भी दूध से भरे काले चूचुक को अपने पहले बेटे के मुह मे दे देगी। वह भूल जायेगी कि बेटी पाना चाहती थी, बेटे को प्यार से सहलायेगी, सादा-सरल शब्दो मे लोरी गायेगी और दूसरो को यह बतायेगी कि मेरा बेटा कितना अधिक समझदार है आज रात को वोलोद्या के सामने दो करिश्मे हुए—पुरानी प्रसाविकी के सभी नियमो के अनुसार जो नारी न तो बच्चे को जन्म दे सकती थी और न ज़िन्दा रह सकती थी, उसने बच्चे को जन्म दिया था और ज़िन्दा थी। इसी प्रकार जो बच्चा ज़िन्दा पैदा नही हो सकता था, वह ज़िन्दा था। ये करिश्मे लोगो ने ही किये थे, बहुत-से लोगो ने, ऐसे लोगो ने, जो सम्भवत ह्विस्ट नही खेलते थे, दावते नही उडाते थे, ऊची-ऊची उपाधिया पाने मे इसलिये एडी चोटी का पसीना नही बहाते थे कि खूब बढिया पकवान खा सकें, आरामदेह बिस्तरो पर सो सकें और जनता की भारी मुसीबत की घडियो मे मौज मना सकें

सेचेनोव, गुबारेव, फ्योदोरोव, कादियान, धाकानोव, लन्दन, बोगामोलेत्स, स्पासाकुकोत्स्की—वोलोद्या बडी कठिनाई से उनके चिन्नो को याद कर पाया। "इतना कम क्यो जानते है हम इनके बारे मे?" वोलोद्या ने झल्लाते और दुखी होते हुए सोचा। आखिर आज की सारी रात वे यहा उपस्थित रहे, उन्होने इस मार्चे मे हिस्सा लिया, उन्होने मौत पर, खुद मौत पर अपनी जीत का झडा गाडा, मगर उनके बारे मे पाठ्यपुस्तको मे केवल कुछ नीरस पक्तिया लिखी हुई

है। 'मृत्यु विजेता', ऐसा शीर्षक होना चाहिये उनसे और उनके समान लोगो से सम्बन्धित अध्याय का।

आप वहा खडे खडे यह अपने आपसे क्या बातें कर रहे हैं?" कसेनिया निकोलायेव्ना ने पूछा। "बस, अपने आपसे ही बात करते रहते है। जाइये, जाकर सो रहिये।

"अच्छा तो नमस्कार!"

"नमस्कार" किसी कारणवश उसने मुस्कराकर कहा।

क्सेनिया निकोलायेव्ना हाथ धो रही थी और नर्स तौलिया लिये खडी थी। वोलोद्या जहा का तहा ही खडा रहा।

वह ऐसे जा ही नही सकता था। बहुत ही लम्बी रही थी पिछली रात उन घटो के दौरान वह बहुत कुछ समझ गया था, उसका हृदय अत्यधिक कृतज्ञता की भावना से भरपूर था।

"बहुत ही बुरा केस था क्या? प्रसूति-कक्ष की ओर सकेत करते हुए उसने पूछा।

'जटिल था।"

"बहुत जटिल?"

क्सेनिया निकोलायेव्ना तनिक मुस्करा दी--

"सम्भवत, हा।'

'और अब?"

'आप स्वय ही देख रहे है '

उसे तो कभी का यहा से चले जाना चाहिये था। किसलिये वह यही खडा था। उसे तो "नमस्कार भी कहा जा चुका है। आह, यह बुद्धू यहा से जाता क्या नही

"यदि मै आपके किसी काम आ सकू, तो कृपया मुझे अवश्य बुलवा भेजियेगा,' अपने आपसे झेंपते हुए वोलोद्या ने उदासी से अनुरोध किया।

क्सेनिया निकोलायेव्ना ने सिर हिलाकर हामी भरी। वोलोद्या का मन हो रहा था कि उसका हाथ चूम ले, कमजोर-सा प्रतीत होनेवाला, उभरी हुई नीली नसोवाला, दुबला-पतला-सा, मगर बहुत ही शानदार हाथ। जाहिर है कि उसे ऐसा करने की हिम्मत नही हुई। लम्बी बाहो और पुराने तथा टूटे हुए जूते पहने लम्बी टागोवाला वोलोद्या दरवाजे

की तरफ पीछे हटा और बाहर चला गया। वह बरामदे मे रुका और जहा का तहा ठिठककर रह गया – अस्पताल के बगीचे म पक्षी चहचहा रह थे, ओसकण सूख चुके थे, मगर फूल रात की भाति ही खूब महक रहे थ। एक बडा-सा, मोटा और खुशमिजाज भवरा वालोद्या के गाल से आ टकराया और फिर अपन जरूरी तथा फारी काम करने के लिये आगे उड गया।

"जिन्दगी!" वोलोद्या न अनुभव किया कि उसका गला रुधा जा रहा है। "प्यारी, मुश्किल, मगर असली जिन्दगी! नमस्कार है तुम्ह! देखती हो न, मैं तुम्हारी मदद करता हू, जिन्दगी! अभी तो मैं बहुत कम ही कुछ कर सकता हू, अभी तो म तुम्हारे छाटे मोटे आदेश ही पूरे करता हू, मगर मै भी, अवश्य ही म भी इनके जैसा बनगा। और तुम, तुम प्यारी जिन्दगी, मेरी इज्जत करोगी!"

कुछ देर बाद वह वोबिशेव को भी देखन गया। बूढे ने पीले चेहरेवाले जवान डाक्टर को हैरानी से देखा और दद की शिकायत की। वालोद्या ने नब्ज देखी और गहरी सास ली। दद–ओह, कितना हास्यास्पद है यह शब्द! अरे, इतना ही क्या कम है कि मेरे प्यारे बुजुर्ग वाविशेव, तुम जिन्दा हो। तुम जिन्दा हो और सम्भवत अभी बहुत समय तक जिन्दा रहोगे। और अस्पताल मे तो लगभग तुम्हारी लाश ही लायी गयी थी।

मगर बोबिशेव यह कुछ भी नही समझता था। इसम हैरानी की भी कोई बात नही थी – उसे तो यह मालूम नही था कि यहा के डाक्टर उसे मौत के मुह से निकाल लाये थे। अब उसे दद महसूस हो रहा था और वह चल्ला रहा था। तुम्हे खुश होना चाहिए कि तुम जिन्दा हो, उसे यह बात समझाना भी हास्यास्पद होता।

वोलोद्या दोपहर होने तक सोया रहा। बूढी मालिकिन के घर म सभी पजो के बल चलते थे।

"सी!" बूढी डौन फुसफुसाती। "सी, शैतानो! डाक्टर सो रहा है। जब मैं बेलना लेकर तुम सभी की हड्डिया तोडूगी, तो डाक्टर तुम्हारा इलाज नही करेगा। सी! सीजर, अपनी सीटी फेंक दे!"

"सीटी," वालोद्या को नीद म ख्याल आया। "सीजर सीटी बजा रहा है। तो यह बात है!"

सुख किसे कहते हैं ?

वोलोद्या ढेर सारा नाश्ता खा रहा था कि वद्धी मालकिन न उस वार्या का खत लाकर दिया। वह खाते-खाते ही उसे पढ़ने लगा, पनीर की मीठी टिकिया उसके गले म फस गयी और उसने उस थूक दिया। पालनिन चल बस थ। चल बसे, यह भला कस हो सकता है? कसे? जरूर कोई गलती हुई है शायद इसी नाम का कोई दूसरा आदमी होगा। अभी जाकर इस बात की जाच करता हू।

वालोद्या नाश्त को वहीं छोड और सडल पहनकर (जिनके फीते कसना भल गया था और जो रास्त म निकल निकल जाते थ) अस्पताल की ओर दौडा। दफ्तर म "उचा मजदूर" अखबार मज पर पडा था। उसम सचेनोव डाक्टरी सस्थान की ओर स प्रोफसर, डाक्टर पोलूनिन क असमय निधन पर शोक और दिवगत के परिवार के साथ सहानुभूति प्रकट की गयी थी। काले हाशिय म पोलूनिन का जीवन-सार और चित्र छपा हुआ था जो पोलूनिन स बहुत कम मिलता जुलता था।

हे भगवान ये नीरस ऊब भरी और मोटी भाटी पक्तिया पोलनिन के व्यक्तित्व क कितनी अधिक अनुरूप नहीं थी! जीवन-सार ने उन्हे कसा दफ्तरी कमचारी सा बना दिया था। अपने बारे म यह आडम्बर पूर्ण, बरग और बेहूदा बकवास पढकर पोलनिन क्या कहते! फिर 'सवदनशीलता' स्नेहशीलता और 'अविस्मरणीय व्यक्तित्व' जैस नारी सुलभ शब्दो का प्रयोग करन की क्या आवश्यकता थी। पोलनिन खुद यही कहा करत थे—'मुझे नारी-सुलभ भावुकता स बचाइय और अपन आलोचको स मैं स्वय ही निपट लूगा '

नहीं रह ' वालोद्या न बोगोस्लोव्स्की स भट होन पर कापत हुए होठो स कहा। 'पोलूनिन नहीं रह '

"मुझे मालम है बोगोस्लोव्स्की ने उत्तर दिया। 'आज के अखबार म पढ चुका हू।

बोगोस्लोव्स्की न अपन बडे स हाथ की मुट्ठी बाधत और दुख तथा खीझ स परशान होत हुए कहा—

"हिमाकत, सरासर हिमाक्त! उसे यह जुर्रत ही कैसे हुई, उसे यह हक ही किसने दिया था कि वह ऐसे जान-बूझकर और खुल्लमखुल्ला अपनी सेहत के प्रति लापरवाही बरते, उस पर थूके! मैंने उससे कहा—'दोस्त, अब यह बेवकूफी भरा खेल खत्म करो, तुम अपना यह क्या हाल कर रहे हो? लगातार सिगरेट पीना, सकील भोजन, समोसे-कचौडिया, रात-रात भर मेज पर बैठे काम करते रहना, काफी, वोद्का, चाय' आप तो यह नही जानते कि वह अपनी छुट्टिया कैसे बिताता था। जहाज द्वारा 'बडे जलवाह' तक उचा नदी म जाता, वहा नाव खरीदकर अकेला ही चल देता। जरा कल्पना कीजिये तो? अकेला ही! एक बार मैंने तट से उसे नाव म जाते देखा। यकीन मानियेगा, मेरे रोगटे खडे हो गये। इसके बाद अलाव, मछली का शोरबा, तम्बाकू, निरन्तर चिन्तन, निरन्तर अन्वेषण, दिमागी तनाव, खुद अपने प्रति निर्दयता, अपने से अत्यधिक माग, स्थायी गतिशीलता, घडी भर का भी मानसिक चैन नही। ऐसा प्रतीत हो सकता है कि आदमी को और क्या चाहिये? डाक्टर, प्रोफेसर, राजधानी म काम करने के लिये बुलाया गया, मगर उसने मजाक उडाते हुए कहा—'कहा का प्रोफेसर हू मैं, मैं कौआ हू, प्रोफेसर नही! अरे भाई, हर आदमी के मूल्य की कसौटी है—उसका अहकार निकालकर वास्तविक सृजन-कार्य। बडा आया मैं प्रोफेसर कही का! विज्ञान के इतिहास म क्या ऐसे लोगो के कम नाम है, जिन्हे उनके जीवन काल मे अधकचरा माना गया और जो कभी प्रोफेसर नही बन सके, किन्तु उनकी मौत के बाद सकडो प्रोफेसर उन्ही के विचारो का, सो भी भद्दे ढग से, प्रचार करके मौज उडाते हैं! तुम मुझे प्रोफेसर कहते हो!'"

बोगोस्लाव्स्की चुप हो गये और फिर विचारो म डूबे-खोये-से कहने लगे—

'छ बरस पहले हमने उसकी स्वर्णजयन्ती मनाने का इरादा बनाया। हे भगवान, कैसा हगामा मचाया था उसने! बस, मामला जहा का तहा ही ठप्प हो गया। 'यह बडी घटिया बात है,' वह बोला, 'कि आदमी आरामकुर्सी म बैठ जाये और अपने बारे म अन्त्येष्टि भाषण सुने। लोग मेरी रचनाओ का उल्लेख करेंगे, जिनमे से तीन-चौथाई निरी बकवास है। तब आप चाहेगे कि मैं अपने

सम्मानित स्थान से उठ और अपनी गलतियों के बारे में भाषण दूं! मैं गलतियों से बच ही कैसे सकता था, जब पूरा चिकित्साशास्त्र ही मानवीय गलतियों का इतिहास है?' अब ऐसे आदमी के सामने किसी की क्या पेश चल सकती है! इतना ही नहीं, मुझे कालीन पर बिठा दिया और लगा पूछने—'जिन्दगी चाहते हो या मौत?' और अब..."

दोनों कुछ देर चुप रहे। बोगोस्लाव्स्की यातनापूर्ण ढंग से कराहे और फिर बोले—

"उसकी मौत बहुत बड़ी, कभी न पूरी होनेवाली क्षति है। वह तो हर चीज़ में ही निश्छल निष्कपट था। केवल मित्रों के साथ ही नहीं, खुद अपने साथ भी। बहुत बड़ा व्यक्तित्व था उसका, उसकी हर चीज़ में बड़प्पन था, महानता थी, जब कभी मैंने उससे यह बकवास की कि तुम्हें अपनी सेहत की तरफ़ ध्यान देना चाहिये, तो उसने हमेशा यही जवाब दिया—'काल्या, मुझे यह ज्यादा दिलचस्प लगता है'। और अब—आन की आन में दुनिया से चला गया। बस वह ऐसी ही मौत का सपना देखा करता था। बस, घड़ी-पल में ही खेल खत्म हो जाये—न दवाइयां पीनी पड़ें और न डाक्टरों को ही इकट्ठा करना पड़े..."

बोगोस्लाव्स्की की ठोड़ी कांपी और वे पतली-सी आवाज़ में कह उठे—

"शायद उसकी बात सही थी? शायद उसी की तरह जीना ज्यादा दिलचस्प है? उसके लिये शायद यही अधिक उचित था? कुछ ऐसे भी लोग होते हैं, जो सम्भल-सम्भलकर जी नहीं सकते, जो ऐसा चाहते ही नहीं, जिनके लिये ऐसे जीना सम्भव ही नहीं..."

उन्होंने अपनी सस्ती-सी पतली सिगरेट जलाई, खूब जोर से कश लगाया और एक मुट्ठी को दूसरी से टकराते हुए पूछा—

"इनसान किसलिये जीता है?"

वालोद्या ने उदासी भरी हैरानी के साथ बोगोस्लोव्स्की की ओर देखा और सोचा—'ये बुजुर्ग (वालोद्या को अपनी उम्र के हिसाब से बोगोस्लाव्स्की बुजुर्ग ही लगते थे), यह डाक्टर, जो अपने जीवन में अब तक इतना कुछ कर चुके हैं और कर रहे हैं, क्या वे भी अपने से यह प्रश्न पूछते हैं?'

"किसलिये?" वोगोस्लोव्स्की ने मुंझलाकर पूछा। "क्या आपने कभी इस प्रश्न पर विचार नही किया?"

"किया है।"

"सम्भवत रूसी लेखक कोरोलेन्का ने ही यह कहा था कि मनुष्य का सुख-सौभाग्य के लिये जन्म होता है" वोगोस्लोव्स्की कहते गये, "उसी भाति सुख सौभाग्य के लिये जैसे पक्षी का जन्म उडने के लिये होता है। सुन्दर, किन्तु अस्पष्ट शब्द है। इसी सुख-सौभाग्य का भिन्न भिन्न अर्थ लगाया जाता है और लगाया जायगा। मिसाल के तौर पर, पोलूनिन और मास्को मे सुख चैन का जीवन बितानेवाले मेरे उस सहपाठी को ही ले लीजिये, जिसकी सम्भवत मै आपसे चर्चा कर चुका हू। इन दोनो मे से वास्तविक सुख की अनुभूति किसे हुई है? हमेशा और हर चीज मे जोखिम उठानेवाले पोलूनिन को या ताश खेलनेवाले उस प्रोफेसर को? प्रचलित धारणाओ से इन्कार और उन्हे खण्ड-खण्ड करनेवाले पोलूनिन को अथवा खुद अपने सिवा और किसी के भी काम न आनेवाले शोधप्रबन्ध के लेखक उस प्रोफेसर को? कहा है असली सुख—ताश की बाजियो मे या उस नाव मे, जिसे पोलूनिन चलाता था और जो पानी की तेज धाराओ के थपेडे सहती थी? पोलूनिन की जोखिम भरी प्रस्थापनाओ मे या उन घिसे पिटे सूत्रो को दोहराने मे, जिनसे न किसी का कोई लाभ होता है, न कोई हानि। पोलूनिन की भाति दुखद विवशता की अनुभूति और उसके विरुद्ध विद्रोह करने के प्रयास मे या इस विवशता के सामने सिर झुका देने मे, सो भी ऐसे कि अपने दिमाग का जरा भी फालतू तकलीफ न देनी पडे? लोगो मे कहा जाता है और ठीक ही कहा जाता है—'जिन्दा, मगर मुर्दे से भी गया-बीता।' क्या यह सोलह आने सही नही है? मजबूत दिलवाले तो प्राचीन रोम के जमाने मे भी यह कहा करते थे कि जिन्दा रहने के लिये ही जिन्दगी का उद्देश्य खो देने से बढकर कोई दुर्भाग्य नही हो सकता। इसका क्या अर्थ है? सम्भवत सागर-किनारे गर्म बालू पर लेटकर लहरो का गान सुनते हुए भी सच्ची और गहरी मानसिक खुशी अनुभव की जा सकती है? पर पूछ ऊपर उठाकर हरे भरे चरागाह मे कुलाचे भरनेवाला बछडा भी क्या ऐसी ही खुशी अनुभव नही करता? किन्तु दोनो ही स्थितियो मे यह केवल जिन्दा

रहने की खुशी है और अधिकतर लोग इसी को वास्तविक सुख मानते हैं। तो सवाल पैदा होता है कि लोग प्रकृति के स्वामी कैसे हैं? अनेक सदियों से नारी और पुरुष के प्रेम की कबूतर-कबूतरी के प्रेम से तुलना की जाती है–गुटुर-गूं करता हुआ, चूमता हुआ कबूतरों का जोड़ा तथा इसी प्रकार की बकवास को ऊंची कवित्वपूर्ण शैली में बयान किया जाता है। किन्तु मैं कबूतर के रूप में अपनी कल्पना नहीं करना चाहता। मैं इसकी चर्चा नहीं करूंगा कि मेरी उम्र के आदमी के लिये यह हास्यास्पद है बल्कि सर्वथा मूर्खतापूर्ण भी है। पालनिन के ढंग के आदमी कबूतरों के सुख को बर्दाश्त ही नहीं कर सकते। अगर तुम इन्सान हो तो तुम्हारे लिये सागर तट का शारीरिक सुख, कबूतर का चैन पर्याप्त नहीं हो सकता (फिर यह भी ध्यान में रखिये कि सभी कबूतर भिखमंगे और टुकड़खोर होते हैं और न जाने किस कारणवश लोगों के लिये यह मर्मस्पर्शी होता है)–असली इन्सान के लिये यह सब कुछ काफी नहीं, वह निरन्तर आगे बढ़ना, संघर्ष करना चाहता है, अनजाने ज्ञान-क्षेत्रों में प्रवेश करना चाहता है, यह अनुभव करना चाहता है कि तुम केवल अपने और अपने परिवार के लिये ही उपयोगी नहीं हो (समाज की दृष्टि से यह काफी नहीं), बल्कि यह कि तुम साझे लक्ष्य में अपना योग दे रहे हो, साझे निर्माण में भाग ले रहे हो ..."

"मतलब यह कि संघर्ष में ही सुख है?"

"संघर्ष में?" बोगोस्लोव्स्की ने घड़ी भर सोचा। "हां, मेरे ख्याल में ऐसा ही है। अगर हमारा अभिप्राय सही अर्थ में 'मानव' शब्द से है, अगर हम उपभोक्ता मानव की नहीं, बल्कि प्रेरक मानव की चर्चा कर रहे हैं, तो जाहिर है कि संघर्ष ही सुख है ... पर खैर, आइये चलें, आपरेशन करने का समय हो गया ..."

सारी शाम वोलोद्या पोलीक्लीनिक और रोगियों को दाखिल करने के विभाग में काम करता रहा। वह चाहे जो कुछ भी करता था, एक विचार उसके दिल-दिमाग में लगातार चक्कर काटता रहा–"पालनिन नहीं रहे! नहीं रहे और अब कभी नहीं होंगे! अब कभी वे अपनी जोरदार भारी आवाज में ठहाका नहीं लगायेंगे, लम्बे-लम्बे और दृढ़ क़दम रखते कभी व्याख्यान-कक्ष में नहीं आयेंगे, अपने बड़े

ग्रौर चित्तियोवाले माथ पर कभी गुस्से से बल नही डालेगे। पाल्निन नही रहे।"

"एक ग्रौर भी कमाल की बात है," रागिया को दाखिल करने के विभाग म झाकते हुए बोगोस्लोव्स्की ने कहा। "पोलूनिन जस लोगो के बारे म एक ग्रौर भी कमाल की बात यह है कि उन्ह नाम की भख नही हाती। उन्ह किसी चीज़ का अफसोस नही होता, कही पर भी अपने नाम की मुहर या ठप्पा नही लगाते। कोई नया रोग लक्षण देखत ही वे गला फाडकर चिल्लाने नही लगते–'देखिये, यह पालूनिन का लक्षण है।' वे ऐसी चीज़ो की रत्ती भर परवाह नही करते, उदार होते है ग्रौर उनक पास अपना बहुत कुछ होता है। किन्तु ऐसे लागा के बाद विज्ञान के क्षेत्र म अवश्य कोई बडा परिवतन हो जाता है, सो भी एकबारगी ग्रौर झटके के साथ। यह बहुत दिलचस्प बात है न, ब्लादीमिर अफानास्येविच?"

केवल रात का ही वोलोद्या न वार्या का पत्र अन्त तक पढा ग्रौर उसे अपनी वार्या के बारे मे अनेक बार ग्राश्चय हुआ। वह हमेशा ग्रौर हर चीज़ कितनी अच्छी तरह समझती है। पोलूनिन के मातमी जुलूस के बारे म एक भी फालतू शब्द ग्रौर किसी तरह की अनावश्यक बात उसन नही लिखी थी, किसी तरह की भावुकता से काम नही लिया था। उसने "वोलाद्या की ग्रोर स" शव पर गुलदस्ता रखा था। "इसके सिवा मैं ग्रौर कर ही क्या सकती थी?" वार्या न पूछा था। "ज़ाहिर है कि तुम्हारे गुलदस्ते पर मैन तुम्हार नाम का फीता नही बाधा था ग्रौर जब उसे शव पर रखा, तो यह फुसफुमा दिया – 'यह आपके शिष्य बोलोद्या उस्तिमेन्का की ग्रार स है।' ज़ाहिर है कि मैंने बहुत ही धीरे स य शब्द कहे ग्रौर किसी न भी नही सुन।"

वोलाद्या का काम हर दिन बढता गया। उसकी सचेत ग्रौर फली फली जिज्ञासु ग्राखे, काम करन की तत्परता, डाक्टरा से प्रश्न करन के सिलसिल मे उसकी आदरपूण निश्छलता, दिखाव के लिय नहा, बल्कि वास्तव म ही नम्रतापूवक उपयागी होन की इच्छा, ज्ञान प्राप्ति ग्रौर ज्ञान-सचय की तीव्र पिपासा जिसकी ग्रार सभी का ध्यान जाना था–इन सभी चीज़ा स वह मानवीय ग्रौर भावनात्मक धरातल पर

सभी के लिय अनिवाय हो गया। और तो और आपरेशन-कक्ष की वह कठोर नस भी अक्सर वालोद्या को अपने पास बुलाती ताकि उसे उस चुस्ती फुर्ती की शिक्षा दे दे, जिससे वह अपना बहुत ही जटिल और उत्तरदायित्वपूण काय पूरा करती थी।

"यह देखिय, यह औज़ारो का एक सेट है," उन्हें समझाते हुए वह कहती, "इन्हें मैं कीटाणुमुक्तक घोल म डाल देती हू। अब इस बात की ओर ध्यान दीजिये कि ज़रा भी वक्त बरबाद किय बिना मैं अपने हाथ धोने लगती हू ताकि 'ऑपरेशन के समय औज़ार देने' को तैयार हो जाऊ। हर चीज़ को बहुत ध्यान स देखिय, कुछ भी नजर से न चूकने दीजिये। जल्दी वह समय आयेगा, जब आपको अपनी नर्सों को सधाना होगा। मुह नही बनाइये, मैं बिल्कुल ठीक कह रही हू—सधाना होगा। अब आगे देखिये। मैंने कीटाणुमुक्त किया हुआ लबादा पहना और इसी बीच छोटी नस ने कीटाणुमुक्तक घोल से औज़ार निकालकर बाहर रख दिये और मैंने उन्हें तौलिये स ढक दिया। सेट को औज़ारोवाली मेज़ के बायी ओर रखा गया है। हर चीज़ को बहुत ध्यान से देखिये, समय की बचत करना सीखिये, आपके सामने बहुत ही उच्च कोटि की नस खडी है, ऐसी नस, जो बोगोस्लोव्स्की जसे सजन के साथ काम करन के बिल्कुल उपयुक्त है"

वोलोद्या मुर्दो की चीर फाड के समय तो अवश्य ही उपस्थित रहता। नीना सेर्गेयेव्ना के साथ वह ओपोल्ये और बोल्शोये ग्रीदनेवो गाव म बीमारो को देखने गया। उसन उग्र अपेंडिसाइटिस, गुर्दे में दद, छोटी माता और एथेरोमा रोग का सही निदान किया। दो रोगियो का उसने खुद ही इलाज किया और इसके लिये डाक्टर विनोग्रादोव न वार्डों का चक्कर लगाते समय उसकी प्रशसा की और बोगोस्लोव्स्की ने "हुम" कहा। राम्का चुखनीन के कान के पास उसने खुद मस्सा काटा बेशक बोगोस्लोव्स्की की देख-रेख म। इसका नतीजा यह हुआ कि पाच नम्बर के वाड म चिकित्साशास्त्र का "विशेषज्ञ" अब वोलोद्या की लल्लो चप्पो करन लगा। वोलोद्या न कई छोटे मोटे आपरेशन और भी किय। बोगोस्लोव्स्की के कडाई से मना कर दन के बावजूद अस्पताल के सभी लोग उसे "हमारा वोलोद्या', 'प्यारा वोलोद्या' या 'डाक्टर वोलोद्या" कहत। इसी आन पर भी वोलोद्या धीर-गम्भीर

रहता, भूले भटके ही मुस्कराता और रुखाई से बातचीत करता। कभी-कभी बिल्कुल अप्रत्याशित ही कह उठता—

"मै आपसे अनुरोध करता हू "

"अनुरोध करता हू", ऐसा न कहकर उसे तो कडाई से आदेश देने चाहिये थे। जिस आदमी को वह आदेश देता था, उसकी ओर मुडकर देखना भी गलत होता था। किन्तु वोलोद्या ऐसा करता और कष्ट देने के लिए क्षमा मागता।

कभी कभी अटपटी बाते भी हुई। एक औरत की स्तन-सूजन का वोलोद्या ने इलाज किया। एक दिन अस्पताल के दरवाज़े के पास साफ-सुथरी और नयी टोकरी वोलोद्या की ओर बढाते हुए वह बोली—

"प्यारे वोलोद्या, मैं यह ताज़ा शहद तुम्हारे लिये लाई हू। खूब मज़े से खाना। बहुत अच्छा इलाज किया है तुमने मेरा, धन्यवाद, बेटा। इस टोकरी मे कुछ हरे खीरे, टमाटर और मीठे शलजम भी है।"

"किसके लिये?" टोकरी को हाथ म लिये और बात न समझते हुए वोलोद्या ने पूछा।

'तुम्हारे लिये, तुम्हारे लिये, ब्लादीमिर अफानास्यविच तुम्हे धन्यवाद देने के लिये लाई हू।'

"आप क्या पागल हो गयी हैं, अन्तोनोवा?" गुस्से से लाल-पीला होते हुए वोलोद्या ने पूछा।

औरत ने हाथ झटककर बात खत्म की और पोलीक्लीनिक के पास खडी हुई अपनी घोडागाडी की तरफ तेज़ी से बढ गयी। वोलोद्या कुछ देर तक जहा का तहा खडा रहा और फिर अपने टूटे जूतो को धपधपाता हुआ अन्तोनोवा के पीछे-पीछे भागा।

"आपकी यह हिम्मत कैसे हुई?" घोडागाडी के पास भागता हुआ वह चिल्लाया। "म यह बरदाश्त नही करूगा, आप पर मुकदमा चलाउगा "

बाद म उसे अपनी इस मूर्खतापूर्ण चीख चिल्लाहट और धमकियो पर अफसोस होता रहा और अन्तोनोवा का डरा-सहमा हुआ चेहरा याद करके शर्म आती रही। फिर एक घटना और हो गयी। घाट

पर अस्पताल के स्टोर की निगरानी करनेवाले टेढ़े मुह के मक्कार चौकीदार ने जिसका उपनाम 'बकरा दोहक' था, एक दिन बोलाया से चोरी चोरी छ रूबल मागे।

क्या करोगे रूबलो का?" बोलाया ने पूछा।

आज कौन-सा दिन है?' 'बकरा दोहक' ने प्रत्युत्तर मे पूछा।

दिन – शुक्र।"

'किस सन्त का दिन है यह, मैं तुमसे पूछता हू, हमारे प्यारे डाक्टर?'

बोलाया को सन्त के बारे मे कुछ मालूम नही था बात करने की उसे फुरसत नही थी और इसलिये 'बकरा दोहक' को रूबल मिल गये। शाम को वह शैतान नशे मे धुत्त दिखाई दिया। बोगोस्लोव्स्की ने मामले की बडी जाच-पडताल की और बोलाया अपराधी ठहराया गया। बकरा दोहक ने कसम खाकर कहा कि अपना नाम दिवस मनाने के लिये उसने डाक्टर उस्तिमेको से रूबल लिये थे। बोलाया को डाट डपट सहनी पडी।

'तुम मुझे माफ कर दो," कुछ देर बाद 'बकरा दोहक' ने उससे कहा। 'बडे डाक्टर छुरी लेकर गले पर सवार हो गये – नाम बताओ नाम बताओ। जैसा अन्दर से वैसा ही बाहर से – मैं इस ढग का आदमी हू। बडे डाक्टर को खुश करने के लिये तुम्हारा नाम ले लिया '

बोगोस्लोव्स्की पालीक्लीनिक मे, वार्डों का चक्कर लगाते और मरहम-पट्टी के कक्ष मे भी बोलाया को कुछ न कुछ शिक्षा देते रहते –

"जर्मन सर्जन बीर ने अपने जमाने मे बडे रूखे ढग से, किन्तु बिल्कुल सही कहा था – 'अक्सर आपरेशन करने से डाक्टर मन्दबुद्धि हो जाते है। शुरू मे यह सोचना चाहिये कि इस आदमी का इलाज कैसे किया जाये न कि यह कि कौन सा आपरेशन करना ठीक होगा। सर्वथा अनिवार्य होने पर ही आपरेशन करना चाहिये।'

फिर एक दिन बोगोस्लोव्स्की ने कहा –

"सुनिये तो, आप रोगियो से यह सलाह मशविरा क्या करते रहते है? यह समझ लीजिये कि बीमार आदमी कमजोर, परेशान और दर्द-तकलीफ से थका हुआ होता है। उसे निर्देशित करने की जरूरत

होती है और आप मानो हाउस आफ लाड्स का वातावरण वना वैठते है।"

वोगोस्लोव्स्की ने एक दिन दखा कि गर्मी और उमस से बुरी तरह परेशान वोलोद्या पोलीक्लीनिक म कुर्सी पर पसरा हुआ है। वोगोस्लोव्स्की आपे स बाहर हो गये—

"वीमार हो गये क्या?"

"हा, गर्मी भी तो वेहद है

"गर्मी?" वोगोस्लोव्स्की ने झल्लाकर कहा और उनका सावला चेहरा गुस्से से लाल हो उठा। "अगर इतन ही परेशान हो गये है, तो घर जाइये। डाक्टर को उवला हुआ मास नही, वल्कि उत्साही और मजवूत आदमी होना चाहिये जिसका आदेश मानकर रोगी का खुशी हो। आपको नैतिक रूप स शक्ति पुज दास्तान, किस्से-कहानिया का देव होना चाहिये, ढीली ढाली जेली नही। रोगी का अपन अच्छे डाक्टर के लिय ही स्वस्थ हाने की कोशिश करनी चाहिय। आपको केवल अपने नश्तर और दूसरे इलाजो से ही नही, वल्कि अपन व्यक्तित्व क प्रभाव से भी काम लेना चाहिये। घर जाइये और ढग का आदमी वनकर आइय।"

"मैं काई दास्तानी करिश्मा नही बन सकता!" वोलाद्या न उदास हाते हुए उत्तर दिया। "म तो उस्तिमे को हू।"

"जाकर उचा नदी म नहाइये और वापिस आ जाइये! समझ गये?"

"समझ गया!" वोलोद्या विल्कुल नाराज हा गया।

अगले दिन वागोस्लाव्स्की ने पूछा—

"आपने कभी वाइवल पढी है?"

"नही!" मुह फुलाये हुए वोलाद्या ने उत्तर दिया।

"मैं तो चूकि पादरी का वेटा हू, इसलिय जाहिर है कि मैंने उस पढा है। वहा आपके वारे म लिखा हुआ है।"

"मेरे वारे म?" वोलाद्या न हैरान हाते हुए पूछा।

"सन्त लूकावाले भाग म कहा गया है—'अगर सभी लाग आपकी प्रशसा करते है, तो यह आपका दुर्भाग्य है।' समझ गये? यह भी याद रखिय कि मेरे लिये आपके पास खडे रहकर देखन की तुलना म आपरेशन करना कही अधिक आसान है। मरी टीका टिप्पणिया स

पर अस्पताल के स्टोर की निगरानी करनेवाले टेढे मुह के मक्कार चौकीदार ने, जिसका उपनाम 'बकरा दोहक' था, एक दिन वोलोद्या से चोरी चोरी छ रूबल मागे।

"क्या करोगे रूबलो का?" वोलोद्या ने पूछा।

"आज कौन सा दिन है?" 'बकरा दोहक' न प्रत्युत्तर म पूछा।

"दिन – शुक्र।"

"किस सन्त का दिन है यह, मे तुमसे पूछता हू, हमारे प्यारे डाक्टर?"

वोलोद्या को सत के बारे मे कुछ मालम नही था, बात करने की उसे फुरसत नही थी और इसलिये 'बकरा दोहक' को रूबल मिल गये। शाम को वह शैतान नशे मे धुत्त दिखाई दिया। बोगोस्लोव्स्की न मामले की कडी जाच पडताल की और वोलोद्या अपराधी ठहराया गया। 'बकरा दोहक' ने कसम खाकर कहा कि अपना नाम दिवस मनाने के लिये उसने डाक्टर उस्तिमेन्को से रूबल लिय थे। वोलोद्या को डाट डपट सहनी पडी।

'तुम मुझे माफ कर दो," कुछ देर बाद 'बकरा दोहक' न उससे कहा। "बडे डाक्टर छुरी लकर गले पर सवार हो गये – नाम बताओ, नाम बताओ। जसा अन्दर से वैसा ही बाहर स – मैं इस ढग का आदमी हू। बडे डाक्टर का खुश करने के लिये तुम्हारा नाम ले दिया "

बोगोस्लोव्स्की पालीक्लीनिक म, वार्डों का चक्कर लगाते और मरहम-पट्टी के कक्ष म भी वोलोद्या को कुछ न कुछ शिक्षा देते रहते –

'जमन सजन बीर न अपन जमान म बडे रूख ढग स, किन्तु बिल्कुल सही कहा था – 'अक्सर आपरेशन करन स डाक्टर मन्दबुद्धि हो जात है। शुरू म यह सोचना चाहिये कि इस आदमी का इलाज कसे किया जाय न कि यह कि कौन-सा ऑपरेशन करना ठीक होगा। सवथा अनिवाय होन पर ही आपरेशन करना चाहिये।

फिर एक दिन बोगोस्लोव्स्की न कहा –

सुनिये तो, आप रोगियो स यह सलाह-मशविरा क्या करते रहते है? यह समझ लीजिये कि बीमार आदमी कमजोर, परेशान और दद-तकलीफ़ स थका हुआ होता है। उसे निर्देशित करने की जरूरत

होती है और आप मानो हाउस आफ लाड्‌स का वातावरण वना वठते है।"

वोगास्लोव्स्की ने एक दिन दखा कि गर्मी और उमस स बुरी तरह परेशान वोलाद्या पोलीक्लीनिक मे कुर्सी पर पसरा हुआ है। वोगास्लोव्स्की आप से वाहर हो गय—

"वीमार हो गये क्या?"

"हा, गर्मी भी ता वेहद है "

"गर्मी?" वोगोस्लाव्स्की ने झल्लाकर कहा और उनका सावला चेहरा गुस्से स लाल हो उठा। "अगर इतन ही परेशान हा गये हे, तो घर जाइय। डाक्टर को उवला हुआ मास नही, वल्कि उत्साही और मजबूत आदमी होना चाहिय, जिसका आदेश मानकर रोगी का खुशी हो। आपको नैतिक रूप से शक्ति पुज, दास्तान, क़िस्से-कहानिया का दव होना चाहिय, ढीली-ढाली जेली नही। रागी को अपने अच्छे डाक्टर के लिय ही स्वस्थ हाने की कोशिश करनी चाहिय। आपको केवल अपन नश्तर और दूसरे इलाजो से ही नही वल्कि अपने व्यक्तित्व के प्रभाव से भी काम लेना चाहिय। घर जाइये और ढग का आदमी वनकर आइये।"

"मैं काई दास्तानी करिश्मा नही वन सकता!" वोलाद्या न उदास हाते हुए उत्तर दिया। "मैं तो उस्तिमेको हू।"

"जाकर उचा नदी मे नहाइये और वापिस आ जाइय! समझ गय?"

"समझ गया!" वालोद्या बिल्कुल नाराज़ हा गया।

अगले दिन वोगोस्लोव्स्की ने पूछा—

"आपने कभी वाइवल पढी है?"

"नही!" मुह फुलाये हुए वोलोद्या ने उत्तर दिया।

"मै ता चूकि पादरी का वेटा हू, इसलिय ज़ाहिर है कि मैने उस पढा है। वहा आपके वारे म लिखा हुआ है।"

"मेरे बार म?" वोलोद्या न हैरान होत हुए पूछा।

"सन्त लूकावाले भाग म कहा गया है—'अगर सभी लाग आपकी प्रशसा करते है, तो यह आपका दुर्भाग्य है।' समझ गये? यह भी याद रखिये कि मेरे लिये आपके पास खडे रहकर देखने की तुलना म आपरेशन करना कही अधिक आसान है। मेरी टीका टिप्पणियो से

भी मत बिगडिये, क्याकि ऐसा न करना कही अधिक आसान और सरल काम है। इसलिय अब आपका अपनी कलवाला इस घोषणा पर शम आनी चाहिय कि आप दास्तानी करिश्मा नहा, उस्तिम को है। मै चाहता हू कि आप कभी दास्तानी करिश्मा ही बने।"

वोगोस्लोव्स्की चले गये। वोलोद्या ने ताज़ादम करनवाले खनिज जल के दो गिलास पिय और सोचने लगा—"यह मैंने क्या गडबड घुटाला कर डाला है। हद ही हो गयी! वार्या से इसकी चर्चा नही की जा सकती। पर, हा, दास्तानवाली बात बतायी जा सकती है!"

राता को वालाद्या अक्सर विनोग्रादाव के साथ ड्यूटी पर रहता। बूढा डाक्टर बारह बजे के करीब ड्यूटी रूम म सोफे पर अपना बिस्तर लगाता, फव्वारा स्नान करता और इत्मीनान से हाय-वाय करता हुआ लेट जाता। वालोद्या ही वार्डों का चक्कर लगाता, यह देखता कि ड्यूटीवाली नर्सें और परिचारिकाए सो ता नही गयी, कि बीमार आधी रात के समय बरामदे मे शतरज तो नही खेलते, कि वे बात करके दूसरो की नीद तो हराम नही करते। रात को वह विनाग्रादाव को दो-तीन बार तो अवश्य ही जगाता—

"साञ्चेको खास रहा है।"

"क्या?" विनोग्रादोव ने झुझलाकर पूछा।

"तीसरे वाड का साञ्चेको खास रहा है। उसका हाल ही म आपरेशन हुआ है मुझे डर है कि कही "

विनोग्रादोव न जम्हाइया लेते और हाय-वाय करते हुए चुपचाप कपडे पहन और तीसरे वाड म गया। साञ्चेको अब तक खासना बद कर चुका था। विनोग्रादाव बरामदे म निश्चल खडा हो गया, उसने भयानक-सी सूरत बना ली और कान लगाकर कुछ सुनने लगा।

"क्या बात है?" वालोद्या ने चक्कर मे पडते हुए पूछा।

"मैं सुनने की काशिश कर रहा हू।"

"क्या कास्तान्तीन इवानाविच?'

"काई छीका ता नही!'

वालाद्या के हाठा पर फीकी और दयनीय सी हसी आ गयी।

"अगर कोई छीके, तो आप मुझे जगा दीजियेगा," विनाग्रादोव ने अपने कमरे में लौटते हुए कहा। "तब मैं आकर उसकी नाक साफ कर दूंगा! ऐसा करना तो बहुत जरूरी है न?"

"ही-ही!" वोलोद्या बनावटी ढंग से हंसा और इस बेवकूफी भरी हंसी के लिये स्वयं ही अपनी भर्त्सना की। पर वह अपनी आत्मा की आवाज़ का क्या करता!

रात की चौथी ड्यूटी पर विनोग्रादोव ने वोलोद्या को उसे जगाने से मना कर दिया। प्रौढ़ा, बड़ी सी नाकवाली और गुमसुम नर्स आगेलीना मादेस्तोव्ना की सहमति होने पर ही वह उसे जगा सकता था।

"मैं ठहरा बूढ़ा आदमी, मेरे लिये सोना तो सबसे महत्त्वपूर्ण चीज़ है," विनोग्रादोव ने कहा। "क्षमा कीजियेगा, पर मैंने पिछली रात गिनती की कि ग्यारह बार तो आपने मुझे बेकार ही जगाया था।"

"पर, अगर " वोलोद्या ने कहना शुरू किया।

"भाड़ में जाइये आप!" विनोग्रादोव ने प्यार से झिड़कते हुए कहा। "मैं शीघ्र ही साठ का हो जाऊंगा। आप इसका अर्थ समझते हैं न?"

वह मन ही मन कुछ बुड़बुड़ाता और मुस्कराता हुआ मज़े से सोने की तैयारी करने लगा—ऐसा था वह घाघ और समझदार बूढ़ा भालू। लेट जाने के बाद उसने मज़े से लम्बी जम्हाई ली और बोला—

"मैं जानता हूं कि इस समय आप क्या सोच रहे हैं, सम्भवतः मेरी भर्त्सना कर रहे हैं। नौजवान, मैं आपको ऐसा न करने की सलाह देता हूं। हम पुराने-बूढ़े डाक्टर बुरे लोग नहीं हैं, मूलतः ईमानदार और ढंग के आदमी हैं तथा बहुत कुछ देख अनुभव कर चुके हैं। बहुत कुछ "

वोलोद्या चुपचाप सुनता रहा।

"ज़ारशाही के ज़माने में, जिसका सौभाग्य से आपको अनुभव नहीं हुआ हम सभी को बहुत कठिन दिनों का सामना करना पड़ा, खासकर नये विचारों और भावोंवाले युवाजन को। ज़ाहिर है कि अपनी बग्घियोंवाले और पैसे के फेर में पड़े हुए फ़ैशनदार डाक्टरों की मैं इनमें गिनती नहीं करता। मेरे प्यारे दोस्त, मैं क्रान्ति होने के पहले दस वर्ष तक देहाती डाक्टर का काम कर चुका था और मुझे आटे-

दाल का भाव मालूम हो चुका था। सम्भवत आप मुझे देखकर सोचते होगे कि कास्तान्तीन इवानोविच स्वार्थी है, अपनी चिन्ता करता है, अपने स्वास्थ्य को बनाये रखना चाहता है। हा, अब जब बुढ़ापा दरवाज़े पर दस्तक दे रहा है, तो अपनी चिन्ता करने मे भी क्या बुराई है। कुछ दिन और सास लेना चाहता हू, और जीना चाहता हू—वैसे ही, जैसे अब जी रहा हू—मेरी इज्ज़त की जाती है, मेरी राय को महत्त्व दिया जाता है और अपने इलाके मे मैं कोई गया-बीता आदमी नही हू। वैसे अगर देखा जाये, तो मैं इसके योग्य हू। काफी मेहनत कर चुका हू और सभी यह जानते है कि मै हराम की रोटी नही खाता हू। मेरे प्यारे नौजवान, पहले ज़माने मे हमारी नौकरी काफी खतरनाक होती थी। सड़सठ प्रतिशत देहाती डाक्टर छूत की बीमारियो से मरते थे। सड़सठ प्रतिशत! हैं न बढिया आकड़े? हम यह सब कुछ जानते हुए कि हमारे साथ क्या बीतेगी गावो और वीरानो मे जाते और अपनी ज़रा भी परवाह किये बिना काम करते। फिर वीरान भी ऐसे होते थे कि अब तो कही नज़र ही नही आयेगे, अब तो उनका अस्तित्व ही नही रहा। और काम की स्थितिया? प्रोफ़ेसर सिकोरस्की ने हिसाब लगाया है कि दस प्रतिशत से अधिक देहाती डाक्टर आत्महत्या करते है। तो नतीजा क्या निकलता है? एक सौ मे से सड़सठ डाक्टर रोगियो की छूत लगने से मरते थे और दस आत्महत्या कर लेते थे। तो जनाब, यह थी तस्वीर रूसी जीवन की। बहुत ही नम शब्दो मे यदि व्यक्त किया जाये, तो हम इसे ऊबानेवाली तस्वीर कह सकते है। तो मेरे प्यारे नौजवान, मैं बहुत थक गया हू और सम्भव होने पर सो लेना चाहता हू। मुझे कड़ी कसौटी पर नही परखिये!'

'मैं परख ही नही रहा हू।'

'आप झूठ बोलते हैं, परख रहे हैं! पर नौजवान तो ऐसा करते ही है—सभी को परखना सभी की भर्त्सना करना। किन्तु हम उस तरह के बूढे नही है। हमने अपना जीवन इस तरह बिताया है कि आपके सामने किसी तरह की कोई खास सफ़ाई देने की ज़रूरत नही समझते। समझे, हुज़ूर? तो अब आप इत्मीनान से तशरीफ़ ले जा सकते हैं।'

वोलोद्या धीरे धीरे कमरे से बाहर निकला और चक्करदार सीढ़ियां चढ़कर "हवाई जहाज़" की सपाट छत पर बने सौर-चिकित्सागृह में बेंच पर जा बैठा। बहुत दूर, असीम दूरी पर, बिल्कुल काले आकाश में सितारे प्यारा और हृदय को स्पंदित करनेवाला प्रकाश फैला रहे थे। हो सकता है कि स्पेन में पिता जी, नगर में वार्या, कहीं किसी गांव के होटल में टिकी हुई बूआ अग्लाया, गानिचेव और पीच तथा अपने जहाज़ के मंच से रोदिग्रान मेफादियेविच भी इन सितारों को देख रहे हों।

घुटने को कसकर बांहों से थामे और सितारों पर नज़र टिकाये हुए वह गर्मी की इस शान्त रात में देर तक ऐसे ही अकेला बैठा रहा। उसका दिल चैन से और सधी गति से धड़क रहा था, मस्तिष्क बिल्कुल साफ़ था, विचार सुलझे हुए, गम्भीर और सुखद थे। "लोग – सचमुच ही बहुत कमाल के हैं," वोलोद्या ने सोचा। "इससे क्या फ़र्क पड़ता है कि यव्गेनी स्तेपानोव गधा है। दादिक और वालन्तीना आंद्रेयेव्ना की तरफ़ ध्यान देने की ज़रूरत नहीं। ये थोड़े ही लोग हैं। लोग – दूसरे ही हैं। लोग हैं – बोग्रिशेव और विनोग्रादोव, बोगोस्लोव्स्की और उनकी पत्नी, चाचा पेत्या और साहसी भेदिया, पिता जी और वार्या, गानिचेव और दिवंगत पालूनिन। अपने को दूसरों के लिये अनिवार्य और आवश्यक, ऐसा बनाना चाहिये कि लोगों का, भले लोगों का आपके बिना काम ही न चल सके। बाकी सब तो बेकार की बात है!"

यहीं, ऊपर ही उसे फाटक की घंटी सुनाई दी – कोई रोगी लाया गया था। सम्भवतः फ़ौरी आपरेशन करना होगा। ड्यूटी रूम की बत्ती जल गई – इसका मतलब था कि नर्स आगेलीना मोदेस्तोव्ना ने विनोग्रादोव को जगा दिया था। इसी समय आपरेशन हाल की बड़ी वर्गाकार खिड़कियां जगमगा उठीं।

"बड़ा मुश्किल केस है!" विनोग्रादोव ने हाथ धोते हुए कहा।

रोगी के बचने की बिल्कुल कोई आशा न होते हुए भी विनोग्रादोव ने उसकी जान बचाने का संघर्ष शुरू कर दिया। इन दो घण्टों के दौरान उन्होंने क्या कुछ नहीं किया! विनोग्रादोव का लबादा पसीने से तर हो गया, नर्स आगेलीना मोदेस्तोव्ना ने दो बार औज़ारों को

कीटाणुमुक्त किया। नकाब के नीचे वालाद्या भी पसीने से भीगा हुआ था। पर इनकी सारी कोशिश बेकार गयी। उन्होंने केवल कुछ देर के लिये उसे मृत्यु सीमा पर रोके रखा, किन्तु मौत विजयी हो गया। ऊंचे माथे शक्तिशाली, किन्तु धीरे धीरे सफेद पडते हुए धड, कसकर भिंचे हुए होंठो और मजबूत हाथोंवाला यह सुन्दर आदमी आपरेशन की मेज पर ही चल बसा।

"खत्म हो गया?" विनोग्रादोव ने पूछा।

"हां," वोलोद्या ने जवाब दिया और मृत का ठण्डा होता हुआ हाथ उसके धड के करीब मेज पर ऐसे रख दिया, मानो वह कोई वस्तु हो।

विनोग्रादोव ने झटके के साथ मुंह से नकाब उतारी।

'बेडा गर्क भला हो ही क्या सकता था" अभी भी हांफते हुए विनोग्रादोव ने कहा। "चार गोलियां मार दी और सो भी ऐसे भाग में। ओह, क्या जानदार आदमी था।'

उसने निश्चल चेहरे पर अफसोस भरी नजर डाली। सान्या ने दिल मजबूत करने की दवाई की कुछ बूंदें गिलास में डालकर डाक्टर को दी। विनोग्रादोव ने उन्हें ऐसे गले से नीचे उतार लिया, मानो वह वोदका पी रहा हो, कुछ हाय वाय की और झुंझलाकर बोला—

"यह हो क्या रहा है? हृष्ट-पुष्ट जवान आदमी पर गोली चला देना, यह भी कोई बात है? वह अभी पचास साल तक और जी सकता था"

"यह सब हुआ कैसे?" ड्यूटी रूम में लौटने पर वोलोद्या ने पूछा।

'वह अपने पति को प्यार नहीं करती थी, उसे इस व्यक्ति से प्रेम था, विनोग्रादोव ने बताया। "किन्तु पति अपनी पत्नी से प्यार करता था और उसने अपने प्रतिद्वन्द्वी की हत्या कर डाली"

विनोग्रादोव ने गहरी सांस ली और खिडकी पूरी तरह खोल दी। वोलोद्या को किसी की दबी घुटी आह-कराह सुनाई दी।

"यह वही है," विनोग्रादोव ने कहा। 'व्लादीमिर अफानास्येविच, जाइये, जाकर उसकी मदद कीजिये। उसका बुरा हाल है।"

वोलोद्या वेच के करीव गया। नर्से आगेलीना मोदेस्तोव्ना और सोन्या भी अपने तौर पर उसे तसल्ली द रही थी।

"हे भगवान, हे भगवान।" वालोद्या को धीमी और दिल को चीरती हुई आवाज़ सुनाई दी। "हे भगवान हे मेरे भगवान, ऐसा क्या? नही, ऐसा क्यो? मुझे जाने दीजिये, अभी उसके पास जाने दीजिये "

"जाने दीजिये।" वोलोद्या ने कहा।

वह खुद उसे उस कमरे तक ले गया, जहा मृत का शव था। कमरे की दहलीज़ पर वह घुटनो के वल हो गयी और हाथ फैलाये, रेगती और यह वुदवुदाती हुई उसकी तरफ, अपने प्रिय व्यक्ति की तरफ वढी–

"मुझे माफ कर दो, माफ कर दो, माफ कर दो "

फिर उसने धीरे-से, फुसफुसाकर आवाज दी–

"ईगोर।"

और भी अधिक धीरे-से पुकारा–

"ईगोर।"

जब उसने वोलोद्या की तरफ देखा तो उसका चेहरा काप रहा था।

"कुछ नही किया जा सकता? क्या कुछ भी नही किया जा सकता?"

वालोद्या ने कोई उत्तर नही दिया। मृत का चेहरा अब विल्कुल सफेद पड चुका था। उसके सुनहरे वालो के साथ खिलवाड करती हुई रात की हवा ही उसके जीवित होने का भ्रम पैदा कर रही थी।

"कमीनो, तुमने उसे यहा चीर डाला।" नारी वोली। 'मैं तो उसे यहा ज़िन्दा लाई थी। कुत्तो, तुमने उसे मार डाला। अरे सूअर के बच्चे, अरे छोकरे, क्या तुम उस पर अपना अभ्यास कर रहे थे? यही न? एक असहाय आदमी पर अभ्यास कर रहे थे? वोलो नो।"

"आपको शर्म नही आती।' वोलोद्या ने कहा। "आप कैसे ऐसी वात "

आगेलीना मोदेस्तोव्ना, सोन्या और परिचारक नफेदोव वालोद्या के सामने आकर खडे हो गये। वरना वह नारी तो सम्भवत उसका मुह नोच डालती।

"जाइये, जाइये यहां से व्लादीमिर अफानास्येविच," नर्स सान्या ने कहा। "इससे बात करने में कोई तुक नहीं।"

वालोद्या बहुत भारी मन के साथ, बेहद परेशान और दुखी होता हुआ वहां से चला गया। उसने ड्यूटी रूम का दरवाजा खोला, विनोग्रादोव की सम गति से चलती सांस की आवाज सुनी और अस्पताल के बगीचे की ओर चल दिया। उस औरत की चीख चिल्लाहट वहां भी सुनाई दे रही थी–

"हत्यारे! बुरा हो तुम हत्यारों का! यह सब तुम्हारी ही करतूत है, तुम सभी की, तुम सभी की।"

वालोद्या को सपने में भी उसकी सूरत दिखाई दी–विकृत, घृणापूर्ण होठों पर झाग। डाक्टरों के प्रति इतनी घृणा क्यों? क्या वे मुरदे को बचा सकते थे? क्या वे करिश्मा कर सकते थे?

वोलोद्या को अगले दिन वहां से रवाना होना था। बोगोस्लोव्स्की ने कालेज के नाम पत्र लिखा, लिफाफे पर लाख की मुहर लगायी और अभ्यासकर्त्ता को घाट पर छोड़ने चल दिये। वातावरण में नमी थी, पानी बरस रहा था और मटियाले धूसर बादल पीटर और पाल के गिरजे पर झुके हुए थे। वालोद्या के यहां आने के दिन की भांति आज भी बोगोस्लोव्स्की रास्ते भर दुआ-सलाम और बातें करते हुए अपनी समझदार तातारी आंखों को सिकोड़ते रहे–

"आप इस घटना को दिल से मत लगाइये। हाल ही में मैंने 'इज्वेस्तिया' अखबार में पढ़ा था कि रीबिंस्क में किसी डाक्टर निकोनस्की को केवल भला-बुरा ही नहीं कहा गया, बल्कि मारा पीटा भी गया। इवानोवो-वोज्नेसेन्स्क में फेओक्तीस्तोव नाम के एक आदमी ने डाक्टर वीखमान पर शोरे का तेजाब डाल दिया। डाक्टर तरत्सीसोवा तो मरते मरते बची। नमस्ते सेर्गेई सम्योनोविच। कालूगा में तीन अफीमचियों ने अस्पताल में हंगामे किये। नमस्ते, नमस्ते, अलक्सेई पेत्रोविच। मगर यह बात ध्यान में रखिये, व्लादीमिर अफानास्येविच कि अब हमारे यहां क्रान्ति पूर्व की तुलना में ऐसी घटनाएं बहुत कम होती हैं। आठ गुना कम है। समझे? कुछ साल और बीतेंगे, तो ये सभी चीजें भूली बिसरी बात हो जायेंगी एक भयानक और घिनौने सपने की भांति ग़ायब हो जायेंगी।"

बोगोस्लोव्स्की ने वोलोद्या से हाथ मिलाया और कुछ झुके हुए, पुरानी बरसाती और पुराने ढंग की टोपी पहने हुए लौट चले। किन्तु अचानक मुड़े, कुछ देर चुप रहे और फिर मुर्गे की सी तिरछी नजर से वोलोद्या की ओर देखकर पूछा—

"सुनिये तो व्लादीमिर अफानास्येविच, बहुत मुमकिन है कि मैं यहां से कहीं बहुत ही दूर चला जाऊं। ऐसा न तो आज और न कल ही होगा। चलियेगा मेरे साथ?"

"और चोर्नी यार के इस अस्पताल का क्या होगा?"

"यह इसी तरह चलता रहेगा," बोगोस्लोव्स्की ने हंसकर उत्तर दिया। "आपसे ईमान की बात कहता हूं कि यहां अब और कुछ करने की गुंजाइश नहीं रही। किन्तु मुझे टक्कर लेना, दीवार को तोड़-फोड़कर नये सिरे से निर्माण करना अच्छा लगता है। तो, चलियेगा?"

"चलूंगा!" वोलोद्या ने निर्णायक ढंग से, दृढ़ता, कृतज्ञता और प्रसन्नतापूर्वक उत्तर दिया। "बस मैं आपसे माफी चाहता हूं और आपको धन्यवाद देता हूं।"

"पर अभी किसी को इसकी कानों कान खबर नहीं होनी चाहिये!" बोगोस्लोव्स्की ने कहा। "पर काम दिलचस्प होगा, ओह, बहुत ही दिलचस्प! कसम भगवान की, खासी मुसीबत उठानी होगी हमें।"

इतना कहकर वे बग्घी की ओर चले गये। एक जवान की भांति जिस फुर्ती, उत्साह और कुशलता से उन्होंने लगामें हाथ में ली, भूरे घोड़े को चाबुक लगाया और पीछे मुड़कर देखे बिना हमेशा की भांति अपने विचारों में डूबे-खोये से अस्पताल की ओर बढ़ गये, यह सब कुछ वोलोद्या को बहुत अच्छा लगा।

"नमस्ते, मेरे प्रिय व्यक्ति!" कभी की आंखों से ओझल हो गयी बग्घी की दिशा में उदास नजर से देखते हुए वोलोद्या ने सोचा। "नमस्ते, भले व्यक्ति! आप सभी को सभी कुछ के लिये धन्यवाद देता हूं! अन्तिम शब्दों के लिये भी धन्यवाद। अगर उन्होंने मुझे कठिन काम में साथ देने के लिये कहा है, तो इसका यही अर्थ है कि मैं बिल्कुल गया-बीता नहीं हूं। किसी भी व्यक्ति के लिये दूसरों के मुंह से यह सुनना बहुत महत्त्व रखता है कि वह निरा कूड़ा-करकट नहीं है।"

दसवां अध्याय

दोदिक और उसकी पत्नी

केवल डेढ महीना गुज़रा था और इसी अर्से मे वोलोद्या बहुत बदल गया था। लम्बे-तडंगे, चौडे चकले कधो और गालो पर बालो की काली खूटियोवाले, नगे सिर तथा सिलवटदार बरसाती और सख्त चमडे के बूट पहने हुए वोलोद्या के सामने आने पर वार्या "ग्राह, वोलोद्या!" कहकर एकबारगी चिल्लायी ही नही।

कुछ क्षण बाद बहुत हैरान और खुश होते हुए वह बोली, 'ओह, वोलोद्या!"

रिम झिम अब भी चल रही थी, ठडी पतझर समय से पहले ही शुरू हो गयी थी। वार्या के चेहरे पर पानी की बूदे दिखाई दे रही थी, वोलोद्या की घनी बरौनिया, उसकी बरसाती और बाल-सभी भीगे हुए थे। हे भगवान कितना बडा हो गया है यह वोलोद्या!

'बेडा गर्क किताबे भीग गयी," वोलोद्या ने कहा।

'नमस्ते, वोलोद्या!" किताबो का बडल एक तरफ हटाते हुए वार्या ने कहा। यह बडल उसके और वोलोद्या के बीच दीवार बना हुआ था। वह उसके कधे पकडकर उसे अपनी ओर नही खीच सकती थी, चूम नही सकती थी। पर उसका हर काम करने का अपना ही ढग होता था और उसने वोलोद्या को चूम लिया।

'तुमसे तो अस्पताल की बू आती है!" वार्या ने कहा। "तुम्हारे पत्रो के आधार पर तो यह समझा जा सकता है कि अब तुम पूरे डाक्टर हो गये हो, ठीक है न? इसी भाव छिपाते हुए मुस्करायी नहीं, जवाब दो।"

"क्या जवाब दू ?" वोलोद्या बोला। "मैं नीम-हकीम हू, बस। कम से कम तुम्ह तो मैं अपन से इलाज कराने की सलाह नही दूगा।"

"पर, येव्गेनी तो मानो खुदा बनकर लौटा है!"

वे घाट की ढाल पर चढे। रिमझिम जारी थी, रास्ते के साथ-साथ गदले पानी की धाराए बह रही थी। वार्या लगातार बोलती जा रही थी, वोलोद्या ने उसकी ओर देखा और हैरान होते हुए सोचा—"पहल तो यह इतनी बातूनी नही थी। कही, कोई बात तो नही हो गयी ?"

"वहा से बहुत दिनो से पत्र नही आया ?" वोलोद्या न पूछा।

"वहा स ? नही!" वार्या ने जवाब दिया। "बिल्कुल नही आया, अर्से से नही आया। तुमने कल का अखबार पढा न ? क्से उन्होने एब्रो को जबरदस्ती पार किया—यह कमाल का ब्रिगेड है। थेलमान का तोपखाना "

"तुम यह चपर चपर क्या करती जा रही हो ?" वोलोद्या ने पूछा।

वह दूसरी ओर मुह किये हुए चल रही थी। वोलोद्या ने कसकर उसका कधा पकडा और उसे अपनी ओर घुमाया। निश्चय ही वह रो रही थी।

"वे घायल हो गये है क्या ?" वोलोद्या ने पूछा।

"नही तो," वार्या ने दृढतापूवक जवाब दिया। "तुम्हारे पापा घायल नही हुए और मेरे पापा जिदा है।"

वोलोद्या ने इस अजीब-से वाक्य की ओर कोई ध्यान नही दिया।

"तो फिर रोन की कौन-सी बात है!" वोलोद्या ने कहा। "मरी गरहाजिरी म तुम कुछ हाथ से निकल गई हो, बस यही मामला है "

"हा, जरा दिल कमजोर हो गया है," वार्या ने उत्तर दिया।

"दिल कमजोर हो गया है, इस कल की छोकरी का! सुनकर हसी आती है "

फिलहाल वे दोनो वार्या के घर चल दिये। बूआ अग्लाया केवल अगले दिन ही तिशीन्स्की क्षेत्र से लौटनेवाली थी। यव्गनी मजे से सोफे पर लेटा हुआ था, वह भी अभ्यास करके लौटा था। किन्तु उसका मूड बहुत खराब था।

"भारी मुसीबत मे फस गया हू," वार्या के बाहर जाने पर उसने कहा। "कोई ऐसा आदमी भी नही कि जिससे सलाह ले ली जाय। निरी हिमाकत की बात है। यह सही है कि वैसे वह साथी और नारी के रूप मे मुझे पसन्द है, मगर शादी ऐसी चीज है कि जिसमे सोच समझकर कदम उठाना चाहिये। उधर उसके पापा डीन हैं, उनके जरा जबान हिलाते ही अपनी लुटिया डूब जायगी "

वोलोद्या नाक भौह सिकोडकर उसकी बात सुनता रहा।

"ऐसे मामलो मे मै कभी सलाह नही देता," थोडा रुककर उसने जवाब दिया। "वैसे खैर, तुम हो कमीन।"

'और तुम देवता हो! थोडा सब्र करो, मेरी यह रानी बहन जब तुम्हारे जैसे देवता को छोड किसी और के साथ मौज मनायेगी, तब तुम्हारे होश ठिकाने आयेगे। कुदरत तो अपना रग दिखायेगी ही।"

वोलोद्या ने गुस्से मे आना चाहा, मगर ऐसा न कर सका। "यह तो वही बात है कि एक लडकी काले बालोवाली हो और दूसरी सुनहरे बालोवाली ' उसने सोचा। "काले बालोवाली को तो उसके काले बालो के लिये दोषी नही ठहराया जा सकता। यही हाल येव्गेनी का है। उसकी निलज्ज और भद्दी स्वार्थ भावना, उसके कमीनेपन और जीवन के प्रति उसके उस गलत दृष्टिकोण का क्या किया जा सकता है, जिसे उसने सदा के लिये अपना लिया है।

छोटी सी गोल मेज पर लेक्चरर के रूप मे येव्गेनी की कारवाइयो के प्रशसा पत्र इस तरह रखे हुए थे कि सभी की उन पर नजर पडे। वोलोद्या ने इन भिन्न आकार के मुहरवाले प्रमाण पत्रो को उल्टा-पलटा। उनमे से कुछ कापी मे से फाडे गये पष्ठो पर लिखे गये थे, कुछ लिखे हुए फार्मों के उल्टी तरफ़ और कुछ नाटबुक मे से निकाले गये कागजो पर। उनमे येव्गेनी के व्याख्यानो की बडी तारीफ की गयी थी। उसने कैसर की रोक थाम व्यक्तिगत सफाई, अरुणचर्म और बच्चो के व्यायाम, आदि अनेक विषयो पर व्याख्यान दिये थे।

"साथी लेक्चरर द्वारा व्यक्त किये गये आशावादी दृष्टिकोण " वोलोद्या ने एक सम्मति मे पढ़ा।

तो हर दिन एक व्याख्यान हुआ?" वोलोद्या ने पूछा।

"अजी, एक ही क्या, कभी-कभी दो भी हुए। सोवियत लोग तो ज्ञान विज्ञान के प्यासे हैं। बिल्कुल थक गया हू, मेरे प्यारे, बिल्कुल कुत्ते की तरह।"

"अस्पताल मे तुम क्या करते थे?"

"ओहो!" यव्गेनी ने बात को स्पष्ट न करते हुए उत्तर दिया। "इसके अलावा तुम यह भी ध्यान म रखना कि मैंने अस्पताल के छोटे कमचारियो को व्याख्यान दिये, वार्डों म बीमारो से बात की और अन्य सावजनिक कत्तव्य पूरे किय "

"यानी तुम लोगो के मनोरजन का सामान जुटाते रहे!"

यह हैरानी की ही बात थी कि येव्गेनी कैसे गुस्से को टाल सकता था और कटु बात को सुना अनसुना कर देता था।

"साहबज़ादे हो, साहबज़ादे," उसने केवल इतना ही कहा, "तुम नही जानते, मेरे प्यारे, कि जिन्दगी क्या चीज़ है।"

वार्या की देख-रेख मे मोटा-तगडा हो गया शारिक अपने पैरो की प्यारी आहट करता हुआ अहाते की ओर से भागा आया। उसके बालो म ताज़गी और आखो मे चमक आ गयी थी।

"एन्स!" वार्या ने कहा। "इधर आओ! मरके दिखाओ एन्स!"

भूतपूव शारिक 'मर गया', इसके बाद वार्या का स्लीपर लाया, फिर वह भौका। "अभी बिल्कुल बच्ची ही तो है।" वोलोद्या ने एक बुजुग की भाति कृपा भाव से वार्या की ओर देखते हुए सोचा।

"ओह, मेर दिल की राहत!" वार्या ने शारिक से कहा। "अभी खा जाती हू तुझे!" और सचमुच ही उसन शारिक का कान काटा।

"घर नही, यह तो पागलखाना है!" येव्गेनी ने शिकायत की।

कमर म इधर-उधर टहलते और अपने स्लीपर बजाते हुए वह प्रोफेसर झावरोन्याक की तारीफ करता रहा। उसन उसे "दयालु बुजुग", "प्यारा बुजुग", "ज्ञानसम्पन्न वृद्ध" और "हमारा बुजुग" कहा। उसकी बातचीत के अदाज़ से यह नतीजा भी निकला कि प्रोफेसर झावरोन्याक के प्रति विद्यार्थियो के बुरे रवैये के लिये भी वोलोद्या ही ज़िम्मेदार है। उसने यह भी कहा कि उसकी उम्र, उसके अतीत और लोगो के प्रति उस बुजुग के नेक और चिन्ताशील हृदय का सम्मान किया जाना चाहिये।

'तुम्हारी उसके साथ कब से घनिष्ठता हो गयी?" वालोद्या ने पूछा।

"हम एक दाम्न के देहाती बंगले में इकट्ठे रहे," यव्गेनी ने उत्तर दिया। "हम मछलियां मारने के लिये एक साथ जाते रहे और, कुलमिलाकर हमारी अच्छी पटी।"

"जारी रखो, जारी रखो अपनी दोस्ती!" वालोद्या ने व्यंग्यपूर्वक हंसकर कहा। "तुम एक ही डाल के पंछी हो।"

"यह बेतुकी बात है!'

"बेतुकी क्या है? देख लेना कि अब वह तुम्हें आसमान पर चढ़ाना शुरू करेगा। ईरा के पिता के लिये ऐसा करना उचित नहीं और बोवन्याक को सहारे की जरूरत है। इसके अलावा तुम लोग मीशा शेरवुड को भी अपने साथ खींच लागे। वह तुम्हारे जैसा नहीं है समझदार है"

यव्गेनी ने खरगोश की भांति हास्यास्पद ढंग से अपनी नाक हिलाई डुलाई और लुभावनी निश्छलता से इस बात के साथ अपनी सहमति प्रकट करते हुए कहा—"तो इसमें बुराई ही क्या है? यह तो बढ़िया ख्याल है। शेरवुड लायक यहां तक कि प्रतिभाशाली लड़का है और झोवन्याक उस पर भरोसा कर सकता है"

दादा मेफोदी बाजार से आये और कीमतों तथा इस बात की लम्बी चौड़ी कहानी सुनाने लगे कि बेशक जान दे दो, पर बछड़े की कलेजी कहीं नहीं मिलेगी। गाजरों के जगह जगह ढेर लगे हुए हैं, पर किसे उनकी जरूरत है?

'हम कोई खरगोश हैं क्या?" दादा मेफोदी ने बिगड़कर कहा। "थैला भरा पड़ा है उनसे मगर कलेजी कहीं दिखाई भी नहीं दी।"

'प्यारे दादा," यव्गेनी ने कहा। "क्रान्ति से पहले आप किसान थे और तब क्या अक्सर मांस खाते थे? शायद क्रिसमस या ईस्टर के दिन ही न?"

दादा चकरा गये।

"ठीक है न, ठीक है न," येव्गेनी ने उपदेशक की भांति कहा। "जाहिर है कि हमारे यहां त्रुटियां हैं, विशेषत व्यापार के क्षेत्र में,

किन्तु सभी चीज़ों पर कीचड उछाला जाये यह नही चलेगा। इन बाज़ारी बातो म घटियापन, टुटपुजियापन की बू है।"

"पर मैं तो तुम्हारे लिये ही कलेजी ढूढ रहा था, अपने लिये तो नही," मेफोदी ने कहा। "मेरी बला स। पर वार्या तो हमेशा बहुत मज़े से कलेजी खाती है।"

"दादा को परेशान मत करो," वार्या न कहा। "उनके पीछे क्या पडे हो?"

और उसने वोलोद्या से शिकायत की–

"कल घर आया है और तभी से सब को अक्ल सिखा रहा है।"

वार्या वोलोद्या की बगल म बैठ गयी, उसका हाथ अपने हाथ म ले लिया और उसकी आखो म झाका।

"बात यह है," वह बोली, "कि आज मा के दादिक का जन्मदिन है। है तो यह बडी अटपटी सी बात, पर यदि हम नही जायेंगे, तो वे बुरा मानेंगे। उन्होने बहुत पहले से ही हम सूचना द दी थी। तुम्ह हमारे साथ चलना होगा।"

"हा, हा, चलो," येव्गेनी न खुशमिज़ाजी से समर्थन किया। "आओ एकसाथ ही यह यातना सह। खाना पीना तो वहा जैसा हमेशा होता है, वैसा ही घटिया आज भी होगा और ज़ाहिर है कि ऊब भी बेहद महसूस होगी। फिर भी मा तो मा ठहरी। हाथ मुह धोकर कपडे बदलो और बस, चले। हम तो जवान लोग है, ज़िन्दगी के फूल है, इसलिये हम अपनी उपस्थिति से उनके सडे समाज की रौनक बढानी चाहिये "

"तुम्हारा सूटकेस गुसलखाने के करीब बरामदे मे रखा है," वार्या ने कहा।

येव्गेनी ने वोलोद्या के गुसलखाने म जाने के बाद दरवाज़ा कसकर बन्द कर दिया।

"तुम उससे कुछ नही कहोगी?"

"नही, मैं कह ही नही सकती।"

"तो शायद मैं ऐसा करू?"

'तुम टाग नही अडाओ। पापा के सिवा और कोई भी यह नही कह सकता।"

"पर यदि तुम लगातार आसू बहाती जाओगी, तो "

'यह तुम्हारी समझ के बाहर की चीज है।"

येव्गेनी न कधे झटक दिये।

"पर खैर, उसे ज्यादा से ज्यादा वक्त तक यहा रखना चाहिये," यव्गेनी ने सलाह दी। "लोगो के बीच दिल हमेशा हल्का रहता है। जहा तक इस तथ्य का सम्बन्ध है कि फासिस्टवाद के विरुद्ध लडते हुए जान दी जाय और सो भी वोलोद्या के पिता के समान वीरतापूर्ण ढग से "

"चुप रहो!"

वोलोद्या न सूटकेस मे से बुढिया डौने द्वारा धोये और रफू किये हुए नीचे पहनने के कपडे, लाख की मुहरोवाला पैकेट, जुराबें और टाई, जिसे अभ्यास काल मे पहनने का उसे अवसर ही नहीं मिला था, तथा इतनी बदरग कमीज निकाली, जिसे देखकर लौंड्रीवाले कहगे- ऐसी कमीजें जहन्नुम मे जायें। उसने रस्सी स बधी हुई किताबो के पैकेट को उदास नजरो से देखा। चोर्नी यार म उसे एक भी शब्द पढने का मौका नही मिला था।

येव्गेनी बरामदे म आया, उसने पकेट देखा और सीटी बजाने लगा-

"आहो! मै कल्पना कर सकता हू कि इसमे क्या कुछ लिखा होगा। आओ, सावधानी से इसे खोल ले। बाद म कह देना कि मुहरे अपने आप टूट गयी थी। आओ पढ ले, मजा रहेगा!"

"जहा का तहा रख दो " वोलोद्या ने जोर देकर कहा।

"अस्पताल की काफी बू तुम अपने साथ ले आये हो," येव्गेनी ने कहा। "और कोई दूसरी छोटी मोटी चीज भी वहा से नही लाये। खैर, मैं तो स्थानीय स्टोर से एक सूट का बढिया कपडा भी मार लाया हू। इसके लिये मैंने एक जुगत लडाई-'शादी मे सफाई' विषय पर खूब मिच मसाला लगाकर एक नि शुल्क भाषण दे दिया। बस, बात बन गयी। हम पाचव वर्ष के विद्यार्थी है, हम ढग से रहना सहना चाहिय "

वोलोद्या अपने को वश म करते हुए चुप रहा। उसन येव्गेनी स बहस न करने का पक्का इरादा कर लिया था। यह तो दीवार स सिर मारन के समान ही था

वोलोद्या ने गुसलखाने मे हजामत बनाई और देर तक फव्वारा स्नान का मजा लेता रहा। नहाने का प्यार उसने अपने पिता से विरासत मे पाया था। उसके पिता ने ही उसे स्पज से साबुन का झाग बनाने और फिर फव्वारे की "पतली" तथा इसके बाद "मोटी" धार का उपयोग करने, "मोटे तौर पर" तथा फिर "अन्तिम रूप" मे तन को साफ करने की शिक्षा दी थी। बालो की सफाई की जाच करने के लिये उनमे से तार गुजारना और यह देखना चाहिये कि उनमे से आवाज पैदा होती है या नही। कभी तो वे दोना एकसाथ स्नानघर म जाया करते थे। वहा वे देर तक नहाते थे, भाप-कक्ष की घुटन और गर्मी मे कठिनाई से सास लेते थे, क्वास पीते ये और नहाने के इस सारे क्रम को फिर से दोहराते थे। पिता ने तो सम्भवत स्पन मे भी कोई स्नानघर खोज लिया होगा—सगमरमर का बना हुआ, परी-स्तम्भो और छत पर गुलाबी फरिश्ता के चित्रोवाला।

"क्या तुम अभी और देर तक नहाओगे?" येव्गेनी ने पूछा।

वार्या ने वोलोद्या की टाई बाधी—ऐसे काम उसे बिल्कुल करने नही आते थे—और ब्रश से बाल जमाये। येव्गेनी ने अपने को इत्र स तर किया। वोलोद्या ने वार्या को बरसाती पहनायी।

"हम घर पर खाना नही खायेगे।" येव्गेनी ने चिल्लाकर कहा।

"मैं आसू नही बहाऊगा," दादा ने रसोईघर से जवाब दिया, जहा वे "ओगोन्योक" पत्रिका के पन्ने उलट-पलट रहे थे। उन्ह चित्र दखना बहुत पसन्द था। "देखेगे, वहा तुम क्या खाओगे। उनकी बावर्चिन पान्का मुझे बाजार मे मिली थी। कह रही थी कि पैसे तो गिने गिनाये दिये है, मगर पूरी रजिमेन्ट का खाना बनाने का कहा है।"

ईरा और वोलोद्या से अपरिचित कुछ रगी-चुनी महिलाए वालन्तीना आन्द्रेयेव्ना के ठण्डे और नम बरामदे मे पहले से ही मौजूद थी। ईरा मेजपोश पर बलूत और मैपल के पीले पत्ते रख रही थी। प्रत्यक तश्तरी और प्रत्येक जाम के नीचे ऐसा "जिन्दा" नेप्किन होना चाहिय था।

"अरे, देहाती डाक्टर आ गया," वालेन्तीना आन्द्रेयेव्ना न कहा और चूमने के लिये अपना हाथ वालोद्या की तरफ बढ़ाया। किन्तु वोलाद्या ने उसे चूमा नही, केवल तपाक स हाथ मिलाया।

"कहो वहां कैसा हालचाल रहा? बस, बीमारों का इलाज ही करते रहे?'

'हां, इलाज ही करता रहा," वोलोद्या ने मरी सी आवाज में जवाब दिया।

दोदिक घर पर नहीं था, मोटरसाइकलों की प्रतियोगिता का सचालन कर रहा था। आगन में जंजीर से बधा हुआ उसका शिकारी कुत्ता भौंक रहा था। वालन्तीना आन्द्रेयेव्ना की सहेली ल्यूसी मिखाइलोव्ना अपनी भौंहों को बेहद ऊपर चढ़ाकर कह रही थी-

आह मेरी प्यारी मुझसे बहस नहीं करो। समय से पहले नमूदार होनेवाली झुरिया हमारी अपने प्रति की जानेवाली लापरवाही का नतीजा होती हैं। मिसाल के तौर पर, हंसी को ले लीजिये। देखिये तो, मैं कैसे हंसती हूं। मैं मुंह को गोल कर लेती हूं और हूं हूं हूं' की आवाज निकालती हूं," ल्यूसी मिखाइलोव्ना ने हंसकर दिखाया। "हंसने की क्रिया हो गयी, मगर मांस-पेशियां कमजोर नहीं हुई '

वोलोद्या आंखें फाड़-फाड़कर ल्यूसी मिखाइलोव्ना की तरफ देख रहा था। वार्या ने उसकी बगल में हल्के से कोहनी मारी। येव्गेनी बरामदे में इधर उधर आता-जाता हुआ सिगरेट पी रहा था और खीजता हुआ धीरे-धीरे ईरा से उलझ रहा था। छोटा मोटा और बहुधा माकावेयेन्को सदा की भांति रंगी चुनी महिलाओं को चुटकुले सुना रहा था और खुद ही पहले से हंस देता था।

एक और दम्पति भी आये, जिन्हें वोलोद्या नहीं जानता था। पति का चेहरा बबर जैसा था। पत्नी अपनी रेशमी पोशाक को इतने जोर से सरसराती थी कि ऐसा प्रतीत होता था मानो वह लगातार झल्लाकर कुछ फुसफुसा रही हो।

'ये कौन है?" वोलोद्या ने जानना चाहा।

"शहर की प्रमुख दर्जिन है " वार्या ने बताया। 'पुराने ढंग से उसे 'मदाम लीस' कहते हैं। साथ में उसका पति है, जिसे वह पार्टियों-वार्टियों में अपने साथ ले जाता है।"

'विज्ञान यह प्रमाणित कर चुका है ' पीली त्वचा और झुरियोंवाली ल्यूसी मिखाइलोव्ना ने अपना भाषण जारी रखते हुए कहा "कि वक्त से पहले नमूदार होनेवाली झुरियां सोते समय सिर के बेहंगवाले भाग

के गलत स्थिति मे रहने का भी नतीजा होती है। अगर हम सोते समय भी अपना ध्यान रखें, तो वक्त से पहले नमूदार होनेवाली झुरिया स बच सक्ते हैं।"

उसने देखा कि वोलोद्या उसे टकटकी बाधकर देख रहा है। वह 'मुह को गोल' करके मुस्करा दी–

"ठीक है न, नौजवान डाक्टर?"

"मालूम नही, हमने यह विषय पढा नही," वोलोद्या न गुस्ताखी से जवाब दिया। "वैसे यह तो बताइय कि सोते समय आदमी अपना ध्यान कैसे रख सकता है?"

"हू-हू-हू!" ल्युसी मिखाइलोव्ना ज़ोर स हस दी। "ऐसा करना तो बिल्कुल मुमकिन है। वैसे साथियो, मुझे यह कहना होगा कि हम खुद मालिश करने की तरफ, दूसरे शब्दो मे, उस तरीके की तरफ बहुत कम ध्यान देते हैं, जिससे त्वचा की सिकुडना, झुरिया और उसकी थलथलाहट को थपथपाकर दूर किया जा सक्ता है।"

"मुझे तो अभी मतली हो जायगी," वार्या ने फुसफुसाकर वोलोद्या से कहा। "इस थपथपाहट की वह कसे भयानक ढग से चर्चा कर रही है "

मगर ल्युसी मिखाइलोव्ना को अब कौन चुप करा सकता था।

"खुद मालिश करना–मेरा सबस अधिक मनपसन्द विषय, मेरा आदि अन्त, मेरा नवीनतम प्यार है," वह कहती गई। "हा तो, दायें हाथ से दायी तरफ की और बायें हाथ से बायी तरफ की सिकुडनो को थपथपाइये। आखो के नीचे की थलथलाहट को उगलियो के सिरो स थपथपाना चाहिये। जहा तक जबडे के नीचे की झुरिया और लटकी हुई त्वचा का सम्बन्ध है, तो उन्हे दूर करन के लिय उगलियो की उल्टी तरफ से थपथपाना चाहिय "

बावर्चिन शीशे के बहुत ही सुन्दर बडे प्यालो मे ढेर सारी सलाद लाई–आलुओ, गाजरो, चुकन्दरो, हरे पत्तो और प्याजो की सलाद। नाटे, बेहया माकावेयेन्को ने सलाद को सूघते हुए बेशर्मी स कहा–

"नवदम्पतियो के यहा सदा सब्ज़िया ही होती हैं। हरा चारा! लाभदायक भी, सस्ता भी और अपनी पसन्द के मुताबिक भी। मगर मैंने तो पहले से ही कह दिया था कि मुझे मास पसन्द है!"

दादिक मोटर में घर आया और उसने भीतर की ओर कुत्ते के निशानवाला ग्रामाफ़ोन चालू किया।

गंध उंगलियों से आती लोबान की
करुणा दुख की छाया, आंखों में सानी
नहीं जरूरत कोई भी अब तुमको होती

यह रिकार्ड बज उठा।

"सुनिये तो," येव्गेनी ने धीरे-से दोदिक को कहा। "यह तो बड़ी भद्दी बात है कि आप हमारे यहां से ग्रामोफ़ोन उठा लाये। मैं अभ्यास के लिये गया हुआ था और आप दादा के सिर पर जा सवार हुए।

"अब चैन भी लेने दो, संगदिल आदमी!" दोदिक ने कहा।

दादिक खूब बढ़िया दाढ़ी बनाये, पाउडर लगाये और मुंह में सीधी अंग्रेजी पाइप दबाये हुए था और उसकी ठोड़ी पर गुल पड़ रहा था। वह इतना साफ़-सुथरा और लकदक था कि दिमाग में बरबस उसके अन्तर्राष्ट्रीय चोर होने का ख्याल आता था।

उन्होंने वोद्का, मदिरा, पोर्टवाइन, बीयर और लिकर पी। वालेन्तीना आन्द्रेयेव्ना ने उंगलियों के सिरों से कनपटियों को दबाते हुए येव्गेनी से कहा—

"क्या विज्ञान मामूली सिरदर्द को भी दूर नहीं कर सकता? तीन दिन से यातना सह रही हूं। तीन दिन से!"

बैरिस्टर की बीवी, श्रीमती गोगालेवा भी हमेशा सिरदर्द की शिकायत किया करती थी और कनपटियों को दबाती रहती थी।

"मां, वोद्का पियो," येव्गेनी ने कहा। "रक्त-वाहिनियां खुल जायेंगी और सिर का दर्द भाग निकलेगा।"

"सच?" वालेन्तीना आन्द्रेयेव्ना ने आंखें गोल करते हुए पूछा। उसने वोद्का, बीयर और मदिरा भी पी।

"अजी नहीं, नहीं, यह आप क्या कह रहे हैं," मेज़ के दूसरे सिरे पर ल्युसी मिखाइलोव्ना कह रही थी। खुश्क और चिपकी त्वचा की देखभाल अलग-अलग ढंग से की जानी चाहिये। यह जानना तो

पहली बात है। यह तो ऐसा ही फूहड़पन है जैसे कि मुहासे निकल आने पर नीमो और प्रलपा का उपयोग किया जाये।"

"वोलोद्या, आखें फाड़ फाड़कर देखना बन्द करो!" वार्या ने धीरे-से अनुरोध किया। "तुम सुनो ही नहीं। किसी चीज़ की ओर ध्यान ही मत दो।"

"मैं ध्यान दे ही नही रहा हू," वोलोद्या ने जवाब दिया।

"नहीं, ध्यान दे रहे हो!" वार्या ने चिल्लाकर कहा। "बेहतर यही है कि कुछ वोदका और पी लो!"

"यह बडी बेतुकी बात है," बोतला और गुलदस्ता से घिरा और मेज़ के बीचाबीच बैठा हुआ दोदिक कह रहा था। "बिल्कुल बेतुकी बात है। मोटरसाइकिल की दौड मे भाग लेनेवाला बरसात के मौसम म नियम का पालन किये बिना रह ही नही सकता "

"हुर्रा!" बेह्या माकावेयेको चिल्ला उठा। "लगता है कि मुझे सलाद मे मास का छोटा टुकडा मिल गया है। अरे हा, मदाम लीस के खूब मज़े है। उसके लिये ता अलग से खास चीज़े आ रही है। चूज़े की सलाद परोसी गयी है। मेहमाननवाज़ नवदम्पति ज़िन्दाबाद!"

मदाम लीस ने मज़ाक म माकावेयेको के हाथ पर हल्की चपत लगायी और बबरमुह श्रीमान लीस ने चिपचिपी लिकर से अपना गिलास भर लिया।

"मदाम लीस, क्या यह सच है कि बोलेरो का फैशन फिर से चालू हो गया है?" ईरा ने पूछा।

"बिटिया, मैं ऐसी बात सिर्फ अपनी दुकान पर ही करती हू।"

"बहुत खूब, बहुत खूब!" वालेन्तीना आन्द्रेयेव्ना न ताली बजाकर कहा। "दुकान की बात दुकान पर ही हानी चाहिये। इस वक्त हम पी पिला रहे हैं। आज हमारा पव है! पारिवारिक पव!"

वालेन्तीना आन्द्रेयेव्ना बहुत खुश थी। शराब उसे चढ गयी थी और उस अपनी पार्टी बरिस्टर गोगालेव की पार्टी जैसी ही प्रतीत हो रही थी। भल लोग पास म बैठे हुए खा पी रह थे। काई भी जहाज़ा, तापा, फौजी चाला और उडान के घण्टा की चर्चा नही कर रहा था, काई भी फटी-सी आवाज़ म बुद्योन्नी के रिसाले के बार म गीत नही गा रहा था।

बाद म वार्वाचिन सभी के लिये मास का शारवा और एक-एक कचौडी लायी। इसके बाद उसन हर मटरा के साथ कटलेट परास और इसके बाद बहुत बडे-बडे, बेहद कीमवाल, अटपटे ढग स सजाय गय केक लाकर मेज़ पर रखे।

"यह माकावेयन्को लाया है," वार्या ने फुसफुसाकर वालाद्या स कहा। "वही तो येक-मेस्ट्रिया के विभाग का मुखिया है। मा का कहना है कि जल्दी ही उस जेल की हवा खानी हागी–बहुत ज्यादा चारी करता है वह।"

खाना अभी खत्म नही हुआ था कि वालेन्तीना आन्द्रयेव्ना की तबियत खराब हा गयी। येव्गेनी और ईरा गायब हो गय। वार्या और वोलोद्या वालेन्तीना आन्द्रेयन्ना का उसके सोनवाल कमरे म ले गये, जहा गमलो म नागफनी के पौधे रखे थे और दीवार पर नागफनी का चित्र लटका हुआ था।

दोदिक ने पत्नी को जाते देखा, एडी पर पाइप मारकर उसकी राख गिरायी और माकावेये-को से बोला–

"जिसने ब्याह किया, वह दीन-दुनिया से गया। पारिवारिक जीवन के यही मज़े हैं। कही जा भी तो नही सकता, क्योकि वह शोर मचाने लगेगी कि मैं बीमार हू और यह मौज मनाता फिरता है "

'आओ पिये।" माकावेये-को ने सुझाव दिया।

"आओ।" दोदिक राज़ी हो गया।

ल्युसी मिखाइलोव्ना और एक अन्य प्रौढा, जिसका नाम वेबा था, इनके साथ बैठ गयी। वेबा के बाल कटे और सुनहरे रग स रगे और मेमने के बालो की तरह घुघराले बनाये हुए थे। उसके गुलाबी कंधे उघाडे थे।

"हा, ता बुढिया," बेहया माकावये-को न कहा। "हम त्वचा की पिलपिलाहट से मोर्चा लेगे न? मैंने सुना है कि पचास वप की उम्र के बाद रई के आटे का लेप बहुत लाभदायक रहता है। लप किया और बस बात बन गयी।"

"आप जेटलमेन नही है।' वेबा न चिल्लाकर कहा। "दयालु होना चाहिये "

"मैं जेंटलमेन होने का दावा भी नही करता हू," माकावेयेको ने सूचना दी। "मेरी प्यारी, मैं व्यापार के क्षेत्र मे काम करता हू और वहा जगल के कानून का वालवाला है।"

उसने वेवा के उघाडे कधे को हल्के-से काटा।

"हुम-हुम। डर गयी न?"

दादिक ने ग्रामाफोन पर रेकाड चढाया और वेवा की जवान वहन कूका का नाचन के लिये ग्रामन्त्रित किया। माकावेयन्का ने वेवा का नाच की सगिनी बनाया। बेहद रस भीगी, यहा तक कि चिकनी-चुपडी वाता मे गीत गूज रहा था—

वडे स्नहे से थके सूय न
जव सागर को विदा कहा,
उसी घडी, यह माना तुमने
प्रेम हमारा नही रहा।

वालाद्या दोदिक के कमरे म वैठा था और खीझता हुआ उसकी किताबें उलट-पलट रहा था। वगलवाले कमरे म वालेन्तीना ग्राद्रेयव्ना अपने पलग पर फैली हुई थी और वार्या का हाथ थाम हुए अपना दुखडा रा रही थी—

"वेटी, तुम तो कल्पना भी नही कर सकती कि उसके साथ निवाह करना कितना मुश्किल है। वह यह माग करता है कि मेरी अपनी दिलचस्पिया होनी चाहिये और उसन मुझ पर उन्ह माना लाद ही दिया। वह तो वडा हठी है—तुमन देखा न कि उसकी नीचेवाला जवडा कितना लम्बा है। उसने मुझे कढाई और सिलाई के कास म दाखिल हाने को मजवूर कर दिया। सवाल मेरी दिलचस्पिया का ही नही, पसे का है। वह तो धुन का पक्का है—वह चाहता है कि मैं हमेशा सभी तरह की सुख-सुविधाग्रा से घिरी रहू, वह मेरी जिदगी का बेहद रगीन बनाना चाहता है। वह मुझस कहता है, 'मेरी नन्ही', उसे मुझे 'मेरी नन्ही', 'मरी रोशनी' या 'वेबी' कहना पसद है। वह कहता है—'तुम्हारी पसद वहुत वढिया है, तुम शहर की सबसे वढिया दर्जिन वन सकती हो। इस ग्रथ म नही कि म खुद सिलाई करूगी, नही, वल्कि यह कि मैं हिदायत दिया करूगी मिसाल के

तौर पर, हमारे लूज़-फिट फ्राका को ले लो—कैसे भयानक होते हैं वे। लाइन तो होती ही नही। जाघा का माप लेना तो जानत ही नही। और वगला के नीचे की चुनट कैसी बुरी होती है। मैं और बबा मदाम लीस की शागिर्दी कर रही है "

"वार्या।" वगल के कमरे स वोलोद्या की उदासी भरी आवाज सुनाई दी।

"अभी आती हू।" वार्या ने जवाब दिया।

"वोलोद्या ही हे न?" वालेन्तीना आद्रेयेव्ना ने पूछा।

वार्या ने सिर हिलाकर हामी भरी।

"कुछ अजीब किस्म का आदमी है यह," वालेन्तीना आद्रेयेव्ना ने कहा। "बुत बना-सा बैठा रहता है, जरा भी आकषण नही है उसमे। पुरुष म आकषण ही तो सब कुछ होता है। आजकल मैं दोस्तोयेव्स्की पढ रही हू। प्रिस मीश्किन बुद्धू है, मगर कितना आकषण है उसमे "

"मा, जो कुछ समझती नही हो, उसकी चर्चा मत करो," वार्या न दुख भरे लहजे म अनुराध किया।

"क्या मतलब तुम्हारा?"

"म तुमसे प्राथना करती हू कि तुम मीश्किन की चर्चा नही करा।"

"लडकी, तुम मेरे साथ गुस्ताखी कर रही हो, अपनी मा के साथ गुस्ताखी से पेश आ रही हा "

"तुम मीश्किन की चर्चा नही करो, यह जुरत नहा करो।" वार्या न चिल्लाकर कहा। और झटपट कमरे स बाहर चली गयी।

"वार्या।" उस पीछे से सुनाई दिया। "यह पाजीपन है, वार्या।"

"आओ चल।" वार्या न फुसफुसाकर वालाद्या स कहा।

मदाम लीस का पति नशे म चूर हाकर अपन ववर चेहर क नीचे वाला स ढके हुए बडे-बडे पजे रखकर सा रहा था। मदाम लास दादिक के साथ नाच रही थी। रस भीगी आवाज म थके-थराये सूरज का गीत अब भी चल रहा था। दादिक का सफेद कुत्ता, जा अभी तक ऐस जावन का अभ्यस्त नहा हुआ था, अपनी जजीर तुडान की काशिश करता था और गीत की लय के साथ-साथ भौंकता था। मज

के सिरे पर बैठा हुआ माकावेयेन्को बेबा की बहन कूका को सम्बोधित कर भाषण दे रहा था—

"ज़िन्दगी का सार इसी मे है कि उससे अधिकतम लाभ उठाया जाये, अपनी इच्छाओ को एक मिनट, एक सेकण्ड के लिये भी न टाला जाये। जैसा कि ग्रादेस्सा मे कहते है, आप सभी इस बात पर कान दें! मैं भौतिकवादी हू और मृत्यु के बाद स्वग सुख म विश्वास नही रखता। ऐ नौजवान! इधर आओ!" वोलोद्या का देखकर उसने पुकारा। "जल्दी से इधर आओ! भागकर आओ! मैं देख रहा हू कि तुम मेरे साथ सहमत नही हो। प्यारी कूका, वह मेरे साथ सहमत नही है न? तो क्या हुआ? मैं ज़िन्दगी से वह कुछ हासिल करता हू, जो चाहता हू, क्योकि मैं औरो की तरह आदर्शवादी नही हू"

"आओ चल, वोलोद्या!" वार्या ने कहा।

"तुम मुझे यहा लायी ही क्या थी?" वोलोद्या ने पूछा।

पिता जी नही रहे!

पानी अब भी बरस रहा था।

वे दोनो एक-दूसरे का हाथ थामे हुए सिनेमा देखने गये। फिल्म शुरू होने के पहले स्पेन-सम्बन्धी घटनाचित्र दिखाया गया। थेलमान की बटालियन के सैनिक "कर्मान्योला" गीत गा रहे थे, विद्रोहियो के टैंक हारम की ओर बढ रहे थे, ए० ए० तोपें तडातड गोले बरसा रही थी और स्वयसेवक सेगाविया पुल के क्षेत्र म आते दिखाई दे रहे थे। बडे-बडे काले "जुकर" सुन्दर मड्रिड पर ढेरो बम गिरा रहे थे।

"आखिर अब तो रोना बन्द करो!" वोलोद्या ने झल्लाकर कहा।

"मैं नही कर सकती, नही कर सकती, नही कर सकती!" वार्या ने सिसकते हुए जवाब दिया।

उन्होंने फिल्म अन्त तक नही देखी। उसम शुरू म ही सब कुछ बहुत सीधा-सपाट और प्यारा-प्यारा था। सगीत भी "चक-चकाय सूरज" की याद ताजा करता था और मुख्य नायक भी दोदिक स मिलता-जुलता था—उसके भी मुह म पाइप थी और ठोडी पर गुल। हा, उसका नाम दोदिक नही था और उसे साथी निर्माण-सचालक कहकर सम्बोधित किया जाता था।

"अचानक ही सब कुछ बहुत मुश्किल हो गया है।" वार्या ने शिकायत की।

"वह क्या ?" वालाद्या का हैरानी हुई।

वार्या न जार से उसका हाथ दबाया।

घर पहुचने पर उन्हान धन शेडवाल छोटे-से लम्प की मद्धिम रोशनी म येव्गेनी और ईरा का सोफे पर बैठे पाया। वे किसी कारणवश खिन्न दिखाई दे रहे थे।

"तुम लोग हम बधाई दे सकते हो," येव्गेनी ने व्यग्यपूर्वक कहा (इराईदा की उपस्थिति म अब वह हमेशा व्यग्यपूर्वक ही बात करता था), "हम बधाई स्वीकार करन को तैयार है।"

"किस बात की ?" वार्या न पूछा।

"इस बात की कि हमन अपने सम्बधा को कानूनी शादी की शक्ल देने का फसला कर लिया है।"

"हा," अपनी जजीरो और भूपणा को छनछनाते हुए ईरा ने पुष्टि की। "नौकरशाहो की भाषा मे अनुकूल निणय किया गया है।"

वह बुझे-से ढग स हस दी।

"इससे पहले कि देर हो जाये," कमरे म टहलते हुए यव्गेनी ने कहा, "हम तुम्हारे लिये भी ऐसी ही कामना करते है। ऐसे ज्यादा अच्छा रहता है।"

"क्या कहना चाहते हो, तुम ?" बात समझ म न आने पर वार्या ने पूछा।

"मैं यह कहना चाहता हू, मेरी प्यारी बहन, कि शादी के मामले म मै पसन्द की आजादी का समथक हू, न कि सामाजिक मजबूरी का। हम मजबूरी की अवस्था तक पहुच गये है।"

"गधा," वार्या ने कहा, "उल्लू, जानवर, कमीना, घटिया!"

"गालिया मत दो," यव्गेनी ने अनुराध किया। "तुम्हारे लिये लानत मलामत करना बहुत आसान है, मगर तुम यह अनुमान नही लगा सकती कि मेरी और ईरा के दिल की क्या हालत है ? यही ज्यादा अच्छा रहगा कि मा का हाल चाल सुनाओ। क्या यह सच है कि वह महान दर्जिन बनने जा रही है ?"

वार्या का उत्तर सुनकर उसने कहा—

"वैसे तो अच्छे दर्जी काफी पैसे कमाते हैं। हम उसके साथ नही रहते, इसलिय अगर टैक्स इन्सपक्टर उसे रगे हाथो भी आ पकडे, ता भी हमारी बला से! मगर जाती तौर पर मैं ता इस मामले मे दो चार पैसा पर हाथ मार ही लूगा।"

"हे भगवान!" वार्या कह उठी। "जिन्दगी म कभी इतना साफ और शीशे की तरह चमकता हुआ नीच नही देखा।"

"मैं नीच किसलिये हू?" येव्गेनी ने सच्ची हैरानी जाहिर करते हुए पूछा। "क्या मैं बच्चे खाता हू? सभी के साथ मेरे बहुत अच्छे सम्बन्ध है, कोई मेरा शत्रु नही है, पर अपने बारे म ता मुझे साचना चाहिये न? या तेरा वालाद्या मेरी चिन्ता करगा? या शायद तुम अपने शादीशुदा भाई की आर्थिक सहायता कराग़ी? या फिर पिता ही कोई मोटी रक़म दे देंगे? चलो मान लो कि मेरी होनेवाली बीवी के बाप, साथी डीन, कुछ रक़म दे देंगे। मगर वह भी बहुत नही होगी। मेरा वज़ीफ़ा, ईरा का वज़ीफा—यह सही है। मगर बच्चा? धाय, पलग, पोतडे और ढेरा दूसरी चीजे? फिर यह भी मत भूला कि सिर्फ एक बरस ही तो यह समस्या नही है। हम दोनो यहा बैठकर यही सारा हिसाब किताब जोड रहे है। सस्थान की पढाई खत्म हाते ही मुझे क्या मिलेगा? यानी नक्द रूबलो की शक्ल मे?"

येव्गेनी ने कोट उतारकर कुर्सी की टेक के साथ टाग दिया, हिसाब किताबवाला काग़ज़ अपने नजदीक खिसकाकर यह प्रश्न किया—

"तो शुरू म हमारे पास क्या होगा?"

"मैं जाता हू, वार्या!" वालाद्या ने उठते हुए कहा।

"जाओ!" वार्या ने थकी हुई आवाज म जवाब दिया।

ओह, कितना यातनापूर्ण, उलझन भरा और लम्बा रहा था आज का दिन! और अब, इस सारी परेशानी के बाद उसने वालोद्या की आखो म भर्त्सना की झलक देखी, वह अपराधी ही मानी गयी। यह वालोद्या, यह निर्दयी कभी वार्या की सहायता नही करता था। वह तो घृणा भाव दिखाते और मानो यह कहते हुए अपनी जान छुडा लेता था— मुझे परेशान न करो, मुझे कुछ लेना-देना नहीं है तुम्हारे इन झझटो से, मेरा कोई सरोकार नही है तुम्हारी इस बकवास से।"

वार्या की तरफ देखे विना ही वालोद्या ने अपनी वरसाती पहनी और सूटकेस तथा किताबो का बडल उठा लिया। बडी हैरानी की बात है कि वह मुडकर देखे विना कैसे रह गया। बात यह है कि एक बार उसे देख लेने को तो उसका भी मन हुआ होगा, उसने भी महसूस किया होगा कि इस समय वार्या कितनी दुखी है, एकाकीपन अनुभव कर रही है। फिर भी वह सिर तक झुकाये विना दरवाजा बन्द करके चला गया। हमेशा वह अपने तक ही सीमित रहा है, यह आदमी। जाहिर है कि अब बहुत दिनो तक वह यहा अपनी सूरत नही दिखायेगा

पौ फटने पर अग्लाया घर आ गयी—ऊचे बूट और पेटीवाला तिरपाल की वरसाती पहने तथा रूमाल बाधे हुए। वोलोद्या को लगा कि वार्या की भाति वह भी कुछ जानती है और उससे छिपाती है। इन डेढ महीनो मे बूआ कमजोर हो गयी थी, उसके अभी तक अरुण होठो के सिरो पर मानो कटु सिकुडने उभर आयी थी, आखो मे दुख की झलक थी और उसे एक नयी आदत हो गयी थी—मेज पर चीजो को लगातार इधर उधर रखती रहती थी। कभी वह दियासलाई की डिबिया उठाकर दूसरी जगह रख देती, तो कभी चमचा, तो कभी नमकदानी और कभी उठकर दीवार पर फोटो ठीक करने लगती। मगर उसका रूप और भी निखर आया था। हैरानी की बात थी कि मद उसके रूप पर लटटू नही थे।

"आप कितनी बेचैन रहती है, बूआ!" वोलोद्या ने कहा। "घडी भर को भी टिककर नही बैठती। शायद इसीलिये कि आप बडी अफसर है।"

"हटाओ भी!" उसने अन्यमनस्कता से जवाब दिया।

"और पहले से कही अधिक निखर गयी है। बहुत ही सुन्दर है आप!"

"किस जरूरत है मेरी इस सुन्दरता की? फजूल की बात करने के बजाय मुझे वोगास्लाव्स्की, अस्पताल और अन्य सभी चीजो के बारे मे बताओ। ऑपरेशन किये?"

वोलोद्या ने जल्दी-जल्दी सभी कुछ सुनाना शुरू किया, मगर बीच मे ही रुक गया—बूआ सुन नही रही थी।

"क्या बात है?" वोलोद्या ने पूछा।

"कोई बात नही, तुम कहते जाओ। मैं जरा थक गयी हू।"

"आदमी पागल हो सकता है," वालोद्या ने झल्लाकर कहा। "वार्या कहती है कि उसका दिल कमजोर हो गया है, आप थक गयी हैं, आप सभी कुछ अजीब-से हो गय हैं "

मगर बूआ ने यह भी नही सुना। वोलोद्या की उपस्थिति म ही वह अपने विचारो म डूबी हुई थी मानो वालोद्या कमरे मे ही न हो। उसके मूक होठ हिल-डुल रहे थे। अब सारी बात उसकी समझ म आ गयी, मगर दर तक पूछने की हिम्मत न हुई—इतनी भयानक बात थी वह। आखिर फक चेहरे के साथ उसन पूछा—

"पिता जी नही रह?"

अग्लाया ने चुपचाप सिर हिला दिया।

"मार डाल गय?" वोलाद्या न चिल्लाकर पूछा।

"हा, वे नही रहे!" बूआ ने समस्वर म धीरे से कहा। "मैड्रिड के ऊपर हवाई लडाई म उनके हवाई जहाज म आग लग गयी।"

"और वे मर गये—पिता जी?"

"हा, वोलोद्या, तुम्हारे पिता जी नही रहे।"

"वे जल गये?"

"मालूम नही, वालोद्या, मगर अफानासी चल बसे और उन्ह दफना दिया गया।"

"यह बिल्कुल सही है? बिल्कुल?" मज पर से बूआ की ओर झुकते हुए वोलोद्या ने फुसफुसाकर पूछा। "यह बिल्कुल सच है?"

बूआ के मौन होठो ने उत्तर दिया "हा"। उसके गालो पर अश्रुधारा वही चली आ रही थी, उसन उस रोका भी नही। वालोद्या बुत बना खडा था। आज ही उसने पिता की कल्पना की थी कि वे कैसे परी-स्तम्भो और पखोवाले फरिश्तो के चित्रो से सुसज्जित गुसलखाना ढूढ रहे होगे। किन्तु उस समय पिता मौत की गोद म सो रहे थे। स्पेन के बारे म वह खबरे भी उस वक्त पढ़ रहा था, जब पिता जी की सास पूरी हो चुकी थी।

"उन्ह कहा दफनाया गया? वही, स्पेन मे?"

"उनकी स्वतन्त्रता के लिय उन्होने जान दी। उन्होन उस दफना दिया," अग्लाया न धीरे-से उत्तर दिया। "समझते हो न कि वे "

वह अपनी कोशिश के बावजूद और कुछ न कह सकी। वह वक्ष पर डाली हुई ऊनी शाल के छोरा को काटती और लगातार सिर झटकती रही कि रुलाई रुक जाय, मगर आंसू उसके गालो पर बहते ही रहे। फिर उसे सास लेने में तकलीफ होने लगी। तब वालोद्या ने झटपट स्पिरिट का लैम्प जलाया, पिचकारी उबाली और अग्लाया को काफूर की सूई लगायी।

"अब तुम्हे भी ..." अग्लाया ने कुछ कहना चाहा, मगर बात पूरी न कर सकी। उसने कहना चाहा कि वालोद्या को भी अफानासी पब्लोविच के समान बनना चाहिये, किन्तु स्वय ही समझ गयी कि वालोद्या से कुछ भी कहने की आवश्यकता नही है, कि वह वयस्क है और खुद ही सब कुछ समझता है। उसने केवल "प्यारे वालोद्या" कहा और उसकी छाती पर अपना गाल रख दिया।

इन कठिन क्षणो मे वालोद्या अपनी बूआ से कही अधिक शक्तिशाली सिद्ध हुआ। उसने बूआ के काले बालो को सहलाया, चुप रहा और उजली होती हुई खिडकी की ओर देखता रहा। इस नम, धुधली और भयानक सुबह को उनके बीच और कोई बातचीत नही हुई। फालतू शब्दो से एक-दूसरे को यातना देने से तुक ही क्या थी।

"तुम जा रहे हो?" जब पिछली रात को लगाया गया घडी का अलार्म बजा और वोलोद्या जाने की तैयारी करने लगा तो बूआ ने पूछा।

"हा, कालेज जा रहा हू।" बूआ की तरफ मुडे बिना ही वोलोद्या ने जवाब दिया।

शायद दुनिया मे बूआ ही एक ऐसा व्यक्ति थी, जिसे यह स्पष्ट करने की जरूरत नही थी कि वह कालेज क्यो जा रहा है। वह तो खुद ही सब कुछ समझती थी। वह समझती थी कि आज से वालोद्या की जिन्दगी पहले जैसी नही रहेगी, दूसरी ही हो जायेगी। बाहरी तौर पर उसमे कोई तब्दीली नही होगी, मगर वास्तव मे, गहराई मे, वह बिल्कुल दूसरी ही हो जायगी। उसे अपने पिता की भाति ध्येय को आगे बढाना होगा। इन दिनो मे अग्लाया ने अनेक बार अपने आपसे फुसफुसाकर कहा—'उसे अपने पिता की भाति ध्येय को आगे

बढाना होगा।' खार्कोव के उक्रइनी गाडीवान का बेटा, हवाबाज़ अफानासी उस्तिमेको स्पेनी लोगो की स्वतन्त्रता के लिये इस तरह अपनी जान नही होम सकते थे कि उनका काम अधूरा ही रह जाये। वह अब रो नही रही थी, वह वोलोद्या का तैयार होते देख रही थी। शायद, खुद उसे भी जाना चाहिये। वे दोना एकसाथ ही घर से बाहर निकले। वे दोनो उस साझे दुख का बोझ अपने दिल पर लिये हुए थे, जिसकी अभी चर्चा करना भी सम्भव नही था।

"मेरे पिता का देहान्त हो गया!" किसी के पूछने पर वोलोद्या को केवल यही उत्तर देना चाहिये।

देहान्त हो गया। बस, देहान्त हो गया! लोग बीमार होकर मरते ही तो है। कभी कोई व्यक्ति था, फिर उसने चारपाई पकडी और चल बसा, *सगे-सम्बन्धियो तथा यार दोस्तो ने उसकी याद मे आसू* बहाये।

कठोर और सन्तापक

"कहो, बूढे बाबा, कैसे चल रही है जवान जिन्दगी?" कालज के बरामदे मे येव्गेनी ने वोलोद्या से पूछा और सहानुभूति से उसकी तरफ देखा।

वालाद्या ने कोई उत्तर नही दिया। वह येव्गेनी के गोल मटोल, सौजन्यपूर्ण और लाल गुलाबी चेहरे का ध्यान से देखता रहा, मानो इस व्यक्ति को समझने की कोशिश कर रहा हो। पिछले दिन यह जानते हुए भी कि वोलोद्या के पिता वीरगति को प्राप्त हो गये हैं, येव्गेनी उस रकम का हिसाब किताब जोड रहा था, जो नवदम्पत्ति को उपलब्ध होगी।

"ऐसे घूर क्या रहे हो?" येव्गेनी ने पूछा।

पीच ने बहुत स्नेह से वोलोद्या से हाथ मिलाया। सम्भवत येव्गेनी ने सभी सहपाठियो को वोलोद्या के पिता की मृत्यु के बारे मे बता दिया था। कारण कि प्रत्येक एक विशेष ढग से वोलोद्या की ओर देखता था। हर किसी ने वोलोद्या का तसल्ली देनेवाले कुछ न कुछ खास शब्द कहने की कोशिश की। हा, केवल पीच ने ऐसा नही किया।

वह अभ्यास की चर्चा करता रहा। उसने बताया कि मैं खुशकिस्मत रहा। मैंने एक छोटे-से, मगर सुव्यवस्थित अस्पताल में अभ्यास किया। इतना ही नही, उसने तो कुछ हसानेवाली बात भी सुनायी और वालाद्या मुस्करा दिया। वालाद्या का न तो चेहरा ही ज़र्द था, न वह खोया खोया था, न मातमी सूरत ही बनाये था, जैसा कि वीरगति को प्राप्त हुए पिता के बेटे का होना चाहिए था। सहपाठिनी आल्ला शेशनेवा ने अपनी सहेलियों से इसी बात की चर्चा भी की।

वैसे वह कोई खास भावुक किस्म का व्यक्ति नही है," ल्यूस्या ने राय ज़ाहिर की। यह वही लडकी थी, जिसे गानिचेव ने कभी यह सलाह दी थी कि तुम डाक्टरी की पढ़ाई छोड़कर शार्टहैंड सीखने लगो। "उसमें एक खास किस्म की कठोरता है"

'अपने आपको खुदा समझता है," रंगे चुने होठो को टेढ़ा-मेढ़ा करते हुए स्वेत्लाना सामोखिना ने कहा। "अभी तो आगे देखना कि कितने अधिक आसू बहाने पडेंगे हमें इसकी वजह से।"

ये तीनों सहेलियां इस बात की कल्पना तक भी नही कर सकती थी कि स्वेत्लाना ने कितनी अधिक समझदारी की बात कह दी थी, वह कितनी गहराई में जा पहुंची थी, जो उसकी छोटी सी अक्ल के बिल्कुल अनुरूप नही थी।

मीशा शेरवुड ने निष्कर्ष निकाला—

"वह कठोर और सन्तापक है। मैं कटूक्ति के लिए माफी चाहता हूं वह 'महा बोर' है। भगवान न करे कि कही मुझे उसके अधीन काम करना पड़े। भगवान बचाये!"

वालोद्या अब आलसी और कामचोर विद्यार्थियों का मज़ाक नहीं उड़ाता था फैशन की पुतली स्वेत्लाना को चिढ़ाता भी नही था और यव्गेनी की नीचतापूर्ण हरकतों की ओर से आंख भी नही मूदता था। परीक्षा में असफल होनेवाले विद्यार्थी अपनी असफलता के चाहे कुछ भी कारण क्यो न बतायें, वालोद्या को उन पर तनिक भी दया नही आती थी।

"इन्हें कान पकड़कर बाहर निकाल दिया जाय!" कालेज की युवा कम्युनिस्ट लीग की सभाओं में वह कहता। "निकाल दिया जाना चाहिए ताकि वे डाक्टरी की उस उपाधि को कलंक न लगा सकें, जो

उन्ह मिलनेवाली है। किसी भी तरह की ढील करने, किसी भी तरह की नसीहत-उपदेश, किसी भी तरह का सहारा देने की जरूरत नही। जाग्रो, जहन्नुम म! बहुत लाड कर चुके हम इन मा के लाडलो ग्रौर वाप की लाडलिया का! यही, जिन्हे हम इतनी मेहनत से ग्रपने साथ खीच रहे है, बाद मे उस फौज का रूप ले लेते हैं, जो गावो मे जाकर काम करना नही चाहते। यही है वे लोग, जो ग्रजिया ग्रौर ग्रपने बुरे स्वास्थ्य के प्रमाणपत्र लेकर उप-जन कमिसार के दफ्तर मे पहुच जाते है, यही ग्रसली काम करन के बजाय नकली ग्रनुसधान सस्थानो मे बैठ-बठकर ग्रपने पतलून फाडा करते है "

दुबला पतला, लडका की तरह ग्रस्त व्यस्त बालावाला ग्रौर तनी हुई भौहो के नीचे गुस्से स धधकती ग्राखे लिये हुए वालाद्या इन्स्टीटयूट के सभा भवन के मच पर खडा हाकर ऐसे भाषण देता। उसे कोई मुहतोड जवाब देता ता कसे! इस व्यक्ति पर ग्रब सारा इन्स्टीटयूट गव करता था, भावी सितारे के रूप म उसकी चर्चा की जाती थी, कोई उसे यह नही कह सकता था—"मिया, तुम ग्रपनी फिक्र करो।" परशानियो से भरी इस पतझड म उसका दुबला पतला चेहरा ग्रौर भी ग्रधिक कमजोर हो गया था, उतर गया था। उसकी नजर ग्रौर भी ग्रधिक कठोर तथा पैनी हो गयी थी ग्रौर जब कभी वह दूसरो की टीका टिप्पणी करते हुए व्यग्य पूवक हसता, ता उनमे पहले स कही ग्रधिक जहर हाता। वह शव-परीक्षा कक्ष म गानिचेव के साथ पहले से कही ग्रधिक समय विताता जो कुछ ग्रब तक नही जाना-समझा था, उसे जानने-समझने की कोशिश करता ग्रौर इस तरह पूरी तरह तैयार होकर रणक्षेत्र म उतरना चाहता था।

"वोलोद्या, विद्यार्थी ग्रापको खास ता पसन्द नही करते," एक दिन गानिचेव ने उससे कहा।

वोलोद्या सिल्ली पर ग्रपनी छुरी तेज कर रहा था। उसन घडी भर साचन के बाद उत्तर दिया।

"बेशक है तो यह बहुत दुख की बात, मगर लोग ग्राम तौर पर 'बेपेन्दी के लोटो' का ही प्यार करते है। मगर मेरे ख्याल म य 'बेपन्दी के लोटे' खास हानिकारक कीडे हैं। शुरू म व वोद्का

पीकर गाते है–'प्यार न करने का मतलब है यौवन की बर
और बाद मे पीने और गाने की सम्भावना पाने के लिए अपनी
की आवाज को कुचलना और कमीनी हरकते करना शुरू करत हैं
आखिर मे इनसानी जिस्म मे केसर बनकर रह जाते हैं "
"बडे तेज़-तरार हो गये है आप," गानिचेव ने कहा। '
क्रोधी भी बहुत अधिक।"
"मैं क्रोधी होता जा रहा हू और आप दयालु," वालाद
लाश की जाघ का पट्ठा काटते हुए जवाब दिया। "बस मैं यह सम
हू कि हमारा देश आज जिन कठिनाइयो म से गुज़र रहा है,
दयालु बहुत सहायक नही हो सकते। मसलन आपने येगेनी को, ि
आप घृणा करते है, सन्तोषजनक अक दे दिये। भला क्यो? वोव
ने ऐसा चाहा होगा या फिर डीन ने? चलिये, आप दयालु हैं,
इससे तो केवल आप ही को लाभ होता है। किन्तु आपकी इस दया
की वजह से कुछ लोग इन्स्टीट्यूट, विज्ञान और न्याय का मज
समझते हैं। मगर आप डीन और झोवत्याक से अपने सम्बन्ध
गाडना नही चाहते। मैं बच्चा नही हू, सब कुछ समझता हू
"सुनिये, आपको क्या इतना भी ख्याल नही आता कि मैं आप
प्रोफेसर हू?" गानिचेव ने झुझलाकर पूछा। और मन म सोचा
"सिरफिरा छोकरा, कम्बख्त सच्ची बात कहत हुए ज़रा नही डरता
क्या नही डरता?"
दर तक दोनो चुपचाप काम करते रहे। गानिचेव परेशान
वोलोद्या माथे पर बल डाले था। आखिर गानिचेव स न रहा ग
और वाले–
'आप यही खडे हुए यव्गेनी की आलोचना कर रहे है, मग
मुझे यकीन है कि उसके मुह पर ऐसा कुछ नही कहत। आपक ख्या
म यह अच्छे दोस्त का काम है?' गानिचेव न वोलोद्या क झुक सिर
उसक बडे-बडे, चुस्त और कुशल हो चुक हाथो को आर दखा।
"आपकी यह बात तो सही नही है, वोलोद्या न कुछ दर सोचकर
जवाब दिया। "अभी कुछ दर पहल खुद आपन ही कहा था कि म
सहपाठी मुझे खास तो पसन्द नही करत। अभी तक हमार दिलो म
यह कमानी चीज घर किय हुए है कि हम मानो अपन लिए नहीं,

किसी दूसरे के लिए पढते है। मेरा मतलब है इधर-उधर से नकल करना और इसी तरह की दूसरी हरकता स काम लेना। आप दास्ती की वात करते है। जाहिर है कि मैं उन्ह अच्छा नहा लगता। कारण कि अगर यव्गेनी जसा व्यक्ति मुझे अपने जैसा समझता, ता मैं क्या होता? तब तो मैं गल म फासी का फदा डालकर मर जाना वेहतर समझता। मैं हमेशा खुलकर उसका विराध करता हू, वह यह अच्छी तरह जानता है और इसीलिए मुझस खार खाता है। मेरे ख्याल मे तो आदमी को ऐसे ही जीना चाहिए, वरना शैतान जान कि वह पतन के किस गढे म जा गिरगा। रही मुझे पसन्द न करने की वात, तो सभी ता ऐसा नही करते। मिसाल के तौर पर ओगुर्त्सोव और पीच का ले लीजिए—व मरे मित्र है "

वालोद्या के अन्दाज म कुछ-कुछ उदासी थी और इसलिए गानिचेव ने वातचीत का विषय वदल दिया।

"इन्स्टीटयूट की पढाई खत्म होने पर मरे सहायक के रूप म काम करना पसन्द करगे?" उन्हाने पूछा और जिस ढग से वोलोद्या ने उनकी ओर दखा, उसस उन्हे यह समझ म आ गया कि उत्तर क्या होगा।

"किसलिए?"

"'किसलिए?' इससे आपका मतलब?" गानिचेव हतप्रभ से हो गये। "मरी चेयर "

"नही, मैं यहा नही रहूगा। आपकी चेयर लेकर ऐस ही जीना नही चाहता, डाक्टर वनना चाहता हू। जसे कि दिवगत पोलूनिन, पास्तनिकोव, विनाग्रादोव, वागोस्लोव्स्की ने अपना जीवन शुरू किया था, वसे ही मैं करना चाहता हू "

गानिचेव को यह वुरा लगा। उन्हे मानसिक पीडा भी हुई। उन्हाने चाहा कि वोलाद्या की उनके वारे म अच्छी राय हो। इसीलिए उन्हाने कहा—

"सभी ने तो अपना जीवन ऐसे शुरू नही किया था। मिसाल के तौर पर, मैने विल्कुल दूसरी ही तरह अपनी जिन्दगी शुरू की थी। अगर मन हो, तो आइये, यहा स वाहर चले, मैं आपको सब कुछ सुना सकता हू।"

वोलोद्या ने लाश को चादर से ढक दिया। गानिचेव ने अपने औज़ार उठाकर रख दिये, अगडाई और जम्हाई ली।

"मैंने अजीब ही ढग से ज़िन्दगी शुरू की," गानिचेव ने कहा। "आप कल्पना कर सकते है कि साहित्य और भाषा विभाग के चौथे वर्ष में मैंने पढाई छोड दी थी "

वे बाहर बगीचे में आकर बेंच पर बैठ गये। गानिचेव ने अपनी मोटी उगलियो से सिगरेट मली और जलायी।

वोलोद्या किसी तरह भी इस बात की कल्पना नही कर सकता था कि गानिचेव कभी साहित्य और भाषा विभाग के विद्यार्थी थे, कविताए और लयबद्ध गद्य लिखते थे, फिर चित्रकला और मूर्तिकला के विद्यालय मे दाखिल हुए और इसके बाद सगीत-महाविद्यालय में शिक्षा पाते रहे।

"आपने डाक्टरी की पढाई कब शुरू की?" वोलोद्या ने पूछा।

"उनतीस साल की उम्र मे, मेरे अज़ीज़," गानिचेव ने जवाब दिया। "सभी कुछ छोड दिया था मैंने – मूर्तिकला, स्वरबद्ध पद रचना और हवाई किस्म की ऊल-जलूल कविताए लिखना। इतना ही नही, अपनी उस दिल की रानी से भी नाता तोड लिया था, जो मुझे अत्यधिक प्रतिभाशाली व्यक्ति मानती थी। यह सब हुआ आग बुझानेवाले एक व्यक्ति ओरेस्त लेग्रानार्दोविच स्त्रिप्यूक की बदौलत। जैसा कि आप बहुत अच्छी तरह जानते है, गृहयुद्ध के दिनो मे मेरे प्यारे कीयेव पर स्कोरोपादस्कियो, पेत्लूरो, सफेद गार्डों और जमनो, आदि ने हमले किये। सभी विजेताओ ने अनिवार्य रूप से नगर पर तोपो से गोले बरसाये, जी भरकर गोले बरसाये और हमारे शानदार नगर को आग लगायी। मुझे यह तो अवश्य ही बताना चाहिए कि उन दिनो मैं आग बुझानेवाले एक छोटे-से स्टेशन के नज़दीक रहता था। मैं अक्सर बडी दिलचस्पी से आग बुझानेवालो के दल को, जिसमें सिर्फ बूढे ही थे, मरियल घोडोवाली चू चर करती हुई पुरानी गाडियो में भयानक और लपलपाती आग से जूझने के लिए जाते देखता। गोलाबारी होती या न होती, मेरे ये बूढे वीर, स्त्रिप्यूक के नेतृत्व में – जो गालिया देने और वोद्का पीने के मामले में भयानक आदमी था – अपने ताबे के टोपो की बहार दिखाते और घोडे दौडाते हुए जाते। शहर

म जहन्नुम का नज़ारा होता, दुनिया का अन्त होते लगता मगर वे किसी के आदेश के बिना ही, क्योकि उस समय नगर म किसी का भी शासन नही था, घोडे दौडाते हुए बढते जाते। मेरे मन मे भारी जिज्ञासा जगी। स्त्रिपन्यूक न बात साफ करते हुए कहा—'बहुत मुमकिन है कि वहा कोई बच्चा लपटो म झुलसा जा रहा हो और मूख लोग उसे बचाने म असमथ हो या फिर किसी लुज पुज को आग स बाहर निकालने की उन्ह अक्ल न आयी हो। बेशक, इससे कोई बहुत बडा लाभ नही होता, फिर भी कुछ लाभ तो है, महज वक्तकटी तो नही।'"

गानिचेव की आवाज़ अजीब ढग से कापी, वोलोद्या को तो ऐसे भी लगा, मानो प्रोफेसर ने सिसकी ली हो।

"बाद म एक जलते हुए शहतीर ने मेरे स्त्रिपयूक की जान ले ली," गानिचेव ने धीरे से कहा। 'कटु स्मृतिवाले पुराने रूसी बुद्धिजीविया म कुछ पेशा के लोगा का मज़ाक उडाने की एक बहुत बुरी आदत थी। आग बुझानवाले का अनिवाय रूप से बावचिन के साथ जोडा जाता था। अपनी जवानी म मेरा बूढा स्त्रिपयूक भी बावचिना के चक्कर म रहा था, डान जुआन जैसा खासा रोमानी हीरो रहा था। पर उसके सीने म कैसा इनसानी दिल धधकता होगा कि मेरे जसे पूरी तरह वयस्क हो चुके और मा-बाप (वे काफी अमीर थे और किसी चीज़ से इनकार नही करते थे) के लाड प्यार से बिगडे हुए व्यक्ति ने अपनी ज़िन्दगी एकदम नये सिरे से शुरू की। कारण कि मैंने लाभ पहुचाने और वक्तकटी करने के सम्बन्ध म उदाहरण द्वारा सिद्ध की गयी सचाई को जीवन भर के लिए याद कर लिया।"

"यही तो बात है!" कोई गुप्त सकेत करते हुए वोलोद्या न उदासी से कहा।

"क्या बात है?" गानिचेव ने झल्लाकर पूछा।

"लाभ पहुचाने और वक्तकटी करन के बारे म। ज़ाहिर है कि आपने उसे हमेशा के लिए याद नही किया "

"सुनिये, वोलोद्या," अपने गुस्से पर काबू पाते हुए गानिचेव न कहा। "आप हर वक्त मुझ पर टीका टिप्पणी क्या करते रहते है? मैं आपको पसन्द करता हू, इसी बात का फ़ायदा उठाते हुए आप

मुझसे ऐसी मागे करते है, जिन्ह अमली शक्ल देना बिल्कुल मुमकिन नहीं। कुल मिलाकर येव्गेनी को अपने विषय की सन्तापजनक जानकारी थी ”

“मैं किसी पर भी टीका टिप्पणी नही कर रहा हू,” वालोद्या ने दुखी आवाज मे उन्हे टोका। “बात यह है कि मैं तो हर वक्त सोचता रहता हू, सोचता रहता हू और इस नतीजे पर पहुचा हू कि जीना तो चाहिए बोगोस्लाव्स्की की तरह और सभी बातो मे तो नहीं, मगर बहुत सी बातो मे उसी ढग से जीना चाहिए जैसे पालूनिन जीते थे। ढुलमुल रहने का मतलब है—न घर के न घाट के। कृपया आप मुझसे नाराज न हो, खुद मुझ भी कम परेशानी का सामना नही करना पडता, पर आपने यह क्या कहा कि येव्गेनी को विषय की सन्तापजनक जानकारी है? यदि आपके लिए ‘सन्तापजनक’ काफी है, तो अपने विज्ञान, अपने विषय के बारे मे खुद आपका क्या ख्याल है?”

“जानना चाहते है?” एकदम आप से बाहर होते हुए गानिचेव ने चिल्लाकर कहा। “मै आपसे बेहद तग आ गया हू। मैं किसी छोकरे से अक्ल का पाठ पढने को तैयार नही हू। नमस्ते!”

मै तुमसे तग आ गयी हू

गानिचेव बेच से उठे और चले गये। वोलोद्या वार्या की खोज मे चल दिया ताकि उससे खुद अपनी शिकायत कर सके। वार्या के साथ अब उसकी बहुत कम मुलाकात होती थी। वालोद्या के मानसिक तनाव के जीवन, उसकी कठोर आवाज़, कला शिक्षा और मदाम एस्फीर येव्दाकीया मेश्चेर्याकोवा प्रूस्काया के बारे मे उसके मजाक-व्यग्य के कारण वार्या उससे कुछ-कुछ कतराती थी। जीवन भर तो वार्या अपने को इस बात के लिए अपराधी नही अनुभव कर सकती थी कि वोलोद्या के पिता वीरगति को प्राप्त हो गये थे। वार्या को लगता कि वोलोद्या उसको इसलिए भर्त्सना करता है कि वह अभी तक जिन्दा है, हसती और खुश होती है, नाटको की रिहर्सल करती है, उचा नदी मे नहाती और स्केटिंग करती है।

आखिर वह मुझसे क्या चाहता है?

उसकी पहले की तरह प्यारी आखो की कडी नजर मुझस किस चीज़ की माग करती है?

आखिर काम ही इनसान की इज्जत का मापदण्ड क्यो हो?

वार्या इस समय घर पर थी, मगर रिहसल के लिए जाने को तैयार हो रही थी।

"क्या हालचाल है?" येव्गेनी न पूछा।

"अभी अभी गानिचेव से तुम्हारी चर्चा हो रही थी," वोलोद्या न जवाब दिया। "मैंने वहुत देर तक उन्ह इस बात का यकीन दिलाने की काशिश की कि शरीर विकृति विज्ञान म तुम्ह सन्तोपजनक अक देना गलत था।"

"बिल्कुल गलत था!" येव्गेनी न सहमति प्रकट की। "मेने तो उसे शानदार अक पाने के लिए रट रखा था।

"शरीर विकृति विज्ञान तुम्ह नही आता," वोलोद्या न आपत्ति की। "झोवत्याक या किसी दूसरे के प्रभाव मे न आकर तुम्ह तो फेल कर दना चाहिए था।"

"तुम्हारा दिमाग चल निकला है क्या?" यव्गेनी न पूछा।

सडक पर वार्या ने वोलाद्या से कहा कि तुम बहुत ही असह्य व्यक्ति–अपने को भस्म तक कर लेनवाला कट्टरपथी वनते जा रहे हो, कि येव्गेनी का कहना सही है कि गानिचेव के साथ तुम्हारी वात–यह एक दोस्त का काम नही है।

वोलोद्या न बुरा नही माना, सिफ हैरान हुआ और निदयता से उत्तर दिया–

"यह तुम क्या कह रही हा, वार्या? अपन से माग करना–यह क्या काई बुरी वात है? वेकार ही तुम मुझे कट्टरपथी, सो भी अपने को जला देनेवाला वता रही हो।"

"ता सतापक हा।"

"यह केवल यव्गेनी का मत है।"

"केवल यव्गेनी का ही नही!"

"तब तो और भी बुरी वात है," वालाद्या ने कहा। "तुम सभी एक ही ढग स चीजा का देखते हा। याद है न कि उस दिन जन्मदिन की पार्टी म माटे माकावेयन्का न जीवन के उद्देश्य के बार

म कैसा भाषण दिया था? यह तुम सभी का साझा दृष्टिकोण है। आशा करनी चाहिए कि कुछ समय बाद तुम्हारा, यव्गनी, चारवाज़ारी करनेवाले दादिक और उनकी उस सहेली का, जो खुद मालिश करने के फन की माहिर है एक मर्मस्पर्शी दल बन जायगा। तुम सब एक ही गिरोह के हो।"

"क्या? वार्या चिल्ला उठी। "तुम्हारा दिमाग तो ठीक है?'

'हां, ठीक है।', वोलोद्या ने बड़ाई से जवाब दिया। जीवन में मामूली बहुत ही छोटे छोटे समझौतों से पटियापन की शुरुआत होती है। ऐसी 'तुच्छताओं' से, जैसा कि तुम बचपन में कहा करती थी। उसके बाद ऊपर या नीचे जानेवाली सीढ़ी की ओर, जो भी उपयुक्त लगे बढ़ा जा सकता है—तुम, यव्गेनी गानिचेव, तुम्हारी मां, दोदिक "

जो कुछ भी अब उसके मुंह में आ रहा था, वोलोद्या सोचे-समझे बिना कहता जा रहा था। वह अब संयम खो चुका था। बात यह है कि वह तो वार्या से मदद लेने, सहारा पाने के लिए आया था, मगर वह उसके विपक्षियों उसके दुश्मनों का साथ दे रही थी।

"मैं तुमसे तंग आ गयी हूं" वार्या ने आखिर कहा। "माफ़ करना, बेहद तंग आ गयी हूं। तुम्हारे अक्खड़पन से भी तंग आ गयी हूं। इसके अलावा उपदेशकों से भी ऊब गयी हूं। हाई स्कूल की पढ़ाई मैं खत्म कर चुकी हूं और इतना जानती हूं कि वोल्गा नदी कास्पियन सागर में गिरती है। और वोलोद्या तुम तो कुछ ज्यादा ही निर्मल, बेदाग हो। सो तुम अपने रास्ते जाओ अपने को जलाओ, दूसरों को रोशनी दो और मैं अपनी पगडंडी पर चलती जाऊंगी। भगवान भला करे तुम्हारा।

खुद अपने और वोलोद्या के लिए दुःखी होते हुए वार्या ने नाक से सू सू की—सम्भवतः उसकी बात वोलोद्या की समझ में नहीं आयी थी। वार्या खुद भी अपनी भावनाओं की तह तक नहीं पहुंच पायी थी। मगर इतना साफ था कि उसके दिल को ठेस लगी थी और इसलिए वोलोद्या को उससे माफी मांगनी चाहिए थी, मगर वह बुद्धू सा चुपचाप खड़ा हुआ सिर्फ अपनी घनी बरौनियों को झपकाता जा रहा था। इस तरह से केवल वही चुप्पी साध सकता था फिर वह

मुडा और एक बार भी घूमकर देखे बिना पुस्तकालय की ओर चल दिया।

"खैर, देखना तो!" वार्या ने दृढतापूर्वक सोचा, "खुद ही आओगे रगते हुए!"

बर्फीली हवा उसके चेहरे को परेशान किये दे रही थी, मगर वह खडी इन्तज़ार करती रही—क्या वह नही लौटेगा? आखिर यह सब किस्सा क्या है? वह उसे प्यार भी करता है या नही? या वह अपने उस पागलपन के खत को भूल गया है, जो उसने चोर्नी यार के अस्पताल से उसे लिखा था? वह अजनबी की तरह मेरी तरफ देखता रहता है, कुछ भी तो नही पूछता और जब मैं उसके घर जाती हू, तो पीच के साथ पढता होता है, या घर पर ही नही मिलता या फिर हाथो मे किताब लिये सोया दिखाई देता है। आखिर यह सब कुछ है क्या?

"अगर वह घूमकर देखेगा, तो हम सौभाग्यशाली होगे," कोई आशा न होते हुए वार्या ने कामना की। "और अगर नही देखेगा तो?"

वोलोद्या ने घूमकर नही देखा।

वह ऊची गोरनाया सडक पर पुस्तकालय की ओर बढता जा रहा था। तेज़ हवा उसके खस्ताहाल, पुराने कोट को उडा रही थी, उसके कनटापे का एक सिरा फडफडा रहा था।

उसका सबसे नज़दीकी, सबसे प्यारा व्यक्ति, बुद्धू और लम्बी-लम्बी बाहोवाला यह इनसान, किन्ही समझौतो की बात को लेकर उससे दूर चला जा रहा था। कौन-से, कैसे समझौते?

उसे पुकारू?

भागकर उसके पीछे जाऊ?

जैसे भी हो, उसे रोककर वह चीज़ स्पष्ट करनी चाहिए, जो बहुत-से लोग नही समझते—जब प्यार हो चुका हो, तो छोटी छोटी बातो को लेकर झगडना नही चाहिए, रूठना और नाराज़ नही होना चाहिए। छोटे छोटे मनमुटावो से ही लोग एक-दूसरे को खो देते है, बाद मे यही छोटी छोटी बाते बतगड बन जाती हैं और तब इनसान के किये धरे कुछ नही होता!

उसे अभी इतना बड़ा रास्ता, गुजारना चाहिए!
मगर वह गया वहीं रुक गया।
उसने बहुत ही धीरे से कहा—
'वार्या! तुम जाओ भी, जरूरत नहीं मेरी!'
मगर वार्या ने यह नहीं सुना।

तब वह झल्लाई हुई और गर्व से तनकर अपना जासूसा की नयी भूमिका का अभ्यास करने के लिए स्टेम्पिन नामक कला विद्यालय की ओर चल दी। पिछले कुछ समय से उसे दुष्ट और हाँफनेवाली बूढ़ी जासूसा की ही भूमिका दी जा रही थी। वार्या ने जब यह शिकायत दिखाने की कोशिश की कि उससे यह भूमिका अच्छी नहीं हो सकती, तो मश्चेर्याकोवा प्रूस्काया ने लम्बी-लम्बी उंगलियां चटखाते हुए अपनी सदा ही थकी हुई नाटकीय आवाज में कहा—

'आह, मेरी प्यारी क्या आप इतना भी नहीं समझतीं कि प्रतिभा का विकास करने के लिए सबसे जरूरी चीज है—अभ्यास। हां अभ्यास, अभ्यास, और अभ्यास।'

'अभ्यास तो अभ्यास नहीं!' वार्या ने उदास भाव से सोचा, वह विलक्षा वृक्ष को व्यक्त करनेवाले पर्दे के पीछे से सामने आयी और बोलने लगी—

"हां, तो साथी प्लातोनोव, नहीं, श्रीमान प्लातोनोव, अगर आप मेरा भंडाफोड़ करेंगे तो अपनी जिन्दगी का खात्मा समझ लें! अगर आप टर्बाइन को उड़ा देते हैं, तो मालामाल हो जायेंगे, मोनमार्त के नाइट क्लब और मोंटेकारलो के शानदार जुआघरों में मौज उड़ायेंगे, आल्प्स पहाड़ों में छुट्टी बितायेंगे, रंगरलियां मनायेंगे

'वार्या इन आंसुओं का क्या मतलब है?" मेश्चेर्याकोवा प्रूस्काया ने पूछा।

'कोई मतलब नहीं है!' वार्या ने जवाब दिया। "वैसे ही कोई मतलब नहीं है, जैसे आपके दूसरे कुलनाम—प्रूस्काया—का कोई मतलब नहीं है। फिर प्रूस्काया (प्रशियन) ही क्या? बेल्जियन, फ्रेंच या अमेरिकन क्यों नहीं? प्रूस्काया ही क्या? यह लीजिये अपना पाठ, मैं जा रही हूं। जहन्नुम में जाये यह!'

वार्या क्लब के छोटे और नीचे मच से कूदी, गव से सिर अकडाये और धीरे-धीरे कदम बढाती हुई दरवाज़े की ओर चल दी। मेश्चेर्याकोवा-प्रूस्काया कुछ क्षण बाद सम्भली और फेरीवाली की तरह चिल्ला उठी –

"निकल जाओ! बदतमीज़! म तुम्हारा नाम काट दे रही हू! अब कभी यहा नही आना!"

"आप ऐसे चिल्ला क्यो रही है?" बारीस गूबिन न पूछा। "यह क्या कोई पूजीवादी प्राइवेट कम्पनी है? यह सयुक्त विद्यार्थी नाटक मण्डली है और हम यहा किसी को भी ऐसे

गूबिन भी वार्या के पीछे पीछे बाहर चला गया।

"काई चिन्ता न करो, अब वह डाट-फटकार के अपने इन तौर-तरीका से काम लेना व द कर देगी,' उसने वार्या से कहा। "भगवान की दया से अब हम बच्चे नही है। बस, काफी हा चुका।"

वाया चुप रही।

"तुम्हारे साथ कोई बुरी बात हो गयी है क्या?" बोरीस ने पूछा।

वार्या ने कोई जवाब नही दिया। बोरीस कुछ दर चुप रहा, फिर उसन विदा ली, मगर अपनी गली की तरफ नही मुडा। वह किसी आशा के बिना ही बहुत अर्से से, उसी दिन से वार्या को प्यार करता था, जब वालोद्या न रेलवे लाइन पर पडे चरवाहे छोकर की टाग पर रक्तवध बाधा था। मगर वह सदा ही यह समझता था कि वालोद्या का व्यक्तित्व उससे अधिक प्रभावशाली है। इसीलिये वह कभी उनके मामले मे दखल नही देता था। किन्तु आज उसकी हिम्मत बहुत बढ गयी और उसन पूछा –

"क्या वोलाद्या के साथ तुम्हारा झगडा हा गया है?"

"तुम्हारा इससे क्या मतलब है?" वार्या न जवाब दिया। "नमस्त कह चुके हो, अब जाओ लगडाते हुए अपने घर। मुझे अग रक्षक की जरूरत नही है।'

बडी चुभती हुई बात वह देती थी कभी-कभी यह वाया। "लगडात हुए जाओ घर!" भला लगडाते हुए क्या?

ग्यारहवा अध्याय

बिगुल बजता है

रसोईघर मे शाम का खाना खाया जा रहा था। रादिग्रान मेफोदियेविच के घर ग्राने के सम्मान म मेज़ पर झालरवाला गुलाबी मेजपोश बिछाया गया था। नेप्किन भी थे, कलफ से ऐसे ग्रकडे हुए कि टीन के टुकडे से लगते थे। नेप्किनो की ही चर्चा चल पडी। दादा ने दु ख से गहरी सास लेकर कहा—"कलफ लगाने के काम म तो मैं निपुण हो ही नही पाता। कारण कि एक तरह के कलफ से वे ग्रकड जाते है ग्रौर दूसरी किस्म के कलफ से नम रह जाते हैं।'

"हटाइये भी पिता जी," रादिग्रोन मेफोदियेविच ने कहा। "क्या करना है हम कलफ लगे नेप्किनो का?"

"जो दूसरे करते है, वही हम," ग्रपनी टेढी उगली को ऊपर उठाते हुए दादा ने जवाब दिया। "तुम्हारी भूतपूव पत्नी नेप्किना के साथ खाने की मेज़ पर बैठती है, तो तुम उससे किस बात म कम हो। वरना वह लगेगी ज़बान से चपर चपर करने—मरे भूतपूव बदकिस्मत पति की कोई भी चिन्ता नही करता। किसलिए हमे यह सब सुनने की ज़रूरत है?'

दादा न ग्राज सुबह ही कुछ वाद्का ढाल ली थी ग्रौर ग्रब "इसो खमीर का कुछ-कुछ ग्रौर उठात" जात थ। वार्या के शब्दा म व साल म एक-दो बार ही ऐसे "ऐश करते थे"। व बेटे द्वारा लनिनग्राद स खरीदकर लाया गया नया तीन 'पीसवाला' सूट पहने थ। व मज पर काफी झुककर ग्रौर गदन का ग्रागे की तरफ बढाय हुए खा पी रहे थ ताकि कोई चीज़ मुह म न जाकर सूट पर न गिर जाय।

"मौज हो रही है?" यव्गेनी ने रसाईघर म ग्राकर पूछा।

"जी वहला रहे है," रोदिग्रोन मेफोदियेविच न जवाब दिया। "इराईदा को वुला लो कुछ देर हमारे साथ बठो।"

"यह मुमकिन नही है, पापा। हम किसी ऐसी जगह निमन्त्रित है जहा देर से पहुचना ठीक नही।

येव्गेनी वहुत सावधानी स, नज़र वचाकर पिता को गौर स देख रहा था। रादिग्रोन मेफादियेविच खाली जाम का उगलियो के वीच घुमा रह थे। वे ग्राज काफी पी चुके थे, मगर एकदम सजीदा थे, सिफ रह रहकर गहरी सास लेते थे, साच म डूब जाते थे ग्रौर कभी-कभी किसी फौजी माच सगीत की सीटी बजा रहे थे। जहाज़ियो की धारीदार पोशाक मे उन्ह बठे देखना ग्रजीब सा लगता था। कम से कम घर लौटने की इस पहली शाम को तो वे चमक्ते हुए दो पदकावाली वर्दी पहनकर वठ सक्ते थे। मगर व वैठे हुए जाम घुमा रहे थे।

"मा का क्या हाल है?" पिता ने ग्रचानक ही पूछा।

"काफी ग्रच्छा ही कहना चाहिए," येव्गेनी ने जवाब दिया। "ग्रब वह नगर की एक प्रमुख दर्ज़िन है। दोदिक ने तो उसे थियेटर मे नौकरी दिला दी है, उसन पाशाको के इतिहास का ग्रध्ययन किया है ग्रौर वहा तरह-तरह के राजाग्रो-महाराजाग्रो—लूइयो ग्रौर फर्दीनादा—को पाशाके पहनाती है।"

"काई निजी सस्था हुई न?"

यव्गेनी न कुर्सी पर फैलते हुए जरा जम्हाई ली।

"निजी क्या? मैं ता ग्रभी ग्रापका वता चुका हू कि वह थियेटर म काम करती है ग्रौर सभी वहा उसकी वडी इज्ज़त करते है। दोदिक कोई बुद्धू नही है! निजी सस्था होने का मतलब है कि फौरन टैक्स-इ स्पक्टर, ग्रौर दूसरी कई तरह की झयटे खडी हो जायेगी "

"तो वात समझ म ग्रा गयी,' रोदिग्रोन मेफोदियेविच न सिर हिलाकर हामी भरी। जब काई चीज उनकी समझ मे विल्कुल नही ग्राती थी, तब व हमेशा ऐसे ही कहते थ कि बात समझ मे ग्रा गयी ग्रौर सिर हिलाकर हामी भरते थ। "ग्रार तुम क्या तीर मार रह हो?"

येव्गेनी ने शब्दों को लटका-लटकाकर बोलते हुए कहा कि मैं लगभग डाक्टर बन चुका हूँ, कि इराईन्दा के साथ शादी करके मज़े किसी तरह की कोई शिकायत नहीं, कुल मिलाकर ज़िन्दगी ढंग से चल रही है, कि इराईन्दा के पिता ने लगभग यह गारंटी दे दी है कि मुझे इन्स्टीटयूट में ही जगह मिल जायगी।

'तो क्या तुम वैज्ञानिक बन गये हो?" रोदिग्रोन मफोदियविच ने पूछा।

वैज्ञानिक बना या नहीं, यह तो मैं नहीं कह सकता, मगर हम विद्यार्थियों का एक विज्ञान मण्डल अवश्य है और हमने कुछ विषयों पर शोध-कार्य किया है। हमारा एक शोध-लेख तो इन्स्टीटयूट की पत्रिका में भी छपा था।

यह 'हमारा' क्या बला है?

हमारे मण्डल के सदस्य।"

आप कितने लोग हैं?

'सोलह।

"मतलब यह हुआ कि समूह—बात समझ में आ गयी। पहले अगर त्सीगेर, किसल्योव या मंदेलेयेव अकेला होता था, तो तुम सोलह हो। वोलोद्या ने भी तुम्हारा साथ दिया?'

येव्गेनी ने अपनी आँखों में झलकनेवाला गुस्सा छिपाने को पलकें झुका लीं। यह ऊबा देनेवाला निर्दयी मुझसे क्या चाहता है? हाथ धोकर पीछे क्यों पड़ गया है? इस व्यंग्यपूर्ण लहजे का क्या मतलब है? मान लिया कि वह स्पेन से लौटा है, वहाँ उसने दुश्मन से मोर्चा लिया है, साथी दोस्तों को कब्र में सुलाकर आया है, मगर यह इसकी नौकरी है, इसका काम है, कर्त्तव्य है। अगर मुझे भेजा जाता, तो मैं भी चला गया होता। कोई भी विद्यार्थी ऐसा ही करता। क्या वे सोवियत लोग नहीं हैं?

'मतलब यह कि सब ठीक-ठाक है?" रोदिग्रोन मफोदियविच ने येव्गेनी से पूछा।

"बिल्कुल ठीक-ठाक है।" येव्गेनी ने कुछ चुनौती के से अन्दाज़ में जवाब दिया।

'अगर ऐसा है, तो अच्छी बात है,'

"मैं भी ऐसा ही समझता हू। मै अपने काम का रास्ता भी चुन चुका हू। प्रशासन के क्षेत्र म काम करूगा। निकोलाई इवानाविच पिरोगाव का कहना था कि मार्चे पर डाक्टर सवप्रथम तो प्रशासक हाता है। पापा, इस क्षेत्र म अभी बहुत कुछ करना बाकी है।"

"तुम्हारा मतलव, प्रशासन के क्षेत्र म?" रोदिग्रान मफोदियेविच न जानना चाहा। "शायद इसी क्षेत्र म ता हमारे यहा कुछ कमी नही है। सचालक तो बहुत ह, मगर काम करनेवाले "

यव्गेनी ने तश्तरी म से पनीर का टुक्डा उठाकर मुह मे डाला, उस चबाया और गहरी सास छोडकर कहा —

"यह मामला इतना सीधा-सादा नही है "

खुशकिस्मती से इसी वक्त टेलीफोन की घटी वज उठी और येव्गेनी के लिये यहा से खिसक जाने का बहाना बन गया। दादा और रोदिग्रान मेफोदियेविच ही खाने की मज़ पर वठे रह गये। वरामदे म येव्गेनी ने, इराईदा से कहा —

"यह कामरेड तो मुझे पागल किये दे रहा है। वह अपने तीसरे दशक का ही राग अलापता जा रहा है और हम अब दूसरे ज़माने म जी रहे है। दूसरे ज़माने के दूसरे ही गान। कुल मिलाकर '

उसने हाथ झटककर बात अधूरी हो छाड दी।

"फिर भी वे बहुत थके थके से नज़र आ रहे है,' इराईदा ने नि श्वास छोडा। "मेरे पापा और प्राफेसर गेन्नादी तारासोविच को बुलाकर इन्हे दिखाना चाहिए। हे भगवान, इस कुत्ते की वजह से तो मेरे नाक म दम आ रहा है," शारिक का रसोईघर से निकलते देखकर वह झल्ला उठी। "अजीब मज़ाक है — घर म बच्चा है और यही हर वक्त यह आवारा कुत्ता भी बना रहता है "

"खर, तुम अब कपडे पहनकर तैयार हो जाओ, नही तो दर हो जायगी," येव्गेनी ने उसकी बात काटकर कहा। "और बाल ढग स बना लेना। य बिखरे हुए बाल तुम्हारे चेहरे पर ज़रा भी नही जचते। हा, गहने भी जरा कम पहनना, लोगा का ध्यान अपनी तरफ खीचन म क्या तुक है। हम ता साधारण सोवियत विद्यार्थी ठहरे। तुम्हारी यह अजीब सी आदत हा गयी है कि जब कभी हम किसी पार्टी मे जाये, तो वहा लाग दीदे फाड फाडकर तुम्हे देखे।'

"आह, यह चख-चख बन्द करो।" इराईदा ने दुखी होकर कहा। रसोईघर में दरवाज़े के फटाक से बन्द होने की आवाज़ सुनाई दी। शिष्ट आया पाउलीना गूगोव्ना, जिसे इसलिए नौकर रख लिया गया था, कि उसका कुलनाम फोन गेत्स था, स्तेपानोव के नन्हे पोते के लिए जर्मन भाषा में लोरी गा रही थी। गूगोव्ना का बड़ा सारा सन्दूक बरामदे में रखा था और इस बुढ़िया ने मानो सारे घर को यह धमकी सी दे रखी थी कि वह अपनी सारी अद्भुत दौलत, जिसका केवल एक हिस्सा ही ताला लगाकर बन्द किये हुए सन्दूक में सुरक्षित था, यूरा को विरासत के रूप में दे जायेगी।

"बापू, तुम्हारी इसके साथ कैसी निभ रही है?" रोदिओन मेफादियेविच ने अपने लिए केक का टुकड़ा काटते हुए पूछा।

"कैसी निभेगी? जैसी निभनी चाहिए," दादा मेफोदी ने जवाब दिया। "यह मुझे फोन्का, उल्लू और बूढ़ा खूसट कहती है और मैं भी उसे चुड़ैल या कुछ ऐसा ही कह देता हूं, जैसा कि कभी गांवों में कहा जाता था।"

"पूरी तरह वैसे ही?"

"कसर छोड़ने की ज़रूरत ही क्या है?"

"मतलब यह कि ऊबने की नौबत नहीं आती?"

बूढ़े ने कुछ देर सोचकर सविस्तार उत्तर दिया—

"ऊब महसूस करने का सवाल ही क्या पैदा होता है? वार्या को खिलाना पिलाना, घर को झाड़ना बुहारना, खाना पकाना, बाज़ार से सौदा सुलफ लाना और ईंधन की चिन्ता करना, यह सब तो मुझे करना ही पड़ता था। गूगोव्ना तो सिर्फ बात ही करती है, काम तो नहीं करती। जेन्या और ईरा भूखे घर आते हैं, तो उन्हें गर्म खाना किससे मिलता है? दादा से ही न। तो एक-एक जाम और हो जाये?"

"हां, हो जाये।"

रोदिओन मेफादियेविच ने ठंडी वोदका जामों में डाली। दादा ने बड़े प्यार से अपना जाम उठाया, खुरदरे हाथ में कुछ क्षण तक उसे थाम रखा और अचानक बड़ी मधुर आवाज़ में पूछा—

"यह कम्बख्त इतनी मज़ेदार क्यों है? बताओ तो मेफादियेविच?"

दादा अब अपने बेटे का पैतक नाम स सम्बोधित करते थे, क्योकि उन्हे ऐसा ही उचित प्रतीत होता था। दादा की आखो म अब खुशी की चमक थी, उन्होने काफी पी ली थी, पेट भरकर खा लिया था और अब मगन होकर उस मेज़ के करीब बठे थे, जो उन्होने अपने बेटे रोदिग्रान मेफोदियेविच के घर आने की खुशी मे तरह-तरह की चीज़ो से सजाई थी। मेज पर अग्लाया के गुर के मुताबिक पकाये गये केक थे, भुना हुआ मास था और तवे पर तले तथा सू सू करते हुए सासज थे। अचार के खीरे भी बढिया थे और अचारी लाल गोभी भी दूसरी चीज़ो के बीच बडी शोभा दे रही थी। हर चीज़ "बढिया और ढग की थी", जैसा कि कुछ जाम चढाने के बाद दादा कहा करते थे।

"तो तुम सम्मानित होकर लौटे हो," मूछ दाढी को पोछते हुए दादा ने कहा। "सरकार की तरफ से तमगे और पदक पाकर, ऊचे पुरस्कार पाकर। बधाई है तुम्हे। लेकिन प्यारे बेटे, तुम गये कहा थे?"

"जहा गया था, वहा अब मै नही हू, बापू।"

"मेरे दिल को ठेस लगा रहे हो, मेफोदियेविच। मैं बात को पचाना जानता हू।"

"वह तो है ही, मगर उसकी एक कापी फौरन बाज़ार म पहुच जाती है। हमारा सारा मुहल्ला तुम्हारे राज़ जानता है।"

दादा ज़रा परेशान से होकर यह ज़ाहिर करते हुए झटपट ओवन की तरफ चले, मानो वहा पोलिश भाजन "विगोस" कुछ अधिक पक गया हो। दस्तेवाली चपटी कडाही को बाहर निकालकर बोले—

"मेफोदियेविच, सुनो, हमे किसी वक्त हिसाब किताब देख लेना चाहिए। घर के खर्च के लिए भेजे गये तुम्हारे पैसो म से काफी रकम बच रही है। कब लोगे उसे?"

रोदिग्रान मेफोदियेविच ने जवाब दिया कि वे कभी यह रकम नही लेगे और बेध्यान से होकर अपने सामने की दीवार को ताकते हुए केक के छोटे छोटे टुकडे तोडकर खाने लगे।

'कभी न लेने से क्या मतलब तुम्हारा?" दादा ने बुरा मानते हुए कहा। वे बहुत समय और बडे जतन से पैसे जोडते रहे थे। इसके लिए वे बाज़ार मे मोल-तोल करते, सस्ता ईंधन ढूढते, खुद

चादर ग्रौर तौलिये धाते ग्रौर ग्रगर वार्या को फुरसत न हाती, ता फश तक खुद धोते। ग्रौर ग्रब वेटे न कह दिया था कि वह कभी पैसे नही लेगा। "नही, मफादियेविच," दादा विगडकर वाल, "यह सब नही चलेगा। मैं तुम्हारे घर के लिये भेजे जानेवाल खच पर बोझ नही हू। मैं तुम्हार लिय ग्रपनी पूरी कोशिश करता हू, हर दिन वार्या स हिसाव लिखवाता हू ग्रौर तुम कहते हो—कभी नही लूगा यह रकम।"

"तो इसी हिसाव किताव के झझट के लिय मैं तुम्हे यह सजा देता हू कि तुम इस वची हुई रकम स ग्रपन लिये जाडा का ग्रावरकाट खरीद लो," रादिग्रोन मफादियेविच ने कडाई स कहा। "कल हम दुकान पर चलगे ग्रौर तुम्हारे लिये फर लगा कोट तथा फर की टापी खरीद लगे।"

दादा ने कुछ दर सोचकर जवाव दिया—

"ऐसा नही किया जा सकता। गूगोव्ना जलन से मर जायगी।"

"मर जायेगी, तो दफना देगे।"

"नही ऐसा नही किया जा सकता।" दादा न दोहराया। "ग्रगर ऐसी ही बात है, तो वार्या के लिये फर का कोट खरीद लेना वहतर हागा। मैने यही, नजदीक ही फर के काट विकते देखे हैं।"

"तुम्हारी इस रकम के विना ही वार्या के लिये फर का काट खरीद लिया जायेगा ग्रौर तुम्हे जाडे का ग्रोवरकोट तो खरीदना ही होगा।"

"मुझे इसमे कोई दिलचस्पी नही है। हा, वाया को जरूर फर का नया कोट खरीद देना चाहिए। लडकी ग्रपने पूरे जोवन पर है, शादी-ब्याह के लायक है। उस मौके के लिये कम्वल, तकिये ग्रौर कुछ ऐसी ही दूसरी चीजें भी खरीद लेनी चाहिये "

रोदिग्रान मेफोदियेविच के माथे पर वल पड गये, वार्या की शादी का विचार उन्हे कभी भी ग्रच्छा नही लगता था।

"ग्रच्छा, हटाग्रो इस वात को," उन्हाने कहा। "यही बहतर हागा कि ग्रफानासी की याद म एक एक जाम पी लिया जाय।"

दरवाज़े पर किसी न लम्बी घण्टी बजायी। गूगोव्ना करीब हात हुए भी दरवाजा खालन नही गयी। रादिग्रोन मेफोदियेविच न दरवाजा

खोला और वोलोद्या का सामने पाकर वही, दहलीज के बाहर ही उसे गले लगाया। वोलोद्या के पीछे अग्लाया और वार्या खडी थी।

"पापा, मैं इसे प्रयोगशाला से खीच लाई हू," वार्या ने कहा। "तुम हैरान न होना कि इससे ऐसी अजीब सी गध आ रही है "

रोदिग्रोन मेफादियेविच और अग्लाया ने भी एक दूसर का चूमा। दादा ने फुर्ती स मेज़ पर साफ तश्तरिया और जाम रख दिये तथा सुराहिया म अदरक और कारट की कोपला स सुगधित और लाल मिचवाली वोदका भर दी।

"ता बैठो तुम लोग," रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने कहा। "अफानासी की याद म जाम पी ले और इसके वाद मैं तुम्ह सब कुछ बताऊगा।'

रोदिग्रोन मेफादियेविच ने अपने गुदे हुए तथा काहनी तक नगे हाथ म जाम लिया और उसे थाम हुए धीमे धीम कहने लगे—

"हम एक कम्युनिस्ट, उक्रइनी, व्लादीमिर, तुम्हारे पिता, अग्लाया, तुम्हारे भाई और मेरे सबस प्यारे दोस्त अफानासी पेत्रोविच उस्तिमेन्को की याद म यह जाम पीते है, जो स्पेनी जनता की आज़ादी के लिए सघप करता हुआ बहादुरी से शहीद हुआ। यही कामना है कि मड्रिड की धरती म उसे चैन मिले "

दादा ने अपने ऊपर सलीब बनायी और सभी ने चुपचाप अपने जाम पी लिये। खान की इच्छा न होने पर भी वोलोद्या ने केक का टुकडा मुह म डाल लिया। गूगाव्ना फिर स लोरी गाने लगी। रोदिग्रोन मफोदियेविच ने सिगरेट जला ली और उनकी नज़र बाझिल तथा कठोर हो गयी।

"सक्षेप म यह," वे बताने लगे। "सात 'जुकर' हवाई जहाज़ 'वी' की शक्ल म उडत हुए मैड्रिड की तरफ बढ रहे थे। यह मैने अपनी आखा से दखा था। बाकी जा हुआ, वह मैंने नही देखा, लागा से सुना है। 'जुकर' तीन इजनोवाल भारी हवाई जहाज़ थ और जमन, फासिस्ट हवाबाज़ उन्ह उडा रहे थ। अफानासी ने अकेले ही उनसे टक्कर लेनी शुरू कर दी। जब तक कि दस्त के बाकी हवाई जहाज़ आसमान म उडे, जिनम शायद कुछ गडबड हो गयी थी, उस अकेले को शायद बहुत मुश्किल का सामना करना पडा हागा। इस बार

'जुकरा' ने मैड्रिड पर बम नहीं गिराये। अफानासी ने दो हवाई जहाजों का निशाना बनाया और दोनों ही तबाह हो गये। इसके बाद "

रोदिग्रोन मेफ़ादियेविच ने लम्बा कश खींचा और धीमी, मगर साफ आवाज़ में कहा—

'इसके बाद उसके हवाई जहाज़ को आग लग गयी। उसने आग बुझानी चाही और इसी कोशिश में खुद जल गया। हमारा अफानासी पत्रोविच मड्रिड के ऊपर ही जल गया। वहां, मड्रिड में ही उसे दफनाया गया। कह नहीं सकता कि कितने हज़ार लोग थे वहां। माताएं अपने बच्चों को गोद में लिये हुए थीं, हवाबाज़, टकची और पैदल सैनिक उसके मातमी जुलूस में शामिल थे। सभी इस बात का महत्त्व समझते थे कि वे रूसी हैं। ताबूत को हमारे यहां की तरह नहीं बल्कि खुला और सीधा खड़ा करके ले जाया गया। ऐसा लगता था मानो अफानासी सभी स्पेनियों के साथ चला जा रहा हो। आग ने उसके चेहरे को नहीं झुलसा था, सिर्फ बाल ही जले थे नाग 'इंटरनेशनल गा रहे थे। कुछ स्पेनी गाने और 'वार्शाव्यान्का' भी गाया गया तथा कब्रिस्तान में तीन बार गोलियां चलाकर सलामी दी गयी। उसकी कब्र पर सफेद पत्थर रखा गया है "

वोलोद्या टकटकी बांधकर रोदिग्रोन मेफ़ादियेविच को ताक रहा था। अग्लाया धीरे-धीरे सुबक रही थी। उंगलियों से आंसू पोंछती हुई वार्या ने खिड़की की ओर मुंह कर लिया था। दादा मेफ़ोदी माथे पर बल डाले हुए उदासी से यह सारी घटना सुन रहे थे।

"मेरे पास फोटो थे," रोदिग्रोन मेफ़ोदियेविच ने अपनी बात जारी रखी, "मगर उन्हें नष्ट करना पड़ा। कुछ टिप्पणियां भी थीं और व्लादीमिर, तुम्हारे नाम लिखा हुआ तुम्हारे पिता का खत भी था, जो उसने इसलिये लिख दिया था कि अगर कुछ भला-बुरा हो जाये, तो लेकिन कुछ भी तो बाकी नहीं बचा जो कुछ मुझे याद है, वह बता देता हूं। अपने आखिरी दिनों में अफानासी अक्सर स्पेनी लोगों से यह कहा करता था—'थक गये, तो अपने को झकझोरो, कमज़ोर हो गये, तो अपनी ताकत बटोरो, भूल गये, तो याद करो—क्रान्ति तो समाप्त नहीं हुई।' इसके अलावा वहां हम लार्ड बायरन की रचनाएं पढ़ा करते थे। बायरन वहां इस कारण और भी अधिक

अच्छे लगते थे कि उन्हाने यूनान के लिए बहुत कुछ किया था। अफ़ानासी हसते हुए, मानो मज़ाक म, लेकिन जा मज़ाक नही होता था, अक्सर कुछ पक्तिया दोहराया करता था। उनमें से थोडी सी मुझे याद रह गयी है—

जाग रहे है जब मुर्दे भी—क्या मैं सा सक्ता?
तानाशाहा से जग लडता—पीछे हो सकता?
फसल पकी, क्या उसे काटने म मै देर करू?
कटक बिस्तर म मैं कसे निद्रामग्न रहू!
काना म आवाज़ बिगुल की अब हर दिन आय
दिल भी दोहराये

वह ऐसा कुछ ही कहा करता और मुझसे पूछता—'रादिग्रान, बिगुल बजता है न?' मैं उस जवाब दता—'बजता है! खास तौर पर तुम्हारे मज़ेदार भोजना की बदौलत। कभी ज़तून के हरे फल है, तो कभी उसी के काले रस म ही बनी समुद्रफेनी या फिर काई अन्य स्पेनी ज़ायक़ेदार चीज़।' बस, इतना ही। मेरे पास बताने को और कुछ नही है।"

रोदिग्रान मफ़ादियेविच ज़ोरा से सिगरेट के कश खीचने लगे और देर तक खामोश रहे। अपने महमाना को बिल्कुल भूलकर ऐसे खामाश रहना उनके लिए काई नयी बात नही थी। शायद ख्यालो मे खा गये थे, उन्हे वहा छोडी गयी कब्रे और वे ज़िन्दा लोग याद हा आये थे, जा अभी तक कटील तारो के पीछे फ्रासीसी बन्दी शिविरा मे यातनाए सह रहे थे। शायद गहरे काले फ्राक पहने उन औरतो का ध्यान आ गया था, जो मरे बच्चा को छाती स चिपकाय हुए कार्दोवा प्रान्त के छोटे स रामब्ला गाव के धूल भरे चौक म पडी थी। अपन दिवगत दास्त अफ़ानासी के साथ रोदिग्रोन मेफादियविच ने फासिस्ट विराधी लोगो की इन बीवियो को देखा था, जिनकी पत्थर मार मारकर जान ली गयी थी। उस समय एक दूसरे की आखा मे झाकते हुए वे दोनो समझ गय थे कि मस्ती से नाचती गाती दुनिया के आकाश पर कोई नई, अब तक अनदखी अनजानी क्रूरता के बादल घिर रहे है। अभी तक काई निश्चित रूप न धारण रखनेवाली, अस्पष्ट और घने कुहासे

की ओट म छिपी छिपायी इस क्रूर शक्ति का फौरन और पूरे जार मे विरोध करना जरूरी है, अन्यथा अपने छिछोरपन क कारण वत्तमान म ही जीन वत्तमान के ही गीत गाने अपन राष्ट्रपतिया और मन्त्रिया के बार म चुटक्ल तथा मजाकिया क्स्सि पढन तथा रोटी और मना रजन के लिए सघष करनेवाली यह दुनिया जल्द ही, बहुत जल्द ही धुआ छोडते हुए खण्डहरा के अम्बारा म बदल जायगी, जिनके ऊपर स्वास्तिक के चिह्न वाल बडे-बडे बममार हवाई जहाज विजयी गडगडाहट के साथ उडान भरते दिखाई देंगे।

'तो शुरू हो गया!" उस समय रोदिग्रोन मेफादियविच ने कहा था।

'पूरे जोर शार स!" अफानासी ने जवाब दिया था।

'एक घटना और हुई थी, अपनी पैनी और कठोर दृष्टि स वालोद्या को ताकत हुए रोदिग्रोन मेफोदियविच कहत गये। "तुम्हार पिता के साथ हम रामब्ला गाव म से गुजर रह थे। वहा सभी फासिस्ट विराधिया की बीविया का बच्चो के साथ, यहा तक कि गा" के बच्चो के साथ धूल भर चौक म बाहर लाकर दिन दहाड पत्थर फेक फेंककर मार डाला गया था। ये औरत एक दूसरी की कमर म बाह डाले हुए सटकर खडी हो गयी और उन पर बडे-बडे पत्थर फेंके गये

"क्या इसके बाद भी चुप रहा जा सकता था?' रादिग्रोन मेफोदियविच ने पूछा। "यहा तक कि मै और अफानासी भी, जो कोई बडे जिम्मेदार और राजकीय नेता नही है, इतना समझ गये कि यह मुसीबत टलनेवाली नही है कि यह पूरे जोर शोर स बढी आ रही है। और, जसा कि वे मानते हैं, यह मुसीबत करवट यह ल रही है कि दो दुनियाए दा सामाजिक व्यवस्थाए साथ-साथ नही रहेगी। केवल वही एक सामाजिक व्यवस्था रहेगी, जा उनक विजता उनके सामने लाकर रख दगे। वहा उन्होने इस चीज को परखा कि यह पुरानी दुनिया हमारे विरुद्ध मिलकर एक होती है या नही? अगर एक नही होती, तो हम तयारी करके अपना काम शुरू कर दगे। कारण कि अगर वहा दुनिया विरोध करने के लिए एक नही हुई तो कही और कभी भी एक नही हो सकेगी। उसे, हिटलर को तो यही चाहिये

कि कोई भी, कही भी किसी के साथ एका न कर पाय। तब वह एक-एक पर हाथ साफ करना शुरू करेगा। बात तुम्हारी समझ मे ग्राई?"

"ग्रा गयी!" वोलाद्या न जवाब दिया।

"वोद्का पी लो," रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने सलाह दी। "घर पर मरा ग्राज यह पहला दिन वडा ग्रजीव-सा रहा है—वोदका ही पीता जा रहा हू। सचमुच वडी हैरानी की बात है कि इतना लम्बा ग्रर्सा गुज़र गया ग्रौर मैं एक बार भी ढग से नही सो पाया।"

रोदिग्रान मेफादियेविच ने चिन्तित दृष्टि से ग्रपने इद गिद देखा ग्रौर सभी ने इस बात की ग्रोर ध्यान दिया कि यह मज़बूत, समुद्री हवाग्रा से पूरी तरह सलौना बनाया गया ग्रादमी, जो हमेशा शान्त रहता था, जा जीवन की सभी परिस्थितियो म मुस्कराया करता था यह गठीला वदन ग्रौर सफाचट चेहरेवाला स्तेपानोव, जो गहयुद्ध के दिनो की ग्रटपटी कविता को याद करते हुए ग्रपन को मज़ाक मे "बाल्टिक की कीर्ति" कहना पसद करता था, बहुत बुरी तरह से थक गया है।

"तुम्ह, ठण्ड ता नही लग गयी, पापा?" वार्या ने धीरे स पूछा।

रोदिग्रान मेफोदियविच ने एक हाथ से उसे ग्रपने साथ चिपकात हुए दुखी ग्रावाज़ म कहा—

"स्वस्थ, बिल्कुल स्वस्थ हू, बिटिया। सिफ कुछ थक गया हू ग्रौर मेरे दिमाग म विचार भी कुछ चिन्ताजनक ग्राते है। मिसाल के लिय, हम ग्रब भी ऐसा लगता है कि फासिज़म हमारे करीब स वैसे हा निकल जायेगा जैसे बरखा के बादल। मगर वह हमार करीब स निकल नही सकता। मैं बहुत पहले स, स्पेन जाने के पहल से ही सब कुछ बहुत ध्यान से देख रहा हू, सोच विचार कर रहा हू। ग्रब इसी बात का लो कि जमन हवाबाज़, कोई गूगा एकेनर किस लिए ग्रपने 'डी० ग्रार० – ३ फ्रीड्रिप्सगाफेन' म सयुक्त राज्य ग्रमरीका पहुचा? ग्रमरीकियो पर नैतिक दबाव डालने, यह बताने के लिए ही कि दखो, हम कितने ताक़तवर होते जा रहे है। जमन जहाज़ 'ब्रेमेन' ने ग्रपने बदरगाह म नही, न्यूयाक के बदरगाह म नीला फीता क्या जीता? दहशत पैदा करन के लिए ही ता! उनके हवाबाज़, उनके मुक्केबाज़,

उनकी फिल्म—सभी जमन ताक्त, जमन विजय, जमन श्रष्ठना और जमन घूसे का गाना गात है। और यूराप तथा अमरीका के बुद्धू लोग अपने नाचा म मस्त है थेलमान के जेल म हाने का क्या मतलब है? 'हज़ार साला साम्राज्य'—क्या अथ है उसका? जमन प्रतिनिधिमण्डल जेनवा से चला गया—किस लिए? अब लदन म अग्रेज जमन सहयोग सघ' की स्थापना की गयी है, अग्रेजा म हिटलर के विचारा का प्रचार किया जाता है, लाड माऊटटम्पल को, जो वर्तानवी रसायन उद्याग का जाना माना आन्मी है, इसका अध्यक्ष बना दिया गया है। चेम्बरलन मिट्टी का माधव है। वह या तो बिका हुआ है या एकदम काठ का उल्लू है। इसलिए मैं तो यही समझता हू कि हमारी पथ्वी हमारे सिवा और किसी पर भरासा नही कर सकती।"

इसका मतलब है कि जग होगी?" वार्या ने पूछा।

"वडी महत्त्वपूण घटनाए घटनेवाली है," अग्लाया की ओर मुह करत हुए रोदिओन मेफादियेविच ने कहा, "हमारा कायभार यह है कि हमारी जनता खास तौर पर हमारे युवाजन किसी भी क्षण मोर्चे पर भेजे जाने के लिए तैयार रहने चाहिए। अग्लाया पेत्रोव्ना, तुम शिक्षा विभाग म काम करती हो तुम मरी सलाहा को ध्यान म रखा। अगर हम अपने युवाजन को विचारो की दष्टि से तयार नही करत, तो हमारे फौजी दफ्तर इस काम को सिरे नही चढा सकगे। हमारे यहा अभी भी इस मामले मे गम्भीरता की कमी है, लापरवाही दिखायी जाती है मगर मैं जो अब यह सब आखो से दख आया हू और अनुभव कर चुका हू, कह सकता हू कि काफी मुश्किल काम आनेवाला है हमारे सामन। शायद हम इस बात के लिए जाम पीना चाहिये कि जो मने देखा है और जो सौभाग्य से तुम लागा ने नही दखा हम अन्त मे उस पर विजय पा लगे?

'यह किस पर विजय पाने की बात हो रही है?' दादा ने पलक झपकाते हुए पूछा।

"दुश्मन पर।' रादिग्रान ने मुस्कराये विना उत्तर दिया।

"अगर ऐसी वात है तो मैं भी सब के साथ हू,' दादा ने कहा, जो वार्या की उपस्थिति म पीते हुए हमेशा घवराहट अनुभव करते थे। फिर अग्लाया को सवाधित करते हुए वोल— तुम चाय म

सूखी रसभरिया मिलाती हो न? यह समझदारी की बात है। खच भी कम होता है और गध भी बिल्कुल घास फूस जैसी आती है।"

"चाय से तो घास फूस की गध नही आनी चाहिए," रोदिओन मेफादियेविच न कहा। "रही कम खच की बात, तो तुम फूस ही उबाल लो और किस्सा खत्म।"

"फूस उबाल लो, फूस उबाल लो," दादा ने बेटे की नकल उतारते हुए कहा, "मेरे राजा को सभी जानते हैं, सभी जानते है। मैं भी सब कुछ जानता-समझता हू। तुम मेफोदियेविच, स्पेन गये थे, स्पन। ऐसा एक देश है स्पेन। रेडियो पर हमेशा उसकी चर्चा होती रहती है। उसके बारे म तो कविता भी है। वार्या उसे अक्सर गुनगुनाती रहती है—'स्पेन मे है ग्रेनादा' ठीक है न?"

और विजयी की भाति सभी ओर नजर दौडाकर दादा अचानक बेसुरी और औरतो जैसी पतली आवाज म गाने लगे—

काश, कि मैंने जाना होता
काश, समझ मैं इतना पाती,
तो मैं युवती शादी करके
आसू ऐसे नही बहाती

दादा ऐसा समझत थे कि लोग अगर मेज पर बैठे खा पी रहे है, तो मेजबान को रगीनी बनाये रखनी चाहिए और खुद ही सबस पहले गाना शुरू करना चाहिए। किन्तु शिष्ट गूगोव्ना ने इसी क्षण अपनी हड्डीली मुट्ठी से दीवार थपथपाई और इसलिए गाना अधूरा ही छोडना पडा।

"इनका यूरा तो बहुत ही चिडचिडा बच्चा है," वार्या ने कहा। "प्रोफेसर पेर्सीयानिनोव इसकी डाक्टरी देखभाल करता है। उसकी समझ मे ही नही आता कि किस कारण यह बच्चा इतना चिडचिडा है।"

"क्या कहने है ऐसे प्रोफेसरा के!" दादा बोले। "घर आते ही यूरा का चूतड चूमने लगता है। आह, कसे अच्छे हो तुम, ओह, कितने प्यारे बच्चे हो तुम! और इसके लिए उसे पचास रूबल दिये

जाते है। इतने पसो के लिये तो मैं कुछ और भी खुशी से करने को तैयार हो जाऊ "

"नही दादा, ऐसी बात नही है," वार्या ने आपत्ति की। "प्रोफेसर पर्सीयानिनोव तो अपने काम की बडी हस्ती है। तुम्हार इस्टीटयूट म भी पढाता है, ठीक है न वोलोद्या?"

'पढाता था मगर अब नही," वालोद्या ने जवाब दिया। "हस्ती वस्ती ता वह कुछ नही था, मगर माताए उसे इसलिए पसन्द करती है कि वह सभी को यही कहता है, मानो उसका बच्चा दुनिया म बेमिसाल है।"

'मतलब यह है कि बडे ऊच गुणोवाला है?" रोदिग्रोन मेफोदिय विच ने पूछा।

वार्या ने उदासी से कहा—"इतना बडा हाते हुए भी वह हमेशा हसता और मजाक करता रहता है।"

वालोद्या ने ता जसे यह सुना ही नही, इतना डूब गया था वह अपने ख्यालो मे। इस लम्बी और बोझिल शाम को वह माना अचानक कही खा जाता था और फिर बहका बहका-सा पूछा बठता था—

"आपन मुझसे कुछ कहा है क्या?"

रोदिग्रोन मेफोदियेविच उन्हे छोडने गये। दादा और वार्या बतन साफ करने के लिए घर पर ही रह गये। रोदिग्रोन मफोदियेविच ने बटी और फिर वोलोद्या की तरफ देखा, मगर कहा कुछ नही। जब वे बाहर निकल, ता सीढियो मे उन्हें बोरीस गूबिन मिला। सुदर, हृष्ट-पुष्ट नौजवान, बढिया ओवरकाट पहने, जिसके बटन खुल थ, और वह सिर पर टोप ओढे था।

"नमस्ते, वार्या घर पर ही है?' न जाने क्या, बोरीस ने वालोद्या से ही पूछा।

'घर पर ही है," वालोद्या न उदासीनता से जवाब दिया। वार्या के पिता ने फिर बहुत ध्यान से वोलोद्या की तरफ देखा।

'यह लडका कौन है?" रोदिग्रोन मफोदियेविच न पूछा।

"यह, गूबिन बारीस। आपने उसे पहचाना नही? हमारे शहर म आजकल इसका बडा नाम है। कविताए रचता है, अखबार मे समीक्षा छपती है और अगर इसके साथ सडक पर चल, तो अक्सर सुनन का

मिलता है—'यह है गूविन।' अच्छा लडका है और योग्य भी। वार्या इसकी वहुत तारीफ करती है, ज़ोर देकर कहती है कि यह बडा ख़ुशमिज़ाज आदमी है और कुछ दूसरे लोगो की तरह सन्तापक नही है।"

"तो समझना चाहिए कि यह सन्तापक तुम हो?"

"शायद ऐसी ही है!" वोलोद्या ने मरी सी आवाज़ मे उत्तर दिया।

और जेवा म हाथ खासकर उदास तथा विचारो मे डूबा हुआ वह आगे आगे चल दिया। अग्लाया और रोदिओन मेफोदियविच धीरे धीरे कुछ वाते करते हुए उसके पीछे पीछे चले आ रहे थे।

कुछ परिवर्त्तन

इस शाम के वाद रोदिग्रान मेफोदियविच लगभग हर दिन वोलोद्या के पास आने लगे। शुरू म वोलोद्या ने ऐसा ही साचा, मगर वाद म दुखद आश्चय के साथ यह समझ गया कि रोदिओन मेफादियेविच उसके पास नही वल्कि उसकी वूआ अग्लाया के पास आते है। वार्या के पापा वोलोद्या की वूआ को ही देर तक वहुत कुछ वताते सुनाते रहते और वह अपना सु दर चेहरा हथेलियो पर टिकाय तथा कपडे के कढे हुए शेडवाले टेवल लैम्प पर नज़र जमाये सुनती रहती। आस्तीना पर सुनहरी पट्टियोवाली जहाजिया की वर्दी पहने, गहरी लालिमा तक सवलाये चेहरे पकी कनपटिया और घनी, काली भौहोवाले रोदिओन मेफोदियेविच वूआ के कमरे म एक सिरे से दूसरे सिरे तक चहलकदमी करते हुए कुछ बताते रहते, हसते रहते और वूआ से कुछ भी न पूछते। वोलोद्या तो जानता था कि वूआ को कुछ भी वताना-सुनाना कितना आसान और सुखद होता है। एक दिन उसने वूआ को अपने लिय नही, वल्कि किसी दूसरे व्यक्ति के लिये पहली बार गाते सुना। सम्भवत उ ह यह पता नही चला था कि कसे दवे पाव वह भीतर आया था। वालोद्या हाथो म तौलिया लिय गुसलखाने मे वैठकर सुनता रहा। अग्लाया धीमी आवाज़ म, कि तु ऐसी सरलता

और निश्छलता से गा रही थी मानो किसी के सामने अपना दिल निकालकर रख रही हो। वह ऐसे गा रही थी, जैसे केवल रूसी नारिया ही गा सकती है—

कहो रात क्या तुम ऐसी गुस्से म आयी?
नही एक भी तारा अपने सग म लाया।
किसके सग मैं अपनी सूनी सेज सजाऊ?
किसके सग पतझर के सूने दिवस विताऊ
नही पिता है और नही है मेरी माता
प्यारे, दिल के राजा से ही मेरा नाता
लेकिन वह भी नही प्यार से साथ निभाता

बूआ का गीत खत्म होते ही वोलोद्या ने फौरन जोर से नल खोल दिया और पानी शोर करता हुआ टब म गिरने लगा। किन्तु वह गुसलखाने का दरवाजा बन्द नही कर पाया। अग्लाया नया और सुदर फ्राक पहने बाहर आई। उसकी आखो म खुशी की चमक थी। उसने पूछा—

"काफी देर हो गयी क्या तुम्हे आये हुए?"

'जब आपने गाना शुरू किया था, तभी आया था। आपका गाना सुना है।' उसने उदासी से जवाब दिया।

"मेरे बारे म बुरा नही सोचो।" बूआ ने अनुरोध किया। "बुरा नही सोचो मेरे बच्चे"

वोलोद्या हैरान होता हुआ उसकी ओर देख रहा था। आज जसी अग्लाया को उसन पहले कभी नही देखा था। बूआ के बारे म उसने लोगो को यह कहते सुना था कि वह सुदर है खुद उसने भी यह महसूस किया था, किन्तु वह इतनी सुदर आकर्षक और प्यारी है, इसकी तो उसन कल्पना तक नही की थी।

छल-छल की आवाज करता हुआ पानी नीली झलकवाले टब को भरता जा रहा था। उभरी हुई कण्ठास्थि तथा बढी हुई दाढ़ीवाला दुबला-पतला वोलोद्या जाधिया पहने खड़ा था और अग्लाया अपने गम हाथ से उसकी कोहनी थामे हुए प्यार भरी और मुश्किल से सुनाई देनेवाली फुसफुसाहट म जल्दी-जल्दी उससे कह रही थी—

"मैं तो बहुत अर्से से, बहुत पहले से, बहुत ही अधिक समय से उसे प्यार करती हू। मगर तब मेरे और उसके लिए भी कुछ करना मुश्किल था। मगर अब मैं खुश हू, बहुत खुश हू, मेरे बच्चे! जरा सोचो, तुम खुद ही इस बात पर विचार करो कि ग्रीशा तो सन् इक्कीस म मारा गया था, तुम भी देर-सवेर मुझे छोडकर चले जाओगे, वह भी अब एकाकी है, तो भला किसलिये हम – वह और मैं – एक दूसरे को खो दें? तुम्हारी आखें कह रही है कि तुम मेरी भत्सना करते हो लेकिन किस कारण?'

"मैं भत्सना नही कर रहा हू," बूआ की चमकती आखो म झाकते हुए वोलोद्या ने जवाब दिया। "मैं तो ऐसे ही. आप सभी लोग मुझे छोडते जा रहे है वार्या भी आप भी और पीच भी। मुझे छोडकर नही जाइये, बूआ," उसने अनुरोध किया। "मैं अकेला कैसे रहूगा? उदासी महसूस होने लगती है।"

आन की आन म पानी टब से नीचे छलक गया और टाइला के फश पर वोलोद्या का पाव फिसल गया। इसी वक्त रोदिओन मेफोदियेविच कमरे से बाहर आये और शिकायती आवाज म बोले –

"सभी ने मुझे त्याग दिया, रोने को मन होता है।"

'देखते हो न," अग्लाया ने रोदिओन मेफोदियेविच की ओर सकेत करते हुए कहा। "मैं अब क्या करू?'

खाने की मेज पर वोलोद्या ने मामले की जाच-पडताल की और रोदिओन मेफोदियेविच तथा अग्लाया ने किसी तरह की आनाकानी के बिना यहा तक कि खुशी से सब कुछ स्वीकार कर लिया।

"मतलब यह कि पत्र-व्यवहार चलता था?" वोलोद्या न पूछा।

"जरूर चलता था,' बूआ न जवाब दिया। "यह तुम रोटी पर मक्खन नही, पनीर लगा रहे हो। मक्खनदानी स मक्खन ले लो।"

"जब आप लेनिनग्राद गयी थी, तब भी आप लोग मिले थे?"

'हा, मिले थे," रोदिओन मेफोदियेविच ने कहा। 'हैमिटेज गये थ, रूसी सग्रहालय म भी, और सट इसाआक गिरजे क घटाघर के बुज तक भी चढे थे।"

"इस उम्र म!"

"बेहया न हो तो!' बूआ न कहा।

'इनके स्पेन जाने के बारे मे भी आपको मालूम था?"

"स्पेन के बारे में मालूम नहीं था, मगर ऐसा अनुमान ज़रूर था," रोदिओन के प्याले मे चाय डालते हुए अग्लाया ने कहा। "रोदिओन मेफोदियेविच ने मुझसे यह छिपाकर कोई बहुत समझदारी का काम नही किया।"

"मैं नही चाहता था कि तुम बेकार चिन्ता करो।"

"तो अब क्या होगा?' वोलोद्या ने पूछा। "व्यक्तिगत रूप से मैं तो इस बात के खिलाफ हूं कि आप लोग यहां से चले जायें।"

"वार्या और तुम्हारे बीच क्या गड़बड़ है?" रोदिओन मेफोदियेविच ने पूछा।

'कोई गड़बड़ नही बोलोद्या बोला। "शायद यह ठीक है कि मेरे साथ निबाह करना ज़रा मुश्किल काम है। मुझे जीवन में जो कुछ तुच्छ और मूर्खतापूर्ण लगता है, मैं उसके बारे में वैसा ही कह देता हूं। और इसलिये तानाशाह माना जाता हूं। वार्या तो मुझे तानाशाह कहती भी है। इसके अलावा वह उम्र मे मुझसे छोटी भी है और दूसरी बातो मे भी मुझसे भिन्न है। मैं उसकी आलोचना नही करता हूं रोदिओन मेफोदियेविच मैं तो सिर्फ उसके ढंग से जीवन को स्वीकार नहीं कर सकता।"

झूठ बोलते हो, तुम उसकी आलोचना करते हो!' रोदिओन मेफोदियेविच ने कहा। 'वैसे तुम बेकार ही उसकी आलोचना करते हो। खो दोगे और फिर ऐसी नही पा सकोगे। मैं तुम्हारा रिश्ता करवाने के लिए नहीं, बल्कि मालूम नही, कैसे कहूं क्योंकि तुम्हारी इज़्ज़त करता हूं इसीलिये कहता हूं कि इंसान से मांग तो करो मगर इन्सान की तरह।"

"मैं हर किसी से वैसा ही इंसान बनने की अपेक्षा करता हूं जैसे मेरे दिवंगत पिता थे," अचानक पीला पड़ते हुए वोलोद्या ने कहा। 'सबसे पहले तो खुद अपने से ही वैसा बनने की मांग करता हूं। सभी से ऐसी उम्मीद रखता हूं। मेरे लिए दूसरा ढंग हो ही नहीं सकता।'

रोदिओन मेफोदियेविच ने अग्लाया और फिर वोलोद्या की तरफ देखा।

"दिमाग तो नही चल निकला है तुम्हारा?"

"नही," वोलोद्या ने जवाब दिया। "बिल्कुल ठिकाने पर है मेरा दिमाग। फिर भी ऐसा मानता हू," अचानक अपनी आवाज सुनकर उसे ऐसा लगा कि वह बिल्कुल दिवगत प्रोव याकोव्लेविच पोलूनिन के ढग से बोल रहा है, "फिर भी अपने को यह मानने का अधिकार देता हू कि मानव के जीवन का सार इसी बात म निहित ह कि वह अपने से अधिकतम की माग करे, उसी तरह से, जैसे मेरे पापा न उस समय खुद से ऐसी ही माग की, जब उन्हाने सात 'जुकरो' के मुकाबले म अकेले उडान भरी। यह तो सच है न कि उन्होंने अपनी बलि दने के लिये तो ऐसा नही किया था? उन्हाने केवल अपना कत्तव्य पूरा किया हो, ऐसी बात भी नही है। उस वक्त उन क्षणा म उन्हाने विश्वक्रान्ति के भाग्य की पूरी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली थी।'

"तुम इतने उत्तेजित न हाओ!" बूआ ने कहा। "एकदम ज़द हो गये हो।"

"मैं उत्तेजित नही हू। में तो सिफ हमेशा यही सोचता हू कि अगर सभी मेरे पापा जैसे होते, तो शायद अब तक जगें खत्म हो गयी हाती, हम केसर का वैसे ही इलाज करते होत, जैस जुकाम या क्लेजे म जलन का और तपेदिक का नाम तक भूल जाते। बात यह है कि अधिकतर लाग तो अपनी भलाई की ही बात सोचते है और यह नही समझ पाते कि समाज की भलाई से ही व्यक्ति की भलाई हाती है, सो भी इतने शानदार पमाने पर कि व्यक्ति कभी उसकी कल्पना तक नही कर सकता "

वोलोद्या एक ही सास मे प्याले म बची चाय पी गया और अपनी घनी बरौनिया का चपकाते हुए उसने अनुराध किया—

"मैं माफी चाहता हू। मगर कभी-कभी बडी मुश्किल सामन आ जाती है। आज इस्टीट्यूट में एक घनचक्कर न मुझे गद्दार और यह कहा कि मुझम साथी की भावना बिल्कुल नही है। वह इसलिए कि मैंन गानिचेव से यह कहन से इन्कार कर दिया कि इस व्यक्ति को दुबारा परीक्षा ले ली जाये। बडी मुश्किल का सामना था और इन्कार इसलिय किया कि अच्छी तरह स जानता हू कि यह आदमी हर हालत म यही शहर म रहेगा, इतना ही नहीं, हुक्म भी चलायगा, मगर नान

उसके पास बिल्कुल थोडा है, दिमाग मे भूसा भरा है और विचारों म कूपमडकता है।"

"यह तुम येव्गेनी का जिक्र कर रहे हो न?" रोदिम्रोन मफोन्यिेविच न पूछा।

"मैं सोने जा रहा हू!" प्रश्न का उत्तर दिये बिना वोलाद्या न कहा। "थक जाता हू।"

अपन कमरे के दरवाजे को अच्छी तरह से बन्द करके उसने हास्टल मे पीच को टेलीफोन किया। वह भुनलाया हुआ टेलीफान पर आया।

'कहो शादीशुदा होने म बहुत मजा है न?" वालाद्या न पूछा।

"भाड मे जाओ!' पीच न जवाब दिया।

"नयी नयी शादी की मस्ती म होते हुए भी यह बात ध्यान म रख लो कि अगर कल भी तुम पढने नही आओगे, तो हमारे बीच हमेशा के लिये सब कुछ खत्म हो जायगा। ओगत्सोव मुझे इशारा भी कर चुका है कि वह तुम्हारी जगह लेना चाहता है।"

"तुम जैसा चाहो कर सकते हो।"

'कल आग्रोगे?"

"आऊगा" पीच ने कहा और थोडा रुककर इतना और जोड दिया, 'यह सही है कि तुम हो बडे टेढे आदमी, वोलाद्या!"

"मैं सहमत हू!" वोलाद्या ने प्रफुल्लता से उत्तर दिया।

और इसी वक्त गेन्नियान मेफोदियविच हाथ म सिगरट लेकर अग्लाया के कमरे म चहलकदमी करते हुए यह कह रहे थे कि यो तो वोलोद्या की बात सही है, लेकिन मार की दृष्टि से नहीं, अभिव्यक्ति के रूप की दृष्टि से वह कुछ बौखलाया हुआ है।"

"ऐसे लोग कभी-कभी अपन सिर मे गोली भी मार लेत है!" अग्लाया ने उदासी से कहा।

"ऐसे कभी यह नही करते!" रोदिग्रान मेफ़ादियेविच न इतमानान स जवाब दिया।

रादियोन मेफोदियविच के जाने के बाद अग्लाया ने नया फ्राक उतार दिया गम कपडे पहन वोलोद्या को चैन से सास लेते सुना और अकेली बाहर सडक पर आ गयी। बस अभी भी चल रही थी, वह स्टेशन पर जानेवाली बस म सवार हो गयी और अपने विचारो म डूबी-खोयी हुई स्टेशन के निकटवाले चौक म पहुच गयी।

उन दिनो यहा कतार मे बग्घिया खडी रहा करती थी। उनसे पुराने चमडे और तारकोल की गध आया करती थी। वहा, छोटे से बागीचे के पीछे, जिसकी जगह अब गोल पार्क था, रेलवे स्टेशन के निकटवाला बाजार होता था। वहा भुना हुआ मेदा, मछली, घर के बने सासेज, अचारी खीरे और पीली, घर की बनी शराब बिका करती थी। यह रहा चौक, यह रहा नगर के भूतपूर्व मेयर क्याज़ेव का पत्थर का बना हुआ मकान और यह रहा उप-भवन, चबूतरे और शटरोवाला लकडी का छोटा सा घर, जिसके फाटक पर भोज वृक्ष खडा है। कितना बडा और सुदर हो गया है यह भोज वृक्ष, कितनी खुशी की बात है कि यह सुरक्षित रहा है और देर से आनेवाले तथा ठण्डे वसन्त के बावजूद उसकी कोपले निकलने लगी है!

अग्लाया ने सहसा अनुभव किया कि उसकी आखे आसुओ से तर हो गयी है वहा, उस भोज वृक्ष, चबूतरेवाले घर के करीब ही इलाके (गुबेनिया) के असाधारण आयोग (चेका) के अध्यक्ष कोद्रात्येव, ग्रीशा कोद्रात्येव ने कुछ दिनो के लिए मास्को जाते समय उससे यह कहा था कि जब वह लौटेगा, तो बेशक अग्लाया चाहे या न चाहे, "गुपचुप शादी" होगी। तब उसने यही अजीब से शब्द "गुपचुप शादी' कहे थे और मानो मन मारकर यह स्पष्ट किया था—

"मतलब यह है कि तुम पूरी तरह से मेरे यहा आ जाओगी। रही लोगो का इकट्ठा करने की बात—तो मारो इसे गोली। वे पी पिलाकर "शराब कडवी है, दुल्हा दुल्हन चूमकर मीठी करे" चिल्लाने लगेगे। तुम मेरी बीबी हो—किसी और को इससे क्या मतलब है? तुम आ जाओगी न?"

अग्लाया ने सिर झुकाकर हामी भरी थी।

"तुम पूरी तरह से आ जाओगी!" उसने इन शब्दो को दोहराया। "आ जाओगी और हम नया जीवन शुरू करेगे। लेकिन वह नयी, कम्युनिस्ट नैतिकता पर आधारित होगा। अतीत के भयानक पूर्वाग्रहो के लिये उसमे कोई जगह नही होगी। प्यार ही शादी है और प्यार के बिना शादी का कोई अर्थ नही। वह तो सिर्फ ढोग है, बुर्जुआ लोगो का पाखण्ड है। यह तो 'कोठो' जसी बात है।"

"कोठे—कसे कोठे?" युवती अग्लाया ने पूछा था।

"यह मैं तुम्हे बाद म, मास्को से लौटन पर समझाऊगा," इलाक के असाधारण आयोग के अध्यक्ष कोद्रात्येव ने कडाई से उत्तर दिया। "अब आगे सुनो। अगर मुझसे प्यार न रहे, तो डरना घबराना नही। किसी दूसरे साथी के साथ नयी जिंदगी शुरू कर लेना। जाहिर है कि मेरे लिये तो यह कोई खुशी की बात नही होगी। लकिन हमारा नया समाज प्यार म असमानता बर्दाश्त नही करेगा। शादी के मामल म दया तरस को भी वह सहन नही करेगा। मैं भी ऐसा मानता हू और राजनीतिक ज्ञान-परिषद के व्याख्यानदाता साथी खोलोदीलिन ने भी एसा ही कहा था। तुमने उसका भाषण नही सुना?"

"नही," अग्लाया ने अपराधी की तरह उत्तर दिया। 'उस दिन हम मशीनगन से चादमारी करना सीख रही थी।"

"लौटने पर मै तुम्हारे सैन्य सचालक की भी जरा अक्ल ठिकाने करूगा। हमेशा वह राजनीतिक ज्ञान-परिषद के काम म बाधा डालता रहता है। अब आगे सुनो "

वे देर तक भोज वक्ष के पास खडे रहे। वह चमडे की जाकट अपनी बाह पर डाले और बगल म पीला पिस्तौल-केस लटकाये था और अग्लाया जाली का फ्राक पहने थी। यह उसका सबसे बढिया, सबसे अच्छा और सुन्दरतम फ्राक था। उसन खुद ही जाली को गहर नील रग म रगा उसे कलफ लगाया और उसके लिये सफेद कॉलर सी लिया था। और ऐसा प्यारा बन गया था यह फ्राक कि वह उसे पहनकर लोगो म जाती हुई लजाती थी। शायद यही शहर भर मे सबसे अच्छा फ्राक था। और कोद्रात्येव हैरानी तथा खुशी से अग्लाया को देखता हुआ सिर हिला रहा था और कह रहा था— 'भई वाह, भई वाह! किस कपडे का है यह फ्राक?"

गाडी छूट गयी। ग्रीशा कोद्रात्येव के लौटन के दिन अग्लाया उचा नदी क सुखद पानी मे देर तक नहाती, तैरती और सोचती रही—बस खत्म हो गयी तेरी जवानी की मस्ती, अग्लाया, खत्म हो गयी मौज बहार। अब तू आखिरी सास तक बीवी बनी रहेगी। बेशक एरी-गैरी औरत नही बल्कि नागरिक, फिर भी शादीशुदा औरत ही

आधी अधड आन क पहल उस उमस भरी शाम को अग्लाया न अपनी पोटली बटारी और यहा चबूतरेवाले इस घर म कोद्रात्यव क

पास आ गयी। ग्रीशा अपनी सैनिक वर्दी पहने और पेटी कसे हुए कमरे के बीचोबीच खडा उसका इन्तज़ार कर रहा था। कमरे को ख़ूब अच्छी तरह स भाडा-बुहारा गया था। दीवार पर काल माक्स का चित्र टगा था और उनकी दष्टि कही दूर जमी हुई थी। तग सी चारपाई के निकट रखी छोटी-सी तिपाई पर किताबा का ढेर लगा था और छाटी सी मेज़ पर मामवत्ती फडफडा रही थी। कोद्रात्येव की आखे फैली फैली-सी थी और अपने पूरे सक्षिप्त वैवाहिक जीवन म वह अग्लाया को एक अजूबे की तरह ही देखता रहा। अपने मृत पति को वह देख नही पाई, क्योकि उस वक्त ख़ुद टाइफस से बिस्तर म पडी थी और वह इसी रूप मे सदा के लिए उसकी आखा के सामने रह गया—शान्त और सहमा-सा उसके सामने खडा, उसे एकटक देखता हुआ। ऊपर, आसमान में उमड रहे तूफान की हल्की गडगडाहट सुनाई दे रही थी, मगर वह पूरे ज़ोर शार से टूट नही पा रहा था।

"अब हमारे आगे के जीवन के बारे मे मरी बात सुनो," ग्रीशा ने अपना चेहरा ज़रा दूसरी ओर करते हुए कहना शुरू किया, ताकि अग्लाया के बच्चे जैसे मासूम चेहरे की तरफ उसका ध्यान न जाये। "बहुत ही कठार काम से मेरा सम्बध है और मेरे पास सभी तरह के लोग इस इरादे से आते है कि किसी तरह हमारी इस्पाती कानून-व्यवस्था को भग कर सके। अगाशा, कभी और किसी से भी कुछ नही लेना, किसी भी तरह का तोहफा या उपहार स्वीकार नही करना। इनके बारे मे भूल जाओ! इसी तरह यह भी ध्यान मे रखना कि हमारे पास ज़रूरी कामा के लिए दो घोडावाली फिटन है। घाडे कुछ बुरे नही हैं, उ हे अच्छी तरह खिलाते पिलाते है, ताकि सु दर लगे। अपनी व्यक्तिगत ज़रूरता के लिए हम फिटन का कभी इस्तेमाल नही करते। वह हमारे ज़रूरी कामो के लिए ही है। अगर तुम्ह कभी इस फिटन मे देख लूगा, तो चाहे वह कोई भी जगह क्या न हो, वही तुम्हारी बेइज़्ज़ती कर दूगा।"

और इसके बाद पूछा—"तुम्हारे पास खान के लिए कुछ है?"

"गुपचुप शादी" की उस शाम का उन्हाने अग्लाया द्वारा अपने साथ लाई गयी सूखी डबल रोटी खायी और दूध पिया। और कोई छ महीन बाद फिटन साथी कोन्द्रात्येव को लेन आई और चेका के कई लाग

भूतपूर्व नवाब ताड्डे का, जिसने बहुत सी हत्याए की थी, बलात्कार किये थे और डाके डाले थे, पकडने गये। ग्रीशा कोन्द्रात्येव वहा से लौटकर नही आया। ताड्डे के सहायक ने अन्तिम मुठभेड मे हथगोला फेंककर चेका के अध्यक्ष और खुद को भी मौत के मुह मे पहुचा दिया।

टाइफस के बाद अग्लाया ने अपने को विधवा पाया। पति की याद मे उसे ग्रीशा का नाम खुदी हुई पिस्तौल भेंट की गयी और पढने के लिए मास्को भेज दिया गया। फाटक के पास भोज वृक्षवाले इस घर से अग्लाया तभी अद्भुत मास्को चली गयी थी और फिर कभी यहा नही आई थी।

"क्या करना चाहिए मुझे?" भोज वृक्ष के तने के साथ कधे से सहारा लेते हुए उसने पूछा। "बताओ तो?"

उसकी आखो के सामने ग्रीशा और रोदिओन मफोदियेविच के चेहरे गडवडा रहे थे। अतीत का वह सक्षिप्त सुखद समय वर्तमान के साथ गडबड हो रहा था। क्या वह कोन्द्रात्येव के सामने अपराधी है? कसे पूछे? किससे पूछे? कौन जवाब देगा?"

रेलवे स्टेशन के सार्वजनिक टेलीफोन से उसने रोदिओन मेफो दियेविच को टेलीफोन किया। वे तो जैसे टेलीफोन की घण्टी बजने का इन्तजार ही कर रहे थे। फौरन रिसीवर उठाकर खरखरी सी आवाज मे बोले—

"स्त्यपानोव सुन रहा है।"

"जब भी चाहो, हम चल सकते है," अग्लाया ने धीमी आवाज मे कहा। "मैं तो शनिवार से भी छुट्टी ले सकती हू।"

"ठीक है!" रोदिओन मेफोदियेविच ने धीरे धीरे और गम्भीरता से उत्तर दिया। "सारी तैयारी कर ली जायेगी।"

रिसीवर रखकर वे खाने के कमरे मे लौट गये, जहा झल्लायी-सी बैठी वार्या पढ रही थी। रोदिओन मेफोदियेविच ने सिगरेट जला ली और कमरे के एक सिरे से दूसरे तक चहलकदमी करते हुए वार्या को यह सूचना दी—

'मैं यहा से जा रहा हू, वार्या।'

"हु, हु,' वार्या ने उत्तर दिया।

"अकेला नही जा रहा हू।'

"अग्लाया पेत्रोव्ना के साथ?" भूगभशास्त्र की पाठ्यपुस्तक से नजर ऊपर उठाये विना ही उसने पूछा।

"हा, उसके साथ ही।"

वार्या ने किताव एक ओर रख दी उठी पिता के विल्कुल करीब आ गयी, उनके गले म वाह डाल दी और तीन वार जोर से उनका गाल चूम लिया। और शनिवार को वार्या, वालोद्या, यव्गेनी और इराईदा तथा वोरीस गूविन—य सभी अग्लाया तथा रोदिओन मेफोदियविच को साची नगर जाने के लिए स्टेशन पर छोडने गय। उस रात का वसन्त के आरम्भ का आभास हा रहा था, वह गम, नम और अधेरी थी। सफेद चाकलेटी रग के वढिया केविन की खिडकी खुली थी, उसके करीव कलफ लगे नप्किन से ढकी छोटी सी मेज पर एक शीशे के गिलास म चटक पीले रग के छुई मुई के फूल नजर आ रहे थे और उनके निकट ही शेम्पेन की एक वोतल रखी हुई थी।

"अगर आदमी सफर करे, तो ऐसी ही वढिया गाडी म," लालच भरी जिज्ञासा से भीतर झाकते हुए यव्गेनी न कहा। "देखो ता, साथियो, कितन अच्छे ढग और आरामदेह तरीके से यहा हर चीज की व्यवस्था की गयी है। नही, नही, वुजुआ लाग जिन्दगी के मजे लूटना जानते थे।"

आस्तीनो पर सुनहरी पट्टियावाला बढिया सिला हुआ गहरे नीले रग का सूट और मुलायम चमडे का एक पतला दस्ताना पहने रोदिओन मेफादियेविच प्लेटफाम पर खडे थे और अपनी उम्र से कही कम के नजर आ रहे थे। अग्लाया कालीना, गिलाफो, कासे और विल्लौरवाले छोटे से केविन की खिडकी से वाहर झाकती हुई वालोद्या से कह रही थी—

"गम भाजन हर दिन और हर हालत मे खाना सुना तुमने? इसमे आलस नही करना। इतना समझ ला कि तुम्हारे लिये यह एकदम जरूरी है। तुम दुवल-पतले हा, कम साते हो, थके हुए और चिडचिडे हो, आर फिर इन्स्टीट्यूट का आखिरी इम्तहान सिर पर है। इसके अलावा न सिफ खुद ही पढते हा, हमशा किसी और को भी पढाते रहते हो। तुम्ह शारवा जरूर खाना चाहिए, सुनते हो न? हमारी पडोसिन स्लेप्नेवा तुम्हारे लिये सभी कुछ खरीदकर लायेगी और खाना, आदि बनायगी। लेकिन तुम भोजन करना मत भूलना और सिफ डबल-रोटी से ही काम नही चलाना। सुन रह हो न?'

"वार्या, तुम इसका ध्यान रखना।" रादिग्रान मेफादियेविच ने फुसफुसाकर कहा।

"ब्लादीमिर, तुम मरे यहा हर रोज खाना खान ग्रा जाया करो।" गूबिन ने प्रस्ताव किया। "घर के रख रखाव म तो मेरी मा का काई जवाब ही नही।"

"खाना तो वह हमारे यहा भी खा सकता है।" येव्गेनी ने बडी उदारता दिखाते हुए कहा। "बस, ग्रपन हिस्से का खच दे दिया करना ग्रौर मामला खत्म "

वार्या ग्रपन होठा को काटती हुई खामोश रही। वोलोद्या की ज़िन्दगी मे उसका तीसरा या शायद पाचवा स्थान था। उसके लिए सबसे महत्त्वपूण था विज्ञान, फिर सस्थान, फिर भाव, विचार, पुस्तके ग्रौर ग्रय चीजे भी। इन सव के वाद, पूरी तरह फुरसत हान पर ही उसकी बारी ग्राती थी। फुरसत के वक्त भी तव, जव उसके करन के लिए ग्रौर कुछ न हो या जव उसके विचारो को सुननवाला ग्रौर कोई न हा।

बोरीस गूबिन ने वार्या का हाथ ग्रपने हाथ म ले लिया ग्रौर वार्या ने भी हाथ पीछे नही खीचा – देखे, वालोद्या देखे। मगर उसन यह भी नही देखा। वह तो फिर से ग्रपने ख्यालो की दुनिया म खोया हुग्रा था, मानो प्लेटफाम पर ग्रकेला ही खडा हो। किस चाज के वार म सोच रहा होगा वह इस वक्त? किसी ग्रतडी के बारे मे?

"हम ग्रभी भी फिल्म दखने जा सकेगे।" बोरीस न फुसफुमाकर कहा।

"ठीक है।' वार्या ने सिर झुकाकर हामी भरी।

"तो ग्रव हम तुम लोगो से विदा लते है," रोदिग्रान मेफोदियेविच ने कुछ तनावपूण स्वर म कहा। "मैं तो काले मागर से ही ग्रपन वाल्टिक बेडे की तरफ चला जाउगा।"

"ग्रच्छी बात है।" वार्या न उत्तर दिया।

लम्बे सफर की गाडी धीरे धीरे ग्रपनी लम्बी मजिल की ग्रार चल दी। वालाद्या किसी की भी प्रतीक्षा किय बिना प्लटफाम स चौक का तरफ़ चल दिया।

'मैं सिनमा देखन नही जाऊगी।" वार्या वाली।

"तो कहा चलोगी?" बोरीस ने वार्या की इच्छा की चिन्ता करते हुए पूछा।

"कही भी नही जाऊगी। मैं थक गयी हू।"

"तो तुम्हारे यहा चलकर चाय पिये?"

"चाय भी हम नही पियेंगे। कह तो दिया कि थक गयी हू।"

और इसी वक्त येव्गेनी अपनी बीवी इराईदा से कह रहा था—

"अगर निजी और सावजनिक हितो का ढग से ताल-मेल विठा लिया जाये, अगर आदमी सिफ आदर्शों का ही पुतला न बने, मूखता न दिखाये, बेकार चीची और हाय-तोबा न करे और हर मामले की नजाकत को समझ सके, तो बढिया कारे, रेलगाडी के बढिया डिब्बे, ताड के वृक्ष और सागर की सुखद लहर वैसे ही हर दिन की चीजे बन सकती हैं, जैसे हर सुबह को नाश्ते का दलिया। क्या, ठीक है न, मेरी जान? और हा, क्या तुम्ह ऐसा नही लगता कि तुम अपनी कुछ रगीनी खोती जा रही हो? ठीक मौके पर आदमी मुस्करा भी ता सकता है, जरूरत होने पर कुछ चुहलबाजी भी दिखा सकता है और ढग के कपडे भी पहन सकता है। मेरी मा के यहा चली जाओ, उसकी कुछ लल्लो चप्पा कर लेना और वह खुशी से तुम्हारे गर्मी के ओवरकोट से लम्बी जाकेट बना देगी। आजकल तो उसी का फैशन है।"

"मेरे सिर म दद हो रहा है," इराईदा ने कहा।

"तुम्हे ता हमेशा कही न कही दद होता रहता है, मेरी प्यारी," येव्गेनी ने घृणित, किन्तु धीमी और माना कुछ प्यार भरी आवाज मे जवाब दिया। "वैसे तो तुम बिल्कुल स्वस्थ हो, खाती पीती भी ढग से हो, कुल मिलाकर पूरी तरह ठीक ठाक हो। बस, आदमी को जरा अपने आपको ढीला-ढाला नही होने देना चाहिए।"

इसी बीच लम्बे सफरवाली गाडी एक स्टेशन लाघ चुकी थी। गाडी के गलियारे म खडे हुए रादिओन मेफोदियेविच ने अपनी जहाजिया की टोपी उतारी और सफेद रूमाल से अच्छी तरह माथा पोछा। केबिन म बडी फुर्ती से बिस्तर लगाती हुई कडक्टर लडकी ने पूछा—

"शायद यह महिला अपनी जगह बदलना पसन्द करेगी? बगल के डिब्बे मे भी एक मदाम अकेली जा रही है।"

"नही, यह महिला अपने पति के साथ यही रहगी," रोदिओन

3—1549

मेफोदियेविच ने मुस्कराये विना दृढ़ता से कहा। "और बगल के डिब्बे वाली मदाम अकेली ही सफर करेगी। इसके अलावा, महिला और मनान में बड़ा फर्क होता है। आप सहमत हैं न, साथी कंडक्टर?"

कंडक्टर लड़की ने रोदिओन मेफ़ोदियेविच के चेहरे को ध्यान से देखा, उनकी आंखों में मजाक की झलक अनुभव की, वक्ष पर लगे तमगों और आस्तीनों की सुनहरी पट्टियों की तरफ उसका ध्यान गया और वह झेंप-सी गयी।

"अगर कुछ चाय मिल जाये, तो अच्छा रहे, हमारे डिब्बे की मालिकिन।"

अग्लाया केबिन के कोने में घर की भांति हथेलियों पर मुंह टिकाये कुर्सी पर बैठी थी। उसका चेहरा जर्द था और वह मुस्करा रही थी। खिड़की में से आरम्भ हो रहे वसन्त की गंध, खेतों की गर्म और नम हवा तथा इंजन का कड़ुवा धुआं अन्दर आ रहा था। छुई-मुई के पीले फूल मेज पर हिल डुल रहे थे।

"कोई सैंडविच, कचाड़िया, नशीले और गैरनशीले पेय खरीदना चाहता है क्या?" किसी ने काम-काजी ढंग से गाड़ी के गलियारे में ऊंची आवाज लगायी।

"तो ऐसा मामला है," रोदिओन मेफ़ोदियेविच ने सोफे के सिरे पर बैठते और अग्लाया की काली तथा अनबूझ आंखों में आदर, प्यार और गहन दृष्टि से झांकते हुए कहा।

"कैसा मामला है?" अग्लाया ने जानना चाहा।

रोदिओन मेफोन्यियेविच खामोश रहे।

"तो ऐसा मामला है, यों मामला है," अग्लाया ने उन्हें चिढ़ाते हुए कहा। "अपने आपसे तो शर्माना छोड़ो। शब्दों से नहीं डरो। 'प्रेम' शब्द भी है इस दुनिया में। तुम मुझे प्यार करते हो, मैं तो यह समझती हूं। हम अब जवान लोगों जैसे तो हैं नहीं, शब्दों का मूल्य समझते हैं। कहो मुझसे कि तुम मुझे प्यार करते हो।"

"कि तुम मुझे प्यार करते हो," मंत्रमुग्ध में रोदिओन मेफोदियेविच ने अपनी खरखरी-सी आवाज में अग्लाया के शब्दों को दोहरा दिया।

"यह कहो—मैं तुम्हें प्यार करता हूं।"

"मैं तुम्हें प्यार करता हूं, अगाशा," रोदिओन मेफोदियेविच ने कहा। "मैं तो इस अब तक समझ ही नहीं पाया था। यहां तक कि

स्पेन म भी जब कभी अफानासी से मेरी मुलाकात होती, तो मैं तुम्हारा ही जिक्र करने लगता। वह कुछ कुछ अनुमान लगाता। एक दिन वाला– 'उसस शादी कर लो, रोदिग्रोन। किसी दूसरी औरत से तो अब तुम शादी करन से रहे।'"

"तो क्या तुमने मुझसे शादी की है?" अग्लाया ने मज़ाकिया ढग से पूछा।

"क्या मतलब है तुम्हारा?"

"क्या तुमने मुझसे यह कहा था कि मुझे अपनी बीवी वना रहे हो?"

"नही कहा क्या?"

'रादिग्रोन, तुमने मुझसे जो कुछ कहा था, मै तुम्हारे शब्दो को ज्या का त्या दोहराये देती हू। तुमने कहा था–'अग्लाया, मै सोची जा रहा हू, आओ साथ चले, क्या ख्याल है?' इसके बाद इतना और जाड दिया था–'तो ऐसे रहेगा मामला।' तो मेरे प्यारे, वीवी हाने की बात तो कडक्टर स हानेवाली तुम्हारी वातचीत स मुझे अभी मालूम हुई है।'

अग्लाया फुर्ती से उठी, रादिग्रोन मेफोदियेविच के करीब जा वैठी, उनकी काहनी के नीचे उसने अपना हाथ रख दिया और उनके कधे से अपना चेहरा सटाते हुए शिकायती अदाज मे वाली–

"शब्दा के मामलो मे तुम बडे ढीले हो।"

"यह तुम ठीक कहती हो!" उन्हाने पुष्टि की। "लेकिन तुम बुरा नही मानना, अगाशा। जिन लागा का शब्दा के मामल म कमाल हासिल है, मैं ऐसे लोगो से डरता तो नही हू, मगर उनके साथ मुझे कुछ परेशानी ज़रूर महसूस होती है। मेरे दोस्त अफानासी म सबसे बडी खूबी क्या थी–वह चुप रहना जानता था। चुप रह पाना–यह बडी बात है, क्योकि आदमी फालतू शब्दो को मुह से नही निकलने देता। तुम भी चुप रहना जानती हो।"

"ता क्या हम दोना ऐसे चुप रहकर ही सारी जिन्दगी बिता देगे?"

"नही," रोदिग्रोन मफोदियेविच न दृढता, शान्त भाव और प्यार से कहा। "हम अपना सारा जीवन बहुत अच्छी तरह से बितायेंगे। तुम खुद ही देख लोगी।"

अग्लाया ने उनकी कोहनी को और अधिक जोर से थाम लिया।

"क्या सोच रही हो?" रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने अचानक पूछा।

"मै बहुत सुखी हू," अग्लाया ने नम्रता से उत्तर दिया। "बस कुछ थोडी सी घबराहट महसूस होती है—तुम तो अपन समुद्री बडे पर चले जाओगे "

"और तुम भी क्रोश्तादत या ओरानीयेनबाउम मे आ जाओगी।"

"नही, म वहा नही आऊगी," अग्लाया ने उत्तर दिया। "मेरी यहा जरूरत है। मुझे वहा नयी नौकरी ढूढनी पडेगी। यह बात नही बनेगी, रोदिग्रोन। मगर मैं यहा तुम्हारा हमेशा, हमेशा इन्तजार करूगी। तुम जानते हो कि अगर कोई तुम्हारा हमेशा इतजार करता हो, तो इस चीज़ का क्या मतलब होता है?"

"नही, मैं नही जानता।"

"यही तो तुम नही जानते! अब जान जाओगे।"

अग्लाया सोच मे डूब गयी। रोदिग्रान मेफोदियविच न पूछा—

"क्या साच रही हो?"

"वोलाद्या का ध्यान आ रहा है," अग्लाया पेत्रोव्ना न कहा। "जाने वह अकेला वहा किस हाल म होगा?"

अद्भुत लोग हैं आप!

मगर वोलोद्या अकेला नही था। शोकग्रस्त और दुखी पीच तथा ओगुर्त्सोव उसके पास बैठे थे। एक घण्टा पहले शहर की प्राथमिक डाक्टरी सहायता सवा के अन्तगत काम करनेवाला डाक्टर अन्तोन रोमानो विच मिकेशिन इन दोनो की आखो के सामने चल बसा था। यह वही डाक्टर था, जिसके साथ वालोद्या पार साल की गमिया म एम्बुलस वग्घी म जाया करता था। मिकेशिन का जब अस्पताल म लाया गया, तो पीच और ओगुर्त्सोव ड्यूटी पर थे। उस वक्त तक डाक्टर मिकेशिन होश म था, उसन इन दोनो विद्यार्थिया का पहचान लिया, उनसे कुछ मजाक भी किया, मगर वाड म उसकी हालत बिगडन लगी, वह बकना महसूस करन लगा, उसकी चेतना गडबडान लगी और शाम होत न होत यह प्यारा डाक्टर इस दुनिया स चल बसा।

"अखबार मे इस बात की घोषणा छपवानी चाहिए," वालोद्या न कहा। "उसे सारा शहर जानता था कितने लोगो की उसने मदद की थी! ठीक है न, पीच?"

किन्तु अखबार म यह घोषणा छपवाना कुछ आसान काम नही साबित हुआ। एक तो यह कि काफी देर हो चुकी थी और जिस कमरे म ऐसी घोषणाए ली जाती थी, वह बन्द हो चुका था। दूसरे "उचा मजदूर" अखबार के सक्रेटरी ने, जो पेटावाला लम्बा कुरता पहने था, हाथ म बडी-सी कैंची लिये था और न जाने क्यो, बहुत खुश था, विद्यार्थियो से यह कहा कि प्रादेशिक समाचारपत्र उसी तरह सभी मौतो की सूचना नही द सकता, जसे कि इस धरती पर जन्म लेनेवाले नागरिको के बारे म खबर देकर अपने पाठको को खुशी प्रदान करने म असमर्थ है।

"आप कम से कम मजाक तो न करें!" पीच ने बिगडते हुए कहा। "हम यहा हसने हसाने नही आये है।"

"मैं तो जन्म से ही आशावादी हू!" सेक्रेटरी ने कहा। "इसके अलावा यह भी जानता हू कि हम सभी को एक दिन मरना है। इसलिए मेरे प्यारे साथियो, कुछ भी तो मदद नही कर सकता मैं तुम्हारी।"

चुनाचे इन तीनो को सम्पादक के आने की राह देखनी पडी। इस बीच सक्रेटरी कभी एक, तो कभी दूसरे टेलीफोन पर बात करता रहा, कमरे से बाहर जाता और भीतर आता रहा अखबार का एक पन्ना, जिसकी स्याही भी नही सूखी थी, पढता रहा, चाय पीता और सैंडविच खाता रहा और ये तीनो कडे सोफे पर चुपचाप बैठे रहे। आखिर काफी देर बाद सम्पादक आया। यह वही व्यक्ति था, वालोद्या हर दिन अखबार पर जिसका यह नाम—"म० स० कूशेलेव" देखता था।

"तो, कहिये क्या बात है," म० स० कूशेलेव ने तीनो विद्यार्थियो के अपनी बडी सी मेज के सामने खडे हो जाने पर पूछा।

इनकी बात सुनकर उसने अस्त-व्यस्त बालोवाला अपना सिर हिलाते हुए कहा

"साथियो, मैं कुछ भी मदद नही कर सकता तुम्हारी। मुझे बहुत दुख है, मगर मिकेशिन को मैं नही जानता।"

"मिकेशिन ने अगर हजारा नही, तो सैकडो जानें जरूर बचाई है,' वोलोद्या गरज उठा। "मिकेशिन का सारा शहर जानता है और यह बहुत बुरी बात है कि आप, अखबार के सम्पादक, उसे नहा जानते है। पर, खैर, यह आपका अपना मामला है। हम ता घाषणा छपवानी है।"

"घापणा नही छपेगी। म० स० कूशेलेव न जवाब दिया और अखबार का उसी तरह का पन्ना पढन मे खो गया, जसा कि सक्रेटरी कुछ देर पहले तक पढता रहा था। "और साथियो, आपसे यह अनुराध करता हू कि मुझे अपने काम म ध्यान लगाने दे—अखबार म सरकारी सामग्री छप रही है।"

इन तीना का अपने टीन पावेल सेर्गेयेविच, इसके बाद क्लीनिक म पोस्तनिकोव और गानिचेव तथा दूसरे प्राफेसरा के घर जाना पडा। आखिर वे झोवत्याक के फ्लैट पर पहुचे। प्राफेसर झोवत्याक खाने क बडे से कमरे म बठा हुआ जमन सिल्वर की प्लेट म से जायकेदार सुगन्ध देनेवाली काई चीज खा रहा था, खनिज जल पी रहा था और "चीनी मिट्टी की चीज" नामक काई विदेशी पत्रिका पढ रहा था। वोलाद्या का धूल से ढकी कुछ छाटी छोटी मूर्त्तिया, तिडके हुए एक जग, टेढी तश्तरी और मग की तरफ ध्यान गया, जिन्ह शायद कुछ ही देर पहले बडल म से निकालकर मेज पर रखा गया था।

'आह, हमारी जगह लेनेवाली पीढी!" झावत्याक ने खुशी जाहिर करते हुए कहा। "बहुत खुश हू बहुत खुश हू मै, स्वागत करता हू नौजवान साथियो, नमस्ते, नमस्ते मेरे प्यारो, तशरीफ रखो।"

चमकते हुए ढक्कन से अपना खाना ढककर प्राफेसर न छल्ले म से नप्किन निकाला, होठ पाछे और अपनी सन्तुष्ट तथा खुशी भरी ऊची आवाज म कहने लगा—

"कभी-कभार ही नसीब होनेवाली फुरसत की घडिया म आ पकडा तुम लागो न मुझे। जैसे कि और सभी लाग, वैसे ही मैं, तुम लागो का प्राफेसर भी, कुछ अनुरक्तिया का शिकार हू। आज का दिन बडा अच्छा रहा मेरे लिए, कुछ ढग की चीजें नजर आ गयी और मैं इन्ह अपनी माद म घसीट लाया। चीनी मिट्टी की बनी हुई पुरानी चीजें जमा करता हू मैं।"

"कैसे जमा करते है?" ऐसे मामला मे बहुत थोडी समझ रखनेवाले पीच ने पूछा।

"बिल्कुल साधारण ढग से, सहयोगी। मै सीधा-सादा सग्रहकर्त्ता हू। कुछ ऐसे लोग है, जो डाक-टिकट, दियासलाइया की डिब्बिया, चित्र, कासे की चीजे और रुपये-पैसे जमा करते है "

"यानी वही, जो धन जोडते है?" पीच इस बार भी नही समझा।

"नही, मेरे प्यारे दोस्त, यह अनुरक्ति वडी मासूम है, ऊची भावना और ऊचे प्यार की द्योतक है। वे रुपया नही, तरह-तरह के सिक्के और नाट, आदि जमा करते है। मैं तो आकृति की सुदरता, कला, लालित्य और पुराने कारीगरो की सरलता के लिए ही चीनी मिट्टी की चीजे जमा करता हू। मिसाल के लिए, इस छोटी मूर्त्ति को लिया जा सकता है "

यावत्याक न अपनी मोटी उगलियो म छोटी-सी मूर्त्ति को उठा लिया। उस पर धूल पडी हुई थी और काफी अर्से से उस धोया नही गया था। उसने फूक मारकर धूल हटा दी, खुशी भरी आखो से उसे देखा और कहा—

"मसेन कारखाना, अठारहवी शताब्दी के मध्य म। देख रह हो न तुम लाग? छोटे छोटे दो कामदेव शमादान उठाय हुए हं। एक का हाथ कुछ-कुछ टूटा हुआ है, मगर इससे कोई फर्क नही पडता, सच, कोई फर्क नही पडता। लेकिन मुद्राए ता कैसी है? कितनी सादगी है इनमे? देख रहे हो न तुम लोग, कितनी सादगी है इनमे?"

"हा, सादगी देख रहा हू!" ओगुर्त्सोव ने घुटी सी आवाज म कहा।

"और यह छोटी-सी इत्रदानी। यह ता सम्राट के चीनी मिट्टी के कारखाने मे बनी हुई है। इस पर य फूल कितने सुदर है! अनूठी चीज है "

प्रोफेसर तो अपनी हाल ही मे प्राप्त की गयी चीजा को शायद और भी वहुत देर तक दिखाता रहता, अगर पीच ने अपनी जेब म से शोक-पत्र निकालकर उसके सामने न रख दिया होता। प्रोफेसर का फौरन मूड विगड गया, वह अपने होठ चबाने और कुछ उलझन-सी प्रकट करने लगा।

"इतने शब्दाडम्बर की क्या जरूरत है? मामूली सूचना देना ही क्या काफी न होगा? मिकेशिन, मिकेशिन " उसने याद करते हुए

यह नाम दोहराया, किन्तु सम्भवत याद नही आया और पूछा—"किस जगह हस्ताक्षर करने के लिए कहते हो मुझे? सब के बाद क्या? रोडरा के भी नीचे?"

"आप सबसे ऊपर कर सकते है अपने हस्ताक्षर।" पीच ने रुखाई से उत्तर दिया। यहा, पावेल सेर्गेयेविच से पहले आपके हस्ताक्षर के लिए काफी जगह है। सिर्फ छोटे छोटे अक्षरो मे लिख दीजिये। छापेखाने के लिए तो इससे कोई फर्क नही पडेगा, सभी नाम एक जसे टाइप मे छाप जायेंगे।"

यह सही है!" ओवल्याक ने सहमति प्रकट की और अपना नाम सबसे ऊपर लिख दिया। अपनी प्रोफेसर की उपाधि लिखना भी वह नही भूला।

प्रोफेसर ओवल्याक जब तक शोक पत्र को पढता और हस्ताक्षर करता रहा, पीच, बोलोद्या और आगुत्सोंव ने ध्यान से इस कमरे मे अपनी नज़र दौडा ली। यहा कासे और बिल्लौर की चीजें थी शीशावाली छोटी बडी अलमारिया थी और उनमे प्रोफेसर की "निर्मल आसक्ति की चीजें—तश्तरिया बढिया डिनर सेट, चरवाहे और पुराने ज़माने के नीली चीनी मिट्टी के फूलदान, रकाबिया, सुनहरे नील और गुलाबी छोटे-बडे प्याले तथा दूसरी बहुत-सी वस्तुए रखी थी। अलमारियो के बीच पुराने कमख़ाब से ढका आरामकुर्सिया और सोफे रखे थे और दीवारो पर सुनहरे चौखटो मे जडे तैल रगो के चित्र टगे हुए थे। ये चित्र थे मोटी मोटी नगी औरतो, लाल चेहरोवाले मठवासियो और नीले आकाश मे पख फैलाकर उडते हुए फरिश्तो के

"हा, तो प्रोफेसर ने कहा, "यहा मैंने 'अपूर्णीय' शब्द काट दिया है। केवल 'क्षति' अधिक प्रभावपूर्ण रहेगा।"

पीच ने कोई आपत्ति नही की। मगर बाहर आने पर उसने अपना खीझ निकालते हुए कहा

'क्या कहने है इसकी अनुरक्ति के, हजारो का कूडा-कबाडा जमा कर लिया है। मुझे याद आ रहा है कि कैसे एक दुष्ट कुलक को सम्पत्तिहीन किया गया था। सोलह गउए थी उसके पास। उसकी बीवी मुझे यह यकीन दिलाने की कोशिश करती रही कि उसका पति तो 'गउओ का भक्त है।' बडा डाक्टर बना फिरता है!"

ग्रागुर्त्सोव इस बात से सहमत नही हुग्रा।

"तुम्हारी बात ठीक नही है, पीच। हा, वह उस काम को नही कर रहा है, जो उसे करना चाहिए। मैन मास्को म एक ऐसी दुकान दखी थी—ग्रद्भुत कला-वस्तुग्रा की दुकान कहते है शायद उसे? इस ग्रादमी को वहा जाकर काम करना चाहिए—यह होगा उसका ग्रसली काम, मनपसन्द काम।"

"राज्य की भलाई के लिए?" पीच ने पूछा। "तुम ग्रभी बिल्कुल भोले बच्चे हो, समझे! इस तरह के लोगो की ग्रनुरक्ति तो मुख्यत पैसे की ग्रपनी भूख की पूर्ति के लिए होती है। मेरी इस बात को तुम सच मान लो। बुरे दिना के लिए पैसा जोड रहा है, क्याकि उसके दिल मे हर वक्त डर बना रहता है। जिस जगह के लायक नही है, उस पर ग्रधिकार जमाये बैठा है। इसीलिए उसे चैन नही है।"

महत्त्वपूण लोगा के हस्ताक्षरोवाला शोक-पत्र सम्पादक म० स० कूशेलेव ने प्रकाशित कर दिया।

वह सुहानी, गर्मी के दिना जैसी सुबह थी, जब ग्रन्तोन रोमानोविच मिकेशिन को दफनाया गया। सिफ तीस चालीस ग्रादमी ही जमा हुए ग्रौर कब्रिस्तान तक तो काई दस ही गय। मीशा शेरवुड, स्वेत्लाना, ग्राल्ला शेशनेवा ग्रौर न्यूस्या तो जनाजे के रवाना होने तक ही रुके, येव्गेनी ग्राधे रास्ते तक साथ गया ग्रौर फिर ट्राम मे बैठकर वापस शहर चला गया। हल्की-हल्की, प्यारी-प्यारी हवा चल रही थी, पुरानी, सफेद शव-गाडी के पहिये चूचू चीची कर रहे थे, उसके घाडे भी बूढे, लगभग लगडे थे। प्राथमिक डाक्टरी सहायता सेवा का दढियल कोचवान स्नीमश्चिकोव वोलोद्या के साथ-साथ चलता हुग्रा खीझ भरी ग्रावाज म उसे बता रहा था—

"ग्रब मै घोडा-गाडी परिवहन मे काम करता हू। हमारी प्राथमिक डाक्टरी सहायता के लिए ग्रब पूरी तरह मोटरे ही इस्तेमाल की जान लगी है। इसमे कोई शक नही कि वे बहुत तेजी से जाती है, मगर धस फस भी बुरी तरह जाती है। मैं तो यही मानता हू कि ग्रगर हमारा डाक्टर बग्घी म ही जाता होता, तो ग्रभी बहुत दिना तक जीता रहता। मगर माटरगाडी—उसके ग्रन्दर ता हवा जहरीली हाती है ग्रौर इसलिए साथी मिकेशिन को ग्राखिरी घडी ग्रा गयी "

वोलोद्या इस कोचवान की बाते नही सुन रहा था। वह मिकेशिन की विधवा हो गयी पत्नी की तरफ देख रहा था। छोटे छोटे पटा और पकते बालोवाली यह दुबली-पतली नारी रोये धोय विना, तनकर, यहा तक कि कठोर मुद्रा मे चली जा रही थी। मगर कुछ ही देर पहले खोदी गयी कब्र के पास पहुचकर वह अचानक अपनी दृढता खो वठी, उसकी टागे जवाव दे गयी और आह-कराह के विना वह चुपचाप गीली मिट्टी पर मुह के बल जा गिरी। विद्यार्थी उसकी तरफ लपके, मगर पोस्तनिकोव ने कडाई से उन्हे रोकते हुए कहा—

"उसके पास नही जाओ। उसे अपना मन हल्का कर लेने दो।"

ओगुर्त्सोव मुह फेरकर गहरी सासे ले रहा था, कब्र खोदनेवाले अपनी ककश आवाजो म एक दूसरे को कुछ कहते हुए कुदाले और रस्सिया इकट्ठी कर रहे थे, जाने को तैयार हो रहे थे। उनमे से किसी एक ने कहा—

"साथी नागरिक, कुछ पैसे और दीजिये, हमारे यहा की मिट्टी वडी सख्त है "

फिर से खामोशी छा गयी। केवल ऊचे भोज वृक्ष की नई निकली पत्तिया के वीच कोई गानवाली चिडिया अपनी ऊची और खुशी भरी तान अलापती जा रही थी।

"तो मैं तुम्हारे लिए शुभकामना करता हुआ विदा लेता हू," कोचवान स्तीमश्चिकोव ने कहा। "जसा कि कहा जाता है, काम के वक्त काम और आराम के वक्त आराम होना चाहिए। अपने डाक्टर की याद म एक जाम पीकर काम पर चल दूगा।"

कुछ देर वाद जव मिकेशिन की विधवा वग्घी म वठकर घर जाने को राजी हो गयी, तो पोस्तनिकोव, वोलोद्या, पीच और ओगुर्त्सोव ने क़ब्रिस्तान का चक्कर लगाया। प्राव याकोव्लेविच पोलूनिन की क़ब्र पर अब ग्रेनाइट की भारी शिला लगी हुई थी और पैरो की ओर पतला, ऊचा चिनार खडा था। क़रीब ही एक बेंच भी थी, जिस पर इन दिनो वुरी तरह थके-हारे और परेशान ये तीनो विद्यार्थी बठ गये। पोस्तनिकोव अपनी पत्नी की क़ब्र की ओर चल गये।

"वे प्रोफ़ेसर थे, यह नहीं लिखा है," शिला को ग़ौर से देखकर पीच ने कहा। "वोलोद्या, याद है तुम्हे कि इस बात पर वे नाराज हुए थे कि जमनी म गुप्त चिकित्सा परामशदाता का पद भी है।'

"याद है," वोलोद्या ने जवाब दिया। "उनके बारे मे मुझे सब कुछ याद है। मुझे याद है कि न जाने क्या वे अचानक एक बार झल्ला उठे थे और उन्होने कहा था कि कोई प्राफेसर हाकर भी निकम्मा डाक्टर रह सकता है।"

पोस्तनिकोव काफी देर बाद लौटे, बडे दुखी-से और गुम-सुम। उन्हाने रूमाल से माथा और मूछे पाछी और वोलोद्या के पास बैठ गये।

"*ऐसा क्या हुआ, इवान दिमीत्रियेविच, ऐसा क्या हुआ?*" वोलोद्या ने पूछा। "क्या लोग नही आये कफन दफन के वक्त? आखिर हम ता यह जानते है कि मिकेशिन कितना अच्छा डाक्टर था और कितने नेक काम किय है उसने।"

पोस्तनिकोव खामाश रहे, उन्होन उगलिया से सिगरट लपटी, उसे कहरुवा के होल्डर मे लगाया और वोलोद्या के प्रश्न का सोचत हुए धीरे धीरे यह जवाब दिया

"प्राथमिक डाक्टरी सहायता की बग्घी जिसके घर पर जाती है, उस घर के लाग कभी भी डाक्टर के नाम आदि म काई दिलचस्पी नही लेत। हा, अगर उसके खिलाफ शिकायत करनी हो, तब बात दूसरी है। ऐस लोग भी हमारी इस धरती पर ह। लकिन अगर सब कुछ ठीक-ठाक है, काई ऊच-नीच नही होती, ता भला किसलिए काई उस आदमी का नाम जानना चाहेगा, जिसने काई सूई लगा दी, या दवाई की कुछ बूदे पिला दी या काई छाटी मोटी चीर-फाड भी कर दी। मगर चगीज खा को सभी जानते है, गिलाटीन का वनानिक आधार तयार करनवाले डाक्टर गिलोटीन को भी सभी जानते ह और इसी तरह डा० अन्तुआ लूई से भी सभी परिचित हैं, जिसन मौत की सजा पानवाले लोगा का सिर कलम करने का सबसे बेहतर तरीका खाजने क लिए लाशो पर तजरबे किये। दुनिया के सबसे बडे ठग टैलीराड का भी लोग जानते है, फुशे और रस्पूतिन स भी परिचित ह, राथशील्डा, जारा, जार-कुमारा, भडकावा दनेवाले अजेफ म भी दिलचस्पी लेते हैं, मगर मिकेशिन क्या महत्त्व है उसका था एक ऐसा चश्माधारी और अब नही रहा।"

पास्तनिकाव न निकट हाकर और कडाइ से वालाद्या की आखा म झाकत हुए इतना और जोड दिया—

"तो एसा है दुनिया का ढग, उस्तिमेन्का।"

"नही, ऐसा नही है," पीच ने अचानक कटुता स कहा। "मै आपके साथ सहमत नही हू, इवान दिमीत्रियेविच। बेशक ऐसा था, मगर ऐसा होना नही चाहिए! क्या इसी के लिए हमने सत्ता की बाग डोर अपने हाथो म ली है, क्या इसी के लिए सवहारा के अधिनायकत्व सम्बधी अद्भुत शब्द विद्यमान है, क्या इसी के लिए हम, बोल्शेविको ने प्रेस को अपने अधिकार म ले रखा है कि इसी तरह का ज़हर लोगा की चेतना को विषाक्त करता रहे? नही, इसके लिए नही। आप मानें या न माने, मगर मं आपको वचन देता हू कि वह वक्त आयेगा, बहुत जल्द आयेगा, वह तो आ भी रहा है, आ भी गया है, जब मिकेशिन जसे लोगा को हमारा सारा राष्ट्र पूजेगा। सब लोग अभी यह नही समझते, मगर समझ जायेंगे, हम उह समझने के लिए विवश करेंगे। इसलिए आप दु खी न हो "

पीच ने जसे अचानक अपनी बात कहनी शुरू की थी, वस ही अचानक खत्म भी कर दी और कुछ झेपते हुए खासने लगा। ग्रोगुर्त्सोव और वोलोद्या खामोश रहे। और पोस्तनिकोव ने अपने स्वभाव क विपरात असाधारण रूप से खुशी भरी आवाज म कहा—

"आह, बोल्शेविक-बोल्शेविक अद्भुत लोग है आप! जो कुछ महत्त्वपूण है, उसे अवश्य हकीकत बनाकर रहगे।"

"बनाकर रहगे नही, इस वक्त ही बना रहे है," पीच ने कुछ चिढते हुए जवाब दिया। "थोडा नही, बहुत कुछ उपलब्ध किया गया है। और जो कुछ हमारे सामने है, भविष्य म हम जो कुछ करनवाल है, उसकी ता किसी न कल्पना भी नही की हागी।"

"काफी टेढी खीर है यह।" पोस्तनिकाव न कहा।

"मगर फिर भी हम शिकवा शिकायत नही करत है। हा, हमारा काम आसान हा जाता, अगर बुद्धिजीवी खुद ऐस प्रोफेसरा, मिसाल के तौर पर गेन्नादी तारासाविच का अपने बीच से निकाल बाहर करते। तब हमारा काम कही आसान हा जाता।"

पीच न अपन घुटना तक के पुरान धुरान जूता का कुछ ऊपर की आर खाचा, कनखिया स इवान दिमीत्रियविच की आर दखा और पूछा—

"बुरा ता नहा मान गय आप? मैंन ता सद्भावना स ऐसा कहा है।"

वारहवा अध्याय

शपथ

इस्टीटयूट का दीक्षात समारोह वडे अजीव ढग से, कटुतापूण अजीव ढग से समाप्त हुआ। रेक्टर को शायद बडे अधिकारिया ने वुला भेजा या फिर अध्यक्षमण्डल मे वैठे-वैठे उन्ह ऊव अनुभव हान लगी और इसलिये वे डीन को अध्यक्षता सौपकर चले गये। इसी वक्त गेन्नादी तारासोविच झोवत्याक ने वालन की अनुमति ले ली। वह देर तक और भारी भरकम शब्दा का उपयोग करते हुए बोलता रहा। उसने फिर स अपने मनपसन्द १६११ की वतमान काल से तुलना की, फिर स इन्स्टीटयूट के उन भूतपूव छात्रो का उल्लेख किया, जो अच्छे वज्ञानिक कायकर्त्ता बन गये थे, इसके अध्यापका के नाम लिये, मगर पोलूनिन का नाम लेना भूल गया। हॉल म से आवाजें आई।

"प्राव याकोव्लेविच का नाम क्या नही लिया गया?"

"पोलूनिन का नाम लीजिय।"

"पोलूनिन को श्रद्धाजली अपित करनी चाहिए!"

"मैंने तो इस समय जिन्दा अध्यापका के ही नाम लिये है," झोवत्याक न कहा। "जहा तक प्रोफेसर पोलूनिन का सम्वन्ध है, ता मैं सहप यह सुझाव देता हू कि हम उनकी याद म कुछ क्षण मौन खडे रह।"

"सहप" शब्द दो मानी थी, इसलिये हाल म खुसर-फुसर सुनाई दी। झावत्याक ऐसे अवसर के अनुरूप मुख मुद्रा वनकर कुछ क्षण तक भापण मच के पास मौन खडा रहा। इसके वाद अपनी आवाज का पर्याप्त शोकपूण वनाते हुए उसन कहा—

"कृपया बैठ जाइये!"

सभी बठ गय। पावल्याक कोई दसेक मिनट और बोलता रहा और इसके बाद तालियो की हल्की सी आवाज़ के बीच चला गया। इराईदा के पापा, यानी डीन कुछ मिनमिनाय और बाल कि दीक्षान्त-समाराह को समाप्त करना चाहिए। रक्टर अभी तक नहीं लौटे थे। वे समझदार आदमी थे और निश्चय ही उनकी उपस्थिति म ऐसा कुछ न हो पाता। डीन न तो बडी उतावली म डिपलामे साप, नामा का गडबडात और कुछ मज़ाक-वज़ाक करते हुए, यद्यपि हम यह जानते हैं कि जीवन म कुछ ऐसे क्षण हात है, जब मजाक बिल्कुल अटपटे लगते हैं। य मज़ाक तो यव्गेनी को भी अखर रहे थे। वसे इराईदा के पापा के साथ उसे अपना भी कुछ हिसाब चुकाना था।

"हमारी यह समाराही सभा समाप्त होती है," पावेल सर्गेयेविच ने तुतलाते हुए घोषणा की। "अब आप जीवन-भेत्र म जाय, नौजवान लोगो।'

"हुम, यह भी अच्छी रही," आगुर्त्सोव न अपनी गुद्दी खुजलाते हुए कहा। "पीटर प्रथम ने यह ठीक ही कहा था—नौकरी बजाओ, ता नही तुतलाओ, अगर तुतलाओ, ता नौकरी नही बजाओ। मतलब यह कि सब समाप्त?"

"समाप्त क्या?" उस्तिमन्का ने झल्लाकर कहा। "यह तो अभी आरम्भ ही है!"

सभा-भवन खाली हो गया। झाडने-बुहारनेवाली मौसी मोमा बचा का ज़ोर से इधर-उधर हटात हुए फर्श धाने लगी। पीच खिडकी के पास पर बैठा हुआ एक फटी-पुरानी कापी के पन्ने उलट रहा था।

"मिल गयी," उसन कहा, 'चूंकि हमारे साथ बेहूदा सलूक किया गया है, इसलिये हम खुद ही यह शपथ ले लेते है।"

न्यूस्या ता फौरन डर गयी। वह बडी सावधान किस्म की लडकी थी और अस्पष्ट शब्दा, उग्र वाक्या और अप्रत्याशित गति विधिया स बहुत घबराती थी।

"और ला!" भौह ऊपर चढात हुए उसने हैरानी प्रकट की। "यह शपथ क्या बला है?"

पीच न कुछ साचा, गहरी सास ली और पूछा—

"तुम्हे तो शपथ लेते हुए भी डर लगता है, यूस्या? तुम क्या समझती हो कि हम मेसन* है?"

यूस्या ने अपने का इस मामले से दूर रखने के लिये हाथ झटका और हॉल से बाहर चल दी। उसके सडलो की एडिया बजी, बढिया इत्र की सुगन्ध हाल मे फल गयी और यूस्या इस बात के लिये मन ही मन अपनी तारीफ करती हुई गायब हो गयी कि सदा की भाति इस बार भी उसने समझदारी से काम लिया है।

"बहुत पहले मैने इसे अपनी कापी मे लिखा था," पीच न कहा। "अगर हमारे इन्स्टीटयूट के करता धरताओ ने अक्लमन्दी का सबूत नही दिया, तो हम खुद ही यह कर ले। वैसे तो यह शपथ पुरानी हा गयी है, मगर फिर भी इसम कुछ तो है ही।"

खिडकी के दासे से नीचे कदकर वह कमाडर जसी कडी आवाज म बोला –

"मेर पीछे-पीछे इस दोहराइयेगा। आदरणीय सहयागियो, यह हम डाक्टरा की पुरानी शपथ है। सुनने म आता है कि स्वय हिप्पाक्रेट्स ने इसका अनुमोदन किया था। तो मेरे पीछे-पीछे दोहराइयेगा।"

और पीच शपथ का पढने लगा –

"'विज्ञान द्वारा मुझे दिये गये डाक्टर के अधिकार को बडी कृतज्ञता के साथ स्वीकार करत और इस उपाधि से सम्बन्धित सभी कर्तव्यो के महत्व को अच्छी तरह समझते हुए "

" अच्छी तरह समझत हुए!'" छ के छ नौजवान डाक्टरा न ऊची और कापती आवाज म ये शब्द दाहराये।

"' म यह वचन दता हू कि अपन सारे जीवन म उस व्यवसाय को किसी तरह भी कलकित नही करूगा, जिसे मैं अब ग्रहण कर रहा हू '"

पीच का, बूढे पीच का, जो इस कक्षा का सबसे कठार व्यक्ति था, अचानक गला भर आया, उसकी चीख-सी निकल गयी, उसन आसू पाछा और कागज ओगुर्त्सोव को द दिया। इसी वक्त मौसी सीमा,

---

*मसन – १८वी शताब्दी के एक धार्मिक-दार्शनिक समाज के अनुयायी।

जिसकी विद्यार्थियो के प्रति घृणा को सारा इन्स्टीट्यूट जानता था, झाड़ू से उनके परो को दूर हटाती हुई बिगड रही थी–

"भागो यहां से, कितनी बार कहना होगा तुमसे "

"हिश!" पीच बहुत गुस्से से चिल्लाया।

मगर अब सभी का मूड बिगड गया था और हिप्पाक्रेटस की शपथ पढने को किसी का भी मन नही हो रहा था।

"बस, खत्म!" पीच ने कहा। "इस बात को यही समाप्त मानेगे। जब बडा हो जाऊगा, तो इन सब को हमारी इस प्रभावपूर्ण और मर्मस्पर्श विदाई सभा की याद दिलाऊगा। आज अगर पालूनिन जिन्दा होते, तो इनकी अक्ल ठिकाने करते।"

"मयाकोव्स्की की तरह?" ओगुर्त्सोव ने पूछा।

"इतना ही नही, पैरो पर झाडू भी मारे जाते है," पीच ने दर्द भरी आवाज मे कहा। "मै कुत्ते की दुम नही, डिप्लोमा प्राप्त डाक्टर हू। कहो तो दिखाऊ?"

सीढियो मे जाकर सभी को यह घटना मजाक-सी प्रतीत होने लगी।

पार्क मे वोलोद्या अकेला ही गया। वह भी इसलिये नही कि क्लीनिक की इमारत को विदा कहे–वह जरा भी भावुक नही था–बल्कि इसलिये कि कुछ देर वहा बैठकर राहत की सास ले। बहुत थक गया था वह इन दिनो मे। किन्तु जैसे ही वह मेपल कुज की तरफ मुडा, गानिचेव सामने बैठे दिखायी दिये। पास से निकल जाना सम्भव नही था और बात करने को बिल्कुल मन नही हो रहा था। खास तौर पर इसलिये कि वोलोद्या बहुत अच्छी तरह जानता था कि प्रोफेसर से किस विषय पर बातचीत होगी।

"डिप्लोमा मिल गया?"

"मिल गया।"

"समारोह बढिया रहा?"

"परी-कथा जैसा" वोलोद्या ने उदासी से उत्तर दिया।

'हमारे इन्स्टीट्यूट मे ऐसा करना तो खूब जानते हैं।' गानिचेव ने सहमति प्रकट की। 'नौजवानो की जिन्दगी के सबसे अच्छे दिन उनकी आत्मा मे थूकना उन्हे खूब आता है। इस बात मे उन्हे कमाल हासिल है।"

"मगर आप?" वालोद्या ने अचानक गुस्ताखी से पूछा।

"मै, मै क्या?"

"आप वहा क्या नही आये? आपसे डरते है, आपकी इज्जत करते हैं। आपकी उपस्थिति म किसी की आत्मा म भी थूका न जाता। आप यहा बेंच पर क्या बैठे है?"

"सुनिये, उस्तिमन्को!" गानिचेव ने बिगडते हुए कहा। "आप जा कह रहे है, उस समझते हैं? मै बूढा आदमी हू, थक गया हू, वहा दम घुटता है "

"अपने रुग्न हृदय के बावजूद पोलूनिन अवश्य ही वहा हात," वोलोद्या ने गुस्ताखी से गानिचेव की बात काटते हुए कहा। "रही बुढापे और थकान की बात, ता मुझे यह सुनना अच्छा नही लगा, फ्योदोर व्लादीमिरोविच। आपका पालूनिन के ये शब्द याद हागे कि विज्ञान, प्रगति, सभ्यता और डाक्टरी के पेशे की सबस बडी दुश्मन है मुर्दादिली। और अब आप, पोलूनिन के मित्र इसी मुर्दादिली का प्रचार करते हैं। आह, क्या कह कोई "

वालाद्या न हाथ झटक दिया।

"खैर, हटाइये," अपने को अपराधी महसूस करत हुए, पर झल्लाई आवाज म गानिचेव ने कहा। "नौजवान निर्दयी लाग हाते है।"

"आपको दया चाहिये? क्या बहुत जल्दी ही आप यह नही चाह रहे हैं?"

अब इन दोनो की नजरे मिली।

"आपका आग बुझानेवाला बूढा स्त्रिपन्यूक, जिसके बार म आपन मुझे इतन मर्मस्पर्शी ढग स बताया था, शायद कभी दया की माग न करता। मगर मैं यह चर्चा नही करना चाहता," वालाद्या न दुख और पीडा से कहा, "यकीन कीजिये, बुरा नही मानिये, मैं इतनी ही बात कहना चाहता था कि क्या इतने अधिक लाग मीन-मेख निकालत हैं, बुडबुडाते हैं, मगर जिसकी भर्त्सना करते हैं, जिस पर झल्लात है, उसके विरुद्ध सघर्ष करन के बजाय खुद बेंचा पर क्या बठे रहते हैं? मुझे यह समझाइये।"

अपनी पीडायुक्त आखो का उसन गानिचेव की आखा पर जमा दिया। प्रोफेसर इस नजर को ताव न ला सके और उन्हाने मुह फेर लिया।

' खर आप ठीक कहते हैं," गानिचेव ने नर्मी स कहा। "आपकी सभी बात ठीक नही है, मगर कुछ ठीक है। वसे मैंने आपको अपन बार मे आपकी राय जानने के लिये नही रोका था। मं इस बात का जवाब पाना चाहता हू कि आप मेरे विभाग म काम करन के लिये रुक रहे है या नहीं। '

"स्पष्ट है कि नहीं।"

"बहुत खूब! लेकिन अगर पोलूनिन जिन्दा होते, तो उनके पास तो रुक जाते न?

"उनके पास भी न रुकता," वोलोद्या ने कुछ सोचकर जवाब दिया। "शायद पाच सालो के बाद उनके पास लौट आता "

"बडी मेहरबानी की होती?

"हा, की होती।"

"मगर रुकना चाहते क्यो नही?"

"इसलिये कि आपने और उन्होंने हमे दूसरी ही शिक्षा दी है।"

' हम!" गानिचेव ने ऊची आवाज़ मे यह शब्द दोहराया। "यह सामान्य रूप से कहा गया था, व्यक्तिगत रूप से आपके लिये नहीं।'

'सेर्गेई इवानोविच स्पासोकुकोत्स्की अपने समय म देहाती इलाके के डाक्टर थ ' गुस्से स शब्दो को तोडते हुए वोलोद्या न कहना शुरू किया। "खुद आपने ही हमसे उनकी चर्चा की थी। खुद आपने ही यह बताया था कि जब वे देहाती इलाके के डाक्टर थे, उस समय उनके द्वारा किये गये वैज्ञानिक प्रयासो की गहरी जडो से आज तक फूल पौधे निकल रहे है। आप ही ने स्पासोकुकोत्स्की की वैज्ञानिक रुचियो, समस्या की गहराई तक पहुचने की उनकी क्षमता पर रोशनी डाली थी। ओह, क्या मै आपको आपके ही शब्द याद दिलाऊ "

'विनान,' गानिचेव बुझी-सी आवाज म बोलने लगे, किन्तु वोलोद्या उनकी बात नही सुन रहा था। वह समझता था कि गानिचेव उसकी भलाई चाहते हैं, मगर साथ ही अपने लिये एक शोध विद्यार्थी भी चाहते हैं। लेकिन वह, उस्तिमेन्का, किसी का भी चेला नही बनना चाहता था, वह तो अपने काम म जुटना चाहता था।

गानिचेव की बातो को सुने बिना वह उनके खत्म होने की प्रतीक्षा करता रहा, नीरवता का आनन्द लेता, इस बात की राहत अनुभव करता

रहा कि अब उसे कही जाने की जल्दी नही, धूप के गम, सुखद और सुगंधित धब्बो का लुत्फ उठाता और उस हास्यास्पद गजे तथा लडाके नर गौरैया को देखकर खुश होता रहा, जो बगल से फुदकता हुआ गौरैयो के दल की ओर बढ रहा था।

"यह सब इसलिये कि बाद म आपसे शोध प्रबंध का विषय पूछू?" गानिचेव की बात पूरी होने पर बोलोद्या ने पूछा।

"आप तो विषय नही पूछेगे न? खुद ही ढूढ लगे!"

"मैं किसलिये विषय ढूढूगा, फ्योदोर व्लादीमिरोविच, अगर अपने भीतर से मुझे इसकी प्रेरणा अनुभव नही होती। स्पासाकुकोत्स्की न ककाल को लम्बा करने के लिये स्कैटो के पेंच और पियानो के तारो की सलाइया लेकर खुद अपने हाथो से शिकजा बनाया था। मुझे मालूम नही कि यह वैज्ञानिक काय है या नही, किन्तु उन्होने कोई उपाधि पाने के लिये नही, बल्कि ध्येय की पूर्ति की प्रबल आवश्यकता के लिये ऐसा किया था। या फिर अमोनिया स उनका हाथ धोना अथवा पेट को कसने के लिये नालीवाला शिकजा इस्तमाल करना या रक्त क्षेपण—सभी एक ध्येय की पूर्ति के साधन थे। उनके सचालन म जो कुछ भी किया जाता था, वह क्लीनिक के जीवन की ज़रूरत को ध्यान म रखकर किया जाता था और क्लीनिक हमेशा उनकी जवानी उनके इलाकाई अस्पताल से सम्बधित रही। क्या मेरी बात सही नही है? या फिर पिरोगोव को ले लीजिये। सभी जानते है कि वे जसे-कसे लिखे गये शोध प्रबधो और कूपमडूकी विद्वानो से बहुत चिढते थे। मगर उसके उलट रूदनेव ऐसी चीजो का स्वागत करते थे। व्यक्तिगत रूप से मैं पिरोगोव का पक्षधर हू। नकली विद्वान बनाने म क्या तुक है। यह महगा काम है, इससे विज्ञान की हानि होती है और ध्येय को क्षति पहुचती है। व्यक्तिगत रूप स मैं तो ऐसा ही सोचता और मानता हू।"

"कौन है आप ऐसे, व्यक्तिगत रूप से सोचने या न सोचने, मानने या न माननेवाले," गानिचेव पूरी तरह से भडक और चल्ला उठे। "आखिर क्या हैं आप मुझे बताइये तो?"

"डिप्लोमा प्राप्त डाक्टर।"

"यह विनम्रता नही है, उस्तिमेन्को।"

२१

"अपने पेशे के लिये विनम्रता को भला मैं क्या अच्छी चीज़ मानूं? मैं किसी अलग थलग और दूर-दराज़ के गांव में काम करने जाऊंगा और वहां मेरी इस विनम्रता का यह नतीजा होगा कि हर रोगी के लिये हवाई डाक्टरी सहायता के ज़रिये किसी दूसरे डाक्टर को मशविरे के लिये बुलवाऊंगा। यही होगा न?'

गानिचेव ने अंगड़ाई और जम्हाई ली, गहरी सांस छोड़ी–

'हे भगवान!'

'मैंने आपको थका दिया न?" वालोद्या ने सहानुभूति से पूछा।

'मैं थका तो नहीं, मगर यह सब असाधारण रूप से अटपटी बात हो रही है। आखिर आप तो गुणवान व्यक्ति हैं।"

"यह तो मैं जानता हूं, वालोद्या ने चहककर कहा। "मुझे इस बात का तनिक भी सन्देह नहीं है, नहीं तो मैं कभी का इन्स्टीटयूट छोड़ देता। वह इसलिये कि आपने और पोलूनिन और पोस्तनिकोव ने हमें हमेशा यही शिक्षा दी है कि डाक्टर के पास केवल ज्ञान ही नहीं, उसे गुणवान भी होना चाहिये। और मैं डाक्टर बनना चाहता हूं।"

'खैर जाइये यहां से" गानिचेव ने कहा। "मैं फिर भी आप पर युवा कम्युनिस्ट लीग के ज़रिये दबाव डलवाऊंगा।"

और उन्होंने सचमुच ऐसा दबाव डलवाया भी।

जातीरूखो गांव में!

कई दिनों तक डटकर संघर्ष करने के बाद ही वोलोद्या को जातीरूखा गांव में अपनी नियुक्ति करवाने में सफलता मिली। यह गांव रेलवे स्टेशन से दो सौ किलोमीटर दूर था।

"लट्ठों के बेड़े पर नदी भी पार करनी होगी!" गानिचेव ने मज़ा लेते हुए कहा।

'तो क्या हुआ, कर लूंगा पार!' वोलोद्या ने उत्तर दिया।

कुल मिलाकर वोलोद्या को इस बात से खुशी हुई कि उसके कारण इन्स्टीटयूट में इतना हंगामा हो रहा है। पीच ने भी दूर-दराज़ के देहाती अस्पताल में अपनी नियुक्ति करवा ली। ओगुर्त्सोव कामेन्का में चला गया। लेकिन अभी बहुत से नये डाक्टर अधिकारियों के आगे-पीछे

घूम रहे थे, सिफारिशी चिट्ठिया लेकर मास्को के चक्कर काट रहे थे ताकि उन्हे दूर के किसी गाव मे नही, बल्कि नजदीक के किसी शहर म ही जगह मिल जाये।

प्रादेशिक मानचित्र म वालोद्या का अपना ज्ञातीरूखी गाव नही मिला। एक हफ्ते बाद उसे वहा के लिय रवाना होना था। बूआ अग्ला या को वोलोद्या के भविष्य की कहानी सुनकर कोई खुशी नही हुई।

"ता जाओगे?" बूआ ने पूछा।

"हा, जाऊगा।"

"मगर वहा तो अस्पताल भी नही है?"

"दवाखाना है। अस्पताल बना लूगा।"

"खुद बनाओगे?"

"खुद।"

"तुम्ह बनाना सिखाया गया है?"

"क्या आपको, जा कभी धोबिन थी, राज्य-सचालन सिखाया गया था?"

"मैं राज्य-सचालन तो नही करती।"

"तो मुझे भी खुद अस्पताल का निमाण नही करना होगा। निर्माण काय का सचालन करूगा, जरूरी हिदायत दूगा।"

अग्लाया ने गहरी सास ली। वालोद्या कठोर दृष्टि से उसकी ओर देख रहा था—उससे बहस करना बेकार था।

"और लोग ऐसी बात करते है कि अब हमारे युवाजन पहले जस नहा है।" अग्लाया ने मन ही मन सोचा और फिर एक बार गहरी सास लकर वालोद्या के लिय चमडे तथा नमदे के घुटना तक के जूत, भेड की खाल का कोट और फर की टोपी खरीदने चली गयी। और वोलोद्या मानो होश म आते हुए घबराकर चौक उठा—"और वार्या? अब क्या किया जाय? इसका मतलब तो यह हुआ कि उसके बिना ही सब कुछ करना होगा? सो भी इस वक्त, जबकि हर क्षण मुझे उसकी सलाह लेने की जरूरत है, जबकि जिन्दगी शुरू ही हो रही है? क्या किया जाये?" बहुत बेचन होते और कुछ न समझ पाते हुए उसन यह सोचा और उसके लिय घर म बैठे रहना मुश्किल हो गया। वह भागता हुआ स्तेपानोव परिवार के यहा पहुचा।

"सलाम करता हूँ हुजूर को," दरवाजा खोलते हुए यव्गेनी ने कहा। "तशरीफ लाइये, जनाब प्रोफेसर साहब। कुछ बड़ी ही प्यारी खबर है "

चूंकि गर्मी थी, इसलिये येव्गेनी निकर पहने था, जो उसकी मां ने खास कपडे से उसके लिये सी थी। जैसा इसे 'शार्टस" कहता था, वैसे ही जैसे अपनी बरसाती को "मान्टेल" की संज्ञा देता था। बालों को जाल में साधे था और अब वह पाइप पीता था, जो उसे दादिक ने भेंट की थी। दादिक के साथ कई जोरदार झड़पों के बाद कुछ व्यंग्यात्मक होते हुए भी अब उसके खासे दोस्ताना सम्बन्ध कायम हो गये थे।

वार्या भी घर पर ही थी। सोफे पर लेटी हुई कविताएं पढ रही थी। मुखावरण पर स्वर्ण अक्षरों मे काव्य संग्रह" लिखा हुआ था। दादा मेफादी क्वास का शोरबा पका रहे थे।

"ठीक खाने के वक्त आये हो," दादा ने कहा। "क्वास का शोरबा तैयार हो रहा है, बेटे "

"तुम किसलिये नाराज-सी दिख रही हो?" वालोद्या ने वार्या से पूछा।

और तुम क्या उम्मीद कर रहे थे?" उसने गुस्से मे जवाब दिया और कमरे से बाहर चली गयी।

'तो ऐसा माजरा है, मेरे जिगरी दोस्त!" यव्गेनी ने अपनी जांघें थपथपाते हुए कहा। "अगर मेरी इराईदा देहाती बंगले और बच्चे की खातिर मुझे अकेला न छोड़ जाती, तो मैं तो शायद पागल हो जाता।"

यव्गेनी ने रहस्य भरी दृष्टि से वालोद्या की ओर देखा।

"तो क्या खबर है तुम्हारे पास?" वालोद्या ने उदासीनता से पूछा।

"मेरी ही नहीं वह तो तुम्हारी भी खबर है, जनाब डाक्टर साहब।"

येव्गेनी का पूरा व्यक्तित्व मानो यह कह रहा था कि वह अपने से बहुत खुश है, अपनी शार्टस से, अपनी छोटी छोटी, मजबूत टांगों, अपनी कुछ-कुछ चर्बी चढी फिर भी जो मांसपेशियां थी, उनसे, आत्म भावना, स्वास्थ्य अपने निकट भविष्य और उस शोरबे की कल्पना से भी खुश है, जो वह कुछ देर बाद खानेवाला था।

"तो हुजूर, जातीरूखी नही जा रहे है।"

"कसे नही जा रहा हू?"

"बस, नही जा रहे हो, ब्लादीमिर अफानास्येविच। हमारे नगर के स्वास्थ्य विभाग ने दा विशेषज्ञा की, यानी तुम्हारी और मेरी माग की है। तुम शहर के प्रथम अस्पताल म सहायक चिकित्सक होगे और चूकि मैं स्वास्थ्य रक्षा सबधी डाक्टर हू, इसलिय नगर के स्वास्थ्य विभाग म काम करूगा। क्यो, है न बढिया खबर?"

वोलोद्या मुह लटकाये खामोश रहा।

दरवाजा धीमी सी चू चर के साथ खुला और वार्या दूसरे, साफ सुथरे सफेद फ्राक मे सामने दिखाई दी।

"उसके ऊचे मस्तक पर था भाव न काई झलका," येव्गेनी ने लेर्मोन्तोव की "दानव" कविता की यह पक्ति दोहरायी। "साथी भावी सहायक-डाक्टर, तुम्ह तो जैसे इस खबर से अफसोस हो रहा है? या तुम यह मानते हो कि स्पेन की आजादी के लिय वीरतापूवक अपनी जान देनेवाले व्यक्ति के बेटे को जातीरूखी जाना चाहिय, जबकि यूस्या, स्वेत्लाना, आल्ला और चतुर मीशा की शहरा म नियुक्ति हानी चाहिये?"

वोलोद्या सिर झुकाये बठा था, येव्गेनी की तरफ देख भी नही रहा था। येव्गेनी बहुत जोश म आ गया था, बहुत शोर मचाने, यहा तक कि चिल्लाने लगा था।

"वार्या के सामने इस विषय की चर्चा करना मुझे अच्छा नही लग रहा,' येव्गेनी न कहा। "वैसे तो इस तरह की चर्चा चलाना शिष्ट भी नही है, लकिन तुम्हारे जसा के साथ ऐसा करना पडता है। जरा सोचा तो इसे तुम्हारी सरलता ही माना जाय या इससे भी कोई बुरी चीज, लेकिन सोचो तो कि जातीरूखी म ता कोई क्लब तक नही है। ठीक कह रहा हू न?"

"ठीक है।" वोलाद्या ने हामी भरी।

"और जाहिर है कि वहा न तो कोई सस्कृति भवन है और न कोई नाटक या कला-मण्डली। वहा कुछ भी तो ऐसा है या तुम्हारे दवाखाने के सिवा ऐसी कोई भी उम्मीद न की जाय?"

'उसन तो शायद जानने की कोशिश ही नही की होगी।" वार्या ने चिल्लाकर कहा। "इस महान आदमी को ऐसी चीजा की तफसील म जाने की जरूरत ही क्या है?"

"जरा देखो तो इसे, कैसी सूरत बन गयी है इसकी!" वार्या के कंधे पर हाथ रखकर येव्गेनी ने कहा। "गौर से देखो! तुम्हारे पत्थर दिल पर किसी चीज़ का कोई असर नहीं होता। तुम्हारी बला से, किसी पर कुछ भी बीते। तुम तो अपने मे, अपनी 'भीतरी दुनिया' मे मस्त हो जैसा कि वार्या बडे उत्साह से तुम्हारी सफाई पेश करने के लिये कहती है। लेकिन तुम मेरी आखो मे धूल नही झाक सकते। अगर इस धरती पर तुम्हारे लिये कोई लक्ष्य है और उस लक्ष्य के लिये तुम्हारे दिल मे लगन है, तो वार्या के सामने भी कोई लक्ष्य है और उस लक्ष्य के प्रति उसके दिल मे भी लगन है। स्वार्थी होना अच्छी बात है, लेकिन तभी तक, जब तक कि वह स्वार्थ दूसरो की लाशो को न रौंदने लगे। और जहा तक मेरी समझ काम करती है, तुम ऐसे भोले भाले भी नही हो। हमारे सभी सहपाठियो म शायद तुम्ही सबसे ज्यादा समझदार हो, सिर्फ दिखाने के लिये बुद्धू बने रहते हो। और उसूलो का गाना गाते हुए तुम्हारा ज़ातीरूखी गाव जाना वास्तव मे पद लोलुपता का पहला कदम है। हा, हा, मै बिल्कुल ठीक कह रहा हू, तुम मुझे आखे न दिखाओ, यह 'देहाती डाक्टर' के बहुत ऊची जगह पर पहुचने के रास्ते की पहली मजिल है। तुम शहर म अपने को परिस्थितियो के अनुकूल ढालने के बजाय सबसे नीची सीढी से शुरू करना चाहते हो। तुम वहा कोई दो एक साल काम करोगे और फिर कुछ बनकर वहा से आओगे और बडे-बडे कदम बढाते ऊचे चढते चल जाओगे। लेकिन वार्या वह तो तबाह हो जायगी तुम्हारे साथ उस वीरान म उसे

"बस करो!" वार्या न अनुरोध किया।

'उसकी प्रतिभा नष्ट हो जायेगी!" यव्गेनी न भावुक होकर कहा। 'इसके लिय कौन जिम्मेदार होगा? कौन होगा जिम्मेदार? कोई और? क्या तुम इतना भी नही समझ सकते कि अपने स्वार्थ, ढग स सोची-समझी अपनी महत्वाकाक्षाओ की पूर्ति के लिय तुम कितना बडा अपराध कर रहे हो? क्या तुम "

"बस काफी बोल चुके " वोलोद्या न उठते, टेढी और बनावटी-सी मुस्कान लाते तथा वार्या का बडे गौर स देखते हुए कहा। 'मैं तो बहुत पहल स ही यह समझ चुका था कि तुम सब एक जस हो—तुम्हारा

वालेन्तीना ग्राद्रेयेव्ना, तुम्हारा दौदिक और तुम तथा यव्गेनी। कमीना, येव्गेनी, इसलिये और भी ज्यादा कमीना है कि वह सभी लोगो मे अपने जसे कमीन का ही छिपा हुआ देखता है। आज तुमने मुझे 'पद-लोलुप' कहा है, मैं इसे तुम्हारी आत्मा की धक्कार पर ही छोड देता हू, मगर तुम, वार्या, तुम क्या चुप रही?"

रुआसे बालक की तरह उसके हाट काप उठे, मगर उसने क्षण भर म अपन को सम्भाल लिया और धीमे, अप्रत्याशित रूप स शान्त स्वर म बोला—

"मैं तुम्ह यह बताता हू कि तुम क्या चुप रही। तुमने अपन भाई की बात इसलिय नही काटी कि अपन दिल की गहराई म तुम भी ऐसा ही समझती हो। और अगर तुम भी ऐसा ही समझती हो ता क्या जरूरत है तुम्ह मरी? मुझ कमीने की, पद-लालुपता के आधार पर अपन सारे जीवन की याजनाए बनानेवाले मुझ जैसे मौकापरस्त और कमीने से क्या लेना-दना है तुम्ह? मेरे साथ नीचतापूर्ण जीवन बिताना चाहती हा? कमीने की यातनाआ मे हिस्सा बटाना चाहती हो? लेकिन, वार्या, मैं वैसा नही हू। और यह भी नही हा सकता कि तुम इस न समझो। तुम तो समझती हो, लेकिन बात यह है कि येव्गेनी तुम पर हावी है, तुम्हारी मा तुम पर हावी है। मै दख रहा हू कि इस वक्त तुम मुझ पर भरासा कर रही हो, मुझे समझ रही हो, लकिन कुछ देर बाद, जब ये लोग तुम्ह अपन दृष्टिकोण से समझायेंगे, तो सतही तौर पर वह भी तुम्ह सच ही प्रतीत हागा। लेकिन वह मरे बारे मे या मेरे जस दूसरे लोगा के बारे मे नही, बल्कि येव्गनी के बारे मे सचाई होगी। पर तुम सब तो यही समझते हो कि दुनिया यव्गेनी जसे लागो से भरी पडी है? ऐसा नही है। और तुम ये आसू नही बहाओ वार्या। अब तो उनका कोई मतलब ही नही रहा। मैं तुम्हारे दिल का बिल्कुल ठेस नही लगाना चाहता, मै तो सिर्फ वही कुछ कह रहा हू, जो सोचता हू। जाहिर है कि हमारी यह बातचीत आखिरी है और इसलिये तुम दोनो का इतना जान तो लेना चाहिये कि मैं क्या सोचता हू। वसे शायद ऐसा करन की जरूरत भी नही है। सम्भवत काई जरूरत नही है। कुल मिलाकर, अपनी चर्चा करना, अपनी सफाई देना, अपन हक म सबूत पेश करना, यह सब बहुत घटिया काम ह।

हा, एक बात साफ है, मै दोहराता हू, वार्या, इतना साफ है कि अगर तुम इसके साथ सहमत हो और चुप रहो, तो "

"मै उसके साथ सहमत नही थी," वार्या बोली। "मैं तो सिफ इतना ही "

"और मेरे लिये सिफ इतना ही – बहुत काफी है!" वालोद्या न जवाब दिया। "भूगभशास्त्र की पढाई तुमने छोड दी है, नाममात्र को विद्यार्थिनी रह गयी हो। मतलब यह कि अपने जीवन को नीचे की ओर ले जा रही हो और उन मूर्खों की बात सुनती हो, जो यह खुसुर फुसुर करते रहते है, मानो तुममे प्रतिभा है। मगर, वार्या, प्रतिभा तुमम नही है, हा, बन्दर जैसी नकल करने की कुछ क्षमता अवश्य है। मगर यह तो घरेलू दावतो मे मनोरजन के लिय ठीक है, किसी काम, श्रम या कत्तव्य के लिये नही "

"मेरी समझ म नही आता कि तुम यह सब बकवास क्या सुन रही हो?" दोदिक द्वारा भेट की हुई पाइप से कश खीचत हुए येव्गनी ने पूछा। "आखिर यह सब तो अपमानजनक है।"

"यह सब बहुत कटु है," वोलाद्या ने वाया के निकट जाकर लगभग फुसफुसाते हुए कहा। "यह सब कुछ बहुत कटु है और मरे जीवन म शायद आज से अधिक बुरा और काई दिन नही आया था। लेकिन हो ही क्या सकता है। नमस्ते!"

"नमस्त!' वालोद्या की तरफ नजर उठात हुए वार्या न कहा। किन्तु वालाद्या न जान-बूझकर वार्या स नजर नही मिलाई, क्योकि उसके लिय वार्या की अभी बच्चा जैसी छिछल आखा म यह दुख देख पाना कठिन था।

दादा न रसाईघर स झाकत हुए कहा कि व क्वास का शारबा खान के लिय मज पर आ जायें।

ता गुडबाई!' यव्गेनी बाहर जाते हुए वालाद्या के पीछे चिल्लाया।

"जगली जानवर!" वाया न अपन भाई को धीमे-स कहा।

वालाद्या जब ट्राम पर चढ रहा था, ता वार्या भी वहा पहुच गयी। उसकी आवाज सुनकर ता वालाद्या का माना काई हैरानी भी नही हुई। ट्राम जाडा और माडा पर बरी तरह झटक दनी तथा झकझारती थी। वाया क छाट-स कान क ऊपर स, जिसम वह झुमका पहन थी,

दूसरी तरफ देखत हुए वोलोद्या कह रहा था – "मास्को या किसी दूसरे वडे शहर म जाओगी, हो सक्ता है कि वहा किसी उच्च थियटर विद्यालय म तुम्ह दाखिला भी मिल जाय, फुटलाइटें जल उठेगी, तुम्ह फूल भेंट किये जायेगे, वस, इसके सिवा वहा और क्या होता है? वाकी सभी लागा को इस वात की खुशी हागी कि मैं जा कुछ कहता था, वह गलत था। लेकिन अगर ऐसा ही है, तो फिर तुम्ह ओतीरुखी गाव स मतलव ही क्या है? असली और सवसे वडी वात ता यह है कि जिन्दगी के प्रति हमार रवय अलग अलग है। वेशक कभी ऐसा वक्त था, जब तुम मुझे समझती थी, लेकिन वास्तव म तो तुम मुझे नही समझती थी, रत्ती भर भी नही समझती थी। वह तो जसे समझने के वारे म वच्चा का सा खेल था। ठीक है, न?

"वालाद्या!" वार्या न कहा।

"अलविदा, वार्या!" वालाद्या ने जवाव दिया। "अलविदा! अगर फुरसत हो, तो खत लिखना। में जवाव दे दूगा। और अव कुछ हासिल नही होगा इन वाता की चर्चा करके "

वालाद्या चलती ट्राम स नीच कूद गया, कुछ कदम ट्राम के साथ साथ भागता रहा और फिर फौरन दूसरी आर मुड गया। ऐसा ही आदमी था वह, तव भी मुह माडकर चला जाता था, जब गलती पर हाता था।

"शायद मरी जसी हालत म होने पर आदमी को नशे मे धत्त हो जाना चाहिये!" वीयर की वोतल और मग का विज्ञापन दखकर वोलाद्या न साचा। "या फिर सिगरेट पीना शुरू कर दना चाहिय!" किन्तु धीर धीर कसकत दद से दवा हुआ वालाद्या इसी क्षण ऐम विचारा के वारे म भूल गया।

विदा, वार्या!

कुछ दिना तक वोलोद्या कही वाहर नहीं गया, अपने कमरे म पडा सोचता रहा, राता को सो नही पाया। वार्या का टेलीफान करन के लिये उसन दो वार नम्वर मिलाया, मगर फिर अपना इरादा वदल लिया। एक गम दोपहरी म डाकिया एक रजिस्टरी लेकर आया, जिस

पर बहुत सी मुहर लगी थी। रजिस्टरी जन कमिसारियत ने मास्को से भेजी थी। वोलोद्या को रसीद पर पेंसिल से नही, स्याही स दो बार हस्ताक्षर करन पडे।

लिफाफे मे एक बडा कागज़ था, जिसम लिखा था कि व्लादीमिर अफानास्येविच उस्तिमेन्को को काय नियुक्ति के लिय फौरन मास्को म स्वास्थ्य रक्षा की जन-कमिसारियत के कायालय मे साथी उसोलत्सेव क पास पहुचना चाहिये। बडे कागज़ के साथ बोगास्लोव्स्की का छोटा-सा नोट भी था। वागोस्लोव्स्की ने लिखा था कि "जसा हमने तय किया था", उसी के मुताबिक मैं साथी उसोलत्सेव से उस ज़िम्मेदारी क, महत्त्वपूण और दिलचस्प काम को पूरा करने के लिय आपकी सिफारिश कर रहा हू, जिसके बारे मे हमने "चोर्नी यार के घाट पर चर्चा की थी।" यह नोट इसी साल की ६ मई का लिखा हुआ था।

शाम होने को थी, जब पोस्तनिकोव और गानिचेव एकसाथ वोलोद्या के पास आये। अग्लाया पेत्रोव्ना वोलोद्या की चीज़े सूटकेस म रख रही थी, वोलोद्या अपनी किताबे छाट रहा था।

"कहा की तैयारी हो रही है?' चालाकी से आखे सिकाडते हुए गानिचेव ने पूछा।

"यह रजिस्टरी आई है " जन कमिसारियत का लिफाफा दिखाते हुए वोलोद्या ने जवाब दिया। "क्या मामला है, कुछ समझ म नही आ रहा।"

"मामला बडा सीधा-सादा है,' पोस्तनिकोव न कहा। "विदेश।'

"कैसा विदेश?" अग्लाया ने हाथ नचाते हुए सवाल किया। "अभी वह अनुभवहीन छोकरा ही तो है और "

'अनुभवहीन छोकरा तो जरूर है, मगर बडा समझदार है वह' मछो पर हाथ फेरते हुए पोस्तनिकोव न कहा। "और उस पर भरोसा किया जा सकता है। इसीलिय तो तीन आदमियो न इसकी सिफारिश की है। बोगोस्लोव्स्की न, जो वहा काम कर रहे हैं, प्रोफेसर गानिचेव ने, जो उसे शरीर विकृति विज्ञानी बनाना चाहते थे, और मैंने, जो आपके भतीजे के रूप म समय के साथ एक अच्छा शल्य चिकित्सक बनने की सम्भावना देख रहा है। यह खत भेजनेवाला उसोलत्सेव कभी हमारा

विद्यार्थी था और इसलिये जब-तब हम लोगो से सलाह ले लेता है। आशा करता हू कि अब सारी बात समझ म आ गयी होगी ?'

"लेकिन कौनसा विदेश है यह ?'

"पेरिस तो होने से रहा," गानिचेव न उत्तर दिया। "मेरे ख्याल म एशिया का ही कोई देश होगा, सो भी कठिन। मजूर है वहा जाना ?"

विदा लेने से पहले इन लोगो न शेम्पन पी। वालोद्या उदास भी था और कुछ खोया-खोया भी। पास्तनिकोव मौन साधे रहा और गानिचेव न वालोद्या से हाथ मिलाते हुए कहा—"आपको अपनी शुभकामनाए देता हू। वहा पहुचकर खत लिखिये और सच कहता हू, मेरे अजीज़, बहुत अफ्सोस है मुझे दिली अफसोस है कि आप मेरे विभाग म काम करने के लिये राजी नही हुए।"

वालोद्या के साथ-साथ अग्लाया भी गाडी के डिब्बे म दाखिल हुई।

"रास्ते मे खूब अच्छी तरह से सो लेना, बूआ ने अनुरोध किया। 'देखो तो, कसी सूरत निकल आई है, आदमी नही, किसी देव प्रतिमा के तपस्वी जसे लगते हो।"

वालोद्या चौबीस घण्टा से अधिक समय तक सोता रहा। इसके बाद उसने बूआ द्वारा दिये गये सभी सडविच, मीठा बन और पूरे उबले हुए चार अडे एक बार ही खा लिये और फिर से सो गया। इस तरह उसने नीद की कमी को पूरा किया, किसी भी तरह के सपनो ने उसकी नीद म खलल नही डाला और पूरी तरह से जाग उठने पर उसने कोई खुशी भी महसूस नही की। कुछ बहुत ही प्यारा, बहुत ही मूल्यवान और अत्यधिक महत्त्वपूर्ण सत्ता के लिये उसके जीवन से अलग हो गया था।

मास्को के स्टेशन पर उसने दाढी बनवायी, बाल कटवाये, जूतो पर पालिश करवायी और, शायद कोई जरूरत आ पडे, यह सोचकर सिगरटो का एक पैकेट भी खरीद लिया और साथी उसोलत्सेव से मिलने चल दिया। उसे फौरन भीतर बुला लिया गया। गानिचेव का यह भूतपूर्व विद्यार्थी कोई पतीस साल का हृष्ट-पुष्ट, सैनिक जैसे मामूली और रूखे चेहरेवाला आदमी था। उसने मशीन से अपना सिर घुटा रखा था और गाढे कपडे की खुरदरी-सी कमीज़ पहने था।

"हम आपको विदेश, 'न' जनतन्त्र म भेजने की सोच रहे हैं," उसोलत्सेव ने नज़रो से वालाद्या की थाह लेते हुए जल्दी-जल्दी और रुखाई से कहा। "हम आशा है कि आप पर जा विश्वास किया गया है, आप अपने को उसके योग्य सिद्ध करेंगे और इस बात के लिय अपना पूरा ज़ोर लगायेगे कि बाद म वहा के लाग आपकी अच्छे शब्दा मे चर्चा कर। आपकी, और ज़ाहिर है उस देश की, जहा आपने शिक्षा पायी और जिसने आपको एक अच्छा नागरिक बनाया "

उसालत्सेव औपचारिक भाषा म बोल रहा था, किन्तु उसके स्वर मे औपचारिकता नही थी, और आखो म अप्रत्याशित ही खुशी की चमक आ गयी।

"आपके पास सिगरेट है?" उसने अचानक पूछा।

वोलोद्या का याद था कि उसने सिगरेटो का पकेट खरीदा था, मगर जवाब यह दिया कि वह सिगरेट नही पीता है। उसे यह विचार आने पर कटुता-सी अनुभव हुई कि मानो सचालक महोदय की कृपादृष्टि पाने के लिये ही उसन सिगरेट खरीदी हा।

'आम तार पर हमारी विदेश की जो धारणा हाती है, वसा वह बिल्कुल नही है," उसोलत्सेव ने अपनी बात जारी रखी। "काक्टेल के हाल वहा आपको नही मिलेंगे, सिनेमाघर भी शायद ही वहा हा, जबकि झाड फूक से इलाज करनेवाले ढोगी हकीमो ग्रार सभी तरह के अन्तर्राष्ट्रीय कूडे करकट की वहा कोई कमी नही है। ज़िन्दगी बहुत कठिन होगी और काम करना भी आसान नही होगा। सहायक चिकित्सा कमचारी वहा आपको तब तक नसीब नही होगे, जब तक यह नही साबित कर देंगे कि आप झाड फूक करनेवाला से बेहतर इलाज करते है और जब तक स्थानीय लोग आप ही से काम सीखकर आपकी सहायता करने की इच्छा अनभव नही करेंगे।"

उसोलत्सेव नज़र टिकाकर वोलाद्या की ओर देखता हुआ प्रतीक्षा करता रहा।

"फैसला कर लिया?"

"कर लिया।"

"क्या फैसला किया?

"मै जाऊगा।"

"डर तो नही जायेंगे? मा-बाप को चिट्ठिया तो नही लिखने लगेंगे कि मुझे यहा से निजात दिलवाइये? सोच लीजिये, आपने तो अभी जवानी मे कदम ही रखा है।"

"मेरे मा-बाप नही है," वोलोद्या ने रुखाई से जवाब दिया। "रही मेरे जवान होने की बात, तो मैं डाक्टर हू और बाकी कोई चीज़ कुछ भी महत्त्व नही रखती।"

"तो ठीक है, अर्ज़ी दे दीजिये!" उसोलत्सेव ने कहा। "तीन साल का करार होगा।"

सभी तरह की औपचारिकताए पूरी होने म काफी वक्त लगा। किन्तु वोलोद्या को इस कठिन यात्रा की तयारी करने के लिये इससे भी कही ज्यादा वक्त और शक्ति लगानी पडी। जब शल्य चिकित्सा का सारा साज़-सामान, दवाइया, किताबे और कपडे लत्ते खरीद लिये गय, तो कुल मिलाकर इतनी अधिक चीज़े जमा हो गयी कि नवनिर्मित और सुविधाजनक "मोस्क्वा" होटल के छोटे से कमरे म वोलोद्या के लिये आसानी से आने जाने की भी जगह बाकी नही रही।

बूआ अग्लाया अपने भतीजे को विदेश विदा करने के लिय आयी। नोश्तादत से रोदिग्रोन मेफ़ादियेविच भी मानो सयोगवश ही अचानक आ पहुचे। अब व प्रथम श्रेणी के कप्तान बन गये थे, खुशी भरे अदाज़ म उन्हाने यह शिकायत की कि चौबीसो घण्टे व्यस्त रहते है और वोलोद्या से यह अनुरोध किया कि वह अपनी हठीली बूआ को अतीव सुदर लेनिनग्राद नगर जाने के लिये राज़ी कर ले और अगर वह द्वीप पर रहते हुए डरती है, तो राम्बोव–ओरानियेनबाऊम आ जाये। अग्लाया हसती रही और वोलोद्या ने देखा कि कैसे वह चोरी छिपे अपने पति की पके बालावाली कनपटी को चूम रही है। रोदिग्रोन मेफ़ादियेविच वोलोद्या के लिये एक रेडियो और फालतू बटरियो का सेट भी उपहार स्वरूप लाये थे, ताकि वह बिजली न होने पर भी रेडियो कार्यक्रम सुन सके।

"वहा तुम्हे इसकी बडी ज़रूरत महसूस होगी," वोलोद्या को रेडियो के उपयोग की विधि बताते हुए रोदिग्रोन मेफ़ादियेविच न कहा, "वहा, सभी चीज़ो से दूर होने पर यह तुम्हारे बहुत काम आयगा, मेरे अज़ीज़ "

वोलोद्या कुछ कुछ उदासी अनुभव कर रहा था और उसे अपने पर कुछ दया भी आ रही थी। किन्तु यह उदासी और दया उत्तरदायित्व की उस विशेष तथा महती भावना के नीचे मानो दब सी गयी, जो उसे यह सोचने पर अनुभव हुई कि कैसे वह विदेश में जाकर काम करेगा। उस विदेश में, जिसका रूप अस्पष्ट और अनिश्चित था और जहां सम्भवत कठिनाइयो की कुछ कमी नही होगी। यह ख्याल आने पर कि वहां वह एकाकी होगा, उसे बेहद परेशानी महसूस हुई, किन्तु उसने ऐसे ख्यालो को जबदस्ती अपने से दूर भगा दिया। आखिर बोगास्लोव्स्की तो उस पर भरोसा करते है, फिर वह खुद अपने पर क्यों न भरोसा करे?

"आप लोग जाये, जाकर मास्को मे घूमे फिरे। मेरे साथ यहा बैठे बैठे क्यो ऊब रहे है?" वोलोद्या ने बडे-बूढो के अन्दाज़ मे कहा।

किन्तु रोदिओन मेफोदियेविच और बूआ कही नही गये। खनिज जल की बोतल पीने के बाद रोदिओन मेफोदियेविच ने सुनहरी पट्टियोवाली अपनी जहाज़ियो की कमीज़ उतार दी। सिर्फ बनियाइन रह जाने पर उनकी मास-पेशिया दिखाई देने लगी थी और हाथ-बाहो पर नीले रंग से गुदे हुए सापो, शेरो, टूटी जजीरो और नारो के कारण उन्हे बडी झेप सी महसूस हो रही थी। उन्होने कामकाजी ढंग से वोलोद्या के सारे सामान को गौर से देखा और अद्भुत चुस्ती फुर्ती से सब चीज़ो को छांट छांटकर अलग कर दिया। इसके बाद वे सरकारी और निजी चीज़ो को अलग अलग पैक करने लगे। जैसे ही कोई सूटकेस, पेटी या गठरी तैयार हो जाती, बूआ उस पर टाट लपेटकर उसे सी देती। काम करते हुए ये दोनो यानी पति-पत्नी हास्यास्पद ढग से एक गाना भी गाते जा रहे थे, जो वोलोद्या ने पहले कभी नही सुना था। इस गाने से यह स्पष्ट हो रहा था कि उन दोनो की अपनी, एक ऐसी खास ज़िन्दगी भी है, जिससे वोलोद्या अनजान था।

रोदिओन मेफोदियेविच ने पतली आवाज़ और द्रुत लय मे ये पंक्तिया गायी –

> कही गाव के बाहर ही
> बात अजब-सी एक हुई
> वन मे जगल मे सहसा
> बिगुल जोर से गूज उठा

बूश्रा सिर पीछे को करके शरारती ढग से श्राखो को चमकाते हुए यह टेक गाने लगी—

तूतू-तूतू-तूतू-तू
तुम-तुम, तुम-तुम, तू-तू तू!

बूश्रा जान-बूझकर भारी श्रावाज म गा रही थी श्रौर उसके गाने म बडा प्यारा प्रश्नात्मक श्रदाज था। दूसरी श्रोर रोदिश्रोन मेफोदियेविच उसी तरह से ऊची श्रावाज मे गा रहे थे, जैसे दादा मेफोदी "ऐश करने" के बाद गाते थे—

हल्ला यह हुस्सार कर
श्रौर गाव की श्रोर बढे,
सब सुदर, मूछावाले
श्रागे थे बिगुलावाले

श्रौर बूश्रा न श्रपने तेज, छोटे-छोटे श्रौर सफेद दाता से मजबूत धागे का काटकर फिर से यह टेक दोहरायी—

तूतू-तूतू-तूतू-तू
तुम-तुम, तम-तुम, तू-तू-तू!

रोदिश्रोन मेफोदियेविच न श्रगला पद गाया—

श्रफसर ठहरे सभी घरा म
सैनिक, फौजी ता बाडा म,
फूस कोठरी, जहा श्रधेरा
वही बिगुल वाला का डेरा

श्रौर वोलोद्या न मुस्कराते हुए यह टेक सुनी—

तूतू-तूतू-तूतू-तू
तुम-तुम, तुम-तुम, तू-तू-तू!

"बढिया है न?" रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने पूछा।

"यह गाना कहा सीखा आप दोनो ने?" वालोद्या ने हैरान होते हुए पूछा।

"वहा, वोलोद्या, जहा आज़ादी का नज़ारा है, धन दौलत की बढती धारा है, उसका उचित बटवारा है," अग्लाया ने शर्म से लाल होते हुए उत्तर दिया। "खुद ही सीखा है "

खाना खाने के लिये ये तीनो बडे और नये रेस्तरा मे गये, जिसमे आधी मेज़े खाली पडी थी। लोगो के बहुत कम होने पर भी बैरा देर तक आर्डर लेने नही आया। रोदिग्रोन मेफोदियेविच इस बात पर चुंधलाने और गर्म होने लगे। बडे बैरे ने, जिसके चेहरे पर बेहयाई और गुस्ताखी अंकित थी और जिसके कलफ लगे कॉलर के ऊपर दुहरी तिहरी ठोडी नज़र आ रही थी, यह बताया कि "न० १" (ऐसा कहते हुए उसने अपनी मोटी तर्जनी को मोडा) इस वक्त यहा बहुत बडी सख्या मे विदेशी आये हुए हैं और बावर्ची लोग इतनी अधिक मात्रा मे खाना तयार नही कर पाते है और "न० २" (ऐसा कहते हुए उसने वैसी ही मोटी अपनी अनामिका को मोडा) यहा सबसे पहले विदेशियो को ही खिलाया पिलाया जाता है। इतना कहकर उसने ट्वीड का कोट पहने हुए एक मोटे-ताज़े श्रीमान की पीठ की ओर सिर झुकाकर सकेत किया।

"तो आप यहा यह नोटिस क्यो नही लगा देते कि सोवियत नागरिको को यहा 'दूसरा दर्जा' दिया जाता है? हा, 'दूसरा दर्जा'!"

किन्तु अग्लाया ने उनके सचलाये हाथ पर अपनी हथेली रख दी। रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने अपनी आखे झपझपायी और फौरन खिल उठे।

"मानसिक दासता क्या होती है, कभी तुमने इस बात पर विचार किया है?" उन्होने अपनी पत्नी से पूछा और वे दोनो मानो वोलोद्या को भूल भालकर एक-दूसरे की बातो मे खो गये। और वोलोद्या शोरबा खाता हुआ वाया के बारे मे सोच रहा था, इस ख्याल मे डूबा हुआ था कि वे दोनो भी इसी तरह यहा बैठे हो सकते थे, तरह-तरह के मसलो पर बात कर सकते थे और फिर एक साथ ही उस कठिन,

दिलचस्प और रहस्यपूर्ण काम को करने के लिये जाते, जो उसकी राह देख रहा है।

उदास और ऊंघते से वादक लोग मच पर आये। उन्होंने अपनी कुर्सियां इधर उधर हिलायी-डुलायी और उनके मुखिया ने सचालक के ढंग से खूब ज़ोर से, ऊची आवाज़ करते हुए अपनी नाक सुडकी।

"ब्राडी की एक और बोतल लाइये।" ट्वीड का कोट पहने विदेशी ने आदेश दिया।

"शायद इतनी ही बात है, रोदिओन," वोलोद्या को मानो कही दूर से बूआ के ये शब्द सुनाई दिये। "वैसे प्रसगवश कह दू कि जब तुम गुस्से मे होते हो, तो इन्साफ करना तो बिल्कुल भूल ही जाते हो।"

वोलोद्या ने कटलेट खत्म करके जम्हाई ली और बोला –

"मैं भी यहा बैठा हू। आप दोनो अलग अलग शहरो से मुझे विदा करने आये है और इतनी जल्दी इसके बारे मे बिल्कुल भूल भी गये। यह अच्छी बात नही है!"

गाडी छूटने तक रोदिओन मेफोदियेविच और अग्लाया स्टेशन पर खडे रहे। बूआ सफेद बरसाती पहने थी और कधा पर सफेद रेशमी रूमाल डाले थी। उसके काले बालो मे एक सुदर कघा चमक रहा था – उसे कभी-कभी बजारो का सा यह शृगार करना अच्छा लगता था। रोदिओन मेफोदियेविच बिल्कुल तनकर खडे रहे और जब गाडी चली, तो उन्होंने परेड के वक्त की भाति अपनी टोपी के छज्जे के साथ हथेली सटाते हुए मानो सलामी दी। वोलोद्या को अपनी बूआ काफी देर तक दिखाई देती रही। वह विदा करनेवालो की भीड को चीरती और अपना हाथ ऊपर उठाये हुए गाडी के पीछे पीछे प्लेटफार्म पर भागती जा रही थी। बिजली की बत्तियो की तेज़ रोशनी मे अग्लाया का ऊपर को उठा, सवलाया हुआ और गाल की कुछ-कुछ उभरी हड्डियावाला चेहरा तथा आसुओ से तर आख चमक रही थी

बाद मे बूआ लोगो की भीड मे खो गयी, डिब्बे के गलियारे मे हवा का तेज़ झोका आया और पर्दे फडफडा उठे। मास्को की बत्तिया पीछे भागती जा रही थी, मास्को, वह नगर पीछे छूटता जा रहा था, जिसने वोलोद्या, व्लादीमिर अफानास्येविच, डाक्टर व० अ० उस्तिमेन्को को विदेश मे काम करने के लिये भेजा था।

वोलोद्या विदेश में।

छ दिन के सफर मे वोलोद्या ने कड़े बालावाली अपनी दाढी बढा ली। सम्भवत उसने जान-बूझकर ही ऐसा किया था, क्योकि उसके पास उस्तरा ना था और इसके अलावा उसके साथ ही सफर करनेवाले एक बूढे फौजी ने भी, जिसके सिर पर गजी चाँद का घेरा-सा था, कई बार वोलोद्या को अपना उस्तरा देना चाहा। वोलोद्या दाढी बढाकर सीमा पर अधिक कुछ उम्र का नजर आना चाहता था।

किन्तु डाक्टर उस्तिमेन्को की शक्ल-सूरत की तरफ सरहद पर किसी ने कोई ध्यान नही दिया। सीमा-सैनिको ने उसके कागज-पत्र जाचे और चुगीवालो ने गठरिया और सूटकेस। काली, ठडी रात थी, तेज हवा चल रही थी। कही नजदीक ही कोई पहाडी नदी दहाड रही थी, शोर मचा रही थी। वोलोद्या मोटे शीशे के बडे गिलास से चाय पीता हुआ इन्तजार कर रहा था। गाडी अभी भी मेद्वेजातनाय स्टेशन के प्लेटफाम पर खडी थी, उसकी सुखद गर्माहटवाली खिडकियो से तेज रोशनी छन रही थी। बहुत ही समझदार, मुरझाये चेहरेवाला छोटा-सा ऐनकधारी एक जापानी और लाल बालोवाले लम्बे-तडग अग्रेज, जिनके साथ एक सुदर, सुघड और बहुत ही रगी चुनी महिला थी, रेस्तरा के हॉल मे इधर-उधर आ-जा रहे थे।

दो घटियां बजी, तीसरी घटी बजी और इसके बाद बडे कडक्टर ने लम्बी सीटी बजायी। जमीन को कपाती हुई भारी गाडी बरफ चूडीवाली इस रात के अधेरे मे उस मेहराब की तरफ चल दी, जो दोनो राज्यो को अलग करती थी। वोलोद्या ने चाय खत्म की और उसके लिये अन्तिम सोवियत पैसे दे दिये। कुछ देर बाद चार व्यक्ति आये, उन्होने झुककर वोलोद्या को नमस्कार किया और एक ट्रक मे उसका सामान लादने लगे। ये लोग रूसी नहीं बोलते थे, ये "चिन्ना" थे। आखिर जब सारा सामान लद गया, ऊपर तिरपाल डालकर उसे रस्सियो से कस दिया गया, तो सीमा-सेना के लेफ्टीनेंट ने वोलोद्या से हाथ मिलाया और रियाजान नगर के उच्चारण के साथ हसी मे बोला—

"जाओ डाक्टर, आपके लिये मगल कामना करता हू।

"आपको सेहत देता हू।" वालोद्या न वस ही उत्तर दिया, जस कि रादिग्रोन मेफोदियेविच कभी-कभी कहा करत थे। ट्रक धीरे धीरे चल दी और कोई पद्रह मिनट बाद रुक गयी। मिट्टी के तेल की लालटेनें लिये, बडे छज्जेवाली टापिया और मामजामे की बरसातिया पहने इन दूसरी ओर के सीमा-सनिका ने दर तक वोलोद्या के कागज पत्र दखे और चुगीवाला ने गठरिया को टटोला तथा सब चीजा को खोल-खोलकर देखा। वोलोद्या बैठा हुआ झपकी लेता रहा। पहाडी नदी तो सिर के ऊपर ही दहाडती-सी प्रतीत हो रही थी। इसके पहल कि सीमा अफ्सर न दो उगलिया जोडकर वोलोद्या को सलामी दी, जो हमारे फौजिया की सलामी से बिल्कुल भिन्न थी, अपन बिरले सिगरेट पीने के कारण पीले हा चुके दात निपोरते हुए सोवियत डाक्टर को जिज्ञासापूवक ध्यान से देखा और दो बार लालटेन हिलायी, काफी समय बीत गया। ड्राइवर न सामन की बत्तिया जला दी और तब भारी अवरोध दण्ड चू चर करता हुआ नम हवा म धीरे धीर ऊपर उठा। ट्रक अपने सभी पुराने अजरा पजरा को जार से खडखडाती और मानो मन मारकर अदृश्य तथा नम अधेरे मे पहाड पर चढने लगी। सुबह को ठड महसूस होती और शाम का गर्मी-सी। वोलोद्या के सहयात्री ट्रक की बाडी मे सोते, समझ म न आनेवाला काई खेल खेलते और पडावा पर भेड का अध पका मास दाता से काट काटकर खाते। सफर के दूसरे दिन वोलोद्या का टेढे मेढे रास्त के ऊपर हवाई जहाज जैसा एक बडा उकाब आसमान म तरता सा दिखाई दिया। इसके बाद किसी सूख गयी नदी का पेटा लाघते समय ट्रक गाढे कीचड मे फस गयी और फिर स कच्चे रास्त पर बढ चली। इस मौके पर बाकी सब लोगा के साथ वोलोद्या ने भी फसी हुई ट्रक को आगे धकेला, तख्ते बिछाये, फावडे स कीचड को हटाया और चपटे रेडिएटर का पीछे धकियाया। और अपने साथ जानेवाला की तरह "हे हे-हो। हीया हो।" चिल्लाना भी सीख गया।

मुह अधेरे ये लोग खानाबदोशो के एक बडे शिविर के पास से गुजरे। खेमा म से धुआ निकल रहा था, अगारा-सी दहकती आखो, घने अयाला और हवा म लहराती पूछोवाले घोडे देर तक ट्रक के आगे आगे दौडते रहे। ऐस ही दूसरे शिविर मे वालोद्या ने बेहद नमकीन,

मगर बहुत ही जायकेदार शारवा खाया, जिसम भेड की चर्बी क टुकड तैर रहे थे। तीसरे शिविर म उसन चाय पी। गाला की चौडी हड्डियावाले लाग बहुत ध्यान से वोलोद्या को दखत थे और कुछ ने उसके मजबत, रूसी चमडे के बन बूटा को छूकर उनकी तारीफ की। वालोद्या न तो किसी को देखकर मुस्कराया, न किसी के सामने उसने सिर बकाया, न बच्चो के सिरो को सहलाया थपथपाया और न वे शब्द ही बाल, जो अब तक सीख गया था। लोगो की चापलूसी करना उस सबमे घटिया काम लगता था। वह वास्तव म जैसा था, वसा ही, यहा तक कि कुछ कुछ कठोर भी बना हुआ था। वह बहुत ध्यान से सब कुछ सुनता था, हर चीज़ को बहुत गौर स देखता था, यह याद करने की कोशिश करता था कि स्थानीय लोग कैसे खाते-पीते है, सलाम-दुआ करत है, धयवाद दते है। वोलाद्या उन तत्वा को ढूढ रहा था, जिनके लिये इस देश और इसके लोगा का आदर किया जा सकता था, वह उनका मिज़ाज जानना चाहता था, उनके खास और मुख्य लक्षणा को खाज रहा था। फिलहाल ता ऐसे लक्षणो को ढूढ पाना और समझना कठिन ही नही, असम्भव था, फिर भी एक बात उसे स्पष्ट हो चुकी थी कि धम प्रचारका-बुद्धिजीवियो की उन्ह "बडे बच्चे" बतानेवाली बात बिल्कुल बकवास है। इन मितभाषी, मेहमाननेवाज और कठोर लोगो के साथ बराबरी के नाते शान्त, गम्भीर और आदरयुक्त व्यवहार करना आवश्यक है।

यात्रा का तीसरा दिन समाप्त होनेवाला था, जब एक खेमे के करीब नमदे पर आराम करते हुए वोलोद्या ने जादू टोने करनवाले शमान देखे। वे नज़दीक ही खडे थे और आपस मे बाते करते हुए रूसी डाक्टर को बहुत ध्यान से देख रहे थे। स्तेपी की सध्याकालीन हवा के कारण पेटी से लटकती हुई उनकी जादू टाने करने की चीज़-कठफाडा की खाले, सूखी जडे, भालू और सुनहरे उकाबा के पज-हिल-डुल रही थी। एक बूढे शमान की गन्दी चिपचिपी खजरी की कोई छोटी सी घण्टी लगातार बडी मधुर टनटनाहट पैदा कर रही थी।

"ये मरे दुश्मन है," वोलोद्या ने सोचा। "मुझे इनसे टक्कर लनी होगी।"

"पि रा मी-दान !" औरों की तुलना में कम उम्र के एक शमान ने अचानक कहा और वालोद्या को सिर झुकाया।

"क्या?" वोलोद्या समझ नहीं पाया। स्तेपी की हवा और इन खानाबदोशों के बीच यह शब्द कुछ अजीब सा था।

"पि रा-मी दोन !" शमान ने यही शब्द दोहराया और पीडा के कारण व्यथित-सा मुह बनाते हुए कनपटी पर हथेली रखकर कहा—"पिरामीदान !"

वोलोद्या ने सिर झुकाकर यह जाहिर किया कि वह उसकी बात समझ गया है और ट्रक की ओर चला गया। टीन के बक्स में से दवा की गोलियावाला डिब्बा निकालने के पहले वालोद्या को काफी झंझट करना पडा। उसने दवाई डालने का एक लिफाफा भी निकाल लिया। किसी आवारा कुत्ते की दिल को परेशान करनेवाली हूक को सुनते हुए वालोद्या ने हवा के थपेडो में खडे होकर लिफाफे पर लातीनी मे Pyramidoni 0 3 लिखा। शमान ने बहुत झुककर धन्यवाद दिया, फौरन दो गोलिया मुह में डाल ली और फिर ड्राइवर को बहुत देर तक कुछ स्पष्ट करता रहा। कुछ ठहरकर ड्राइवर ने वालाद्या को शमान की बात समझायी। उसने सलाह दी थी कि वालाद्या को नमदे पर नहीं बैठना चाहिये, क्योकि उस पर तो छोटा शमान बैठता है और बडा, बुजुर्ग शमान तो सिर्फ घोडी की सफेद खाल पर ही बैठता है। सफेद खाल पर बैठनेवाला उसकी तुलना मे कही अधिक कमाता है, जो अपने को नमदे के स्तर तक नीचे ले आता है। इस तरह शमान ने वोलोद्या के प्रति पिरामीदान देने के लिये आभार प्रकट किया।

इन लोगो ने किजरला खा नदी के करीब स्तेपी मे रात बितायी। सुबह को वालोद्या को भेडो का बहुत बडा रेवड, चरवाहों के अलावा का धुआ और दूरी पर धुध में लिपटी ऊची पर्वतमाला की धुधली-सी रूप रेखा दिखाई दी।

कुछ देर बाद इनकी ट्रक तिडके हुए चपटे पत्थरों के अद्भुत रास्ते पर बढ चली। सडक के करीब पत्थर का भूरा, बडे बडे कानो, ओठहीन मुह और धसी हुई तिरछी आखोवाला छोटा सा एकाकी बौना मानो ऊघ रहा था।

"चगेज खा !" ड्राइवर ने वोलोद्या को बतलाया।

और इशारा से उसने समझाया कि यह सडक भी चगेज खा के लोगा ने बनायी थी, मगर अभी नहा, बहुत पहले, बहुत-बहुत पहले।

बोलाद्या न सिर झुकाया कि वह समझ गया है। अचानक उसे पाम्ननिकोव और उनके ये शब्द याद हो आये कि मानवजाति सदियो तक चगेज खा और उसके जसा को याद रखती है!

सामन पवतमाला की ऊची, खडी और शक्तिशाली शाखाए नजर आन लगी थी। हिम मढित चोटिया के ऊपर धुआरे बादल मडरा रहे थे। वोलोद्या को मालूम था कि आज व पवतमाला को लाघकर राजधानी मे पहुच जायगे।

तेरहवा अध्याय

खारा का रास्ता

वोलोद्या ने एक होटल के बडी-सी खिडकी, छत के पखे और अलग गुसलखानवाले कमरे म रात बितायी। सुबह आख खुलन पर वह देर तक यह न समझ पाया कि कहा है, किस शहर म है और किसलिय यहा है।

जन-स्वास्थ्य विभाग म एक दुबले-पतले कमचारी न, जो सुनहरे फ्रेम का चश्मा लगाये था और जिसके शीशो के पीछे छोटे छोटे मनको जसी बडी सावधान, समझदार और अरुचिकर आखे चमक रही थी, वोलाद्या का अपने कमरे म स्वागत किया। कमचारी धारा प्रवाह बोलता था और कोट के ऊपर चोगा डाले हुए मोटा-सा आदमी, जो दुभापिया था, छोटे छोटे और सक्षिप्त वाक्यो म अनुवाद करता था—

"विभाग के श्रीमान प्रतिनिधि को अफसोस है। रूसी डाक्टर को मुश्किल रास्ता तय करना होगा और मुश्किल काम भी। बहुत मुश्किल। बहुत ही मुश्किल। बहुत, बहुत, बहुत मुश्किल। असीम दुख है हमे। चार सौ किलोमीटर घोडे पर जाना होगा या स्लेज पर जान के लिये नदी जमने तक इन्तजार करना होगा। सो भी बहुत सख्त पाले म। बहुत बुरा। गमिया म घोडे पर ताइगा और शिकारिया का दर्रा लाघकर।"

कमचारी ने सिर झुकाया और उसकी मोटे मोटे जोडावाली पतली पतली उगलियो म सफेद माला के मनके जल्दी-जल्दी घूमन लगे।

"वसन्त और पतझर मे यात्रा असम्भव है," दुभापिये ने कहा। "नदियो म वाढ और दलदल अगम्य। ठीक है, न? शिकारी दर्रे

नही जा सकता, खारा बहुत दूर है, ठीक है, न? खारा मे कभी कोई डाक्टर नही था। रूसी डाक्टर को बहुत काम करना होगा "

कमचारी ने फिर से धारा प्रवाह बोलना शुरू किया, फिर मे उसके बेजान से होठ हिलने लगे, मगर दुभाषिया जरा भी अनुवाद नहीं कर पाया। इसी वक्त किसी जोरदार हाथ ने दरवाजे को चौपट खोल दिया और चौडा-सा स्वैटर और दलदली जूते पहने हुए कोई तीस साल का आदमी भीतर आया। समय से पहले झुरिया के जालवाले उसके गम्भीर चेहरे पर कठोरता का भाव था।

फर्श पर सिगरेट झाडकर तथा कमचारी और दुभाषिये के खुशामदी ढग से नतमस्तक होने की तरफ जरा भी ध्यान न देते हुए वह बैठ गया और धीमी, सुखद तथा खरखरी सी आवाज मे बोला—

"नमस्ते, साथी। शायद ये लोग आपको डरा रहे है, ठीक है, न? मगर आप डरे नही, साथी। मैंने महान मास्को मे शिक्षा पायी है। मैं जानता हू, साथी, आपके लिये यह डर की बात नही है "

वह स्पष्ट प्रसन्नता के साथ "साथी" शब्द का उपयोग करता था और वोलोद्या की कोहनी को धीरे से बार-बार छू लेता था।

"जटिल है, कठिन है, मगर भयानक नही है। वैसे यह सम्भव है कि कुछ भयानक भी हो, लेकिन आपके लिये नही, जिन्होने ऐसी क्रान्ति की है।'

दुभाषिया खासा। स्वेटर पहने हुए आदमी अचानक चिल्ला उठा—

"कृपया आप यहा से जा सकते है, मुझे आपकी जरूरत नहीं है और विभाग का श्रीमान इन्स्पेक्टर यहा ऐसे ही बैठा रह सकता है। आपके लौटने की जरूरत नही है।"

दुभाषिये ने सिर झुकाया, छाती पर हाथ रखे, मगर वहा से गया नही। दुबला-पतला-सा कमचारी खडा रहा। चौडी, पूरी तरह खुली खिडकी मे से रश्मि पुज भीतर आ रहा था और सडक पर ऊटो के परो की धीमी आहट, ऊट हाकनेवालो की तीखी, कण्ठय चीख चिल्लाहट तथा घटियो की प्यारी टनटनाहट सुनाई दे रही थी। स्वैटर पहने व्यक्ति अपनी घनी भौहो को सिकोडे और अपने सामने सूर्य के गर्म रश्मि-पुजो को देखते हुए कह रहा था—

"पहल यहा, हमारी राजधानी म सारे दश के लिये एक डाक्टर था। बाद म, साथी, हमने विदेशी सन्यदल से एक माध्यमिक शिक्षा प्राप्त चिकित्सक की सेवाए हासिल कर ली। वडा ही वदमाश, चालवाज़ श्रौर निश्चय ही कोई जासूस था वह कमीना। वह घोडा पर सवार वदूकधारी श्रपन नौकरा श्रौर श्रगरक्षका के साथ जाता श्रौर सेवला तथा गिलहरियो की खालो के बदले मे सभी वीमारियो की दवाइया वेचता। चेचक के टीके की कीमत सेवल की एक खाल थी। उसके लोग, जो कुछ भी मुमकिन होता, छीन श्रौर लूट लेते श्रौर इम वे फीस कहते। मास्को म शिक्षा पाते हुए मैंने शमाना श्रौर लामो की चिकित्सा के बारे म तो सुना, लेकिन, साथी, ऐसी चिकित्सा की रूसवाला को जानकारी नहा थी। पर हमारे लाग जानते थे। यह मोरिसन श्रफीम भी ले श्राया श्रौर माफिया भी श्रौर उसके लोग चिल्ला चिल्लाकर सब को सूचना देते कि महान डाक्टर सुहाने सपना की दवाई वेचता है। एक सुहाने सपने की कीमत सेवल की तीन खाल थी। हा, सच कहता हू, साथी, श्रौर श्रगर कोई दो सुहाने सपने चाहता था, तो उसे सेवल की पाच खाल देनी पडती थी। मोरिसन किसी भी शमान, किसी खतरनाक स खतरनाक लामा से भी ज्यादा खतरनाक था। मोरिसन कहता था कि वह सेहत देता है, मगर वास्तव म हमारे लोगा के लिये मौत था। हा, ऐसी वात है, साथी। यह उसकी करनी का ही नतीजा है कि श्रव हमारे लोग इलाज तो शमानो श्रौर लामो से करवाते है श्रौर सुहाने सपना के लिये रूसी डाक्टरो के पास श्राते है। किन्तु रूसी साथी सुहाने सपन नही बेचते, यह श्रच्छी वात है। ठीक है, न? वे न तो सेवला की खाल लेते हैं श्रौर न गिलहरियो की, कुछ भी तो नही लेते। हमारा परम शक्तिशाली पडोसी निस्स्वाथ है, सिफ वही एक निस्स्वाथ है, उसके लोग भी निस्स्वाथ है श्रार वे हम भी निस्स्वाथ होना सिखाते हैं, साथी। श्रापका हर श्रादमी, जा यहा है, वह हमे हमारे भविष्य-निर्माण की शिक्षा देता है। ऐसा ही है न? हमारा महान पडोसी पिछडेपन, श्रज्ञानता श्रौर रोगो के विरुद्ध सघप मे हमारी मदद करता है, साथी। श्रौर हम "

स्वटर पहने हुए इस व्यक्ति ने दूसरी सिगरेट जला ली, चुप हो गया, मानो यह भूल गया हो कि किस बात की चर्चा कर रहा था।

इसके बाद वह इस हद तक गुस्से मे आ गया कि उसकी पीली त्वचा पर लाल धब्बे उभर आये—

"मगर हम तो खुद ही अपने लिये मुश्किल पैदा किये हुए हैं। हम यहा अलग अलग किस्म के लोग है, साथी। मेरे ख्याल मे यह तो फौरन ही नजर आ जाता है। अभी हम सभी उधर नही देखते, जिधर हम देखना चाहिये। कुछ, जिन्हे यह लाभप्रद था, उधर देखते हैं, जिधर वह विदेशी सैन्यदल का कमीना गया है। हा, ऐसा ही है। किन्तु साथी, जितना अधिक हमारे लोग आपके कार्यों और भलाई को महसूस करते हैं, उतना ही अधिक वे नजर गडाकर आपके देश की तरफ देखते हैं। यह तो बहुत कम ही मैंने तुम्हे बताया है, साथी, लेकिन आप इसे ठीक तरह समझ गये, समझ गये न?"

"हा समझ गया!" उस्तिमका ने जवाब दिया।

"इतना और जान लीजिये—लामा और शमाना का मामला बहुत आसान नही है, लेकिन इतना मुश्किल भी नही कि उसमे पार न पाया जा सके, साथी। शायद तुम्हे इसमे बहुत वक्त लगेगा, लेकिन ऐसा करना ही होगा। हो सकता है कि कभी-कभार खतरा भी सामने आये। मगर, साथी, तुम्हे डरना नही चाहिये। अगर तुम डर गये, तो लामा और शमान तथा ऐसे ही दूसरे लोग बहुत खुश होगे। हा, हा, साथी, और तुम यह भी समझ गये?"

"समझ गया!" उस्तिमको ने दृढता से जवाब दिया और पूछा—"डाक्टर बोगोस्लोव्स्की से मैं कहा मिल सकता हू?"

"डाक्टर बोगोस्लाव्स्की?" स्वैटर पहने हुए इस व्यक्ति ने ये शब्द दोहराये और इस बातचीत के दौरान पहली बार बडी खुशी से खुलकर मुस्कराया। "डाक्टर बोगोस्लोव्स्की से हमारा सारा देश, हमारे सभी लोग, हमारे सभी खेमे परिचित है। किन्तु उनका यहा, हमारे विभाग मे आना नही होता। वे तो सिर्फ काम करते है, हमेशा घोडे पर जाते और काम करते रहते है। वे सभी डाक्टरो के पास जाते है, सभी की मदद करते है, बेहद मदद करते है। हम तुम्हारे यहा भी आयेगे, बहुत जल्दी तो नही, मगर आयेगे। ठीक है, न?"

"आइयेगा!" वोलोद्या ने कहा। "अब एक आखिरी बात और पूछना चाहता हू—दवाइया किसको सौपू?"

"दवाइया विभाग का एक कमचारी ले लेगा," स्वैटर पहने आदमी न उठते हुए जवाब दिया। "अगर कोई जरूरत महसूस हो, तो मुझे यहा खत लिख दीजियेगा। मेरा नाम टाड जीन है। जो भी जरूरत हो, सब कुछ रूसी म लिख दीजिये। टाड-जीन याद कर लिया न?"

टोड-जीन न अपना मजबूत, पतला, गम और बहुत ही खुरदरा हाथ उस्तिमेन्को की तरफ बढाया। विभाग के इन्स्पेक्टर ने जरूरत से कही ज्यादा नीचे तीन बार अपना सिर झुकाया। दुभाषिय ने पीछे हटकर वोलोद्या के बाहर जान के लिये दरवाज़ा खाल दिया।

रात का काफी दर गये तक वोलोद्या न दवाइया सापी और तडके ही उसे जगा दिया गया। होटल के आगन मे वालोद्या के गाइड एक-दूसरे से गाली गलौज करते हुए छोटे छाटे, मजबूत, लद्दू घाडो पर सामान लाद रहे थे। एक ऊट, जिसके रोये गिरने लगे थे, लार बहा रहा था, मुडे सिरावाले गन्दे मन्दे कुछ लाग पासा खेल रहे थ, एक नाटे से बूढे ने फुसफुसाकर वोलाद्या से सोने के पिड खरीदने का प्रस्ताव किया—यह सब कुछ तो सचमुच सपन जैसा था

कारवा जब चलने को तयार हा गया, तो अचानक टोड जीन वहा आ गया। वह चमडे की घिसी हुई जाकेट पहने था और बगल मे पिस्तौल लटक रही थी। उसे देखकर गाइड आदरपूवक मौन हो गय। ठडा सूरज निकला ही था, हवा पारदर्शी थी और वातावरण की ऐसी खामाशी मे टाड-जीन ने थोडे स शब्दा मे गाइडा से कुछ कहा और बीच-बीच मे कई बार वोलोद्या की ओर सिर से सकेत किया। उसके एसा करने पर गाइडा न भी हर बार वोलोद्या की तरफ देखा।

"तो अब अलविदा, साथी!" टोड-जीन ने वोलोद्या के घाडे पर सवार हो जाने के बाद कहा।

वालोद्या की तरफ आखे ऊची करते हुए उसन उसे ऐसी चमकती, कडी और प्यारी नजर से देखा मानो चश्मे के सुखद जल का स्पश हो गया हो। कारवा धीरे धीरे टोड-जीन के पास स आगे बढने लगा और वोलोद्या को न जाने क्यो, पहली मई की फौजी परेड की याद हो आयी।

छ दिना म इन लोगा ने चार सौ किलोमीटरो का फासला तय किया। दूसरे दिन वोलाद्या न काठी पर टेढे बैठकर यात्रा की और

तीसर न्नि पट के बल लेटकर। ' भयानक नही, साथी, किन्तु दर्गिन जरूर है," उसे टाड-जीन का स्वर याद हा ग्राया। गाइड बिना दुभाविया के बिना हसत रह, वालाद्या का कुछ सलाह दते रहे, जो उसकी समझ मे नही ग्रायी ग्रौर ग्रावश्यकता से ग्रधिक पडाव करते रहे। सबस ज्यादा तो कम्बख्त मच्छर परशान किय द रहे थे। मच्छरदानी से मुह सिर ढक लेने स वालाद्या को घुटन महसूस होती थी, ग्रलाव के पास वह उस तरफ नही बैठ पाता था, जिधर नम शाखाग्रो से धुग्रा निकलता था ग्रौर जो मच्छरा से उसे बचा सकता था। इसलिये मच्छरो के काटने से उसका चेहरा बुरी तरह सूज गया था। ग्रध-पका मास खात हुए उसका जी खराब होता था, इसलिये वह रह रहकर ग्रपनी वोतल से पानी पीता जाता था ग्रौर मन ही मन कोसता था।

दर्रा लाघते हुए एक घोडा फिसलकर खड्ड मे जा गिरा ग्रौर तब यह ध्यान ग्रान पर उस्तिमेको स्तम्भित रह गया कि ग्रौजारो को उबालने का बरतन भी घोडे के साथ ही जाता रहा। ग्रमोनिया की कुछ बोतले ग्रौर तह हो जानेवाली ग्रॉपरेशन की सुविधाजनक मेज स भी वह वचित हो गया था।

महान डाक्टर

छठे दिन की शाम को वोलोद्या का खारा के खेमे ग्रौर घर नजर ग्राये ग्रौर वह बस्ती दिखाई दी, जहा उसे ग्रपना चिकित्सालय ग्रौर ग्रस्पताल बनाना था। सहसा ग्रनबूझ-सी भीरुता ने उसे ग्रा दबोचा। वह यहा यह जिम्मेदारी निभा पायेगा? पहला डाक्टर! ग्रस्पष्ट ग्रौर चिन्ताजनक भावनाग्रो के साथ वह जल भरे, भारी-बोझिल बादलो के नीचे दूर दूर तक छितरे हुए छोटे छोटे घरो को देख रहा था, बड़े बड़े दातोवाले खुजली के मारे कुत्तो की खरखरी भूक सुन रहा था ग्रौर खारा के निवासियो को देख रहा था। खारावासी भी ग्रादरपूर्ण ग्राश्चर्य से इस लम्बे कारवा ग्रौर रूसी डाक्टर का देख रहे थे, जिसके ग्रागमन की घोडे पर सवार गाइड ऊची ग्रावाज म घोषणा कर रहे थे।

"अपने सामने आप लोग देख रहे है कमाल के चिकित्सक को, अद्भुत डाक्टर को!" अलग अलग, थकी हुई, किन्तु खुशी भरी आवाज म गाइड चिल्ला रहे थे। "लोगो, खुशी मनाओ!'
"खुश होओ और देखो इसे!"
"दखो तो, कितनी उपयोगी दवाए लाया है वह! ये दवाए वह वीमारा को देगा, सब म बाटेगा, किसी की अवहेलना नही करेगा!'
"सभी वीमार महान डाक्टर के पास जाये!'
"लगडे-लूल भी!"
"वहरे भी!"
"अधे-काने भी!"
"कोई भी ता ऐसा रोग नही है, महान डाक्टर जिसका इलाज न कर सकता हो!"
हे भगवान, काश, वोलोद्या उस्तिमेको, जो वडी मुश्किल से ऊची काठी पर बैठा था, यह जान सकता कि गाइड क्या चिल्ला रहे थे। काश वह जान सकता! मगर कैसे जान सकता था वह इस चीज को? वोलाद्या तो यह नही समझता था कि इन जवान लोगा ने, जिनके साथ वह छ दिन राता तक खाता पीता रहा था, सोता रहा था, जिनके साथ उसने श्रम किया था और मौन रहा था, उसके मानसिक वल को जान लिया है, उसकी सरलता और साहसी हृदय का ऊचा मूल्याकन कर लिया है। इसी तरह उसे यह भी मालूम नही था कि टोड जीन ने गाइडा को यह आदेश दिया था कि वे खारा मे वालाद्या के आगमन की खूब अच्छी तरह से घोपणा करे। टोड-जीन ऐसा आदमी था, जिसके आदेश का पूरे जोर शोर से पालन होता था। अगर एलान करना ही था, ता डके की चोट किया जाये! और किसी जाने माने लामा की तुलना मे वोलोद्या के सम्बध म गाइडो की घोपणा कुछ उन्नीस नही थी।
झुटपुटा हो रहा था, पानी वरस रहा था
जिज्ञासापूण लोगो की भारी भीड से घिरा हुआ यह कारवा चौक तक पहुच गया।
चौक म जाकर ये लोग रुक गये। वोलोद्या का घोडा बडे गाइड की घोडी के कधे का प्यार से काटने लगा। लोगा की निश्चल और

मूक भीड ठडी बारिश म खडी थी। चकराये से लोग वालोद्या, उसका पॅडवाली जाकेट, बूटा, पीठ पर लटकती बदूक, काठी, लगामा और घोडे को परखती नजरो से ध्यानपूवक देख रहे थे

"शुभ आगमन," अपने बडे और मजबूत कधे से भीड का चीरत तथा आखो मे खुशी की चमक लाते हुए एक दढियल, घुघराल बालावाले बजारे जैसे आदमी ने कहा। वह लम्बा फ्राक कोट पहन था और प्रसिद्ध नाटककार ओस्त्रोव्स्की के किसी नाटक के पात्र जसा लगता था। "मरे पीछे पीछे आओ डाक्टर, नमक रोटी खाने का अनुरोध करता हू, प्यारे मेहमान का इन्तजार कर रहे है हम। शक शुबहा की नजरो से मुझे नही देखा, मार्केलोव कुलनाम है मेरा, पुराने ईसाई धम को माननवाले है हम। आप लोगा की वजह से नही, जार की वजह स-जहन्नुम नसीब हो उसे-यहा भाग आये थे।"

वोलोद्या ने अपने घोडे की गम बगल म एड लगाई और कारवा आगे चल दिया। सुदर, सुघड और स्वप्निल आखोवाली लडकी न सचमुच ही नमक रोटी से उस्तिमेको का स्वागत किया, झुककर प्रणाम करन के बाद उसने तौलिये पर रखी गोल रोटी और नमकदानवाली तश्तरी वोलोद्या की तरफ बढा दी। यह न समझते हुए कि क्या कर, वोलोद्या अपनी घनी बरौनियो को झपकाता और बुद्धू की तरह मुस्कराता हुआ बोला-

"आप यह क्या कर रही हैं! सचमुच किसलिये! क्या जरूरत है इसकी!"

किन्तु मार्केलोव ने पीछे से जोर देते हुए कहा-

"ले लीजिय, इससे कसे इन्कार कर सकते ह। ले लीजिये और मरी बेटी को चूमिये!"

वोलोद्या न पलागेया मार्केलोवा के सुघड कपाल को चूमा, गह स्वामी से कहा कि 'बेकार आपने यह कष्ट किया" और अपन गाइडो का ढूढते हुए पीछे मुडकर दखा। वे अपन घोडा पर सवार थे, थके हारे होन के बावजूद मुस्करा रह थे।

"साथी मार्केलोव, मैं अकेला नही हू, दोस्तो के साथ हू"

"कोई बात नही, सब को खिला पिला देंगे, खान की कमी नहीं पडेगी," यगोर फामोच मार्केलोव न जवाब दिया। "लेकिन, मरे भाई,

बुरा नही मानना, ये लोग विधर्मी है, असभ्य है, इसलिये उन्हे घर म नही जाने दूगा।"

वालोद्या की पैडदार जाकेट उतरवाने की दौड-धूप, बहुत बडे, पक्के और समृद्ध घर की ड्योढ़ी म प्रणामो और इस घबराहट के कारण कि छ दिनो की घोडे की सवारी के बाद उसे "ढग से बठना ' होगा, वालोद्या मार्केलोव के "विधर्मी" शब्द का भाव न समझ पाया। किन्तु किसी तरह टेढ़ा-तिरछा होकर उस मेज़ के करीब कुर्सी पर बैठने के बाद, जहा तरह-तरह के अचार मुरब्बे, तली और उबली हुई जायकेदार चीजें, कचौरिया तथा मिठाइया, भाति भाति की वोद्का और ब्राडिया रखी थी, और जब उसने गले को जलाती हुई "व्हाइट होस ' व्हिस्की का एक जाम पी लिया, तो यह देखकर हैरान-सा रह गया कि मेज़ पर अपनी मोटी सी बीवी के साथ मार्केलोव, उसकी बेटी और सहमा-सा कोई मुशी, बस, यही लोग बठे है। उस्तिमेन्को की नजर म इस प्रश्न को भापकर येगोर फोमीच न उदारता दिखाते हुए कहा -

"उन्ह भी खिला रहे हैं, अवहेलना नही कर रहे हैं, सब कुछ समझते है। और तुम भी देखो तो, भगवान ने कैसा अच्छा पडोसी भजा है हमारे लिये, गाइडो के लिये भी इसके दिल म दर्द है, बेशक ये लोग स्थानीय हैं "

मेज पर तरह-तरह के पदार्थों के बीच पीटसबग का बना हुआ एक बढ़िया लम्प (वोलोद्या ने चादी के स्टैड पर "पीटसबग निर्मित" पढ़ लिया था) खूब तेज रोशनी छिटका रहा था। भोजन बेहद घी चर्बी वाला था, फिर भी सब चीजो मे और अधिक घी-मक्खन, तली हुई चर्बी, सूअर की भुनी हुई चर्बी के खस्ता टुकडे और खट्टी क्रीम डाली जा रही थी। खिडकियो पर रेशमी या जरी के (वालोद्या को यह मालूम नही था) पर्दे लटक रहे थे। दीवारो और दीवारो पर लगे क़ालीनो पर परिजनो के फोटो चिपके हुए थे। ठीक बीच म, सबसे बढ़िया, सबसे अधिक रग बिरगे क़ालीन पर वालोद्या को सुनहरे चौखटे म जडी "वोल्गा का दृश्य" तस्वीर की घर म ही बनाई गयी अनुकृति दिखाई दी। "जी रहे हैं, कोई शिकवा शिकायत नही करते हैं," खूब डटकर खाने के कारण पसीने स तर हुआ और मजबूत जबडो

से ज़ोरदार काम लेते, कभी कचौडी का टुकडा चखते, कभी तला मछला, तो कभी स्वादिष्ट पूडी पर हाथ साफ करते हुए मजबान कह रहा था- 'बाप दादा ने भी कभी दुख दद का रोना नही रोया। रूस के लिय तो जरूर दिल टीसता है, पर यहा, इन जगलियो के बीच रहने की आदत पड गयी है। हम इनके लिये माई-बाप हैं और ये भी बच्चो की तरह हम मानते है, इज्जत करते हैं। याही शिकायत करना पाप होगा। यहा ही क्या, हम तो राजधानी म भी सभी जानते हैं, हम इनके बड उपकारी है, बहुत लाभ होता है इन्ह हमसे, हमारी श्रेणी क लोगो, हमारी पूजी से। हम किसी तरह का दगा फरब किये बिना कर देते है, क्योकि छल-कपट से जीना पाप है "

वोलोद्या चुपचाप खा रहा था, बहुत गौर से सब कुछ देख रहा था। क्या इससे पहले उसने कभी सोचा भी था कि वास्तव म इस तरह के घर भी होते है—ऐसे बढिया पर्दा, कालीनो, भापू के साथ पुराने ग्रामोफोन और दीवारो पर लटकी दादो परदादा की बन्दूकोवाले? यहीं लैस के मेज़पोश से ढकी एक छोटी-सी मेज पर उसने 'ज़ेस' केमरे का नवीनतम माडल, बहुत शानदार और बिल्कुल नयी 'ज़ावेर' राइफल और सोफे के ऊपर दो ओटोमेटिक राइफले भी देखी। इन राइफलो के ऊपर बडे कीमती चौखटे म जडा एक बूढे का आवक्ष चित्र टगा हुआ था। उसका कामुक चेहरा रस्पूतिन के फोटो से मिलता-जुलता था।

'तो आप काम क्या करते हैं?" आखिर उस्तिमेन्को ने पूछा।

"हम? प्यारे मेहमान, हम व्यापार करते है, फरो का व्यापार। हमारा व्यापार घर, जिसका पहले 'मार्कोलाव एण्ड सन्ज़' नाम था, दूर-दूर तक मशहूर है, यहा तक कि महासागर पार सयुक्त राज्य अमरीका मे भी। ग्रेट ब्रिटेन से व्यापार करते है और फर के जापानी व्यापारियो से भी। यही समझिये कि बहुत बडा कारोबार है हमारा। हाल ही म 'गूरिटसू ब्रादस' का माल खरीदनेवाला बडा कारिन्दा हमारे यहा आया था, यही रहा था, उसके साथ हम शिकार को गये, हमारे गुसलखाने मे उसने भाप का गुसल किया और इसके बाद वह सेबलो का काफी बडा थोक खरीदकर ले गया "

पलागेया टकटकी बाधकर वोलोद्या को देखती जा रही थी, उगलियो से अपनी पुराने ढग की शाल के छोरो को नोचती थी और कुछ भी ता

खा नही रही थी। वह तो ठण्डे फेनवाले क्वास के मग के किनारा पर दात लगाकर जब-तब एकाध चुस्की ले लेती।

खाने के बाद येगोर फोमीच ने छाटी सी प्राथना की, तौलिये से मुह पाछा, एक कील से टोपी उतारकर पहनी, लालटेन जलायी और वोलोद्या को साथ लकर वह जगह दिखाने चल दिया, जहा दवाखाना और अस्पताल बनेगा। उस्तिमेको इस अजीब से "विदेश" मे कुछ भी न जानत समझते हुए चुपचाप उसके पीछे हो लिया। मार्केलोव के अहाते के नम अधेरे मे गाइड इन दोनो के करीब आ गये और य सभी छपछपाते कीचड म स गुजरते हुए कमजोर तख्ता के सायबान की ओर चल दिये। दिल पर छुरी सी चलाते हुए चू चर की आवाज क साथ फाटक खल और मोटे माटे चूहे ची ची कर अधेरे कोने म भाग गये। मार्केलोव ने लालटेन ऊची करके कहा—

'यहा! इन जगलियो के लिय तो यह भी बहुत बढिया है। ये न ता चिन्ता के लायक है और न काम के। ठण्ड हाने पर यहा अगीठी रख लेना। मरे पास है लोहे की अगीठी, बेशक नई नहा है, मगर इनके लिये बेहतर की जरूरत नही। खुद हमारे यहा राशन कमरे म रहोगे और खाना भी वही खाओगे। हमारे भाजन पर—देख चुके हो न?—खूब माटे-ताजा हो जाओगे। वह तो रूसी खाना है, वैसा ता नही, जैसा कि यहा के य कगाल खाते है।"

गाइड जल्दी-जल्दी और विरोध करते हुए अचानक कुछ कहने लगे। उनम सबसे दुबले-पतले ने, जिसे वालोद्या मन ही मन यूरा कहता था, मार्केलोव की आस्तीन खीची, आगे बढकर बोलने और वालाद्या को कुछ ऐसा समझाने की कोशिश करने लगा, जा सम्भवत सभी के लिए बहुत महत्त्वपूण था।

"दूर भाग रे, बदर," येगोर फामीच न मुस्कराते हुए हाथ झटका। किन्तु वोलाद्या न इस बात की ओर ध्यान दिया कि येगोर फामीच की मुस्कान म कुछ घबराहट-सी थी।

"क्या कहता है यह?" उस्तिमेन्को न पूछा।

"न जाने क्या बक-बक कर रहा है, कुछ समझ म नही आता," मार्केलोव ने फिर से हाथ झटक दिया।

"अस्पताल न? मेरे नौजवान श्रीमान, क्या मार्केलोव के बिना यहा ढग से कुछ हो सकता है? अगर तुम मेरी मिन्नत करत, ता मैं अपना व्यापार-केन्द्र भी तुम्हारे अस्पताल के लिये भेंट कर दता। एसा ही तबीयत का आदमी हू मैं तो। हो सकता है कि मैं बहुत दिना स ही कोई नेक काम करने की सोच रहा होऊ? हो सकता है कि तुम्ह मेरे परिवार के स्वास्थ्य की चिन्ता करने के लिय मेरे यहा से वतन भी मिलता "

"आप सुनना ही चाहते है?" बोलोद्या बोला, "ता श्रीमान मार्केलोव, आप मुझे मेरे हाल पर छोड दीजिये। मुझे न ता आपके नेक काम की जरूरत है और न आपके बेहूदा वेतन की। मेहरबानी करके तशरीफ ले जाइये। खाना खिलाने के लिय शुक्रिया। हा, यह बता दीजिये कि भोजन के लिये कितने पैसे दू?"

और बोलोद्या ने अपने गन्दे, मिट्टी के सूखे धब्बावाल पतलून की जेब म हाथ डालकर मास्को मे खरीदा हुआ अपना बटुआ निकाला।

"कितने पैसे देने हैं मुझे आपको?"

"अरे, तुम तो निरी आग हो, नौजवान," धीरे-स व्यग्यपूर्वक मुस्कराकर मार्केलोव ने कहा। 'बिल्कुल आग हो! जरा-सा कुछ कह दो और बस, भडक उठे। बेकार ही! लेकिन मुझे ऐसे ला अच्छ लगते हैं। खुशी से जम जाओ, मेरे इस व्यापार-केन्द्र म। और हा सकता है कि कभी खुद मार्केलोव भी तुम्हारे पास इलाज करान आये। इन्तजार करना, उम्मीद रखना!"

उसन जोर से बोलोद्या का कधा थपथपाया, उगलिया स यूरा का चपटी नाक को खीचा, एक अन्य गाइड के चूतड पर घुटना मारा और अच्छे मूड म मानो दास्त-सा बनकर यहा से चला गया

घर म सन्नाटा छा गया।

सन्नाटा और अधेरा।

बोलोद्या न फिर से अपनी टाच जलायी, इधर-उधर नजर दौडायी, ध्यान स यह सुना कि बारिश कैस छत पर अपनी ढोलकी बजा रही है और इशारा स गाइडा को यह समझाया कि वे सारा सामान व्यापार केन्द्र की इमारत म ले आयें। दो दिन बाद, खारा के स्थानीय बड़े

खा नही रही थी। वह तो ठण्डे फेनवाले क्वास के मग के किनारो पर दात लगाकर जब-तब एकाध चुस्की ले लेती।

खाने के बाद येगोर फोमीच ने छोटी सी प्रार्थना की, तौलिये से मुह पोछा, एक कील से टोपी उतारकर पहनी, लालटेन जलायी और वोलोद्या को साथ लेकर वह जगह दिखाने चल दिया, जहा दवाखाना और अस्पताल बनेगा। उस्तिमेंको इस अजीब से "विदेश" मे कुछ भी न जानते-समझते हुए चुपचाप उसके पीछे हो लिया। मार्केलोव के अहाते के नम अधेरे मे गाइड इन दोनो के करीब आ गये और ये सभी छपछपाते कीचड मे से गुजरते हुए कमजोर तख्तो के सायबान की ओर चल दिये। दिल पर छुरी सी चलाते हुए चू चर की आवाज के साथ फाटक खुले और मोटे मोटे चूहे चीं-चीं कर अधेरे कोने मे भाग गये। मार्केलोव ने लालटेन ऊची करके कहा—

"यहा! इन जगलियो के लिये तो यह भी बहुत बढिया है। ये न तो चिन्ता के लायक है और न काम के। ठण्ड होने पर यहा अगीठी रख लेना। मेरे पास है लोहे की अगीठी, बेशक नई नही है, मगर इनके लिये बेहतर की जरूरत नही। खुद हमारे यहा रोशन कमरे मे रहोगे और खाना भी वही खाओगे। हमारे भोजन पर—देख चुके हो न?—खूब मोटे-ताजे हो जाओगे। वह तो रूसी खाना है, वैसा तो नही, जैसा कि यहा के ये कगाल खाते हैं।"

गाइड जल्दी-जल्दी और विरोध करते हुए अचानक कुछ कहने लगे। उनमे सबसे दुबले पतले ने, जिसे वोलोद्या मन ही मन यूरा कहता था, मार्केलोव की आस्तीन खीची, आगे बढकर बोलने और वोलोद्या को कुछ ऐसा समझाने की कोशिश करने लगा, जो सम्भवत सभी के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण था।

"दूर भाग रे, बन्दर," येगोर फोमीच ने मुस्कराते हुए हाथ झटका। किन्तु वोलोद्या ने इस बात की ओर ध्यान दिया कि येगोर फोमीच की मुस्कान मे कुछ घबराहट-सी थी।

"क्या कहता है यह?" उस्तिमेन्को ने पूछा।

"न जाने क्या बक-बक कर रहा है, कुछ समझ मे नही आता," मार्केलोव ने फिर से हाथ झटक दिया।

बडी-बडी जिप्सी ग्राखा को भयानक बनाते हुए मार्केलोव जल्दी जल्दी बोलने लगा। "इ्ही का भाई-बन्धु था, वहा ग्रा घुसा था, जहा उसे नहा ग्राना चाहिये था, इतना घमण्ड हो गया था उसे कि यह इमारत बनवा डाली। ग्रब वह कुत्ते की तरह ग्रपना ही थूका चाट रहा है। छाल की झोपडी म दिन काट रहा है "

"तो ग्रब किसका है यह व्यापार-केन्द्र?"

"ग्रभी ता किसी का नही, लेकिन मेरा ही होगा'' मार्केलोव ने चुनौती भरी ग्रावाज म कहा। "मेरी इस पर ग्राख है ग्रौर हम मार्केलोव परिवारवालो का ऐसा मिज़ाज है कि जिस चीज़ पर दिल ग्रा गया, उसे हासिल करके छोडा। कौन जाने, मंने इसके लिये शायद बयाना भी दे रखा हो!"

"लेकिन टोड-जीन ने तो ग्रस्पताल के लिये यही इमारत तय की है?"

"ग्रगर उसने रजिस्टरी करवा ली है, तो ले ले।"

"तो क्या किया जाये?"

"वही करो, जिसकी मैंने सलाह दी है, मेरे प्यारे महमान। सायबान को ग्रस्पताल बना लो। मैन कह दिया है न कि मदद कर दूगा। मेरे प्यारे, ग्रपना व्यापार-केन्द्र तो मै किसी तरह भी नही दे सकता। धयवाद है भगवान का कि हमारे यहा ग्रभी तक तो निजी सम्पत्ति का उन्मूलन नही हुग्रा "

"नही, नही जानता," वोलोद्या ने भौह चढाते हुए कहा, "नही जानता, येगोर फोमीच। निजी सम्पत्ति के बारे मे कुछ नही जानता— इससे मुझे कोई मतलब भी नही है। मगर ऐसा समझता हू कि ग्रगर ग्राप बयाना दे चुके हैं, तो जन स्वास्थ्य विभाग ग्रापको यह बयाना लौटा देगा। बस, इस बारे मे तो ग्राप खुद ही, जिस ग्रादमी से जरूरी समझे, उससे बात कर ले। मैं तो डाक्टर हू, सिफ डाक्टर ग्रौर इसी रूप मे यहा ग्राया हू। तो हम यहा ग्रब ग्रपना सामान उतार देते है ग्रौर बाकी ग्राप जसा ठीक समझे, वसा कर।"

"मतलब यह कि ग्राते ही मरे खिलाफ हो गय?'

'मुझे ग्रापकी नही, ग्रस्पताल की ज़रूरत है।"

लेकिन अब सभी गाइड एक साथ, ऊचे-ऊचे और गुस्से म बालने लगे। वोलोद्या जिसे मन ही मन यूरा कहता था, उसन उसके पडदार कोट का छोर पकड लिया और कीचड के कारण रात के छपछपाते अधेरे मे सायवान से बाहर खीच ले चला। तेज हवा के झोके आ रहे थे, मूसलधार वारिश का शोर हो रहा था। मार्केलोव खूब जोर स गाइडो पर चिल्लाया, मगर वे खामोश नही हुए और वोलोद्या को उनके मुह स टोड जीन का परिचित नाम वार-वार और अधिक दढता के साथ सुनाई दने लगा। शायद मामला कुछ ऐसा था कि गाइडो को टोड जीन से सम्वधित कोई ऐसी वात मालूम थी, जिसे वोलोद्या विल्कुल नही जानता था और जिसे किन्ही कारणो से मार्केलोव जानना नही चाहता था।

मार्केलोव की चेतावनियो पर अब कान दिये बिना वोलोद्या टार्च जलाकर यूरा के पीछे पीछे चुपचाप चलता जा रहा था। सारे के सारे गाइड एक दल-सा बनाकर इन दोनो के पास पहुच गये और येगोर फोमीच रास्ता न देख पाता और कीचड म छपछपाता हुआ उनके पीछे पीछे आ रहा था।

वोलोद्या अचानक सारी वात समझ गया—गाइड उसे एक ऐसी इमारत म ले आये थे, जो वास्तव म ही दवाखाने और एक छोटे-से अस्पताल के लिये विल्कुल उपयुक्त थी। अच्छी खिडकियोवाला यह घर लम्बा और ढग से बना हुआ था, उसम सामने और पीछे की ओर भी दरवाजा था, रसोईघर और दो सायवान भी थे।

"टोड-जीन!" यूरा ने दृढता और विजयपूर्वक मार्केलोव तथा वोलोद्या की ओर देखते हुए कहा। "टोड-जीन!"

"वकवास कर रहे है ये तो, व्लादीमिर अफानास्येविच! जगली लाग है ये, सचमुच वन्दर," अपनी सौम्यता बनाये रखते हुए मार्केलोव ने कहा। "भगवान की कसम, यह तो सुनना भी पाप है कि पूरे का पूरा व्यापार-केन्द्र अस्पताल बना दिया जाय और सो भी किसके लिये?"

'क्या यह व्यापार-केन्द्र है?" उस्तिमेन्का ने पूछा।

"हा, फर के एक व्यापारी का ही व्यापार-केन्द्र था, मैंने उसका कचूमर निकाल दिया," नम्रता को पूरी तरह तिलाजली देकर अपनी

बडी-बडी जिप्सी आँखा को भयानक बनाते हुए मार्केलोव जल्दी जल्दी बोलने लगा। "इन्ही का भाई-बन्धु था, वहा आ घुसा था, जहा उसे नही आना चाहिये था, इतना घमण्ड हो गया था उसे कि यह इमारत बनवा डाली। अब वह कुत्ते की तरह अपना ही थूका चाट रहा है। छाल की झापडी मे दिन काट रहा है "

"तो अब किसका है यह व्यापार-केन्द्र?'

"अभी तो किसी का नही, लेकिन मेरा ही होगा!" मार्केलोव ने चुनौती भरी आवाज म कहा। "मेरी इस पर आँख है और हम मार्केलोव परिवारवाला का ऐसा मिज़ाज है कि जिस चीज़ पर दिल आ गया, उसे हासिल करके छोडा। कौन जाने, मैंने इसके लिये शायद बयाना भी दे रखा हो!"

"लेकिन टोड जीन ने तो अस्पताल के लिये यही इमारत तय की है?"

"अगर उसने रजिस्टरी करवा ली है, तो ले ले।"

"तो क्या किया जाये?"

"वही करो, जिसकी मैंने सलाह दी है, मेरे प्यारे मेहमान। सायबान का अस्पताल बना लो। मैंने कह दिया है न कि मदद कर दूगा। मेरे प्यारे, अपना व्यापार-केन्द्र तो मै किसी तरह भी नही दे सकता। धन्यवाद है भगवान का कि हमारे यहा अभी तक तो निजी सम्पत्ति का उन्मूलन नही हुआ "

"नही, नही जानता," वोलोद्या ने भौह चढाते हुए कहा, "नही जानता, येगार फोमीच। निजी सम्पत्ति के बारे म कुछ नही जानता — इससे मुझे कोई मतलब भी नही है। मगर ऐसा समझता हू कि अगर आप बयाना दे चुके हैं, तो जन स्वास्थ्य विभाग आपको यह बयाना लौटा देगा। बस, इस बारे मे तो आप खुद ही, जिस आदमी से जरूरी समझें, उससे बात कर ल। मैं तो डाक्टर हू, सिर्फ डाक्टर और इसी रूप म यहा आया हू। तो हम यहा अब अपना सामान उतार देते है और बाकी आप जैसा ठीक समझे, वैसा करें।"

'मतलब यह कि आते ही मेरे खिलाफ हो गये?'

"मुझे आपकी नही, अस्पताल की जरूरत है।"

"अस्पताल न? मेरे नौजवान श्रीमान, क्या मार्केलाव के बिना यहा ढग से कुछ हो सकता है? अगर तुम मेरी मिन्नत करते, तो मैं अपना व्यापार-केन्द्र भी तुम्हारे अस्पताल के लिये भेंट कर देता। ऐसी ही तबीयत का आदमी हू मै तो। हो सकता है कि मैं बहुत दिनो से ही कोई नेक काम करने की सोच रहा होऊ? हो सकता है कि तुम्हे मेरे परिवार के स्वास्थ्य की चिन्ता करने के लिये मेरे यहा से वेतन भी मिलता "

"आप सुनना ही चाहते है?" वोलोद्या बोला, "तो श्रीमान मार्केलोव, आप मुझे मेरे हाल पर छोड दीजिये। मुझे न तो आपके नेक काम की जरूरत है और न आपके बेहूदा वेतन की। मेहरबानी करके तशरीफ ले जाइये। खाना खिलाने के लिये शुक्रिया। हा, यह बता दीजिये कि भोजन के लिये कितने पैसे दू?"

और वोलोद्या ने अपने गन्दे, मिट्टी के सूखे धब्बोवाले पतलून की जेब म हाथ डालकर मास्को मे खरीदा हुआ अपना बटुआ निकाला।

"कितने पैसे देने है मुझे आपको?"

"अरे, तुम तो निरी आग हो, नौजवान," धीरे से व्यग्यपूवक मुस्कराकर मार्केलोव ने कहा। "बिल्कुल आग हो! जरा-सा कुछ कह दो और बस, भडक उठे। बेकार ही! लेकिन मुझे ऐसे लोग अच्छे लगते है। खुशी से जम जाओ, मेरे इस व्यापार-केन्द्र म। और हो सकता है कि कभी खुद मार्केलाव भी तुम्हारे पास इलाज कराने आये। इन्तज़ार करना, उम्मीद रखना!"

उसने ज़ोर से वोलोद्या का कधा थपथपाया, उगलियो से यूरा की चपटी नाक को खीचा, एक अन्य गाइड के चूतड पर घुटना मारा और अच्छे मूड म, मानो दोस्त-सा बनकर यहा से चला गया

घर म सन्नाटा छा गया।

सन्नाटा और अधेरा।

वोलोद्या ने फिर से अपनी टार्च जलायी इधर-उधर नजर दौडायी, ध्यान से यह सुना कि बारिश कैसे छत पर अपनी ढोलकी बजा रही है और इशारो से गाइडो को यह समझाया कि वे सारा सामान व्यापार केन्द्र की इमारत म ले जायें। दो दिन बाद, घारो के स्थानीय बढ़ई

ग्रौर तरखान तहखाने म मिट्टी जमा रह थे, वक्त गुजरने के कारण खस्ता हाल हुए काले फर्श के तख्ते बदलकर सफेद तख्ते बिछा रहे थे, ग्रगीठीसाज ईंटो के पक्के ग्रलावघर बना रहा था तथा एक बूढा, लगडा कारीगर दरवाजो के ताला, कुडो ग्रौर ग्रगीठी को ठीक ठाक कर रहा था। सायबान मे लकडिया, बहुत सी लकडिया लायी जा रही थी, क्याकि यहा जाडा कठोर, पाले ग्रौर बर्फवाला होता है। वोलोद्या ड्याढी म बठा ग्रौर कपडो पर जहा-तहा रग रोगन के धब्बे लगाये हुए टीन के टुकडे पर बच्चा की तरह बेढगेपन से इस इमारत म ग्रानवाले बीमार लोगो के चित्र बना रहा था। एक लाठी का सहारा लिये था, दूसरा टूटी बाह को पट्टी मे लटकाये था ग्रार तीसरे रोगी को हिरन पर लादकर लाया जा रहा था। वोलोद्या ने ग्रपने को भी चित्रित किया। वह सफेद लबादा पहने चबूतरे पर खडा था ग्रौर उसकी बाछें खिली हुई थी। मुस्कान को चित्रित करने के लिय उसके पास कोई चित्र नही था, जिसकी वह नकल कर सकता। इसलिय उसन ग्रपन मुह को दूज के चाद की शक्ल मे सारे चेहरे पर फैला दिया था। वोलोद्या जब तक चित्रकारी करता रहा, किसी न भी काम नही किया। सभी देखते ग्रौर हैरान होत रह। फिर भी उसन यह बोड ग्रपन दवाखाने ग्रौर ग्रस्पताल के प्रवेश-द्वार पर नही लगाया।

कोई दो बार मार्कोलोव भी एक बडे-से झबरीले कुत्ते के साथ ग्रस्पताल की तरफ ग्राया। वह रुककर देखता रहता ग्रौर ग्रगर वोलोद्या नजर ग्रा जाता, तो टोपी उतारकर ग्रभिवादन करता ग्रौर सीटी बजाता हुग्रा ग्रागे चल देता।

सात नवम्बर तक वोलोद्या ने ग्रपने पहल ग्रसली दवाखाने ग्रौर ग्रस्पताल की मरम्मत ग्रौर उस ढग से व्यवस्थित करने का सारा काम खत्म कर दिया। यहा ग्रब ग्रापरेशन हाल भी था, उसके ग्रपने रहने का छोटा-सा कमरा भी, रसोईघर, स्टोर ग्रौर दूसरे सभी ग्रावश्यक कक्ष भी। ग्रब उसके पास दुभापिया भी था—एक बडा फुर्तीला ग्रौर सूझ-बूझ रखने तथा हर वक्त खुश रहनेवाला स्थानीय व्यक्ति मादी-त्जी। बावचिन भी थी—बूढी ग्रौर बहुत ही डरपोक चीनी ग्रौरत, जो खुदा जाने, कसे पिछली सदी मे ही यहा ग्रा गयी थी। दाजी बहुत

ही गम्भीरता से उसे "मदाम वावचिन" कहता था। दाजी ही मदन्नर्स भी था।

सात नवम्बर की शाम का वालाद्या न अपने सारे "स्टाफ" का अच्छी तरह से गर्माये गये रसाईघर म एकत्रित किया, मस्साद्रा शराब की एक वोतल खाली, मज पर सुन्दर ढग से खाना लगाने का आदेश दिया और गिलासा म शराव डाल दी। मास्का से लायी गयी दीवालघडी ऊची और वधी-वधायी लय म टिक टिक कर रही थी।

"अनक साल पहले मेरे देश के मजदूरा और किसाना ने इसी वक्त लेनिन के नेतृत्व मे हमेशा के लिये पूजीपतिया और जमीदारो की सत्ता खत्म की थी। आइये, ऐसा करनेवाली मेहनतकश जनता के नाम पर जाम पियें।"

दाजी ने अनुवाद किया और "मदाम वावचिन" अचानक खुशी के आसू वहाती हुई रो पडी।

"इसे क्या हुआ है?" वोलोद्या ने पूछा और वुढिया का झुरियावाला मुर्गी के पजे जैसा हाथ प्यार से अपने हाथ मे ले लिया। "मदाम वावचिन" और भी जोर से रोन लगी।

"कौन जाने, वह किस वात के लिये रोता?" दाजी ने कहा। "उसे शायद कुछ याद आ गया? वह भी कभी जवान था, उसका पति होता, वच्चे होते? अव वह अकेला और अगर, डाक्टर वोलोद्या, तुम मेरी वात मानकर इसे नौकर न रख लेता, तो वह मर जाता न? वह मजदूरो और किसानो का राज चाहता।"

"तुम भी ऐसा चाहते हो?" वोलोद्या ने पूछा और फौरन इस ख्याल से सहम गया कि वह प्रचार और आदोलन काय कर रहा है।

वुढिया अव भी रोती जा रही थी। "यहा भयानक नही, मगर जटिल जरूर है," टोड जीन ने कहा था। तो यह मतलब है "जटिलता" का, अपने सामने मेज पर शराव का गिलास धीरे धीरे घुमाते हुए वोलोद्या ने सोचा। पर खर, कोई परवाह नही! वह इन सबको यह दिखा देगा कि मजदूरा और किसानो के देश द्वारा भेजा हुआ आदमी कैसा होता है। वे यह देख पायेंगे। यहा के जनसाधारण—ताइगा के

साहसी और चुप रहनेवाले शिकारी, धूप म सवलाये चेहरावाले खाना-बदोश, पाल के मारे हाथावाले मछुए--ये सभी देख पायेंगे। तव इनकी समझ म आ जायेगा कि इन सभी मार्केलोवा की असलियत क्या है। अगर अभी तक वे यह नही समझे, तो अब समझ जायेंगे।

"शुभ रात्रि!" उस्तिमेन्को ने उठते हुए कहा।

सुबह दाज़ी उसके कमरे मे आया और उसन यह सूचना दी कि चबूतरे पर एक लामा बैठा है और इसलिये दिन भर बैठा रहेगा कि अस्पताल म कोई रोगी न आ पाये।

"यह तुम उसे भाडे पर ले आये हो?" वोलोद्या ने पूछा।

"मैं?" दाज़ी को हैरानी हुई।

दिन भर गीली वफ के बडे वडे रोयें गिरते रहे और लामा हिले-डुले विना अस्पताल के चबूतरे पर बठा रहा। दोपहर के खाने के वक्त दयामयी "मदाम वावचिन" ने उसे गम भोजन दे दिया। वालोद्या आग-बबूला हो उठा और उसने अपने "स्टाफ" को खूव डाटा। लामा अस्पताल का शोरवा खाते हुए मार्केलोव से वात कर रहा था। मार्केलोव भारी सोटे का सहारा लेकर कुछ दूर खडा था और अपनी मनहूस जिप्सी आखो से भूतपूव व्यापार केन्द्र की इमारत को घूर रहा था। अगर सोचा जाय, तो यह तो सचमुच ही वडी वेहूदा वात थी

जब अधेरा होन लगा, तो दाज़ी ने बहुत घवराते हुए आकर कहा कि लामा कुछ ढग की वात करने के लिये भीतर आना चाहता है, कि वह भला आदमी है और रोगी भी। वोलोद्या ने मन ही मन कोसा और लामा को उस कमरे मे आ जाने दिया, जो "रोगी-कक्ष" कहलाता था। दाज़ी ने लामा को वहुत झुक-झुककर प्रणाम किया, किन्तु लामा ने इस पुरुप नस की ओर कोई ध्यान न देकर उस्तिमेन्का के सामने सिर झुकाया। सफेद मोमजामे से ढकी छोटी-सी मेज पर मामवत्ती जल रही थी। विना रोग़न की हुई लकडी की छोटी छोटी अलमारियो म दवाइया रखी है—लामा ने यह अनुमान लगा लिया, वडी ललचायी नजरो से वन्द दरवाज़ो को देखा, गिलास मे रखी रुई को सूघा, उगली से लकडी के छोटे-छोटे चमचो को छुआ और बडी गहरी सास ली।

"तो क्या बात है?" वोलोद्या न पूछा।

दाज़ी ने अपने एक नगे पैर से दूसरे नगे पाव को खुजलाया, लामा से जल्दी-जल्दी कुछ पूछा और लामा न भी चिचियाती सी आवाज़ म जल्दी जल्दी जवाब दिया। लामा की बात बडी छोटी और सीधी-सादी थी। उसने कहा कि अगर वोलोद्या उसे यानी लामा को मासिक वेतन देने लगे, तो वह बीमारो का वोलोद्या के अस्पताल म आन से मना नही कहेगा। बस। वेतन थोडा सा होगा, मगर उस वक्त पर और निश्चित रूप से मिल जाना चाहिये। इतना ही नही, वह यानी लामा उस्तिमेको के पास ऐसे रोगियो को भी भेज दिया करेगा, जिन्ह वह खुद और दूसरे लामा रोगमुक्त नही कर पाते।

वोलोद्या मुह लटकाये यह सुन रहा था और उसे याद आ रहा था कि कसे बोगोस्लोव्स्की ने उसे देहातो मे काम करनेवाले डाक्टरा की आत्म हत्याओ के बारे मे बताया था। इसके बाद उसने सिर ऊपर किया और लामा के औरतो जस, एकदम बालो के बिना, वृद्ध से, बहुत ही गम्भीर चेहरे को गौर से देखा। दाज़ी ने कुछ शब्द और कहे, ता वोलोद्या को यह सब मज़ाक-सा प्रतीत होने लगा।

"इससे कहो कि यहा स चलता बन!" वोलोद्या बोला। उसने ज़ोर से पहले एक और फिर दूसरा दरवाज़ा बन्द किया। इसके बाद ही अपने छोटे से कमरे म जाकर, जिसम दीवार के निकट छोटी सी चारपाई थी, अगीठी दहक रही थी, खिडकी के करीब छाटी-सी मेज़ थी, वार्या, पिता जी और बूआ अग्लाया के फोटो थे, उसन भीतर से ताला बन्द कर लिया

ऐस शुरू हुआ यह कठिन, बेहूदा और अटपटा जाडा।

महान डाक्टर परेशान हो उठा

रात को कडाके की ठण्ड हा गयी, तापमान शून्य से ३० डिग्री नीचे जा पहुचा। कमरा के काना म पाल की सफेदी चलक उठी, भूतपूव व्यापार-केन्द्र की कडिया चिटकने लगी और बाहर लगे हुए थर्मामीटर का पारा और भा नीचे उतरता जा रहा था।

मादी दाज़ी ने मन मारकर ग्रस्पताल की सभी वडा-बडी ग्रगीठिया गर्मा दी।

ग्रगीठिया सात थी, उन्हे गर्माने मे बहुत देर लगी और मादी दाज़ी थक गया। अधेरे कमरा मे सफेद चादरा कम्वला और पलगपोशा स ढके खाली पलग उदास सी सफदी बिखरा रहे थे।

"और ता गम नही करनी चाहिय न?" दाजा न पूछा।

"करनी चाहिये।"

"नही चाहिये।"

"तुम वस ही कराग जस मै तुम्हे ग्रादेश दूगा मादी दाजी" उस्तिमन्को ने विगडकर कहा। "वरना मै तुम्हे निकाल बाहर करूगा। यह समझ ला कि मरे साथ ऐसा सब नही चलगा।"

"कल रोगी ग्रायेंगे न?" दाज़ी न पूछा। "वहुत म रोगी? उनके लिये मैं सभी ग्रगीठिया जलाऊगा न?"

"इन्सान को जुवान इसलिये दी गयी है कि वह ग्रपने भाव छिपा सके।" वोलोद्या को किसी का यह वाक्य याद ग्रा गया और वह ग्रपने कमरे म चला गया।

ग्रगले दिन तापमान शून्य स ३३ डिग्री नीचे पहुच गया। एक भी रोगी नही ग्राया।

"ग्रगीठिया जलाऊ?"

"हा, जलाग्रो।"

"सभी ग्रगीठिया?"

"हा, सभी ग्रगीठिया।"

"रोगी ग्रायेंगे?"

उस्तिमन्को ने काई जवाब नही दिया।

"मदाम वावचिन" ने ग्रपने चूल्हे पर तीन रोगिया के लिये खाना पकाया। मगर तीन रोगी भी नही ग्राये। सभी तरह से लैस गर्म ग्रारामदेह ग्रौर साफ सुथरे ग्रस्पताल म काई भी तो नही ग्राया। वालोद्या सुवह के वक्त ग्रपना डाक्टरी लवादा पहनकर रोगी-कक्ष म एक कोने स दूसरे कोने तक ग्राता जाता रहता। ग्राखिर तो रोगियो को ग्राना चाहिये था।

मगर नही, वे नही ग्राये।

वे अपने खमो, मिट्टी और छाल के झोपडा मे बीमार पड़े रहत थे। वे वहा शमानो की चीख चिल्लाहट, खजडी की धपधप और छनक, सिरफिरे लामाश्रा की धीमी बुदबुदाहट तथा बीवी-बच्चा का रोना धोना सुनते हुए दम तोड देते थे। वे उन रोगो से मरत थे, जिनका वोलोद्या बडी आसानी से इलाज कर सकता था। मगर वालोद्या-स्वस्थ, जवान और हृष्ट-पुष्ट-यहा कमरे के एक कोने से दूसरे कान तक भला योही किसलिये चक्कर लगाता रहता था?

मादी दाजी ने मज़ाक-सा उडाते हुए यह किस्सा सुनाया-

"कल सागान ऊल हमारे पास अस्पताल मे नही आया। मैं पूछता, हा, हा? 'रूसी डाक्टर को बुला लाता, तुम्हे अच्छा कर देता रूसी डाक्टर!' सागान-ऊल बोल नही सकता, उसकी जगह शमान सरमा जवाब देता-'तुम्हारे डाक्टर को मौत आ जाय।' सागान ऊल आज मर गया, मैं वहा गया, सरमा मुर्दे के पास बैठा था और दूध के अरक का प्याला उसके पास रखकर आदेश देता था-'तू मर गया! यह ले अपनी भेट और जा!' कसे लोग है, कसे बेवकूफ लोग है, कुछ भी नही समझते न?"

वोलोद्या माथे पर बल डालकर यह सब सुन रहा था-"न सिर्फ़ बुलाते ही नही, बल्कि अगर खुद जाऊ, तो भी अदर नही जाने देंगे! कौन यह सब कुछ करता है? किसलिये? आखिर लोग, लोग तो मर रहे है।"

और दाजी मजे लेता हुआ व्यग्यपूर्वक यह सुनाता जा रहा था-

"ताबूत लाये-एक लट्ठा। घोडे के बाला स बने मजबूत रस्स से मृत सागान ऊल को उसके साथ बाध दिया गया, मुर्दे को कभी छूटना नही चाहिये। खेमे का पिछला हिस्सा ऊपर उठाया और अदर जाने के दरवाज स नही, नहा, नही, पीछे स बाहर खीच ले गये। मुर्दे को दरवाज़ा कभी नही मालूम होना चाहिय, वापस आ जायगा, तो बहुत बुरा होगा और उसे घोडे पर लादकर पहाड पर ले गय, सीधे नही, बल्कि एसे, ऐसे, ऐसे "

उसने हाथ के इशारा स यह बताया कि कसे टेढ़े-मढ़े रास्त स मुर्दे का पहाड पर ले गय, कैसे उसे वहा फक दिया और बडी

सावधानी से, ताकि पैरो के निशान साफ नजर न आये, वापस आ गये।

"सडक से नही, ऐसे टेढे मेढे, घूमकर, हा!" दाजी ने कहा। "सडक से सागान-ऊल वापस आ सकता है, बुरा होगा, ऐसे होता है और डाक्टर वोलोद्या, तुम यहा बैठे हो। शायद तुम भी दोषी हो, लामा से बुरे ढग से क्यो बोले, हा, क्या? अब जल्द ही हम सब को यहा से भगा देंगे—तुम्हे, मदाम बावचिन को और मुझे भी। मदाम बावचिन मर जायेगी, वह बूढी, तुम दूर चले जाओगे—मौज करोगे मगर मैं? यहा काम नही, वेतन नही होगा, कैसे जीऊगा मैं, हा, कैसे?"

दाजी तो अपने प्रति दया के कारण रो भी पडा।

सुबह को वोलोद्या कसरत करता—शुरू मे दस मिनट तक, मगर बाद मे पन्द्रह मिनट तक कसरत करने लगा। नाश्ते से पहले वह पुराना स्वटर और दस्ताने पहनकर लकडी चीरने के लिये अहाते मे निकलता। ठिठुरे हुए लट्ठे चिटकते तथा कटकर दूर जा गिरते। जब कोई गाठ-वाला ठूठ सामने आ जाता, तो वोलोद्या बहुत देर तक झुझलाता, गुस्से से लाल पीला होता हुआ उसमे छेनी घुसेडता, हाफता और कोसता हुआ तब तक कुल्हाडा चलाता रहता, जब तक कि उसे चीर न डालता। इसके बाद वह नाश्ता करता और देर तक स्टूल पर बैठा रहता। बडी अगीठी मे लकडी के बडे-बडे टुकडे चिटकते हुए अच्छे लगते। दहकते, लाल अगारो को देखते हुए उस्तिमेको मन ही मन सभी तरह की परिस्थितियो मे, जैसा कि बोगास्लोव्स्की और पोस्तनिकाव ने सिखाया था, सर्जरी की अद्भुत शैली के और साहसपूर्ण तजरबे करता। इस वक्त के दौरान उसने बहुत अधिक पढा था। सैद्धान्तिक रूप से तो सम्भवत वह सब कुछ कर सकता था। मगर रोगी उसके पास नही आते थे, अस्पताल खाली पडा था और इस निठल्लेपन, इस मानसिक काहिली, ख्यालो और कल्पना मे ही इलाज तथा आपरेशन करने से उसके लिये जीना दिन पर दिन डरावना होता जा रहा था।

"वह सर्जन नही, घुडसवारी के करतब करनेवाला है!" वोलोद्या ने एकबार चीर-फाड के लिए बहुत ही उत्सुक डाक्टर के बारे मे पढा

था। ओह, काश उसके पास वह चिर प्रतीक्षित रोगी आ जाये, तो कितना सावधान रहेगा वह, कैसे सोच-समझकर और बडी समझदारी से इलाज करेगा उसका। अपना जीवन उसके हाथो मे सौपनेवाले व्यक्ति की तरफ वह कितना अधिक ध्यान देगा। करतब करनेवाला घुडसवार। नही, वह आपरेशन-कक्ष मे ऐसे करतब नही करेगा।

वोलोद्या को मानो और अधिक परेशान करने के लिये ही पास्तनिकोव, गानिचेव, पीच और ओगुर्त्सोव के भी खत उसे मिले।

पोस्तनिकोव ने बहुत समय पहले देहात मे अनुभव की गयी असाधारण घटनाओ की चर्चा की थी, पीच ने बहुत अधिक काम की डीग हाकी थी, ओगुर्त्सोव ने अपनी क्षमताओ मे अत्यधिक सन्देह प्रकट किया था और गानिचेव ने यह चेतावनी दी थी कि वह यानी वोलोद्या समय से पहले अपने अनुभव का सामान्यीकरण करना न शुरू करे। उन्होने लिखा था कि "आजकल यह चीज़ खतरनाक बीमारी हो गयी है। कुछ दुनिया को यह बताने के लिये अपनी रचनाए लिखते है कि उन्होने कोई आविष्कार कर डाला है, दूसरे—अपना सिक्का जमाने के लिये, तीसरे—मानवजाति को यह याद दिलाने के लिये फला नाम का आदमी फला नगर मे रहता है और चौथे—ऐसो की सख्या बहुत अधिक है—इसलिये कि उन्हे वैज्ञानिक होने का महत्त्व प्राप्त हो जाय।"

वोलोद्या ने बहुत सक्षिप्त, नीरस और रहस्यपूर्ण ढग से इन पत्रो के उत्तर दिये—वे जैसा भी चाहे, समझ ले।

क्रिसमस के मौके पर मार्केलोव ने वोलोद्या को अपने यहा आमन्त्रित किया। मगर वोलोद्या नही गया और बहुत व्यस्त होने का मूर्खतापूर्ण बहाना कर दिया। तब मार्केलोव खुद आया—घुघराले बालो मे तेल फुलेल लगाये, कलफ लगी कमीज़ पहने, इत्र की सुगन्ध छिटकाता, मज़े से चुटकिया लेता हुआ और मेहरबान-सा भी।

"ओह, मेरे सूरमा, बहुत ही ज्यादा काम-काज मे फसे हुए तुम तो," खाली कमरो मे नज़र दौडाते हुए उसने कहा। "खूब इलाज करते हो तुम हमारे लोगो का, बडे मेहनती हो तुम तो। सभी कमरे गर्म हैं, सभी जगह बिस्तर लगे हुए हैं, रसोईघर से बढिया खाने की खुशबू आ रही है, मगर हमारे ये जगली तो आते ही नही। तुम उनके आने

की उम्मीद नही करो, डाक्टर, नही राह दखो, मेरे प्यारे, नही राह दखो। तुम भोले भाले प्राणी हो, वे नही आयेंगे। उनकी अपनी दवा-दारू है, और वे उसी से खुश है।"

मार्केलोव तीसरे कमरे म ऐसे जा बैठा, मानो घर का मालिक हो उसने लम्बी टागें फैला ली और लगा अपना गुस्सा गिला जाहिर करने—

"तो देखते हो तुम, कहा हमारा पैसा जाता है, खून-पसीने से कमाया हुआ, बडी ईमानदारी का, बडी महनत से बचाया हुआ पसा। तुम जसे निकम्मो पर। हम मेहनत करते है, तुन्द्रा, ताइगा म और भूली बिसरी जगहो पर मार-मारे फिरते है, व्यापार करते है, सभ्यता लाते है, मगर हम क्या मिलता है? ठेगा? यहा के काहिलो निठल्लो और ऐसे ही दूसरे लोगो के लिये गम कमरे है। यह अच्छी बात नही है, नही, अच्छी बात नही है।"

मार्केलोव देर तक बैठा रहा, इसके बाद उसने वोलोद्या की किताबो के पन्ने उलटे-पलटे और फिर उसके फूस भरे गद्दे मे घूसा खासकर बोला—

"बडा सख्त है यह तो! रोयावाला गद्दा भिजवा दू, डाक्टर?"

मादी दाजी दरवाजे के पास खडा खुशी से खिलखिला रहा था, हाथ मल रहा था, सिर झुका रहा था।

"तो तुम नही चलोगे?" मार्केलोव ने पूछा। "जैसा चाहो। मै तो सच्चे दिल स आया था, बाकी तुम जानो।"

अकेला रह जाने पर वोलोद्या बोगोस्लोव्स्की को खत लिखने बैठ गया। दात भीचकर और मग से ठडे पानी के बडे-बडे घूट पीते हुए वह रात के एक बजे तक खत लिखता रहा। यह गुस्से, दुख, चोट खाये स्वाभिमान और उलाहनो से भरा खत था। बोगोस्लोव्स्की न उसे किसलिये यहा बुलवाया? उसके प्रति सद्भावना रखने के कारण? उसे किसी की सदभावना की जरूरत नही, वह खुद भी तो मानव है और सो भी ऐसा मानव, जो बिना लाभ के जन द्रव्य का कमचारी रखने, कमरे गर्माने और खाना पकवाने के लिए हरगिज बरबाद नही होने देगा। हो सकता है कि इस तरह से वे दक्षिणपथी तत्त्व, बाइयो और जमीदारो के वे रिश्तेदार हमारी खिल्ली उडा रहे हो, जो अभी तक

सरकार म घुसे बठे है? या, यह भी हो सक्ता है कि उसकी यानी उस्तिमेन्को की इसलिय जरूरत है कि नौकरशाही अपनी कारगुजारी दिखा सके, यह बता सके कि खारा म दवाखाना और अस्पताल चालू है? हा, प्रसगवश, वह हर महीने अपने तथाकथित "काम" की रिपाट भेजता है, मगर उसमे काई दिलचस्पी नही लेता, यकीनी तौर पर कोई भी उसकी तरफ ध्यान नही देता। थोडे म यह कि वह हराम की रोटी नही खाना चाहता, यहा निठल्ले बैठकर अपना सत्यानास करने का इरादा नहो रखता। इसलिये वह माग करता है कि उस यहा से वुला लिया जाये। अगर उसन अपने खत म व्यवहार-कुशलता का परिचय देनेवाली भाषा का उपयोग नही किया, ता इसके लिय उसे क्षमा कर दिया जाये और वह अपनी निश्छलता का विश्वास दिलाता है

पत्र चार पृष्ठा का था, और वोलोद्या ने उसे दुवारा पढा भी नही। जो होना है, सो हो जाये। अब वह और अधिक यह सब बर्दाश्त नही कर सकता।

फरवरी म उसे अपने महरवान दोस्त येव्गेनी स्तेपानोव से नये साल का बधाई पत्र मिला। काड बडे खुशी के मूड, प्रफुल्लता और चुटकिया सी लेते हुए लिखा गया था तथा उसकी यह इच्छा जाहिर करता था कि वह दुनिया मे सभी के साथ प्यार-मुहब्बत बनाये रखना चाहता है। "तो तुम, देहाती डाक्टर, ऊचे आदर्शोवाले डाक्टर, तुम हम सब से ज्यादा तेज निकले," यव्गेनी ने लिखा था। "तुम्हारा जातीरूखी गाव विदेश म बदल गया। हा, बुरा नही मानना, लेकिन मुझम ईर्ष्या की भावना बोल रही है। कुछ भी क्या न कहो, मगर वहा सभी तरह की कारवा सराय, मुअज्जिन, पूर्वी मसाले, बुर्के आढे सुन्दरिया, यह तो मानोगे ही कि इन सब का अपना अनूठा आकपण है। मेरे ख्याल मे तो जसे ही झुटपुटा होता होगा, तुम फ्राक्कोट पहनकर किसी नाइट क्लव की तरफ चल देते होगे? बडे धूत्त हा न?'

उस्तिमेन्को इस खत का क्या जवाब दे सक्ता था?

वसे यव्गेनी भूगोल की पढाई म कभी भी बहुत होशियार नही रहा था।

लेकिन वह यह नही सोचना चाहता था कि वार्या भी उसे "सबसे ज्यादा तेज" मानती है और यही समझती है कि वह फ्राककोट पहनकर "नाइट-क्लब" मे जाता है।

वालोद्या रेडियो बहुत कम सुनता था। बात बेशक बडी अजीब सी थी, किन्तु जब हजारो किलोमीटरो की दूरी से वह उदघोषक की शान्त आवाज मे "यह रेडियो मास्को है", सुनता था, तो उसे बडी परेशानी होती थी। उसे लगता था मानो वहा से कोई पूछ रहा हो—तुम यहा क्या कर रहे हो, प्यारे दोस्त? सभी तरह का आराम है न तुम्हे? गम और राशन घर है, बिना किसी परेशानी के रहते हो न? मगर हमने तुम्हे काम करने के लिये भेजा था और तुम क्या कर रहे हो? मुश्किलो का सामना करना पड रहा है तुम्हे? वस्तुगत कठिनाइयो का, साथी डाक्टर?

चौदहवा अध्याय

आपके मवेशी कैसे है ?

वोलोद्या शामो को पढता रहता।

पढी हुई रचनाओ से गस्से मे आने के बजाय वह अक्सर चक्कर मे पड जाता। ऐसे आदमी के बारे म पढना उसे अजीब ही नही लगा, वल्कि कुछ झेप-सी भी हुई जो बहुत देर तक, अनेकानेक पष्ठो के दौरान एल्प पहाडो के किसी स्वास्थ्यप्रद स्थान पर, क्रान्ति की हलचल वाले पेत्राग्राद मे, दोन तट पर, कालेदिन की सेना म और फिर मास्को मे भी यह नही समझ पाता कि सोवियत सत्ता का वास्तविक रूप क्या है और वह उसके अनुकूल है या नही। यह व्यक्ति प्यार करता था, प्यार से विरक्त होता था, वारिश और अच्छे मौसम मे चिन्तन करता था (सभी ऋतुओ और गन्धो का विस्तृत और काफी सच्चा चित्रण था इस रचना मे वास्तव म ही बरखा-बूदी के मौसम मे घास फूस स वसी ही गन्ध आती है और वसन्त की थोडी देर की वारिश म सूरज भी ऐसे ही चमकता है), गोलिया चलाता था, मदान छोडकर भागता था, छिपता था, रेल के डिब्बो और जहाजो म सफर करता था और आखिर मे सभी सम्भव मधुर गन्धो को अनुभव करते, विभिन्न रगो की छटा म भेद करत और असाधारण प्राकृतिक दश्यो पर मुग्ध होत हुए सोवियत सत्ता को अगीकार कर लेता है, किन्तु कुछ सीमाओ के साथ।

"भई वाह!" उस माटी पुस्तक को बन्द करत हुए वोलोद्या हैरान हुआ, जिसके अन्तिम पृष्ठ पर बहुत ही अथपूण ढग से यह लिखा हुआ था कि अभी तो केवल 'दूसरा खण्ड" ही समाप्त हुआ है। इसके बाद वोलोद्या न जो किताब पढी, उसम सकेता म ही सब कुछ कहा

गया था। उसका नायक सावियत सत्ता के पक्ष म था, फिर भी लोगा म पूजीवाद के जन्मजात विभिन्न लक्षणो को ही ढूढता और इगित करता रहता। वह बडे चटखारे लेकर, किन्तु विपाक्त ढग स इनकी चर्चा करता और स्वय पूरी तरह अकमण्य रहता। वह तो तोलस्ताय के नायक प्यर वेजूखोव जसी बेमानी हरक्ते भी न करता, जा अपन विशेष उद्देश्य स ही फ्रासीसिया के कब्जे म आये मास्को म रह गया था। इसके विपरीत यह नायक केवल निरीक्षण तक ही अपन को सीमित रखता और अक्सर यह निष्कप निकालता कि इस जीवन म "सब कुछ इतना सीधा-सादा नही है।" और वास्तव म ही यह सब इतना उलझा हुआ था कि वालाद्या कपडे की जिल्दवाली इस रचना को, जो उसने नौ रूबल बीस कापक देकर मास्को म खरीदी थी, बिल्कुल ही नही समझ पा रहा था और उसने उसे भविष्य के लिये उठाकर रख दिया। तीसरी रचना, जिससे वालोद्या के सब्र का पैमाना छलक गया, के लेखक ने क्रान्ति के बाद के पत्राग्राद म एक लुटेरे के जीवन का बडा विशद और विस्तृत चित्रण किया था। यह लुटेरा लोगो का लूटता और लगातार तक वितक करता था तथा उसके इद-गिद के लोग भी तक वितक करते थे, सो भी देर-देर तक और मूखतापूण। अन्त म यह लुटेरा अपन को सूली लगा लेता है लेकिन पूरी तरह नही। यहा पहुचकर वोलाद्या न उपन्यास पढना बन्द कर दिया और फिर से "आपरेशना स सम्बधित भूल और खतरे" नामक वही किताब पढने लगा, जो उसने बीच मे ही छोड दी थी।

वोलाद्या जिन दिना यह किताब पढ रहा था, उन्ही दिना वह घटना घटी, जिसने खारा म उसके जीवन का पूरी तरह बदल दिया। दीदे फाडे, जूते गिराता, फीतेवाला अडरपट पहनता हुआ (वालाद्या ने यह नोट कर लिया कि अडरपट सरकारी है, क्याकि उस पर निशान लगा था) मादी दाजी उसके कमरे म भागा आया और चिल्लाने के बजाय चीखती-सी आवाज म बोला—

'रागी! दो! जल्दी करा, न?"

वालाद्या न स्टूल पीछे हटाया, दस तक गिनती की ताकि उत्तेजित होकर मूर्खा जसा व्यवहार न करे और चोगा-टोपी पहनकर बरामदे म चला गया। दरवाजे के पास बुरी तरह ठिठुर हुए दो अजनबी चुपचाप

27

खडे थे। अपने फर कोटा के ऊपर वे फर की जाकेटें पहने थे, जिनपर बर्फ की कलम-सी लटक रही थी और उनके ऊंचे फर-बूट भी बर्फ मे ढके हुए थे। दाज़ी के हाथों में कांपते हुए छोटे-से लैम्प की मद्धिम रोशनी मे वालोद्या ने रागिया से कहा कि वे अपने कोट, आदि उतारकर रोगी-कक्ष मे आ जाये। उसके ऐसा कहने पर दबी घुटी-सी हंसी सुनाई दी और इस दबी घुटी तथा खास ढंग की हंसी से वालोद्या को कुछ याद हो आया, मगर अगले क्षण वह उसे फिर भूल गया।

"इजाजत दीजिये!" वोलोद्या ने कहा।

"इजाजत देने या न देने मे क्या फर्क पडता है," वालोद्या को चरचराती, देहाती ढंग की खुशी भरी आवाज़ फिर से सुनाई दी और वह फौरन निकोलाई येव्गेन्येविच बोगोस्लाव्स्की को पूरी तरह पहचान गया, जो धीरे धीरे अपने सिर से फर की टोपी और साथ ही बर्फ-ढके अपने कपडे भी उतार रहे थे। "इजाजत देने या न देने से क्या फर्क पडता है," उन्होने वालोद्या से हाथ मिलाते और थोडी दूरी से ही उसे बहुत ध्यान कडाई और प्यार से देखते हुए कहा। "आप इन्हे, साथी टाड जीन को तो पहचानिये! उनसे तो आपकी इतनी पहले मुलाकात नही हुई थी कि भूल जायें। हां वोद्का लाने का भी कह दीजिये, हम पिघली बर्फ के गढे मे जा फसे थे। ओह यह बर्फ और पानी मे से गुज़रना और शैतान जाने कि फिर से कहा जा फसना। आह, ये रास्ते के जानकार, ओह, ये पथ प्रदर्शक "

बोगोस्लाव्स्की लगातार बोलते जा रहे थे बोलते जा रहे थे और वोलोद्या को फौरन ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह चार्नी यार से कभी, कही गया ही नही और अभी सब कुछ बहुत बढिया हो जायगा कोई परेशानी नही रहेगी सब कुछ ठीक ठाक हो जायगा। बोगोस्लाव्स्की खाली कमरो को देखने भी लगे थे, सिर हिला रहे थे, जोर से हाथों को मलकर गर्मा रहे थे और टाड-जीन की तरफ देखते हुए अफसोस ज़ाहिर कर रहे थे—

'सब खाली है, बिल्कुल खाली पडे हैं एक भी तो रोगी नही '

'मन्दाम वार्वाचेन' ने झांककर देखा, हाथ नचाये और बढ़िया भोजन बनाने के लिये अपने छोटे-छोटे परो से रसोईघर की तरफ़ भाग गयी। दाज़ी मूली फ्लानेल के ड्रेसिंग गाउन, गाफ-सूये कपडे, मोज

ग्रौर स्लीपर ले ग्राया था। वह बार-बार वोलाद्या को सिर झुका रहा था, क्योंकि टोड जीन ने डाक्टर वोलाद्या का ग्रभिवादन किया था जिससे वह समझ गया था कि ग्रस्पताल बन्द नही होगा कि उसकी, मादी न्ग्रो की यहा से छुट्टी नही की जायगी ग्रौर पहल की तरह ही वेतन मिलता रहेगा।

"ग्रापके यहा वोदका तो है?" बोगास्लाव्स्की ने पूछा।

"स्पिरिट है।" वोलोद्या ने ग्रपराधी की भाति उत्तर दिया।

"यह तो ग्रौर भी ग्रच्छा है। खाना चीनी ग्रौरत बनाती है? बहुत खूब! हा, स्पिरिट तो कुछ मिलाये बिना ही पीनी चाहिये, ऊपर स पानी पीना चाहिये। क्या कहा, बहुत ज्यादा नशीली होती है? बेशक, बेशक, मगर ग्राप तो खुद भी बहुत ग्रच्छी तरह से जितनी भी चाहे पी सकते है ग्रौर कभी नशे म बहकते नही। पास्तनिकाव के यहा पल्मेनियावाली दावत तो याद है न?"

"याद है।" खुशी स ग्राखें झपकाते हुए वोलोद्या न जवाब दिया। "सब कुछ याद है मुझे, निकोलाई येव्गेयेविच। तो ग्रापका मेरा पत्र मिल गया?"

"पत्र ग्रौर काम-काज की बात कल करेंगे। इस वक्त तो हम सिर्फ महमान है ग्रौर सो भी बुरी तरह भीगे, ठिठुरे ग्रौर थके हुए। हमारे लिये बिस्तर लगवा दीजिये ग्रौर खुद भी ग्राराम कर लीजिये। कल सुबह से काम शुरू करेंगे।"

"मेरे खत की वजह से ग्राप मुझसे नाराज तो नही हुए?"

"जहा तक उसका मुझस सम्बन्ध है—नाराज नही हुग्रा। लेकिन ग्रापसे सम्बन्ध रखनेवाली बातो के कारण जरूर नाराज हू। कुछ कुछ ग्रौरतो जसा खत है ग्रापका, प्यारे, कुछ कुछ बौखलाहट लिये हुए। खैर, कल करेंगे इसकी चर्चा"

"फिर भी ग्रौरतो जसा किस लिये है?"

बोगोस्लोव्स्की ने कुछ क्षण सोचा, चाय का गिलास ग्रपने नजदीक खीच लिया ग्रौर बोले—

"ग्रच्छी बात है, कुछ शब्द म ग्राज ही कह देता हू। मामला यह है, मेरे प्यारे नौजवान, कि हमारी पार्टी, हमारी बाल्शेविक पार्टी म क्रान्ति स पहल भी बहुत-से डाक्टर शामिल थे। ग्रापने कभी इस सवाल

पर गौर किया कि उन मुश्किल सालो म य डाक्टर हमारी पार्टी म क्या आय? कभी साचा? मैं, व्यक्तिगत रूप से मैं यह समझता हू कि क्रान्ति के बिना, राजकीय व्यवस्था के परिवतन, पूजीपतियो, जमीदारो और कुलको की सत्ता का अन्त किये बिना रूस म चिकित्सा श्रम की सारहीनता की अनुभूति हो उन्ह पार्टी म खाचकर लाई। हर चिन्तनशील डाक्टर को यह विश्वास हो गया था कि उसके व्यक्तिगत प्रयासो और ठीक उसी तरह सैकडा अन्य ईमानदार लोगो की काशिशो का राजतन्त्रीय साम्राज्यवादी व्यवस्था के अन्तगत कोई नतीजा नहा निकलगा और निकल भी नही सकता था। हम सभी एक अर्से से यह बहुत अच्छी तरह समझ चुके है कि रागा की रोक थाम, उनका पहल से ही जानन क काय मे ही चिकित्सा का भविष्य निहित है। लेकिन उस समय चेतावनी देनवाली चिकित्सा-प्रणाली का अस्तित्व ही क्से हो सकता था जब पिरोगोव जसा प्रतिभाशाली सगठनकर्त्ता भी कुछ या लगभग कुछ भी नही कर पाया। तो इस तरह हम इस नतीजे पर पहुचते है कि असली चीज व्यवस्था है। आप पार्टी मे सम्बधित परिवार मजदूर किसानो के सोवियत राज्य स यहा आ गये, जहा परिस्थितिया बिल्कुल भिन्न है और यह समझिये कि चकरा गये। एकदम जवान होने के कारण उन प्रगतिशील चीजो की ओर आपका ध्यान नही गया जो यहा पनप भी रही है और फिर आत्माभिमान की वजह से आपने फौरन साथी टाड-जीन को खत भी नही लिखा।"

'हा आपको मुझे फौरन खत लिख देना चाहिये था!" टाड जान ने कुछ रूखेपन से कहा। "मै बात समझ जाता और यहा चला आता।"

'और मुझे आपने तब पत्र लिखा, जब बिल्कुल आपे स बाहर हो गये," बोगोस्लोव्स्की ने अपनी बात जारी रखी। "सो भी सारी परिस्थिति, काय स्थल और सामाजिक व्यवस्था के बार म सारी चेतना खोकर, यह भूलकर कि यहा डाक्टर नाम के व्यक्ति से लोग अपरिचित हैं।"

"कुछ तो परिचित हैं!" टाड जीन न कडाई स अपनी बात जोड दी। वह डाक्टर, जो हमारे यहा सोवियत सघ स नही आया था, हा, वह तो "

"जा और भी बुरा है। परिस्थिति बिल्कुल सीधी सादी नही है, यहा तक कि जन स्वास्थ्य विभाग मे भी विभिन्न शक्तिया काम कर रही हैं। आपने क्या सोचा था कि यहा आ जायेगे और सब कुछ सोवियत सघ जसा होगा – कोई गडबड हुई, तो हलके के सेक्रेटरी या स्वास्थ्य रक्षा के इन्स्पेक्टर अथवा इसस भी ऊपर प्रादेशिक अधिकारिया के पास चले जायेंगे? मेरे प्यारे, यह समझना चाहिये कि ऐसे तरीके सिर्फ हमारे यहा ही हैं, जहा राज्य स्वास्थ्य रक्षा म मदद ही नही करता, बल्कि अपने नागरिक के स्वास्थ्य और जीवन के लिये खुद को उत्तरदायी भी मानता है। वह इसलिये कि हमारा राज्य महनतकशा का राज्य है, उनका नही, जो अपने निजी हितो की पूर्ति के लिये पजीवादी राज्य के नागरिको के श्रम का उपयोग करते ह। पर खैर, चलिये अब चलकर सो जाये। व्लादीमिर अफानास्येविच, जाकर लेट जाइये, क्योकि कल से आपकी ये छुट्टिया हमेशा के लिये खत्म हो रही है।"

वालोद्या अपने कमरे म गया, पलग पर बैठकर उसने जूते उतार दिय। कुल मिलाकर, बोगोस्लाव्स्की न इस वक्त उसकी अच्छी तरह स तबीयत साफ कर दी थी। पर क्या उसके साथ ज्यादती नही हुई थी?

"भला आदमी है!" इसी वक्त टोड-जीन बोगोस्लाव्स्की से कह रहा था। "बिल्कुल निमल, जैसे, क्या कहते हैं उस?"

"जस शीशा?"

"नही, उससे भी बढकर। वह होता न ऐसा "

"बिल्लौर जसा "

'हा, बिल्लौर जैसा। बहुत भारी गुजरी उस पर, ठीक है न साथी बोगोस्लोव्स्की। मुझे पहले ही आ जाना चाहिये था। फौरन "

"अच्छा लडका है," बोगोस्लोव्स्की ने सोचते हुए कहा। "लेकिन फिर भी लडका ही तो है। अभी जिन्दगी की भट्टी म तपा नहा। 'जीवन-सघष' किस कहते हैं, अभी यह नही समझता। आइये, हम उसका अस्पताल देखें।"

मादी-दाजी लम्प लेकर आगे आगे हो लिया और सब के पीछे-पीछे चल दी 'मदाम बाबचिन"।

'लट्ठो के बीच की दरारो को मिट्टी स भर दिया है, समझदारी दिखायी है," बोगोस्लोव्स्की ने कहा। "ऊन भरकर ऊपर स मिट्टी

या लप कर दिया है। दख रहे है न, जरा भी ठण्ड भीतर नहा ग्राती। पलग भी बहुत साच-समझकर कम स कम जगह म बिछाये गय हैं। ग्रोह, बेचारा! पलग के निकट रखी गयी छाटी ग्रलमारिया भी वसी ही है, जसी कि चोर्नी यार म मरे पास है, दराजवाली। बडा हाशियार है, उनकी बनावट याद कर ली ग्रौर इनका खाका भी शायद खुद इसी न बनाया होगा। ग्रौर ग्राइय, ग्रब ग्रापरेशन-कक्ष दख। ग्ररे वाह, जरा गौर ता कीजिय, ग्रौजार उबालन का बतन न हान पर उसने यह कैसी बढिया चीज बना डाली है। दख रहे है न? टीन की ग्राम बालटिया ग्रौर उनके ऊपर दोहरे ढक्कन। बडी समझदारी, बहुत ही समझदारी दिखायी है उसन, भाप के जरिय ग्रौजारा का कीटाणमुक्त करने का उपाय है यह। दखते है न कि भीतरी ढक्कन क सूराख बाहरी ढक्कन के सूराख से भिन्न है। बात पूरी तरह समझ म ग्रा गयी। चूल्हे पर उबालकर ग्रौजारा को छ घण्टा तक ठण्डा हान दो। ग्राप समझ गये न?"

"पूरी तरह से नही!" टोड-जीन ने उत्तर दिया।

"छ घण्टे की ग्रवधि होती है" दाज़ी न बातचीत म हिस्सा लेत हुए कहा। "छ घण्टे की ग्रवधि वह होती है, जिसमे उन जीवाणुग्रो से, जा पहली बार उबाले जान पर नही मरत, फिर से कीटाणु पदा हो जाते हं। मैं ठीक कहता न?"

'यह बालोद्या ने ग्रापको सिखाया है?" बागास्लाव्स्की न कडाई से पूछा।

"हा," दाज़ी सहम गया, हर दिन दो घण्टे तक सिखाते हैं। ग्रौर इसके बाद, वह जल्दी जल्दी कहने लगा, 'इसके बाद पानी की कुल मात्रा का एक तिहाई भाग कार्बोनेट डालकर ग्राध घण्टे तक उबालो। ठीक है न? मगर एक भी रोगी ता नहा ग्राया" उसने मरीसी ग्रावाज मे यह ग्रौर जोड दिया। "ग्राग बताऊ"

"नही, कोई जरूरत नही। शाबाश!' बोगोस्लोव्स्की ने उसकी तारीफ की।

"तो यही मतलब है कि सब कुछ ठीक हो रहा है? टाड-जीन ने जानना चाहा।

"आइये, सोने चलें।" बोगोस्लोव्स्की ने बात खत्म कर दी।

वोलोद्या जब जागा, तो टोड-जीन बाहर जा भी चुका था। बोगोस्लोव्स्की चौडे बरामदे मे छोटी सी मेज पर बैठे चाय पी रहे थे। मादी-दाजी दीवार से पीठ सटाकर खडा था और मुग्ध भाव म बोगास्लाव्स्की को ताक रहा था। वह सभी ऐसे लागा का इसी तरह मुग्ध होकर दखता था, जिन्ह बडे अधिकारी मानता था।

"कल रात बहुत देर तक नीद नही आई न?" बागास्लोव्स्की ने वोलाद्या से पूछा।

"हा, बहुत देर तक।"

"मुझसे नाराज हो गये?"

"नही, लेकिन "

"देखा न, आपने फौरन 'लेकिन' से ही बात शुरू की है। मगर इस चीज के लिये यकीनी तौर पर आपने कुछ भी ता नही किया कि आपके पास ढेरा-ढेर रोगी आये। मेरे सहयोगी यहा सावजनिक कार्यकर्त्ता, सघपकारी और सैनिक बनने की जरूरत है। यहा भगवान का ऐसा चहेता बनकर काम नही चलेगा, जो पवन की किसी ऊची चाटी से नीचे दुनिया का तमाशा दखा करता है। उदाहरण के निय मागूशा म शमानो और लामाओ की हर काशिश के बावजूद इतनी बडी सख्या मे रागी आते है कि उनसे पार पाना मुश्किल है। बादान म हम अस्पताल की दूसरी इमारत बना रहे है। वहा मलिकाव फौरन अपने काम का, जसा कि हम अक्सर कहते हैं 'मानवीय 'मानवतापूण' ही नही, बल्कि अत्यधिक राजनीतिक महत्त्व भी समझ गया। व्लादीमिर अफानास्येविच, यहा हम सिफ नेकी का काम ही नही करना है, लागा को डाक्टर पर विश्वास करने के लिय भी विवश करना है, और यह बहुत बडा, बहुत महान काय है ,

बागास्लोव्स्की खामाश हो गये, उन्हाने चाय का घूट पिया और सिगरेट जलाकर उसका कश खीचा।

'अपने समय म खुद को डाक्टर कहनेवाले अन्तराष्ट्रीय नीचा ने इस दश म काफी कबाडा किया है। आपका यह मालूम है या नही?"

"थोडा-सा।"

"सभी तरह के छोटे-वडे व्यापारिया, दलालो और वदमाशा, इन लुटेरा उठाईगीरो ने अपनी तेज़ नाका से यह गध पा ली कि यहा के हिरन आर पशु पालक, मछुए और हलवाहे तथा दूसरे महनतकश चेचक विरोधी टीका के कारगर होने मे विश्वास करत हैं। हो सकता हं कि कभी महामारी ने लोगा का वरी तरह मफाया किया हो या किसा दूसरे कारणवश जिसे अव निश्चित रूप से जानना सम्भव नही, उन्हे इन टीको मे यकीन हो गया था। तो इन अन्तर्राष्ट्रीय वदमाशा ने इसी का फायदा उठाया। वे चेचक विरोधी वेक्सीन यहा ल आय और हर टीके के लिये 'उचित मूल्य' यानी सिफ एक भेड लेने लगे। टीके लगाते ये भाडे के टटटू या छोकरे और इस वात की काई भी चिन्ता नही करता था कि वेक्सीन ताजी है या नही। यूरोप के वडे शहरा से यहा तक पहुचते हुए वह कैसी हो जाती है, इसकी तो आप खद ही कल्पना कर सकते है। जाहिर है कि इतनी वडी माग हाने पर उनकी यह वेकार वेक्सीन भी नाकाफी रही। इसलिये वे ग्लिसरीन मिलाकर या सिफ ग्लिसरीन के ही टीके लगाने लगे। ग्लिसरीन की एक-दो वोतला आर दिन भर के काम के लिय किसी मिस्टर, मिस्स या एस ही किसी वदमाश के पास भेडा का रेवड, काई तीन सौ भड जमा हा जाती। और सवसे दिलचस्प वात तो यह है कि जिस पिचकारी स टीके लगाये जात थे, उस कभी भी, हा, कभी भी कीटाणुमुक्त नहीं किया जाता था। नतीजा यह हुआ कि चेचक के इन कपटपूण टीका की वदालत इतन वडे पमान पर आतशक (सिफिलिस) का राग फला दिया गया है कि उसके वीमारा की गिनती मुमकिन नही।"

"क्या यह सच है?' दुख से माथे पर वल डालत हुए वालाद्या न पूछा।

"यही ता मुसावत है कि यह सच है। वात यह है कि उस उपनिवशवादी पशु के लिय ता उसका भगवान, वह भगवान क्थोलिक हा, प्राटेस्टेट हो या वुद्ध—वही सव कुछ है और उस भगवान का असली रूप है—नक्द नारायण। उस उपनिवशवादी क लिय यहा का निवासी काफिर, जगली और आदिम है, और उसका इसालिय जम हुआ है कि उपनिवशवादी की तिजारिया भरे। वगर यह वडा अजीब सा वात है, मगर, व्लादामिर अफानास्यविच, हम आप अव जहा

तहा घूमनवाले 'नकद नारायण' के उन सूरमाग्रा के पापा का प्रायश्चित कर रह है। हम यहा के निवासिया का अपने को ऐसे लागो के रूप म देखन के लिये विवश करना ह, जैसे कि वास्तव म हम है। स्पष्ट है कि हमारा आपका कायभार कठिन किंतु सम्मानपूण ह। सावियत व्यक्ति का मतलव है ईमानदार, सोवियत व्यक्ति का मतलव है उदार, चिन्तापूण, न्यायपूण और निस्स्वाथ। हमारे श्रम के माध्यम से यह सब कुछ यहा क लोगा के लिये पर्यायवाची वनना चाहिये। समझे मेरी बात व्लादीमिर अफानास्येविच ?"

वोलोद्या ने बोगोस्लोव्स्की को कभी इतने उत्तेजित और ऐसे अदभुत तथा वाछित क्रोध स झल्लाये हुए नही देखा था। वोलोद्या चोर्नी यार क दिना की तरह एक वार फिर वोगोस्लोव्स्की के प्रति, उनक आन्तरिक, आत्मिक, नैतिक सार-तत्त्व और इस चीज के प्रति ईर्ष्यालु हो उठा कि वे कितना विस्तृत और साथ ही अचूक चिंतन कर सकते है, कस वे अपने ध्येय के नाम पर, ध्येय के लिये, ध्येय को ही सब कुछ मानते हुए जीते है और सो भी रत्ती भर यह महसूस न करते हुए कि वलि का वकरा बने हुए है। इसके विपरीत व वहुत खुशी से, हसते-हसते अपन को पूरी तरह अपन काय को ही समर्पित किये हुए है। इतन श्रेष्ठ सजन होते हुए भी लगभग कोई आपरेशन नही करत। भला क्या? इसलिये कि कही अधिक महत्त्वपूण, वहुत ही जरूरी काम म व्यस्त है। इस काम की आवश्यकता, समाज के लिये इसका महत्त्व ही व पुरस्कार है, जो कुछ समय के लिये उनकी प्यारी सजरी स नाता टूटने की क्षतिपूर्ति करते है।

इन दोना ने अभी अपनी चाय खत्म नही की थी कि टोड जीन लौट आया। उसके चेहरे पर खुशी और आखो म चालाकी सी झलक रही थी। अपना फर कोट उतारकर, जिस पर पाला जम गया था, वह इस तरह खिडकी के सामने बैठ गया कि सूरज की किरण सीधी उसके चेहरे पर पड रही थी। चाय का प्याला हाथ म लिये हुए वह सोच म डूब गया।

"अव समझा।" वोलोद्या को अचानक इस चेतना से आश्चर्य हुआ। "टोड-जीन की आखें तो उकावी ह, वह तो सूरज स नजर मिलाता है।"

"तो क्या समाचार है?" वागास्लोव्स्की ने पूछा।

"अभी चलते हं, अभी!" टोड जीन ने जवाव दिया। "मादी दाजी भी हमारे साथ चले।" वह व्यग्यपूवक मुस्कराया। "वहुतो को इस बात की आशका है कि यहा उन्ह उनकी 'आयु से वचित' कर दिया जायगा। ये लोग मात को यही कहते है। लामा लोग और शमान भी उनके कानो मे यही खुसुर फुसुर करते है, मगर हम यह सिद्ध करना है कि यहा न केवल उन्ह आयु से वचित नही किया जायेगा, वल्कि यह कि उन्ह स्वस्थ बनाया जायेगा। ठीक है न? और हमारे य साथी," उसने वोलोद्या की ओर देखा, "अपना काम शुरू करे "

सफेद ठण्डे और चमकते सूरज की तरफ देखते हुए टोड जीन फिर से सोच म डूब गया। इस सुवह को वोलोद्या ने न तो लकडिया चीरी, न कसरत की, न किताव पढी और न किसी रोगी के आने की राह देखते हुए अपने रोगी-कक्ष मे ही बठ रहा। इस ठण्डी सुवह को जब जार की हवा चल रही थी, वह विन बुलाये ही खारा की ओर चल दिया ताकि रोगियो को इलाज करवाने के लिये मजबूर कर सके। कचर कचर करती वफ पर उसके साथ थे—वागोस्लोव्स्की, टाड जीन और टाड जीन के तीन अन्य स्थानीय परिचित। ठडी, तन को चीरती हुई हवा वालोद्या के मुह पर थपेडे मार रही थी, उन खेमा मे शोर मचा रही थी जिनम वे गये और धीरे धीर सुलगते हुए अलावो का कडुवा तथा कालिख पोतनेवाला धआ उनके धसे हुए कच्चे फर्शा पर फला रही थी। झोपडो और वफ के ढेरो मे दवे से छप्परा के नजदीक वाडा मे वकरे वकरिया और भेडे ठड से मिमिया रही थी। वालाद्या के दुश्मन—लामा ओर शमान—वफ के तूफान की ओट म कुछ दूरी पर, टोड-जीन की नजरा स वचे वठे थे। भूखे और गुस्सल कुत्ते चीख रह थे। झुटपुटा हो रहा था, जब मार्केलाव की भेडिय जसी आखें किसी जगह उनके सामने चमक उठी। वह वडा-सा फर काट पहन और सोटा टेकता हुआ चला जा रहा था। उसने डाक्टरा और टाड-जीन का ढग से अभिवादन किया और ठण्ड लगन क कारण भारी हुई अपनी आवाज म चिल्लाकर पूछा—मरे यहा क्या नहा पधारत, कुछ सवा करन का मौका क्या नही दत? टाड-जीन यहा की प्रथा क अनुसार कुछ शिष्ट वातचीत करन के लिय रुक गया।

"आपके मवेशी कैसे है?" टोड जीन ने पूछा। यहा इसी तरह से बातचीत शुरू की जाती थी।

"मेरे मवशी मज़े मे है," मार्केलोव न जवाब दिया। "और आपके मवेशी भी ठीक ठाक है न?"

"मेरे मवशी भी ठीक ठाक है बस, ऐस ही," टोड जीन न कहा। "आप और आपका परिवार तो स्वस्थ है न?"

जब हालचाल पूछन की यह रस्म खत्म हो गयी, तो टोड जीन न अपनी उकाबी आखा स मार्केलोव की भेडिये जैसी मनहूस आखा म झाकते हुए बहुत साफ-साफ कहा—

"अस्पताल बनाय जानवाल व्यापार केन्द्र की इमारत आपको नही मिलेगी। क्षमा कीजिये, वह आपकी नही है, माफी चाहता हू, मगर आप चोर ह। हा, हा, आप उस चुराना चाहते थे। क्या यह ठीक नही है, हा, आपके पास उसकी रजिस्टरी ता है नही   "

"हम टैक्स दते हैं, सभ्यता लात हैं," मार्केलाव ने चिल्लाना शरू किया, मगर टोड-जीन न उसे टाकते हुए कहा—

"बस, सब कुछ ऐसे ही होगा और आपका यह लिखित रूप म मिल जायेगा। अब मैं आपके ढार डगरा के लिय अच्छे जाडे और अच्छे चारे की कामना करता हू '

'और आपके भी," पीठ फेरते हुए मार्केलोव न कहा।

वालोद्या अपन को वश मे न रख सका और खी-खी कर उठा। टाड-जीन न उसकी ओर कडी नज़र से दखा।

स्थानीय ढग स अभिवादन करके और सिर झुकाकर वे एक खेमे म दाखिल हुए। यहा धुआ आखा को बुरी तरह जला रहा था। यहा भी मवेशिया के स्वास्थ्य की चर्चा हुई और फिर घरवाला के स्वास्थ्य की। वसे तो यह पूछना बेमानी था, क्याकि घर का मालिक नज़दीक ही खडा था और टाच की तज़ राशनी म इस नाटे, चौडे चकल कधावाले और सम्भवत बहुत ही ताकतवर आदमी के निचले हाठ ओर ठोडी पर आतशक का भयानक घाव साफ फना हुआ दिखाई दे रहा था।

'अलगिक आतशक है न?" टोड जीन ने पूछा।

"ऐसा ही लगता है।" बोगास्लाव्स्की न जवाब दिया।

टाड-जीन न खेमे के मालिक से अपनी भाषा म बात करना शुरू किया। उसकी बीवी नमदे से ढके फश पर धीरे धीरे धमकने, हाथ मलने और रोने लगी। टाड जीन न इस विलाप की ज़रा भी परवाह नही की। घर का मालिक बहुत ध्यान से टोट जीन की तरफ देख रहा था उसकी बीवी रेंगकर वोलोद्या के पास पहुच गयी, वोलोद्या का हाथ अपने चेहरे स लगाकर वह और भी ज़ोर से रो पडी। टोट-जीन रुके बिना अपनी बात कहता जा रहा था और जब-तब सिर से वोलोद्या तथा वोगोस्लाव्स्की की तरफ इशारा कर देता था।

"साथी कालज़ाल और उसकी बीवी अस्पताल म जायगे," टाड जीन न वोलोद्या से कहा। "तुम इन्ह निरोग कर दोगे न?"

वोलोद्या ने सिर झुकाकर हामी भरी। आतशक के इस रूप से वह परिचित था।

"कब तक?"

"जल्दी ही।'

'जल्दी ही कब तक?'

"अधिक से अधिक दो महीना मे।"

"घाव तो नही रहगे न?

नही रहगे। मगर बाद मे काफी अर्से तक इन्ह इलाज करवाना होगा।"

'अगर घाव नही रहगे तो वह तुम्हारा सबस बढिया विज्ञापन बन जायगा, साथी सच।"

टाड जीन ने फिर घर के मालिक से बातचीत आरम्भ की। उसकी बीवी अब रो नही रही थी, सुन रही थी। दाज़ो धीरे धीरे अनुवाद करके वोलोद्या का बता रहा था कि उसके मवेशियो की देखभाल कसे होगी, अब इस प्रश्न पर विचार हो रहा है। टाड जीन न वादा किया कि वह पडोसियो से ऐसा करने को कह देगा।

इसके बाद वे जिस खेमे मे गये उसका मालिक भादी दाज़ो का जानता था। धसी आखो और पीडा सहने के कारण पीले पडे चेहरेवाले इस प्रौढ का नाम साइन-बेलेक था। वह बहुत अर्से से हिलन डुलने म असमथ था और यहा के सबस महगे चिकित्सक लामा उया का इलाज करवाते हुए माली तौर पर भी बिल्कुल बरबाद हो गया था। शमाना

न भी उसका इलाज किया था, मगर चोरी छिपे ताकि गुस्सल लामा को पता न चले। साइन-बेलक के कथनानुसार उसका बहुत अच्छा इलाज हुआ था और लामा ज्या न तो खास तौर पर उसकी बहुत अच्छी चिकित्सा की थी। साइन-बेलक हर दिन भालू का पवित्रीकृत पित्तरस पीता था और चीटियां सहित उबले पानी म पट्टी भिगोकर ददवाली जगह पर रखता था। अगर बहुत ही बुद्धिमान ज्या की चिकित्सा-कला उपलब्ध न हाती, तो वह कभी का अपनी "आयु से वचित" हो गया होता।

टाड-जीन ने अपनी तेज़ टाच जलायी बागोस्लोव्स्का रोगी की बगल म बठ गय और उनके दक्ष हाथो न फौरन वह जान लिया, जिसे लामा न "शतान का काम और "क्रोधपूर्ण फेन का एकत्रित होना कहा था।

"वक्षण का हानिया है," बागास्लाव्स्की न अपने देहाती और काम-काजी ढग म कहा। "आपरेशन करना हागा।"

"यह मर ता नही जायगा?' टाड-जीन न पूछा।

"उम्मीद करता हू कि नही।'

साइन-बेलक का उसके घरवाला के विलाप रोदन क बीच स्ट्रेचर पर अस्पताल ल जाया गया। दाज़ी गुसल तैयार करन और साथ ही "मदाम वाबचिन" को, जो यह दखकर डर सकती थी कि अस्पताल अब अस्पताल बन रहा था, पहल से ही होशियार कर दन के लिय आगे आगे भाग गया। वैसे तो खुद दाज़ी भी इस नय घटनाक्रम से कुछ भयभीत हो उठा था। अगीठियां गर्माना ता रोगियो का इलाज करन जसी चीज़ नही थी और अब ता "आपरेशन" शब्द भी सुनन का मिला था।

टाड-जीन जब किसी भी आदमी को साथी डाक्टर के पास जान का आदश देता था, तो उसकी दृष्टि एकदम अभेद्य हाती थी। लकिन लाग उसकी बात मानत थे। वह कोई भी तक वितर्क, किसी तरह का हीला हवाला नही सुनता था, आखो म आखें डालकर और कडाई स बात करता था।

एक और खेमे म इन्ह काफी डरा-सहमा बूढा मिल गया। उस जरा भी सुनाई नही देता था। बोगास्लाव्स्की जानकारी के विश्वास क साथ मुस्कराय और बोले कि एक दो दिन म दादा अवाताइ का

बहरापन दूर कर देंगे। वोलोद्या मामले को फौरन समझ गया, मगर खामोश रहा। उसे मज़ा आ रहा था, सचमुच बस ही मज़ा आ रहा था, जसे बचपन में। यह सच है कि इन लोगों ने–वागोरलाव्स्की, वोलोद्या और टोड-जोन ने भी आज जो कुछ किया था, वह बहुत गम्भीर और ठोस तो नहीं था, मगर नींव, बहुत बढ़िया नींव पड़ गयी थी और सफलता का भरोसा किया जा सकता था। दादा अबाताई ने अपना फरकोट पहना और खुद ही अस्पताल चल दिया। टोड जोन ने मुस्कराते हुए कहा कि अबाताई को वह उस सबसे घटिया शमान से भी इलाज नहीं करवाने देती और आप लोग यह विश्वास दिला रहे हैं कि एक दो दिन बाद यह ठीक ठाक हो जायगा।

तो ऐसे काम करना चाहिये!

उस शाम को वोलोद्या ने अपने अस्पताल के रोगियों को देखने के लिये पहली बार चक्कर लगाया। गुसल के बाद रोगी बिस्तरों में लेटे हुए थे नाराज़ से और डरे सहमे हुए। "मदाम बाबचिन" ने सभी के करीब मीठे सादित दूध से भरी रकाबियां रख दी थीं, मगर किसी ने उन्हें छुआ भी नहीं था। पता चला कि मक्कार लामा ऊंया अस्पताल जाते हुए दादा अबाताई से रास्ते में ही जा मिला और चिल्लाकर उसके कान में कहा कि उसे पक्की तरह मालूम है कि अस्पताल में आज उन सभी को घातक "मगनू" ज़हर खिलाकर मार डाला जायेगा।

"मगर क्यों?" दादा अबाताई ने हैरान होकर पूछा।

"क्योंकि उन्हें इन्सान के ताजा मांस की ज़रूरत है।" आंख झपकाये बिना ही लामा ने चिल्लाकर जवाब दिया। 'वे अपने घावों पर इन्सान का अच्छा मांस रखकर उन्हें ठीक करते हैं। इसके अलावा वे इन्सान के मांस को सुखाते भी हैं।"

दादा अबाताई तो अपने खेमे को वापस भी चल दिया, मगर बदकिस्मती कहिये कि टोड जोन और डाक्टरों के सामने पड़ गया। ज़ाहिर है कि प्यार-मुहब्बत के नाते बूढ़े ने लामा से सुनी हुई 'बुद्धिमानी की बात" सभी रोगियों को बता दी थी और अब उन सभी का बुरा हाल था।

किन्तु, दूसरी तरफ़, रात के खान के वाद सभी रागिया का एक चमत्कार देखने का मिला। बूढी, नक ग्रौर मोटी ग्रापाई को खारा म कान नही जानता था ! ग्रौर भला यह भी किसका मालूम नही था कि वह ग्रपनी "ग्रायु से वचित' हान ही वाली थी, क्याकि ढग स सास नही ले पाती थी। उसका चेहरा नीला पड जाता था, वह उगलियो स जमीन नोचती थी ग्रौर उसकी ग्राखे वाहर निकली पडती था। लामा ऊम्या भी उससे कन्नी काटता था क्याकि उसन बुढिया क चार घोडे ल लिय थे ग्रौर उस जरा भी स्वस्थ नही कर पाया था। मगर ग्रव उसकी फौरन मदद की गयी थी। सूई लगाते ही वह भली चगी हा गयी थी। वरामदे म वह बिल्कुल ग्रपनी "ग्रायु स वचित' हो रही थी कि उसी वक्त जवान डाक्टर शीशे की एक नली सी लिय, जिसके ग्रागे सूई लगी हुई थी, उसके पास ग्राया ग्रौर भली ग्रापाई को इजेक्शन लगाया। न जान उस पर क्या बीतनवाली है, यह सोचकर बुढिया चीखी-चिल्लायी तो, मगर उसके बाद मुस्करान लगी। उसकी मुस्कान वढती, ग्रधिकाधिक फैलती ही चली गयी ग्रौर ग्राखिर जी भरकर मुस्कराने तथा ग्रच्छी तरह सास लेने के बाद वह भाषण-सा देने लगी। न तो वोगास्लोव्स्की ग्रौर न वालोद्या के पल्ले ही कुछ पडा कि बूढी ग्रोपाई क्या कह रही है। मगर एक बात पूरी तरह साफ थी कि ग्रव यहा इस ग्रस्पताल म एक नया, बिल्कुल दूसरा जीवन शुरू हा जायेगा।

"फिर भी यह कुछ हद तक तो जादूगरी-सी लगती है," वोलोद्या ने वोगोस्लोव्स्की से कहा। "उसे श्वासनली का दमा है, उस ऐड्रेनलिन की सूई लगा दी, मगर यह ता "

"चुप रहिय," वोगास्लोव्स्की वाले।

कुछ वहुत ही दिलचस्प सी बात हो रही थी। लगातार कुछ वोलन क बाद बुढिया उठी ग्रौर उसने दादा ग्रवाताई की गाढे दूध से भरी हुई रकाबी उठा ली। उसका चेहरा ग्रव गुस्से स तमतमा रहा था। पुरुष रागिया के कमरे म सभी भयभीत से उसकी ग्रोर देख रहे थे। कुछ क्षण बाद बुढिया ग्रोपाई दूध की रकावी चाट गयी ग्रौर विजयी की भाति ग्रपनी ग्राखा का चमकाती हुई ग्रस्पताल से चली गयी। "मदाम वावचिन" दादा ग्रवाताई के लिय साद्रित दूध से किनारे तक भरी दूसरी रकाबी ले ग्राई, क्याकि वह तो उस वक्त बिल्कुल रुग्रासा

ही हो गया था, जब टोड-जीन ने उस जहर और इसानी मासवाली अफवाह फलाने के लिये लज्जित किया था।

"कल हम कई छोटे छोटे चमत्कार करेगे," वागास्लोव्स्की ने इतमीनान से मुस्कराते हुए कहा। "और उसके कुछ समय बाद, प्यारे व्लादीमिर अफानास्यविच, आपका विना चमत्कारा के काम करना होगा। मगर आपके पास काम की कमी नही होगी, इस बात का आपको पक्का यकीन दिलाता हू "

टोड जीन पाले से जमी और अधेरी खिडकी के पास बरामदे म खडा सिगरेट पी रहा था। वह अचानक बोगोस्लोव्स्की की ओर घूमा और कठोर तथा तनावपूण कण्ठय प्रधान स्वर मे बोला–

"मैं तुम्हे धन्यवाद देना चाहता हू, साथी, हा, उस खुशी के लिये धयवाद देता हू, जा तुमने दी है और इसके लिय कि तुम भी खुश हो। यह मै नही, हमारी जनता तुम्ह धन्यवाद दे रही है, बशक अभी वह यह सब नही समझती, मगर समझ जायेगी। और तुम्ह भी धन्यवाद देता हू, साथी," उसने वोलोद्या को सबोधित करते हुए कहा। वालाद्या ने हैरानी तथा खुशी और प्यार से उमडते हुए हृदय से देखा कि उकाब की आखा म आसू छलछला आये है। "और तुम्ह इसलिय धन्यवाद देता हू कि तुम सब कुछ समझते हो और अभी बहुत कुछ करागे, तुम "

टोड जीन अपनी बात पूरी न कर पाया, मुडा और बरामदे के ऐन सिरे पर जा खडा हुआ। वोलोद्या और वोगोस्लोव्स्की देर तक मौन साधे बठे रह।

"खैर, सब ठीक है," बागोस्लोव्स्की ने आखिर कहा। "बाकी सब कल सुबह देखेगे। अपने इस साचो पानसा* से कह देना कि कल सुबह के लिय औजारा को कीटाणुमुक्त कर ले। सुबह जल्दी ही आपरेशन शुरू कर देगे।'

'सबसे पहल कौन होगा?"

---

*महान स्पेनी लेखक मि० सेर्वान्टेस के प्रसिद्ध उपयास के मुख्य नयाक डान क्विक्जोट का वफादार नौकर और यहा मजाक म मादी दाजी स अभिप्राय है।

"मेर ख्याल म हानिया को ही सबसे पहले निपटा लिया जाये।"

"लेकिन अगर ऑपरेशन शुरू करने के पहले मै दादा अवाताई के कान साफ कर डालू, तो कसा रहेगा, निकोलाई येग्योयविच? वह फौरन ही बेहतर सुनने लगेगा और इसस दूसर रोगियो की कुछ और हिम्मत बढ जायगी।"

वोगोस्लाव्स्की तनिक मुस्कराय।

"ठीक है, ऐसा ही कीजिये।"

सुबह के सात बजे वोलोद्या ने दादा अवाताई को रोगी-कक्ष म बुलवा भेजा। वोगोस्लोव्स्की अभी सो रहे थे। रात भर औज़ारो का कीटाणुमुक्त करन के काम म लगे रहन के कारण धूमिल सा चेहरा लिये दाजी अब सफेद लबादा और टोपी पहने बडी शान से खडा था और डाक्टर जसा-ही लग रहा था। छोटी-सी मज़ पर स्पिरिट के छोटे छोटे लैम्पो के नीले शोले जल रह थे। बूढे अवाताई की शुरू म तो वोलोद्या की ओर देखन की भी हिम्मत नही हुई—ऐसा ठाठ-बाठ था इस रूसी का। सफेद लबादा, सफेद टोपी और माथे पर गोल, चमकदार और बहुत ही सुदर दपण, जो शायद बूढे आबाताई के सम्मान म ही सिर पर बधा हुआ था। काश कि उसकी बहू इस वक्त उसे दखती! तब तो ज़रूर हो वह बूढे की इज़्ज़त करने लगती।

"आपके मवेशियो का क्या हालचाल है?" अबाताई ने बडी शिष्टता स बातचीत शुरू की।

दाज़ी ने अनुवाद करते हुए उसे बताया कि रूसी डाक्टर के मवेशी बहुत मज़े म है। दादा अवाताई के मवेशियो का क्या हालचाल है?

अवाताई अब उलझन मे पड गया। यह जवाब देना खतरनाक था कि उसके मवेशी भी ठीक ठाक है, क्योकि रूसी डाक्टर भी कही चालाकी न कर रहा हो और शमान या लामा की तरह इलाज के लिये कुछ माग न ले। मगर दने के लिये उसके पास था ही क्या? खुलकर ऊची आवाज़ म यह कहना कि उसके पास कोई मवेशी नही है, बूढा अपने लिये अपमानजनक समझता था। इसलिये वह शिष्टता से तनिक खास भर दिया। मैं तो फसने से रहा! कोई भी तो अब इस बात की पुष्टि नही कर सकता कि दादा अवाताई के पास मवेशी है।

"तो अब शुरू करते हैं!" वालोद्या ने कहा।

दादा स्टूल पर बैठ गया और उसकी गर्दन के गिर्द तौलिया बांध दिया गया। महान रूसी डाक्टर ने चिमटी लेकर बड़ी फुर्ती से चमकते हुए पतीले में से चमत्कारी नली निकाली। कुछ ही क्षण बाद दादा अवाताई को अपने कान में कुछ गुनगुनी और ऐसी प्यारी, इतनी प्यारी अनुभूति हुई कि उसने तो आंखें भी मूंद लीं। इसके बाद दूसरे कान में भी कोई हल्की, गर्म-सी चीज पहुंची। स्पिरिट के लैम्प जलते जा रहे थे और वे तो मानो बलि-वेदी की अग्नि जैसे थे, हां, पर उससे कहीं अधिक सुंदर। इतना ही नहीं, प्रमुखतम सोवियत शमान अपने दर्पण को भी चमकाता जा रहा था और इस तरह शायद वह भूतों प्रेतों "अजा" और "काई विन-कू" को दादा से दूर भगा रहा था।

दादा अवाताई को सिर्फ एक ही बात का दुख हो रहा था कि रूसी डाक्टर उस पर बस जादू-टोना कर रहा था, यह देखनेवाला कोई नहीं था। कोई लामा, कोई भी शमान ऐसे नहीं कर सकता! अगर हमी थोड़ा-सा उछले कूदे और खजड़ी भी बजाये, तब तो शायद दूसरे रोगी भी जागकर यहां आ जायें।

"खजड़ी बजाने का क्या हुआ?" दादा ने दाजी से पूछा।

"चुप रहो, दादा, चुप रहो," दाजी ने कड़ाई से जवाब दिया।

"ज्यादा नहीं, तो थोड़ी सी ही बजा दो," दादा ने रुआसी आवाज में अनुरोध किया। "बिल्कुल थोड़ी-सी। मैं गिलहरी मारकर ला दूंगा।"

"डाक्टर के काम में खलल नहीं डालो, दादा।"

"सेबल ला दूंगा।"

"कह तो दिया, बोलो नहीं।"

दादा ने अचानक यह महसूस किया कि वह पहले से कहीं बेहतर सुनने लगा है। दाजी चिल्ला तो नहीं रहा था, बोल ही तो रहा था, धीरे धीरे बोल रहा था और दादा को उसके सभी शब्द सुनाई दे रहे थे।

"अरे," दादा ने बहुत खुश होते हुए कहा। "मुझे सुनाई देने लगा है! अरे!"

वोलोद्या ने बड़े ढंग और सावधानी से दूसरे कान में कुछ किया। जब उसने रूई निकाली, तो दादा और भी अधिक अच्छी तरह सुनने लगा।

मादी दाज़ी ने वडी शान दिखाते हुए वताया –

"साथी रूसी डाक्टर और मैं कल जब तुम्हारा कुछ और इलाज कर देंगे, ता तुम इतनी अच्छी तरह सुनने लगोगे, जसे कोई स्वस्थ वालक। दादा, अब जाकर आराम करा!"

वालाद्या न अपने सिर से वह शानदार दपण उतार दिया और अब ता दादा पूरी तरह घमड म आ गया – इसका मतलव यह है कि दपण सचमुच उसके लिय ही पहना गया था। दाज़ी ने स्पिरिट के लैम्प वझा दिये। इसका मतलव यह है कि लैम्प भी उसके लिये ही जल रहे थे। यह तो कमाल हो गया! नही, नही, निश्चय ही ऐसा वढिया इलाज मुफ्त नही हो सकता। इसलिये दादा न चेतावनी देत हुए कहा –

"देखो न, मैं तो गरीब आदमी हू!"

"हम इससे कोई मतलव नही है!" अकड मे आये हुए दाजी ने कहा।

"म तो किसी तरह भी इसका एहसान नही चुका सकूगा!"

"तुम डाक्टर का सिर नवा सकते हो, तुमसे और अधिक कुछ भी नही चाहिये।"

अवाताई ने काखत हुए सिर झुकाया। इसके बाद ता उसन ऐसे सिर झुकाना शुरू किया कि उसके सामने सब कुछ घूम गया – सिर झुकाना ही है, तो खूव झुकाया जाय, उसका क्या जाता है इसम। वह तव तक ऐसे ही करता गया, जब तक कि वोलोद्या न उसके कधे पकडकर बिगडते हुए यह नही कहा कि वह यह वर्दाशत नही करेगा। वालाद्या के गुस्से स लाल और झुझलाये हुए चेहरे की तरफ देखकर वूढे न गहरी सास ली। फिर भी शायद वह घाडा, हिरन के वच्च या भेड मागेगा। शायद अभी उस धक्के देकर अस्पताल से निकाल दिया जायेगा। लकिन दादा को किसी ने कही नही निकाला। इसके विपरीत वह वढिया दलिय, किसी मीठी और चिपचिपी चीजवाली राटियो और दूध के साथ चाय का नाश्ता करने लगा। अव तक जाग चुके दूसरे रागिया ने जान-वूझकर धीमी आवाज़ मे सवाल करने शुरू किये और दादा वडी अकड से उनका रुक रुकक र जवाव देता। अच्छा है उनके दिल मे धुकधुकी बनी रहे, एक वार ही सव कुछ नही, थाडा थाडा वतायेगा

नौ बजते ही बोगोस्लोव्स्की अपने हाथ धोने लगे। अब बोगोस्लाव्स्की, वालोद्या और दाज़ी मोमजामे के लम्बे कोट पहन थे, जिनकी बनावट वोलोद्या ने साची थी और जिन्हें "मदाम बावचिन" न सिया था। इन कोटो के ऊपर नम चागे थे। वोलोद्या की कीटाणुमुक्त करने की विधि से चागे और आपरेशन की बाकी सभी चीजें भी नम ही रही थी।

"आपरशन आप करगे," वोगोस्लाव्स्की ने कहा। "मै सहायक और आपरेशन नस का काम करूगा।"

साइन बेलेक खरगोश की तरह डरा-सहमा और अपनी नाक फडफडाता हुआ आपरेशन की मेज पर लेटा था। उसन बडबडाते और शिकायत करते हुए मादी दाज़ी से कहा—

"डाक्टर ने अपने सिर पर गोल दपण क्या नही लगाया? मर लिये हरे लैम्प क्या नही जलाये गय? क्या मैं दादा अबाताई स बुरा हू? दादा अबाताई तो बिल्कुल कगाल ह, बस भिखारी जैमा। लेकिन मै अगर चाहू, तो इन डाक्टरो का भेडें भेट कर सकता हू। कह दा इन डाक्टरो से कि अपने सिरो पर दपण लगा ले!"

हानिया द्विपक्षी, बहुत बडा और ऐसा था कि उसे फिर से उसकी जगह पर लाना सम्भव नही था। वालोद्या खडा हुआ सोच रहा था। बोगास्लोव्स्को ने हानिया के आस पास की जगह को सुन करनवाली दवा की सूई लगा दी।

'किस नतीजे पर पहुचे है?" वोगोस्लोव्स्की ने पूछा।

"स्पासोकुकोत्स्की का तरीका अपनाना होगा।"

"सो ता ज़ाहिर ही है," बोगोस्लोव्स्की मुस्कराये। "अल्लाह ता अल्लाह ही है आर मुहम्मद उसका पैगम्बर है।'

"तो इसमे क्या बुराई है?" वोलाद्या न चुनौती के अन्दाज म जवाब दिया। "मरे लिय ता स्पासोकुकात्स्की एक अग्रवपक, सजन और व्यावहारिक डाक्टर के रूप म भी एक वास्तविक चमत्कार ही है।"

वोलाद्या न बोगास्लाव्स्की के हाथ स नश्तर लकर वक्षण क कुछ ऊपर चीर दिया। पट की बाहरी, तिरछी मास पशीवधनी दिखाई दी। मादी दाज़ी न खून देखकर धीरे-स "आह" कहा और दरवाजे की तरफ जान लगा।

"अपनी जगह पर लौट आओ," बोगोस्लाव्स्की ने उसे आदेश दिया। "सुना, तुमने?"

वोलोद्या ने त्वचा के नीचे का ऊतक और संयोगतन्तुओं का पतला ऊपरी आवरण काटा। बोगोस्लाव्स्की निर्देशन किये बिना चुपचाप सहायता कर रहे थे, बहुत गौर से देखते जा रहे थे। रक्त को वे जल्दी जल्दी और असाधारण फुर्ती से साफ कर देते थे। साइन-क्वेलक कभी-कभी कराहता, कभी-कभी टिप्पणी करने लगता, मगर अगले क्षण ही यह भूल जाता कि वह किस विषय की चर्चा कर रहा था।

"पाठ्यपुस्तक का यह वाक्य मुझे अभी तक याद है,' बोगोस्लाव्स्की ने कहा। "पशीवधनी के केन्द्रीय चीर पर सिरे को ऐसे रखो मानो वह कोट का पल्ला हो और उस पर सीते चले जाओ।"

"और उस पर सीते चले जाओ," वोलोद्या ने सावधानी से डोरी खींचते हुए दोहराया। वह महसूस कर रहा था कि उसने अच्छा आपरेशन किया है और इसलिये उसे हर्षपूर्ण उत्तेजना की अनुभूति हो रही थी।

किन्तु इसीलिये यह जरूरी था कि वह अपने को सीमा में रखे", जैसा कि वार्या कहा करती थी। बोगोस्लाव्स्की जैसे सर्जन के सामने अपने को इस फन का उस्ताद महसूस करना तो हास्यास्पद होता।

"अच्छा काम करते हैं!" बोगोस्लाव्स्की ने वोलोद्या की तारीफ कर ही दी।

'आपकी उपस्थिति में तो डर नहीं लगता!" वोलोद्या ने ईमानदारी से उस समय जवाब दिया, जब वे दोनों अगले आपरेशन से पहले अपने हाथ धो रहे थे।

'डर, बडर ' बोगोस्लाव्स्की बड़बड़ाये।

अगला आपरेशन कूक-वोल्टा नाम की औरत का करना था, जो अभी अधेड़ उम्र की थी। वह बहुत अर्से से चल फिर नहीं सकती थी और उसका पेट बेहद फूल गया था। लामा ऊया ने फतवा दे दिया था कि वह जल्द ही अपनी "आयु से वंचित" हो जायेगी। बोगोस्लाव्स्की का ख्याल था कि उसके पेट में बहुत बड़ा जलोदर है। वोलोद्या ने अस्थि-संगम तक पेट को काटा और विशेष औजार लेकर जलोदर के सामनेवाले भाग में छेद कर दिया। इनेमल की बालटी फौरन उसके नीचे

रख दी गयी और कई लीटर तरल पदार्थ पेट म से बहकर बालटी म गिरने लगा। पहले से ही सभी तरह की सावधानी बरतने के बावजूद भी कूक-वास्टा शाक के कारण मरते मरते बची। जब तक बागोस्लाव्स्की वह सब कुछ करते रहे, जो ऐसी स्थिति मे किया जाना चाहिये, दुष्ट मादी दाज़ी चुपके से बाहर खिसक गया और उसने सब से यह कह दिया कि कूक-वास्टा "आयु से वचित" हो गयी।

इसी बीच बोलोद्या ने पेट के चीर मे से जलोदर को बाहर निकाल कर काट डाला। बागोस्लाव्स्की ने उसे सूई दी और बालोद्या ने तन्तु स घाव को सी दिया। कूक वोस्टा अब समगति से, लम्बी और शान्तिपूर्ण सास लेने लगी थी।

"शाबाश!" बोगोस्लोव्स्की ने कहा।

"आपका चेला हू!" बोलोद्या ने जवाब दिया।

दोनो मिलकर कूक-वोस्टा को कमरे मे लाये और बिस्तर पर लिटा दिया। श्रम और विजय के इन दिनो म रोगियो को उठाकर ले जाने का काम भी इन्ह खुद ही करना पडा।

रोगी उत्तेजनापूर्वक एक-दूसरे से बरामदे मे कह रहे थे—मादी दाज़ी ने झूठ बोला था। कितनी भली-चगी लेटी हुई है कूक-वोस्टा, सास ले रही है और पेट भी अब फूला हुआ नही है। नही, महान सोवियत डाक्टरो न इसे भी "आयु स वचित" नही किया।

यह समझते हुए कि आज का अपना काम व खत्म कर चुके है, इन दोनो ने हाथ मुह धो लिया और बागोस्लाव्स्की पतली सी सिगरेट जलाकर उसके कश खीचने लगे। बालोद्या नज़दीक खडा कुछ सोच रहा था।

"एक डाक्टर का, जिसे मूर्ख नही माना जा सकता, कहना है कि मर्दों के मुकाबले म औरत कही ज्यादा बहादुर है। निश्चय ही पुरुष लडाई के मैदान म ज्यादा बहादुर होते है, क्योकि वहा हर गोली सीधी सैनिक को नही लगती, कुछ चूककर झाडियो म भी जा गिरती है। लेकिन आपरेशन के कमरे म तो हर हालत म नश्तर स वास्ता पडता है, उससे किसी तरह भी बचा नही जा सकता।"

ट्रे म चाय क प्याले रखे हुए पीछे स दाज़ी इनके पास आया।

"यह भी सूरमा है," बागोस्लाव्स्की व्यग्यपूर्वक मुस्कराये। "इस

आदमी पर तो पूरी तरह भरोसा किया जा सकता है न, व्लादीमिर अफानास्येविच?"

दाज़ी मुस्कराया, उसने सिर झुकाया।

"ऐसा एक और किस्सा हो जायगा तो व्लादीमिर अफानास्येविच आपको अपने इस सहायक को निकाल बाहर करना होगा," बोगोस्लाव्स्की ने बड़ी गम्भीरता से, ऊंचे और साफ-साफ शब्दों में कहा। "देखते हुए नफरत होती है कि जवान मर्द ऐसा बुज़दिल हो। आपरेशन के कमरे से खिसक गया और सब से कह दिया कि कूक-चोस्टा मर गयी।"

"तब तो वह मर गयी थी!" मादी-दाज़ी ने काफी हद तक ठीक ही आपत्ति की।

"और अब ज़िन्दा है!" बुझ चुकी सिगरेट का कश खींचते हुए बोगोस्लोव्स्की ने कहा। "थोड़े में इतना समझ लो कि फिर कभी ऐसा नहीं होना चाहिये।"

बोगोस्लोव्स्की ने अभी अपनी बुझी हुई सिगरेट जलाई भी नहीं थी कि टोड-जीन अपराधी की सी सूरत बनाये हुए दो अन्य रोगियों को ले आया। इनमें से एक थी जवान विधवा तूश, जिसे छः महीने का गर्भ था और इस वक्त अपेंडिसाइटिस से पीड़ित थी। दूसरी स्त्री को स्तन शोथ था। तूश की हालत बड़ी खराब थी और बोगोस्लाव्स्की ने उस्तिमेन्को को कनखियों से देखकर स्वयं आपरेशन शुरू कर दिया। तूश सरसाम में बड़बड़ा रही थी। सोलह वर्षीया यह विधवा अभी किशोरी ही थी। यहां दो प्राणियों के लिये एकसाथ संघर्ष हो रहा था और यह संघर्ष बड़ा विकट था। अपेंडिक्स सूजे हुए ऊतकों के पीछे छिपा हुआ था और बोगोस्लोव्स्की ने जब उसे खोज लिया, तो पाया कि वह फटा हुआ है। बोगोस्लाव्स्की ने सिर हिलाया और गहरी सांस भी ली। अब गर्भपात होने की प्रतीक्षा करना जरूरी था, क्योंकि सभी लक्षण उसी बात का संकेत कर रहे थे। इसके अलावा तूश की प्रतिरोध-क्षमता इतनी कम थी कि पीपवाले अपेन्डिसाइटिस से पार पाना ही उसके लिये कठिन था।

स्तन शोथवाली नारी रूदा और गलगंड से बुरी तरह परेशान कून चेन दोदज़ीवा के ऑपरेशनों को अगले दिन के लिये स्थगित कर दिया गया। हाथ धो लेने के बाद बोगोस्लाव्स्की ने कहा—

"यह तूश मर जायगी क्या? हैं? वेंडा ग्रक हो, वडे अफ्सोस की बात है मगर किया क्या जाय?"

तूश को एक अलग कमरे म रखा गया। फिलहाल ता दाजी उसक पास वठा था, मगर रात के लिय वोगोस्लाव्स्की ग्रौर वोलाद्या न उसकी दखभाल करने का काम ग्रापस म वाट लिया। जव टाड-जीन ग्रौर दोनो डाक्टर वालाद्या के कमरे म खाना खा रहे थे, ता दादा ग्रवाताई ने वहा झाका ग्रौर टोड जीन की ग्रार दखत हुए उसन कहा कि इलाज के वदने म वह ग्रस्पताल म ग्रगीठिया गमान का काम करने का तयार है। मादी दाजी तो ग्रव वडा ग्रादमी वन गया है, डाक्टर हो गया है (टाड जीन तनिक मुस्कराया), वह हर समय व्यस्त रहता है ग्रौर ग्रगीठिया ता गर्मायी ही जानी चाहिये न? झाडू लगाना भी जरूरी है? यह सही है कि दादा ग्रवाताई ने ग्रव तक कभी झाडू नही लगाया, मगर ग्रपनी समझ-बूझ, ग्रक्ल ग्रौर चतुर हाथो की वदौलत वह किसी न किसी तरह यह काम तो सीख ही जायगा। रसाईघर म भी वह मदद कर सकता है। ऐसा काम करनेवाला तो सारे खारा म नही मिलेगा ग्रपन बार मे विनम्र दादा ग्रवाताई कह रहा था। उन्ह ता यह मालूम ही नही था कि वह कितना समझदार ग्रादमी है। इसस क्या फक पडता ह कि वह ग्रव जवान नहा है। लेकिन उसे वहुत से वढिया किस्से कहानिया ग्राते ह, जो वह रोगिया को सुना सकता है। मिसाल क लिय, वह उस ग्रक्लमन्द शीशकीश परिन्द का यह किस्सा जानता है कि कस उसने लोमडी को चकमा दिया, या वढे तेबीलेया का, कि उसने ऊट की गदन जितनी लम्बी थैली हासिल की, या उस चालाक ग्रौर कमीने भालू का, जो "

"ग्रच्छी वात ह," टोड जीन ने कहा, 'म साथी डाक्टर के साथ सलाह कर लेता हू। तुम जरा इन्तजार करो।"

वोलोद्या ने चुपचाप टाड जीन की वात सुनी ग्रौर फिर जवाव दिया—

"जैसा ग्राप ठीक समझते हैं, हम वसा ही कर लते है। मगर मुझे कुछ ग्रौर लागा की ज़रूरत ता होगी ही।"

टाड-जीन ने वूढे की तरफ मुह किया।

"मैं यही काम करूगा न?' ग्रवाताइ ने पूछा।

"हा, करोगे।"

"किस हैसियत से ?"

"तुम बहुत बडे आदमी होगे!" टोड-जीन न उछाह स कहा। "बहुत-से कठिन और सम्मानित काम करने होगे तुम्हे।'

"कमचारी हूगा न मैं ?" अबाताई ने पूछा, जिसे अब किसी भी बात से जरा भी हैरानी नही होती थी।

"नही, दादा, तुम सफाई का काम करोगे।"

"मुझे उम्मीद है कि यह कुछ कम सम्मानपूण नही होगा।"

"आह नही," टोड-जीन ने मुस्कराये विना उत्तर दिया। "कमचारी की तुलना म यह कही अधिक सम्मानपूण है!"

अबाताई उन तीना के मवेशिया और परिवारा के स्वास्थ्य की कामना करन के बाद अपने कमरे म वापस चला गया। अपने बिस्तर पर लेटकर तथा धसके हुए पेट पर दोना हाथ फेरने के बाद उसने कहा कि जल्द ही वह यानी अबाताई इतना मोटा हो जायगा कि लोग दग रह जायेंगे और अपने भाव व्यक्त करन के लिये उन्हे शब्द भी नही मिलेगे। अबाताई न उन्हे समझाया कि रूसी डाक्टरा और खुद टोड-जीन न उमस अस्पताल मे रुकने और काम करन के लिये मिन्नत की है। उसका काम किसी भी कमचारी के काम से ज्यादा मुश्किल होगा।

"और झूठ बोला!" साइन-बेलेक ने कराहते हुए कहा। "किस जरूरत है तुम जसे भिखमगा की ? अगर कोई कमचारी बनन के लायक है, तो वह मैं हू।"

आधी रात को तूश ने मरा हुआ बच्चा जना। वालोद्या ने बोगोस्लोव्स्की का जगा दिया और तूश की जान बचान का सघप शुरू हुआ। "इस दुनिया मे वह एकदम अकेली है," टोड जीन ने उसके बारे मे कहा। "बहुत अच्छा हो, अगर वह 'आयु से वचित' होने से बच जाय। सिफ सोलह साल की है अभी वह '

किन्तु तूश मे तो चीखने चिल्लाने की भी शक्ति नही थी।

फिर भी तूश जिन्दा रही। वोलोद्या के लिये यह बहुत कठिन रात थी, ऐसी कठिन, जसी उसन पहले कभी नही जानी थी। दिन भी बहुत कठिन रहा, क्याकि उसने दो मुश्किल ऑपरेशन किये और इसके बाद रात भी ढग की नीद के बिना ही गुजर गयी। वह कुछ-कुछ देर के लिय ही झपकी ले पाया। केवल इसी रात के बाद पौ फटने के वक्त, कडे

पाल की उषा वेला म ही सोलह साल की तूश की हालत कुछ सुधरी। क्षारीय घोल और ग्लूकोस के इंजेक्शनो और गम पानी की बोतल, जो वालोद्या इन रातो म "मदाम वावचिन" स तूश के कमरे म लाता रहा था तथा जिस सावधानी स व दोनो, वोलोद्या तथा वोगोस्लोव्स्की, उसके राये जैसे हल्के फुल्के शरीर को अधलेटी स्थिति म रखते थे, इन सभी चीजो न उसकी जान बचा ली। एक दिन बाद तो वह अपने पहले बच्चे के लिये रो भी ली और इसके बाद दूध पीकर सो रही। वोलोद्या उसके ऊपर झुका हुआ यह देख रहा था कि उसकी सास कसे चल रही है। उसके नजदीक, कधे स कधा सटाकर खडा हुआ टोड-जीन भी तूश को अपनी निडर, कठोर और निश्चल उन उकाबी आखो से देख रहा था, जो सूरज से भी नही डरती थी।

"साथी, यह तुम्हारे पास अस्पताल म काम करेगी, हा, यही काम करेगी," टोड जीन न कहा। "यह समझदार और चुस्त लडकी है, सच। मैं इसके पति को भी जानता था, अच्छा आदमी था। उसकी इसलिये मौत हो गयी कि साथी, तुम यहा नहा थे। घोडे पर लादकर उसे कही दूर ल गये, मगर वह मर गया, और जब उसकी लाश को चीर फाडकर देखा गया, तो पता चला कि उसका बहुत आसानी से इलाज हो सकता था। वह हमारी पार्टी का यहा पहला सदस्य था, सच।"

तूश की जब आख खुली, तो टोड-जीन उसके बिस्तर के करीब स्टूल पर अकेला बठा था। तूश ने हैरानी से उसकी तरफ देखा। टोड जीन ने धीमे धीमे कहना आरम्भ किया—

"यहा अस्पताल मे तुम्हारी आयु बचा दी गयी है, तूश। तुम अब इस दुनिया म अकेली हो, तूश। अगर तुम यही रह जाओ, तो एकाकी नही होगी। आदमी को कुछ नेक काम करने चाहिये। तुम व नेक काम यहा करोगी। बाद म, कुछ अर्से बाद, अगर तुम अपने को इस लायक साबित कर दोगी, तो हम तुम्हे नगरो के नगर, यानी मास्को म पढ़ने के लिये भज देगे। तुम तो अभी बहुत कमउम्र हो, इसलिये डाक्टरी की पढाई कर सकती हो, वह व्यक्ति बन सकती हो, जो लोगो को जीवन-दान देता है। तुम्हारे पति की यह आशा थी कि

वह तुम्हे साथ लेकर पढने के लिये जा सकेगा। तुम्हे उसकी इच्छा पूरी करनी चाहिये।"

"हा," तूश ने कहा।

"तुम मेरी सारी बात समझ गयी न?'

"हा।"

"पर तुम रो क्या रही हो?"

"इसलिये, टोड-जीन, कि न तो मेरा पति ही रहा और न बच्चा ही।"

"नही रात्रो, तूश। वे इसलिय मर गये कि हम अभी जगली और पिछडेपन की जिन्दगी बिता रहे हैं। तुम्हे अपेन्डिसाइटिस था। बहुत पहले ही उसमे सूजन शुरू हुई। उन दिनो ही, जब पिछले जाडे मे मैं तुम्हारे यहा था। अगर उस वक्त हमारे यहा डाक्टर होता, तो तुम्हारा पति भी जिन्दा रहता और बच्चा भी। समझ गयी मेरी बात?'

"हा!"

"तो मैं तुमसे विदा लेता हू, तूश।"

"विदा, टोड जीन।"

बोगोस्लोव्स्की और टोड जीन इसी दिन चल गये। जाने के समय वोलोद्या से हाथ मिलाते हुए बोगोस्लाव्स्की ने कहा—

"अलविदा, ब्लादीमिर अफानास्यविच। आपके साथ यहा कुछ समय बिताकर खुशी हुई। आशा है कि हम फिर मिलगे। यह समझ लीजिय कि मैं कही भी क्यो न हू, अगर आपको कोई आपत्ति नही होगी, तो आपको अपने पास खीचता रहूगा "

कुछ सोचकर उन्होने गम्भीरता से इतना और जोड दिया—

"मुझे लगता है कि आप पर भरोसा किया जा सकता है।"

वोलोद्या खुशी की उत्तेजना से लाल हो गया था। अगर बोगोस्लोव्स्की उसके बारे मे ऐसे शब्द कहते है, तो इसका मतलब निकलता है कि वह कोई बुरा डाक्टर नही है। टोड जीन ने अनुराध किया—

"तूश पर पूरा-पूरा विश्वास करना। वह तुम्हारी अच्छी मदद करेगी सच। बुढिया ओपाई पर भी भरोसा कर सकते हो, वह भी मदद कर सकती है। अगर तुम सही तरीका अपनाओगे, तो बहुत से लोग मदद कर सकेगे। ठीक है न?"

"हां!" वोलोद्या ने सहमति प्रकट की।

वे दोनों चले गये और वोलोद्या उस्तिमेन्को अपने अस्पताल तथा अपने रोगियों के साथ अकेला रह गया। हां, उसकी आरम्भ होती हुई ख्याति भी अब उसके साथ थी।

कितना भय अनुभव हुआ था उस इस रात का!

फिर एकाकी

दादा अबाताई अब सचमुच ही जवानी के दिनों की भांति सुनता था और खारा की बस्ती में लोग इस छोटे-से चमत्कार से आश्चर्य चकित होते नहीं थकते थे। खारा के ही नहीं, बल्कि दूरस्थ चरागाहों के बहरे भी उस्तिमेन्को के पास चले आते थे। जब वह यह कहता कि इस या उस बहरे का इलाज करने में असमर्थ है, तो उन्हें इस पर विश्वास न होता और वे हिरन, भेड़ या घोड़ा भेंट करने की बात करते। एक बूढ़े विधुर ने तो "बिल्कुल अच्छा ऊंट" देने का भी वादा किया। यह बूढ़ा शादी करना चाहता था और एकदम बहरा होते हुए शादी करने में उसे कुछ झेंप महसूस हो रही थी। दादा अबाताई ने, जिसे वोलोद्या की चिकित्सीय शक्ति में बड़ी आस्था थी, उसे सलाह दी—

"आपने डाक्टर की काफी मिन्नत नहीं की। अच्छी तरह से, बहुत देर तक मिन्नत-समाजत कीजिये, आंसू बहाइये, उनके सामने ज़मीन पर माथा टेकिये। महान शमान है वे तो!"

बहरों के साथ वोलोद्या को काफी मुसीबत का सामना करना पड़ा।

किन्तु दूसरी ओर कूक-बोस्टा, जिसके पेट से वोलोद्या और बोगोस्लोव्स्की ने तीन बल्टियां तरल पदार्थ निकाला था, उदार और मोटी आपाई तथा चुस्त फुर्तीली तूश ने सोवियत डाक्टर वोलोद्या रूसी अस्पताल और नये रूसियों की, जो वैसे लोग नहीं थे, सभी ओर कीर्ति फैला दी थी। "वैसे नहीं" से उनका अभिप्राय यह था कि मार्केलोव जैसे नहीं। मार्केलोव से यहां लोग डरते और उससे घृणा करते थे। मगर क्यों? वोलोद्या इसका कारण अच्छी तरह से नहीं जानता था।

वोलोद्या जब दूर के खेमों में बीमारों को देखने जाता, तो मार्केलोव

से अक्सर उसकी मुलाकात होती। मार्केलोव बहुत गौर से वोलोद्या को देखता, बड़ी शिष्टता से अभिवादन करता और फिर देर तक अपनी मनहूस जिप्सी आखो से वोलोद्या को जाते देखता रहता। एक बार वोलोद्या को ऐसे लगा कि मार्केलोव उससे कुछ कहना चाहता है और इसलिये वह रुक गया। किन्तु मार्केलोव अपना भारी सोटा टेकता और पाव घसीटता हुआ आगे निकल गया।

जब से वोलोद्या उस्तिमेको को बीमारो को देखने के लिये बुलाया जाने लगा, लामा ऊया और शमान ओगू का धधा बडा डावाडोल हो गया था। चालाक लामा तो खोरा छोडकर ही चला गया। मगर ओगू वही बना रहा और जान-बूझकर शमानो के पूरे ठाट-बाट के साथ बाहर निकलता। वह यह समझता कि ऐसे उसका अधिक रोब पडता है और वह कही ज्यादा भयावह दिखाई देता है। मगर दादा अबाताई ने मन से बनाकर यह बात फैला दी कि बहुत ही सम्मानित रूसी डाक्टरो को उसने यह कहते सुना है कि ओगू जादू टोने से बहुत सारे लोगो को खुद ही बीमार कर देता है। कूक-बोस्टा के साथ भी ऐसा ही हुआ था, क्योकि उसने ओगू को एक भेड कम दी थी। इसके बाद तो ओगू की बिल्कुल ही लुटिया डूब गयी। वह अब चिकित्सक नही, क्रूर जादूगर ही रह गया था। ऐसे आदमी की तो किसी पर बुरा जादू टोना कराने के अलावा किसी को क्या जरूरत हो सकती थी। लेकिन इतनी थोडी आमदनी से तो चिडिया का पेट भी भरना मुमकिन नही था। फिर ओगू की तो बात ही क्या की जाये, जो वोदका भी पीता था और मास के बिना खाना नही खा सकता था।

"किस्मत के मारे ओगू का तो अब बिल्कुल ही बुरा हाल हो गया है!" दादा अबाताई ढोग करते हुए गहरी सास लेता।

और तो और बच्चे भी ओगू पर उस समय तरह-तरह की फब्तिया कसते, जब वह अपने भयानक भेस मे खजडी बजाता हुआ खेमो के बीच से गुजरता। वह ऊची टोपी पहने होता, जिस पर तातो से मानव का घिनौना चेहरा कढा था और फीतो से लिपटा हुआ डडा उसके हाथ मे होता। इस डडे पर तीन पोटलिया लटकी होती। पहली मे "नभ पाषाण", दूसरी मे "भू-पाषाण" और तीसरी मे इन 'प्राणवान" पाषाणो के लिये भोजन होता।

"ऐ कुत्ते हमारी भेड वापस दे," कोई उद्दड लडका चिल्लाता।
'खबरदार, जा हमारे खेमे के पास से गुजरा," दूसरा सुनाकर कहता।

"हम तुमसे नही डरते है!" तीसरा जोर से उसे सुनाता। मगर यह सफेद झूठ होता था। वे सभी उससे डरते थे और सो भी ऐस कि क्या कहे जाय!

शमान आगू के नुकीला हडीला मुह फेरते, भयानक शक्ल बनात और इसके अलावा फीता से लिपटा हुआ डडा जोर से हिलात ही सभी तीसमार खा सिर पर पाव रखकर भाग उठत थे और फिर दर तक खेमा मे थरथर कापते तथा दुष्ट जादूगर की वुरी नजर के प्रभाव स वचन के लिय मन्त्रा का जाप करत रहते थे। वह अगर चाह तो किसी के भी पेट म कूक-वास्टा की तरह तीन वल्टिया पानी भर सकता है और फिर उसे काटकर निकालना हागा। आह, कितना दद होता है पेट कटने पर!

वोलोद्या को वहुत काम करना पडता था और अब वडा दूरी स आनेवाली मास्को रेडियो की आवाज सुनते हुए उस शम नही आती थी—वह अपना काम कर रहा था और सम्भवत कुछ वुरा नही। वम ठीक ही था कि उसे यहा भेजा गया। शायद पीच और ओगुर्त्सोव भी यहा निभा लेत, मगर स्वत्लाना और न्यूस्या के वारे म उस वहुत यकीन नही था।

एक वार मास्का रेडियो सुनन के वाद उसने सगीत सुनन के लिय वियना रेडियो लगाया। उसन लेटकर आखे मूद ली। मगर अगल ही क्षण वह उठकर विस्तर पर वैठ गया। सगात की जगह आस्ट्रिया के चासलर शूशनीग की आवाज सुनाई दी, जा हिटलर के वेरग्तसगादन निवास-स्थान स उसी समय लौटा था।

रेडियो वहुत ही साफ सुनाई द रहा था और आधा रात हात न हात वालाद्या सारी वात समझ गया। फासिस्ट जेस इन्क्वात न यह घोपणा की थी कि भूतपूव चासलर की जगह लकर उसन हिटलर स आस्ट्रिया म फौजें भेजन का कहा है। वाल्ज-सगीत प्रसारित नहा किय गय और मूवेत की अपूण सिम्फनी की जगह, जिस वालाद्या पहन अक्सर सुनता था, फौजी आर्केस्ट्रा वज उठा और भद्दा आवाजा म

नाजियो का "होस्ट वसेल" सम्बन्धी गीत गूजने लगा। तो वही शुरू हो गया, जिसकी पिताजी ने उस वक्त चेतावनी दी थी जब यह कहा था कि युद्ध "विज्ञान की प्रगति को रोकेगा वही शुरू हो रहा है, जिसकी रादियान मफादियेविच ने भी चर्चा की थी।

वालोद्या अभी तक रेडियो की सूई इधर उधर घुमा रहा था। सभी स्टेशनो से सगीत प्रसारित हो रहा था। नाच हो रहा है। वालोद्या ने कटुता से सोचा। "पेरिस मे लन्दन मे रोम मे सभी जगह लोग नाच रहे हैं आह काश कि इस वक्त बूग्रा से एकाध घण्टा बातचीत कर सकता "

वालोद्या सोने के लिये लेटने ही वाला था कि मन्साम बावचिन ने दरवाजा खटखटाया। खान-क्षेत्र से एक जला हुआ लडका लाया गया था

अब वालोद्या को अक्सर उनींदी रात बितानी पडती थी।

मौसम के कुछ गर्म होते ही शमान ओगू खारा से गायब हो गया। लोगो का कहना था कि ताइगा मे भाग जाने के पहले वह देर तक अस्पताल के सामने जादू-टोना करता रहा। लोगो को डर था कि या तो अस्पताल जमीन मे धस जायगा, या डाक्टर वालोद्या मर जायगा या फिर कोई बडी आग लग जायगी। लेकिन वक्त गुजरता गया और ऐसा कुछ नही हुआ।

कोल-ञाल को आतशक का भयानक घाव लगभग पूरी तरह ठीक हो गया। खारा के रहनेवालो ने जब कोल-ञाल के अपने खेमे मे वापस आ जाने पर यह समझ लिया कि आतशक का भी इलाज होता है, तो उनकी तो भीड ही उमड पडी। दूसरे रोगो के बीमारो की भी बहुत बडी सख्या थी। अब तो बरामदे, बडे सायबानो और "मदाम बावचिन" के रसोईघर की ओर जानेवाले छोटे से बरामदे मे भी चारपाइयाँ लगा दी गयी थी। दो मौते हो जाने से भी लोग भयभीत नही हुए। वालोद्या ने अपने कीमती वक्त की परवाह न करते हुए रोगियो को यह समझाया कि इन दोनो बदकिस्मतो ने बहुत देर तक अपने रोग की अवहेलना की और इसलिये कोई भी चिकित्सा-विज्ञान उन्हे ठीक करने मे असमर्थ था।

"मेरे पास ठीक वक्त पर आना चाहिये," उसने कड़ाई से कहा। "तब कोई भी आयु से वंचित नहीं होगा।"

यह ठीक ही कहा जाता है कि अपने हर रोगी के साथ सर्जन की भी मौत होती है। दोनो मुर्दों के शवो की अकेले ही चीरफाड करते हुए वोलोद्या ने ऐसा ही महसूस किया। इन मौतो के लिये वह दोषी नहीं था, फिर भी यह जानना चाहता था कि ताइगा से लाये गये उदरावरणशोथ के रोगी जवान चरवाहे और भालू द्वारा बुरी तरह घायल किये गये प्रौढ शिकारी के लिये उसने सब कुछ किया था या नहीं? "वे दोनो आपरेशन के बाद मरे थे, जिसका मतलब था कि ऑपरेशन के फलस्वरूप मरे थे।" बेशक यह सही था कि शिकारी ग्यारह दिन तक अपने खेमे में पड़ा रहा था और इसके बाद ही उसके रिश्तेदार उसे अस्पताल लाये थे। मगर फिर भी मन को कचोटनेवाले इस वाक्य का क्या किया जाये—आपरेशन के बाद, जिसका मतलब था ऑपरेशन के फलस्वरूप।

स्थानीय रिवाज के मुताबिक मुर्दों को घोड़ा पर लादकर पहाड़ो पर ले जाया गया। वोलोद्या की उनके रिश्तेदारो से आंख मिलाने की हिम्मत नहीं हुई थी। उसे इन्स्टीट्यूट के अपने साथियो, सहपाठियो सहपाठिनियो—स्वेतलाना, येव्गेनी स्तेपानोव और मीशा शेरवुड की याद हो आयी। "ऐ सहायक डाक्टरो, विज्ञान के भावी सितारो, हरामखोरो, परोपजीवियो, क्या हाल है तुम्हारा?' और अपनी तंग चारपाई पर किसी तरह उनीदी तथा यातनापूर्ण रात विताते हुए वह कल्पना कर रहा था—"कोई बात नहीं, हम कभी तो मिलेंगे ही और तब मैं तुम्हे बताऊंगा कि तुम्हारे बारे में मेरी क्या राय है, तुम जानवरो के बारे में!"

"कुल मिलाकर' जैसे कि यव्गेनी स्तेपानोव कहने का आदी था, वोलोद्या बेहद थक जाता था, काम का दिन समाप्त होने पर इस हद तक थक जाता था कि रात को सो भी नहीं पाता था। सुबह और शाम को वह दवाखाने में आनेवाले रोगियो को देखता। लेकिन उनकी संख्या इतनी अधिक होती कि उसके लिये उनसे निपटना मुश्किल हो जाता। इसके अलावा उसे अस्पताल के मरीजों को भी देखना होता था, उनके लिये इलाज और दवाइयां निश्चित करनी होती थी और

खेमा ग्रौर घरा मे पड रोगिया को भी देखने जाना होता था। ग्रगर उस किसी बीमार को दखने के लिये बुलाया जाता था, तो वह जाय बिना रह ही कैस सकता था? फिर हफ्ते म दा बार ग्रापरशन भी करने हाते थ। सो भी सहायका, ग्रौज़ार देनवाली नस ग्रौर मददगार सजना के बिना। बुज़दिल दाज़ी तो होने न हान के बराबर था। ग्राह, ये ग्रॉपरेशन कसी यातना हात थ, कितना भयानक श्रम होते थे, कितनी शक्ति उसे इनमे लगानी पडती थी ग्रौर कैसे-कस उल्टे सीधे करतब करने पडते थ वोलाद्या को! सरकस का नट भी उसस क्या बेहतर हागा! कैस वह ग्रपने को सयम म रखना सीख गया था, ग्रपनी खीझ ग्रौर गुस्स को, जिन्ह ग्रब वह महसूस करने लगा था, क़ाबू म रखना, ग्रापे से बाहर न होना सीख गया था।

"किसी दिन तुम्हारा ग्रचानक दम निकल जायगा, मेरे प्यार बेटे!" बूग्रा ग्रग्लाया ने उसे लिखा। "तुम इतना बोझ बर्दाश्त नही कर पाग्रोगे। छुट्टी लेकर ग्रा जाग्रो, काले सागर के तट पर ग्राराम करन चलगे!"

वोलोद्या के होठा पर उदासी भरी मस्कान झलक उठी। क्या वे वहा, सावियत सघ म बैठे हुए यहा की वास्तविक स्थिति को समझ सकते है? यहा तक कि बूग्रा ग्रौर रोदिग्रोन मफोदियेविच जसे बुद्धिमान लोग भी? वह ग्रस्पताल को किसके सहारे छाडे? जो कुछ इतनी मश्किल से बनाया गया है, उस छोडकर चला जाय, इसका मतलब है सब कुछ चौपट कर दना, फिर स ग्रविश्वास के बीज बा देना, जा कुछ प्राप्त किया है, उसे खा दना। वसे रादिग्रान मफोदियविच तो इस बात का समझत थे। उन्हान वोलोद्या का लिखा था– "मेरी बात पर यकीन कर सक्त हो, तुम्हारे पिता का तुमस खुशी होती। ग्रगर ज़रा गौर किया जाये, ता यही कहना उचित होगा कि तुम ग्रपने पिता, ग्रफानासी पत्रोविच के ध्येय को ग्रागे बढा रह हो ग्रौर वही कुछ कर रहे हा, जो उसने वहा किया, जहा हम दाना साथ थे। फिर भी तुम्ह ग्रपना ध्यान रखना चाहिये, ग्रग्लाया की यह बात सही है।"

तूश नाम की प्यारी-सी नारी को वोलाद्या पहले से ही सजन की सहायक नस का काम सिखाने लगा था। यह खासा मुश्किल मामला

२७*

था लेकिन तूश इतनी लगन दिखाती थी, सीखने के लिये इतनी अधिक उत्सुक थी, वोलोद्या के बिगड उठने पर ऐसे फूट-फूटकर रोती थी, वोलोद्या के मनोभावो को समझने, उसके अनुदशा का पूर्वानुमान लगाने के लिये ऐसे उसकी आखो मे झाकती थी कि कुछ वक्त गुजरने पर वोलोद्या ने उसे झिडकना डाटना बन्द कर दिया और वह धीरे-से उसे केवल इतना ही कहता—

"तूश, तुम बस, घबराओ नही, सब कुछ ठीक ठाक हो जायगा।"

तूश बडी समझदार थी, चतुर फुर्तीली थी और उसके छोटे छोटे, सावले तथा चुस्त हाथ बडी खुशी और होशियारी से वह सब कुछ करते, जो रोगी, आपरेशन तथा उसके उस काम के लिये जरूरी होता, जिसे वह अभी सीख ही रही थी। रोगी हमेशा तूश को पुकारते, उसके बिना काम नही चलता था और वह सबसे कठिन, अप्रिय तथा गन्दे काम को भी ऐसे शुरू और खत्म करती मानो वह काम न होकर उसे अचानक मिल जानेवाला कोई सुख हो।

वोलोद्या को तूश अपनी जनता की भाषा सिखाती। यह काम भी वह हल्के हल्के सुनहरे डोरोवाली काली आखो मे चमक तथा छोटे-से गुलाबी मुह पर हल्की सी मुस्कान लाकर बहुत खुशी और ज़िन्दादिली से तथा हसते-हसते करती।

वसन्त आते न आते वोलोद्या बेशक मुश्किल से, फिर भी शिकारियो, पशु पालको और हलवाहो को (जिन्हे यहा भूमि सिचक कहा जाता था, क्योकि वे भूमि की सिचाई के लिये नालिया बनाते थे) समझने लगा था। वह केवल समझता ही नही था, बल्कि ऐसी मुख्य मुख्य बातो को खुद भी स्थानीय भाषा मे कहने लगा था, जिनके बिना काम चलाना सम्भव नही था। अब वह परम्परागत अभिवादन के उत्तर मे मुस्कराये बिना यह कहता था कि उसके मवेशी ठीक-ठाक है और खुद भी वह सब पूछता था, जो सदियो से चली आ रही शिष्टता के अनुसार उचित था। तूश नम्रता से आखें झुकाये हुए वोलोद्या की भाषा सम्बन्धी भूले सुधारती।

मादी दादी को तूश फूटी आखो नही सुहाती थी, मगर वह यह मानते हुए कि वोलोद्या को नारी के रूप मे इसकी जरूरत है, क्योकि वह सुन्दर और जवान है और वोलोद्या भी खूबसूरत तथा जवान मर्द

है, अपनी घृणा को छिपाये रखता था। कभी-कभी इस बात की तरफ भी उसका ध्यान जाता कि तूश कैसे वोलोद्या की ओर देखती है, उसकी आँखों में श्रद्धा की कैसी ज्योति आ जाती है और यह भी देखता कि तूश की उपस्थिति में वोलोद्या अकारण ही शर्माकर लाल हो उठता है। दाज़ी को सिर्फ यही बात अजीब सी लगती थी कि तूश अभी तक डाक्टर के साथ सोती क्यों नहीं थी। वस यह बात उसके लिये बहुत महत्त्वपूर्ण नहीं थी। इससे कहीं अधिक चुभनेवाली बात यह थी कि तूश को दाज़ी से अधिक महत्ता मिल गयी थी। इतना ही नहीं, दादा अबाताई भी उस पर कभी-कभार कोई हुक्म चला देता था। कुल मिलाकर यह कि तूश और अबाताई डाक्टर और मादी दाज़ी के बीच आ गये थे और उन्होंने दाज़ी के खयालों में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण और डाक्टर के लिये सबसे आवश्यक व्यक्ति बनने में बाधा डाल दी थी।

इन पर विजय पाना तो उसके लिये सम्भव नहीं था।

"मदाम बावचिन" तूश को बहुत प्यार करती थी और दादा अबाताई भी इनके ही पक्ष में था। अकेला दाज़ी तीन जनों से तो नहीं निपट सकता था और उस दिन की प्रतीक्षा में यह सब कुछ बर्दाश्त कर रहा था, जब राजधानी से वह आयेगा और दाज़ी उसे बतायेगा कि ये तीनों बाल्शेविक हैं! इन तीनों को निकाल बाहर करना चाहिये। इसके बाद क्या होगा, मादी दाज़ी ने इस बारे में सोचने की तकलीफ नहीं की।

शामों को अस्पताल में जब कुछ शान्ति हो जाती, तो वोलोद्या देर-देर तक बड़ी कटुता और प्यार से वार्या के सम्बन्ध में सोचता रहता। उसकी कनपटियाँ जलने लगतीं, चेहरा तमतमा उठता और उसका मन होता कि वार्या को पुकारे। वह कल्पना करता कि वार्या अचानक उसकी पुकार का जवाब देगी, जैसा कि कभी पहले होता था, अचानक उसके पास आयेगी और पूछेगी—

"क्या बात है, वोलोद्या?"

मगर कोई उसके पास न आता। उस्तिमेन्को चिकित्साशास्त्र-सम्बन्धी पुस्तक को अपनी ओर खींचता हुआ कसकर दाँत भींच लेता। फिर भी वार्या का बिम्ब ओझल न होता। इतना आसान तो नहीं था उसके लिये इस बिम्ब से पिंड छुड़ाना। वोलोद्या सिर पटकता, अपने को भला

बुरा कहता और वार्या की बुरे से बुरे रूप म कल्पना करने की कोशिश करता। जो उसका मन माने, वह करे! वोलोद्या का अपना जीवन है और वार्या का अपना! हर कोई अपनी राह चलता है! थियेटर के मच की जगमगाती बत्तिया, फूल गुलदस्ते, वाल्ज नाच, चुम्बन और जाहिर है उसके बाद वह, जिसे यव्गेनी शरीर जगत कहता था। वालोद्या का माथा पसीने से तर हो जाता, हाथ कापने लगते और दम घुटने लगता। वह खिडकी का झरोखा खोल देता और फिर से मेज़ पर किताब पढ़ने बैठ जाता। उसने जो कुछ पढा होता, उस पर ध्यान केन्द्रित करने, सोचने विचारने के लिये उसे काफी यत्न करना पडता। फिर भी वह पढता, उसके लिये ऐसा करना लाजिमी था।

टोड जीन अपने सभी डाक्टरो के लिये भिन्न भाषाओ मे किताबें और पत्र-पत्रिकाए मगवाता था। वोलोद्या को इनसे बहुत मदद मिलती थी। बात यह है कि वह न तो चिकित्सा शिक्षालयो मे जा सकता था, न वैज्ञानिक सम्मेलनो और बैठको मे भाग ले सकता था। वह तो सिर्फ पढ ही सकता था। काम करना, पढना, चिन्तन मे डूबना और खत लिखना, बस यही थी उसकी ज़िन्दगी।

बोगोस्लोव्स्की को अब वह अक्सर और लम्बे लम्बे खत लिखता तथा ऐसा करने मे उसे आनन्द मिलता। अजीब से खत होते थे ये। आम तौर पर तो वह उनसे सलाह लेता, लेकिन कभी-कभी अचानक भाषण, कार्य-योजना या निबन्ध जैसी कोई चीज भी लिख डालता। मिसाल के लिये, उसने एक बार बोगोस्लोव्स्की को यह लिखा कि स्कूल के फौरन बाद युवाजन का उच्च शिक्षा सस्थाओ मे दाखिल करना ठीक नही है। "अगर हमारी यूस्याए और स्वेत्लानाए तीन चार-पाच सालो के लिये परिचारिकाओ या नर्सो के रूप मे काम कर लेती, तो ये महारानिया समझ जाती कि डाक्टर बनना चाहती है या नही या केवल सरकारी खर्च पर उच्च शिक्षा पाना चाहती है। क्या मेरी बात सही है?'

बोगोस्लोव्स्की हर पत्र का उत्तर देते वालोद्या के कुछ विचारो का विरोध करते, मगर उपदेश न देते। वे 'न्यूस्याओ और स्वेत्लानाओ' के बारे मे वालोद्या से सहमत नही थे। उनके मतानुसार इस मामले मे सभी को एक लाठी से हाकना ठीक नही होगा प्रत्येक व्यक्ति पर

अलग से विचार करना चाहिये। "उदाहरण के लिये," वोगोस्लाव्स्की ने लिखा था, "आप तो शुरू से ही अच्छी तरह जानते-समझते थे कि आपकी मंजिल कौन-सी है। ठीक है न? तो किसलिये आपने श्रेष्ठ वर्षों का परिचारक के रूप में नष्ट किया जाता? अपने बारे में भी मेरा ऐसा ही विचार है। पुरुष-नर्स के रूप में कई सालों तक मेरे काम करने में भी कोई तुक नहीं थी।'

अपने काम के सम्बन्ध में कठिन चिन्तन, थकन, मयाकोव्स्की के शब्दों में "जो हुजूरी और खुशामद के बल पर जवें गर्म करने और मजे की जिंदगी बितानेवाले" सभी लोगों पर अत्यधिक खीझ-झल्लाहट के दिनों में ही उसे अचानक वार्या का खत मिला। उसके अन्दाज बढ़िया और कुछ-कुछ सुगन्धित कागज, मोटे लिफाफे और हल्के-फुल्के मजाकोंवाले इस खत से वोलोद्या फौरन ही बुरा मान गया। वार्या ने लिखा था कि जैसे-तैसे उसने घृणित भूतत्वीय विद्यालय की पढ़ाई समाप्त कर ली है, कि अब वह आजाद हो गया है, और यद्यपि उसके पिता रोदियोन मेफोदियेविच उसका समर्थन नहीं कर रहे हैं, उसने थियेटर में अभिनेत्री बनने का पक्का और आखिरी फैसला कर लिया है। सम्भवतः पतझड़ में, मगर इसके बाद नहीं, और हो सकता है कि पहले ही, वह मास्को के एक थियेटर के अन्तर्गत विद्यालय में दाखिल हो जायेगी। किस थियेटर के अन्तर्गत—वोलोद्या यह समझ न पाया। उसने यह भी लिखा था कि शायद बुढ़ापे में, जब वोलोद्या किसी चिकित्सालय में जानी-मानी हस्ती होगा, उनकी मुलाकात हो सकेगी। हमेशा ही तो वह विदेशों में घूमता नहीं रहेगा और आखिर तो सभी बड़े-बड़े अक्सर अपने देश लौट आते हैं। तब वह उस मामूली-सी अभिनेत्री को मास्को में कहीं ढूंढ ले और शायद तब उसके साथ अपने अटपटे बचपन की यादें ताजा करने में वह कोई बुराई नहीं समझेगा।

वोलोद्या ने इस खत को दो बार पढ़ा और जवाब लिखने बैठ गया।

वोलोद्या ने इतना लम्बा, ऐसा निर्मम और दो टूक पत्र शायद अपने जीवन में कभी नहीं लिखा था। वह उसने निर्मम होना चाहा नहीं था, अपने आप ही ऐसा हो गया। उसने यहां के अपने जीवन का वर्णन किया और यह बताया गया उनके अथक अन्य लोगों के लिये भलाई के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता था। उसने ऐसा ही लिखा था—

तुम नही, बल्कि तुम सब–तुम्हारे जस, यानी यज़्गेनी, स्वेतलाना, यूस्या, आदि! तुम सबका यह ख्याल है कि मै शामा को फ्राककोट पहनकर मौज मनाता हू। ठीक है न? तो पढ लो कि कसी है यहा मरी जिन्दगी! यह गवजनित निममता थी। उसन कोई शिकवा नही किया था सब से इसी तरह के काम की माग की थी, भगोडा पर झल्लाया बिगडा था उनका मजाक उडाया था, उनके लिय बुरे से बुरे विशेषणो का उपयोग किया था। अपनी भावी औज़ार दनवाली नस तूश की भी उसन चर्चा की और लिखा कि वे सब मिलाकर भी उसकी जूती के बराबर नही है। वोलाद्या न उन आपरेशनो का भी ज़िक्र किया जो वह अकेला करता था, बर्फीले तूफानो तथा शमानो, ५० दर्जे की भयानक ठण्ड और टोड-जीन का भी उल्लेख किया। उसन उन दिनो की अपनी बचेनी भी बयान की, जब उसके पास एक भी रोगी नही आता था और लिखा कि इस चीज़ के बावजूद कि वाया ने उसके साथ **बेवफाई** की है, वह **पूरी तरह और बेहद सुखी है।**

"तुमने मेरे साथ बेवफाई की है, मुझे इस शब्द का उपयोग करते हुए ज़रा भी झिझक महसूस नही हो रही," वोलोद्या न लिखा था। 'तुम यहा आकर उस काम म मेरी सहायिका हो सकती थी, जिसमे बेशक तडक भडक नही है, मगर जो बहुत ज़रूरी है। तुम रोगियो का सवेदनहीन बनानवाली मेरी सहायिका, मेरी साथी और पत्नी हो सकती थी मगर तुम अब कला और रगमच की बत्तियो के अपने बेसिरपैर के सपने देख रही हो। मेरी बात पर यकीन करो, यह सब कुछ बेकार है असली चीज़ तो अपने काय का बहुत अच्छे ढग से करने का सुख और सन्तोष है। क्या हो तुम अब? भूगभशास्त्री? नही! अभिनेत्री? वह तो बिल्कुल नही! तुम चन से जी और मजाक भी कसे कर सकती हो, सो भी युवा कम्युनिस्ट लीग की सदस्य होते हुए? यदि तुम अपना रास्ता न जानकर ऐस ही भटक रही हो, तो युवा कम्युनिस्ट लीग से नाता तोड लो!'

न जाने कैसा था यह खत मगर उसन उसे दुबारा नही पढा। सच्चे सुख के बारे मे सभी शब्दो के बावजूद अब उसका जीवन और काय–दोनो ही काफी कठिन थे। वे रात काफी लम्बी थी, जब वह बहुत ही देर-देर तक उस आपरेशन के बारे म सोचता रहता

था, जो उस अगले दिन करना होता था। उनके हाथों में सौंपी गई इन्सानी जिन्दगी की बहुत ही ज्यादा लगभग असह्य जिम्मेदारी महसूस करता था वह। बहुत ही गहन-गम्भीर चिन्तन करता था वह मानव के कर्तव्य और मनमाने ढंग से जीने तथा धरती पर अपने लक्ष्य तथा इस अधिकार के बारे में कि जब लाल सेना मानरहैम के मोर्चे पर धावा बोल रही थी, तो उसे 'चैन से बैठने' का क्या अधिकार है।

कोलोव्या ने दो बार वोगोस्लाव्स्की का यह लिखकर माँग की कि उसे मोर्चे पर भेजा जाये, लेकिन दोनों बार ही वोगोस्लाव्स्की ने रुखाई से यह उत्तर दिया कि उसकी भावनाओं को अनुभव करते हुए भी वे थारों को अस्पताल बन्द नहीं कर सकते।

वसन्त की शामों को कोलोव्या का मन उदास होने लगा। अचानक ही उसे थियेटर जाने की बेहद चाह महसूस हुई। सो भी सुन्दर, समारोही बड़े थियेटर में और अनिवार्य रूप से वार्या के साथ ही। वह चाहता था कि वार्या वहाँ पास में बैठी हुई अपनी वही उल्टी-सीधी बातें करती रहे और वह उससे कहे "बन्द करो ये फजूल की बातें", कि अस्पताल की गंध न हो, कि थियेटर के बाद बारिश के कारण बने डबरोंवाली चौड़ी, रोशन सड़क हो, डबरों में बिजली की दूधिया बत्तियों का प्रकाश प्रतिबिम्बित हो रहा हो कि रात को तूश के दरवाजा खटखटाने और यह कहने पर कि "बहुत बुरी हालत में एक रोगी को लाया गया है और वह अभी आयु से वंचित हो जायेगा,' उसे उछलकर बिस्तर से न उठना पड़े। कोलोव्या ने घर की इस याद, इस तड़प पर भी काबू पा लिया, आसानी से तो नहीं, फिर भी हावी हो ही गया वह इस पर। उसने अपने आपको मजबूर किया कि उन चीजों के बारे में न सोचे, जिनके बारे में उसे सोचना नहीं चाहिये था।

पन्द्रहवा अध्याय

मदारी

मार्च म जब जाडे के प्रकाप म कुछ कमी आयी, दिन को सूरज चमकने लगा, और पहले जसा तन काटता हुआ पाला न रहा, तो खारा म वालोद्या का एक सहायक पहुचा। यह था फूले फूले होठोवाला बहुत ही भला नौजवान, लेनिनग्राद का डाक्टर वास्या बेलाव। बागास्लोव्स्की और टोड-जीन की तरह वह भी रास्ते म कुछ पिघली हुई नदी मे भीग आया था, और भूखे भेडिया के झुड भी उसने देखे थे। वह अच्छी सी बदूक, जिसके बारे म उसने कहा, "जानते हैं पापा की है?" ढेरो कारतूस, बारूद, छर्रे, बसिया-काटे, बारूद की डाटे और चिकित्सा-सम्बन्धी सन्दभ-पुस्तके भी अपने साथ लाया था। ब्राडी की बोतल, एक छविचित्र "कह सकते है कि बचपन की एक सहेली का" और धूम्रपान का पाइप "जिससे फालतू वक्त म मन बहलाया जा सकता है," भी उसके पास था। वास्या वोलोद्या का बडा आदर करता था, रोगिया के प्रति श्रद्धा का भाव रखता था और तूश के बारे मे उसन यह राय जाहिर की कि उसके रूप म वह "करोडा श्रेष्ठ लोगा की पलक खालती राष्ट्रीय गरिमा" का देख पाता है। वास्या के साथ वोलोद्या सब कुछ देख जान चुके बजुग के धीर गम्भीर अन्दाज म बात करता। फूले फूल होठावाले इस डाक्टर के साथ वह किसी दूसरे ढग से बात कर भी कसे सकता था। कारण कि वह अक्सर इस तरह के सवाल पूछता रहता था—

'व्लादीमिर अफानास्यविच यह बताइय कि यहा शर होते हैं?"

'मुझे तो उनके दशन करन का सौभाग्य प्राप्त नही हुआ।

"और मिक?"

"आप दादा अवाताई से इसके बारे म बात कीजिये।"

"और ज़हरीले साप? माफ कीजिय, अगर हाते ह, तो कौन स और आप उनसे कस निपटते है?"

"सापो के बारे म मैंने कभी कुछ सुना नही वास्या,' वालाद्या न जवाब दिया, मगर बोगोस्लोव्स्की के बात करने का ढग याद आने पर उसने अपनी भूल सुधारते हुए पूछा—"क्षमा कीजिये, वसीली "

"इवानाविच," वास्या ने झेंपते हुए कहा।

"वसीली इवानोविच, सापा का जिक्र मैन यहा नही सुना और उनके ज़हर से मुझे निपटना भी नही पडा।"

"वडे अफसोस की बात ह। मै तो 'जहरीले साप' नामक निबन्ध खास तौर पर अपने साथ लाया था।'

"इस मामले म मैं आपकी कोई मदद नही कर सकता।"

"वसे यहा कुछ असाधारण बात भी हुई है?

"वसीली इवानोविच, यहा सभी कुछ असाधारण है।'

"नही, मेरा कुछ दूसरा ही मतलब है, ब्लादीमिर अफानास्येविच। बात यह है कि मुझे युवाजन के एक अखबार ने सवाददाता नियुक्त किया है और अगर आपको कोई आपत्ति न होगी, तो मैं जब-तब कुछ टिप्पणिया या शब्द चित्र, आदि लिखकर हमारे दैनिक जीवन पर प्रकाश डालना पसन्द करूगा।"

"खुशी से प्रकाश डालिय। लेकिन अपने यहा के काम का हज करके नही, क्योकि यहा उसकी आपके लिये कुछ कमी नही हागी "

ये दोना एक ही कमर म रहते थे। शामो को वास्या या तो "अस्पताल का दनिक जीवन" नामक एक ही शब्द चित्र रचता रहता या फिर बहुत लम्बे-लम्बे खत लिखता। एक बार सयोग से ही एक कागज़ वालोद्या के हाथ लग गया, जिसम उसने पढा—' दरअसल, कमाल का व्यक्ति है वह। उसका दृढ सकल्प और वैज्ञानिक दूरदर्शिता तथा अपन ध्येय के प्रति उसकी सैद्धान्तिक निष्ठा मुझे यह मानन का अधिकार देती है मरी बहुत दूर बैठी रानी, कि व्ला० अ० उस्तिमेन्का ही वह व्यक्ति है, जिस मुझे अपना आदश मान लेना चाहिए "

इसके आगे वालोद्या न नही पढा। उस अचानक किसी कारण शम

महसूस हुई मानो वह वास्या को धोखा देता रहा हो। मगर ऐसा तो कुछ नहीं था।

अबाताई के साथ भी वास्या की दोस्ती हो गयी थी। बूढ़ा अब कुछ-कुछ रूसी भी बोल लेता था। तूश इन दोनों की मदद करती थी। वास्या बहुत देर देर तक दादा की सीधी-सादी, किन्तु बड़ी मज़ेदार कहानियां और किस्से सुनता तथा खारा के अस्पताल के बारे में अपनी भावी "पुस्तिका" के लिए कुछ लिख भी लेता।

काम तो पहले की भांति ही बहुत अधिक था, लेकिन वास्या बेलाव के आने से वोलोद्या की ज़िन्दगी काफी आसान हो गयी। वोलोद्या बड़ी खुशी से लगभग हर दिन वास्या को इस बारे में कहता। वास्या हास्यास्पद ढंग से शर्माकर लाल हो जाता, गुद्दी खुजलाता और कहता –

"क्या कह रहे हैं आप ... तारीफ कर-करके मेरा दिमाग बिल्कुल खराब कर देंगे आप, व्लादीमिर अफानास्येविच ... अगर आप न होते ..."

और वास्या पहले से भी ज्यादा मन लगाकर तथा अधिक उत्साह के साथ कहीं अधिक काम करता। तारीफ होने पर वह बेहतर हो जाता और बहुत मामूली तथा छोटी-सी आलोचना से भी काफी देर के लिए खिन्न तथा उदास हो जाता और उसकी हमेशा खुशी से चमकती, सजीव आंखों की ज्योति गायब हो जाती।

अब वोलोद्या उस्तिमेंको, बेशक थोड़ी देर के लिए ही सही, अपना अस्पताल छोड़कर कहीं जा सकता था। घोड़े पर सवार होकर वह उर्चीस्की खान क्षेत्र में गया और वहां उसने स्वस्थ तथा रोगी – सभी लोगों की जांच की। यह बहुत लम्बा, श्रम साध्य, किन्तु आवश्यक काम था। ओस्त्यू-बे के मछुओं और जीश्ची के अनेक खानाबदोशों के खेमों का भी वह चक्कर लगा आया। आम तौर पर मादी दाजी ही उसके साथ जाता और घोड़ों पर कुछ ज़रूरी औज़ार, दवाइयां, तम्बू और सफ़री बिस्तर लदे होते। ताइगा की लगभग अदृश्य पगडंडी या नीचे शोर मचाती ताम्रा-खाम्रो पहाड़ी नदी के किनारे सधे कदम रखते हुए घोड़े पर जाते समय, जबकि ऊपर से वसन्तकालीन सूरज की तेज़ और सुहानी किरणें तन गर्माती होतीं, वोलोद्या का मन खिल उठता।

जब उसके पहुचने पर सभी खेमा म खलबली मच जाती और खुशी की लहर दौड जाती, जब बच्चा के दल स्वागत के लिए भागे आते जब उनके पीछे अपना महत्त्व समझनेवाले धीर गम्भीर बुजुग और दूमरे पुरुप इतमीनान से बाहर निकलते, जब नारिया चुककर अभिवादन करती और जब सभी गह स्वामी और गहिणिया उसे खाने या यो हा बातचीत के लिए आमन्त्रित करते, ता उसे बहुत अच्छा लगता। वालोद्या के लिए परम्परागत अभिवादन के ढग स मवेशिया के स्वास्थ्य क बारे म पूछना और आखो मे हास्यपूण चमक के साथ, क्योकि उन्ह ज्ञान था कि रूसी डाक्टर के पास मवशी नही हे, गह स्वामिया का उसस ऐसा ही प्रश्न करना भी उसे सुखकर प्रतीत हाता।

हा, इन खेमो, झोपडा और मछुआ के बाडो म उसे जुआ, कुकरा और आतशक के रोगियो स वास्ता पडता। कभी-कभी ऐम भयानक दश्य, ऐसे घिनौने चित्र उसके सामन आते कि वालोद्या का भी जो ऐसी चीजा का आदी हो चुका था, बुरा हाल हो जाता। लेकिन अपने डाक्टरी चागे की आस्तीनें चढाकर और बडे-बडे हाथो का धोकर वह अपन बस भर की हर कोशिश करता और इसके बाद वास्या के नाम एक पुर्जा लिखकर दो घाडो के साथ विशेप ढग से बधे हुए स्ट्रेचर पर रागी को अपन अस्पताल भेज देता। अस्पताल म हमेशा गुजाइश से ज्यादा रोगी रहते, मगर यह सही अथ म अस्पताल था। वहा स आम तौर पर लोग स्वस्थ होकर निकलते और एक खेम स दूसर खेमे तक दूर-दूर तक यह ख्याति फैलती जा रही थी कि खारा म एक असा धारण, एक अद्भुत डाक्टर रहता है। खानाबदाश अब शमाना और लामाओ पर अधिकाधिक कम विश्वास करते थे और य लोग ताइगा तथा टुड्रा मे अधिकाधिक दूर भागते जा रहे थ। खारा से दूर वालोद्या, उसके अस्पताल, नये डाक्टर वास्या, तुश जो इन रूसिया के साथ काम करती थी, यहा तक कि दादा अबाताई के विरुद्ध भी उनका गस्सा बढता और उग्र होता जा रहा था।

बस वोलाद्या का अभी तक तो इससे काई फक नही पड रहा था। लामा और शमान अब उसके रास्त म बाधा नही बनते थे और वह उन्ह बस ही भूल गया था, जसे मार्केलाव को। अपने काम म वह बहुत व्यस्त था, बहुत अधिक लगन से काम करता था और इसलिय

उसके पास इस बात की फुरसत नही थी कि उनके बारे म सोचे, जो फिलहाल उसके जीवन-पथ से लुप्त हो चुके है।

सितम्बर म, पतझर के शुरू मे एक दिन उस मुह अधेरे ही जगा दिया गया। एक लडका उसके पास भेजा गया था और उसन बिना सिलसिले के जो कुछ बताया, उससे वालोद्या इतना ही समझ पाया कि कोई बुरी बात हो गयी है और उसे कही दूरी पर कुछ लोगो की मदद करनी चाहिए। किन्तु घटना स्थल कितनी दूर है, बहुत परेशान और डरा सहमा हुआ लडका यह समझा नही पाया।

मादी दाज़ी ने घोडे तयार किये, उन पर सफरी सामान लाद दिया। सुबह बहुत ठडी थी, वालोद्या कापता हुआ जम्हाइया ले रहा था और किसी प्रकार भी पूरी तरह जाग नही पा रहा था। दोपहर होते होते यह बात साफ हुई कि सौ किलोमीटर से अधिक रास्ता तय करना है, किन्तु कितना अधिक, लडके को भी यह मालूम नही था। वोलोद्या को इतना भी पता चल गया कि एक नहा, तीन घायल हैं, कि पहला तो सम्भावत अब तक "आयु से वचित" हो चुका होगा, मगर बाकी दो शायद उनके पहुचने तक नही मरगे।

रास्ता बडा मुश्किल था, शुरू मे नदी के किनारे किनारे, जहा स वोलोद्या पहले भी जा चुका था, घोडे बढाते रह, मगर बाद का फासला कम करने के लिय ताइगा म से हो लिय। टहनिया मुह पर लगती थी, कपडो को फाडती थी, घोडे हाफ्ते थे और थकावट क कारण पहलुओ को झटका देकर आगे बढते थे। वालोद्या जिस जेम चू बस्ती म कभी जा चुका था, उसके वन प्रागन म कोई दसेक घुडसवारो स इनकी मुलाकात हुई। घोडो के अयालो और पूछो पर फीते लिपटे हुए थे। वोलोद्या समझ गया कि शमान घायलो को अपन फेर म डाल हुए है। दाज़ी न एक बूढे से, जो वोलोद्या को शत्रुतापूर्ण दृष्टि स देख रहा था, उत्तेजित-सा होकर बातचीत की। बातचीत स यह स्पष्ट हुआ कि खारा स भागनवाला शमान आगू घायलो की देखभाल कर रहा है। लडका अपनी इच्छा स डाक्टर को बुलान भाग गया था और बूढा अब उसे कडी सजा देनवाला था।

झुटपुटा हो गया था जब दाज़ी और उस लडके के साथ, जिसका नाम लाम्ज़ी था, वोलोद्या कोलाहलपूर्ण ताम्रा-ह्लामा नदी के निकट चीड के

वक्षा से ढकी एक ऊची पहाडी पर पहुचा। पहाडी की निर्वात दिशा मे छ अलाव जल रहे थे। झुटपुटे और धुआ उगलती लपटो की पष्ठभूमि म लोगा की आकृतिया बहुत वडी वडी लग रही थी। कोई पचास घुडसवार रास्ता रोककर इन तीनो के निकट आन की राह देखने लगे। इन सभी घुडसवारा, यहा तक कि छोकरा के पास भी ब दूके थी। दाज़ी का ख्याल था कि वे सभी दूध का अरक पीकर नशे मे धुत्त है। उसन सलाह दी कि अभी, जब तक कि जान सलामत है, उ ह यहा से लौट जाना चाहिए।

"ये लोग तो बेहद पिये हुए ह, हा," मादी दाज़ी ने कहा। "बहुत बुरा होगा, बहुत ही बुरा।"

वोलोद्या घाडे स नीचे उतरा, लगाम उसन दाज़ी की आर फक दी और दढता स कदम रखता हुआ सीधा घुडसवारो की तरफ चल दिया। उन्हाने वोलाद्या को रास्ता नही दिया और उनकी शिकारियोवाली बन्दूका की नलिया माना वालोद्या के चेहरे का वहकी-वहकी सी ताक रही थी। दिल म बेहद डर महसूस करते और यह समझते हुए कि उसक लिये दूसरा कोई रास्ता नही हो सकता, उसन एक घाडे की थूथनी अपनी तरफ से हटाई, किसी की रकाब को कधे से दबाया, कासा और पहाडी पर चढन लगा। वोलोद्या के पीछे पीछे, कुछ-कुछ उसका बगल म होता, डर से धीरे धीरे चीखता और यथासम्भव डाक्टर क निकट रहता हुआ लाम्ज़ी भी आगे बढ गया। यह लाम्ज़ी उसी का बटा था, जो सम्भवत अब तक अपनी "आयु स वचित" हो चुका था।

धुआ उगलत अलावा के बीच दो व्यक्ति लेटे थ और बगला म द्विशाखी टेका के सहारे एक आदमी बठा हुआ था। उसकी यातना और पीडाग्रस्त आखे कही दूर देख रही थी। सम्भवत वह अब कुछ भी नही देख पा रहा था, क्याकि अपने बेटे को भी नही पहचान सका। लाम्ज़ी के बाप के करीब शमान ओगू बैठा था। वोलाद्या की समझ म जसे ही यह बात आई कि यहा क्या हा रहा है, वैसे ही उसका सारा डर आन की आन म गायब हो गया।

मौत की गोद मे जाते हुए व्यक्ति के निकट वह सभी कुछ रखा था, जिसकी उसे उस दूरस्थ जीवन म या जस कि दाज़ी कहना पसन्द

करता था अगले जन्म में जरूरत हो सकती थी। यहां तम्बाकू भी रखा था, दियासलाई की डिब्बी भी, दूध का अरक भी, मास, नये बूटों का जोड़ा और चाबुक भी। इस, अभी जीवित व्यक्ति को दूसरी दुनिया में विदा किया जा रहा था और वोलोद्या ने यहां आकर, उन मामले में दखल देकर मौत के उस कानून का उल्लंघन कर दिया था जिसकी शमान आगू घोषणा कर चुका था। शमान की हिमायत के मुताबिक घुड़सवार मौत के कानून की रक्षा कर रहे थे। अगर लाम्ज़ी का बाप ज़िन्दा रह जाता है, तो यह शमान ओगू की मौत होगी, क्योंकि तब शमान के रूप में उसका अन्त हो जायेगा।

"तुम्हारे लिये सब कुछ तैयार है, सब कुछ अच्छी तरह से तैयार कर दिया गया है, कुछ भी तो नहीं भूले। जाओ, अब तुम जाओ, अब तुम्हारी और आयु नहीं रही," शमान ओगू कह रहा था। उसने वोलोद्या को अभी तक न तो देखा था और लपटों में शाखाओं के चिटखने की आवाज़ के कारण न ही उसके पैरों की आहट सुनी थी। "जाओ, देर नहीं लगाओ ..."

"दफा हो यहां से, मदारी!" वोलोद्या चिल्लाया।

ओगू ने धीरे से घूमकर देखा और वोलोद्या के बूटों पर नज़र पड़ते ही उठकर खड़ा हो गया। वह खड़ा हो गया, मगर यह वही ओगू नहीं था, जो खारा में वोलोद्या से कतराता, कन्नी काटता था। यह दूसरा ही ओगू था, ताइगा का काफी बेहया स्वामी, सो भी शराब पीकर मदमस्त और हाथ में बड़ा-सा छुरा लिये, जिससे वह कुछ ही क्षण पहले लाम्ज़ी के बाप की लम्बी यात्रा के लिये मास काटता रहा था। अब वह इस छुरे से हमला करने के लिये तैयार था। छुरे का नुकीला और तेज़ भाग ऊपर को उठा हुआ था। ओगू उसे घृणित रूसी डाक्टर के पेट में घोंपकर और फिर एक बार घुमाकर उसे मार डालना चाहता था। आगू लोगों का इलाज करना तो नहीं, पर उनकी जान लेना तो जरूर जानता था।

अलाव की रोशनी में इन दोनों के चेहरे चमक रहे थे और कुछ क्षणों तक ये ऐसे ही एक दूसरे के सामने खड़े रहे। शमान के बायें हाथ में उसकी खंजड़ी कुछ कुछ टनटना रही थी। उसकी ऊंची टोपी पर इन्सान से तनिक मिलती-जुलती एक भयानक-सी सूरत कढ़ी हुई थी।

शमान ओगू मौत का कानून लागू करने के लिये यहा उपस्थित था और वह मौत की रक्षा कर रहा था। किन्तु वोलाद्या यहा इसलिय आया था कि दम तोडते व्यक्ति के प्राण वापस लौटाये। वह जीवन की रक्षा कर रहा था और सो भी अचानक अपने बारे म पूरी तरह भूलकर। वोलाद्या ने पजे के ऊपर शमान का हाथ पकडकर दूसरे हाथ से ऐसे उसकी कलाई दबाई कि इस मदारी के हाथ से छुरा नीचे गिर गया। शमान कुछ चीखता चिल्लाता और खजडी पीटता अलावा के पीछे अधेरे म गायब हो गया।

वोलोद्या अब लाम्जी के पिता के ऊपर झुका।

मौत निश्चय ही बहुत निकट थी, मगर उससे अभी लाहा लिया जा सकता था।

अपना पडवाला कोट उतारकर वोलाद्या काम म जुट गया। अलावो क पास लेटे बाकी दो शिकारी कराहत हुए और रुक रुककर उसे सारी घटना सुनाने लगे। वह उनकी बाता की तरफ कोई खास ध्यान नही दे रहा था, फिर भी टूटे-टूटे और अधूरे वाक्य उसके काना म पड ही रहे थे। उसन सुना कि कैसे उन्हान खूब अच्छा शिकार किया, कसे उनके कारतूस चुक गये, कसे शिकारियो का बुरा चाहनवाले ताइगा के भूत प्रेत जूम्ब्र और कूर लाम्जी के बाप को, जा सबस अच्छा शिकारी था, रास्ता काटने म कामयाब हा गये। हुआ यह कि कारतूस फट गया, उस वक्त फटा, जब लाम्जी का बाप कारतूस भर रहा था। वे सभी सटे बठे थे, किन्तु लाम्जी का बाप कारतूस पर झुका हुआ था, कारतूस का पूरा मसाला ही उसकी छाती म जा लगा।

'सावधान!" लाम्जी खरगाश की सी पतली, बारीक आवाज म चीखा और उसी क्षण वोलाद्या को अपन पीछे बन्दूक का घाडा दबन की आवाज सुनाई दी।

वोलाद्या मुडा।

एकदम जद चेहरा और हाथ मे दुनाली बन्दूक लिय ओगू काई दसक कदम की दूरी पर खडा था। उसन दाना घोडे दबा दिय थे, मगर लाम्जी के बाप की दुनाली बन्दूक भरी हुई नही थी। सिफ इसीलिये वोलोद्या की "आयु सुरक्षित" रह गयी—ताइगा के लाग पक्के निशानबाज हाते है और ओगू का निशाना बिल्कुल अचूक साबित हाता।

वालोद्या ने शमान की तरफ कदम बढाना चाहा, मगर उसी क्षण ग्रोगू ने बन्दूक नीचे फेक दी और हाथा पैरा के बल उस्तिमेन्का की तरफ रेगने लगा। वह रेग रहा था, सिर झुका रहा था, रगता था और जमीन पर अपना मुह टेकता था। अब वह उस आदमी से अपनी प्राण रक्षा चाहता था, जिसकी उसने हत्या करनी चाही थी। केवल वोलाद्या ही उसकी जान बचा सकता था, उस ग्रागू की, जिसने मौत के कानून का उल्लघन करके उसकी पीठ को गोलिया का निशाना बनाना चाहा था। वोलोद्या का बूट पकडकर ग्रोगू ने उसके साथ अपना गाल सटा दिया और रोते-कलपते, चीखते तथा आहे भरते हुए गिडगिडाने लगा

"इस बन्दूक को उठा लो, सुनते हो?" वोलोद्या ने चिल्लाकर कहा। 'इसमे गोलिया भरकर मेरी पीठ के पीछे खडे हो जाओ, क्योकि मुझे काम करना है। तुम ही इसे उठा लो, लाम्जी। बहुत सम्भव है कि अभी तुम्हारा बाप अपनी आयु से वचित न होने पाये। लेकिन अगर मेरी पीठ पर गोलिया चलायी जायेगी, तो मै इलाज कैसे करूगा। और यह शमान यहा से दफा हो जाय!"

बहुत ही गुस्से मे आया हुआ था वोलोद्या और न जाने क्या, उसे फिर अचानक न्यूस्या योल्किना और स्वेतलाना की याद आ गयी।

लडके लाम्जी ने बन्दूक मे दो कारतूस भरे और वोलोद्या की पीठ के पास खडा हो गया। और एक के बाद एक सभी घुडसवार अपने घोडो से नीचे उतरकर उस आदमी को अच्छी तरह देख पाने के लिये निकट आ गये, जिसके बारे मे ग्रागू ने यह कहा था कि वह इलाज करना नही, मारना जानता है, उसने दो आदमियो की अपने अस्पताल मे जान ले ली और फिर उनकी लाशो का चीर फाडकर उनकी दुर्गति भी की ताकि शिकारियो के अच्छे और मजबूत दिलो को अपने पास सुरक्षित रख सके।

किन्तु उस्तिमेन्को को अब किसी की भी सुध नही थी। बुझते अलावो की अस्थिर लाल रोशनी मे वह उस घाव को देख रहा था, जिससे पीप की दुर्गध आने लगी थी। घाव उरास्थि (स्टर्नम) के दायें सिर पर था, उसके किनारे बेजान हो चुके थे और गोली निकलने का छेद वोलोद्या को नजर नही आ रहा था।

"कितन दिना से वह इन कम्बख्त टेका के सहार पडा हुआ है?" वालाद्या ने पूछा।

"पाच दिन से!" मादी दाजी ने फौरन जवाव दिया। 'हा, पाचवा दिन है! ये लाग कुछ नही समझत, य बुद्धू ह, मूख है "

घाव की जाच जारी रखते हुए वालाद्या न दाजी को ग्राजार लाने, अलावा म ढेर सारी टहनिया डालन ग्रार ग्रापरशन क लिय हाथ धान का पानी तैयार करन का ग्रादेश दिया।

शमान ग्रागू न भेडिये की राल ग्रौर गिलहरी की पिघली चर्वी म भीगी हुई लामडी की तथाकथित स्वास्थ्यप्रद फर के टुकडे घाव म भर दिय थ। फौरन ग्रॉपरेशन करन की जरुरत थी मगर लाम्जी क पिता को ग्रगर सीधे लटाया जाता था, ता उस सास लने म वडी मुश्किल हाती थी। उसे ग्रचेतन करन के लिय इजेक्शन दनवाला भी काइ नहा था।

वोलोद्या न स्पिरिट का ग्राधा मग भरा, उसम पानी मिलाया ग्रौर लाम्जी के पिता के सूखे हाठो के पास ल जाकर ऊची तथा जारदार ग्रावाज म बाला—

"इस पिया, मेरे दास्त! तुम जिन्दा हा, तुम ग्रायु स वचित नही हुए। एक ही सास म पी जाग्रा ग्रार तुम्हारी तवीयत वेहतर हा जायेगी। सुनत हो, मेरे दोस्त! रोग से हार नही माना, उसे ग्रपन पर हावी नही हाने दो। जल्द ही तुम फिर से शिकार का जाग्रागे।"

ग्रतिशय पीडा से परिपूण ग्राख धीरे स खुली।

"पियो!" उस्तिमेन्को ने ग्रादश दिया।

लाम्जी के पिता ने जव राहत की सास ली, ता वोलाद्या न उसे माफिया की सूई लगाई।

धुग्रा छोडत ग्रौर जार से दहकत ग्रलावा की रोशनी म वह घाव की जाच करने लगा। धीरे धीर रोते ग्रौर चू चू करते ग्रागू के सामन दावार-स वने ग्रौर डाक्टर का घेर शिकारी खडे थ। लाम्जी के वाप का खरखराती ग्रावाज के साथ सास ग्राती थी ग्रौर लडका वोलाद्या के कधे के पास खडा काप तथा सिसक रहा था। चीड वक्षा की फुनगिया म हवा चीख रही थी ग्रौर काफ़ी दूर नीचे ताग्रा-हाग्रा नदी का चचल पानी शार मचा रहा था। दाना ग्रन्य घायल उठकर वठ

गये थे और अपनी पीडा को भूलकर वालोद्या के हाथो, चमकती चिमटी और रूसी डाक्टर के खीझ तथा गुस्से से भरे और तनावपूर्ण चेहरे को देख रहे थे।

घाव कोई ग्यारह सेंटीमीटर गहरा था। उंगली से घाव की जांच करने पर वोलोद्या ने उसके तल में मोटे मोटे छर्रे, तथाकथित स्वास्थ्यप्रद फर और नमदे की डाट को अनुभव किया। उसने यह सभी कुछ बाहर निकाल दिया।

क्षण भर सास लेकर वोलोद्या ने घाव पर रक्तस्राव रोकने के अवरोध, टैम्पन के साथ गीली पट्टी रखी और उठकर खडा हो गया। लाम्झी के पिता की सास अब अधिक समगति से चल रही थी, नब्ज अभी धीमी होते हुए भी पहले से कही बेहतर थी। दूसरे दोनो शिकारियो पर भी कम से कम एक घण्टा तो लग ही गया। लानत के मारे हुए शमान ओगू ने उनका भी उल्टा सीधा इलाज कर डाला था। इसके अलावा वे जले हुए भी थे।

ज़ोर से धकधक करते दिल, टीसती बगल और दुखती टागो के साथ वोलोद्या उठा। बडे बडे अलाव पहले की तरह ही धुआ उगलते हुए खूब दहक रहे थे। हिरन की खाल के छोटे ओवरकोट पहने जतूनी रग की त्वचा और नगे सिरोवाले शिकारी अभी भी दीवार बनाये खडे थे। उन्होने यह आशा भी नही की थी कि डाक्टर अचानक उनकी ओर घूम जायेगा।

"तो बोलो?" वोलोद्या ने उस भाषा मे पूछा, जो वे समझते थे। "बताओ तो? क्यो मेरे यहा आने पर शत्रुता दिखायी थी तुमने? क्या बुराई की है मैंने तुम लोगो के साथ? तुम्हारे इस शमान ओगू ने तो मुझे गोली का निशाना बना देना चाहा था और तुम लोग खडे देखते रहे, तुमम से कोई हिला डुला तक भी नही।'

"हमारी हिम्मत नही हुई!" किसी ने अपनी भद्दी सी आवाज मे जवाब दिया। "तब हम शमान से डरते थे। वह हम सभी को मटियामेट कर सकता था।"

'कुछ भी तो नही कर सकता वह!" उस्तिमेन्को ने कहा। "वह बुज़दिल उल्लू है! वह तुम्हारी तरह से काम नही करता सिर्फ तुम्हे लूटता है और तुम उससे डरते हो।'

"नही, अब नही डरते," दूसरा शिकारी बोला। "अब हम उसे मार डालेगे।"

"नही, यह भी नही होगा!" वोलाद्या न चिल्लाकर कहा। "उसकी हत्या नही होगी, सुना तुमने? मै तुम्ह हरगिज ऐसा नहा करने दूगा।"

सुबह का तीनो घायलो का रात के दौरान किसी कैम्प से वहाकर लाय गय वेडे पर पहुचाया गया। शमान ग्रोगू तव तक वोलोद्या के पाव पक्डे रहा, जव तक उसन उसे भी वेडे पर जाने के लिए नही क्ह दिया। लेकिन इस शत पर कि वेडे पर सवार होने के पहले वह अपनी ऊची टापी, खजडी और जीवित पत्थरावाला डडा ताम्रा हाम्रो नदी म फेक द। शमान ऊचे ऊचे रान लगा, तो शिकारी खिलखिलाकर हस पडे। वालाद्या वेडे पर खडा था, उसका चेहरा उतरा था, दाढी वढी हुई थी और हाठ भिचे हुए थे।

"मुझे माफ कर दा!" ग्रोगू चिल्लाया।

"तुम मरे साथ वैसे ही चलाग, जस मैंन कहा है या फिर विल्कुल चलागे ही नही," वालोद्या ने कहा। "समझ गये, ग्रोगू?"

और आगू ने कापते तथा सिसकते हुए अपनी शमानी गरिमा के सभी चिह्न ताम्रा हाम्रो नदी के जारदार पानी म फेक दिये। वेशक यह वडी अजीव सी वात है, मगर उसे अपनी टापी, खजडी और डडे म विश्वास और आस्था थी। जव टापी पानी म इधर उधर डोलने लगी, तो उसने हमेशा के लिए आत्मसमपण कर दिया। हा, वालाद्या स इतना पूछा जरूर—

"अब मैं क्या करूगा? अपना पट कैस भरूगा?"

'तुम अस्पताल मे आकर लकडिया चारा करोगे। इसके वदले म तुम्ह खाने-पीने को काफी मिल जाया करेगा।"

"लेकिन मैं लकडी चीरना नही जानता!" आगू वुरा मान गया।

वालाद्या न कधे झटक दिय। रास्ते म उसन किसी स भी काई वातचीत नही की। मन म वडी कटुता और वडी कसक-सी अनुभव हा रही थी। अपनी पीठ के पीछे दुनाली वन्दूक के घाडा की खटक अनक साला तक उसके मानस-पट पर अक्ति होकर रह गयी। इस इलाक़े म सवस पहल वसनेवाला वूढा हीजिक वेडे को चला रहा था,

घायल आपस मे धीरे धीरे बातचीत करते और यह देखते थे कि बेडे के निकट आने के कारण कैसे बत्तखें और कलहंस डर जाते थे, तट पर से नीतर दूर भाग जाते थे। शाम होते होते दहाडते हुए जल प्रपातो का शोर सुनाई देने लगा। लाम्जी के पिता, शमाना के सभी चिह्नों से मुक्त ओगू और दूसरे दो घायल पहले तो ऊपर चढे, जहा एक तरह का प्लेटफार्म-सा बना हुआ था और फिर केवल लाम्जी के पिता को वहा छोडकर जल प्रपात को अपनी भेंट—पैसे, रक्त और नमक—देने के लिए नीचे उतर आये।

"सब लोग सम्भले रहे!" हीजिक ने आदेश दिया।

बेडा नीचे को बेहद झुक गया, उसका अग्रभाग पानी में डूब गया और पृष्ठभाग पत्थरो से टकराता हुआ ऊपर को उठ गया। दहाडती, शोर मचाती हुई एक जोरदार फेनिल लहर ने बेडे को ऊपर उठा दिया वह दायें-बायें घूमा और जल प्रपात से आगे निकल गया। लाम्जी के पिता ने सिर्फ इतना ही पूछा कि उसकी भेंट—बन्दूक की बासे की पुरानी गोली भी फेंक दी गयी या नही। इसके बाद गहरी सास लेकर उसने बोलोद्या को सम्बोधित किया—

"मुझे स्वस्थ कर दोगे न, डाक्टर?"

बोलोद्या आह भरकर मुस्करा दिया—क्या वह ऐसे लोगो पर क्रुद्ध हो सकता है, जो जल प्रपात मे भेंटे फेंकते हैं?

नवम्बर मे बोलोद्या ने लाम्जी के पिता की छाती की वह हड्डी निकाल दी, जिसके नीचे धातु का बटन और दो छर्रे दबकर रह गये थे। नवम्बर मे ही मार्केलोव की बेटी ने अस्पताल मे आकर बोलोद्या से यह अनुरोध किया कि वह उसके बाप को देखने चले, जो सख्त बीमार था।

'क्या हुआ है उन्हे?" बोलोद्या ने पूछा।

'वे भला बतायेंगे?' पलागेया ने उदासी से उत्तर दिया। 'बस, लाल पीसते रहते हैं। बेहद थोडा खाते है। सूखकर कांटा हो गये हैं, खाना तो खाते भी नही।"

"उन्होने मुझे बुलवाया है या आप अपनी मर्जी से ही लेने आ रही है?'

"मै, अपनी मर्जी से!" लडकी ने झेंपते हुए स्वीकार किया।

जीवन का उद्देश्य क्या है?

शाम होन को थी, जब टाच, स्टेथॉस्कोप और ल्यूमीनान की कुछ गालिया जेब म डालकर वोलाद्या मार्केलोव के घर की तरफ चल दिया। जजीरा स वधे हुए गुस्सैल कुत्ते भौकन लगे, डरा-सहमा हुआ कारिल्ना लपककर बाहर आया और बडे दयनीय स्वर म बोला—

'कृपया पधारिये! आपकी प्रतीक्षा हो रही है! पेलागेया यगारोव्ना आपकी वडी राह दख रही है, पधारिये

प्रवश-कक्ष म सरो के पत्ता, लावान और कुछ अय मधुर तथा रुचिकर चीजा की अपरिचित-सी गध आ रही थी। पेलागेया न जान क्या, वनी-ठनी थी, उसकी रेशमी पाशाक सरसरा रही थी, उसकी अगूठिया और कीमती ब्रोच जगमगा रहे थे। उसने फुसफुसाते हुए वोलाद्या से कहा—

"आप खुद ही उनके पास चले जायेगे न? कृपया, मुझ पर यह वडा एहसान कर। ऐसे जाहिर कीजिये कि इधर स गुजर रह थ और इसलिए यो ही चले आय। पास स गुजरते हुए, किसी जरूरत के विना या यह कहिये कि अपना आदर भाव व्यक्त करने के लिए चल आय। वहुत अर्से स उन्ह आपका इन्तजार है, अक्सर आपका जिक्र करत है, लेकिन, माफ कीजिये, डाक्टर क नात नही, ऐस ही याद किया करते है "

वोलाद्या न कधे झटके, दरवाजे पर दस्तक दी और जवाव न मिलने पर खुद ही भीतर चला गया। नीची छत वाले, वहुत वडे और खूव तपे हुए कमरे म लम्बा, काला फ्राक कोट पहने, पीठ के पीछे हाथ वाधे, सिर झुकाये, अपनी सफेद दाढी को वकरे की भाति हिलात-झटकत हुए मार्केलोव इधर उधर आ जा रहा था। वह जव-तव गहरी सास लेता और धीरे-धीरे कुछ वडवडाता। वोलोद्या की तरफ उसका फौरन ध्यान नही गया और देखने पर हैरान हुए विना इतना ही पूछा—

"आ-प? क्से मुझ पर यह महरवानी की, श्रीमान-साथी डाक्टर?"

वोलोद्या को मार्केलाव के स्वर मे कुछ उपहास, कुछ वनावट प्रतीत हुई। उसकी मनहूस आखो म पहल जैसी गुस्ताखी ता थी, लेकिन

साथ ही उनमे कुछ चिन्ता, सावधानी और घबराहट भी झलक रही थी।

"किसी काम से आये हैं या योंही पडोसी होने के नाते? किसलिए जरूरत पड गयी आपको मार्केलोव की?"

"बस, इधर से गुजर रहा था, चला आया," मार्केलोव को बहुत ध्यान से देखते हुए वोलोद्या ने शान्त भाव से उत्तर दिया। "मेरे ख्याल म एक साल हो गया है हम मिले हुए। सोचा, चलकर देखू, कही आप बीमार तो नही पड गये "

मार्केलोव व्यग्यपूवक मुस्कराया—

"मार्केलोव का इलाज करना चाहते हो? तुम जसे छोकरे को अभी यह इज्जत नसीब नही होगी। मार्केलोव तुम सबके मर जाने पर भी जिदा रहेगा। हा, तुम सबके!"

वोलोद्या चुप रहा। बूढे ने वोलोद्या के ठण्ड से कुछ खुरदरे हुए, मजबूत और हठीली ठोडीवाले चेहरे को बहुत ध्यान और बचैनी से देखा और उससे आखे मिलानी चाही।

"इधर से गुजर रहा था, चला आया? मुझसे बनते हो, डाक्टर, चालाकी करते हो? और कोई नही, पेलागेया बुला लाई है, ठीक है न? चुप क्यो हो? वसे मैं खुश हू कि तुम आ गये, कुछ दर बठेंगे, कुछ पियेंगे। मेरे यहा बहुत ही बढिया मारसाला शराब है। लेकिन मारसाला तो उनके लिए ठीक है, जिन्ह मिठास पसद है। हम-तुम तो ब्राडी पियेंगे। पियोगे न मेरे साथ?"

"पिऊगा।'

'लेकिन मैं तो तुम्हारा वग शत्रु और शोषक हू? ऐस घूर क्या रह हो? में सब कुछ जानता हू, मेरे भाई, सब कुछ जानता हू। अब मैं तुम लागा के दो अखबार पढता हू—मगवाता हू।'

मार्केलाव न कमरे म कुछ कदम बढाये, छल्ला के सहारे लटके हुए नील रेशमी पर्दे का हटाया और वहा मद्धिम राशनी वाल कान म पूजाघर और डेस्क दिखाई दिया। डेस्क के करीब ही बढिया चमडे की जिल्दवाली पुरानी, धार्मिक पुस्तकं बेतरतीब पडी थी और वही नयी पत्रिकाए तथा अखबारा का एक ढेर भी नजर आ रहा था। खीझ स कागजा का जोर से सरसरात हुए मार्केलाव डेस्क स "प्राव्दा'

ग्रौर "इज्वेस्तिया" के कुछ ग्रक उठा लाया ग्रौर वालोद्या को दिखात हुए वोला –

"यह दखो, इ ह पढता हू। लेकिन इसमे खास वात क्या है? तुम लोग सामूहिक फार्मा, योजना, पचवर्षीय याजना, राजकीय फार्मों के वारे मे ग्रौर यह लिखते हो कि तरह-तरह के महनतकशा का सफलताग्रा के लिए पदक मिलते है। लेकिन मै कसे जिऊ? इ टरनशनल के साथ जनगण उठ खडे हागे? यह भी जानता हू! कि तु मे कहा जाऊ? ग्रधकार के राज्य मे, भेडा को मूडने के लिए फिर से लौट जाऊ?"

"कैसी भेडे?" वालोद्या समझ नही पाया।

"यह रूपक है, धम के ग्राधार-स्तम्भो से लिया गया है। इसका मतलव है कि स्थानीय लागो को ऐसे निचोडा कि उनका सत निकल ग्राय। वे हमारे पालक है ग्रौर हम उनके कल्याणकर्त्ता। समझ गये न?"

मार्केलाव की ग्राखा म क्रोध भी था ग्रौर व्यथा भी, सफेद दाढी के वीच उसका लाल मुह टेढा-सा हो गया था ग्रौर चेहरा मानो पीडा स काप रहा था। ग्रखवार फेंककर वह दरवाज़े की तरफ गया, पेलागेया को पुकारा, ध्यान से उसे देखा ग्रौर व्यग्यपूर्वक मुस्कराकर वाला –

"कस सज धज गयी है, भैस। हर दिन तो ग दी-म दी घूमती रहती है, मगर ग्राज रशम ग्रौर सोन का ठाठ है। क्सिके लिए? डाक्टर के लिए? वह तो तुम्ह ग्रपनी वीवी वनान से रहा, उसे काई दिलचस्पी नहा है तुमम। वहा विदेश म कामरेड ढग की नारी उसकी राह देख रही है। उसे बीते युग के ग्रवशेष की क्या ज़रूरत है?"

पेलागेया का चेहरा शम स धीरे धीरे लाल हाता गया, सिर ग्रधिकाधिक झुक्ता गया ग्रौर वह झेंप से जल्दी-जल्दी ग्रपनी शाल का पल्लू खाचने लगी।

"'मार्टेल' ब्राडी की वोतल ले ग्रा – वहा है, यह ल चावी! मगर ताला वन्द करना नही भूल जाना, नही तो तुम्हारी ग्रम्मा जान, वहा पूरी तरह सफाया कर डालेगी," मार्केलाव फिर स वालाद्या की तरफ देखकर व्यग्यपूर्वक मुस्कराया। "इसकी मा हमारे यहा नगेबाजी

का अवशेष है, ज़िंदगी को रंगीन बनाने के लिए बोतल चढ़ाती रहती है वह। अचारी खीरे भी लेती आना। कुछ लोग ब्रांडी के साथ नीबू का उपयोग करते हैं, मगर हम अपनी बेवकूफी की वजह से अचारी खीरे खाते हैं। और हां, हमारे इस विद्वान मेहमान, साथी डाक्टर के लिए चर्बीवाला और मजेदार मांस भी लाना नहीं भूलना। देखती हो न, कैसा दुबला-पतला है यह! जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाओ, बहुत ज्यादा चर्बी चढ़ा ली है तुमने दूसरों के शोषण का माल खा-खाकर, सारी दुनिया को लूट-लूटकर," उन तिरछी आंखों से, जिनमें परेशानी और व्यथा थी, फिर बोलांग्वा की तरफ देखते हुए उसने कहा। "जाओ, झटपट!"

बेटी पुराने ढंग के अनुसार सिर झुकाकर दबे पांवों चली गयी। मार्केलोव ने पुरानी, खस्ताहाल आरामकुर्सी के पीछे से, जो फटे पुराने कालीन से ढकी हुई थी, एक शुरू की हुई शराब की बोतल निकाली, बड़ी अधीरता से उसने एक घूंट गले के नीचे उतारा और पूछा—

"यह बताओ कि कैसे जिऊंगा अब मैं? मेरे दादा-परदादा ज़ार पिता के अत्याचार से तंग होकर यहां आ बसे, उन्होंने मुझे अपने ढंग से जीना सिखाया। उन्होंने मुझसे पुरानी रूसी में पूछा—'कहो भया, कौन ऐसा होता, जो मरकर धरती में नहीं सड़ता?' मैंने बेधड़क जवाब दिया—'मां मरियम, वह मरी, मगर धरती में नहीं सड़ी, जीवित ही स्वर्ग में ले जायी गयी।' एक और भी अक्ल चकरानेवाली बात पूछी गयी—'नौजवान, यह बताओ कि हज़रत नूह के जहाज़ में कौन-सा जीव नहीं था?' मैंने जवाब दिया—'मछली, क्योंकि वह तो पानी में भी रहकर जी सकती है।' कुछ बुरे तो नहीं थे न ये सबक? मुझे यह भी सिखाया गया कि स्थानीय लोगों की तुलना में मुझे अपने को ऊंचा रखना चाहिए। कारण कि यहां आनेवाला किसी दूसरी जाति का विदेशी अपने को मुझसे ऊंचा उठा सकता है और यहां के लोगों को मुझसे ज्यादा अच्छी तरह निचोड़ सकता है। मेरे मां-बाप ने मुझे अपने दांत पैने करने की भी शिक्षा दी, क्योंकि एक आदमी दूसरे के लिए भेड़िया है। लेकिन पुराने धर्म की यहां आनेवाली प्रचारिका जिन धार्मिक गुणों की चर्चा करती रहती थी, वे थे—नम्रता, बुद्धिमत्ता, आत्मसंयम, दया, भ्रातत्व, मेल-मिलाप

ग्रौर प्यार। ग्रब लगाग्रा जोर यह जानने के लिए कि पन दाता ग्रौर भ्रातत्व के बीच कस ताल-माल विठाया जाय? दया ग्रौर इस हुतर का वस एक साथ निभाया जाय कि यहा के लागा के लिए ऐसी वादका तयार हो, जा हमारे लिए कौडिया के मोल पडे ग्रौर इनकी ग्रक्ल ठिकान न रहे? प्यार ग्रौर मा-बाप की इस सीख पर कम एकसाथ ग्रमल किया जाय कि सवल की फर का कुछ काली ग्राभा दो धुग्रा दो, ताकि उसका तिगुना मूल्य मिल सके? ग्रात्म सयम ग्रौर समझ बूझ के साथ हम यह भी सिखाया गया कि ग्रगर कोई विधर्मा कोई काफिर तुम्हारे लिए काटा बन जाय, ता किसी घने जगल म उसका ऐसे काम तमाम कर डाला कि किसी का काना कान खबर न हा। हा ऐसा हुग्रा भी। हम सिखाया गया कि चूकि हम पुराने सच्चे धम के ग्रनुयायी हे, इसलिए जा भी चाहे, कर सक्त है ग्रौर जहन्नुम की ग्राग म हम किसी भी सूरत म नही जलाया जायेगा। हम मालूम है कि कुछ लाग सुम की तरह दो उगलिया जाडकर नाम बनाते हे, कुछ चुटकी की तरह तीन उगलिया से, लकिन हम धम की ग्राधार शिलाग्रा क ग्रनुसार दीक्षित हे, इसलिए हमे सब कुछ माफ है। यह सब शिक्षा मैंने ग्रच्छी तरह स ग्रहण कर ली यद्यपि इसम से कुछ की उपक्षा कर दी। स्थानीय लागा का खून मैंने नही बहाया, घिन ग्राती थी ऐसा करते हुए। लेकिन मेरे दिवगत बुजुर्गा न वह खून जरूर बहाया ग्रौर सा भी थाडा-सा नही। ग्रब वही खून जार-जार स चीख रहा है। इसीलिए मरा दिमाग चक्कर खा रहा हे। हे काई एसी बीमारी?"

"मुझे मालूम नही, मैंने ता नही सुनी!" वालाद्या न जवाब दिया।

"ता ग्रब सुन लागे!" मार्केलोव ने विश्वास दिलाया।

पलागेया हाथ म ट्रे लिये हुए ग्राई। यगार फामीच मार्केलाव न ब्राडी की बातल ले ली, बडी फुर्ती स हथेली मारकर बोतल की डाट निकाल दी, बेटी को कडी नजर स घूरा ग्रार खदडने के बजाय उस ग्राराम स बैठकर सुनने का कहा।

"खास तौर पर इसलिए कि तुम रशमी कपडे पहने हा। हा, तो सुना, साथी डाक्टर। दिमाग का चक्कर खाना ग्रौर उलझाव?"

पेलागेया ने हरे शीशे के बडे-वडे गिलासो मे ब्राडी डाली और एक गिलास वोलोद्या की तरफ वढा दिया। वोलोद्या ने एक घूट पिया। बूढा मार्केलोव सारी ब्राडी एक बार ही गले के नीचे उतार गया और अचारी खीरे को कचर-कचर की आवाज करते हुए चबाने लगा।

"उलझाव!" मार्केलोव ने दोहराया। "एक ख्याल आता है दिमाग मे – आदमी किसलिए जीता है?"

वोलोद्या को झुरझुरी सी महसूस हुई। उसे लगा कि मार्केलोव नशे मे उसके यानी वोलोद्या के विचारो को ही बाहर लाकर उसका मुह चिढा रहा है, उसका मज़ाक उडा रहा है।

"दौलत जमा करने के लिए?" मार्केलोव ने सवाल किया। "चलो मान लेते है कि बुजुर्गो ने यह काम शुरू किया। लेकिन किसलिए दौलत जमा की जाये? वारिस बेटी को देने के लिए? चलो, ऐसा ही सही। लेकिन अगर वह मूर्ख हो और उसे कोई महत्त्व न दे, तो? तब क्या किया जाये? मान लो कि मेरा दिमाग खराब होता जा रहा है यानी तुम लोगो के अखबारो के शब्दो मे मेरा पतन होता जा रहा है। लेकिन जब और किसी चीज़ मे कोई तुक नही है, तो मैं इसे रोकने की कोशिश किसलिए करू? यह सम्भव है कि मैं बैंक मे कुछ और रकम डाल दू, और दो-तीन विधर्मियो, काफिरो को चालाकी से या हसकर भी लूट लू। मगर किसलिए? मैं अपनी बात बुरे, अस्पष्ट और अटपटे ढग से कह रहा हू, मगर अब जब तुम आ ही गये हो, तो जो मै कहता हू, उसे सुन लो ..."

"मै सुन रहा हू।"

"यह अच्छा है। तुम्हे यह समझना चाहिए, डाक्टर, कि कुछ ऐसी बीमारिया भी है, जो न तो पेटो मे होती है, और न सीनो मे। कही ज्यादा बुरी होती है। अब तुम समझो उन्हे ..."

मार्केलोव ने अपने गिलास मे और ब्राडी डाली, उसे पी लिया, मुह पोछा और दृढतापूर्वक कहने लगा –

"नीचता, औरतबाजी और बेईमानी मे शुरू हुई मेरी ज़िन्दगी बदमाशी मे ही गुजर गयी है। सहारा लेने के लिए कुछ भी नही, रास्ते से भटक गया हू, अधा होता जा रहा हू। मेरे भाई, मेरी बीवी बिल्कुल उल्लू है, मास और चर्बी तो बहुत है उसमे, लेकिन

ग्रादमी कही दिखाई नही देता। अपनी बेटी के लिए अफसोस होता है, इसका भी कुछ बने-बनायेगा नही।"

"पापा, मेरा जिक्र न करो," पेलागेया ने अनुराध किया।

"नही चाहती, तो नही करूगा।"

मार्केलाव कुछ दर के लिए अपने ख्यालो म खो गया, ब्राडी के बडे-बडे घूट पीता रहा। वालोद्या चुप था। उसके परिचित, बिना शेड के "बिजली" लम्प की तेज राशनी आखो म अखर रही थी।

"कचौडी लीजिये न!" कमर के कान से पलागेया ने कहा।

वोलोद्या ने कचौडी ले ली।

"हा, इसके लिए अफसोस होता है," मार्केलाव ने सोचते हुए दोहराया। "बाकी चीजो को तो खैर गोली मारी जा सकती है। खुद मुझे तो अब बहुत जीना नही और उम्र भी काफी हो चुकी है और रास्ता भी अब क्या ढूढूगा। मरी तो यहा, खारा म बहुत गहरी जडें हैं। मेरी तो कब्र यही है, हमारे परिवार की समाधि है यहा। जिद्दी मिजाज के ये हमारे सभी लोग। रूसी इटो से जो हजारो कोसो से लाई गयी, समाधि बनवाई, ताकि मौत के बाद अपनी चैन की जगह हो। काफिरो के बडे-बूढो से लकर दूध पीते बच्चो तक सभी हमारे नामी कुल का जानते है और हमसे डरते है। मैं तो देखो, कितना विनम्र हो गया हू, फिर भी मुझसे डरते ह। डरते हैं, समझते हो न? और तुम्हे भी जानते है, लेकिन तुमसे य लोग डरते नही। तुम भी रूसी हो और मैं भी रूसी हू। फिर ऐसा क्या है, बताओ मुझे?"

ब्राडी का और आधा गिलास गले से नीचे उतारकर मार्केलोव सिहरा और बोला—

"कोई उपहार, कोई तोहफा भी नही लेते मुझसे। तोहफा लेते हुए डरते हैं, उसम भी कोई चालाकी समझते है। मेरी उदारता म भी विश्वास नही करते। हो सकता है कि मैं सचमुच ही उदार हो गया हू? हो सकता है न?"

और वह कटुता तथा गुस्से से फुसफुसाने लगा—

"शमाना ने तुम्हारी हत्या कर देनी चाही थी—मैंने सुना है, मुझे मालूम है। तुम बुद्धू, किसलिए अपनी जान को खतरे म डाल

रह हा ' ज़ाहिर है कि मैं तो गोनत र लिए तेगा पर रहा हू। मगर तुम किसलिए ' खागा बहुत बड़ा तनख्वाह पा रहे हा? कौन-सा बड़ा इनाम मिलगा तुम्हें यहा पर इस तरह अपनी जानमारी करन के लिए ' बताम्रो? मैं ता अगर चाहू, ता इन कान्ताफानिया या राम जैस अमर नगर म जा सकता हू। मेर पास ता सब कुछ है। मगर तुम्हार पास क्या है? तुम बुद्धू र पास ता ग्रौरत भी नहा है, वात्सा भी तुम पास नहीं हा। कितना अजा हुआ तुम्हें यहा आय हुए बाद सब मार। कुछ ही दिन पहले मैंने अपनी आखों से यह देखा था कि तुम सडक पर ऊपर की तरफ़ जा रहे थ। एक कुत्ता तुम्हें काटन के लिए लपटा। एक ग्रौरत, माइन-क्लर्क की बीवी न डडा लकर उस कुत्ते को दूर भगा दिया। लकिन अगर मर साथ एसा हुआ होता तो? ग्रदडना चाहिए उस कुत्ते की? बताम्रो मुझे, यह समझन म मरी मदद करो कि जब आदमी का दिमाग चक्कर खान लगता है? तुम कामरेड, मुझको मुझ बूढ़े को इस बात का जवाब दो कि आदमी किसलिए जाता है?'

'काय के लिए।' वालाद्या न खिन्नता ग्रौर मुश्किल स सुनाई दनवाली आवाज़ म जवाब दिया।

'क्या कहा?'

"काय के लिए।"

"मगर काय किसलिए? क्या मैंन काम नहा किया? क्या मैं हाथ पर हाथ धर बठा रहा? तुम जसा पिल्ला ता यह कल्पना भी नहा कर सकता कि घन ताइगा जगला ग्रौर यहा की कसी भयानक दलदला म हम भटकत रह, कस साय, कसी-कसी रात गुज़ारा, कस खूनी भेडिय हम पर झपटे, कस यहा के काफिरा न मेरे बाप पर मोटे मोटे छर्रे चलाय माना वह इन्सान न हाकर कोई भालू हो। हाथापाई करनी पडी—क्या यह काम नहीं है?"

"नहीं, यह काम नहीं है। तुमने काम नहीं किया पसा बनाया।"

"यानी अपने फायदे के लिए?"

"हा, अपन फायदे के लिए।"

"ग्रार मेरा जो यह दिमाग़ चल निकला है, क्या अब वह किसी तरह ठीक नहीं हो सकता?"

"आप मुझसे डाक्टर के नाते यह पूछ रहे है?"

"भाड म जाओ तुम और तुम्हारी डाक्टरी। हसी आती है मुझे तुम्हारी डाक्टरी का नाम सुनकर। मै तुमसे एक रूसी आदमी के नाते पूछ रहा हू "

"हम दानो रूसी है, मगर अलग अलग तरह के रूसी हैं," मार्केलोव की ओर दढता से देखते हुए वालोद्या ने जवाब दिया। "मै सावियत रूसी हू, लेकिन आप केवल रूसी जाति के है, भूतपूव रूसी हैं, रूसी इटा की समाधिवाले रूसी है, मानवता के नाते रूसी नही हैं। आज का रूसी पहले के रूसी स बिल्कुल भिन्न है। आज के रूसी को कोई मेहनतकश माटे छर्रे से नही मारेगा। इसीलिए आप डरते है और मैं नही डरता।"

मार्केलाव शायद सुन नही रहा था।

"खर," उसने कटुता से कहा, "जिसके सामने धूपदान आता है, वही सिर झुकाता है। तुम मुझे एक बात बताओ, शायद मेरे लिए अपनी दौलत अस्पताल को भेट कर देना ठीक रहेगा? शायद तब मै तुम्हारे मुकाबले म कुछ बुरा नही रहूगा, श्रीमान-साथी?'

"यह दौलत आपकी नही है। और लूटी हुई दौलत भेट करना मूखता है।"

मार्केलाव का यह जवाब सुनकर काई हैरानी नही हुई। कवल वोलाद्या के कुछ निकट हाते हुए उसने पूछा—

"और शमान ओगू को माफ करना मूखता नही है? वह गाली मारकर तुम्हारी जान लेना चाहता था और तुम अब उसका पेट पालते हो? उस कुत्ते के पिल्ल को वही किसी तने पर लटकाकर गला घाट देना और उसके तलवे अलाव पर भूनने चाहिए थे। तब इन लोगो की बरसो तक अक्ल ठिकाने रहती।'

"ओगू का कोई दोष नही," वोलोद्या न रुखाई से कहा। "दोष आपका है।"

'फिर म ही दोषी हू? सुनती हो पेलागेया, इस बात के लिए भी मै ही दोषी हू। देखा? बडे तेज हो डाक्टर, बहुत ही तेज हो। जरा मुझे बताओ तो, मेरे बहुत ही प्यारे दोस्त, क्या कुसूर है मेरा?"

"आप तो खुद ही जानते है, सकडा साल तक "

"हटाओ इस बकवास को," मार्केलोव न उसे टोक दिया। "मैंने तुम्हारी जगह पूरा जोर लगा दिया है, जिसे और जो कुछ लिखना चाहिए था, लिख भेजा। तुम्हारे उस शमान का अच्छे मजबूत सीखचा के पीछे बिठा दिया जायेगा।"

"लेकिन मैं किसी को ऐसा नही करने दूगा।"

"करने नही दोगे?" मार्केलोव हैरान हुआ।

"किसी हालत मे भी ऐसा नही करन दूगा।"

"ईसाई धम के मुताबिक?"

"ईसाई धम का इस मामले से कोई वास्ता नही है।"

"तो जहन्नुम मे जाओ! एक आखिरी वात और पूछना चाहता हू—कौन सा वह ऐसा काम है, जिसके लिए आदमी जिय?"

"कोई भी ऐसा काम, जिसस लोगा का भला हो। बस, इतना ही," वोलोद्या न पहल की भाति चिडचिडेपन, यहा तक कि गुस्से से कहा। "कोई भी काम।"

"लोग—वे तो कूडा-करकट है!"

"तब तो हमारे और आपके वक्त वरवाद करन मे काई तुक नही है!" वोलोद्या ने उठत हुए कहा। "हा, यह जरूर सोचता हू मैं, येगोर फोमीच, कि कोई बहुत ही बुरा आदमी ऐसा मान सकता है कि लोग कूडा-करकट है।"

"मैं ता बुरा हू ही!" मार्केलोव ने व्यग्य से मुस्कराकर जवाब दिया।

वोलोद्या के वाहर जान से पहले उसने पुकारकर इतना और कहा—

"मुझ मूख का अक्ल देने के लिए फिर कभी भी आ जाना।"

'नही आऊगा!" वोलाद्या ने जवाब दिया। "आपके साथ काई अक्ल की बात करना आसान नही। और बेकार भी है "

क्षण भर को वे दोनो एक-दूसरे को देखत खडे रहे—मार्केलोव चकराया-सा और वोलोद्या शान्त तथा उदास।

चबूतरे पर कारिदा ठण्डी वारिश मे ठिठुरता हुआ वोलाद्या का इन्तजार कर रहा था।

'जल्दी ही इनका खेल? " उसन फुसफुसाकर पूछा।

या मतलब—जल्दी स?"

ब ग्रौर बदाश्त करने की ताकत नही रही। इतना बिगडते कोई हद ही नही, इन्सान तो बिल्कुल रहे ही नही। अब ता र देना चाहिए इस दुनिया से। श्रीमान डाक्टर, मैं तो आपको बता भी नही सकता, जो कुछ वे करते है।"

लोद्या ने टाच जला ली ग्रौर ग्रपने ग्रस्पताल की तरफ चल वास्या वेलोव साफ-सुथरे बिस्तर पर खुद भी नहाया-धोया ग्र स लेटा हुग्रा कुछ भावुकतापूर्ण कविताए पढकर ग्रानन्द-विभोर था।

ग्रापकी ग्रनुपस्थिति म ग्रोश के बच्चा हो गया है," उसने "बस, ग्रभी कुछ देर पहले। बडा प्यारा मुन्ना है।"

लोद्या न हाथ मुह धोकर ग्रपना डाक्टरी चोगा पहना ग्रौर के कमरे म चला गया। ग्रोश ग्रभी तक झपकी ले रही थी ग्रौर सूति-कक्ष को ठीक ठाक किया जा रहा था। दादा ग्रबाताई म उक्डू बैठा शिकारी रागी कूरी के साथ ग्रगीठी मे जलती या की रोशनी म ड्राफ्ट का खेल खेल रहा था। चौथे कमरे म ाम का वह दस साला लडका कराह रहा था जिसका उसी दिन शन किया गया था। वालोद्या उसके पास कुछ दर रुका, उसको देखा ग्रौर टाग का छूकर दखा कि वह गम है या नही। टाग थी। ग्रब यह लडका लगडा-लूला नही होगा। इस कमरे से बाहर ने पर उस तूश नजर ग्राई। दुबली-पतली, हल्की-फुल्की ग्रौर तो ग्राखोवाली तूश फुर्ती ग्रौर तेजी से वालोद्या की तरफ ही रही थी।

"तो मास्को क बारे म क्या फैसला किया?" वालोद्या न पूछा। ग्रोगी न, तूश?"

'नहा," वालोद्या के चेहरे पर नजर टिकाते हुए उसने खुशमिजाजी जवाब दिया।

'क्या?"

"ग्रभी मैं बहुत बुद्धू हू, सच," वह बोली। "वहा मेरा मजाक गा। बाद को, कुछ ग्रर्से बाद जाऊगी। जब ग्राप कहगे—जाग्रो, हार वहा जाने का वक्त ग्रा गया। ठीक है न?'

वोलोद्या उससे आँखें नहीं मिला पा रहा था, क्योंकि इतनी अधिक चमक रही थीं तूश की आँखें और बहुत ही प्यार तथा स्नेहपूर्ण थी यह चमक।

काली मौत

वसन्त मे अस्पताल की दूसरी इमारत की नींव रखी गयी। नींव समारोह के दिन ही एक लेडी डाक्टर, सोफिया इवानोव्ना सोल्न्तेन्कोवा यहा पहुची। अधेड उम्र की यह नारी बडी हठी और अपनी गति विधि म ढीली-ढाली थी। इस नयी आनेवाली डाक्टर ने सबसे पहले तो दो-टूक ढग से यह माग की कि शमान आगू को अस्पताल से निकाल बाहर किया जाये।

"बडी अजीब-सी बात है!" सोफिया इवानोव्ना ने अपनी नाराजगी जाहिर करते हुए कहा, "भूतपूर्व पुजारी या जिसे यहा शमान कहते हैं, रसोईघर के लिए लकडिया चीरता है। मैंने अपनी आखो स देखा है। वडी अनहोनी सी बात है! रागियो के कमरो के लिए भी लकडी चीरता है! बहुत ही अजीब बात है!"

"मगर वह अस्पताल म जादू टोने तो नहीं करता!" वोलोद्या न माथे पर बल डालते हुए विरोध किया। "इसके अलावा यह आदमी अब तो शमान रहा भी नहीं। न तो उसके पास खजडी है और न डडा।"

"कैसी अजीब बात है! पुजारी हमेशा पुजारी रहता है—उसके पास डडा हो या न हो। इसके अतिरिक्त मुझे यह भी ज्ञात है कि उसने आपके विरुद्ध आतक क्रिया की।"

"कैसी क्रिया?"

"आतकवादी क्रिया। और आपने नर्मी तथा बुद्धिजीवियोवाली उदारता दिखायी तथा इस नीच को जेल नही भिजवाया। वर्ग शत्रुओ के हमलो का मुह-तोड जवाब देना चाहिए, समझे न?"

"वह वर्ग शत्रु नही, एक बदकिस्मत और रास्ते से भटका हुआ आदमी है," वोलोद्या ने कठोरता से जवाब दिया। "फिर मुझे यह सिखाना भी आपका काम नहीं है कि मुझे क्या करना चाहिए और क्या नहीं। आपको यहा आये दिन ही कितने हुए हैं और मैं ..."

"तो आलोचना के प्रति यह रवया है आपका ?" साफिया इवा-नोव्ना ने व्यग्यपूवक कहा। "वैसे मैंने कुछ ऐसी ही उम्मीद भी की थी–आत्म-तुष्टि, अपनी ख्याति की मौज लूटना, एक दूसरे की प्रशसा करना "

सचमुच वडी अद्भुत चीज़ थी कि इस औरत के पास हर मामले के बारे म पहले से ही वाक्य तयार थे। वहुत ही आसान थी उसके लिए जिन्दगी!

"थोडे म यह कि ओगू यहा काम करता है और करता रहेगा," वालाधा न उठते हुए कहा। "अगर आपको यह पसन्द नही है, तो आप टोड-जीन को लिख सकती हैं। उसे किस्से की पूरी जानकारी है। यह बात हम यही खत्म कर देते ह। और किसे आप यहा वग शत्रु मानती हैं?"

साफिया इवानोव्ना ने गहरी सास ली–

"ध्यान से देखना हागा। ज़ाहिर है कि यहा सव कुछ वुरा नही है, कुछ उपलब्धिया भी हुई हैं, हमारे प्रति वफादार लोग भी हैं।"

सोफिया इवानोव्ना वडी मेहनत से, वहुत अधिक और नीरस ढग से काम करती। उसके ख्याल के मुताविक अस्पताल म रोगा का ब्योरा वहुत सक्षिप्त रूप से लिखा जाता था और कुल मिलाकर रिकाड का मामला वहुत गडवड था। सोफिया इवानोव्ना ने इस मामले म "आमूल चूल" परिवतन कर डाला। वह सुवह, दोपहर और शाम को भी वहुत लम्बा-लम्बा, विस्तारपूवक और ब्योरेवार विवरण लिखती रहती। उसकी उगलियो, यहा तक कि गाला पर भी स्याही के धब्बे लगे रहते और अपने माथे पर वल डालकर और गहरी सास लेकर वह कहती–

"अभी वहुत कुछ, वहुत ज्यादा, वहुत ही ज्यादा ठीक-ठाक करन की ज़रूरत है, साथी वडे डाक्टर। वडी अजीव वात है, वहुत ही अजीव वात है कि इस मामले म ऐसी लापरवाही दिखायी गयी है। फ़िलहाल तो मैं सव चीज़ो की जाच-पडताल कर रही हू, लकिन वक्त आने पर हमारी वातचीत हागी, वडी खुली और वेरहमी से, किसी भी तरह के लिहाज़-मुलाहज़े के विना "

एक अंधेरी रात को पेलागेया मार्केलोवा वोलोद्या के पास आई। उसकी आखें रो रोकर सूजी हुई थी, देर तक वह कुछ भी नही कह पाई और बाद मे उसने अनुरोध किया—

"श्रीमान डाक्टर, मुझ अपने यहा कोई काम दे दीजिये। मैं सभी कुछ कर सकती हू, आपको पछताना नही पडेगा "

"मगर आपके पिता का क्या रवया होगा इसके बारे में?"

"क्या मानी रखता है उनका रवैया!" पेलागेया ने गस्से स जवाब दिया। "वे क्या अब इसान रह गये हैं? बहुत ही बुरे हो गये हैं, सुबह से रात तक पीते रहते हैं, बेमतलब किताबें पढते हैं और कोसते हैं।"

"वे आपको काम नही करने देंगे!"

"मैं तो अस्पताल म ही रहना चाहूगी। जिस कान म हुक्म देंगे, वही पड रहूगी। यही मेरी जिन्दगी होगी। दे दीजिये मुझे यहा कोई काम, श्रीमान डाक्टर। नही तो सच कहती हू कि मैं गले म फदा डालकर झूल जाऊगी। आपके सिर होगा मेरी हत्या का पाप। रख लीजिये मुझे यहा कोई काम करने के लिए!"

पेलागेया घुटनो के बल होकर विनय अनुनय करने लगी।

"आप यह क्या कर रही है!" उस्तिमेन्का ने चिल्लाकर कहा। "सुनती है? यह सब बन्द करे। फौरन उठकर खडी हो जायें "

इसी समय सोफिया इवानोव्ना विवरण-पत्र लिये कमरे म आई। उसने पूछा कि यह क्या मामला है। वोलोद्या ने उसे बताया। डाक्टरनी ने माथे पर गहरे बल डालते हुए पूछा—

"अरे, उसी मार्केलोव की बात कर रहे है न? वह जो यहा का रॉकफेलर है। हा, हा, सुना है, बेशक सुना है मैंने उसका नाम "

वोलोद्या ने पेलागेया को सम्बोधित करते हुए कहा—

"कल काम पर आ जाइये। सुबह ही। आपको पहले से ही आगाह किये देता हू—हमारे यहा काम बहुत होता है और वह मेहनत भी बहुत मागता है। कामचोरी की हमे जरूरत नही है "

पेलागेया के जाने पर वोलोद्या ने सोफिया इवानोव्ना से विवरण पत्र लेकर उस पर हस्ताक्षर किये, कमरे मे चक्कर लगाया, पर्दे के बिना अंधेरी खिडकी स बाहर झाका और रेडियो चालू कर दिया।

वह महीन भर स नयी बैटरिया की राह देख रहा था पुरानी खत्म होन का था। रेडिया म बहुत शार मच रहा था और वालाद्या दर तक कोशिश करन पर भी मास्को रेडिया की आवाज नहा सुन पाया। अचानक उस स्लाव भाषा म किसी प्रसारण-केन्द्र की आवाज सुनाई दी और वह माना बुत बना रह गया–हिटलर न सोवियत सघ पर हमला कर दिया था। वहा जग छिड गयी थी बहुत बडी लडाई लडी जा रही थी, मानवजाति क इतिहास की अनजानी अनसुनी घमासान लडाई।

अपन डाक्टरी लवाद की आस्तीन ऊपर चढ़ाय और काई धुन गुनगुनाता हुआ वास्या कमर म दाखिल हुआ। वालाद्या न चीखकर उस चुप रहन क लिए कहा। साफ्िया इवानाव्ना जद चहरे क साथ भौचक्की-सी भागी आई। उसक पीछे पाछे बरामदे म तूश दाशी और बूढ़ा अग्राताई भी दिखाई दिय। धीर धार वालाद्या यह समझ पाया कि २२ जून का सुबह के साढे तीन बजे फासिस्टा न काल सागर स बाल्टिक सागर तक क बहुत बड मार्चे पर हमला शुरू किया। इस वक्त काई फील्डमार्शल फान बाक, गुदेरियान श्ताउस और बोट सीमावर्ती नगरा की आर बढ जा रह थे। लकिन किन नगरा की आर– यह समझ म नही आया। इसक बाद तागा नाच की धुन बजन लगी, रेडिया पर गडगड और सीटिया का शार मचन लगा। वास्या न कहा–

"यह असम्भव है। उकसावा है, बकवास है।"

तडक ही वालाद्या न टाड जीन का तार भेजा, जिसम वास्या बेलाव का अस्पताल का बडा डाक्टर नियुक्त करन का अनुराध किया। दा घण्टे बाद जवाब आया और वालोद्या का स्पष्ट हो गया कि वह सावियत सघ जा सकता है। खास तौर पर इसलिए कि बोगास्लाव्स्की ता मास्का जा भी चुक थ।

तूश न भारी मन स वालाद्या को बताया कि कारवा खारा स अगले दिन रवाना होगा। उसन कहा कि वह सामान, आदि समटन म मदद करने का तैयार है।

"मुझे ता सामान ही कौन-सा समटना है?' वोलोद्या ने जवाब दिया। 'बस, यह सफरी थला ही तैयार करना है। तूश आप जाये, याद्दी क्या कम काम है आपके पास?

तूश चली गयी।

वोलोद्या ने रेडियो पर कुछ और सुन पाने की कोशिश की, मगर हिटलर के किसी पुछलग्गू फासिस्ट की कुत्ते जैसी भूक ही सुनाई दी। कुछ भी न समझ पाने पर उसने रेडियो बन्द कर दिया। "खैर, कोई बात नही," वोलोद्या ने अपने को तसल्ली दी। "घबराने की कोई बात नही है। ज्यादा से ज्यादा एक महीने बाद मैं मोर्चे पर पहुच जाऊगा। इस तरह से परेशान होना ठीक नही।"

इसी क्षण वोलोद्या को दाज़ी सामने दिखाई दिया। उसके चेहरे पर हवाइया उड रही थी। वह काफी देर से दरवाज़े के पास खडा था। जब उसने कुछ कहने की कोशिश की, तो उसके जबडे का निचला भाग काप रहा था और उसकी आवाज़ गले मे ही अटक सी गयी।

"खाक भी तो मेरे पल्ले नही पडा!" वोलोद्या ने झल्लाकर कहा।

"खेमे के ऊपर काली झडी," मादी दाज़ी ने रुधी सी आवाज़ मे कहा। "खारा मे जल्द ही मार्मोट रोग आ जायगा। जावान इलीर मे तो काली मौत मडरा भी रही है। जाओ, तुम जाओ, साथी डाक्टर। मैंने बूढे को यहा नही आने दिया, वह यह भयानक खबर लाया है और खुद उसकी अपनी मौत भी लाज़िमी है। फिर वैसा ही होगा, जैसा कि कई साल पहले हुआ था, जब खारा मे भी सभी मर गये थे, छोटे से छोटे बच्चे तक भी। जो वक्त पर भाग नही गये, वे सभी मर गये।"

यहा प्लेग को ही मार्मोट रोग या काली मौत कहा जाता था। १९१६ मे यह महामारी आखिरी बार और बहुत भयानक रूप मे फैली थी। वोलोद्या यहा के पुराने वासियो से कई बार यह सुन चुका था कि कैसे तब यहा का राज्यपाल भाग गया था, लोग कैसे डर दहशत से पागल हो गये थे और लाशें उठानेवाला भी कोई नही रहा था

बहुत व्यथित, धस गालो वाला बिना दाढीवाला गजा बूढा अस्पताल के चबूतरे के करीब उकडू बैठा हुआ दादा अबाताई, आगू, सोफिया इवानोव्ना और डाक्टर वास्या को मार्मोट रोग के बारे मे बता रहा था। तूश दुभाषिये का काम कर रही थी।

इस वसन्त मे मार्मोट (जगली चूहा या गिलहरी जैसा फ़रवाला एक जगली जानवर) के शिकारियो को यह खबर मिली कि व्यापार-केन्द्रा म मार्मोट की फर के लिए पिछले साल के मुकाबले मे इस बार पाच छ गुना ज्यादा कीमत मिलती है। यह खबर सीमा के पार स आई, और सूर्योदय के देश के राज्यपाल क निवास स्थानवाल पस वा नगर के शिकारी यह खबर लाये थ। उन्हाने बताया था कि मार्मोट की खाल का ऐसे सवारा और रगा जाता है कि फर व्यापारी उन्हे बेचकर बेतहाशा पैसे कमा रहे हैं। जाहिर है कि शिकारियो ने भी मालामाल होने की सोची। वे सभी मार्मोटा का, यहा तक कि उन्ह भी पकडने लगे, जो बोलते नही थे। यह ता सभी जानत है कि मार्मोट अगर बालता नही है, तो उस छूना नही चाहिए, क्योकि वह बीमार हाता है। स्वस्थ मार्मोट बडबडाता रहता है–"डर नही, डर नही"–यह बात भी सभी का मालूम है

बूढे ने तामचीनी के सफेद मग से पानी पिया और पाइप सुलगा लिया।

"इससे कहो कि वह बताय, जा उसन अपनी आखा स देखा है।" बोलाद्या ने कहा।

मगर बूढे न उतावली नही की। शिकारियो ने बीमार मार्मोटा को मारा ही नही, उनका मास भी खाया। सबसे पहल मुग वो का छोटा भाई बीमार हुआ। वे दोना भाई–बडा और छोटा भी–मार्मोटो के बिलो पर फन्दे लगान म बडे माहिर और बढिया निशानबाज भी माने जाते थे। छोटा मुग-वो स्तेपी म बीमार हाकर मर गया। बडे न उसे दफना दिया।

"गिलटीवाली प्लग है!" साफिया इवानोव्ना न कहा।

"भाई को दफ़ना दिया और इसके बाद काफ़ी दर तक शिकार करता रहा, उसकी किस्मत ने साथ दिया," नूश ने अनुवाद किया। "लेकिन कुछ दिना बाद लागा ने उस अपन खेमे म ऐसे डालत-लडखडाते हुए जात देखा, मानो वह नशे म धुत्त हा। अगर आदमी एस लडखडाये, तो यही समझना चाहिए कि सम्भवत वह मार्मोट रोग से पीडित है और जल्द ही वह अपनी 'आयु से वचित' हो जायेगा।"

"बड़े को फेफड़ावाली प्लेग हुई थी। अक्सर ऐसा ही होता है," सोफिया इवानोव्ना ने समझाया। "ऐसी स्थिति में सक्रिय सार्वजनिक क्षेत्रों में स्पष्टीकरण का काम करना चाहिए।"

'सक्रिय, निष्क्रिय!" डाक्टर वास्या झुंझलाहट से बड़बड़ाया।

बूढ़े ने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा—"बड़ा मुग-वो तो अपने खेमे में भी नहीं जा पाया और सिर्फ इतना ही कह सका कि उसके खेमे के ऊपर बांस पर एक काला कपड़ा लटका दिया जाय। स्तेपी के लोग जानते हैं कि अगर किसी खेमे के ऊपर काला कपड़ा लटका हुआ है, तो इसका मतलब है—वहां मौत मंडरा रही है और किसी को भी खेमे के नजदीक नहीं जाना चाहिए।"

"इस नागरिक से पूछो कि क्या वह रोगियों के सम्पर्क में आया है?' सोफिया इवानोव्ना ने तूश को यह जानने का आदेश दिया।

तूश यह समझ नहीं पायी।

"उसने यह काली झंडी ही देखी है या वहां, उस जगह, उस खेमे में भी गया था?' वास्या ने तूश को समझाया।

बूढ़े ने व्यंग्यपूर्वक मुस्कराकर जवाब दिया कि मार्मोट रोग के करीब भी उसे नहीं फटकना चाहिए, इस बात की उसे अक्ल है। तब, बहुत साल पहले उसके सभी रिश्तेदार इस रोग से मर गये थे और वह अच्छी तरह जानता है कि यह कैसी खतरनाक बीमारी है।

सुबह को बड़ा मुग-वो खून की कै करने लगा। कुछ दिनों बाद सभी खेमों के ऊपर काले कपड़े लटकते नजर आने लगे। मार्मोट रोग जावान-इलीर में फैल गया था। बूढ़े ने अपने घोड़े पर जीन कसा और यहां महान सोवियत शमान के पास चला आया। सोवियत शमान के बारे में उसने तरह-तरह के अच्छे किस्से सुने थे। अगर रूसी शमान सचमुच ऐसा ही महान है, जैसा कि लोग उसके बारे में कहते हैं, तो वह मदद करे। और अगर वह कुछ नहीं कर सकता, तो फ़ौरन साफ कह दे। इसके बाद उसे परेशान नहीं किया जायेगा।

"नाम कमाना चाहा, तो उसका मोल भी चुकाओ!" सोफिया इवानोव्ना इतना कहकर अस्पताल में चली गयी।

वोलोद्या ने तूश से बूढ़े को यह बताने के लिए कहा कि फिलहाल वह खुद तो कुछ नहीं कर सकता, लेकिन बहुत-से डाक्टर, उनका

पूरा दल बुलाने का यत्न करेगा, जो अवश्य ही मदद करेंगे। वास्या और तूश को बूढ़े को दूसरों से अलग रखने का आदेश देकर खुद खारा प्रान्त के राज्यपाल उदावा से मिलने चला गया।

राज्यपाल ने बड़ी रुखाई दिखायी। वह इसलिए कि सूर्योदय के देश की सीमा रेखा बिल्कुल निकट थी और सीमा के पार सूर्योदय के देश का शासक रहता था। अगर हिटलर रूस को हड़प गया तो सूर्योदय का देश खारा पर कब्जा कर लेगा और तब वहां का शासक रूसी डाक्टर के साथ अच्छा बर्ताव करने के लिए उसकी अक्ल ठिकाने करेगा। इसलिए उदावा ने तो वालोद्या को बैठने तक के लिए नहीं कहा। किन्तु मार्मोट रोग फैलने की बात सुनते ही राज्यपाल का रवैया एकदम बदल गया। उसने चिल्लाकर वोलोद्या के लिए चाय लाने को कहा और अपने सेक्रेटरी को फौरन स्वास्थ्य विभाग के साथ टेलीफोन लाइन मिलाने का आदेश दिया। स्वास्थ्य विभाग से कोई उत्तर नहीं मिला और वालोद्या ने इस बात से लाभ उठाते हुए राज्यपाल को टाड-जीन के घर पर टेलीफोन करने की सलाह दी।

सौभाग्य की बात थी, बहुत बड़े सौभाग्य की बात थी कि टाड जीन ने ही रिसीवर उठाया और वालोद्या ने खुद उसे वह सब कुछ बताया, जो जावान इलीर के इलाके में हुआ था। रिसीवर में तरह तरह का शोर और आवाजें सुनाई दे रही थी। टोड जीन खामोश रहा।

"मास्को के महामारी रोकथाम संघटन से मदद करने के लिए कहिये," वोलोद्या ने कहा। "वहां से मदद मिल जायेगी।"

"जंग चल रही है!" टाड जीन बोला।

"वहां से मदद मिल जायेगी," वालोद्या ने दोहराया। "जरूर मदद मिल जायगी! मैं आपको पक्का यकीन दिलाता हूं, सुनते हैं, साथी टाड-जीन? वहां समझदार लोग हैं, वे समझते हैं, वे समझ सकते हैं कि आपके जनतन्त्र पर कितनी बड़ी मुसीबत आ गयी है। वे जरूर ही मदद करेंगे।"

"अच्छी बात है, ऐसे ही सही," टोड जीन ने सोचते हुए और धीरे धीरे जवाब दिया तथा राज्यपाल को रिसीवर देने का अनुरोध किया।

पन्द्रह मिनट बाद राज्यपाल ने गरिज़न के कमाडर, दुबले-पतले तथा पके बालोवाले लेफ्टीनेन्ट को जावान इलीर क्षेत्र को घेर म लन का आदेश दिया ताकि वहा से न तो कोई आ सके और न कोई वहा जा सके। लफ्टीनेन्ट ने चुपचाप यह आदेश सुना, एड़िया बजायी और रुपहली तथा सफेद फौजी टोपी के लम्बे छज्जे को हाथ मे छूकर बाहर चला गया। और राज्यपाल के घर के पिछवाडे मे इसी वक्त ऊटो, घोडो और घोडा-गाडिया पर सामान लादा जा रहा था और राज्यपाल की बेटिया, बहुए और बीवी—सभी औरतें रो धो रही थी। उन्हे यहा से, छ कमरो के इस महल से, जिसके आगन मे जाडा के लिए दो खेमे भी थे, पहाडा पर भाग जाने की बात सोचकर डर महसूस हो रहा था।

बोलोद्या को रात के वक्त कई पृष्ठो का लम्बा तार मिला। टाड जीन न खबर दी थी कि मास्को से मदद मिल गयी है, कि दवाइया, डाक्टरी साज़-सामान और डाक्टरो को लेकर हवाई जहाज़ वहा से रवाना हो गय हैं। प्रोफेसर बारिनोव इस डाक्टर दल के मुखिया थे। मेहनतकश पार्टी की केन्द्रीय समिति के सेक्रेटरी के साथ टाड-जीन खुद अगले दिन हवाई जहाज़ स वहा पहुचनेवाला था। तार मे आगे वे सलाह और हिदायत थी, जो प्रोफेसर बारिनोव ने हवाई जहाज़ से दी थी।

इस फौरी तार को बार-बार पढते हुए बोलोद्या को बगल के कमरे मे सोफिया इवानोव्ना की आवाज़ सुनाई दी, जो तुश को प्लेग से बचने का सूट पहनने की विधि सिखा रही थी।

"हा, मैं जानती हू कि आपको बडी ऊब महसूस हो रही है," सोफिया इवानोव्ना अपने नीरस स्वर म कह रही थी, "लेकिन हमारे काम म अपने को रोग से बचाये रखने के उपाय बहुत बडी भूमिका अदा करते हैं। यह कोई मर्दानगी की बात नही है कि आदमी अपने को प्लेग की छूत लगा ले और अपनी लापरवाही की वजह स मौत के मुह म चला जाये। सबसे पहले चोगा पहना जाता है, देख रही हैं न? इन फीतो स पतलून की मोहरिया को बहुत कसकर बाध देना चाहिए।"

"पिस्सुओ स बचने के लिए?" तुश ने धीरे-से पूछा।

"मार्मोटो के पिस्सू मार्मोटो के मर जाने पर उनकी लाशो तथा

विला का छोड देते है," सोफिया इवानोव्ना माना किसी किताव से पढ़ती जा रही हो, "तथाकथित मुक्त होनेवाले पिस्सू बडी खुशी मे लोगा के शरीरा पर जा वसते है। अव यह देखिये साथी तूश, टोपी के निचले सिरे को लवादे के कॉलर के नीचे ऐसे दवा दना चाहिए। और आखिरी चीज है सास लेने का नक़ाव। नाक व दाना ओर की खाली जगहो का रूई के गोला से इस तरह भर लेना चाहिए "

वोलाद्या न बरामदे मे आकर सोफिया इवानोव्ना के कमरे के दरवाज़े पर धीरे से दस्तक दी। साफिया इवानोव्ना और तूश – ये दोना ही प्लेग से वचने के सूट पहने कमरे के बीचोबीच खडी थी।

"यह सब क्या है?" वोलोद्या ने पूछा।

"बात यह है कि मैं महामारी विशेषज्ञा हू ' साफिया इवानोव्ना ने समझाया। "इसलिए मेरे दिमाग म यह ख्याल आया कि तूश के साथ हम दोनो प्लग के इलाक़े म जाये, शव परीक्षा करे, सारी स्थिति का जाच और मदद करे। सूट हमारे पास हैं, माइक्रोस्कोप (खुर्दवीन) भी है, लाइसोल, कार्वोलिक एसिड और सवलीमेट भी हमारे पास है। वस ता आप यहा के बडे डाक्टर है लकिन मरा ख्याल है कि '

"आप जायें!" वोलाद्या न कहा।

'शायद हम दौर पर जाने के अनुमति-पत्र की आवश्यकता हागी?"

"नही, साफिया इवानोव्ना, इसकी ज़रूरत नही है। वहा उस दखनेवाला ही कोई नही है।"

"कसा जगलीपन है!" साफिया इवानाव्ना ने कधे झटके। "विल्कुल मध्य युग, सामन्तकाल की सी वात है। मैं ता स्वास्थ्य और सफाई के मामले म सक्रियता दिखानवाले लोगा से वातचीत करना चाहती थी, मैंने ता कई और वात भी सोची थी "

उनींदे-से वास्या न भीतर झाककर पूछा –

"तो मैं भी चलू?"

"किसलिए?" साफिया इवानोव्ना न पूछा। 'चीर-फाड की गयी लाश का दफ़नान का काम हम दानो कर लगी। सूट भी हमारे पास दो ही हैं। अस्पताल में डाक्टरा की कमी की स्थिति पदा करन का हम अधिकार नही है। वस भी ऐसा करना अक्लमन्दी नही हागा।

हमेशा समझदारी से काम करना चाहिए, वेसमझी नही करनी चाहिए। हा, सयोगवश यह तो साफ ही है कि इस किस्स के पूरी तरह खत्म होने से पहले मैं यहा नही लौटूगी। शायद आप लोगो को मुग वो के इलाके मे ही हमारी खोज कग्नी होगी "

रवाना होने के पहल माफिया इवानोव्ना एक खत लेकर वालाद्या के पास आई और बोली—

"अगर मुझे वहा कुछ हो जाये, ता कृपया यह खत मेरी बेटी का भेज देना। इस दुनिया मे बस वही मेरी एक अपनी है। उसके बाप ने हमे छाड दिया और अब उसका दूसरा परिवार है। मै और नूस्या अकेली ही रहती हैं। पर खैर, यह ता कोई ऐसी बात नही है' आपसी प्यार के आधार पर ही शादी होनी चाहिए। अगर ऐसा प्यार नहा है, तो शादी का कोई मतलब नही रहता। नमस्त, व्लादीमिर अफानास्येविच "

और ये दोना चली गयी—नाग्री, दुबली-पतली आर काले बाला वाली तूश तथा भारी भरकम सोफिया इवानाव्ना। य दानो घोडो पर सवार हाकर चली गयी तथा इनके पीछे धाडो पर लदे हुए थे तम्बू, दवाइया छिडकने के यन्त्र, फावडे, दवाइया आर विशेष, ह्वाबन्द डिब्बा म खाने पीने की चीजे। विदा हाते वक्त साफिया इवानाव्ना ने कहा—

"व्लादीमिर अफानास्यविच, जिसे आप 'कागजी काम' कहत है, उसकी तरफ ध्यान देना न भूलिये। मैंने अभी अभी उस कुछ ठीक-ठाक किया है और अब अचानक छाडकर जाना पड रहा है "

"कहिये, क्या कहते है इस औरत के बारे मे?' जब छाटा-सा कारवा आखा से ओझल हो गया, ता वोलाद्या ने वास्या स पूछा।

"इससे कभी ऐसी उम्मीद नही थी!" डाक्टर वास्या न जवाब दिया।

आदर्श की साधना

शाम हान का थी, जब खारा के लागा ने पहला हवाई जहाज देखा। यह उस हवाई जहाज जसा ही था, जिसम कभी वोलोद्या के दिवगत पिता अफ़ानासी पत्रोविच अपन शहर आय थ। खारा म हवाई

अड्डा नही था और इसलिए हवाई जहाज देर तक अपने नीचे उतरने के लिए जगह ढूढता रहा। वोलोद्या को लगा उसका इजन मानो चिन्ता और प्रश्नसूचक ढग से शोर मचा रहा था। हवाई जहाज कई बार ज़मीन के बिल्कुल नज़दीक पहुचकर फिर से ऊपर चला गया।

आखिर वह ज़मीन पर उतर ही गया।

इस हवाई जहाज म से तीन आदमी बाहर निकले – एकदम नौजवान नकचप्पा हवावाज, जिसके माथे पर विरजित वालो की सफेद लट लहरा रही थी, टोड-जीन और मेहनतकश पार्टी की केन्द्रीय समिति का सेक्रेटरी। साही जैसे छोटे छाटे तथा घन वालावाला सेक्रेटरी लगभग पचास साल का हृष्ट-पुष्ट आदमी था। उसन प्रान्त के राज्यपाल स हाथ नही मिलाया, उसे एक तरफ को ले गया और वहा दवी घुटी, मगर गुस्से से भरी आवाज मे उसके साथ बातचीत करन लगा। राज्यपाल ज्दावा धीरे-धीरे कुछ कहता और सिर झुकाता जा रहा था। टोड-जीन ने शब्दो पर जोर देते हुए वोलोद्या को बतलाया –

"केन्द्रीय समिति के साथी सेक्रेटरी अब खुद यहा काम करेगे। बहुत ही कमाल के साथी है ये। हमारे विरोधिया ने उन्ह अनक सालो तक हथकडिया-वेडिया पहनाकर लकडी के पिजरे म वन्द रखा, हा, सच। हमारे सभी लोग इन्हे जानते है, महनतकश इन पर भरासा करत है और इस तरह के लाग इनसे डरते कापते है। डरत रह।"

केन्द्रीय समिति का सेक्रेटरी घोडे पर सवार होकर लेफ्टीनन्ट के साथ महामारी रक्षा घेरा देखने चला गया। खारा के लोग मशालो की रोशनी म रात भर काम करते और भारी परिवहन हवाई जहाजा के उतरने के लिए हवाई अड्डा बनाते रहे। ये हवाई जहाज सराताव से दिन रात उडे चले आ रह थे, ताकि काली मौत को रोक सक। माथे पर वालो की लटवाले हवावाज पाशा ने सुवह के वक्त तली हुई मुर्गी खात और उसे ठण्डे दूध के साथ नीचे उतारत हुए वालाद्या से पूछा –

"यह प्लेग क्या सचमुच ही इतना भयानक छूत का रोग है? क्या? शायद राग से इसका आतक ज्यादा है। मेरे यहा तो पूल्का नाम का कुत्ता था, बहुत ही लाडला। उसे भी प्लेग हो गयी थी और मैं, मरी मा और वहन उसे गोद म उठाय रहत थे। हम तो कुछ

नही हुआ। किसी को छूत नही लगी! मेरी बहन तो, जिसे बहुत ही दया आती थी, कुत्ते का चूम तक लेती थी "

"वह दूसरी किस्म की प्लेग है!" वोलाद्या ने कहा।

"दूसरी किस्म की प्लेग से क्या मतलब है? प्लेग तो प्लेग है!" उसने अपनी लट झटकी।

कुछ रुककर उसने कहा—

"न जान क्या मुझे हड्डी चिचोडना इतना अधिक पसन्द है? क्या यह आदत मुझे अपने बुजुर्गों से खून म मिली है, साथी डाक्टर? क्या इसका कोई वैज्ञानिक स्पष्टीकरण है?"

वोलोद्या ने उससे युद्ध की स्थिति के बारे मे पूछा।

"फिलहाल तो व बढते जा रहे है," पाशा न कहा। "हमे काफी जार से पीछे धकेलते जा रहे है! हमने कुछ इलाके, जाहिर है कि वक्ती तौर पर, खो भी दिये है। लेकिन मरे ख्याल म तो आपकी इस प्लेग जसा ही मामला है। ठीक ही उसे खाकी प्लग कहा जाता है। जब तक हम अच्छी तरह से सगठित नही हो जाते, यह खाकी प्लेग हमे हडपती जायेगी। लेकिन जैसे ही हम पूरी ताकत से उसके सामने डट जायेंगे, सब कुछ ठीक ठाक हो जायगा। सबसे बडी चीज तो यह है कि हम बौखला न उठे और अपनी हिम्मत बनाये रख। आखिर प्लेग सारी मानवजाति को तो नही हडप सकती! इसी तरह फासिज्म भी सोवियत सत्ता का खात्मा नही कर सकना।"

कुछ देर बाद टोड जीन आया और उसने वोलाद्या से पूछा कि क्या मास्को से आनेवाले डाक्टरो के सम्मान म फौजी सलामी दी जाये? कूटनीति की किताबा मे इस सम्बन्ध मे क्या लिखा हुआ है? वोलोद्या को यह मालूम नही था। हवाबाज पाशा को भी इसकी जानकारी नही थी, लेकिन उसने इतना जरूर कहा कि ऐसा करन म "कोई हज" नही है। केन्द्रीय समिति के सेक्रेटरी न कुछ सोच विचारकर यह फसला किया कि डाक्टरो के सम्मान म फौजी सलामी भी दी जाय और बड पर 'इटरनेशनल" की धुन भी बजे।

जैसा कि पहले से तय था, सुबह के छ बजे वोलोद्या घोडे पर सवार होकर तिराहे के बीच बहुत बडे सफेद पत्थर के करीब पहुचा।

यहा रोग रक्षा घेरे की चौकी थी और बन्दूक लिय हुए जनतत्र के सनिक किसी को भी जावान इलीर क्षेत्र से खारा म नही आने दे रह थे।

घोडे पर सवार तूश इन्तजार कर रही थी। बडे-बडे अयालवाला उसका छोटा-सा घोडा सिर झटककर पशुओ को डसनेवाली मक्खिया को दूर भगा रहा था। हवा का रुख वोलोद्या के अनुकूल था, इसलिए उसे चिल्लाना नही पडा। मगर इसके विपरीत बहुत जोर लगाकर वोलने से तूश का तो चेहरा भी लाल हो गया।

"लाइसोल चाहिए," उसने चिल्लाकर कहा। "बहुत अधिक लाइसोल चाहिए! फेफडावाली प्लेग है, हा। वहुत-से मर चुके हैं, रोगी वहुत हैं, उन्हे खिलाना पिलाना चाहिए, एक-दो डाक्टरो से काम नही चलेगा, बहुत बडी महामारी है। और वैक्सीन चाहिए, बहुत सारी वक्सीन "

तूश के काले वाल हवा म लहरा रहे थे। रोग-रक्षा घेरे की चौकी के सनिक इस जवान औरत को भय और प्रशसा की दष्टि से देख रहे थे।

"शावाश, तूश!" वोलोद्या ने चिल्लाकर कहा। "जल्द ही हम सभी तुम्हारी मदद को आ जायेंगे। रूस से डाक्टर, वहुत-से डाक्टर उडे आ रहे है। हवा म, हवाई जहाजो मे! थोडा और डटी रहा, तूश, कुछ घण्टे और!"

"हम डटी रहगी!" तूश ने चिल्लाकर जवाव दिया।

और चावुक सटकारकर अपने घाडे को उस तरफ भगा ले चली, जिधर खेमा के ऊपर काले क्पडे लटक रह थे।

इसी वक्त खारा मे हवाई जहाजा के उतरने के लिए वनाये गय मदान म पहला परिवहन हवाई जहाज उतर भी चुका था। इस हवाई जहाज के दायें-वायें पहलुओ और पखो पर रेड ग्राम तथा सोवियत सघ के परिचय चिह्न वन हुए थे। सफेद फौजी जाकेटे पहने सनिक, जिनके कधा पर फीतिया तथा रुपहले अधिकार चिह्न लगे थे, वन्दूकें सीधी करके फौजी सलामी दने को तयार हो गये। वड-मास्टर न अपनी छडी हिलायी और छाटा-सा वैंड "इटरनशनल" की धुन वजान

नगा। वोलोद्या को अपना गला रुधता सा प्रतीत हुआ। सम्भवत उनींदी रातो ने अपना रग दिखाया था।

'इटरनेशनल' के गूजते स्वरो के वातावरण मे हवाई जहाज का दरवाज़ा खुला और धातु की सीढी बाहर लटकायी गयी। टोड जीन और केन्द्रीय समिति का सेक्रेटरी अपनी टोपियो के छज्जो के साथ हाथ सटाये निश्चल खडे थे।

अगर सभी शोषक, जल्लादो
पर भारी तूफान घिरे,
तो भी सूरज चमके हम पर
किरणे मृदु खिलवाड करे

बिल्कुल साधारण-से रूसी डाक्टर सफर मे सिलवटे पडे कोट और बरसातिया पहने तथा सफरी थैले, पोर्टफोलियो और सूटकेस उठाये हुए हवाई जहाज के करीब एक कतार मे खडे होकर "इटरनेशनल" गा रहे थे। वे सम्मानसूचक सैनिक अभिवादन से अपरिचित थे, अथवा यह कहना अधिक सही होगा कि उन्होने ऐसे अभिवादन की आशा नही की थी। इसलिए जब पक्के बालोवाला लफ्टीनेंट खास ढग से ऊचे-ऊचे कदम उठाता हुआ अपने सैनिको को मेहमानो के करीब से लेकर गुजरा, तो वे क्षण भर को स्तम्भित रह गये। प्रोफेसर बोगिनोव ने रिपोर्ट सुनकर शिष्टतापूर्वक कहा—

"बहुत धयवाद देता हू आपको। बडी खुशी हुई।"

सैनिको के जाने पर बुनी हुई जाकेट पहने, तोदवाले एक बुजुर्ग डाक्टर ने बोलोद्या से पूछा—

"तो क्या यही महामारी फैली हुई है?'

दूसरे, अपेक्षाकृत कुछ जवान डाक्टर ने कहा—

"मुझे लगता है कि हवाई जहाज के हिचकोलो से मेरी तबीयत कुछ खराब हो गयी है।'

एक जवान डाक्टरनी ने डाक्टर वास्या से कहा—

'गर्मागर्म शोरबा खाने को कितना मन हो रहा है। मास्को मे पिछले चार दिनो से दोपहर का खाना नही खा पायी। हवाई जहाज मे सैडविच ही मिलते रहे। यहा हम कुछ खिलायेंं पिलायेंगे या नही?'

खिलाने पिलान की पूरी तैयारी थी। "मदाम बावचिन" ने रात भर म वह सब कुछ कर डाला था, जो उसके बस मे था। दादा अबाताइ न उसकी मदद की थी, और भूतपूर्व शमान ओगू ने आटा गूधा था। यही, हवाई जहाजो के उतरने के मैदान के करीब ही मेजे लगा दी गयी। वोलाद्या की बाते सुनते हुए प्रोफेसर अर्कादी वालेन्ती नोविच बारिनोव बडे मजे से पत्ता गोभी का शोरबा खा रहे थे। और प्रोफेसर के दुवले पतले चेहरे, उनकी पुराने ढग की दाढी, चश्मे की टूटी कमानी और आखो के करीब झुरियो को एक पहलू से देखते हुए वोलोद्या मन ही मन सोच रहा था कि बीसवी सदी म प्लेग की एक भी ता ऐसी महामारी नही थी, जिसमे इस दुबले-पतले और छोटे-स आदमी ने हिस्सा न लिया हो। ओदेस्सा मे गामालेय न, भारत और मगोलिया म जाबोलोत्नी ने इनसे हाथ मिलाया, यह देमीन्स्की स परिचित थे, इन्होने मचूरिया मे प्लेग के रोगिया का इलाज किया और अस्त्राखान की महामारी म मरते मरते बचे। इन्होने त्रोश्तादत के करीब प्लग की प्रयागशाला मे काम किया, यह डाक्टर विज्निकेविच को जानते थे और इन्होने उसे तथा डाक्टर श्राइबेर को अपने हाथो से मिट्टी दी। फिर भी मैदान मे डटे रहे और अब सत्तर साल की उम्र म भी प्लग के खिलाफ जूझ रहे है।

"हा, हा, कहते जाइये।" वालोद्या को सुनते हुए बारिनोव सिर हिलाते जा रहे थे। "हा, हा, समझ गया "

जब तक डाक्टरो, नर्सो और परिचारक-परिचारिकाओ का खाना-पीना खत्म हुआ, तब तक दूसरा और फिर तीसरा हवाई जहाज साज-सामान लकर आ गय। हजारो खारावासी हवाई जहाजो के उतरन के मदान को घेरे खडे थे, अद्भुत मेहमानो के प्रति आदर भाव दिखाते हुए घुसर-फुसर कर रह थे, पर चूकि सभी कानाफूसी कर रहे थे, इसलिए ऐसा प्रतीत होता था मानो हवा सरसरा रही हो। बस मुख्यतया उनकी घुसर-फुसर वोलोद्या के बारे म ही थी। यह तो इसी आदमी म इतनी ताकत है कि इसके चाहते ही इतन बडे-बडे हवाई जहाज उडत हुए यहा आ पहुचे। भूतपूर्व शमान ओगू भीड म स रास्ता बनाता हुआ हर आदमी के कान म यह कह रहा था—

"सब कुछ कर सकता है यह महान सोवियत डाक्टर वोलाद्य
मैं याही तो उसकी मदद करने को राज़ी नही हो गया था। बहुत
तक उसने मेरी मिन्नत समाजत की, तब में मान गया। यकीन मानि
जल्द ही मैं उससे सब कुछ सीख जाऊगा!"

शाम को वोलोद्या सरातोव से आये इन प्लेग विशेषज्ञो के स
महामारी के गढ – जावान इलीर – मे पहुच गया। प्राफेसर बारिनो
टोड-जीन और वोलोद्या के घाडे एक दूसर के पास पास चल रहे
इसीनिए बारिनोव ने मजाक म इन तीना का "तीन सूरमा" क
था। इनके पीछे पीछे दूसरे डाक्टर, नर्सें, परिचारक परिचारिकाए अ
कीटाणुओं का नाश करनेवाले लोग दवाए छिडकने वे अपने यन्त
बातल, सास लने के नकाब और कनस्तर, आदि लिय घोडो
चुपचाप चले आ रहे थे। वोलोद्या न जब मुडकर देखा, तो उसे ल
कि मानो एक अनुशासित, शस्त्रास्त्र स अच्छी तरह लस, अ
काय म दक्ष और अजेय सेना बढी जा रही है। उसे इस चेत
से गव की अनुभूति हुई कि वह खुद भी इस सना का ए
सैनिक है।

डूबते सूरज की गुलाबी राशनी म जब काल मनहूस कपडे सा
नज़र आने लगे, तो उनमे कोई तीन सौ मीटर की दूरी पर बारिनो
न "प्लेग विरोधी सूट पहन लो" का आदेश दिया। यह आदेश
वोलोद्या को फौजी हुक्म जैसा लगा। उसन महसूस किया मानो य
"धावा वोलन" का सकेत था।

लाग जल्दी जल्दी रबड के ऊचे जूत और सूट पहनन लगे, फी
कसने, हसी मज़ाको क बिना चुपचाप एक दूसरे की मदद करने लगे
इस अनुशासन और शान्ति न भी वोलोद्या को बार बार सेना की या
दिलायी।

"अरे, वाह," प्रोफेसर बारिनोव ने अचानक डीग हाकी। "मैं
यह ता कभी सोचा ही नही था कि अभी भी मैं घाडे की सवारी क
सकता हू। गुदास्थि म भी अब वैसे दद नही हाता, जस जवानी के
दिना म होता था।"

घाडे को लगाम स पकडकर ले जाते हुए उन्होंने झुझलाकर इतना
और जोड दिया –

"शोरवा ज्यादा नही खाना चाहिए था। कितनी बार मन मे यह प्रतिज्ञा की है कि चर्बीवाली चीजो का अधिक उपयोग नही करूगा ,

डडा पर काले कपडोवाले खेमे अधिकाधिक निकट आते जा रह थ। काफी दर से बिना दुही एक गाय खरखरी और दद भारी आवाज म रभाती हुई वोलोद्या के करीब भाग रही थी। वारिनाव न उससे कहा—

"दूर भाग गऊ! हम तुझे दुहना नही आता।"

सास लेने के नकाव के नीचे स उनकी आवाज़ दबी-घुटी सी सुनाई दी।

साफिया इवानाव्ना ग्रार तूश पहले, बडे सारे खेमे के पास खडी थी। थकान के कारण वे मुश्किल से ही खडी रह पा रही थी। सोफिया इवानोव्ना स पूरा हाल चाल सुनन के बाद वारिनाव न उसे और तूश को आराम करन का आदेश दिया। वालोद्या का फिर से यह महसूस हुआ कि ये गैरफौजी प्राफेसर एक जनरल की तरह हुक्म दे सकते हैं। डाक्टर लावोदा, दल का "क्वाटर-व्यावस्थापक", डाक्टरा के लिए शिविर तैयार करने के काम म जुटा हुआ था। रहन के लिए तम्बू-घरा, प्रयागशालाओ और गादामो की भी व्यवस्था की जा रही थी। एक झील और कीक-जूब की सुदर चट्टाने भी करीब ही थी। यद्यपि रात हाते तक सब व्यवस्था हो गयी थी, तथापि काई भी डाक्टर, नस या परिचारक सोया नही। अपनी टार्चो से अधेरे तथा सुनसान खेमा का रोशन करते हुए वे लाशो का वाहर लाते, स्थाना का साफ और कीटाणुमुक्त करत रह, रोगिया को खिलाते पिलाते, उनके फेफडा, दिला और नब्जो को जाचते तथा वारिनाव और उनके बडे सहायक शुमीलाव के आदेशा की राह देखते रहे। सास लेन के नकाव और आखा की सुरक्षा के चश्म लगाये तथा रवड के ऊचे जूत पहने डाक्टरा की सफेद आकृतिया अटपटे ढग से, किन्तु दवे पाव हिलती डुलती रहा, रोगिया की वुदवुदाहट और आह-कराह डाक्टरा की धीमी धीमी और दवी घुटी आवाजे, दवाइया छिडकन के यन्त्रो की सू-सू और आधी रात स शुरू हो गयी वारिश की उदासी भरी रिमझिम की आवाज से घुलती मिलती रही।

प्लेग विराधी सूटा म गर्मी महसूस हो रही थी, चिपचिपा पसीना चेहरे, पीठ और कधा पर वहा आ रहा था, दस्तानावाले हाथा म

पिचकारी मुश्किल से पकडी जा रही थी, यहा तक कि स्टेथास्कोप का उपयोग भी असुविधाजनक था। वालोद्या की कनपटिया म खून बज रहा था और सुबह होते तक उसका सिर चकराने लगा। लेकिन अगर प्रोफेसर वारिनोव डटे हुए थे, तो वालोद्या कैसे मैदान छोड सकता था?

उस सारी लम्बी रात को वे घोडा पर एक शिविर से दूसरे तक जाते, स्वस्थ लोगो का रोगियो से अलग करते, हरारत जाचते और वैक्सीन के टीके लगाते रहे। उन्होने यह तय किया कि रोगियो को कहा अलग रखा जाये, कहा खाना पके और स्वस्थ लोग कहा रहे। टोड-जीन यातनाग्रस्त और डरे-सहमे लोगो को कडाई से शिक्षा देता रहा, उसकी आवाज अबाध शक्ति से गूजती रही और कही तथा किसी ने भी उसकी बात का विरोध नही किया।

परेशानी की इस रात म जब वे चौथे शिविर म पहुचे, तो वोलोद्या ही सबसे पहले उस खेमे मे गया, जहा सिर्फ मुर्दे ही पडे थे। नीचे झुककर टार्च की रोशनी म उसे एठन से खुले हुए सुन्दर और मजबूत दात, प्राण निकल जाने के कारण सफेद और ज्योतिहीन हुई आखे और मुडी हुई बाहे दिखाई दी। मौत के इस सन्नाटे म वोलोद्या को मानो किसी बच्चे के रोने की बहुत ही क्षीण, बडी मुश्किल से सुनाई देनेवाली आवाज का आभास हुआ।

"खामोशी!" वोलोद्या ने उन परिचारको से कहा, जो मुर्दों के इस खेमे मे यन्त्र से दवाई छिडक रहे थे।

वोलोद्या एक कदम आगे बढकर रुक गया। मृत मा अभी तक जीवित बच्चे को बाहो मे भरे हुए छाती से चिपकाये थी। मुर्दा मा की ठण्डी बाहो से दबा हुआ शिशु धीरे-धीरे छटपटा और रो रहा था।

वालोद्या बच्चे की ओर झुका। टोड-जीन ने उसकी मदद की और परिचारक ने बच्चे को वोलोद्या के हाथ से ले लिया। नर्स बच्चे को उस खेमे मे ले गयी, जहा रोगियो को अलग रखने की व्यवस्था थी।

उषा आई, बहुत नम और असह्य रूप से उमस भरी। स्तेपी म बारिश की चादर-सी छा गयी। वारिनोव तिरपाल के शामियाने

के नीचे बठे हुए नक्शे की मदद स महामारीग्रस्त क्षेत्रा की जानकारी प्राप्त क्र रहे थे। उनके निकट ही रेडियो ग्रॉपरेटर कीक जूव म डाक्टर लोवादा क साथ रडियो-सम्पक स्थापित करने की कोशिश कर रहा था। प्राफेसर वारिनाव का सास लेने का नकाव इस वक्त छाती पर लटक रहा था, सुरक्षा चश्मे को उन्हाने उतारकर अपनी जेव म डाल लिया था और टोपी को पीछे पीठ पर खिसका दिया था।

"थक गय?" वारिनोव ने वोलोद्या से पूछा।

"ज़रा भी नही!" वालाद्या न वडी शान से जवाव दिया।

पीछे की ग्रार स टाड-जीन तिरपाल के शामियाने म ग्राया और वोला—

"क्तिनी भारी मुसीवत है, है न। साथी प्रोफेसर, कसे ऐसी मुसीवत का हमेशा-हमेशा के लिए ग्रन्त किया जा सकता है?"

प्रोफ़ेसर वारिनोव ने सिगरेट का लम्बा कश खीचा, टोटा बुझाया और सोचते हुए जवाव दिया—

"मेरे प्यारे साथी, डाक्टर के नाते मुझे आपसे यह कहना होगा कि ऐसी मुसीवत का राज्य का ढाचा बदलकर ही खत्म किया जा सक्ता है। सोवियत सघ मे ग्रब न तो प्लेग है, न चेचक और न दूसरे महामारी रोग ही वहा रहे है। लेकिन कुछ ही ग्रर्सा पहले, मेरे ग्रपने ही वक्तो म रूस म हर साल चालीस हज़ार ग्रादमी चेचक से मरते थे और कम से कम दो लाख ग्रादमी ग्रधे, वहरे यानी काय ग्रक्षम हो जाते थे "

"मैं स्वित्स्यूक बोल रहा हू!" रेडियो ग्रॉपरेटर खुशी से चिल्ला उठा। "मैं स्वित्स्यूक वोल रहा हू! साथी लोवोदा, हमे बीस थर्मामीटर, तामचीनी की वालटिया और ग्रकुडा भेज दीजिये और यह भी "

उसन हाठ हिलाते हुए नोट-बुक देखी और फिर वोलोद्या से कहा—

"साथी डाक्टर, मुझसे यह शब्द बोला नही जा रहा।"

"फोनेनडोस्कोप!" वोलोद्या ने पढा और उसे रिसीवर पर दोहरा दिया—फो-नेन डास्कोप!"

इन लागो ने थमस से गम काको पिया और घोडो पर सवार हो गये। रडियो ग्रॉपरेटर ग्रभी भी चिल्लाता जा रहा था—

"एक कमीज, बच्चे की। हे भगवान, यह नही, बच्चे की! ए बच्चा मिला है उसकी मा से! मा मर गयी, लेकिन बच्चा हम मि गया है।"

"स्वित्स्यूरु, काम की बात करो!" वारिनोव ने घोडे की लगा हाथ मे लेते हुए कहा।

अचानक कुछ दूरी पर मशीनगन की गोलियो की धीमी बौछा सुनाई दी।

"यह क्या है?" वोलोद्या ने पूछा।

टोड-जीन ने रकावो मे ऊचा उठकर बहुत ध्यान से सुनने व कोशिश की। कुछ और बौछार हुई।

"यहा सीमा रेखा बहुत निकट है," टाड-जीन ने कहा। "यह बर्लिन रोम-टाकियो का सगम है! फासिज्म, हा! आइये चले!"

उसने घोडे को चाबुक मारा और काठी के ऊचे अग्रभाग प झुक गया। हवा वोलोद्या के कानो मे फौरन सीटी बजाने लगी, घाे तनिक हिनहिनाते हुए ऐसे जोर से सरपट दौडने लगे मानो रास्ते बे बिना नम खड्ड मे उडे जा रहे हो। पन्द्रह मिनट से अधिक उन्होने इर तरह घोडे नही दौडाये और वोलोद्या लगातार मुड मुडकर बुजुर वारिनोव की तरफ देखता रहा। आखिर वे एक टीले पर पहुचे वोलोद्या को वहा से फौरन ऊची बरसातिया पहने जनतन्त्र के सीमा सैनिक दिखाई दिये, पीली, ऊची और लपलपाती ज्वाला नजर आई और सिर के ऊपर हवाई जहाजो का शोर सुनाई दिया। बहुत छोटे, मानो कटे हुए बाडीवाले जहाजो के पखो पर दोरगे घेरे थे। ये जनतन्त्र के जगी, लडाकू हवाई जहाज थे।

"कुछ भी समझ मे नही आ रहा!" वारिनोव ने परेशान होते हुए कहा। "यहा आग लगी है क्या?"

बडी मुश्किल से सास लेता और मुट्ठिया भीचता हुआ वोलोद्या टकटकी बाधकर वहा देख रहा था राज्य-सीमा के परे, जनतन्त्रीय सेनाओ के रोग रक्षा घेरे के परे सम्राट की सेनाए प्लेग की महामारी के विरुद्ध सघर्ष कर रही थीं। सम्भवत उन्होने यन्त्रो से तरल आग फेंककर सीमावर्ती बस्ती को जला डाला था और अब मशीनगन चालक गोलियो की बौछारो से उन सभी को भून रहे थे जो लपटो मे से

निकल भागने की कोशिश कर रहे थे। वोलोद्या ने देखा कि मशीनगना और उन्ह चलानवालो की सख्या बहुत बडी है और फिर इधर उधर नज़र दौडाने पर उसे मोटर साइकलो की साइडकारो पर तरल आग फेंकनेवाले यन्त्र भी नज़र आये। ऊपर, टीले की चोटी पर तोपे रखी हुई थी और उनके मुह जलती हुई बस्ती की तरफ थे

"यह असम्भव है।" प्रोफेसर बारिनाव ने कहा। "या यह "

बात उनके मुह म अधूरी ही रह गयी।

हाथ ऊपर उठाये कुछ छोटी छोटी मानव आकृतिया आग की लपटो म से बाहर निकली। वे बारिश मे भाग रही थी, लपटो म से बच निकली थी, बच गयी थी

इसी वक्त कई मशीनगनो ने एक साथ गोलिया की छोटी छोटी बौछार की। खाकी वर्दिया और हवाबाज़ो जसी तिरछी टोपिया पहन छोटे छोटे खिलौनो जैसे सैनिको न बहुत ही थोडी थोडी गोलिया बरसायी। डर स पगलाये और बदहवास लोगो का मारना तो कुछ मुश्किल नही होता।

फिर भी एक आदमी भागता रहा। वह बहुत तेज़ी से एक तरफ को, सीधे और फिर बाये दौडा। वह सीमा रखा की तरफ दौड रहा था। वह जानता था कि वहा उसे गिरफ्तार किया जा सकता है, दूसरो से अलग रखा जा सकता है, मगर मारा नही जायगा। यहा उसे मारा नही जा सकता।

मगर उन्होने उसे वही मार डाला!

उन्होन गोलिया की एक लबी बौछार की और एक ओर को भागता हुआ आदमी गिर पडा।

तब अचानक छा गयी खामोशी म आग फकने के यन्त्रवाली एक मोटर साइकल फट फट का शोर करने लगी। छोटे छोटे, चित, निश्चल तथा बेजान पडे हुए लोगो पर आग की तेज़ और पीली-सी लपट गिरी। वोलोद्या ने मुह फेर लिया, उसके दात बज रहे थ और आख आसुओ से धुधला गयी थी। बस्ती हल्की बूदा-बादी म जल रही थी, जलती जा रही थी, लपटे पहल की तरह ही फडफडा तथा सिसक रही थी और धुए के काले घने लहरिये ज़मीन के नज़दीक ही लटके हुए थे मानो उन्ह ऊचे उठते हुए डर महसूस हो रहा हो।

"सुनिये तो!" बारिनोव न अचानक टोड जीन स कहा। "उनके स्वास्थ्य रक्षा दल के कमाडर को यह सूचना भिजवा दीजिय कि मै उसस बात करना चाहता हू। मे–प्रोफेसर बारिनोव, जो उनकी विज्ञान अकादमी का सम्मानित सदस्य हू और उन्ही अन्तर्राष्ट्रीय सभा सम्मेलनो मे भाग ले चुका हू, जिनमे उन्होने भी भाग लिया।" टोड-जीन ने सीमा सेना के एक अफसर का अपने पास बुलाकर यह सदेश दिया। यह अफसर वद माग अवरोध के करीब गया और वहा उसने सम्राट की सीमा-सेना के कप्तान से कुछ बातचीत की। कप्तान न फौजी सलामी दी। जनतत्र के सेना अफसर ने भी ऐसा ही किया। सम्राट की सेना के सैनिक अपनी सुस्ती दूर करने के लिए मशीनगना क निकट कुश्ती लड रहे थे, जब-तब जलती बस्ती पर नजर डाल लेते थे। हवाई जहाज चले गये।

मेढक जैसे रग से रगी हुई साइडकारवाली माटर साइकल जोर से ब्रेको की आवाज करती हुई माग अवराध के कराब रुकी। साइड कार मे से नाटा, खाकी वर्दी मे बहुत ही ठाठदार अफसर निकला। वह मोटे शीशो का चश्मा, ऊचे सिग्वाली फौजी टापी और बढिया, चमकत चमडे का पायतावा पहने था। अपने जवडे का कसकर भीचे हुए प्रोफेसर बारिनोव ने घोडे को एड लगायी। टोड जीन और वालोद्या ने उनके पीछे पीछे अपन घोडे बढाये। जब वे माग अवरोध के निकट पहुचे, तो सम्राट की सेना के डाक्टर ने अपनी सिगरेट खत्म की। बारिनाव का नाम और उनकी सभी उपाधिया और सम्मान-पद सुनन क बाद डाक्टर न अपनी हथेली को बाहर करके फौजी सलामी दी। बहुत ही सम्मानसूचक ढग से अपने हाथ को फौजी टोपी स सटाय हुए ही इस फौजी डाक्टर ने बताया कि बर्लिन की प्रयोगशालाओ और अपन देश के प्रायोगिक महामारी सस्थान म भी उसे प्रोफेसर बारिनोव के ग्रन्थ पढने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। जहा तक प्लेग विरोधी विशेष फौजी दस्ते द्वारा यहा की गयी कारवाइया का सम्बन्ध है, जिन्हे प्रोफेसर ने दखा है, तो निश्चय ही इससे मन पर बहुत असर पडता है। लेकिन अगर फेफडावाली प्लेग म सौ प्रतिशत मृत्यु-दर हा, तो दूसरा रास्ता ही कौन-सा हो सकता है? स्पष्ट है कि एसी स्थिति

म सबसे विवेकसगत और मानवीय उपाय यही रह जाता है कि महामारी की लपट म प्राय क्षेत्र को जला डाला जाय। खास तौर पर इसलिए भी कि इस वक्त यह राग बहुत ही नीचे स्तर की पतनाभुख और कुल मिलाकर अनुपयोगी अल्प जाति म ही फला हुआ है। वैस इस प्रश्न पर, जस कि साम्राज्य के सर्वोच्च महामारी केन्द्र के किसी भी अन्य आदश पर भी कोई वाद विवाद सम्भव नही।

इतना कहकर पतले-पतले हाठ पर पतली-पतली मूछावाले इस बन-ठन डाक्टर ने एडिया बजायी।

"अपनी अकादमी को सूचित कर दीजिय कि मैं उसका सम्मानित सदस्य नही रहना चाहता!" वारिनाव ने अग्रजी म बहुत ऊची आवाज म कहा। "और खुद भी यह याद कर लीजिय कि जब आप पर मुकदमा चलाया जायेगा और अगर मैं तब तक ज़िदा रहा, तो खुद अभियोक्ता हाना चाहूगा। और उन सभी डाक्टरा का प्रतिनिधित्व करूगा, जिन्हाने प्लेग के विरुद्ध सघष करते हुए अपन प्राण दिये। मुझे इसका हक हासिल है। समझ गये?"

"समझ गया!" फौजी डाक्टर ने, जिसके चेहरे का रग उड गया था और जा अभी तक अपनी टोपी से हाथ सटाय था, जवाब दिया। "मगर शायद ही प्राफेसर उस मुकदम के दिन तक ज़िदा रह पायेंगे। पश्चिमी देशा के छक्के छूट रहे हैं और हिटलर की फौजे जीत के झण्डे फहराती बढी जा रही है।"

जल्दी से एडिया बजाकर वह अपनी माटर साइकल की साइडकार म जा बैठा।

इनके घोडे जब खड्ड से बाहर निकल आय, तो वारिनाव न रूमाल निकालकर बारिश से भीगा हुआ अपना चेहरा पाछा, गहरी सास ली और यह अफसास जाहिर किया—

"बडा मन हो रहा था उसे चाबुक मारन को। तोबडे पर! खैर काई बात नही, मुकदमा होने तक तो मैं ज़िदा रह ही जाऊगा।"

"ज़रूर ज़िदा रह जायेंगे!" बोलोद्या ने बडी गम्भीरता से विश्वास दिलाया।

इस दिन इन्हाने छ अन्य खेमा का दौरा कर लिया। शाम को शिविर म घण्टी बजी। यह तो प्राफेसर वारिनोव ने "लघु बठक"

बुलायी थी। अब हर दिन ऐसी छोटी बैठके होती थी और वे वोलोद्या को हमेशा निर्णायक लडाइया के पहले सैनिक-परिषदा या मुख्य सैनिक कार्यालया मे होनेवाली उन बैठको की याद दिलाती थी, जिनके बारे मे वोलाद्या ने किताबो मे पढा था।

सैनिक परिषदो की बैठको की भाति डाक्टरो की इन बैठको म भी बहुत सक्षिप्त तथा काम-काजी ढग से शत्रु की शक्ति के बारे मे गुप्त रूप से प्राप्त सूचनाए दी जाती थी, अपनी हानियो का उल्लेख किया जाता था, हथियारा ग्रार लडाई के साज-सामान यानी सीरम, वैक्सीन, रसद, दवाइयो और परिवहन-सुविधाओ, आदि का हिसाब-किताब जोडा जाता था। यहा मज पर नक्शा बिछा हुआ था और जनरल (डाक्टर प्रोफेसर बारिनोव को अपना जनरल ही कहते थे) काले चौकारा से अकित स्थाना पर देर तक विचार करते थे। इन्ही स्थाना पर शत्रु था यानी प्लेग का राग फैला हुआ था। युद्ध-क्षेत्र से सम्पक जाडनेवाला टेलीफान भी जनरल के खेम मे लगा हुआ था और रेडियो आपरेटर प्राप्त होनेवाले सन्देशो का जल्दी से बारिनोव के सामने रख दता था। कमिसार टोड-जीन सीधे सम्पक द्वारा हर दिन खारा मे प्लेग विराधी परिषद के अध्यक्ष का स्थिति की सूचना देता। वह यही कहता—

"सब कुछ ठीक ठाक है! रोगग्रस्त क्षेत्र के बाहर कोई घटना नही हुई, हा!"

डाक्टर केवल "लघु बैठका" म ही मिलते। बाकी सारे वक्त रूसी डाक्टर और नर्सें, दिन रात प्लग के विरुद्ध, "काली मौत", "मार्मोट रोग" के विरुद्ध जूझत रहते, जो इस छाटे-से पूरे देश, इसके पशुपालका और हलवाहा, शिकारिया और मजदूरो, वृद्धो, जवानो और बच्चा, इसके पूरे भविष्य को ही हडप सकता था।

बारिनोव ने अपन डाक्टरो के सान के बारे मे बहुत कठार नियम बना रखा था। उन्होंने जो काय-तालिका बनायी थी, उसका कडाई से पालन करवाते थे। सान और अच्छी तरह से खान का हुक्म द रखा था। उनीदा और भूखे पेट डाक्टर बहुत भयानक, काई ऐसी भूल कर सकता था, जिस सुधारना असम्भव हो सकता था। वह, जसा

कि बारिनोव कहते थे, अपनी "बेध्यानी" के कारण अपने को प्लेग को छूत लगा सकता था।

"यह बिलकुल नहीं है!" हवाबाज पाशा इस बात का समर्थन करता। "हमारी वायुसेना में भी इस मामले में बड़ी सख्ती बरती जाती है। तीन चार घण्टे न सोने का मतलब हो सकता है आसानी से मौत के मुह में चले जाना। या तो हवाई जहाज में ही नींद आ जायगी या फिर वैसे ही ऊचाई पस्त हो जायगी।"

पाशा अपने एयरोप्लेन में (वह हवाई जहाज की जगह एयरोप्लेन कहना ही पसन्द करता था) बहुत ही कम ऊचाई पर पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण में उस सारे इलाके के ऊपर उड़ान करता, जहा महामारी फैली थी। वह खेमों को देखता कि कहीं काला कपड़ा तो नहीं लटकता, डाक्टर लोग राकेट छोड़कर किसी तरह की मदद पाने के लिए तो नहीं बुला रहे, खेमों से धुआ निकल रहा है या नहीं। कुल मिलाकर सब कुछ "ठीक-ठाक" है या नहीं, जैसा कि बड़ा चुस्त-फुर्तीला, काले बालों और खरखरी आवाज़ वाला डाक्टर लोबोदा कहा करता था। बहुत नीची उड़ान भरते हुए पाशा उन लोगों के सिरों के ऊपर से गुजरता, जो मार्मोटों को मिटा रहे थे, चौड़े मुहवाले दस्ताने में हाथ हिलाकर उनका अभिवादन करता, मानो यह कहता कि जुटे रहो अपने काम में, मैंने तो इधर से गुज़रते हुए ऐसे ही तुम्हारा हालचाल जानना चाहा है। वह शिविर में वापस आता, फव्वारा स्नान करता, खाता-पीता और फिर से उड़ान भरने लगता। डाक्टर और नर्सें इस सारे क्षेत्र के लोगों के शरीर का ताप जाचते, बीमारों को सीरम और स्वस्थों को वैक्सीन के टीके लगाते और परिचारक मुर्दों को दफनाते। दूर के शिविरों में, जहा रोगी थे, गतिशील रसोईघर गर्म भोजन लेकर पहुचता और निरोग होते हुए लोग, डाक्टर तथा अलग खेमों में रखे गये लोग उसे खाते।

रेडियो ऑपरेटरों से सन्देश मिलने पर बारिनोव अक्सर पाशा के साथ हवाई जहाज़ में जाते और जटिल रोगियों के मामले में सलाह-मशविरा देते। एक दिन उन्होंने अपनी "लघु बैठक" में कहा—

"साथियो, मैं आपको बधाई दे सकता हू! अब बिल्कुल स्पष्ट हो चुका है कि महामारी इस क्षेत्र में सीमित हो गयी है, उसका ज़ोर

घटने लगा है और कुछ दिन बाद हम यहा अपना काम पूरा कर देंगे।"

उस रात को शिविर म आनेवाले सभी डाक्टर बारिनोव क आदेशानुसार नहा, बल्कि अपनी खुशी से मीठी नीद सोये। सुबह को नाश्ते के वक्त वालोद्या को खारा से डाक्टर वास्या का तार मिला। उसने बहुत ही भावुकतापूर्ण शब्दा में यह माग की थी कि उसे "असली काम" के लिए बुलाया जाये। सोफिया इवानोव्ना ने कहा—

"हर आदमी को वही करना चाहिए, जो वह कर रहा है, यह उसका कर्त्तव्य है। और जो वह नही कर रहा है, दूसरे कर रहे है "

वालोद्या मुस्करा दिया। सोफिया इवानोव्ना से अब उसे कभी भी झल्लाहट नही होती थी। वह अब उसका वास्तविक, मानवीय महत्त्व जानता था।

शुक्र के दिन उन्होंने वहा से अपना शिविर समेटना शुरू किया। वोलोद्या खेमो का दौरा करके लौटा ही था, घोडे से उतरा, तो उसे अपनी तबीयत कुछ खराब महसूस हुई। वह एक दो बार लडखडाया भी। डाक्टर लोबोदा ने उसके क़रीब आकर सावधानी से कहा—

"शायद ठण्ड लग गयी है आपको?"

"हो सकता है!" वालोद्या ने रुखाई से जवाब दिया।

और खुद जरा मुस्कराकर रोगियो को अलग रखने के खेमे म चला गया। उसे इस बात का जरा भी शक नही रह गया था कि उसे प्लेग हो गयी है। उसकी बगल म दद हो रहा था और चाल भी प्लेग के रोगी की भाति "शराबी" जसी थी। ज़बान पर "सफेदी" थी, जो इस रोग का विशेष लक्षण है।

वालोद्या लेटा ही था कि बारिनोव चोगा पहने, किन्तु श्वास के नकाब के बिना खेमे मे आये।

"ढग से सब कुछ पहन लीजिये!" वालोद्या ने कहा। "नही तो मैं आप पर स्टूल फेंक मारूगा।"

"आप मुझे अक्ल नही सिखायें!" बारिनोव ने जवाब म वोलोद्या को डाटा।

"दोहराता हूं—मैं स्टूल फेंक मारूंगा आप पर। मुझे प्लग है।"
वारिनोव वाहर चले गये। वोलोद्या न थर्मामीटर लगाया—३८६ सेंटीग्रेड ताप था। वारिनोव और लोवादा सास लेने क नकाव पहन हुए खेम म आय और उनके पीछे तूश की झलक मिली। वोलोद्या अब खुद प्लग विरोधी सूट, रक्षा चश्मे और सास लेन के नकाव के विना था और इन लागा की नकाव म स सुनाई दनेवाली दवी घुटी आवाज उसे वडी अजीव सी लग रही थी।

जव तक वालोद्या के वलगम की प्रयागशाला म जाच की गयी, वह खत लिखता रहा। उसका सिर चकरा रहा था गला सूख रहा था, इस वुरी तरह सूख रहा था कि वह लगातार पानी पीता जा रहा था। उसने लिखा—

"वार्या। इस खत का कीटाणुमुक्त कर दिया गया है, इसलिए तुम डरो नही। अजीव, पागलपन का किस्सा हा गया है। जव तुम इस खत को पढोगी, तो उस वक्त तक मुझे दफनाया जा चुका हागा। इस वक्त मैं कुछ कमजारी महसूस कर रहा हू मरना नही चाहता और यह है भी वेतुकी वात। वार्या मैं तुम्ह प्यार करता हू हमेशा प्यार करता रहा हू। समझी

वारिनाव फिर स खेम म आय और उन्हाने खुशमिजाजी से ऊचे कहा—

"सहयोगी, मर ख्याल म तो यह द्विपक्षी निमानिया है "

वोलोद्या ने रक्षा चश्म से ढकी हुई वारिनाव की आखा को गौर स दखकर कहा—

"आपन तो खुद ही वताया था कि अगर डाक्टर वीमार पड जाये, तो उन्ह आम तौर पर ऐसे ही तसल्ली दी जाती है।"

"खैर आप लेट जाइये।" वारिनाव न वोलोद्या से कहा।

तूश फिर स दरवाजे पर दिखाई दी। वह वार्या और अग्लाया के पत्र लायी थी। वार्या ने समुद्री वेडे से खत लिखा था। "मैं समुद्री वेडे म हू," वोलोद्या ने पढा और आगे फिर से थियेटर की चर्चा थी। युद्ध के वारे म भी कुछ शब्द थे और यह भी लिखा था कि वोलोद्या क स्वभाव को ध्यान म रखत हुए अव उसके लिय वहा

"ब्राकाइटिस अपेंडिसाइटिस", आदि का इलाज करना कितना मुश्किल होगा। बूआ अग्लाया ने भी जग के बारे में लिखा था।

वोलोद्या खासा, मगर बलगम म लहू नही आया। शाम को हवाबाज पाशा खिडकी के बाहर प्रकट हुआ। उसने शीशे के साथ लगाकर यह नोट दिखाया–"मेरे पास ब्राडी है, शायद पीना चाहोगे, डाक्टर?" वोलोद्या ने उसे ठेंगा दिखाया और विस्तर पर लेट गया।

प्रयोगशाला मे वालोद्या के बलगम की दूसरी जाच से भी कुछ नतीजा नही निकला। इन्तजार करना जरूरी था।

दीवार के पीछे, दरवाजे के पास तूश लगातार बठी थी। वोलोद्या को उसकी हल्की फुल्की चाल और फुसफुसाहट सुनाई दे रही थी। सोफिया इवानोव्ना कई बार भीतर आई और उसने वोलोद्या से ऐसे हालचाल पूछा मानो वह बच्चा हो–

"हा, तो कैसी तबीयत है हमारी? हमने खाना खा लिया?"

"हम चाहते है कि अपनी इस चतुराई के साथ सभी जहन्नुम मे चले जायें!" वोलोद्या ने जवाब दिया।

वोलोद्या के हाथ म थर्मामीटर था। ३९.६ सटीग्रेड। उसका जी मतला रहा था, बहुत बुरी तरह जी मतला रहा था।

रात को डाक्टर लोबोदा उसके बिस्तर के करीब बठा रहा। वालोद्या सरसाम मे बडबडा रहा था। बाद को मोटा डाक्टर शुमीलोव वहा लोबोदा की जगह आ बैठा। निठल्लेपन से ऊबकर उसने मज से वह खत उठा लिया जो वालोद्या ने अपनी बूआ अग्लाया को लिखा था, पर पूरा नही कर पाया था। शुमीलोव ने पढा–"बहुत ही अफसोस है कि कुछ भी नही कर पाया। बूआ, काश आपने महामारी के विशेषज्ञों की यह महान सेना देखी होती काश आप समझ सकती कि कसे लोग हैं ये। मिसाल के तौर पर डाक्टर शुमीलोव को लिया जा सकता है। देखने मे वह मोटे ठूठ जसा है, बेतुके लतीफे सुनाता है और खुद ही पहले जोर स हसने लगता है"

"यह भी खूब रही!" परेशान होते और बुरा मानते हुए शुमीलोव न कहा। "मैं कब पहले ही हसने लगता हू?"

खत को मेज पर रखकर शुमीलोव ने सोते हुए वोलोद्या की नब्ज जाची और अचानक उस ठोडी तथा नाक पर एक सफेद तिकोण दिखाई दिया।

"तूश!" उसने पुकारा। "मेरी मदद कीजिये!"

इन दोनों ने सरसाम में बड़बड़ाते हुए बोलोद्या को चित लेटा दिया और शुमीलोव ने उसकी कमीज़ ऊपर उठायी।

"दाने!" खुशी भरी आवाज़ में उसने कहा। "आप देख रही हैं न, तूश? यह सच है कि मैं मोटा ठूठ हूं। ठूठ ही नहीं, मैं तो उल्लू भी हूं। वारिनोव को फौरन जगाइये। फौरन!"

अपनी मोटी-छोटी उंगलियों से उसने सांस लेने के नक्ष की डोरी खोली, चश्मा उतारा और टोपी को पीछे की ओर खिसका दिया। गर्मी के कारण पसीने से तर उसके मोटे, फूले गालोंवाले चेहरे पर खुशी झलक रही थी।

"लाल बुखार है!" उसने वारिनोव से कहा। "हमारा प्यारा लाल बुखार है। सो भी कितना प्यारा अपने स्पष्ट रूप में किसी विद्यार्थी के लिए, हर पाठ्यपुस्तक में वर्णित अपने लक्षणों के साथ। किस काम के हैं हम और आप? सब कुछ ही भूल गये? मत मां की बांहों से बच्ची तो बोलोद्या ने ही मुक्त की थी। बच्ची को तो लाल बुखार है। हे भगवान, कितनी शर्म की बात है! जरा जिस्म पर निकले दानों को तो देखिये—छाती और पेट पूरी तरह इनसे भरे हुए हैं। और चेहरे पर लाल बुखार की 'तितली' भी साफ दिखाई दे रही है। तो यह किस्सा है, साथी प्रोफेसर "

"हुम," वारिनोव ने कहा। "बूढ़ों की अक्ल भी कभी-कभी घास चरने चली जाती है। शायद पाशा को जगाना होगा, हवाई जहाज में जाकर सीरम ले आये। हमने तो सारी सीरम उस बच्ची पर ही खत्म कर दी है।"

पाशा को जगाया गया।

कुछ देर बाद तूश ने धीरे-से पूछा—

"तो उसे प्लेग तो नहीं है न, साथी प्रोफेसर?"

"नहीं प्यारी, यह लाल बुखार है!" शुमीलोव ने जवाब दिया और उसका पूरा चेहरा खुशी से चमक रहा था। "यह तो लाल बुखार है, प्यारा लाल बुखार!"

वारिनोव अभी तक बोलोद्या की ओर देखते जा रहे थे।

वे अचानक कह उठे—

'जानन ह मरे दिमाग मे क्या ख्याल आया है, साथी शुमीलाव? वहा, भोजनालय म शेम्पेन की एक बोतल रखी है। चलिये, चलकर उसे पियें। हमारी जगह लेनवाली नयी पीढी के लिए! वोलोद्या जसे नौजवाना के स्वास्थ्य के लिए!"

य दोना चले गये और तूश यही रह गयी। दर तक वह वोलोद्या को सरसाम म बडबडात सुनती रही और फिर उसका बडा सा गम हाथ अपने हाथ म लेकर उसन उसे चूम लिया

सुबह को प्रोफेसर बारिनोव का पूरा दल खारा चला गया। उसी दिन तीनो भारी हवाई जहाज खारा के मैदान से उडे, उन्हाने नगर का विदा कहने के लिए उसके ऊपर एक चक्कर लगाया और मास्को की ओर उड चले। डाक्टरो का यह दल मूसलधार बारिश म अचानक ही चला गया और केवल टोड जीन ने उन्ह विदा किया।

"इन्ह सबसे आखिरी खेमे म ले जाइये," वोलोद्या इसी वक्त सरसाम म बडबडा रहा था। "सबसे आखिरी खेमे मे। और वहा सब के आने-जाने की मनाही कर दीजिये। मनाही कर दीजिये! "

* * *

अक्तूबर की दो तारीख को वोलोद्या खारा से रवाना हुआ। सुबह उसने अस्पताल का चक्कर लगाया, रोगियो और दादा अबात्ताई से विदा ली, तूश को ढूढता रहा, मगर वह कही नजर न आयी। पलागेया मार्केलोवा आपरेशन का कमरा धो रही थी। वोलोद्या न उसकी ओर हाथ बढाते हुए पूछा—

"कहिये, काम कैसा लगता है? ठीक है न?"

"ठीक है!" सकुचाकर नजर नीची करते हुए उसन जवाब दिया। "मुझे तो अच्छा लगता है, लेकिन सोफिया इवानोव्ना "

"सोफिया इवानोव्ना बहुत अच्छी औरत है!" वोलोद्या ने कडाई स उसकी बात बीच म ही काट दी। "और सही मानी म डाक्टर है! हम और आप उसकी आलोचना करने का हक नही रखते! सो यह समझ लीजिये। नमस्ते पलागेया यगोरोव्ना।"

वास्या बेलोव के साथ वोलोद्या गले मिला और तीन-तीन बार उन्होंने एक-दूसरे को चूमा।

"नया साल आते आते हम फासिस्टा को पीस डालगे।" इस नय वडे डाक्टर ने कहा। "पैट्रोल के मामल मे उनकी बडी बुरी हालत है। इसके अलावा उनके अपने देश म विस्फोट की भी आशा करनी चाहिये। मैंन इस बारे म सोचा है। आपन विचार किया?"

"हा, किया है।" वोलोद्या ने मुस्कराकर उत्तर दिया।

न जाने क्या, लेकिन वोलोद्या जब भी वास्या स बात करता, तो उसका मुस्करान को मन होता।

नौ बजे वह रवाना होने के लिए बाहर निकला। सात घुडसवारा और कुछ लद्दू घोडा का कारवा तैयार था। बहुत सख्त गर्मी थी। पतझर की अप्रत्याशित गर्मी से खारा मे बडी परशानी हो रही थी। मादी-दाढी डाक्टर वास्या के ऊपर छतरी किय हुए था और वोलोद्या की तरफ अब वह कोई ध्यान नही दे रहा था। सोफिया इवानाव्ना न वोलोद्या को कडी हिदायत की कि वह उसे मास्को स कुछ फाम और टैंगोवाली फाइले जरूर भेजे। वालोद्या ने चाहा कि वह उसे चूमकर विदा ले, लेकिन वह तिमाही रिपोट म नज़र आनवाली गडवड के कारण बहुत झल्लायी हुई थी। वोलाद्या को सोफिया इवानाव्ना के जो अन्तिम शब्द सुनाई दिये, वे ये "बडी अजीब बात है"। लकिन क्या अजीब बात है, वोलोद्या ने इसम काई दिलचस्पी ज़ाहिर नही की।

रोगी खिडकिया म से झाक रहे थे। दादा अबाताई सामान स लदे घोडा की पेटिया कस रहा था, थला और पाटलिया का ढग स रख रहा था, हिदायत दे रहा था, सारी व्यवस्था कर रहा था। भूतपूव शमान ओगू भौह चढाकर खडा था। वालाद्या न उस अपने पास बुलाया। ओगू न विगडकर कहा—

"तुमने ऐसा बुरा क्या किया, खजडी, टोपी और डडा पानी मे, ताम्रा-खाम्रो नदी म क्यो गिरवा दिये? अब मैं तुम्हारी शुभ यात्रा के लिए कुछ भी तो नही कर सकता। क्या ऐसा किया?"

"उसके विना ही मरा काम चल जायेगा," वालोद्या मुस्कराया। "इन निकम्मी चीज़ो के बार मे भूल जाओ। टोड जीन स मिलूगा, तो कहूगा कि ओगू अब भला आदमी बन गया है। टोड-जीन तुम्ह

परिचारक बना दूगा। लेकिन अगर वोदका पीने लगोगे, तो डाक्टर वास्या तुम्हे निकाल देंगे। नमस्ते!"

वोलोद्या घोडे पर सवार हो गया और इस वक्त ही उसे तूश दिखाई दी। अस्पताल के फाटक का सहारा लिये वह कापते हाथो से वोलोद्या की तरफ देखती हुई मुस्करा रही थी।

"मैं आपको पत्र लिखूगा," वोलोद्या ने एड लगाकर अपने घोडे को तूश के सामने ले जाकर कहा। "बहुत बडा खत लिखूगा मैं आपको। डाक्टर वास्या आपको पढकर सुना देंगे। ठीक है न?"

"नही ठीक है!" अपनी काली लटो को झटकते हुए उसने कहा। "जब तक आप लिखेंगे, मैं खुद अच्छी तरह पढना सीख जाऊगी। जल्दी ही तो आपका खत नही आयेगा न? ठीक कहा मैंने?"

और अपने छोटे स हाथ से वोलोद्या की रकाब थाम ली, लेकिन उसी क्षण छोड दी। कारण कि अगर नारी रकाब थामती है, तो इसका मतलब होता है कि घोडे पर वह आदमी सवार है, जो उसे प्यार करता है। मगर वोलोद्या तो उसे प्यार नही करता था।

"सब को नमस्ते!" वोलोद्या ने कहा।

कारवा चल पडा। दादा अबाताई वोलोद्या के घोडे के साथ-साथ भागने लगा। इस कारवा के घोडे धूल उडाते हुए ज्यो ज्यो खारा मे आगे बढते गये, त्यो-त्यो लोगो की भीड अधिकाधिक होती गयी। परिचित और बहुत कम परिचित लोग वोलोद्या के घोडे के आस-पास चलते हुए उसकी ओर खट्टा पनीर बढा रहे थे, जो उन्हे मालूम था कि वोलोद्या को पसन्द है।

"यह पनीर ले लो!" वे चिल्लाकर कहते। "ले लो यह पनीर, तुम इसे मोर्चे पर खाना।"

"यह छेना ले लो!" वोलोद्या की तरफ सुखाया हुआ छेना बढ़ाते हुए वे चिल्लाते। "यह छेना खराब नही होता। तुम इसे लडाई खत्म होते तक उपयोग मे ला सकते हो और युद्ध के बाद भी हम याद करोगे।"

"यह बारहसिंगे का पनीर ले लो!" ऐसे पनीर की गालिया उसकी तरफ बढाते हुए कोई चिल्लाता। "ले लो, डाक्टर वोलोद्या!

या तुमने मुझे पहचाना नहीं? तुमने तुमने मुझे तब आयु से वंचित नहीं होने दिया था, जब हम तुम्हारे अस्पताल से डरते थे।"

वोलोद्या कुछ को पहचान पा रहा था, कुछ को नहीं पहचान पा रहा था। एक ही तरह की दृढ और सूखी-सी मुस्कान उसके होंठों पर थी और वह जल्दी से अपने आंसुओं को पी जाता था। धूल बढ़ती गयी, अधिकाधिक घनी होती गयी और न तो किसी ने देखा और न कोई देख ही सकता था कि डाक्टर वोलोद्या रो रहा है। शायद उसे पसीना आ रहा था। हां, सचमुच ही उस दिन बहुत गर्मी थी और वोलोद्या रूई भरी हुई जाकेट पहने था।

"तुमने खारा को काली मौत से बचाया!" लोग चिल्लाये।

"हम तुम्हें कभी नहीं भूलेंगे!"

नहीं, उसने नहीं बचाया उन्हें! अकेला आदमी प्लेग पर विजय नहीं प्राप्त कर सकता। और वोलोद्या की आंखों में छलकनेवाले आंसू भावुकता के आंसू नहीं थे! ये कुछ अजीब-से, गर्व के आंसू थे। ये आंसू उस व्यक्ति की खुशी के आंसू थे, जो काली मौत पर विजय पाने में समर्थ महान देश का नागरिक था। उस महान देश का, जो अजेय काली मौत, भयानक मार्मोट रोग, प्लेग पर विजय पा सकता था! और इस वक्त खारा के लोग डाक्टर वोलोद्या उस्तिमेन्को को नहीं, बल्कि एक दोस्त, भाई, मजदूरों और किसानों के देश, मेहनतकश जनता के देश, नेकी और विवेक के देश के नागरिक को विदा कर रहे थे।

"तुम अपने दुश्मनों पर विजय पाओ!" कारवां को घेरे हुए भीड़ में से कुछ लोगों ने चिल्लाकर कहा।

"हम अपने दुश्मनों पर विजय प्राप्त करेंगे!" वोलोद्या मानो प्रतिज्ञा करते हुए फुसफुसाया और उसकी आंखों के सामने प्रोफेसर बोरिसोव, डाक्टर लोबोदा और शुमीलोव घूम गये।

"तुम्हारे देश के लोग सुखी हों, क्योंकि वे इसके अधिकारी हैं!"

"हां, वे सुख के अधिकारी हैं!" वोलोद्या ने दोहराया और उसे हवाबाज पाशा, बोगोस्लोव्स्की और बूआ अग्लाया याद हो आये।

'अपने पायलों को भी तुम वैसे ही स्वस्थ करना, जैसे तुमने हमें स्वस्थ किया!"

"हां, ज़रूर ऐसा ही करूंगा!" वोलोद्या ने मानो शपथ ली।

"फिर से यहां आ जाना, डाक्टर वोलोद्या! "

घोड़े हिनहिना और डर रहे थे, लोगों की भीड़ लगातार बढ़ती चली जा रही थी। खारा से बाहर निकलते समय वोलोद्या को लाम्ज़ी का पिता दिखाई दिया, जो अपने शिकारियों के साथ रास्ते से कुछ ऊंचाई पर खड़ा था। शिकारियों की सख्या काफी थी, कोइ पचास और हर काई अपने घोड़े के अयालों पर बन्दूक टिकाये था। उन्होंने दो बार हवा में गोलियों की बौछार के साथ वोलोद्या का स्वागत किया। इसके बाद उनके बढ़िया, छोटे छोटे और घने अयालोंवाले घोड़े इस उद्देश्य से कारवां के आगे आगे भाग चले कि दूरस्थ शिविरों के खानाबदोशों को सोवियत डाक्टर वोलोद्या की विदाई के लिए तैयार हो जाने की सूचना दे दें।

और खानाबदोश इसके लिए तैयार हो गये थे। वोलोद्या बहुत गौर से उनके चेहरों को देख रहा था, यह याद करने की बड़ी कोशिश कर रहा था कि इनमें से कौन उसके दवाखाने में आया था, किसके रोग की उसने उसके खेमे में जाच की थी, किसका आपरेशन किया था और किसे अस्पताल में रखकर चिकित्सा की थी।

मगर वह पूरी तरह से किसी को भी नहीं पहचान पा रहा था। अब वे सभी मुस्करा रहे थे, पर जिस वक्त वोलोद्या का उनसे वास्ता पड़ा था, पीड़ाग्रस्त थे। अब वे फिर सबलाये हुए और हृष्ट पुष्ट थे, किन्तु जब उसके पास लाये गये थे, तो दुबले पतले थे, चेहरा पर पीलापन था। अब वे अपने घोड़ों की लगामें खींचे थे, मगर तब लेटे हुए थे या उन्हें सहारा देकर अथवा स्ट्रेचरों पर डालकर लाया गया था। भला क्या वह अब यह जान सकता था कि इन घुड़सवारों में से उसने किस किस की "आयु बचायी' थी।

वैसे इस बात का कोई महत्त्व भी नहीं था। महत्त्व की बात तो दूसरी, और यही थी कि यहां उसने अपना काम किया था। लगातार अपना काम किया था और अपनी पूरी ताकत लगाकर। और लोग यह समझते भी थे। शायद जो ऑपरेशन उसने किये थे, उनमें से कुछ तो बेहतर हो सकते थे, फिर भी यहां के लोगों का "कुछ" भला तो हुआ ही था।

"कुछ!" वोलोद्या सोच रहा था। "बहुत ही मामूली! लेकिन प्रोफेसर बारिनोव के दल का काम—क्या यह कुछ कम महत्त्व रखता है? और मैं उसका एक अश था। सारे काम का एक अश, अपने देश का एक अश!"

और वह दूरी पर उन पहाड़ों, उस दिशा की तरफ देख रहा था, जहा युद्ध की ज्वालाए धधक रही थी और जहा वह काम उसकी राह देख रहा था, जिसे उसने अपने को समर्पित कर रखा था।

पाठका से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिजाइन के बारे म आपके विचार जानकर अनुगृहीत हागा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हम बडी प्रसन्नता होगी। कृपया हम इस पते पर लिखिय

प्रगति प्रकाशन, २१, जूबोव्स्की
बुल्वार, मास्को, सोवियत सघ।

प्रकाशित हो चुकी हैं

गोर्की, मक्सिम, "मेरा बचपन" (उपन्यास)

"मेरा बचपन" गोर्की की आत्मकथात्मक उपन्यासत्रयी की पहली पुस्तक है। समाजवादी क्राति के पूव लिखित यह कृति आज भी सोवियत तथा विदेशी पाठका म अत्यत लाकप्रिय है। इसका प्रत्येक सस्करण बडी सख्या म प्रकाशित किया जाता है और ससार की कितनी ही भाषाग्रा म इसका अनुवाद किया जा चुका है। इस पुस्तक म साधारण स्थिति के माता पिता के एक बच्चे अल्योशा पेश्कोव की ग्राखा स, जा अपने ग्रासपास के लोगो पर बडे ध्यान से दृष्टिपात करता है, पाठक उन्नीसवी सदी के अतिम चरण के पुराने निरकुश रूस की दुनिया को देखत हैं। इस पुस्तक मे भावी लेखक को "इस दिलचस्प, गो मुश्किल जिदगी" म लानेवाला का बडी हार्दिकता के साथ वणन किया गया है। पूरी पुस्तक गोर्की के सामान्य जन म उत्कट विश्वास स और उसके ग्रतर के सौदय और भव्यता से ग्रातप्रात है।